सहाइफ़-ए अन्बिया

असल इब्रानी और अरामी मतन से नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

बार _____ दुवुम

The Prophets in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew and Aramaic
Urdu Geo Version (Devanagari) (beta version 150122)

© 2012 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broad Street, # 169, Glen Allen, Virginia 23060
United States of America

http://urdugeoversion.com

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़-ए नाशिरीन, जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स, एल-एल-सी महफ़ूज़ हैं

यसायाह

1 1 ज़ैल में वह रोयाएँ दर्ज हैं जो यसायाह बिन
आमूस ने यहूदाह और यरूशलम के बारे में देखीं
और जो उन सालों में मुन्कशिफ़ हुईं जब उज़्ज़ियाह,
यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह यहूदाह के बादशाह
थे।

इस्राईली अपने आक़ा को जानने से इन्कार करते हैं

2 ऐ आसमान, मेरी बात सुन! ऐ ज़मीन, मेरे अल्फ़ाज़
पर कान धर! क्यूँकि रब ने फ़रमाया है,
"जिन बच्चों की परवरिश मैं ने की है और जो मेरे
ज़ेर-ए-निगरानी परवान चढ़े हैं, उन्हों ने मुझ से रिश्ता
तोड़ लिया है। 3 बैल अपने मालिक को जानता और
गधा अपने आक़ा की चरनी को पहचानता है, लेकिन
इस्राईल इतना नहीं जानता, मेरी क़ौम समझ से ख़ाली
है।"
4 ऐ गुनाहगार क़ौम, तुझ पर अफ़सोस! ऐ संगीन
क़ुसूर में फंसी हुई उम्मत, तुझ पर अफ़सोस! शरीर
नस्ल, बदचलन बच्चे! उन्हों ने रब को तर्क कर दिया
है। हाँ, उन्हों ने इस्राईल के क़ुद्दूस को हक़ीर जान कर
रद्द किया, अपना मुँह उस से फेर लिया है। 5 अब तुम्हें
मज़ीद कहाँ पीटा जाए? तुम्हारी ज़िद तो मज़ीद बढ़ती
जा रही है गो पूरा सर ज़ख़्मी और पूरा दिल बीमार
है। 6 चाँद से ले कर तल्वे तक पूरा जिस्म मजरूह है,
हर जगह चोटें, घाओ और ताज़ा ताज़ा ज़र्बें लगी हैं।
और न उन्हें साफ़ किया गया, न उन की मर्हम-पट्टी
की गई है।
7 तुम्हारा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो गया है,
तुम्हारे शहर भस्म हो गए हैं। तुम्हारे देखते देखते
परदेसी तुम्हारे खेतों को लूट रहे हैं, उन्हें यूँ उजाड़
रहे हैं जिस तरह परदेसी ही कर सकते हैं। 8 सिर्फ़
यरूशलम ही बाक़ी रह गया है, सिय्यून बेटी अंगूर
के बाग़ में झोंपड़ी की तरह अकेली रह गई है। अब
दुश्मन से घिरा हुआ यह शहर खीरे के खेत में लगे
छप्पर की मानिन्द है। 9 अगर रब्ब-उल-अफ़्वाज हम
में से चन्द एक को ज़िन्दा न छोड़ता तो हम सदूम की
तरह मिट जाते, हमारा अमूरा की तरह सत्यानास हो
जाता।
10 ऐ सदूम के सरदारो, रब का फ़रमान सुन लो! ऐ
अमूरा के लोगो, हमारे ख़ुदा की हिदायत पर ध्यान
दो! 11 रब फ़रमाता है, "अगर तुम बेशुमार क़ुर्बानियाँ
पेश करो तो मुझे क्या? मैं तो भस्म होने वाले मेंढों
और मोटे-ताज़े बछड़ों की चर्बी से उकता गया हूँ।
बैलों, लेलों और बकरों का जो ख़ून मुझे पेश किया
जाता है वह मुझे पसन्द नहीं। 12 किस ने तुम से
तक़ाज़ा किया कि मेरे हुज़ूर आते वक़्त मेरी बारगाहों
को पाँओ तले रौंदो? 13 रुक जाओ! अपनी बेमानी
क़ुर्बानियाँ मत पेश करो! तुम्हारे बख़ूर से मुझे घिन
आती है। नए चाँद की ईद और सबत का दिन मत
मनाओ, लोगों को इबादत के लिए जमा न करो! मैं
तुम्हारे बेदीन इजतिमा बर्दाश्त ही नहीं कर सकता।
14 जब तुम नए चाँद की ईद और बाक़ी तक़्रीबात
मनाते हो तो मेरे दिल में नफ़रत पैदा होती है। यह मेरे
लिए भारी बोझ बन गई हैं जिन से मैं तंग आ गया हूँ।
15 बेशक अपने हाथों को दुआ के लिए उठाते
जाओ, मैं ध्यान नहीं दूँगा। गो तुम बहुत ज़्यादा नमाज़
भी पढ़ो, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, क्यूँकि तुम्हारे हाथ
ख़ूनआलूदा हैं। 16 पहले नहा कर अपने आप को
पाक-साफ़ करो। अपनी शरीर हरकतों से बाज़ आओ
ताकि वह मुझे नज़र न आएँ। अपनी ग़लत राहों को
छोड़ कर 17 नेक काम करना सीख लो। इन्साफ़ के
तालिब रहो, मज़्लूमों का सहारा बनो, यतीमों का
इन्साफ़ करो और बेवाओं के हक़ में लड़ो!"

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

18 रब फ़रमाता है, “आओ हम अदालत में जा कर
एक दूसरे से मुक़द्दमा लड़ें। अगर तुम्हारे गुनाहों का
रंग क़िर्मिज़ी हो जाए तो क्या वह दुबारा बर्फ़ जैसे
उजले हो जाएंगे? अगर उन का रंग अर्ग़वानी हो
जाए तो क्या वह दुबारा ऊन जैसे सफ़ेद हो जाएंगे?
19 अगर तुम सुनने के लिए तय्यार हो तो मुल्क की
बेहतरीन पैदावार से लुत्फ़अन्दोज़ होगे। 20 लेकिन
अगर इन्कार करके सरकश हो जाओ तो तलवार
की ज़द में आ कर मर जाओगे। इस बात का यक़ीन
करो, क्यूँकि रब ने यह कुछ फ़रमाया है।”

21 यह कैसे हो गया है कि जो शहर पहले इतना
वफ़ादार था वह अब कस्बी बन गया है? पहले
यरूशलम इन्साफ़ से मामूर था, और रास्ती उस में
सुकूनत करती थी। लेकिन अब हर तरफ़ क़ातिल
ही क़ातिल हैं! 22 ऐ यरूशलम, तेरी ख़ालिस चाँदी
ख़ाम चाँदी में बदल गई है, तेरी बेहतरीन मै में पानी
मिलाया गया है। 23 तेरे बुज़ुर्ग हटधर्म और चोरों के
यार हैं। यह रिश्वतख़ोर सब लोगों के पीछे पड़े रहते
हैं ताकि चाय-पानी मिल जाए। न वह पर्वा करते हैं
कि यतीमों को इन्साफ़ मिले, न बेवाओं की फ़र्याद
उन तक पहुँचती है।

24 इस लिए क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
जो इस्राईल का ज़बरदस्त सूरमा है फ़रमाता है,
“आओ, मैं अपने मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों से
इन्तिक़ाम ले कर सुकून पाऊँ। 25 मैं तेरे ख़िलाफ़
हाथ उठाऊँगा और ख़ाम चाँदी की तरह तुझे पोटाश
के साथ पिघला कर तमाम मैल से पाक-साफ़
कर दूँगा। 26 मैं तुझे दुबारा क़दीम ज़माने के से
क़ाज़ी और इब्तिदा के से मुशीर अता करूँगा।
फिर यरूशलम दुबारा दार-उल-इन्साफ़ और वफ़ादार
शहर कहलाएगा।”

27 अल्लाह सिय्यून की अदालत करके उस का
फ़िद्या देगा, जो उस में तौबा करेंगे उन का वह इन्साफ़
करके उन्हें छुड़ाएगा। 28 लेकिन बाग़ी और गुनाहगार
सब के सब पाश पाश हो जाएंगे, रब को तर्क करने
वाले हलाक हो जाएंगे।

29 बलूत के जिन दरख़्तों की पूजा से तुम
लुत्फ़अन्दोज़ होते हो उन के बाइस तुम शर्मसार होगे,
और जिन बाग़ों को तुम ने अपनी बुतपरस्ती के लिए
चुन लिया है उन के बाइस तुम्हें शर्म आएगी। 30 तुम
उस बलूत के दरख़्त की मानिन्द होगे जिस के पत्ते
मुरझा गए हों, तुम्हारी हालत उस बाग़ की सी होगी
जिस में पानी नायाब हो। 31 ज़बरदस्त आदमी फूस
और उस की ग़लत हरकतें चिंगारी जैसी होंगी। दोनों
मिल कर यूँ भड़क उठेंगे कि कोई भी बुझा नहीं
सकेगा।

यरूशलम अबदी अम्न-ओ-अमान का मर्कज़ होगा

2 1 यसायाह बिन आमूस ने यहूदाह और
यरूशलम के बारे में ज़ैल की रोया देखी,

2 आख़िरी अय्याम में रब के घर का पहाड़ मज़बूती
से क़ाइम होगा। सब से बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम
बुलन्दियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ होगा। तब तमाम
क़ौमें जौक़-दर-जौक़ उस के पास पहुँचेंगी, 3 और
बेशुमार उम्मतें आ कर कहेंगी, “आओ, हम रब के
पहाड़ पर चढ़ कर याक़ूब के ख़ुदा के घर के पास
जाएँ ताकि वह हमें अपनी मर्ज़ी की तालीम दे और
हम उस की राहों पर चलें।”

क्यूँकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी,
और यरूशलम से उस का कलाम सादिर होगा।
4 रब बैन-उल-अक़्वामी झगड़ों को निपटाएगा और
बेशुमार क़ौमों का इन्साफ़ करेगा। तब वह अपनी
तलवारों को कूट कर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों
को काँट-छाँट के औज़ार में तब्दील करेंगी। अब से
न एक क़ौम दूसरी पर हम्ला करेगी, न लोग जंग करने
की तर्बियत हासिल करेंगे।

5 ऐ याक़ूब के घराने, आओ हम रब के नूर में चलें!

अल्लाह की हैबतनाक अदालत

6 ऐ अल्लाह, तू ने अपनी क़ौम, याक़ूब के घराने
को तर्क कर दिया है। और क्या अजब! क्यूँकि वह
मशरिक़ी जादूगरी से भर गए हैं। फ़िलिस्तियों की
तरह हमारे लोग भी क़िस्मत का हाल पूछते हैं, वह
परदेसियों के साथ बग़लगीर रहते हैं। 7 इस्राईल सोने-
चाँदी से भर गया है, उस के ख़ज़ानों की हद ही नहीं
रही। हर तरफ़ घोड़े ही घोड़े नज़र आते हैं, और उन के
रथ गिने नहीं जा सकते। 8 लेकिन साथ साथ उन का
मुल्क बुतों से भी भर गया है। जो चीज़ें उन के हाथों
ने बनाईं उन के सामने वह झुक जाते हैं, जो कुछ
उन की उंगलियों ने तश्कील दिया उसे वह सिज्दा
करते हैं। 9 चुनाँचे अब उन्हें ख़ुद झुकाया जाएगा,
उन्हें पस्त किया जाएगा। ऐ रब, उन्हें मुआफ़ न कर!
10 चटानों में घुस जाओ! ख़ाक में छुप जाओ!
क्यूँकि रब का दहशतअंगेज़ और शानदार जलाल
आने को है। 11 तब इन्सान की मग़रूर आँखों को
नीचा किया जाएगा, मर्दों का तकब्बुर ख़ाक में
मिलाया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़
होगा। 12 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने एक ख़ास दिन
ठहराया है जिस में सब कुछ जो मग़रूर, बुलन्द या
सरफ़राज़ हो ज़ेर किया जाएगा। 13 लुबनान में देवदार
के तमाम बुलन्द-ओ-बाला दरख़्त, बसन के कुल
बलूत, 14 तमाम आली पहाड़ और ऊँची पहाड़ियाँ,
15 हर अज़ीम बुर्ज और क़िलाबन्द दीवार, 16 समुन्दर
का हर अज़ीम तिजारती और शानदार जहाज़ ज़ेर
हो जाएगा। 17 चुनाँचे इन्सान का ग़ुरूर ख़ाक में
मिलाया जाएगा और मर्दों का तकब्बुर नीचा कर
दिया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़ होगा,
18 और बुत सब के सब फ़ना हो जाएंगे।

19 जब रब ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए
उठ खड़ा होगा तो लोग मिट्टी के गढ़ों में खिसक
जाएंगे। रब की महीब और शानदार तजल्ली को देख
कर वह चटानों के ग़ारों में छुप जाएंगे। 20 उस दिन
इन्सान सोने-चाँदी के उन बुतों को फैंक देगा जिन्हें
उस ने सिज्दा करने के लिए बना लिया था। उन्हें चूहों
और चमगादड़ों के आगे फैंक कर 21 वह चटानों के
शिगाफ़ों और दराड़ों में घुस जाएंगे ताकि रब की
महीब और शानदार तजल्ली से बच जाएँ जब वह
ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए उठ खड़ा होगा।
22 चुनाँचे इन्सान पर एतिमाद करने से बाज़ आओ
जिस की ज़िन्दगी दम भर की है। उस की क़दर ही
क्या है?

यहूदाह की तबाही

3 1 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
यरूशलम और यहूदाह से सब कुछ छीनने को
है जिस पर लोग इन्हिसार करते हैं। रोटी का हर
लुक़्मा और पानी का हर क़तरा, 2 सूरमे और फ़ौजी,
क़ाज़ी और नबी, क़िस्मत का हाल बताने वाले
और बुज़ुर्ग, 3 फ़ौजी अफ़्सर और असर-ओ-रसूख़
वाले, मुशीर, जादूगर और मंत्र फूँकने वाले, सब के
सब छीन लिए जाएंगे। 4 मैं लड़के उन पर मुक़र्रर
करूँगा, और मुतलव्विनमिज़ाज ज़ालिम उन पर
हुकूमत करेंगे। 5 अवाम एक दूसरे पर ज़ुल्म करेंगे,
और हर एक अपने पड़ोसी को दबाएगा। नौजवान
बुज़ुर्गों पर और कमीने, इज़्ज़तदारों पर हम्ला करेंगे।
6 तब कोई अपने बाप के घर में अपने भाई को
पकड़ कर उस से कहेगा, "तेरे पास अब तक चादर
है, इस लिए आ, हमारा सरबराह बन जा! खंडरात
के इस ढेर को सँभालने की ज़िम्मादारी उठा ले!"
7 लेकिन वह चीख़ कर इन्कार करेगा, "नहीं, मैं
तुम्हारा मुआलजा कर ही नहीं सकता! मेरे घर में
न रोटी है, न चादर। मुझे अवाम का सरबराह मत
बनाना!"
8 यरूशलम डगमगा रहा है, यहूदाह धड़ाम से गिर
गया है। और वजह यह है कि वह अपनी बातों
और हरकतों से रब की मुख़ालफ़त करते हैं। उस के
जलाली हुज़ूर ही में वह सरकशी का इज़हार करते
हैं। 9 उन की जानिबदारी उन के ख़िलाफ़ गवाही देती
है। और वह सदूम के बाशिन्दों की तरह अलानिया

अपने गुनाहों पर फ़ख़र करते हैं, वह उन्हें छुपाने
की कोशिश ही नहीं करते। उन पर अफ़सोस! वह तो
अपने आप को मुसीबत में डाल रहे हैं।
10 रास्तबाज़ों को मुबारकबाद दो, क्यूँकि वह
अपने आमाल के अच्छे फल से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे।
11 लेकिन बेदीनों पर अफ़सोस! उन का अन्जाम बुरा
होगा, क्यूँकि उन्हें ग़लत काम की मुनासिब सज़ा
मिलेगी।
12 हाय, मेरी क़ौम! मुतलव्विनमिज़ाज तुझ पर
ज़ुल्म करते और औरतें तुझ पर हुकूमत करती हैं।
ऐ मेरी क़ौम, तेरे राहनुमा तुझे गुमराह कर रहे हैं,
वह तुझे उलझा कर सहीह राह से भटका रहे हैं।

रब अपनी क़ौम की अदालत करता है

13 रब अदालत में मुक़द्दमा लड़ने के लिए खड़ा
हुआ है, वह क़ौमों की अदालत करने के लिए उठा
है। 14 रब अपनी क़ौम के बुज़ुर्गों और रईसों का
फ़ैसला करने के लिए सामने आ कर फ़रमाता है,
"तुम ही अंगूर के बाग़ में चरते हुए सब कुछ खा गए
हो, तुम्हारे घर ज़रूरतमन्दों के लूटे हुए माल से भरे
पड़े हैं। 15 यह तुम ने कैसी गुस्ताख़ी कर दिखाई?
यह मेरी ही क़ौम है जिसे तुम कुचल रहे हो। तुम
मुसीबतज़दों के चिहरों को चक्की में पीस रहे हो।"
क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज यूँ फ़रमाता है।

यरूशलम की ख़वातीन की अदालत

16 रब ने फ़रमाया, "सिय्यून की बेटियाँ कितनी
मग़ुरूर हैं। जब आँख मार मार कर चलती हैं तो
अपनी गरदनों को कितनी शोख़ी से इधर उधर
घुमाती हैं। और जब मटक मटक कर क़दम उठाती
हैं तो पाँओ पर बंधे हुए घुंघरू बोलते हैं टन टन, टन
टन।"
17 जवाब में रब उन के सरों पर फोड़े पैदा करके
उन के माथों को गंजा होने देगा। 18 उस दिन
रब उन का तमाम सिंगार उतार देगा : उन के
घुंघरू, सूरज और चाँद के ज़ेवरात, 19 आवेज़े, कड़े,
दोपट्टे, 20 सजीली टोपियाँ, पायल, ख़ुश्बू की बोतलें,
तावीज़, 21 अंगूठियाँ, नथ, 22 शानदार कपड़े, चादरें,
बटवे, 23 आईने, नफ़ीस लिबास, सरबन्द और शाल।
24 ख़ुश्बू की बजाय बदबू होगी, कमरबन्द के
बजाय रस्सी, सुलझे हुए बालों के बजाय गंजापन,
शानदार लिबास के बजाय टाट, ख़ूबसूरती की बजाय
शर्मिन्दगी।
25 हाय, यरूशलम! तेरे मर्द तलवार की ज़द में आ
कर मरेंगे, तेरे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो जाएंगे।
26 शहर के दरवाज़े आहें भर भर कर मातम करेंगे,
सिय्यून बेटी तन्हा रह कर ख़ाक में बैठ जाएगी।
4 1 तब सात औरतें एक ही मर्द से लिपट कर
कहेंगी, "हम से शादी करें! बेशक हम ख़ुद ही
रोज़मर्रा की ज़रूरियात पूरी करेंगी, ख़्वाह खाना हो
या कपड़ा। लेकिन हम आप के नाम से कहलाएँ
ताकि हमारी शर्मिन्दगी दूर हो जाए।"

यरूशलम की बहाली

2 उस दिन जो कुछ रब फूटने देगा वह शानदार और
जलाली होगा, मुल्क की पैदावार बचे हुए इस्राईलियों
के लिए फ़ख़र और आब-ओ-ताब का बाइस होगी।
3 तब जो भी सिय्यून में बाक़ी रह गए होंगे वह
मुक़द्दस कहलाएँगे। यरूशलम के जिन बाशिन्दों के
नाम ज़िन्दों की फ़हरिस्त में दर्ज किए गए हैं वह बच
कर मुक़द्दस कहलाएँगे। 4 रब सिय्यून की फ़ुज़्ला से
लतपत बेटियों को धो कर पाक-साफ़ करेगा, वह
अदालत और तबाही की रूह से यरूशलम की ख़ूँरेज़ी
के धब्बे दूर कर देगा। 5 फिर रब होने देगा कि दिन
को बादल सिय्यून के पूरे पहाड़ और उस पर जमा
होने वालों पर साया डाले जबकि रात को धुआँ और
दहकती आग की चमक-दमक उस पर छाई रहे।
यूँ उस पूरे शानदार इलाक़े पर सायबान होगा 6 जो
उसे झुलसती धूप से महफ़ूज़ रखेगा और तूफ़ान और
बारिश से पनाह देगा।

बेफल अंगूर का बाग़

5 1 आओ, मैं अपने मह्बूब के लिए गीत गाऊँ,
एक गीत जो उस के अंगूर के बाग़ के बारे में
है।

मेरे प्यारे का बाग़ था। अंगूर का यह बाग़ ज़रख़ेज़
पहाड़ी पर था। 2 उस ने गोडी करते करते उस में
से तमाम पत्थर निकाल दिए, फिर बेहतरीन अंगूर
की क़लमें लगाईं। बीच में उस ने मीनार खड़ा किया
ताकि उस की सहीह चौकीदारी कर सके। साथ साथ
उस ने अंगूर का रस निकालने के लिए पत्थर में हौज़
तराश लिया। फिर वह पहली फ़सल का इन्तिज़ार
करने लगा। बड़ी उम्मीद थी कि अच्छे मीठे अंगूर
मिलेंगे। लेकिन अफ़्सोस! जब फ़सल पक गई तो
छोटे और खट्टे अंगूर ही निकले थे।

3 "ऐ यरूशलम और यहूदाह के बाशिन्दो, अब ख़ुद
फ़ैसला करो कि मैं उस बाग़ के साथ क्या करूँ।
4 क्या मैं ने बाग़ के लिए हर मुमकिन कोशिश नहीं
की थी? क्या मुनासिब नहीं था कि मैं अच्छी फ़सल
की उम्मीद रखूँ? क्या वजह है कि सिर्फ़ छोटे और
खट्टे अंगूर निकले?

5 पता है कि मैं अपने बाग़ के साथ क्या करूँगा?
मैं उस की काँटेदार बाड़ को ख़त्म करूँगा और उस
की चारदीवारी गिरा दूँगा। उस में जानवर घुस आएँगे
और चर कर सब कुछ तबाह करेंगे, सब कुछ पाँओ
तले रौंद डालेंगे!

6 मैं उस की ज़मीन बंजर बना दूँगा। न उस की
बेलों की काँट-छाँट होगी, न गोडी की जाएगी। वहाँ
काँटेदार और ख़ुदरौ पौदे उगेंगे। न सिर्फ़ यह बल्कि
मैं बादलों को भी उस पर बरसने से रोक दूँगा।"

7 सुनो, इस्राईली क़ौम अंगूर का बाग़ है जिस का
मालिक रब्ब-उल-अफ़्वाज है। यहूदाह के लोग उस
के लगाए हुए पौदे हैं जिन से वह लुत्फ़अन्दोज़
होना चाहता है। वह उम्मीद रखता था कि इन्साफ़
की फ़सल पैदा होगी, लेकिन अफ़्सोस! उन्हों ने
ग़ैरक़ानूनी हरकतें कीं। रास्ती की तवक़्क़ो थी,
लेकिन मज़्लूमों की चीख़ें ही सुनाई दीं।

लोगों की ग़ैरक़ानूनी हरकतें

8 तुम पर अफ़्सोस जो यके बाद दीगरे घरों
और खेतों को अपनाते जा रहे हो। आख़िरकार
दीगर तमाम लोगों को निकलना पड़ेगा और तुम
मुल्क में अकेले ही रहोगे। 9 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने
मेरी मौजूदगी में ही क़सम खाई है, "यक़ीनन यह
मुतअद्दिद मकान वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएंगे, इन
बड़े और आलीशान घरों में कोई नहीं बसेगा। 10 दस
एकड़ [x]ज़मीन के अंगूरों से मै के सिर्फ़ 22 लिटर
बनेंगे, और बीज के 160 किलोग्राम से ग़ल्ला के सिर्फ़
16 किलोग्राम पैदा होंगे।"

11 तुम पर अफ़्सोस जो सुब्ह-सवेरे उठ कर शराब
के पीछे पड़ जाते और रात भर मै पी पी कर मस्त
हो जाते हो। 12 तुम्हारी ज़ियाफ़तों में कितनी रौनक़
होती है! तुम्हारे मेहमान मै पी पी कर सरोद, सितार,
दफ़ और बाँसरी की सुरीली आवाज़ों से अपना दिल
बहलाते हैं। लेकिन अफ़्सोस, तुम्हें ख़याल तक नहीं
आता कि रब क्या कर रहा है। जो कुछ रब के हाथों
हो रहा है उस का तुम लिहाज़ ही नहीं करते। 13 इसी
लिए मेरी क़ौम जिलावतन हो जाएगी, क्यूँकि वह
समझ से ख़ाली है। उस के बड़े अफ़्सर भूके मरेंगे,
और अवाम प्यास के मारे सूख जाएंगे। 14 पाताल ने
अपना मुँह फाड़ कर खोला है ताकि क़ौम की तमाम
शान-ओ-शौकत, शोर-शराबा, हंगामा और शादमान
अफ़राद उस के गले में उतर जाएँ। 15 इन्सान को
पस्त करके ख़ाक में मिलाया जाएगा, और मग़रूर
की आँखें नीची हो जाएँगी।

16 लेकिन रब्ब-उल-अफ़्वाज की अदालत उस की
अज़मत दिखाएगी, और क़ुद्दूस ख़ुदा की रास्ती
ज़ाहिर करेगी कि वह क़ुद्दूस है। 17 उन दिनों में लेले

---

[x]लफ़्ज़ी मतलब : जितनी ज़मीन पर बैलों की दस जोड़ियाँ एक दिन में हल चला सकती हैं।

और मोटी-ताज़ी भेड़ें जिलावतनों के खंडरात में यूँ
चरेंगी जिस तरह अपनी चरागाहों में।
18 तुम पर अफ़सोस जो अपने क़ुसूर को धोकेबाज़
रस्सों के साथ अपने पीछे खैंचते और अपने गुनाह
को बैलगाड़ी की तरह अपने पीछे घसीटते हो। 19 तुम
कहते हो, "अल्लाह जल्दी जल्दी अपना काम निपटाए
ताकि हम इस का मुआइना करें। जो मन्सूबा इस्राईल
का क़ुद्दूस रखता है वह जल्दी सामने आए ताकि हम
उसे जान लें।"
20 तुम पर अफ़सोस जो बुराई को भुला और भलाई
को बुरा क़रार देते हो, जो कहते हो कि तारीकी
रौशनी और रौशनी तारीकी है, कि कड़वाहट मीठी
और मिठास कड़वी है।
21 तुम पर अफ़सोस जो अपनी नज़र में दानिशमन्द
हो और अपने आप को होश्यार समझते हो।
22 तुम पर अफ़सोस जो मै पीने में पहलवान हो और
शराब मिलाने में अपनी बहादुरी दिखाते हो।
23 तुम रिश्वत खा कर मुजरिमों को बरी करते और
बेक़ुसूरों के हुक़ूक़ मारते हो। 24 अब तुम्हें इस की
सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जिस तरह भूसा आग की लपेट
में आ कर राख हो जाता और सूखी घास आग के
शोले में चुरमुर हो जाती है उसी तरह तुम ख़त्म हो
जाओगे। तुम्हारी जड़ें सड़ जाएँगी और तुम्हारे फूल
गर्द की तरह उड़ जाएंगे, क्यूँकि तुम ने रब्ब-उल-
अफ़्वाज की शरीअत को रद्द किया है, तुम ने इस्राईल
के क़ुद्दूस का फ़रमान हक़ीर जाना है।

असूरी फ़ौज का हम्ला

25 यही वजह है कि रब का ग़ज़ब उस की क़ौम पर
नाज़िल हुआ है, कि उस ने अपना हाथ बढ़ा कर उन
पर हम्ला किया है। पहाड़ लरज़ रहे और गलियों में
लाशें कचरे की तरह बिखरी हुई हैं। ताहम उस का
ग़ुस्सा ठंडा नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के
लिए उठा ही रहेगा।
26 वह एक दूरदराज़ क़ौम के लिए फ़ौजी झंडा गाड़
कर उसे अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ खड़ा करेगा, वह
सीटी बजा कर उसे दुनिया की इन्तिहा से बुलाएगा।
वह देखो, दुश्मन भागते हुए आ रहे हैं! 27 उन में से
कोई नहीं जो थकामाँदा हो या लड़खड़ा कर चले।
कोई नहीं ऊँघता या सोया हुआ है। किसी का भी
पटका ढीला नहीं, किसी का भी तस्मा टूटा नहीं।
28 उन के तीर तेज़ और कमान तने हुए हैं। उन के
घोड़ों के खुर चक़्माक़ जैसे, उन के रथों के पहिए
आँधी जैसे हैं। 29 वह शेरनी की तरह गरजते हैं बल्कि
जवान शेरबबर की तरह दहाड़ते और ग़ुर्राते हुए
अपना शिकार छीन कर वहाँ ले जाते हैं जहाँ उसे
कोई नहीं बचा सकता।
30 उस दिन दुश्मन ग़ुर्राते और मुतलातिम समुन्दर
का सा शोर मचाते हुए इस्राईल पर टूट पड़ेंगे। जहाँ
भी देखो वहाँ अंधेरा ही अंधेरा और मुसीबत ही
मुसीबत। बादल छा जाने के सबब से रौशनी तारीक
हो जाएगी।

यसायाह की बुलाहट

6 1 जिस साल उज़्ज़ियाह बादशाह ने वफ़ात पाई
उस साल मैं ने रब को आला और जलाली तख़्त
पर बैठे देखा। उस के लिबास के दामन से रब का
घर भर गया। 2 सराफ़ीम फ़रिश्ते उस के ऊपर खड़े
थे। हर एक के छः पर थे। दो से वह अपने मुँह को
और दो से अपने पाँओ को ढाँप लेते थे जबकि दो
से वह उड़ते थे। 3 बुलन्द आवाज़ से वह एक दूसरे
को पुकार रहे थे, "क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस है रब्ब-
उल-अफ़्वाज। तमाम दुनिया उस के जलाल से मामूर
है।"
4 उन की आवाज़ों से दहलीज़ें [y]हिल गईं और रब
का घर धुएँ से भर गया। 5 मैं चिल्ला उठा, "मुझ पर
अफ़सोस, मैं बर्बाद हो गया हूँ! क्यूँकि गो मेरे होंट
नापाक हैं, और जिस क़ौम के दरमियान रहता हूँ उस

[y]लफ़्ज़ी मतलब : दहलीज़ों में घूमने वाली दरवाज़ों की चूलें।

के होंट भी नजिस हैं तो भी मैं ने अपनी आँखों से
बादशाह रब्ब-उल-अफ़्वाज को देखा है।”
6 तब सराफ़ीम फ़रिश्तों में से एक उड़ता हुआ मेरे
पास आया। उस के हाथ में दमकता कोएला था जो
उस ने चिमटे से क़ुर्बानगाह से लिया था। 7 इस से
उस ने मेरे मुँह को छू कर फ़रमाया, “देख, कोएले ने
तेरे होंटों को छू दिया है। अब तेरा क़ुसूर दूर हो गया,
तेरे गुनाह का कफ़्फ़ारा दिया गया है।”
8 फिर मैं ने रब की आवाज़ सुनी। उस ने पूछा, “मैं
किस को भेजूँ? कौन हमारी तरफ़ से जाए?” मैं बोला,
“मैं हाज़िर हूँ। मुझे ही भेज दे।” 9 तब रब ने फ़रमाया,
“जा, इस क़ौम को बता, ‘अपने कानों से सुनो मगर
कुछ न समझना। अपनी आँखों से देखो, मगर कुछ
न जानना!’ 10 इस क़ौम के दिल को बेहिस्स कर दे,
उन के कानों और आँखों को बन्द कर। ऐसा न हो
कि वह अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें,
मेरी तरफ़ रुजू करें और शिफ़ा पाएँ।”
11 मैं ने सवाल किया, “ऐ रब, कब तक?” उस
ने जवाब दिया, “उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर
वीरान-ओ-सुन्सान, उस के घर ग़ैरआबाद और उस
के खेत बंजर न हों। 12 पहले लाज़िम है कि रब लोगों
को दूर दूर तक भगा दे, कि पूरा मुल्क तन-ए-तनहा
और बेकस रह जाए। 13 अगर क़ौम का दसवाँ हिस्सा
मुल्क में बाक़ी भी रहे लेकिन उसे भी जला दिया
जाएगा। वह किसी बलूत या दीगर लम्बे-चौड़े दरख़्त
की तरह यूँ कट जाएगा कि मुढ ही बाक़ी रहेगा।
ताहम यह मुढ एक मुक़द्दस बीज होगा जिस से नए
सिरे से ज़िन्दगी फूट निकलेगी।”

अल्लाह आख़ज़ को तसल्ली देता है

7 1 जब आख़ज़ बिन यूताम बिन उज़्ज़ियाह,
यहूदाह का बादशाह था तो शाम का बादशाह
रज़ीन और इस्राईल का बादशाह फ़िक़ह बिन
रमलियाह यरूशलम के साथ लड़ने के लिए निकले।
लेकिन वह शहर पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे।
2 जब दाऊद के शाही घराने को इत्तिला मिली कि
शाम की फ़ौज ने इफ़्राईम के इलाक़े में अपनी
लश्करगाह लगाई है तो आख़ज़ बादशाह और उस
की क़ौम लरज़ उठे। उन के दिल आँधी के झोंकों से
हिलने वाले दरख़्तों की तरह थरथराने लगे।
3 तब रब यसायाह से हमकलाम हुआ, “अपने
बेटे शयार-याशूब [z]को अपने साथ ले कर आख़ज़
बादशाह से मिलने के लिए निकल जा। वह उस नाले
के सिरे के पास रुका हुआ है जो पानी को ऊपर वाले
तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है
जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 4 उसे बता कि
मुह्तात रह कर सुकून का दामन मत छोड़। मत डर।
तेरा दिल रज़ीन, शाम और बिन रमलियाह का तैश
देख कर हिम्मत न हारे। यह बस जली हुई लकड़ी के
दो बचे हुए टुकड़े हैं जो अब तक कुछ धुआँ छोड़
रहे हैं। 5 बेशक शाम और इस्राईल के बादशाहों ने
तेरे ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधे हैं, और वह कहते हैं,
6 ‘आओ हम यहूदाह पर हम्ला करें। हम वहाँ दह्शत
फैला कर उस पर फ़त्ह पाएँ और फिर ताबिएल
के बेटे को उस का बादशाह बनाएँ।’ 7 लेकिन रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन का मन्सूबा
नाकाम हो जाएगा। बात नहीं बनेगी! 8 क्यूँकि शाम
का सर दमिश्क़ और दमिश्क़ का सर महज़ रज़ीन
है। जहाँ तक मुल्क-ए-इस्राईल का ताल्लुक़ है, 65
साल के अन्दर अन्दर वह चिकनाचूर हो जाएगा,
और क़ौम नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगी। 9 इस्राईल का
सर सामरिया और सामरिया का सर महज़ रमलियाह
का बेटा है।
अगर ईमान में क़ाइम न रहो, तो ख़ुद क़ाइम नहीं
रहोगे।”

---

[z]शयार-याशूब से मुराद है ‘एक बचा-खुचा हिस्सा वापस आएगा।’

रब आख़ज़ को निशान देता है

10 रब आख़ज़ बादशाह से एक बार फिर हमकलाम
हुआ, 11 "इस की तस्दीक़ के लिए रब अपने ख़ुदा
से कोई इलाही निशान माँग ले, ख़्वाह आसमान पर
हो या पाताल में।"
12 लेकिन आख़ज़ ने इन्कार किया, "नहीं, मैं
निशान माँग कर रब को नहीं आज़माऊँगा।"
13 तब यसायाह ने कहा, "फिर मेरी बात सुनो, ऐ
दाऊद के ख़ानदान! क्या यह काफ़ी नहीं कि तुम
इन्सान को थका दो? क्या लाज़िम है कि अल्लाह को
भी थकाने पर मुसिर रहो? 14 चलो, फिर रब अपनी
ही तरफ़ से तुम्हें निशान देगा। निशान यह होगा कि
कुंवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा
तो उस का नाम इम्मानूएल [a]रखेगी। 15 जिस वक़्त
बच्चा इतना बड़ा होगा कि ग़लत काम रद्द करने और
अच्छा काम चुनने का इल्म रखेगा उस वक़्त से
बालाई और शहद खाएगा। 16 क्यूँकि इस से पहले
कि लड़का ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम
चुनने का इल्म रखे वह मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो
जाएगा जिस के दोनों बादशाहों से तू दहशत खाता
है।

यहूदाह भी तबाह हो जाएगा

17 रब तुझे भी तेरे आबाई ख़ानदान और क़ौम
समेत बड़ी मुसीबत में डालेगा। क्यूँकि वह असूर
के बादशाह को तुम्हारे ख़िलाफ़ भेजेगा। उस वक़्त
तुम्हें ऐसे मुश्किल दिनों का सामना करना पड़ेगा कि
इस्राईल के यहूदाह से अलग हो जाने से ले कर आज
तक नहीं गुज़रे।"
18 उस दिन रब सीटी बजा कर दुश्मन को बुलाएगा।
कुछ मक्खियों के ग़ोल की तरह दरया-ए-नील की
दूरदराज़ शाख़ों से आएँगे, और कुछ शहद की
मक्खियों की तरह असूर से रवाना हो कर मुल्क पर
धावा बोल देंगे। 19 हर जगह वह टिक जाएंगे, गहरी
घाटियों और चटानों की दराड़ों में, तमाम काँटेदार
झाड़ियों में और हर जोहड़ के पास। 20 उस दिन
क़ादिर-ए-मुतलक़ दरया-ए-फ़ुरात के परली तरफ़ एक
उस्तरा किराए पर ले कर तुम पर चलाएगा। यानी
असूर के बादशाह के ज़रीए वह तुम्हारे सर और टाँगों
को मुंडवाएगा। हाँ, वह तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ का भी
सफ़ाया करेगा।
21 उस दिन जो आदमी एक जवान गाय और दो
भेड़-बकरियाँ रख सके वह ख़ुशक़िसमत होगा। 22 तो
भी वह इतना दूध देंगी कि वह बालाई खाता रहेगा।
हाँ, जो भी मुल्क में बाक़ी रह गया होगा वह बालाई
और शहद खाएगा।
23 उस दिन जहाँ जहाँ हाल में अंगूर के हज़ार
पौदे चाँदी के हज़ार सिक्कों के लिए बिकते हैं वहाँ
काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे ही उगेंगे। 24 पूरा
मुल्क काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों के सबब
से इतना जंगली होगा कि लोग तीर और कमान ले
कर उस में शिकार खेलने के लिए जाएंगे। 25 जिन
बुलन्दियों पर इस वक़्त खेतीबाड़ी की जाती है वहाँ
लोग काँटेदार पौदों और ऊँटकटारों की वजह से
जा नहीं सकेंगे। गाय-बैल उन पर चरेंगे, और भेड़-
बकरियाँ सब कुछ पाँओ तले रौंदेंगी।

जल्द ही लूट-खसूट

8 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "एक बड़ा तख़्ता
ले कर उस पर साफ़ अल्फ़ाज़ में लिख दे,
'जल्द ही लूट-खसूट, सुरअत से ग़ारतगरी'।" 2 मैं ने
ऊरियाह इमाम और ज़करियाह बिन यबरकियाह की
मौजूदगी में ऐसा ही लिख दिया, क्यूँकि दोनों मोतबर
गवाह थे।
3 उस वक़्त जब मैं अपनी बीवी नबिया के पास गया
तो वह उम्मीद से हुई। बेटा पैदा हुआ, और रब ने
मुझे हुक्म दिया, "इस का नाम 'जल्द ही लूट-खसूट,

---

[a]इम्मानूएल से मुराद है 'अल्लाह हमारे साथ है।'

सुरअत से ग़ारतगरी' रख। 4 क्यूँकि इस से पहले
कि लड़का 'अब्बू' या 'अम्मी' कह सके दमिश्क़
की दौलत और सामरिया का माल-ओ-अस्बाब छीन
लिया गया होगा, असूर के बादशाह ने सब कुछ लूट
लिया होगा।"

शिलोख़ का पानी रद्द करने का बुरा अन्जाम

5 एक बार फिर रब मुझ से हमकलाम हुआ, 6 "यह
लोग यरूशलम में आराम से बहने वाले शिलोख़
नाले का पानी मुस्तरद करके रज़ीन और फ़िक़ह
बिन रमलियाह से ख़ुश हैं। 7 इस लिए रब उन पर
दरया-ए-फ़ुरात का ज़बरदस्त सैलाब लाएगा, असूर
का बादशाह अपनी तमाम शान-ओ-शौकत के साथ
उन पर टूट पड़ेगा। उस की तमाम दरयाई शाख़ें अपने
किनारों से निकल कर 8 सैलाब की सूरत में यहूदाह
पर से गुज़रेंगी। ऐ इम्मानूएल, पानी परिन्दे की तरह
अपने परों को फैला कर तेरे पूरे मुल्क को ढाँप लेगा,
और लोग गले तक उस में डूब जाएंगे।"
9 ऐ क़ौमो, बेशक जंग के नारे लगाओ। तुम फिर
भी चिकनाचूर हो जाओगी। ऐ दूरदराज़ ममालिक
के तमाम बाशिन्दो, ध्यान दो! बेशक जंग के लिए
तय्यारियाँ करो। तुम फिर भी पाश पाश हो जाओगे।
क्यूँकि जंग के लिए तय्यारियाँ करने के बावुजूद भी
तुम्हें कुचला जाएगा। 10 जो भी मन्सूबा तुम बान्धो,
बात नहीं बनेगी। आपस में जो भी फ़ैसला करो, तुम
नाकाम हो जाओगे, क्यूँकि अल्लाह हमारे साथ है। [b]

रब नबी को क़ौम के बारे में आगाह करता है

11 जिस वक़्त रब ने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया
उस वक़्त उस ने मुझे इस क़ौम की राहों पर चलने
से ख़बरदार किया। उस ने फ़रमाया, 12 "हर बात को
साज़िश मत समझना जो यह क़ौम साज़िश समझती
है। जिस से यह लोग डरते हैं उस से न डरना, न
दहशत खाना 13 बल्कि रब्ब-उल-अफ़्वाज से डरो।
उसी से दहशत खाओ और उसी को क़ुद्दूस मानो।
14 तब वह इस्राईल और यहूदाह का मक़्दिस होगा,
एक ऐसा पत्थर जो ठोकर का बाइस बनेगा, एक
चटान जो ठेस लगने का सबब होगी। यरूशलम के
बाशिन्दे उस के फंदे और जाल में उलझ जाएंगे।
15 उन में से बहुत सारे ठोकर खाएँगे। वह गिर कर
पाश पाश हो जाएंगे और फंदे में फंस कर पकड़े
जाएंगे।"

रब का कलाम शागिर्दों के हवाले करना है

16 मुझे मुकाशफ़े को लिफाफे में डाल कर महफ़ूज़
रखना है, अपने शागिर्दों के दरमियान ही अल्लाह
की हिदायत पर मुहर लगानी है। 17 मैं ख़ुद रब के
इन्तिज़ार में रहूँगा जिस ने अपने चिहरे को याक़ूब के
घराने से छुपा लिया है। उसी से मैं उम्मीद रखूँगा।
18 अब मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने
मुझे दिए हैं, हम इस्राईल में इलाही और मोजिज़ाना
निशान हैं जिन से रब्ब-उल-अफ़्वाज जो कोह-ए-
सिय्यून पर सुकूनत करता है लोगों को आगाह कर
रहा है।
19 लोग तुम्हें मश्वरा देते हैं, "जाओ, मुर्दों से राबिता
करने वालों और क़िस्मत का हाल बताने वालों से
पता करो, उन से जो बारीक आवाज़ें निकालते और
बुड़बुड़ाते हुए जवाब देते हैं।" लेकिन उन से कहो,
"क्या मुनासिब नहीं कि क़ौम अपने ख़ुदा से मश्वरा
करे? हम ज़िन्दों की ख़ातिर मर्दों से बात क्यूँ करें?"
20 अल्लाह की हिदायत और मुकाशफ़ा की तरफ़
रुजू करो! जो इन्कार करे उस पर सुब्ह की
रौशनी कभी नहीं चमकेगी। 21 ऐसे लोग मायूस और
फ़ाक़ाकश हालत में मुल्क में मारे मारे फिरेंगे। और
जब भूके मरने को होंगे तो झुँझला कर अपने बादशाह
और अपने ख़ुदा पर लानत करेंगे। वह ऊपर आसमान
22 और नीचे ज़मीन की तरफ़ देखेंगे, लेकिन जहाँ
भी नज़र पड़े वहाँ मुसीबत, अंधेरा और हौलनाक

---

[b] इब्रानी में 'इम्मानूएल' लिखा है, देखिए 7:14 का फ़ुटनोट।

तारीकी ही दिखाई देगी। उन्हें तारीकी ही तारीकी में डाल दिया जाएगा।

आने वाले मसीह की रौशनी

9 1 लेकिन मुसीबतज़दा तारीकी में नहीं रहेंगे। गो पहले ज़बूलून का इलाक़ा और नफ़ताली का इलाक़ा पस्त हुआ है, लेकिन आइन्दा झील के साथ का रास्ता, दरया-ए-यर्दन के पार, ग़ैरयहूदियों का गलील सरफ़राज़ होगा।

2 अंधेरे में चलने वाली क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी, मौत के साय में डूबे हुए मुल्क के बाशिन्दों पर रौशनी चमकी। 3 तू ने क़ौम को बढ़ा कर उसे बड़ी ख़ुशी दिलाई है। तेरे हुज़ूर वह यूँ ख़ुशी मनाते हैं जिस तरह फ़सल काटते और लूट का माल बाँटते वक़्त मनाई जाती है। 4 तू ने अपनी क़ौम को उस दिन की तरह छुटकारा दिया जब तू ने मिदियान को शिकस्त दी थी। उसे दबाने वाला जूआ टूट गया, और उस पर ज़ुल्म करने वाले की लाठी टुकड़े टुकड़े हो गई है। 5 ज़मीन पर ज़ोर से मारे गए फ़ौजी जूते और ख़ून में लतपत फ़ौजी वर्दियाँ सब हवाला-ए-आतिश हो कर भस्म हो जाएँगी।

6 क्यूँकि हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उस के कंधों पर हुकूमत का इख़तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। 7 उस की हुकूमत ज़ोर पकड़ती जाएगी, और अम्न-ओ-अमान की इन्तिहा नहीं होगी। वह दाऊद के तख़्त पर बैठ कर उस की सल्तनत पर हुकूमत करेगा, वह उसे अदल-ओ-इन्साफ़ से मज़बूत करके अब से अबद तक क़ाइम रखेगा। रब्ब-उल-अफ़्वाज की ग़ैरत ही इसे अन्जाम देगी।

रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा

8 रब ने याक़ूब के ख़िलाफ़ पैग़ाम भेजा, और वह इस्राईल पर नाज़िल हो गया है। 9 इस्राईल और सामरिया के तमाम बाशिन्दे इसे जल्द ही जान जाएंगे, हालाँकि वह इस वक़्त बड़ी शेख़ी मार कर कहते हैं, 10 "बेशक हमारी ईंटों की दीवारें गिर गई हैं, लेकिन हम उन्हें तराशे हुए पत्थरों से दुबारा तामीर कर लेंगे। बेशक हमारे अन्जीर-तूत के दरख़्त कट गए हैं, लेकिन कोई बात नहीं, हम उन की जगह देवदार के दरख़्त लगा लेंगे।" 11 लेकिन रब इस्राईल के दुश्मन रज़ीन को तक़वियत दे कर उस के ख़िलाफ़ भेजेगा बल्कि इस्राईल के तमाम दुश्मनों को उस पर हम्ला करने के लिए उभारेगा। 12 शाम के फ़ौजी मशरिक़ से और फ़िलिस्ती मग़रिब से मुँह फाड़ कर इस्राईल को हड़प कर लेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

13 क्यूँकि इस के बावुजूद भी लोग सज़ा देने वाले के पास वापस नहीं आएँगे और रब्ब-उल-अफ़्वाज के तालिब नहीं होंगे। 14 नतीजे में रब एक ही दिन में इस्राईल का न सिर्फ़ सर बल्कि उस की दुम भी काटेगा, न सिर्फ़ खजूर की शानदार शाख़ बल्कि मामूली सा सरकंडा भी तोड़ेगा। 15 बुज़ुर्ग और असर-ओ-रसूख़ वाले इस्राईल का सर हैं जबकि झूटी तालीम देने वाले नबी उस की दुम हैं। 16 क्यूँकि क़ौम के राहनुमा लोगों को ग़लत राह पर ले गए हैं, और जिन की राहनुमाई वह कर रहे हैं उन के दिमाग़ में फ़ुतूर आ गया है। 17 इस लिए रब न क़ौम के जवानों से ख़ुश होगा, न यतीमों और बेवाओं पर रहम करेगा। क्यूँकि सब के सब बेदीन और शरीर हैं, हर मुँह कुफ़्र बकता है। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

18 क्यूँकि उन की बेदीनी की भड़कती हुई आग काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे भस्म कर देती है, बल्कि गुंजान जंगल भी उस की ज़द में आ कर धुएँ के काले बादल छोड़ता है। 19 रब्ब-उल-अफ़्वाज के ग़ज़ब से मुल्क झुलस जाएगा और उस के बाशिन्दे आग का लुक़्मा बन जाएंगे। यहाँ तक कि कोई भी अपने भाई पर तरस नहीं खाएगा। 20 और गो हर एक दाईं तरफ़ मुड़ कर सब कुछ हड़प कर जाए तो भी भूका रहेगा, गो बाईं तरफ़ रुख़ करके सब कुछ

निगल जाए तो भी सेर नहीं होगा। हर एक अपने
पड़ोसी को खाएगा, 21 मनस्सी इफ़्राईम को और
इफ़्राईम मनस्सी को। और दोनों मिल कर यहूदाह
पर हम्ला करेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा
बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

10 1 तुम पर अफ़्सोस जो ग़लत क़वानीन
सादिर करते और ज़ालिम फ़त्वे देते हो
2 ताकि ग़रीबों का हक़ मारो और मज़्लूमों के हुक़ूक़
पामाल करो। बेवाएँ तुम्हारा शिकार होती हैं, और
तुम यतीमों को लूट लेते हो। 3 लेकिन अदालत के
दिन तुम क्या करोगे, जब दूर दूर से ज़बरदस्त तूफ़ान
तुम पर आन पड़ेगा तो तुम मदद के लिए किस
के पास भागोगे और अपना माल-ओ-दौलत कहाँ
महफ़ूज़ रख छोड़ोगे? 4 जो झुक कर क़ैदी न बने वह
गिर कर हलाक हो जाएगा। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा
नहीं होगा बल्कि उस का हाथ मारने के लिए उठा ही
रहेगा।

असूर की भी अदालत होगी

5 असूर पर अफ़्सोस जो मेरे ग़ज़ब का आला है,
जिस के हाथ में मेरे क़हर की लाठी है। 6 मैं उसे एक
बेदीन क़ौम के ख़िलाफ़ भेज रहा हूँ, एक क़ौम के
ख़िलाफ़ जो मुझे ग़ुस्सा दिलाती है। मैं ने असूर को
हुक्म दिया है कि उसे लूट कर गली की कीचड़ की
तरह पामाल कर।

7 लेकिन उस का अपना इरादा फ़र्क़ है। वह ऐसी
सोच नहीं रखता बल्कि सब कुछ तबाह करने पर
तुला हुआ है, बहुत क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद करने
पर आमादा है। 8 वह फ़ख़र करता है, "मेरे तमाम
अफ़्सर तो बादशाह हैं। 9 फिर हमारी फ़ुतूहात पर ग़ौर
करो। कर्किमीस, कल्नो, अर्फ़ाद, हमात, दमिश्क़
और सामरिया जैसे तमाम शहर यके बाद दीगरे मेरे
क़ब्ज़े में आ गए हैं। 10 मैं ने कई सल्तनतों पर क़ाबू
पा लिया है जिन के बुत यरूशलम और सामरिया के
बुतों से कहीं बेहतर थे। 11 सामरिया और उस के बुतों
को मैं बर्बाद कर चुका हूँ, और अब मैं यरूशलम
और उस के बुतों के साथ भी ऐसा ही करूँगा!"

12 लेकिन कोह-ए-सिय्यून पर और यरूशलम में
अपने तमाम मक़ासिद पूरे करने के बाद रब
फ़रमाएगा, "मैं शाह-ए-असूर को भी सज़ा दूँगा,
क्यूँकि उस के मग़ुरूर दिल से कितना बुरा काम उभर
आया है, और उस की आँखें कितने ग़ुरूर से देखती
हैं। 13 वह शेख़ी मार कर कहता है, 'मैं ने अपने ही
ज़ोर-ए-बाज़ू और हिक्मत से यह सब कुछ कर लिया
है, क्यूँकि मैं समझदार हूँ। मैं ने क़ौमों की हुदूद ख़त्म
करके उन के ख़ज़ानों को लूट लिया और ज़बरदस्त
साँड की तरह उन के बादशाहों को मार मार कर
ख़ाक में मिला दिया है। 14 जिस तरह कोई अपना
हाथ घोंसले में डाल कर अंडे निकाल लेता है उसी
तरह मैं ने क़ौमों की दौलत छीन ली है। आम आदमी
परिन्दों को भगा कर उन के छोड़े हुए अंडे इकट्ठे कर
लेता है जबकि मैं ने यही सुलूक दुनिया के तमाम
ममालिक के साथ किया। जब मैं उन्हें अपने क़ब्ज़े
में लाया तो एक ने भी अपने परों को फड़फड़ाने या
चोंच खोल कर चीं चीं करने की जुरअत न की'।"

15 लेकिन क्या कुल्हाड़ी उस के सामने शेख़ी
बघारती जो उसे चलाता है? क्या आरी उस के सामने
अपने आप पर फ़ख़र करती जो उसे इस्तेमाल करता
है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि लाठी
पकड़ने वाले को घुमाए या डंडा आदमी को उठाए।

16 चुनाँचे क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
असूर के मोटे-ताज़े फ़ौजियों में एक मर्ज़ फैला देगा
जो उन के जिस्मों को रफ़्ता रफ़्ता ज़ाए करेगा।
असूर की शान-ओ-शौकत के नीचे एक भड़कती हुई
आग लगाई जाएगी। 17 उस वक़्त इस्राईल का नूर
आग और इस्राईल का क़ुद्दूस शोला बन कर असूर
की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों को एक
ही दिन में भस्म कर देगा। 18 वह उस के शानदार
जंगलों और बाग़ों को मुकम्मल तौर पर तबाह कर
देगा, और वह मरीज़ की तरह घुल घुल कर ज़ाइल

हो जाएंगे। 19 जंगलों के इतने कम दरख़्त बचेंगे कि
बच्चा भी उन्हें गिन कर किताब में दर्ज कर सकेगा।

इस्राईल का छोटा सा हिस्सा बच जाएगा

20 उस दिन से इस्राईल का बक़िया यानी याक़ूब के
घराने का बचा-खुचा हिस्सा उस पर मज़ीद इन्हिसार
नहीं करेगा जो उसे मारता रहा था, बल्कि वह
पूरी वफ़ादारी से इस्राईल के क़ुद्दूस, रब पर भरोसा
रखेगा। 21 बक़िया वापस आएगा, याक़ूब का बचा-
खुचा हिस्सा क़वी ख़ुदा के हुज़ूर लौट आएगा। 22 ऐ
इस्राईल, गो तू साहिल पर की रेत जैसा बेशुमार क्यूँ न
हो तो भी सिर्फ़ एक बचा हुआ हिस्सा वापस आएगा।
तेरे बर्बाद होने का फ़ैसला हो चुका है, और इन्साफ़
का सैलाब मुल्क पर आने वाला है। 23 क्यूँकि इस
का अटल फ़ैसला हो चुका है कि क़ादिर-ए-मुतलक़
रब्ब-उल-अफ़्वाज पूरे मुल्क पर हलाकत लाने को
है।

24 इस लिए क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून में बसने वाली मेरी क़ौम,
असूर से मत डरना जो लाठी से तुझे मारता है और
तेरे ख़िलाफ़ लाठी यूँ उठाता है जिस तरह पहले मिस्र
किया करता था। 25 मेरा तुझ पर ग़ुस्सा जल्द ही
ठंडा हो जाएगा और मेरा ग़ज़ब असूरियों पर नाज़िल
हो कर उन्हें ख़त्म करेगा।" 26 जिस तरह रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने मिदियानियों को मारा जब जिदाऊन ने
ओरेब की चटान पर उन्हें शिकस्त दी उसी तरह वह
असूरियों को भी कोड़े से मारेगा। और जिस तरह रब
ने अपनी लाठी मूसा के ज़रीए समुन्दर के ऊपर उठाई
और नतीजे में मिस्र की फ़ौज उस में डूब गई बिलकुल
उसी तरह वह असूरियों के साथ भी करेगा। 27 उस
दिन असूर का बोझ तेरे कंधों पर से उतर जाएगा,
और उस का जूआ तेरी गर्दन पर से दूर हो कर टूट
जाएगा।

यरूशलम की तरफ़ फ़ातेह की तरक़्क़ी

फ़ातेह ने यशीमोन की तरफ़ से चढ़ कर 28 अय्यात
पर हम्ला किया है। उस ने मिग्रोन में से गुज़र कर
मिक्मास में अपना लश्करी सामान छोड़ रखा है।
29 दर्रे को पार करके वह कहते हैं, "आज हम रात
को जिबा में गुज़ारेंगे।" रामा थरथरा रहा और साऊल
का शहर जिबिआ भाग गया है। 30 ऐ जल्लीम बेटी,
ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ लैसा, ध्यान दे! ऐ अनतोत, उसे
जवाब दे! 31 मदमीना फ़रार हो गया और जेबीम के
बाशिन्दों ने दूसरी जगहों में पनाह ली है। 32 आज ही
फ़ातेह नोब के पास रुक कर सिय्यून बेटी के पहाड़
यानी कोह-ए-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा। [c]

33 देखो, क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज बड़े
ज़ोर से शाख़ों को तोड़ने वाला है। तब ऊँचे ऊँचे
दरख़्त कट कर गिर जाएंगे, और जो सरफ़राज़ हैं
उन्हें ख़ाक में मिलाया जाएगा। 34 वह कुल्हाड़ी ले
कर घने जंगल को काट डालेगा बल्कि लुबनान भी
ज़ोरावर के हाथों गिर जाएगा।

मसीह की पुरअम्न सल्तनत

11 1 यस्सी [d]के मुढ में से कोंपल फूट
निकलेगी, और उस की बची हुई जड़ों
से शाख़ निकल कर फल लाएगी। 2 रब का रूह
उस पर ठहरेगा यानी हिक्मत और समझ का रूह,
मश्वरत और क़ुव्वत का रूह, इर्फ़ान और रब के
ख़ौफ़ का रूह। 3 रब का ख़ौफ़ उसे अज़ीज़ होगा।
न वह दिखावे की बिना पर फ़ैसला करेगा, न सुनी-
सुनाई बातों की बिना पर फ़त्वा देगा 4 बल्कि इन्साफ़
से बेबसों की अदालत करेगा और ग़ैरजानिबदारी
से मुल्क के मुसीबतज़दों का फ़ैसला करेगा। अपने
कलाम की लाठी से वह ज़मीन को मारेगा और अपने
मुँह की फूँक से बेदीन को हलाक करेगा। 5 वह

---

[c]एक और मुमकिना तर्जुमा : आज ही फ़ातेह नोब के पास रुक कर कोह-ए-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा ताकि उसे बड़ा बनाए।

[d]यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नस्ल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

रास्तबाज़ी के पटके और वफ़ादारी के ज़ेरजामे से
मुलब्बस रहेगा।
6 भेड़िया उस वक़्त भेड़ के बच्चे के पास ठहरेगा,
और चीता भेड़ के बच्चे के पास आराम करेगा।
बछड़ा, जवान शेरबबर और मोटा-ताज़ा बैल मिल
कर रहेंगे, और छोटा लड़का उन्हें हाँक कर सँभालेगा
। 7 गाय रीछ के साथ चरेगी, और उन के बच्चे एक
दूसरे के साथ आराम करेंगे। शेरबबर बैल की तरह
भूसा खाएगा। 8 शीरख़्वार बच्चा नाग की बाँबी के
क़रीब खेलेगा, और जवान बच्चा अपना हाथ ज़हरीले
साँप के बिल में डालेगा।
9 मेरे तमाम मुक़द्दस पहाड़ पर न ग़लत और न
तबाहकुन काम किया जाएगा। क्यूँकि मुल्क रब के
इर्फ़ान से यूँ मामूर होगा जिस तरह समुन्दर पानी से
भरा रहता है। 10 उस दिन यस्सी [e] की जड़ से फूटी
हुई कोंपल उम्मतों के लिए झंडा होगा। क़ौमें उस
की तालिब होंगी, और उस की सुकूनतगाह जलाली
होगी।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

11 उस दिन रब एक बार फिर अपना हाथ बढ़ाएगा
ताकि अपनी क़ौम का वह बचा-खुचा हिस्सा दुबारा
हासिल करे जो असूर, शिमाली और जुनूबी मिस्र,
एथोपिया, ऐलाम, बाबल, हमात और साहिली
इलाक़ों में मुन्तशिर होगा। 12 वह क़ौमों के लिए झंडा
गाड़ कर इस्राईल के जिलावतनों को इकट्ठा करेगा।
हाँ, वह यहूदाह के बिखरे अफ़राद को दुनिया के
चारों कोनों से ला कर जमा करेगा। 13 तब इस्राईल
का हसद ख़त्म हो जाएगा, और यहूदाह के दुश्मन
नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएंगे। न इस्राईल यहूदाह से
हसद करेगा, न यहूदाह इस्राईल से दुश्मनी रखेगा।
14 फिर दोनों मग़रिब में फ़िलिस्ती मुल्क पर झपट
पड़ेंगे और मिल कर मशरिक़ के बाशिन्दों को लूट
लेंगे। अदोम और मोआब उन के क़ब्ज़े में आएँगे,
और अम्मोन उन के ताबे हो जाएगा। 15 रब बहर-
ए-क़ुल्ज़ुम को ख़ुश्क करेगा और साथ साथ दरया-
ए-फ़ुरात के ऊपर हाथ हिला कर उस पर ज़ोरदार
हवा चलाएगा। तब दरया सात ऐसी नहरों में बट
जाएगा जो पैदल ही पार की जा सकेंगी। 16 एक ऐसा
रास्ता बनेगा जो रब के बचे हुए अफ़राद को असूर
से इस्राईल तक पहुँचाएगा, बिलकुल उस रास्ते की
तरह जिस ने इस्राईलियों को मिस्र से निकलते वक़्त
इस्राईल तक पहुँचाया था।

बचे हुओं की हम्द-ओ-सना

12 1 उस दिन तुम गीत गाओगे,
"ऐ रब, मैं तेरी सताइश करूँगा! यक़ीनन
तू मुझ से नाराज़ था, लेकिन अब तेरा ग़ज़ब मुझ पर
से दूर हो जाए और तू मुझे तसल्ली दे।
2 अल्लाह मेरी नजात है। उस पर भरोसा रख कर मैं
दहशत नहीं खाऊँगा। क्यूँकि रब ख़ुदा मेरी क़ुव्वत
और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।"
3 तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे।
4 उस दिन तुम कहोगे, "रब की सताइश करो! उस
का नाम ले कर उसे पुकारो! जो कुछ उस ने किया
है दुनिया को बताओ, उस के नाम की अज़मत का
एलान करो।
5 रब की तम्जीद का गीत गाओ, क्यूँकि उस ने
ज़बरदस्त काम किया है, और इस का इल्म पूरी
दुनिया तक पहुँचे।
6 ऐ यरूशलम की रहने वाली, शादियाना बजा कर
ख़ुशी के नारे लगा! क्यूँकि इस्राईल का क़ुद्दूस अज़ीम
है, और वह तेरे दरमियान ही सुकूनत करता है।

बाबल के ख़िलाफ़ एलान

13 1 दर्ज-ए-ज़ैल बाबल के बारे में वह एलान है
जो यसायाह बिन आमूस ने रोया में देखा।

---

[e] यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नस्ल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

2 नंगे पहाड़ पर झंडा गाड़ दो। उन्हें बुलन्द आवाज़
दो, हाथ हिला कर उन्हें शुरफ़ा के दरवाज़ों में दाख़िल
होने का हुक्म दो। 3 मैं ने अपने मुक़द्दसीन को काम
पर लगा दिया है, मैं ने अपने सूरमाओं को जो मेरी
अज़मत की ख़ुशी मनाते हैं बुला लिया है ताकि मेरे
ग़ज़ब का आला-ए-कार बनें।
4 सुनो! पहाड़ों पर बड़े हुजूम का शोर मच रहा
है। सुनो! मुतअद्दिद ममालिक और जमा होने वाली
क़ौमों का ग़ुल-ग़पाड़ा सुनाई दे रहा है। रब्ब-उल-
अफ़्वाज जंग के लिए फ़ौज जमा कर रहा है। 5 उस के
फ़ौजी दूरदराज़ इलाक़ों बल्कि आसमान की इन्तिहा
से आ रहे हैं। क्यूँकि रब अपने ग़ज़ब के आलात के
साथ आ रहा है ताकि तमाम मुल्क को बर्बाद कर
दे।
6 वावैला करो, क्यूँकि रब का दिन क़रीब ही
है, वह दिन जब क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से
तबाही मचेगी। 7 तब तमाम हाथ बेहिस्स-ओ-हरकत
हो जाएंगे, और हर एक का दिल हिम्मत हार देगा।
8 दहशत उन पर छा जाएगी, और वह जाँकनी और
दर्द-ए-ज़ह की सी गिरिफ़्त में आ कर जन्म देने वाली
औरत की तरह तड़पेंगे। एक दूसरे को डर के मारे
घूर घूर कर उन के चिहरे आग की तरह तमतमा रहे
होंगे।
9 देखो, रब का बेरहम दिन आ रहा है जब उस
का क़हर और शदीद ग़ज़ब नाज़िल होगा। उस वक़्त
मुल्क तबाह हो जाएगा और गुनाहगार को उस में से
मिटा दिया जाएगा। 10 आसमान के सितारे और उन
के झुर्मट नहीं चमकेंगे, सूरज तुलू होते वक़्त तारीक
ही रहेगा, और चाँद की रौशनी ख़त्म होगी।
11 मैं दुनिया को उस की बदकारी का अज्र और
बेदीनों को उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा, मैं शोख़ों
का घमंड ख़त्म कर दूँगा और ज़ालिमों का ग़ुरूर
ख़ाक में मिला दूँगा। 12 लोग ख़ालिस सोने से कहीं
ज़्यादा नायाब होंगे, इन्सान ओफ़ीर के क़ीमती सोने
की निस्बत कहीं ज़्यादा कमयाब होगा।
13 क्यूँकि आसमान रब्ब-उल-अफ़्वाज के क़हर के
सामने काँप उठेगा, उस के शदीद ग़ज़ब के नाज़िल
होने पर ज़मीन लरज़ कर अपनी जगह से खिसक
जाएगी। 14 बाबल के तमाम बाशिन्दे शिकारी के
सामने दौड़ने वाले ग़ज़ाल और चरवाहे से महरूम
भेड़-बकरियों की तरह इधर उधर भाग कर अपने
मुल्क और अपनी क़ौम में वापस आने की कोशिश
करेंगे। 15 जो भी दुश्मन के क़ाबू में आएगा उसे छेदा
जाएगा, जिसे भी पकड़ा जाएगा उसे तलवार से मारा
जाएगा। 16 उन के देखते देखते दुश्मन उन के बच्चों
को ज़मीन पर पटख़ देगा और उन के घरों को लूट
कर उन की औरतों की इस्मतदरी करेगा।
17 मैं मादियों को उन पर चढ़ा लाऊँगा, ऐसे लोगों
को जिन्हें रिश्वत से नहीं आज़माया जा सकता, जो
सोने-चाँदी की पर्वा ही नहीं करते। 18 उन के तीर
नौजवानों को मार देंगे। न वह शीरख़्वारों पर तरस
खाएँगे, न बच्चों पर रहम करेंगे।

बाबल जंगली जानवरों का घर बन जाएगा

19 अल्लाह बाबल को जो तमाम ममालिक का ताज
और बाबलियों का ख़ास फ़ख़र है रू-ए-ज़मीन पर
से मिटा डालेगा। उस दिन वह सदूम और अमूरा की
तरह तबाह हो जाएगा। 20 आइन्दा उसे कभी दुबारा
बसाया नहीं जाएगा, नस्ल-दर-नस्ल वह वीरान ही
रहेगा। न बदू अपना तम्बू वहाँ लगाएगा, और न
गल्लाबान अपने रेवड़ उस में ठहराएगा। 21 सिर्फ़
रेगिस्तान के जानवर खंडरात में जा बसेंगे। शहर
के घर उन की आवाज़ों से गूँज उठेंगे, उक़ाबी उल्लू
वहाँ ठहरेंगे, और बकरानुमा जिन उस में रक़्स करेंगे।
22 जंगली कुत्ते उस के महलों में रोएँगे, और गीदड़
ऐश-ओ-इश्रत के क़सरों में अपनी दर्द भरी आवाज़ें
निकालेंगे। बाबल का ख़ातमा क़रीब ही है, अब देर
नहीं लगेगी।

इस्राईली वापस आएँगे

14 1 क्यूँकि रब याक़ूब पर तरस खाएगा, वह
दुबारा इस्राईलियों को चुन कर उन्हें उन के
अपने मुल्क में बसा देगा। परदेसी भी उन के साथ
मिल जाएंगे, वह याक़ूब के घराने से मुन्सलिक हो
जाएंगे। 2 दीगर क़ौमें इस्राईलियों को ले कर उन के
वतन में वापस पहुँचा देंगी। तब इस्राईल का घराना
इन परदेसियों को विरसे में पाएगा, और यह रब
के मुल्क में उन के नौकर-नौकरानियाँ बन कर उन
की ख़िदमत करेंगे। जिन्हों ने उन्हें जिलावतन किया
था उन ही को वह जिलावतन किए रखेंगे, जिन्हों
ने उन पर ज़ुल्म किया था उन ही पर वह हुकूमत
करेंगे। 3 जिस दिन रब तुझे मुसीबत, बेचैनी और
ज़ालिमाना ग़ुलामी से आराम देगा 4 उस दिन तू बाबल
के बादशाह पर तन्ज़ का गीत गाएगा,

बाबल पर तन्ज़ का गीत

"यह कैसी बात है? ज़ालिम नेस्त-ओ-नाबूद और
उस के हमले ख़त्म हो गए हैं। 5 रब ने बेदीनों की
लाठी तोड़ कर हुक्मरानों का वह शाही असा टुकड़े
टुकड़े कर दिया है 6 जो तैश में आ कर क़ौमों को
मुसलसल मारता रहा और ग़ुस्से से उन पर हुकूमत
करता, बेरहमी से उन के पीछे पड़ा रहा। 7 अब पूरी
दुनिया को आराम-ओ-सुकून हासिल हुआ है, अब
हर तरफ़ ख़ुशी के नारे सुनाई दे रहे हैं। 8 जूनीपर के
दरख़्त और लुबनान के देवदार भी तेरे अन्जाम पर
ख़ुश हो कर कहते हैं, 'शुक्र है! जब से तू गिरा दिया
गया कोई यहाँ चढ़ कर हमें काटने नहीं आता।'

9 पाताल तेरे उतरने के बाइस हिल गया है। तेरे
इन्तिज़ार में वह मुर्दा रूहों को हरकत में ला रहा है।
वहाँ दुनिया के तमाम रईस और अक़्वाम के तमाम
बादशाह अपने तख़्तों से खड़े हो कर तेरा इस्तिक़्बाल
करेंगे। 10 सब मिल कर तुझ से कहेंगे, 'अब तू भी हम
जैसा कमज़ोर हो गया है, तू भी हमारे बराबर हो गया
है!' 11 तेरी तमाम शान-ओ-शौकत पाताल में उतर गई
है, तेरे सितार ख़ामोश हो गए हैं। अब कीड़े तेरा गद्दा
और केच्चे तेरा कम्बल होंगे।

12 ऐ सितारा-ए-सुब्ह, ऐ इब्न-ए-सहर, तू आसमान
से किस तरह गिर गया है! जिस ने दीगर ममालिक
को शिकस्त दी थी वह अब ख़ुद पाश पाश हो गया
है। 13 दिल में तू ने कहा, 'मैं आसमान पर चढ़ कर
अपना तख़्त अल्लाह के सितारों के ऊपर लगा लूँगा, मैं
इन्तिहाई शिमाल में उस पहाड़ पर जहाँ देवता जमा
होते हैं तख़्तनशीन हूँगा। 14 मैं बादलों की बुलन्दियों
पर चढ़ कर क़ादिर-ए-मुतलक़ के बिलकुल बराबर
हो जाऊँगा।' 15 लेकिन तुझे तो पाताल में उतारा
जाएगा, उस के सब से गहरे गढ़े में गिराया जाएगा।

16 जो भी तुझ पर नज़र डालेगा वह ग़ौर से देख
कर पूछेगा, 'क्या यही वह आदमी है जिस ने ज़मीन
को हिला दिया, जिस के सामने दीगर ममालिक काँप
उठे? 17 क्या इसी ने दुनिया को वीरान कर दिया और
उस के शहरों को ढा कर क़ैदियों को घर वापस जाने
की इजाज़त न दी?'

18 दीगर ममालिक के तमाम बादशाह बड़ी इज़्ज़त
के साथ अपने अपने मक़बरों में पड़े हुए हैं। 19 लेकिन
तुझे अपनी क़ब्र से दूर किसी बेकार कोंपल की तरह
फैंक दिया जाएगा। तुझे मक़्तूलों से ढाँका जाएगा,
उन से जिन को तलवार से छेदा गया है, जो पथरीले
गढ़ों में उतर गए हैं। तू पाँओ तले रौंदी हुई लाश जैसा
होगा, 20 और तद्फ़ीन के वक़्त तू दीगर बादशाहों से
जा नहीं मिलेगा। क्यूँकि तू ने अपने मुल्क को तबाह
और अपनी क़ौम को हलाक कर दिया है। चुनाँचे अब
से अबद तक इन बेदीनों की औलाद का ज़िक्र तक
नहीं किया जाएगा। 21 इस आदमी के बेटों को फाँसी
देने की जगह तय्यार करो! क्यूँकि उन के बापदादा
का क़ुसूर इतना संगीन है कि उन्हें मरना ही है। ऐसा
न हो कि वह दुबारा उठ कर दुनिया पर क़ब्ज़ा कर
लें, कि रू-ए-ज़मीन उन के शहरों से भर जाए।"

रब के हाथों बाबल का अन्जाम

22 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मैं उन के ख़िलाफ़ यूँ उठूँगा कि बाबल का नाम-ओ-निशान
तक नहीं रहेगा। मैं उस की औलाद को रू-ए-ज़मीन
पर से मिटा दूँगा, और एक भी नहीं बचने का।
23 बाबल ख़ारपुश्त का मस्कन और दलदल का
इलाक़ा बन जाएगा, क्यूँकि मैं ख़ुद उस में तबाही का
झाड़ू फेर दूँगा।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान
है।

असूरी फ़ौज की तबाही

24 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने क़सम खा कर फ़रमाया
है, “यक़ीनन सब कुछ मेरे मन्सूबे के मुताबिक़ ही
होगा, मेरा इरादा ज़रूर पूरा हो जाएगा। 25 मैं असूर
को अपने मुल्क में चिकनाचूर कर दूँगा और उसे
अपने पहाड़ों पर कुचल डालूँगा। तब उस का जूआ
मेरी क़ौम पर से दूर हो जाएगा, और उस का बोझ
उस के कंधों पर से उतर जाएगा।” 26 पूरी दुनिया के
बारे में यह मन्सूबा अटल है, और रब अपना हाथ
तमाम क़ौमों के ख़िलाफ़ बढ़ा चुका है। 27 रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने फ़ैसला कर लिया है, तो कौन इसे मन्सूख़
करेगा? उस ने अपना हाथ बढ़ा दिया है, तो कौन उसे
रोकेगा?

फ़िलिस्तियों का अन्जाम क़रीब है

28 ज़ैल का कलाम उस साल नाज़िल हुआ जब
आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई।
29 ऐ तमाम फ़िलिस्ती मुल्क, इस पर ख़ुशी मत मना
कि हमें मारने वाली लाठी टूट गई है। क्यूँकि साँप
की बची हुई जड़ से ज़हरीला साँप फूट निकलेगा,
और उस का फल शोलाफ़िशाँ उड़नअज़दहा होगा।
30 तब ज़रूरतमन्दों को चरागाह मिलेगी, और ग़रीब
महफ़ूज़ जगह पर आराम करेंगे। लेकिन तेरी जड़ को
मैं काल से मार दूँगा, और जो बच जाएँ उन्हें भी
हलाक कर दूँगा।
31 ऐ शहर के दरवाज़े, वावैला कर! ऐ शहर,
ज़ोर से चीख़ें मार! ऐ फ़िलिस्तियो, हिम्मत हार कर
लड़खड़ाते जाओ। क्यूँकि शिमाल से तुम्हारी तरफ़
धुआँ बढ़ रहा है, और उस की सफ़ों में पीछे रहने
वाला कोई नहीं है। 32 तो फिर हमारे पास भेजे हुए
क़ासिदों को हम क्या जवाब दें? यह कि रब ने
सिय्यून को क़ाइम रखा है, कि उस की क़ौम के
मज़्लूम उसी में पनाह लेंगे।

मोआब के अन्जाम का एलान

15 1 मोआब के बारे में रब का फ़रमान :
एक ही रात में मोआब का शहर आर
तबाह हो गया है। एक ही रात में मोआब का शहर
क़ीर बर्बाद हो गया है। 2 अब दीबोन के बाशिन्दे
मातम करने के लिए अपने मन्दिर और पहाड़ी
क़ुर्बानगाहों की तरफ़ चढ़ रहे हैं। मोआब अपने
शहरों नबू और मीदबा पर वावैला कर रहा है। हर
सर मुंडा हुआ और हर दाढ़ी कट गई है। 3 गलियों
में वह टाट से मुलब्बस फिर रहे हैं, छतों पर और
चौकों में सब रो रो कर आह-ओ-बुका कर रहे हैं।
4 हस्बोन और इलीआली मदद के लिए पुकार रहे हैं,
और उन की आवाज़ें यहज़ तक सुनाई दे रही हैं। इस
लिए मोआब के मुसल्लह मर्द जंग के नारे लगा रहे हैं,
गो वह अन्दर ही अन्दर काँप रहे हैं।
5 मेरा दिल मोआब को देख कर रो रहा है। उस के
मुहाजिरीन भाग कर ज़ुग़र और इज्लत-शलीशियाह
तक पहुँच रहे हैं। लोग रो रो कर लूहीत की तरफ़
चढ़ रहे हैं, वह होरोनाइम तक जाने वाले रास्ते पर
चलते हुए अपनी तबाही पर गिर्या-ओ-ज़ारी कर रहे
हैं। 6 निम्रीम का पानी सूख गया है, घास झुलस गई है,
तमाम हरियाली ख़त्म हो गई है, सब्ज़ाज़ारों का नाम-
ओ-निशान तक नहीं रहा। 7 इस लिए लोग अपना
सारा जमाशुदा सामान समेट कर वादी-ए-सफ़ेदा को
उबूर कर रहे हैं। 8 चीख़ें मोआब की हुदूद तक गूँज
रही हैं, हाय हाय की आवाज़ें इज्लाइम और बैर-
एलीम तक सुनाई दे रही हैं। 9 लेकिन गो दीमोन की

नहर ख़ून से सुर्ख़ हो गई है, ताहम मैं उस पर मज़ीद
मुसीबत लाऊँगा। मैं शेरबबर भेजूँगा जो उन पर भी
धावा बोलेंगे जो मोआब से बच निकले होंगे और उन
पर भी जो मुल्क में पीछे रह गए होंगे।

मोआब इस्राईलियों से मदद माँगेगा

16 1 मुल्क का जो हुक्मरान रेगिस्तान के पार
सिला में है उस की तरफ़ से सिय्यून बेटी
के पहाड़ पर मेंढा भेज दो। 2 मोआब की बेटियाँ
घोंसले से भगाए हुए परिन्दों की तरह दरया-ए-अर्नोन
के पायाब मक़ामों पर इधर उधर फड़फड़ा रही हैं।
3 "हमें कोई मश्वरा दे, कोई फ़ैसला पेश कर। हम
पर साया डाल ताकि दोपहर की तपती धूप हम पर
न पड़े बल्कि रात जैसा अंधेरा हो। मफ़रूरों को
छुपा दे, दुश्मन को पनाहगुज़ीनों के बारे में इत्तिला
न दे। 4 मोआबी मुहाजिरों को अपने पास ठहरने दे,
मोआबी मफ़रूरों के लिए पनाहगाह हो ताकि वह
हलाकू के हाथ से बच जाएँ।"

लेकिन ज़ालिम का अन्जाम आने वाला है। तबाही
का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा, और कुचलने वाला
मुल्क से ग़ाइब हो जाएगा। 5 तब अल्लाह अपने फ़ज़्ल
से दाऊद के घराने के लिए तख़्त क़ाइम करेगा। और
जो उस पर बैठेगा वह वफ़ादारी से हुकूमत करेगा।
वह इन्साफ़ का तालिब रह कर अदालत करेगा और
रास्ती क़ाइम रखने में माहिर होगा।

मोआब की मुनासिब सज़ा पर अफ़सोस

6 हम ने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है,
क्यूँकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर, घमंडी
और शोख़चशम है। लेकिन उस की डींगें अबस हैं।
7 इस लिए मोआबी अपने आप पर आह-ओ-ज़ारी
कर रहे, सब मिल कर आहें भर रहे हैं। वह सिसक
सिसक कर क़ीर-हरासत की किशमिश की टिक्कियाँ
याद कर रहे हैं, उन का निहायत बुरा हाल हो गया
है। 8 हस्बोन के बाग़ मुरझा गए, सिब्माह के अंगूर
ख़त्म हो गए हैं। पहले तो उन की अनोखी बेलें याज़ेर
बल्कि रेगिस्तान तक फैली हुई थीं, उन की कोंपलें
समुन्दर को भी पार करती थीं। लेकिन अब ग़ैरक़ौम
हुक्मरानों ने यह उम्दा बेलें तोड़ डाली हैं। 9 इस लिए
मैं याज़ेर के साथ मिल कर सिब्माह के अंगूरों के लिए
आह-ओ-ज़ारी कर रहा हूँ। ऐ हस्बोन, ऐ इलीआली,
तुम्हारी हालत देख कर मेरे बेहद आँसू बह रहे हैं।
क्यूँकि जब तुम्हारा फल पक गया और तुम्हारी फ़सल
तय्यार हुई तब जंग के नारे तुम्हारे इलाक़े में गूँज उठे।
10 अब ख़ुशी-ओ-शादमानी बाग़ों से ग़ाइब हो गई है,
अंगूर के बाग़ों में गीत और ख़ुशी के नारे बन्द हो गए
हैं। कोई नहीं रहा जो हौज़ों में अंगूर को रौंद कर रस
निकाले, क्यूँकि मैं ने फ़सल की ख़ुशियाँ ख़त्म कर
दी हैं।

11 मेरा दिल सरोद के मातमी सुर निकाल कर
मोआब के लिए नोहा कर रहा है, मेरी जान क़ीर-
हरासत के लिए आहें भर रही है। 12 जब मोआब
अपनी पहाड़ी क़ुर्बानगाह के सामने हाज़िर हो कर
सिज्दा करता है तो बेकार मेहनत करता है। जब वह
पूजा करने के लिए अपने मन्दिर में दाख़िल होता है
तो फ़ाइदा कोई नहीं होता।

13 रब ने माज़ी में इन बातों का एलान किया।
14 लेकिन अब वह मज़ीद फ़रमाता है, "तीन साल
के अन्दर अन्दर [f]मोआब की तमाम शान-ओ-शौकत
और धूमधाम जाती रहेगी। जो थोड़े बहुत बचेंगे, वह
निहायत ही कम होंगे।"

शाम और इस्राईल की तबाही

17 1 दमिश्क़ शहर के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

"दमिश्क़ मिट जाएगा, मल्बे का ढेर ही रह जाएगा।
2 अरोईर के शहर भी वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएंगे।
तब रेवड़ ही उन की गलियों में चरेंगे और आराम

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मज़दूर के से तीन साल के अन्दर अन्दर।

करेंगे। कोई नहीं होगा जो उन्हें भगाए। 3 इस्राईल
के क़िलाबन्द शहर नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएंगे, और
दमिश्क़ की सल्तनत जाती रहेगी। शाम के जो लोग
बच निकलेंगे उन का और इस्राईल की शान-ओ-
शौकत का एक ही अन्जाम होगा।" यह है रब्ब-उल-
अफ़्वाज का फ़रमान।

4 उस दिन याक़ूब की शान-ओ-शौकत कम और
उस का मोटा-ताज़ा जिस्म लाग़र होता जाएगा।
5 फ़सल की कटाई की सी हालत होगी। जिस तरह
काटने वाला एक हाथ से गन्दुम के डंठल को
पकड़ कर दूसरे से बालों को काटता है उसी तरह
इस्राईलियों को काटा जाएगा। और जिस तरह वादी-
ए-रफ़ाईम में ग़रीब लोग फ़सल काटने वालों के पीछे
पीछे चल कर बची हुई बालियों को चुनते हैं उसी
तरह इस्राईल के बचे हुओं को चुना जाएगा। 6 ताहम
कुछ न कुछ बचा रहेगा, उन दो चार ज़ैतूनों की तरह
जो चुनते वक़्त दरख़्त की चोटी पर रह जाते हैं।
दरख़्त को डंडे से झाड़ने के बावुजूद कहीं न कहीं
चन्द एक लगे रहेंगे।" यह है रब, इस्राईल के ख़ुदा
का फ़रमान।

7 तब इन्सान अपनी नज़र अपने ख़ालिक़ की तरफ़
उठाएगा, और उस की आँखें इस्राईल के क़ुद्दूस की
तरफ़ देखेंगी। 8 आइन्दा न वह अपने हाथों से बनी
हुई क़ुर्बानगाहों को तकेगा, न अपनी उंगलियों से बने
हुए यसीरत देवी के खम्बों और बख़ूर की क़ुर्बानगाहों
पर ध्यान देगा।

9 उस वक़्त इस्राईली अपने क़िलाबन्द शहरों को
यूँ छोड़ेंगे जिस तरह कनआनियों ने अपने जंगलों
और पहाड़ों की चोटियों को इस्राईलियों के आगे
आगे छोड़ा था। सब कुछ वीरान-ओ-सुन्सान होगा।
10 अफ़्सोस, तू अपनी नजात के ख़ुदा को भूल गया
है। तुझे वह चटान याद न रही जिस पर तू पनाह
ले सकता है। चुनाँचे अपने प्यारे देवताओं के बाग़
लगाता जा, और उन में परदेसी अंगूर की क़लमें
लगाता जा। 11 शायद ही वह लगाते वक़्त तेज़ी से
उगने लगें, शायद ही उन के फूल उसी सुब्ह खिलने
लगें। तो भी तेरी मेहनत अबस है। तू कभी भी उन के
फल से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा बल्कि महज़ बीमारी
और लाइलाज दर्द की फ़सल काटेगा।

दीगर क़ौमों के बेकार हमले

12 बेशुमार क़ौमों का शोर-शराबा सुनो जो तूफ़ानी
समुन्दर की सी ठाठें मार रही हैं। उम्मतों का ग़ुल-
ग़पाड़ा सुनो जो थपेड़े मारने वाली मौजों की तरह
गरज रही हैं। 13 क्यूँकि ग़ैरक़ौमें पहाड़नुमा लहरों की
तरह मुतलातिम हैं। लेकिन रब उन्हें डाँटेगा तो वह
दूर दूर भाग जाएँगी। जिस तरह पहाड़ों पर भूसा हवा
के झोंकों से उड़ जाता और लुढ़कबूटी आँधी में
चक्कर खाने लगती है उसी तरह वह फ़रार हो जाएँगी।
14 शाम को इस्राईल सख़्त घबरा जाएगा, लेकिन पौ
फटने से पहले पहले उस के दुश्मन मर गए होंगे।
यही हमें लूटने वालों का नसीब, हमारी ग़ारतगरी
करने वालों का अन्जाम होगा।

एथोपिया की अदालत

18 1 फड़फड़ाते बादबानों [8] के मुल्क पर
अफ़्सोस! एथोपिया पर अफ़्सोस जहाँ कूश
के दरया बहते हैं, 2 और जो अपने क़ासिदों को आबी
नर्सल की कश्तियों में बिठा कर समुन्दरी सफ़रों पर
भेजता है। ऐ तेज़रौ क़ासिदो, लम्बे क़द और चिकनी-
चुपड़ी जिल्द वाली क़ौम के पास जाओ। उस क़ौम
के पास पहुँचो जिस से दीगर क़ौमें दूरदराज़ इलाक़ों
तक डरती हैं, जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँओ तले
कुचल देती है, और जिस का मुल्क दरयाओं से बटा
हुआ है।

3 ऐ दुनिया के तमाम बाशिन्दो, ज़मीन के तमाम
बसने वालो! जब पहाड़ों पर झंडा गाढ़ा जाए तो उस
पर ध्यान दो! जब नरसिंगा बजाया जाए तो उस पर

---

[8] एक और मुमकिना तर्जुमा : फड़फड़ाती टिड्डियों।

ग़ौर करो! 4 क्यूँकि रब मुझ से हमकलाम हुआ है,
“मैं अपनी सुकूनतगाह से ख़ामोशी से देखता रहूँगा।
लेकिन मेरी यह ख़ामोशी दोपहर की चिलचिलाती
धूप या मौसम-ए-गर्मा में धुन्द के बादल की मानिन्द
होगी।” 5 क्यूँकि अंगूर की फ़सल के पकने से पहले
ही रब अपना हाथ बढ़ा देगा। फूलों के ख़त्म होने
पर जब अंगूर पक रहे होंगे वह कोंपलों को छुरी से
काटेगा, फैलती हुई शाख़ों को तोड़ तोड़ कर उन की
काँट-छाँट करेगा। 6 यही एथोपिया की हालत होगी।
उस की लाशों को पहाड़ों के शिकारी परिन्दों और
जंगली जानवरों के हवाले किया जाएगा। मौसम-ए-
गर्मा के दौरान शिकारी परिन्दे उन्हें खाते जाएंगे, और
सर्दियों में जंगली जानवर लाशों से सेर हो जाएंगे।

7 उस वक़्त लम्बे क़द और चिकनी-चुपड़ी जिल्द
वाली यह क़ौम रब्ब-उल-अफ़्वाज के हुज़ूर तुह्फ़ा
लाएगी। हाँ, जिन लोगों से दीगर क़ौमें दूरदराज़
इलाक़ों तक डरती हैं और जो ज़बरदस्ती सब कुछ
पाँओ तले कुचल देते हैं वह दरयाओं से बटे हुए
अपने मुल्क से आ कर अपना तुह्फ़ा सिय्यून पहाड़
पर पेश करेंगे, वहाँ जहाँ रब्ब-उल-अफ़्वाज का नाम
सुकूनत करता है।

मिस्र की अदालत

19 1 मिस्र के बारे में अल्लाह का फ़रमान :
रब तेज़रौ बादल पर सवार हो कर मिस्र
आ रहा है। उस के सामने मिस्र के बुत थरथरा रहे
हैं और मिस्र की हिम्मत टूट गई है। 2 “मैं मिस्रियों
को एक दूसरे के साथ लड़ने पर उकसा दूँगा। भाई
भाई के साथ, पड़ोसी पड़ोसी के साथ, शहर शहर के
साथ, और बादशाही बादशाही के साथ जंग करेगी।
3 मिस्र की रूह मुज़्तरिब हो जाएगी, और मैं उन के
मन्सूबों को दर्हम-बर्हम कर दूँगा। गो वह बुतों, मुर्दों
की रूहों, उन से राबिता करने वालों और क़िस्मत
का हाल बताने वालों से मश्वरा करेंगे, 4 लेकिन मैं
उन्हें एक ज़ालिम मालिक के हवाले कर दूँगा, और
एक सख़्त बादशाह उन पर हुकूमत करेगा।” यह है
क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान।

5 दरया-ए-नील का पानी ख़त्म हो जाएगा, वह
बिलकुल सूख जाएगा। 6 मिस्र की नहरों से बदबू
फैलेगी बल्कि मिस्र के नाले घटते घटते ख़ुश्क हो
जाएंगे। नर्सल और सरकंडे मुरझा जाएंगे। 7 दरया-ए-
नील के दहाने तक जितनी भी हरियाली और फ़सलें
किनारे पर उगती हैं वह सब पज़्मुर्दा हो जाएँगी और
हवा में बिखर कर ग़ाइब हो जाएँगी। 8 मछेरे आह-
ओ-ज़ारी करेंगे, दरया में काँटा और जाल डालने
वाले घटते जाएंगे। 9 सन के रेशों से धागा बनाने
वालों को शर्म आएगी, और जूलाहों का रंग फ़क़
पड़ जाएगा। 10 कपड़ा बनाने वाले सख़्त मायूस होंगे,
तमाम मज़दूर दिल-बर्दाश्ता होंगे।

11 ज़ुअन के अफ़्सर नासमझ ही हैं, फ़िरऔन के
दाना मुशीर उसे अहमक़ाना मश्वरे दे रहे हैं। तुम मिस्री
बादशाह के सामने किस तरह दावा कर सकते हो,
“मैं दानिशमन्दों के हल्क़े में शामिल और क़दीम
बादशाहों का वारिस हूँ”? 12 ऐ फ़िरऔन, अब तेरे
दानिशमन्द कहाँ हैं? वह मालूम करके तुझे बताएँ
कि रब्ब-उल-अफ़्वाज मिस्र के साथ क्या कुछ करने
का इरादा रखता है। 13 ज़ुअन के अफ़्सर अहमक़ बन
बैठे हैं, मेम्फ़िस के बुज़ुर्गों ने धोका खाया है। उस के
क़बाइली सरदारों के फ़रेब से मिस्र डगमगाने लगा
है। 14 क्यूँकि रब ने उन में अब्तरी की रूह डाल दी है।
जिस तरह नशे में धुत शराबी अपनी क़ै में लड़खड़ाता
रहता है उसी तरह मिस्र उन के मश्वरों से डाँवाँडोल हो
गया है, ख़्वाह वह क्या कुछ क्यूँ न करे। 15 उस की
कोई बात नहीं बनती, ख़्वाह सर हो या दुम, कोंपल
हो या तना।

16 मिस्री उस दिन औरतों जैसे कमज़ोर होंगे। जब
रब्ब-उल-अफ़्वाज उन्हें मारने के लिए अपना हाथ
उठाएगा तो वह घबरा कर काँप उठेंगे। 17 मुल्क-
ए-यहूदाह मिस्रियों के लिए शर्म का बाइस बनेगा।
जब भी उस का ज़िक्र होगा तो वह दह्शत खाएँगे,

क्यूँकि उन्हें वह मन्सूबा याद आएगा जो रब ने उन
के ख़िलाफ़ बांधा है।

मिस्र, असूर और इस्राईल मिल कर इबादत करेंगे

18 उस दिन मिस्र के पाँच शहर कनआन की ज़बान
अपना कर रब्ब-उल-अफ़्वाज के नाम पर क़सम
खाएँगे। उन में से एक 'तबाही का शहर' कहलाएगा।
[h]
19 उस दिन मुल्क-ए-मिस्र के बीच में रब के लिए
क़ुर्बानगाह मख़्सूस की जाएगी, और उस की सरहद
पर रब की याद में सतून खड़ा किया जाएगा। 20 यह
दोनों रब्ब-उल-अफ़्वाज की हुज़ूरी की निशानदिही
करेंगे और गवाही देंगे कि वह मौजूद है। चुनाँचे जब
उन पर ज़ुल्म किया जाएगा तो वह चिल्ला कर उस
से फ़र्याद करेंगे, और रब उन के पास नजातदहिन्दा
भेज देगा जो उन की ख़ातिर लड़ कर उन्हें बचाएगा।
21 यूँ रब अपने आप को मिस्रियों पर ज़ाहिर करेगा।
उस दिन वह रब को जान लेंगे, और ज़बह और ग़ल्ला
की क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर उस की परस्तिश करेंगे। वह
रब के लिए मन्नतें मान कर उन को पूरा करेंगे। 22 रब
मिस्र को मारेगा भी और उसे शिफ़ा भी देगा। मिस्री
रब की तरफ़ रुजू करेंगे तो वह उन की इल्तिजाओं
के जवाब में उन्हें शिफ़ा देगा।

23 उस दिन एक पक्की सड़क मिस्र को असूर के साथ
मुन्सलिक कर देगी। असूरी और मिस्री आज़ादी से
एक दूसरे के मुल्क में आएँगे, और दोनों मिल कर
अल्लाह की इबादत करेंगे। 24 उस दिन इस्राईल भी
मिस्र और असूर के इत्तिहाद में शरीक हो कर तमाम
दुनिया के लिए बरकत का बाइस होगा। 25 क्यूँकि
रब्ब-उल-अफ़्वाज उन्हें बरकत दे कर फ़रमाएगा,
"मेरी क़ौम मिस्र पर बरकत हो, मेरे हाथों से बने
मुल्क असूर पर मेरी बरकत हो, मेरी मीरास इस्राईल
पर बरकत हो।"

यसायाह की बरहनगी और मिस्र और एथोपिया का अन्जाम

20 1 एक दिन असूरी बादशाह सर्जून ने अपने
कमाँडर को अश्दूद से लड़ने भेजा। जब
असूरियों ने उस फ़िलिस्ती शहर पर हम्ला किया तो
वह उन के क़ब्ज़े में आ गया।

2 तीन साल पहले रब यसायाह बिन आमूस से
हमकलाम हुआ था, "जा, टाट का जो लिबास तू
पहने रहा है उतार। अपने जूतों को भी उतार।" नबी
ने ऐसा ही किया और इसी हालत में फिरता रहा था।
3 जब अश्दूद असूरियों के क़ब्ज़े में आ गया तो रब
ने फ़रमाया, "मेरे ख़ादिम यसायाह को बरहना और
नंगे पाँओ फिरते तीन साल हो गए हैं। इस से उस
ने अलामती तौर पर इस की निशानदिही की है कि
मिस्र और एथोपिया का क्या अन्जाम होगा। 4 शाह-
ए-असूर मिस्री क़ैदियों और एथोपिया के जिलावतनों
को इसी हालत में अपने आगे आगे हाँकेगा। नौजवान
और बुज़ुर्ग सब बरहना और नंगे पाँओ फिरेंगे, वह
कमर से ले कर पाँओ तक बरहना होंगे। मिस्र कितना
शर्मिन्दा होगा।

5 यह देख कर फ़िलिस्ती दहशत खाएँगे। उन्हें शर्म
आएगी, क्यूँकि वह एथोपिया से उम्मीद रखते और
अपने मिस्री इत्तिहादी पर फ़ख़र करते थे। 6 उस वक़्त
इस साहिली इलाक़े के बाशिन्दे कहेंगे, 'देखो उन
लोगों की हालत जिन से हम उम्मीद रखते थे। उन ही
के पास हम भाग कर आए ताकि मदद और असूरी
बादशाह से छुटकारा मिल जाए। अगर उन के साथ
ऐसा हुआ तो हम किस तरह बचेंगे'?"

बाबल की तबाही का एलान

21 1 दलदल के इलाक़े [i]के बारे में अल्लाह का
फ़रमान :

---

[h]ग़ालिबन इस से मुराद सूरज का शहर यानी Heliopolis है।

[i]यानी बाबल।

जिस तरह दश्त-ए-नजब में तूफ़ान के तेज़ झोंके
बार बार आ पड़ते हैं उसी तरह आफ़त बयाबान से
आएगी, दुश्मन दह्शतनाक मुल्क से आ कर तुझ पर
टूट पड़ेगा। 2 रब ने हौलनाक रोया में मुझ पर ज़ाहिर
किया है कि नमकहराम और हलाकू हरकत में आ
गए हैं। ऐ ऐलाम चल, बाबल पर हम्ला कर! ऐ मादी
उठ, शहर का मुहासरा कर! मैं होने दूँगा कि बाबल
के मज़्लूमों की आहें बन्द हो जाएँगी।
3 इस लिए मेरी कमर शिद्दत से लरज़ने लगी है।
दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की सी घबराहट मेरी
अंतड़ियों को मरोड़ रही है। जो कुछ मैं ने सुना है
उस से मैं तड़प उठा हूँ, और जो कुछ मैं ने देखा है,
उस से मैं हवासबाख़्ता हो गया हूँ। 4 मेरा दिल धड़क
रहा है, कपकपी मुझ पर तारी हो गई है। पहले शाम
का धुन्दल्का मुझे प्यारा लगता था, लेकिन अब रोया
को देख कर वह मेरे लिए दह्शत का बाइस बन गया
है।
5 ताहम बाबल में लोग मेज़ लगा कर क़ालीन बिछा
रहे हैं। बेपर्वाई से वह खाना खा रहे और मै पी रहे
हैं। ऐ अफ़्सरो, उठो! अपनी ढालों पर तेल लगा कर
लड़ने के लिए तय्यार हो जाओ!
6 रब ने मुझे हुक्म दिया, "जा कर पहरेदार खड़ा
कर दे जो तुझे हर नज़र आने वाली चीज़ की इत्तिला
दे। 7 जूँ ही दो घोड़ों वाले रथ या गधों और ऊँटों पर
सवार आदमी दिखाई दें तो ख़बरदार! पहरेदार पूरी
तवज्जुह दे।"
8 तब पहरेदार शेरबबर की तरह पुकार उठा, "मेरे
आक़ा, रोज़-ब-रोज़ मैं पूरी वफ़ादारी से अपनी बुर्जी
पर खड़ा रहा हूँ, और रातों मैं तय्यार रह कर यहाँ
पहरादारी करता आया हूँ। 9 अब वह देखो! दो घोड़ों
वाला रथ आ रहा है जिस पर आदमी सवार है। अब
वह जवाब में कह रहा है, 'बाबल गिर गया, वह गिर
गया है! उस के तमाम बुत चिकनाचूर हो कर ज़मीन
पर बिखर गए हैं'।"
10 ऐ गाहने की जगह पर कुचली हुई [j]मेरी क़ौम!
जो कुछ इस्राईल के ख़ुदा, रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे
फ़रमाया है उसे मैं ने तुम्हें सुना दिया है।

अदोम की हालत : सुब्ह होने में कितनी देर है?

11 अदोम के बारे में रब का फ़रमान : सईर
के पहाड़ी इलाक़े से कोई मुझे आवाज़ देता है,
"ऐ पहरेदार, सुब्ह होने में कितनी देर बाक़ी है?
ऐ पहरेदार, सुब्ह होने में कितनी देर बाक़ी है?"
12 पहरेदार जवाब देता है, "सुब्ह होने वाली है,
लेकिन रात भी। अगर आप मज़ीद पूछना चाहें तो
दुबारा आ कर पूछ लें।"

मुल्क-ए-अरब का अन्जाम

13 मुल्क-ए-अरब [k]के बारे में रब का फ़रमान : ऐ
ददानियों के क़ाफ़िलो, मुल्क-ए-अरब के जंगल में
रात गुज़ारो। 14 ऐ मुल्क-ए-तैमा के बाशिन्दो, पानी ले
कर प्यासों से मिलने जाओ! पनाहगुज़ीनों के पास
जा कर उन्हें रोटी खिलाओ! 15 क्यूँकि वह तलवार
से लेस दुश्मन से भाग रहे हैं, ऐसे लोगों से जो तलवार
थामे और कमान ताने उन से सख़्त लड़ाई लड़े हैं।
16 क्यूँकि रब ने मुझ से फ़रमाया, "एक साल
के अन्दर अन्दर [l]क़ीदार की तमाम शान-ओ-
शौकत ख़त्म हो जाएगी। 17 क़ीदार के ज़बरदस्त
तीरअन्दाज़ों में से थोड़े ही बच पाएँगे।" यह रब,
इस्राईल के ख़ुदा का फ़रमान है।

यरूशलम का अन्जाम

22 1 रोया की वादी यरूशलम के बारे में रब
का फ़रमान :

---

[j]लफ़्ज़ी तर्जुमा : गाही गई।

[k]या बयाबान।

[l]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मज़दूर के से एक साल के अन्दर अन्दर।

क्या हुआ है? सब छतों पर क्यूँ चढ़ गए हैं? 2 हर
तरफ़ शोर-शराबा मच रहा है, पूरा शहर बग़लें बजा
रहा है। यह कैसी बात है? तेरे मक़्तूल न तलवार से,
न मैदान-ए-जंग में मरे। 3 क्यूँकि तेरे तमाम लीडर मिल
कर फ़रार हुए और फिर तीर चलाए बग़ैर पकड़े गए।
बाक़ी जितने लोग तुझ में थे वह भी दूर दूर भागना
चाहते थे, लेकिन उन्हें भी क़ैद किया गया।

4 इस लिए मैं ने कहा, "अपना मुँह मुझ से फेर कर
मुझे ज़ार ज़ार रोने दो। मुझे तसल्ली देने पर बज़िद न
रहो जबकि मेरी क़ौम तबाह हो रही है।" 5 क्यूँकि
क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज रोया की वादी
पर हौलनाक दिन लाया है। हर तरफ़ घबराहट,
कुचले हुए लोग और अब्तरी नज़र आती है। शहर
की चारदीवारी टूटने लगी है, पहाड़ों में चीख़ें गूँज
रही हैं।

6 ऐलाम के फ़ौजी अपने तर्कश उठा कर रथों,
आदमियों और घोड़ों के साथ आ गए हैं। क़ीर के
मर्द भी अपनी ढालें ग़िलाफ़ से निकाल कर तुझ से
लड़ने के लिए निकल आए हैं। 7 यरूशलम के गिर्द-
ओ-नवाह की बेहतरीन वादियाँ दुश्मन के रथों से भर
गई हैं, और उस के घुड़सवार शहर के दरवाज़े पर
हम्ला करने के लिए उस के सामने खड़े हो गए हैं।
8 जो भी बन्द-ओ-बस्त यहूदाह ने अपने तहफ़्फ़ुज़ के
लिए कर लिया था वह ख़त्म हो गया है।

उस दिन तुम लोगों ने क्या किया? तुम 'जंगलघर'
नामी सिलाहख़ाने में जा कर असलिहा का मुआइना
करने लगे। 9–11 तुम ने उन मुतअद्दिद दराड़ों का
जाइज़ा लिया जो दाऊद के शहर की फ़सील में पड़
गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए तुम ने यरूशलम
के मकानों को गिन कर उन में से कुछ गिरा दिए।
साथ साथ तुम ने निचले तालाब का पानी जमा किया।
ऊपर के पुराने तालाब से निकलने वाला पानी जमा
करने के लिए तुम ने अन्दरूनी और बैरूनी फ़सील
के दरमियान एक और तालाब बना लिया। लेकिन
अफ़्सोस, तुम उस की पर्वा नहीं करते जो यह सारा
सिलसिला अमल में लाया। उस पर तुम तवज्जुह ही
नहीं देते जिस ने बड़ी देर पहले इसे तश्कील दिया
था।

12 उस वक़्त क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज
ने हुक्म दिया कि गिर्या-ओ-ज़ारी करो, अपने बालों
को मुंडवा कर टाट का लिबास पहन लो। 13 लेकिन
क्या हुआ? तमाम लोग शादियाना बजा कर ख़ुशी
मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और भेड़-बकरियों को
ज़बह किया जा रहा है। सब गोश्त और मै से
लुत्फ़अन्दोज़ हो कर कह रहे हैं, "आओ, हम खाएँ
पिएँ, क्यूँकि कल तो मर ही जाना है।"

14 लेकिन रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मेरी मौजूदगी में ही
ज़ाहिर किया है कि यक़ीनन यह क़ुसूर तुम्हारे मरते
दम तक मुआफ़ नहीं किया जाएगा। [m]यह क़ादिर-ए-
मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

रब शब्नाह की जगह इलियाक़ीम को महल का निगरान मुक़र्रर करेगा

15 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता
है, "उस निगरान शब्नाह के पास चल जो महल का
इंचार्ज है। उसे पैग़ाम पहुँचा दे, 16 तू यहाँ क्या कर
रहा है? किस ने तुझे यहाँ अपने लिए मक़्बरा तराशने
की इजाज़त दी? तू कौन है कि बुलन्दी पर अपने लिए
मज़ार बनवाए, चटान में आरामगाह खुदवाए? 17 ऐ
मर्द, ख़बरदार! रब तुझे ज़ोर से दूर दूर तक फैंकने
वाला है। वह तुझे पकड़ लेगा 18 और मरोड़ मरोड़
कर गेंद की तरह एक वसी मुल्क में फैंक देगा। वहीं
तू मरेगा, वहीं तेरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्यूँकि तू
अपने मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना
है। 19 मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती
अपने उह्दे और मन्सब से फ़ारिग़ कर दिया जाएगा।

20 उस दिन मैं अपने ख़ादिम इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा। 21 मैं उसे तेरा ही

---

[m]लफ़्ज़ी तर्जुमा : यक़ीनन इस क़ुसूर का कफ़्फ़ारा तुम्हारे मरते दम तक नहीं दिया जाएगा।

सरकारी लिबास और कमरबन्द पहना कर तेरा
इख़्तियार उसे दे दूँगा। उस वक़्त वह यहूदाह के
घराने और यरूशलम के तमाम बाशिन्दों का बाप
बनेगा। 22 मैं उस के कंधे पर दाऊद के घराने की
चाबी रख दूँगा। जो दरवाज़ा वह खोलेगा उसे कोई
बन्द नहीं कर सकेगा, और जो दरवाज़ा वह बन्द
करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। 23 वह खूँटी की
मानिन्द होगा जिस को मैं ज़ोर से ठोंक कर मज़बूत
दीवार में लगा दूँगा। उस से उस के बाप के घराने को
शराफ़त का ऊँचा मक़ाम हासिल होगा।

24 लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा बोझ उस के
साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार,
तमाम छोटे बर्तन प्यालों से ले कर मर्तबानों तक
उस के साथ लटक जाएंगे। 25 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि उस वक़्त मज़बूत दीवार में लगी यह
खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर
जाएगी, और उस के साथ लटका सारा सामान टूट
जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

सूर और सैदा की तबाही

23 1 सूर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :
ए तरसीस के उम्दा जहाज़ो, [n]वावैला
करो! क्यूँकि सूर तबाह हो गया है, वहाँ टिकने की
जगह तक नहीं रही। जज़ीरा-ए-क़ुब्रुस से वापस आते
वक़्त उन्हें इत्तिला दी गई। 2 ऐ साहिली इलाक़े में
बसने वालो, आह-ओ-ज़ारी करो! ऐ सैदा के ताजिरो,
मातम करो! तेरे क़ासिद समुन्दर को पार करते थे,
3 वह गहरे पानी पर सफ़र करते हुए मिस्र [o]का ग़ल्ला
तुझ तक पहुँचाते थे, क्यूँकि तू ही दरया-ए-नील की
फ़सल से नफ़ा कमाता था। यूँ तू तमाम क़ौमों का
तिजारती मर्कज़ बना।

4 लेकिन अब शर्मसार हो, ऐ सैदा, क्यूँकि समुन्दर
का क़िलाबन्द शहर सूर कहता है, "हाय, सब कुछ
तबाह हो गया है। अब ऐसा लगता है कि मैं ने न कभी
दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो कर बच्चे जन्म दिए, न कभी
बेटे-बेटियाँ पाले।"

5 जब यह ख़बर मिस्र तक पहुँचेगी तो वहाँ के
बाशिन्दे तड़प उठेंगे।

6 चुनाँचे समुन्दर को पार करके तरसीस तक
पहुँचो! ऐ साहिली इलाक़े के बाशिन्दो, गिर्या-ओ-
ज़ारी करो! 7 क्या यह वाक़ई तुम्हारा वह शहर है
जिस की रंगरलियाँ मश्हूर थीं, वह क़दीम शहर जिस
के पाँओ उसे दूरदराज़ इलाक़ों तक ले गए ताकि वहाँ
नई आबादियाँ क़ाइम करे? 8 किस ने सूर के ख़िलाफ़
यह मन्सूबा बांधा? यह शहर तो पहले बादशाहों को
तख़्त पर बिठाया करता था, और उस के सौदागर
रईस थे, उस के ताजिर दुनिया के शुरफ़ा में गिने जाते
थे। 9 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने यह मन्सूबा बांधा ताकि
तमाम शान-ओ-शौकत का घमंड पस्त और दुनिया
के तमाम उह्देदार ज़ेर हो जाएँ।

10 ऐ तरसीस बेटी, अब से अपनी ज़मीन की
खेतीबाड़ी कर, उन किसानों की तरह काश्तकारी
कर जो दरया-ए-नील के किनारे अपनी फ़सलें लगाते
हैं, क्यूँकि तेरी बन्दरगाह जाती रही है। 11 रब ने अपने
हाथ को समुन्दर के ऊपर उठा कर ममालिक को
हिला दिया। उस ने हुक्म दिया है कि कनआन [p]के
क़िले बर्बाद हो जाएँ। 12 उस ने फ़रमाया, "ऐ सैदा
बेटी, अब से तेरी रंगरलियाँ बन्द रहेंगी। ऐ कुंवारी
जिस की इस्मतदरी हुई है, उठ और समुन्दर को पार
करके क़ुब्रुस में पनाह ले। लेकिन वहाँ भी तू आराम
नहीं कर पाएगी।"

13 मुल्क-ए-बाबल पर नज़र डालो। यह क़ौम तो
नेस्त-ओ-नाबूद हो गई, उस का मुल्क जंगली

---

[n]'तरसीस का जहाज़' न सिर्फ़ मुल्क-ए-तरसीस के जहाज़ के लिए बल्कि हर उम्दा क़िस्म के तिजारती जहाज़ के लिए इस्तेमाल होता था। देखिए आयत 14।

[o]इब्रानी में 'सैहूर' मुस्तामल है जो दरया-ए-नील की एक शाख़ है।

[p]कनआन से मुराद लुबनान यानी क़दीम ज़माने का Phoenicia है।

जानवरों का घर बन गया है। असूरियों ने बुर्ज बना
कर उसे घेर लिया और उस के क़िलों को ढा दिया।
मल्बे का ढेर ही रह गया है।
14 ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो, हाय हाय करो,
क्यूँकि तुम्हारा क़िला तबाह हो गया है!
15 तब सूर इन्सान की याद से उतर जाएगा। लेकिन
70 साल यानी एक बादशाह की मुद्दत-उल-उम्र के
बाद सूर उस तरह बहाल हो जाएगा जिस तरह गीत
में कस्बी के बारे में गाया जाता है,
16 "ऐ फ़रामोश कस्बी, चल! अपना सरोद पकड़
कर गलियों में फिर! सरोद को ख़ूब बजा, कई एक
गीत गा ताकि लोग तुझे याद करें।"
17 क्यूँकि 70 साल के बाद रब सूर को बहाल
करेगा। कस्बी दुबारा पैसे कमाएगी, दुनिया के तमाम
ममालिक उस के गाहक बनेंगे। 18 लेकिन जो पैसे वह
कमाएगी वह रब के लिए मख़्सूस होंगे। वह ज़ख़ीरा
करने के लिए जमा नहीं होंगे बल्कि रब के हुज़ूर
ठहरने वालों को दिए जाएंगे ताकि जी भर कर खा
सकें और शानदार कपड़े पहन सकें।

रब तमाम दुनिया की अदालत करता है

24 1 देखो, रब दुनिया को वीरान-ओ-सुन्सान
कर देगा, रू-ए-ज़मीन को उलट-पलट
करके उस के बाशिन्दों को मुन्तशिर कर देगा।
2 किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, ख़्वाह इमाम हो
या आम शख़्स, मालिक या नौकर, मालिकन या
नौकरानी, बेचने वाला या ख़रीदार, उधार लेने या देने
वाला, क़र्ज़दार या क़र्ज़ख़्वाह। 3 ज़मीन मुकम्मल तौर
पर उजड़ जाएगी, उसे सरासर लूटा जाएगा। रब ही
ने यह सब कुछ फ़रमाया है। 4 ज़मीन सूख सूख कर
सुकड़ जाएगी, दुनिया ख़ुश्क हो कर मुरझा जाएगी।
उस के बड़े बड़े लोग भी निढाल हो जाएंगे। 5 ज़मीन
के अपने बाशिन्दों ने उस की बेहुरमती की है, क्यूँकि
वह शरीअत के ताबे न रहे बल्कि उस के अह्काम
को तब्दील करके अल्लाह के साथ का अबदी अह्द
तोड़ दिया है।
6 इसी लिए ज़मीन लानत का लुक़्मा बन गई है, उस
पर बसने वाले अपनी सज़ा भुगत रहे हैं। इसी लिए
दुनिया के बाशिन्दे भस्म हो रहे हैं और कम ही बाक़ी
रह गए हैं। 7 अंगूर का ताज़ा रस सूख कर ख़त्म हो
रहा, अंगूर की बेलें मुरझा रही हैं। जो पहले ख़ुशबाश
थे वह आहें भरने लगे हैं। 8 दफ़ों की ख़ुशकुन आवाज़ें
बन्द, रंगरलियाँ मनाने वालों का शोर बन्द, सरोदों के
सुरीले नग़मे बन्द हो गए हैं। 9 अब लोग गीत गा गा
कर मै नहीं पीते बल्कि शराब उन्हें कड़वी ही लगती
है। 10 वीरान-ओ-सुन्सान शहर तबाह हो गया है, हर
घर के दरवाज़े पर कुंडी लगी है ताकि अन्दर घुसने
वालों से मह्फ़ूज़ रहे। 11 गलियों में लोग गिर्या-ओ-
ज़ारी कर रहे हैं कि मै ख़त्म है। हर ख़ुशी दूर हो गई
है, हर शादमानी ज़मीन से ग़ाइब है। 12 शहर में मल्बे
के ढेर ही रह गए हैं, उस के दरवाज़े टुकड़े टुकड़े हो
गए हैं।
13 क्यूँकि मुल्क के दरमियान और अक़्वाम के बीच
में यही सूरत-ए-हाल होगी कि चन्द एक ही बच
पाएँगे, बिलकुल उन दो चार ज़ैतूनों की मानिन्द जो
दरख़्त को झाड़ने के बावुजूद उस पर रह जाते हैं,
या उन दो चार अंगूरों की तरह जो फ़सल चुनने के
बावुजूद बेलों पर लगे रहते हैं। 14 लेकिन यह चन्द
एक ही पुकार कर ख़ुशी के नारे लगाएँगे। मग़रिब
से वह रब की अज़मत की सताइश करेंगे। 15 चुनाँचे
मशरिक़ में रब को जलाल दो, जज़ीरों में इस्राईल के
ख़ुदा के नाम की ताज़ीम करो। 16 हमें दुनिया की
इन्तिहा से गीत सुनाई दे रहे हैं, "रास्त ख़ुदा की
तारीफ़ हो!"
लेकिन मैं बोल उठा, "हाय, मैं घुल घुल कर मर
रहा हूँ, मैं घुल घुल कर मर रहा हूँ! मुझ पर अफ़सोस,
क्यूँकि बेवफ़ा अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं, बेवफ़ा
खुले तौर पर अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं!" 17 ऐ
दुनिया के बाशिन्दो, तुम दह्शतनाक मुसीबत, गढ़ों
और फंदों में फंस जाओगे। 18 तब जो हौलनाक
आवाज़ों से भाग कर बच जाए वह गढ़े में गिर
जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में

फंस जाएगा। क्यूँकि आसमान के दरीचे खुल रहे और
ज़मीन की बुन्यादें हिल रही हैं। 19 ज़मीन कड़क से
फ़ट रही है। वह डगमगा रही, झूम रही, 20 नशे में आए
शराबी की तरह लड़खड़ा रही और कच्ची झोंपड़ी की
तरह झूल रही है। आख़िरकार वह अपनी बेवफ़ाई के
बोझ तले इतने धड़ाम से गिरेगी कि आइन्दा कभी
नहीं उठने की।

21 उस दिन रब आसमान के लश्कर और ज़मीन
के बादशाहों से जवाब तलब करेगा। 22 तब वह
गिरिफ़्तार हो कर गढ़े में जमा होंगे, उन्हें क़ैदख़ाने
में डाल कर मुतअद्दिद दिनों के बाद सज़ा मिलेगी।
23 उस वक़्त चाँद नादिम होगा और सूरज शर्म
खाएगा, क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज कोह-ए-सिय्यून
पर तख़्तनशीन होगा। वहाँ यरूशलम में वह बड़ी
शान-ओ-शौकत के साथ अपने बुज़ुर्गों के सामने
हुकूमत करेगा।

नजात के लिए अल्लाह की तारीफ़

25 1 ऐ रब, तू मेरा ख़ुदा है, मैं तेरी ताज़ीम और
तेरे नाम की तारीफ़ करूँगा। क्यूँकि तू ने
बड़ी वफ़ादारी से अनोखा काम करके क़दीम ज़माने
में बंधे हुए मन्सूबों को पूरा किया है।

2 तू ने शहर को मल्बे का ढेर बना कर हम्लों से
महफ़ूज़ आबादी को खंडरात में तब्दील कर दिया।
ग़ैरमुल्कियों का क़िलाबन्द महल यूँ ख़ाक में मिलाया
गया कि आइन्दा कभी शहर नहीं कहलाएगा, कभी
अज़ सर-ए-नौ तामीर नहीं होगा।

3 यह देख कर एक ज़ोरावर क़ौम तेरी ताज़ीम
करेगी, ज़बरदस्त अक़्वाम के शहर तेरा ख़ौफ़
मानेंगे। 4 क्यूँकि तू पस्तहालों के लिए क़िला और
मुसीबतज़दा ग़रीबों के लिए पनाहगाह साबित हुआ
है। तेरी आड़ में इन्सान तूफ़ान और गर्मी की शिद्दत
से महफ़ूज़ रहता है। गो ज़बरदस्तों की फूँकें बारिश
की बौछाड़ 5 या रेगिस्तान में तपिश जैसी क्यूँ न हों,
ताहम तू ग़ैरमुल्कियों की गरज को रोक देता है। जिस
तरह बादल के साय से झुलसती गर्मी जाती रहती है,
उसी तरह ज़बरदस्तों की शेख़ी को तू बन्द कर देता
है।

यरूशलम में बैन-उल-अक़्वामी ज़ियाफ़त

6 यहीं कोह-ए-सिय्यून पर रब्ब-उल-अफ़्वाज तमाम
अक़्वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। बेहतरीन
क़िस्म की क़दीम और साफ़-शफ़्फ़ाफ़ मै पी जाएगी,
उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना खाया जाएगा।

7 इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का निक़ाब
उतारेगा और तमाम अक़्वाम पर का पर्दा हटा देगा।
8 मौत इलाही फ़त्ह का लुक़्मा हो कर अबद तक
नेस्त-ओ-नाबूद रहेगी। तब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हर
चिहरे के आँसू पोंछ कर तमाम दुनिया में से अपनी
क़ौम की रुस्वाई दूर करेगा। रब ही ने यह सब कुछ
फ़रमाया है। 9 उस दिन लोग कहेंगे, "यही हमारा ख़ुदा
है जिस की नजात के इन्तिज़ार में हम रहे। यही है रब
जिस से हम उम्मीद रखते रहे। आओ, हम शादियाना
बजा कर उस की नजात की ख़ुशी मनाएँ।"

रब मोआब के क़िलों को ढा देगा

10 रब का हाथ इस पहाड़ पर ठहरा रहेगा। लेकिन
मोआब को वह यूँ रौंदेगा जिस तरह भूसा गोबर में
मिलाने के लिए रौंदा जाता है। 11 और गो मोआब हाथ
फैला कर उस में तैरने की कोशिश करे तो भी रब उस
का ग़ुरूर गोबर में दबाए रखेगा, चाहे वह कितनी
महारत से हाथ-पाँओ मारने की कोशिश क्यूँ न करे।
12 ऐ मोआब, वह तेरी बुलन्द और क़िलाबन्द दीवारों
को गिराएगा, उन्हें ढा कर ख़ाक में मिलाएगा।

हमारा ख़ुदा मज़बूत चटान है

26 1 उस दिन मुल्क-ए-यहूदाह में गीत गाया
जाएगा,

"हमारा शहर मज़बूत है, क्यूँकि हम अल्लाह की
नजात देने वाली चारदीवारी और पुश्तों से घिरे हुए
हैं।

2 शहर के दरवाज़ों को खोलो ताकि रास्त क़ौम
दाख़िल हो, वह क़ौम जो वफ़ादार रही है।
3 ऐ रब, जिस का इरादा मज़बूत है उसे तू महफ़ूज़
रखता है। उसे पूरी सलामती हासिल है, क्यूँकि वह
तुझ पर भरोसा रखता है।
4 रब पर अबद तक एतिमाद रखो! क्यूँकि रब ख़ुदा
अबदी चटान है।
5 वह बुलन्दियों पर रहने वालों को ज़ेर और ऊँचे
शहर को नीचा करके ख़ाक में मिला देता है।
6 ज़रूरतमन्द और पस्तहाल उसे पाँओ तले कुचल
देते हैं।”

दुआ

7 ऐ अल्लाह, रास्तबाज़ की राह हमवार है, क्यूँकि तू
उस का रास्ता चलने के क़ाबिल बना देता है।
8 ऐ रब, हम तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं, उस वक़्त भी
जब तू हमारी अदालत करता है। हम तेरे नाम और
तेरी तम्जीद के आरज़ूमन्द रहते हैं।
9 रात के वक़्त मेरी रूह तेरे लिए तड़पती, मेरा दिल
तेरा तालिब रहता है। क्यूँकि दुनिया के बाशिन्दे उस
वक़्त इन्साफ़ का मतलब सीखते हैं जब तू दुनिया
की अदालत करता है।

10 अफ़सोस, जब बेदीन पर रहम किया जाता है तो
वह इन्साफ़ का मतलब नहीं सीखता बल्कि इन्साफ़
के मुल्क में भी ग़लत काम करने से बाज़ नहीं रहता,
वहाँ भी रब की अज़मत का लिहाज़ नहीं करता।
11 ऐ रब, गो तेरा हाथ उन्हें मारने के लिए उठा हुआ
है तो भी वह ध्यान नहीं देते। लेकिन एक दिन उन
की आँखें खुल जाएँगी, और वह तेरी अपनी क़ौम
के लिए ग़ैरत को देख कर शर्मिन्दा हो जाएंगे। तब तू
अपनी भस्म करने वाली आग उन पर नाज़िल करेगा।

12 ऐ रब, तू हमें अम्न-ओ-अमान मुहय्या करता
है बल्कि हमारी तमाम कामयाबियाँ तेरे ही हाथ से
हासिल हुई हैं।
13 ऐ रब हमारे ख़ुदा, गो तेरे सिवा दीगर मालिक
हम पर हुकूमत करते आए हैं तो भी हम तेरे ही फ़ज़्ल
से तेरे नाम को याद कर पाए। 14 अब यह लोग मर
गए हैं और आइन्दा कभी ज़िन्दा नहीं होंगे, उन की
रूहें कूच कर गई हैं और आइन्दा कभी वापस नहीं
आएँगी । क्यूँकि तू ने उन्हें सज़ा दे कर हलाक कर
दिया, उन का नाम-ओ-निशान मिटा डाला है।

15 ऐ रब, तू ने अपनी क़ौम को फ़रोग़ दिया है। तू
ने अपनी क़ौम को बड़ा बना कर अपने जलाल का
इज़हार किया है। तेरे हाथ से उस की सरहद्दें चारों
तरफ़ बढ़ गई हैं।

16 ऐ रब, वह मुसीबत में फंस कर तुझे तलाश करने
लगे, तेरी तादीब के बाइस मंत्र फूँकने लगे।
17 ऐ रब, तेरे हुज़ूर हम दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत
की तरह तड़पते और चीख़ते चिल्लाते रहे। 18 जनने
का दर्द महसूस करके हम पेच-ओ-ताब खा रहे थे।
लेकिन अफ़सोस, हवा ही पैदा हुई। न हम ने मुल्क
को नजात दी, न दुनिया के नए बाशिन्दे पैदा हुए।

19 लेकिन तेरे मुर्दे दुबारा ज़िन्दा होंगे, उन की लाशें
एक दिन जी उठेंगी। ऐ ख़ाक में बसने वालो, जाग
उठो और ख़ुशी के नारे लगाओ! क्यूँकि तेरी ओस
नूरों की शबनम है, और ज़मीन मुर्दा रूहों को जन्म
देगी।

रब इस्राईल के दुश्मनों से बदला लेगा

20 ऐ मेरी क़ौम, जा और थोड़ी देर के लिए अपने
कमरों में छुप कर कुंडी लगा ले। जब तक रब का
ग़ज़ब ठंडा न हो वहाँ ठहरी रह। 21 क्यूँकि देख, रब
अपनी सुकूनतगाह से निकलने को है ताकि दुनिया
के बाशिन्दों को सज़ा दे। तब ज़मीन अपने आप पर
बहाया हुआ ख़ून फ़ाश करेगी और अपने मक़्तूलों
को मज़ीद छुपाए नहीं रखेगी।

27 1 उस दिन रब उस भागने और पेच-ओ-
ताब खाने वाले साँप को सज़ा देगा जो
लिवियातान कहलाता है। अपनी सख़्त, अज़ीम और
ताक़तवर तलवार से वह समुन्दर के अज़दहे को मार
डालेगा।

अंगूर के बाग़ का नया गीत

2 उस दिन कहा जाएगा,
"अंगूर का कितना ख़ूबसूरत बाग़ है! उस की
तारीफ़ में गीत गाओ! 3 मैं, रब ख़ुद ही उसे सँभालता,
उसे मुसलसल पानी देता रहता हूँ। दिन रात मैं उस
की पहरादारी करता हूँ ताकि कोई उसे नुक़्सान न
पहुँचाए।
4 अब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन अगर
बाग़ में ऊँटकटारे और ख़ारदार झाड़ियाँ मिल जाएँ
तो मैं उन से निपट लूँगा, मैं उन से जंग करके सब
को जला दूँगा। 5 लेकिन अगर वह मान जाएँ तो मेरे
पास आ कर पनाह लें। वह मेरे साथ सुलह करें, हाँ
मेरे साथ सुलह करें।"

सज़ा के बावुजूद इस्राईल पर रहम

6 एक वक़्त आएगा कि याक़ूब जड़ पकड़ेगा।
इस्राईल को फूल लग जाएंगे, उस की कोंपलें
निकलेंगी और दुनिया उस के फल से भर जाएगी।
7 क्या रब ने अपनी क़ौम को यूँ मारा जिस तरह उस
ने इस्राईल को मारने वालों को मारा है? हरगिज़ नहीं!
या क्या इस्राईल को यूँ क़त्ल किया गया जिस तरह
उस के क़ातिलों को क़त्ल किया गया है? 8 नहीं,
बल्कि तू ने उसे डरा कर और भगा कर उस से जवाब
तलब किया, तू ने उस के ख़िलाफ़ मशरिक़ से तेज़
आँधी भेज कर उसे अपने हुज़ूर से निकाल दिया।
9 इस तरह याक़ूब के क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया
जाएगा। और जब इस्राईल का गुनाह दूर हो जाएगा
तो नतीजे में वह तमाम ग़लत क़ुर्बानगाहों को चूने के
पत्थरों की तरह चिकनाचूर करेगा। न यसीरत देवी
के खम्बे, न बख़ूर जलाने की ग़लत क़ुर्बानगाहें खड़ी
रहेंगी। 10 क्यूँकि क़िलाबन्द शहर तन्हा रह गया है।
लोगों ने उसे वीरान छोड़ कर रेगिस्तान की तरह तर्क
कर दिया है। अब से उस में बछड़े ही चरेंगे। वही
उस की गलियों में आराम करके उस की टहनियों
को चबा लेंगे। 11 तब उस की शाख़ें सूख जाएँगी और
औरतें उन्हें तोड़ तोड़ कर जलाएँगी। क्यूँकि यह क़ौम
समझ से ख़ाली है, लिहाज़ा उस का ख़ालिक़ उस पर
तरस नहीं खाएगा, जिस ने उसे तश्कील दिया वह
उस पर मेहरबानी नहीं करेगा।
12 उस दिन तुम इस्राईली ग़ल्ला जैसे होगे, और
रब तुम्हारी बालियों को दरया-ए-फ़ुरात से ले कर
मिस्र की शिमाली सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र
तक काटेगा। फिर वह तुम्हें गाह कर दाना-ब-दाना
तमाम ग़ल्ला इकट्ठा करेगा। 13 उस दिन नरसिंगा बुलन्द
आवाज़ से बजेगा। तब असूर में तबाह होने वाले और
मिस्र में भगाए हुए लोग वापस आ कर यरूशलम के
मुक़द्दस पहाड़ पर रब को सिज्दा करेंगे।

मग़ुरूर शहर सामरिया मुरझाने वाला फूल है

28 1 सामरिया पर अफ़्सोस जो इस्राईली
शराबियों का शानदार ताज है। उस शहर
पर अफ़्सोस जो इस्राईल की शान-ओ-शौकत था
लेकिन अब मुरझाने वाला फूल है। उस आबादी पर
अफ़्सोस जो नशे में धुत लोगों की ज़रख़ेज़ वादी
के ऊपर तख़्तनशीन है। 2 देखो, रब एक ज़बरदस्त
सूरमा भेजेगा जो ओलों के तूफ़ान, तबाहकुन आँधी
और सैलाब पैदा करने वाली मूसलाधार बारिश
की तरह सामरिया पर टूट पड़ेगा और ज़ोर से उसे
ज़मीन पर पटख़ देगा। 3 तब इस्राईली शराबियों का
शानदार ताज सामरिया पाँओ तले रौंदा जाएगा। 4 तब
यह मुरझाने वाला फूल जो ज़रख़ेज़ वादी के ऊपर
तख़्तनशीन है और उस की शान-ओ-शौकत ख़त्म हो
जाएगी। उस का हाल फ़सल से पहले पकने वाले
अन्जीर जैसा होगा। क्यूँकि जूँ ही कोई उसे देखे वह
उसे तोड़ कर हड़प कर लेगा।

5 उस दिन रब्ब-उल-अफ़्वाज ख़ुद इस्राईल का
शानदार ताज होगा, वह अपनी क़ौम के बचे हुओं
का जलाली सेहरा होगा। 6 वह अदालत करने वाले
को इन्साफ़ की रूह दिलाएगा और शहर के दरवाज़े
पर दुश्मन को पीछे धकेलने वालों के लिए ताक़त
का बाइस होगा।

यरूशलम के मत्वाले नबी

7 लेकिन यह लोग भी मै के असर से डगमगा रहे
और शराब पी पी कर लड़खड़ा रहे हैं। इमाम और
नबी नशे में झूम रहे हैं। मै पीने से उन के दिमाग़ों में
ख़लल आ गया है, शराब पी पी कर वह चक्कर खा रहे
हैं। रोया देखते वक़्त वह झूमते, फ़ैसले करते वक़्त
झूलते हैं। 8 तमाम मेज़ें उन की क़ै से गन्दी हैं, उन की
ग़िलाज़त हर तरफ़ नज़र आती है।

9 वह आपस में कहते हैं, "यह शख़्स हमारे साथ
इस क़िस्म की बातें क्यूँ करता है? हमें तालीम देते
और इलाही पैग़ाम का मतलब सुनाते वक़्त वह हमें
यूँ समझाता है गोया हम छोटे बच्चे हों जिन का दूध
अभी अभी छुड़ाया गया हो। 10 क्यूँकि यह कहता है,
'सव लासव सव लासव, क़व लाक़व क़व लाक़व,
थोड़ा सा इस तरफ़ थोड़ा सा उस तरफ़'।"

11 चुनाँचे अब अल्लाह हकलाते हुए होंटों और
ग़ैरज़बानों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करेगा।
12 गो उस ने उन से फ़रमाया था, "यह आराम की
जगह है। थकेमान्दों को आराम दो, क्यूँकि यहीं वह
सुकून पाएँगे।" लेकिन वह सुनने के लिए तय्यार नहीं
थे। 13 इस लिए आइन्दा रब उन से इन ही अल्फ़ाज़
से हमकलाम होगा, "सव लासव सव लासव, क़व
लाक़व कव लाक़व, थोड़ा सा इस तरफ़, थोड़ा सा
उस तरफ़।" क्यूँकि लाज़िम है कि वह चल कर
ठोकर खाएँ, और धड़ाम से अपनी पुश्त पर गिर
जाएँ, कि वह ज़ख़्मी हो जाएँ और फंदे में फंस कर
गिरिफ़्तार हो जाएँ।

अल्लाह का वाज़िह पैग़ाम

14 चुनाँचे अब रब का कलाम सुन लो, ऐ मज़ाक़
उड़ाने वालो, जो यरूशलम में बसने वाली इस क़ौम
पर हुकूमत करते हो। 15 तुम शेख़ी मार कर कहते हो,
"हम ने मौत से अह्द बांधा और पाताल से मुआहदा
किया है। इस लिए जब सज़ा का सैलाब हम पर से
गुज़रे तो हमें नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा। क्यूँकि हम ने
झूट में पनाह ली और धोके में छुप गए हैं।" 16 इस के
जवाब में रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "देखो,
मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ, कोने का एक
आज़मूदा और क़ीमती पत्थर जो मज़बूत बुन्याद पर
लगा है। जो ईमान लाएगा वह कभी नहीं हिलेगा।
17 इन्साफ़ मेरा फ़ीता और रास्ती मेरी साहूल की डोरी
होगी। इन से मैं सब कुछ परखूँगा।

ओले उस झूट का सफ़ाया करेंगे जिस में तुम ने
पनाह ली है, और सैलाब तुम्हारी छुपने की जगह
उड़ा कर अपने साथ बहा ले जाएगा। 18 तब तुम्हारा
मौत के साथ अह्द मन्सूख़ हो जाएगा, और तुम्हारा
पाताल के साथ मुआहदा क़ाइम नहीं रहेगा। सज़ा
का सैलाब तुम पर से गुज़र कर तुम्हें पामाल करेगा।
19 वह सुब्ह-ब-सुब्ह और दिन रात गुज़रेगा, और जब
भी गुज़रेगा तो तुम्हें अपने साथ बहा ले जाएगा। उस
वक़्त लोग दह्शतज़दा हो कर कलाम का मतलब
समझेंगे।" 20 चारपाई इतनी छोटी होगी कि तुम पाँओ
फैला कर सो नहीं सकोगे। बिस्तर की चौड़ाई इतनी
कम होगी कि तुम उसे लपेट कर आराम नहीं कर
सकोगे।

21 क्यूँकि रब उठ कर यूँ तुम पर झपट पड़ेगा जिस
तरह पराज़ीम पहाड़ के पास फ़िलिस्तियों पर झपट
पड़ा। जिस तरह वादी-ए-जिबऊन में अमोरियों पर
टूट पड़ा उसी तरह वह तुम पर टूट पड़ेगा। और
जो काम वह करेगा वह अजीब होगा, जो क़दम
वह उठाएगा वह मामूल से हट कर होगा। 22 चुनाँचे
अपनी तानाज़नी से बाज़ आओ, वर्ना तुम्हारी ज़न्जीरें
मज़ीद ज़ोर से कस दी जाएँगी। क्यूँकि मुझे क़ादिर-

ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज से पैग़ाम मिला है कि तमाम दुनिया की तबाही मुतअय्यिन है।

माहिर किसान की तम्सील

23 ग़ौर से मेरी बात सुनो! ध्यान से उस पर कान धरो
जो मैं कह रहा हूँ! 24 जब किसान खेत को बीज बोने
के लिए तय्यार करता है तो क्या वह पूरा दिन हल
चलाता रहता है? क्या वह अपना पूरा वक़्त ज़मीन
खोदने और ढेले तोड़ने में सर्फ़ करता है? 25 हरगिज़
नहीं! जब पूरे खेत की सतह हमवार और तय्यार है
तो वह अपनी अपनी जगह पर सियाह ज़ीरा और
सफ़ेद ज़ीरा, गन्दुम, बाजरा और जो का बीज बोता
है। आख़िर में वह किनारे पर चारे का बीज बोता
है। 26 किसान को ख़ूब मालूम है कि क्या क्या करना
होता है, क्यूँकि उस के ख़ुदा ने उसे तालीम दे कर
सहीह तरीक़ा सिखाया। 27 चुनाँचे सियाह ज़ीरा और
सफ़ेद ज़ीरा को अनाज की तरह गाहा नहीं जाता। दाने
निकालने के लिए उन पर वज़नी चीज़ नहीं चलाई
जाती बल्कि उन्हें डंडे से मारा जाता है। 28 और क्या
अनाज को गाह गाह कर पीसा जाता है? हरगिज़
नहीं! किसान उसे हद से ज़्यादा नहीं गाहता। गो उस
के घोड़े कोई वज़नी चीज़ खैंचते हुए बालियों पर से
गुज़रते हैं ताकि दाने निकलें ताहम किसान ध्यान देता
है कि दाने पिस न जाएँ। 29 उसे यह इल्म भी रब्ब-
उल-अफ़्वाज से मिला है जो ज़बरदस्त मश्वरों और
कामिल हिक्मत का मम्बा है।

यरूशलम ख़बरदार रहे

29 1 ऐ अरीएल, अरीएल, [q]तुझ पर अफ़्सोस!
ऐ शहर जिस में दाऊद ख़ैमाज़न था, तुझ पर
अफ़्सोस! चलो, साल-ब-साल अपने तहवार मनाते
रहो। 2 लेकिन मैं अरीएल को यूँ घेर कर तंग करूँगा
कि उस में आह-ओ-ज़ारी सुनाई देगी। तब यरूशलम
मेरे नज़्दीक सहीह मानों में अरीएल साबित होगा।
3 क्यूँकि मैं तुझे हर तरफ़ से पुश्ताबन्दी से घेर
कर बन्द रखूँगा, तेरे मुहासरे का पूरा बन्द-ओ-बस्त
करूँगा। 4 तब तू इतना पस्त होगा कि ख़ाक में से
बोलेगा, तेरी दबी दबी आवाज़ गर्द में से निकलेगी।
जिस तरह मुर्दा रूह ज़मीन के अन्दर से सरगोशी
करती है उसी तरह तेरी धीमी धीमी आवाज़ ज़मीन
में से निकलेगी।

5 लेकिन अचानक तेरे मुतअद्दिद दुश्मन बारीक
धूल की तरह उड़ जाएंगे, ज़ालिमों का ग़ोल हवा
में भूसे की तरह तित्तर-बित्तर हो जाएगा। क्यूँकि
अचानक, एक ही लम्हे में 6 रब्ब-उल-अफ़्वाज उन
पर टूट पड़ेगा। वह बिजली की कड़कती आवाज़ें,
ज़ल्ज़ला, बड़ा शोर, तेज़ आँधी, तूफ़ान और भस्म
करने वाली आग के शोले अपने साथ ले कर शहर
की मदद करने आएगा। 7 तब अरीएल से लड़ने
वाली तमाम क़ौमों के ग़ोल ख़्वाब जैसे लगेंगे। जो
यरूशलम पर हम्ला करके उस का मुहासरा कर रहे
और उसे तंग कर रहे थे वह रात में रोया जैसे
ग़ैरहक़ीक़ी लगेंगे। 8 तुम्हारे दुश्मन उस भूके आदमी
की मानिन्द होंगे जो ख़्वाब में देखता है कि मैं खाना
खा रहा हूँ, लेकिन फिर जाग कर जान लेता है कि मैं
वैसे का वैसा भूका हूँ। तुम्हारे मुख़ालिफ़ उस प्यासे
आदमी की मानिन्द होंगे जो ख़्वाब में देखता है कि
मैं पानी पी रहा हूँ, लेकिन फिर जाग कर जान लेता
है कि मैं वैसे का वैसा निढाल और प्यासा हूँ। यही
उन तमाम बैन-उल-अक़्वामी ग़ोलों का हाल होगा जो
कोह-ए-सिय्यून से जंग करेंगे।

अल्लाह का कलाम क़ौम की समझ से बाहर है

9 हैरतज़दा हो कर हक्का-बक्का रह जाओ! अंधे हो
कर नाबीना हो जाओ! मत्वाले हो जाओ, लेकिन मै
से नहीं। लड़खड़ाते जाओ, लेकिन शराब से नहीं।
10 क्यूँकि रब ने तुम्हें गहरी नींद सुला दिया है, उस
ने तुम्हारी आँखों यानी नबियों को बन्द किया और

---

[q]मुराद है यरूशलम। अरीएल का एक मतलब 'अल्लाह का शेरबबर' और दूसरा 'भस्म होने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह' है। यहाँ दोनों मतलब मुमकिन हैं।

तुम्हारे सरों यानी रोया देखने वालों पर पर्दा डाल दिया है।

11 इस लिए जो भी कलाम नाज़िल हुआ है वह तुम्हारे लिए सर-ब-मुहर किताब ही है। अगर उसे किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिया जाए ताकि पढ़े तो वह जवाब देगा, "यह पढ़ा नहीं जा सकता, क्यूँकि इस पर मुहर है।" 12 और अगर उसे किसी अनपढ़ आदमी को दिया जाए तो वह कहेगा, "मैं अनपढ़ हूँ।"

13 रब फ़रमाता है, "यह क़ौम मेरे हुज़ूर आ कर अपनी ज़बान और होंटों से तो मेरा एहतिराम करती है, लेकिन उस का दिल मुझ से दूर है। उन की ख़ुदातरसी सिर्फ़ इन्सान ही के रटे-रटाए अह्काम पर मब्नी है। 14 इस लिए आइन्दा भी मेरा इस क़ौम के साथ सुलूक हैरतअंगेज़ होगा। हाँ, मेरा सुलूक अजीब-ओ-ग़रीब होगा। तब उस के दानिशमन्दों की दानिश जाती रहेगी, और उस के समझदारों की समझ ग़ाइब हो जाएगी।"

15 उन पर अफ़सोस जो अपना मन्सूबा ज़मीन की गहराइयों में दबा कर रब से छुपाने की कोशिश करते हैं, जो तारीकी में अपने काम करके कहते हैं, "कौन हमें देख लेगा, कौन हमें पहचान लेगा?" 16 तुम्हारी कजरवी पर लानत! क्या कुम्हार को उस के गारे के बराबर समझा जाता है? क्या बनी हुई चीज़ बनाने वाले के बारे में कहती है, "उस ने मुझे नहीं बनाया"? या क्या जिस को तश्कील दिया गया है वह तश्कील देने वाले के बारे में कहता है, "वह कुछ नहीं समझता"? हरगिज़ नहीं!

बड़ी तब्दीलियाँ आने वाली हैं

17 थोड़ी ही देर के बाद लुबनान का जंगल फलते फूलते बाग़ में तब्दील होगा जबकि फलता फूलता बाग़ जंगल सा लगेगा। 18 उस दिन बहरे किताब की तिलावत सुनेंगे, और अंधों की आँखें अंधेरे और तारीकी में से निकल कर देख सकेंगी। 19 एक बार फिर फ़रोतन रब की ख़ुशी मनाएँगे, और मुह्ताज इस्राईल के क़ुद्दूस के बाइस शादियाना बजाएंगे। 20 ज़ालिम का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा, तानाज़न ख़त्म हो जाएंगे, और दूसरों की ताक में बैठने वाले सब के सब रू-ए-ज़मीन पर से मिट जाएंगे। 21 यही उन का अन्जाम होगा जो अदालत में दूसरों को क़ुसूरवार ठहराते, शहर के दरवाज़े में अदालत करने वाले क़ाज़ी को फंसाने की कोशिश करते और झूटी गवाहियों से बेक़ुसूर का हक़ मारते हैं।

22 चुनाँचे रब जिस ने पहले इब्राहीम का भी फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाया था याक़ूब के घराने से फ़रमाता है, "अब से याक़ूब शर्मिन्दा नहीं होगा, अब से इस्राईलियों का रंग फ़क़ नहीं पड़ जाएगा। 23 जब वह अपने दरमियान अपने बच्चों को जो मेरे हाथों का काम हैं देखेंगे तो वह मेरे नाम को मुक़द्दस मानेंगे। वह याक़ूब के क़ुद्दूस को मुक़द्दस जानेंगे और इस्राईल के ख़ुदा का ख़ौफ़ मानेंगे। 24 उस वक़्त जिन की रूह आवारा है वह समझ हासिल करेंगे, और बुड़बुड़ाने वाले तालीम क़बूल करेंगे।"

मिस्र के वादे बेकार हैं

30 1 रब फ़रमाता है, "ऐ ज़िद्दी बच्चो, तुम पर अफ़सोस! क्यूँकि तुम मेरे बग़ैर मन्सूबे बांधते और मेरे रूह के बग़ैर मुआहदे कर लेते हो। गुनाहों में इज़ाफ़ा करते करते 2 तुम ने मुझ से मश्वरा लिए बग़ैर मिस्र की तरफ़ रुजू किया ताकि फ़िरऔन की आड़ में पनाह लो और मिस्र के साय में हिफ़ाज़त पाओ। 3 लेकिन ख़बरदार! फ़िरऔन का तहफ़्फ़ुज़ तुम्हारे लिए शर्म का बाइस बनेगा, मिस्र के साय में पनाह लेने से तुम्हारी रुस्वाई हो जाएगी। 4 क्यूँकि गो उस के अफ़सर ज़ुअन में हैं और उस के एलची हनीस तक पहुँच गए हैं 5 तो भी सब इस क़ौम से शर्मिन्दा हो जाएंगे, क्यूँकि इस के साथ मुआहदा बेकार होगा। इस से न मदद और न फ़ाइदा हासिल होगा बल्कि यह शर्म और ख़जालत का बाइस ही होगी।"

6 दश्त-ए-नजब के जानवरों के बारे में रब का फ़रमान :

यहूदाह के सफ़ीर एक तक्लीफ़दिह और
परेशानकुन मुल्क में से गुज़र रहे हैं जिस में शेरबबर,
शेरनी, ज़हरीले और उड़नसाँप बसते हैं। उन के गधे
और ऊँट यहूदाह की दौलत और ख़ज़ानों से लदे हुए
हैं, और वह सब कुछ मिस्र के पास पहुँचा रहे हैं,
गो इस क़ौम का कोई फ़ाइदा नहीं। 7 मिस्र की मदद
फ़ुज़ूल ही है! इस लिए मैं ने मिस्र का नाम 'रहब
अज़दहा जिस का मुँह बन्द कर दिया गया है' रखा
है।

8 अब दूसरों के पास जा कर सब कुछ तख़्ते पर
लिख। उसे किताब की सूरत में क़लमबन्द कर ताकि
मेरे अल्फ़ाज़ आने वाले दिनों में हमेशा तक गवाही
दें। 9 क्यूँकि यह क़ौम सरकश है, यह लोग धोकेबाज़
बच्चे हैं जो रब की हिदायात को मानने के लिए तय्यार
ही नहीं। 10 ग़ैबबीनों को वह कहते हैं, "रोया से बाज़
आओ।" और रोया देखने वालों को वह हुक्म देते
हैं, "हमें सच्ची रोया मत बताना बल्कि हमारी ख़ुशामद
करने वाली बातें। फ़रेबदिह रोया देख कर हमारे आगे
बयान करो! 11 सहीह रास्ते से हट जाओ, सीधी राह
को छोड़ दो। हमारे सामने इस्राईल के क़ुद्दूस का
ज़िक्र करने से बाज़ आओ!"

12 जवाब में इस्राईल का क़ुद्दूस फ़रमाता है, "तुम
ने यह कलाम रद्द करके ज़ुल्म और चालाकी पर
भरोसा बल्कि पूरा एतिमाद किया है। 13 अब यह
गुनाह तुम्हारे लिए उस ऊँची दीवार की मानिन्द होगा
जिस में दराड़ें पड़ गई हैं। दराड़ें फैलती हैं और दीवार
बैठी जाती है। फिर अचानक एक ही लम्हे में वह
धड़ाम से ज़मीनबोस हो जाती है। 14 वह टुकड़े टुकड़े
हो जाती है, बिलकुल मिट्टी के उस बर्तन की तरह जो
बेरहमी से चिकनाचूर किया जाता है और जिस का
एक टुकड़ा भी आग से कोएले उठा कर ले जाने या
हौज़ से थोड़ा बहुत पानी निकालने के क़ाबिल नहीं
रह जाता।"

सब्र के साथ रब पर भरोसा रखो

15 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ जो इस्राईल का क़ुद्दूस है
फ़रमाता है, "वापस आ कर सुकून पाओ, तब ही
तुम्हें नजात मिलेगी। ख़ामोश रह कर मुझ पर भरोसा
रखो, तब ही तुम्हें तक़वियत मिलेगी। लेकिन तुम
इस के लिए तय्यार ही नहीं थे।

16 चूँकि तुम जवाब में बोले, 'हरगिज़ नहीं, हम
अपने घोड़ों पर सवार हो कर भागेंगे' इस लिए तुम
भाग जाओगे। चूँकि तुम ने कहा, 'हम तेज़ घोड़ों
पर सवार हो कर बच निकलेंगे' इस लिए तुम्हारा
ताक़्क़ुब करने वाले कहीं ज़्यादा तेज़ होंगे। 17 तुम्हारे
हज़ार मर्द एक ही आदमी की धमकी पर भाग जाएंगे।
और जब दुश्मन के पाँच अफ़राद तुम्हें धमकाएँगे तो
तुम सब के सब फ़रार हो जाओगे। आख़िरकार जो
बचेंगे वह पहाड़ की चोटी पर पर्चम के डंडे की तरह
तन्हा रह जाएंगे, पहाड़ी पर झंडे की तरह अकेले
होंगे।"

18 लेकिन रब तुम्हें मेहरबानी दिखाने के इन्तिज़ार
में है, वह तुम पर रहम करने के लिए उठ खड़ा हुआ
है। क्यूँकि रब इन्साफ़ का ख़ुदा है। मुबारक हैं वह
जो उस के इन्तिज़ार में रहते हैं।

19 ऐ सिय्यून के बाशिन्दो जो यरूशलम में रहते हो,
आइन्दा तुम नहीं रोओगे। जब तुम फ़र्याद करोगे तो
वह ज़रूर तुम पर मेहरबानी करेगा। तुम्हारी सुनते ही
वह जवाब देगा। 20 गो माज़ी में रब ने तुम्हें तंगी की
रोटी खिलाई और ज़ुल्म का पानी पिलाया, लेकिन
अब तेरा उस्ताद छुपा नहीं रहेगा बल्कि तेरी अपनी
ही आँखें उसे देखेंगी। 21 अगर दाईं या बाईं तरफ़
मुड़ना है तो तुम्हें पीछे से हिदायत मिलेगी, "यही
रास्ता सहीह है, इसी पर चलो!" तुम्हारे अपने कान
यह सुनेंगे। 22 उस वक़्त तुम चाँदी और सोने से सजे
हुए अपने बुतों की बेहुरमती करोगे। तुम "उफ़, गन्दी
चीज़!" कह कर उन्हें नापाक कचरे की तरह बाहर
फैंकोगे।

23 बीज बोते वक़्त रब तेरे खेतों पर बारिश भेज कर
बेहतरीन फ़सलें पकने देगा, ग़िज़ाइयतबख़्श ख़ुराक
मुहय्या करेगा। उस दिन तेरी भेड़-बकरियाँ और गाय-
बैल वसी चरागाहों में चरेंगे। 24 खेतीबाड़ी के लिए
मुस्तामल बैलों और गधों को छाज और दोशाख़े के
ज़रीए साफ़ की गई बेहतरीन ख़ुराक मिलेगी। 25 उस
दिन जब दुश्मन हलाक हो जाएगा और उस के बुर्ज
गिर जाएंगे तो हर ऊँचे पहाड़ से नहरें और हर बुलन्दी
से नाले बहेंगे। 26 चाँद सूरज की मानिन्द चमकेगा
जबकि सूरज की रौशनी सौ गुना ज़्यादा तेज़ होगी।
एक दिन की रौशनी सात आम दिनों की रौशनी के
बराबर होगी। उस दिन रब अपनी क़ौम के ज़ख़्मों पर
मर्हम-पट्टी करके उसे शिफ़ा देगा।

रब असूरियों की अदालत करता है

27 वह देखो, रब का नाम दूरदराज़ इलाक़े से आ
रहा है। वह ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब से और बड़े रोब के साथ
क़रीब पहुँच रहा है। उस के होंट क़हर से हिल रहे हैं,
उस की ज़बान के आगे आगे सब कुछ राख हो रहा
है। 28 उस का दम किनारों से बाहर आने वाली नदी
है जो सब कुछ गले तक डुबो देती है। वह अक़्वाम
को हलाकत की छलनी में छान छानकर उन के मुँह
में दहाना डालता है ताकि वह भटक कर तबाहकुन
राह पर आएँ।

29 लेकिन तुम गीत गाओगे, ऐसे गीत जैसे मुक़द्दस
ईद की रात गाए जाते हैं। इतनी रौनक़ होगी कि
तुम्हारे दिल फूले न समाएँगे। तुम्हारी ख़ुशी उन
ज़ाइरीन की मानिन्द होगी जो बाँसरी बजाते हुए रब
के पहाड़ पर चढ़ते और इस्राईल की चटान के हुज़ूर
आते हैं।

30 तब रब अपनी बारोब आवाज़ से लोगों पर
अपनी क़ुदरत का इज़हार करेगा। उस का सख़्त
ग़ज़ब और भस्म करने वाली आग नाज़िल होगी,
साथ साथ बारिश की तेज़ बौछाड़ और ओलों का
तूफ़ान उन पर टूट पड़ेगा। 31 रब की आवाज़ असूर
को पाश पाश कर देगी, उस की लाठी उसे मारती
रहेगी। 32 और जूँ जूँ रब सज़ा के लठ से असूर को
ज़र्ब लगाएगा तूँ तूँ दफ़ और सरोद बजेंगे। अपने
ज़ोरावर बाज़ू से वह असूर से लड़ेगा। 33 क्यूँकि बड़ी
देर से वह गढ़ा तय्यार है जहाँ असूरी बादशाह की
लाश को जलाना है। उसे गहरा और चौड़ा बनाया
गया है, और उस में लकड़ी का बड़ा ढेर है। रब का
दम ही उसे गंधक की तरह जलाएगा।

मिस्र की मदद बेकार है

31 1 उन पर अफ़सोस जो मदद के लिए मिस्र
जाते हैं। उन की पूरी उम्मीद घोड़ों से
है, और वह अपने मुतअद्दिद रथों और ताक़तवर
घुड़सवारों पर एतिमाद रखते हैं। अफ़सोस, न वह
इस्राईल के क़ुद्दूस की तरफ़ नज़र उठाते, न रब की
मर्ज़ी दरयाफ़्त करते हैं। 2 लेकिन अल्लाह भी दाना
है। वह तुम पर आफ़त लाएगा और अपना फ़रमान
मन्सूख़ नहीं करेगा बल्कि शरीरों के घर और उन
के मुआविनों के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होगा। 3 मिस्री
तो ख़ुदा नहीं बल्कि इन्सान हैं। और उन के घोड़े
आलम-ए-अर्वाह के नहीं बल्कि फ़ानी दुनिया के हैं।
जहाँ भी रब अपना हाथ बढ़ाए वहाँ मदद करने वाले
मदद मिलने वालों समेत ठोकर खा कर गिर जाते हैं,
सब मिल कर हलाक हो जाते हैं।

4 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "सिय्यून पर उतरते
वक़्त मैं उस जवान शेरबबर की तरह हूँगा जो बकरी
मार कर उस के ऊपर खड़ा ग़ुर्राता है। गो मुतअद्दिद
गल्लाबानों को उसे भगाने के लिए बुलाया जाए तो
भी वह उन की चीख़ों से दहशत नहीं खाता, न उन
के शोर-शराबा से डर कर दबक जाता है। रब्ब-उल-
अफ़्वाज इसी तरह ही कोह-ए-सिय्यून पर उतर कर
लड़ेगा। 5 रब्ब-उल-अफ़्वाज पर फैलाए हुए परिन्दे
की तरह यरूशलम को पनाह देगा, वह उसे महफ़ूज़
रख कर छुटकारा देगा, उसे सज़ा देने के बजाय रिहा
करेगा।"

6 ऐ इस्राईलियो, जिस से तुम सरकश हो कर इतने
दूर हो गए हो उस के पास वापस आ जाओ। 7 अब

तक तुम अपने हाथों से बने हुए सोने-चाँदी के बुतों
की पूजा करते हो, अब तक तुम इस गुनाह में
मुलव्वस हो। लेकिन वह दिन आने वाला है जब
हर एक अपने बुतों को रद्द करेगा।
8 "असूर तलवार की ज़द में आ कर गिर जाएगा।
लेकिन यह किसी मर्द की तलवार नहीं होगी। जो
तलवार असूर को खा जाएगी वह फ़ानी इन्सान की
नहीं होगी। असूर तलवार के आगे आगे भागेगा, और
उस के जवानों को बेगार में काम करना पड़ेगा। 9 उस
की चटान डर के मारे जाती रहेगी, उस के अफ़सर
लश्करी झंडे को देख कर दहशत खाएँगे।" यह रब
का फ़रमान है जिस की आग सिय्यून में भड़कती और
जिस का तनूर यरूशलम में तपता है।

रास्त बादशाह की आमद

32 1 एक बादशाह आने वाला है जो इन्साफ़ से
हुकूमत करेगा। उस के अफ़सर भी सदाक़त
से हुक्मरानी करेंगे। 2 हर एक आँधी और तूफ़ान से
पनाह देगा, हर एक रेगिस्तान में नदियों की तरह तर-
ओ-ताज़ा करेगा, हर एक तपती धूप में बड़ी चटान
का सा साया देगा।
3 तब देखने वालों की आँखें अंधी नहीं रहेंगी, और
सुनने वालों के कान ध्यान देंगे। 4 जल्दबाज़ों के दिल
समझदार हो जाएंगे, और हक्लों की ज़बान रवानी
से साफ़ बात करेगी। 5 उस वक़्त न अहमक़ शरीफ़
कहलाएगा, न बदमआश को मुम्ताज़ क़रार दिया
जाएगा। 6 क्यूँकि अहमक़ हमाक़त बयान करता है,
और उस का ज़हन शरीर मन्सूबे बांधता है। वह बेदीन
हरकतें करके रब के बारे में कुफ़्र बकता है। भूके
को वह भूका छोड़ता और प्यासे को पानी पीने से
रोकता है। 7 बदमआश के तरीक़-ए-कार शरीर हैं।
वह ज़रूरतमन्द को झूट से तबाह करने के मन्सूबे
बांधता रहता है, ख़्वाह ग़रीब हक़ पर क्यूँ न हो।
8 उस के मुक़ाबले में शरीफ़ आदमी शरीफ़ मन्सूबे
बांधता और शरीफ़ काम करने में साबितक़दम रहता
है।

बेपरवा ज़िन्दगी ख़त्म होने वाली है

9 ऐ बेपरवा औरतो, उठ कर मेरी बात सुनो! ऐ
बेटियो जो अपने आप को महफ़ूज़ समझती हो,
मेरे अल्फ़ाज़ पर ध्यान दो! 10 एक साल और चन्द
एक दिनों के बाद तुम जो अपने आप को महफ़ूज़
समझती हो काँप उठोगी। क्यूँकि अंगूर की फ़सल
ज़ाए हो जाएगी, और फल की फ़सल पकने नहीं
पाएगी। 11 ऐ बेपरवा औरतो, लरज़ उठो! ऐ बेटियो
जो अपने आप को महफ़ूज़ समझती हो, थरथराओ!
अपने अच्छे कपड़ों को उतार कर टाट के लिबास
पहन लो। 12 अपने सीनों को पीट पीट कर अपने
ख़ुशगवार खेतों और अंगूर के फलदार बाग़ों पर
मातम करो। 13 मेरी क़ौम की ज़मीन पर आह-ओ-
ज़ारी करो, क्यूँकि उस पर ख़ारदार झाड़ियाँ छा गई
हैं। रंगरलियाँ मनाने वाले शहर के तमाम ख़ुशबाश
घरों पर ग़म खाओ। 14 महल वीरान होगा, रौनक़दार
शहर सुन्सान होगा। क़िला और बुर्ज हमेशा के लिए
ग़ार बनेंगे जहाँ जंगली गधे अपने दिल बहलाएँगे और
भेड़-बकरियाँ चरेंगी।

अल्लाह के रूह से बहाली

15 जब तक अल्लाह अपना रूह हम पर नाज़िल न
करे उस वक़्त तक हालात ऐसे ही रहेंगे। लेकिन
फिर रेगिस्तान बाग़ में तब्दील हो जाएगा, और
बाग़ के फलदार दरख़्त जंगल जैसे घने हो जाएंगे।
16 तब इन्साफ़ रेगिस्तान में बसेगा, और सदाक़त
फलते फूलते बाग़ में सुकूनत करेगी। 17 इन्साफ़ का
फल अम्न-ओ-अमान होगा, और सदाक़त का असर
अबदी सुकून और हिफ़ाज़त होगी।
18 मेरी क़ौम पुरसुकून और महफ़ूज़ आबादियों में
बसेगी, उस के घर आरामदिह और पुरअम्न होंगे।
19 गो जंगल तबाह और शहर ज़मीनबोस क्यूँ न हो,
20 लेकिन तुम मुबारक हो जो हर नदी के पास बीज
बो सकोगे और आज़ादी से अपने गाय-बैलों और
गधों को चरा सकोगे।

या रब, मदद!

33 1 तुझ पर अफ़्सोस, जो दूसरों को बर्बाद
करने के बावुजूद बर्बाद नहीं हुआ। तुझ
पर अफ़्सोस, जो दूसरों से बेवफ़ा था, हालाँकि तेरे
साथ बेवफ़ाई नहीं हुई। लेकिन तेरी बारी भी आएगी।
बर्बादी का काम तक्मील तक पहुँचाने पर तू ख़ुद
बर्बाद हो जाएगा। बेवफ़ाई का काम तक्मील तक
पहुँचाने पर तेरे साथ भी बेवफ़ाई की जाएगी।
2 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर! हम तुझ से उम्मीद
रखते हैं। हर सुब्ह हमारी ताक़त बन, मुसीबत के
वक़्त हमारी रिहाई का बाइस हो।
3 तेरी गरजती आवाज़ सुन कर क़ौमें भाग जाती हैं,
तेरे उठ खड़े होने पर वह चारों तरफ़ बिखर जाती
हैं। 4 ऐ क़ौमो, जो माल तुम ने लूट लिया वह दूसरे
छीन लेंगे। जिस तरह टिड्डियों के ग़ोल फ़सलों पर
झपट कर सब कुछ चट कर जाते हैं उसी तरह दूसरे
तुम्हारी पूरी मिलकियत पर टूट पड़ेंगे।
5 रब सरफ़राज़ है और बुलन्दियों पर सुकूनत
करता है। वही सिय्यून को इन्साफ़ और सदाक़त
से मालामाल करेगा। 6 उन दिनों में वह तेरी हिफ़ाज़त
की ज़मानत होगा। तुझे नजात, हिक्मत और दानाई
का ज़ख़ीरा हासिल होगा, और रब का ख़ौफ़ तेरा
ख़ज़ाना होगा।

दुश्मन से धोका, रब से रिहाई

7 सुनो, उन के सूरमे गलियों में चीख़ रहे हैं, अम्न
के सफ़ीर तल्ख़ आहें भर रहे हैं। 8 सड़कें वीरान-ओ-
सुन्सान हैं, और मुसाफ़िर उन पर नज़र ही नहीं आते।
मुआहदे को तोड़ा गया है, लोगों ने उस के गवाहों को
रद्द करके इन्सान को हक़ीर जाना है। 9 ज़मीन ख़ुश्क
हो कर मुरझा गई है, लुबनान कुमला कर शर्मिन्दा हो
गया है। शारून का मैदान बेशजर बयाबान सा बन
गया है, बसन और कर्मिल अपने पत्ते झाड़ रहे हैं।
10 लेकिन रब फ़रमाता है, "अब मैं उठ खड़ा हूँगा,
अब मैं सरफ़राज़ हो कर अपनी क़ुव्वत का इज़हार
करूँगा। 11 तुम उम्मीद से हो, लेकिन पेट में सूखी
घास ही है, और जन्म देते वक़्त भूसा ही पैदा होगा।
जब तुम फूँक मारोगे तो तुम्हारा दम आग बन कर तुम
ही को राख कर देगा। 12 अक़्वाम यूँ भस्म हो जाएँगी
कि चूना ही रह जाएगा, वह ख़ारदार झाड़ियों की
तरह कट कर जल जाएँगी। 13 ऐ दूरदराज़ इलाक़ों के
बाशिन्दो, वह कुछ सुनो जो मैं ने किया है। ऐ क़रीब
के बसने वालो, मेरी क़ुदरत जान लो।"
14 सिय्यून में गुनाहगार घबरा गए हैं, बेदीन परेशानी
के आलम में थरथराते हुए चिल्ला रहे हैं, "हम में से
कौन भस्म करने वाली इस आग के सामने ज़िन्दा
रह सकता है? हम में से कौन हमेशा तक भड़कने
वाली इस अंगीठी के क़रीब क़ाइम रह सकता है?"
15 लेकिन वह शख़्स क़ाइम रहेगा जो रास्त ज़िन्दगी
गुज़ारे और सच्चाई बोले, जो ग़ैरक़ानूनी नफ़ा और
रिश्वत लेने से इन्कार करे, जो क़ातिलाना साज़िशों
और ग़लत काम से गुरेज़ करे। 16 वही बुलन्दियों पर
बसेगा और पहाड़ के क़िले में महफ़ूज़ रहेगा। उसे
रोटी मिलती रहेगी, और पानी की कभी कमी न होगी।

पुरजलाल बादशाह का मुल्क

17 तेरी आँखें बादशाह और उस की पूरी ख़ूबसूरती
का मुशाहदा करेंगी, वह एक वसी और दूर दूर
तक फैला हुआ मुल्क देखेंगी। 18 तब तू गुज़रे हुए
हौलनाक वक़्त पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करके पूछेगा,
"दुश्मन के बड़े अफ़्सर किधर हैं? टैक्स लेने वाला
कहाँ ग़ाइब हुआ? वह अफ़्सर किधर है जो बुर्जों
का हिसाब-किताब करता था?" 19 आइन्दा तुझे
यह गुस्ताख़ क़ौम नज़र नहीं आएगी, यह लोग जो
नाक़ाबिल-ए-फ़हम ज़बान बोलते और हकलाते हुए
ऐसी बातें करते हैं जो समझ में नहीं आतीं।
20 हमारी ईदों के शहर सिय्यून पर नज़र डाल! तेरी
आँखें यरूशलम को देखेंगी। उस वक़्त वह महफ़ूज़
सुकूनतगाह होगा, एक ख़ैमा जो आइन्दा कभी नहीं
हटेगा, जिस की मेख़ें कभी नहीं निकलेंगी, और जिस
का एक रस्सा भी नहीं टूटेगा।

21 वहाँ रब ही हमारा ज़ोरावर आक़ा होगा, और
शहर दरयाओं का मक़ाम होगा, ऐसी चौड़ी नदियों
का मक़ाम जिन पर न चप्पू वाली कश्ती, न शानदार
जहाज़ चलेगा। 22 क्यूँकि रब ही हमारा क़ाज़ी, रब ही
हमारा सरदार और रब ही हमारा बादशाह है। वही
हमें छुटकारा देगा। 23 दुश्मन का बेड़ा ग़र्क़ होने वाला
है। बादबान के रस्से ढीले हैं, और न वह मस्तूल को
मज़बूत रखने, न बादबान को फैलाए रखने में मदद
देते हैं। उस वक़्त कस्रत का लूटा हुआ माल बटेगा,
बल्कि इतना माल होगा कि लंगड़े भी लूटने में शिर्कत
करेंगे। 24 सिय्यून का कोई भी फ़र्द नहीं कहेगा, "मैं
कमज़ोर हूँ," क्यूँकि उस के बाशिन्दों के गुनाह बख़्शे
गए होंगे।

अदोम पर अदालत का एलान

34 1 ऐ क़ौमो, क़रीब आ कर सुन लो! ऐ
उम्मतो, ध्यान दो! दुनिया और जो भी उस
में है कान लगाए, ज़मीन और जो कुछ उस में से
फूट निकला है तवज्जुह दे! 2 क्यूँकि रब को तमाम
उम्मतों पर ग़ुस्सा आ गया है, और उस का ग़ज़ब
उन के तमाम लश्करों पर नाज़िल हो रहा है। वह
उन्हें मुकम्मल तौर पर तबाह करेगा, इन्हें सफ़्फ़ाक
के हवाले करेगा। 3 उन के मक़्तूलों को बाहर फैंका
जाएगा, और लाशों की बदबू चारों तरफ़ फैलेगी।
पहाड़ उन के ख़ून से शराबोर होंगे। 4 तमाम सितारे
गल जाएंगे, और आसमान को तूमार की तरह लपेटा
जाएगा। सितारों का पूरा लश्कर अंगूर के मुरझाए हुए
पत्तों की तरह झड़ जाएगा, वह अन्जीर के दरख़्त की
सूखी हरियाली की तरह गिर जाएगा।

5 क्यूँकि आसमान पर मेरी तलवार ख़ून पी पी कर
मस्त हो गई है। देखो, अब वह अदोम पर नाज़िल
हो रही है ताकि उस की अदालत करे, उस क़ौम की
जिस की मुकम्मल तबाही का फ़ैसला मैं कर चुका हूँ।
6 रब की तलवार ख़ूनआलूदा हो गई है, और उस से
चर्बी टपकती है। भेड़-बकरियों का ख़ून और मेंढों के
गुर्दों की चर्बी उस पर लगी है, क्यूँकि रब बुस्रा शहर
में क़ुर्बानी की ईद और मुल्क-ए-अदोम में क़त्ल-ए-
आम का तहवार मनाएगा। 7 उस वक़्त जंगली बैल
उन के साथ गिर जाएंगे, और बछड़े ताक़तवर साँडों
समेत ख़त्म हो जाएंगे। उन की ज़मीन ख़ून से मस्त
और ख़ाक चर्बी से शराबोर होगी।

8 क्यूँकि वह दिन आ गया है जब रब बदला लेगा,
वह साल जब वह अदोम से इस्राईल का इन्तिक़ाम
लेगा। 9 अदोम की नदियों में तारकोल ही बहेगा, और
गंधक ज़मीन को ढाँपेगी। मुल्क भड़कती हुई राल
से भर जाएगा, 10 जिस की आग न दिन और न रात
बुझेगी बल्कि हमेशा तक धुआँ छोड़ती रहेगी। मुल्क
नस्ल-दर-नस्ल वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा, यहाँ तक
कि मुसाफ़िर भी हमेशा तक उस में से गुज़रने से गुरेज़
करेंगे। 11 दश्ती उल्लू और ख़ारपुश्त उस पर क़ब्ज़ा
करेंगे, चिंघाड़ने वाले उल्लू और कव्वे उस में बसेरा
करेंगे। क्यूँकि रब फ़ीते और साहूल से अदोम का पूरा
मुल्क नाप नाप कर उजाड़ और वीरानी के हवाले
करेगा। 12 उस के शुरफ़ा का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहेगा। कुछ नहीं रहेगा जो बादशाही कहलाए,
मुल्क के तमाम रईस जाते रहेंगे। 13 काँटेदार पौदे उस
के महलों पर छा जाएंगे, ख़ुदरौ पौदे और ऊँटकटारे
उस के क़िलाबन्द शहरों में फैल जाएंगे। मुल्क गीदड़
और उक़ाबी उल्लू का घर बनेगा। 14 वहाँ रेगिस्तान के
जानवर जंगली कुत्तों से मिलेंगे, और बकरानुमा जिन
एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। लीलीत नामी आसेब
भी उस में ठहरेगा, वहाँ उसे भी आरामगाह मिलेगी।
15 मादा साँप उस के साय में बिल बना कर उस में
अपने अंडे देगी और उन्हें से कर पालेगी। शिकारी
परिन्दे भी दो दो हो कर वहाँ जमा होंगे।

16 रब की किताब में पढ़ कर इस की तहक़ीक़
करो! अदोम में यह तमाम चीज़ें मिल जाएँगी। मुल्क
एक से भी महरूम नहीं रहेगा बल्कि सब मिल कर
उस में पाई जाएँगी। क्यूँकि रब ही के मुँह ने इस
का हुक्म दिया है, और उसी का रूह इन्हें इकट्ठा
करेगा। 17 वही सारी ज़मीन की पैमाइश करेगा और
फिर क़ुरआ डाल कर मज़कूरा जानदारों में तक़्सीम

करेगा। तब मुल्क अबद तक उन की मिलकियत में
आएगा, और वह नस्ल-दर-नस्ल उस में आबाद होंगे।

क़ौम की रिहाई

35 1 रेगिस्तान और प्यासी ज़मीन बाग़ बाग़
होंगे, बयाबान ख़ुशी मना कर खिल उठेगा।
उस के फूल सोसन की तरह 2 फूट निकलेंगे, और वह
ज़ोर से शादियाना बजा कर ख़ुशी के नारे लगाएगा।
उसे लुबनान की शान, कर्मिल और शारून का पूरा
हुस्न-ओ-जमाल दिया जाएगा। लोग रब का जलाल
और हमारे ख़ुदा की शान-ओ-शौकत देखेंगे।

3 निढाल हाथों को तक़वियत दो,
डाँवाँडोल घुटनों को मज़बूत करो! 4 धड़कते हुए
दिलों से कहो, "हौसला रखो, मत डरो। देखो,
तुम्हारा ख़ुदा इन्तिक़ाम लेने के लिए आ रहा है। वह
हर एक को जज़ा-ओ-सज़ा दे कर तुम्हें बचाने के लिए
आ रहा है।"

5 तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों को
खोला जाएगा।
6 लंगड़े हिरन की सी छलाँगें लगाएँगे, और गूँगे
ख़ुशी के नारे लगाएँगे। रेगिस्तान में चश्मे फूट
निकलेंगे, और बयाबान में से नदियाँ गुज़रेंगी।
7 झुलसती हुई रेत की जगह जोहड़ बनेगा, और
प्यासी ज़मीन की जगह पानी के सोते फूट निकलेंगे।
जहाँ पहले गीदड़ आराम करते थे वहाँ हरी घास,
सरकंडे और आबी नर्सल की नश्व-ओ-नुमा होगी।

8 मुल्क में से शाहराह गुज़रेगी जो 'शाहराह-ए-
मुक़द्दस' कहलाएगी। नापाक लोग उस पर सफ़र नहीं
करेंगे, क्यूँकि वह सहीह राह पर चलने वालों के लिए
मख़्सूस है। अहमक़ उस पर भटकने नहीं पाएँगे।
9 उस पर न शेरबबर होगा, न कोई और वहशी
जानवर आएगा या पाया जाएगा। सिर्फ़ वह उस पर
चलेंगे जिन्हें अल्लाह ने इवज़ाना दे कर छुड़ा लिया है।
10 जितनों को रब ने फ़िद्या दे कर रिहा किया है वह
वापस आएँगे और गीत गाते हुए सिय्यून में दाख़िल
होंगे। उन के सर पर अबदी ख़ुशी का ताज होगा, और
वह इतने मसरूर और शादमान होंगे कि मातम और
गिर्या-ओ-ज़ारी उन के आगे आगे भाग जाएगी।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

36 1 हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें
साल में असूर के बादशाह सन्हेरिब ने
यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों पर धावा बोल
कर उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 2 फिर उस ने अपने
आला अफ़्सर रबशाक़ी को बड़ी फ़ौज के साथ
लकीस से यरूशलम को भेजा। यरूशलम पहुँच कर
रबशाक़ी उस नाले के पास रुक गया जो पानी को
ऊपर वाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस
रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)।
3 यह देख कर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी शब्नाह और मुशीर-ए-ख़ास
यूआख़ बिन आसफ़ शहर से निकल कर उस से
मिलने आए। 4 रबशाक़ी ने उन के हाथ हिज़क़ियाह
को पैग़ाम भेजा,
"असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 5 तुम समझते हो कि ख़ाली
बातें करना फ़ौजी हिकमत-ए-अमली और ताक़त के
बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर एतिमाद
कर रहे हो कि मुझ से सरकश हो गए हो? 6 क्या तुम
मिस्र पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा
ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उस का हाथ वह
चीर कर ज़ख़्मी कर देगा। यही कुछ उन सब के साथ
हो जाएगा जो मिस्र के बादशाह फ़िरऔन पर भरोसा
करें! 7 शायद तुम कहो, 'हम रब अपने ख़ुदा पर
तवक्कुल करते हैं।' लेकिन यह किस तरह हो सकता
है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्यूँकि
उस ने ऊँची जगहों के मन्दिरों और क़ुर्बानगाहों को
ढा कर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि सिर्फ़
यरूशलम की क़ुर्बानगाह के सामने परस्तिश करें।

8 आओ, मेरे आक़ा असूर के बादशाह से सौदा करो।
मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि तुम उन के लिए
सवार मुहय्या कर सको। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे
पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 9 तुम मेरे आक़ा
असूर के बादशाह के सब से छोटे अफ़सर का भी
मुक़ाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिस्र के रथों पर
भरोसा रखने का क्या फ़ाइदा? 10 शायद तुम समझते
हो कि मैं रब की मर्ज़ी के बग़ैर ही इस मुल्क पर हम्ला
करने आया हूँ ताकि सब कुछ बर्बाद करूँ। लेकिन
ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा कि इस
मुल्क पर धावा बोल कर इसे तबाह कर दे।"

11 यह सुन कर इलियाक़ीम, शब्नाह और यूआख़
ने रबशाक़ी की तक़रीर में दख़ल दे कर कहा,
"बराह-ए-करम अरामी ज़बान में अपने ख़ादिमों के
साथ गुफ़्तगु कीजिए, क्यूँकि हम यह अच्छी तरह
बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वर्ना
शहर की फ़सील पर खड़े लोग आप की बातें सुन
लेंगे।" 12 लेकिन रबशाक़ी ने जवाब दिया, "क्या तुम
समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैग़ाम सिर्फ़ तुम्हें
और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह
चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्यूँकि
वह भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और अपना
पेशाब पीने पर मज्बूर हो जाएंगे।"

13 फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़ कर बुलन्द
आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब हुआ,
"सुनो! शहन्शाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर
ध्यान दो! 14 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क़ियाह
तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें बचा नहीं सकता।
15 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके
कहता है, 'रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर
कभी भी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।'
लेकिन इस क़िस्म की बातों से तसल्ली पा कर रब पर
भरोसा मत करना। 16 हिज़क़ियाह की बातें न मानो
बल्कि असूर के बादशाह की। क्यूँकि वह फ़रमाते हैं,
मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकल कर मेरे पास
आ जाओ। फिर तुम में से हर एक अंगूर की अपनी
बेल और अन्जीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा
और अपने हौज़ का पानी पिएगा। 17 फिर कुछ देर के
बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे
अपने मुल्क की मानिन्द होगा। उस में भी अनाज और
नई मै, रोटी और अंगूर के बाग़ हैं। 18 हिज़क़ियाह की
मत सुनना। जब वह कहता है, 'रब हमें बचाएगा' तो
वह तुम्हें धोका दे रहा है। क्या दीगर अक़्वाम के
देवता अपने मुल्कों को शाह-ए-असूर से बचाने के
क़ाबिल रहे हैं? 19 हमात और अर्फ़ाद के देवता कहाँ
रह गए हैं? सिफ़र्वाइम के देवता क्या कर सके? और
क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से
बचाया? 20 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझ
से बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस
तरह मुझ से बचाएगा?"

21 फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्हों ने कोई
जवाब न दिया, क्यूँकि बादशाह ने हुक्म दिया था
कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें। 22 फिर महल
का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुन्शी
शब्नाह और मुशीर-ए-ख़ास यूआख़ बिन आसफ़
रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़ कर हिज़क़ियाह
के पास वापस गए। दरबार में पहुँच कर उन्हों ने
बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाक़ी ने
उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

37 1 यह बातें सुन कर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास
पहन कर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उस ने
महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुन्शी शब्नाह और
इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी
के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए
थे। 3 नबी के पास पहुँच कर उन्हों ने हिज़क़ियाह का
पैग़ाम सुनाया, "आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा
के इस दिन असूरियों ने हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की
है। हमारा हाल दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला उस औरत का
सा है जिस के पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन

जो इस लिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त
जाती रही है। 4 लेकिन शायद रब आप के ख़ुदा ने
रबशाक़ी की वह बातें सुनी हों जो उस के आक़ा
असूर के बादशाह ने ज़िन्दा ख़ुदा की तौहीन में भेजी
हैं। हो सकता है रब आप का ख़ुदा उस की बातें सुन
कर उसे सज़ा दे। बराह-ए-करम हमारे लिए जो अब
तक बचे हुए हैं दुआ करें।"

5 जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह को
बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया,
"अपने आक़ा को बता देना कि रब फ़रमाता है, 'उन
धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो असूरी बादशाह के
मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। 7 देख, मैं उस
का इरादा बदल दूँगा। वह अफ़्वाह सुन कर इतना
मुज़्तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क को वापस
चला जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सन्हेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8 रबशाक़ी यरूशलम को छोड़ कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना हो कर लिब्ना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9 फिर सन्हेरिब को इत्तिला मिली, "एथोपिया का
बादशाह तिर्हाक़ा आप से लड़ने आ रहा है।" तब
उस ने अपने क़ासिदों को दुबारा यरूशलम भेज
दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम पहुँचाएँ, 10 "जिस
देवता पर तुम भरोसा रखते हो उस से फ़रेब न खाओ
जब वह कहता है कि यरूशलम असूरी बादशाह के
क़ब्ज़े में कभी नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन चुके हो
कि असूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ
किया है। हर मुल्क को उन्हों ने मुकम्मल तौर पर
तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच
जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उन की हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्क-ए-अदन में
तिलस्सार के बाशिन्दे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उन की मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने
उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अर्फ़ाद,
सिफ़र्वाइम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ
हैं?"

14 ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया और
फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के
सामने बिछा कर 15 उस ने रब से दुआ की,

16 "ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज इस्राईल के ख़ुदा जो
करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, तू
अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू
ही ने आसमान-ओ-ज़मीन को ख़ल्क़ किया है। 17 ऐ
रब, मेरी सुन! अपनी आँखें खोल कर देख! सन्हेरिब
की उन तमाम बातों पर ध्यान दे जो उस ने इस मक़्सद
से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िन्दा ख़ुदा की इहानत
करे। 18 ऐ रब, यह बात सच है कि असूरी बादशाहों
ने इन तमाम क़ौमों को उन के मुल्कों समेत तबाह
कर दिया है। 19 वह तो उन के बुतों को आग में
फैंक कर भस्म कर सकते थे, क्यूँकि वह ज़िन्दा नहीं
बल्कि सिर्फ़ इन्सान के हाथों से बने हुए लकड़ी और
पत्थर के बुत थे। 20 ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझ से
इल्तिमास करता हूँ कि हमें असूरी बादशाह के हाथ
से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक जान लें कि
तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

21 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ियाह को
पैग़ाम भेजा, "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि
मैं ने असूरी बादशाह सन्हेरिब के बारे में तेरी दुआ
सुनी है। 22 अब रब का उस के ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुंवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिला कर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 23 क्या
तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किस
की इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तू ने
किस के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की है? जिस की
तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख रहा है वह इस्राईल
का क़ुद्दूस है!

24 अपने क़ासिदों के ज़रीए तू ने रब की इहानत की
है। तू डींगें मार कर कहता है, 'मैं अपने बेशुमार रथों
से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इन्तिहा तक
चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के
बेहतरीन दरख़्तों को काट कर लुबनान की दूरतरीन
बुलन्दियों तक, उस के सब से घने जंगल तक पहुँच
गया हूँ। 25 मैं ने ग़ैरमुल्कों में कुएँ खुदवा कर उन
का पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिस्र की तमाम
नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।'

26 ऐ असूरी बादशाह, क्या तू ने नहीं सुना कि बड़ी
देर से मैं ने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने
में ही मैं ने इस का मन्सूबा बांध लिया, और अब मैं
इसे वुजूद में लाया। मेरी मर्ज़ी थी कि तू क़िलाबन्द
शहरों को ख़ाक में मिला कर पत्थर के ढेरों में बदल
दे। 27 इसी लिए उन के बाशिन्दों की ताक़त जाती
रही, वह घबराए और शर्मिन्दा हुए। वह घास की
तरह कमज़ोर थे, छत पर उगने वाली उस हरियाली
की मानिन्द जो थोड़ी देर के लिए फलती फूलती तो
है, लेकिन लू चलते वक़्त एक दम मुरझा जाती है।
28 मैं तो तुझ से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि
तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझ से
पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़
कितने तैश में आ गया है। 29 तेरा तैश और ग़ुरूर देख
कर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डाल
कर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

30 ऐ हिज़क़ियाह, मैं तुझे इस निशान से तसल्ली
दिलाऊँगा कि इस साल और आने वाले साल तुम
वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद-ब-ख़ुद उगेगा।
लेकिन तीसरे साल तुम बीज बो कर फ़सलें काटोगे
और अंगूर के बाग़ लगा कर उन का फल खाओगे।
31 यहूदाह के बचे हुए बाशिन्दे एक बार फिर जड़
पकड़ कर फल लाएँगे। 32 क्यूँकि यरूशलम से क़ौम
का बक़िया निकल आएगा, और कोह-ए-सिय्यून का
बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्ब-
उल-अफ़्वाज की ग़ैरत यह कुछ सरअन्जाम देगी।

33 जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उस में नहीं चलाएगा। न वह ढाल
ले कर उस पर हम्ला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 34 जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 35 क्यूँकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस शहर
का दिफ़ा करके उसे बचाऊँगा।"

36 उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लश्करगाह में से गुज़र कर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुब्ह-सवेरे उठे
तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

37 यह देख कर सन्हेरिब अपने ख़ैमे उखाड़ कर
अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँच
कर वह वहाँ ठहर गया। 38 एक दिन जब वह अपने
देवता निस्रूक के मन्दिर में पूजा कर रहा था तो उस
के बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से
क़त्ल कर दिया और फ़रार हो कर मुल्क-ए-अरारात
में पनाह ली। फिर उस का बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन
हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शिफ़ा देता है

38 1 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार
हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस
का बेटा यसायाह नबी उस से मिलने आया और
कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का बन्द-ओ-
बस्त कर ले, क्यूँकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से
शिफ़ा नहीं पाएगा।"

2 यह सुन कर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार की
तरफ़ फेर कर दुआ की, 3 "ऐ रब, याद कर कि मैं
वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा
हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसन्द
है।" फिर वह फूट फूट कर रोने लगा।

4 तब यसायाह नबी को रब का कलाम मिला,
5 “हिज़क़ियाह के पास जा कर उसे बता देना कि
रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं ने तेरी
दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तेरी ज़िन्दगी
में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। 6 साथ साथ मैं तुझे
और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा।
मैं ही इस शहर का दिफ़ा करूँगा’।”
7 यह पैग़ाम हिज़क़ियाह को सुना कर यसायाह ने
मज़ीद कहा, “रब तुझे एक निशान देगा जिस से तू
जान लेगा कि वह अपना वादा पूरा करेगा। 8 मेरे
कहने पर आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया
दस दर्जे पीछे जाएगा।” और ऐसा ही हुआ। साया
दस दर्जे पीछे हट गया।

शिफ़ा पाने पर हिज़क़ियाह का गीत

9 यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह ने शिफ़ा पाने पर
ज़ैल का गीत क़लमबन्द किया,
10 “मैं बोला, क्या मुझे ज़िन्दगी के उरूज पर
पाताल के दरवाज़ों में दाख़िल होना है? बाक़ीमान्दा
साल मुझ से छीन लिए गए हैं।
11 मैं बोला, आइन्दा मैं रब को ज़िन्दों के मुल्क में
नहीं देखूँगा। अब से मैं पाताल के बाशिन्दों के साथ
रह कर इस दुनिया के लोगों पर नज़र नहीं डालूँगा।
12 मेरे घर को गल्लाबानों के ख़ैमे की तरह उतारा
गया है, वह मेरे ऊपर से छीन लिया गया है। मैं ने
अपनी ज़िन्दगी को जूलाहे की तरह इख़तिताम तक
बुन लिया है। अब उस ने मुझे काट कर ताँत के धागों
से अलग कर दिया है। एक दिन के अन्दर अन्दर तू
ने मुझे ख़त्म किया।
13 सुब्ह तक मैं चीख़ कर फ़र्याद करता रहा, लेकिन
उस ने शेरबबर की तरह मेरी तमाम हड्डियाँ तोड़ दीं।
एक दिन के अन्दर अन्दर तू ने मुझे ख़त्म किया।
14 मैं बेजान हो कर अबाबील या बुल्बुल की तरह
चीं चीं करने लगा, ग़ूँ ग़ूँ करके कबूतर की सी आहें
भरने लगा। मेरी आँखें निढाल हो कर आसमान की
तरफ़ तकती रहीं। ऐ रब, मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है।
मेरी मदद के लिए आ!

15 लेकिन मैं क्या कहूँ? उस ने ख़ुद मुझ से
हमकलाम हो कर यह किया है। मैं तल्ख़ियों से
मग़लूब हो कर ज़िन्दगी के आख़िर तक दबी हुई
हालत में फिरूँगा।
16 ऐ रब, इन ही चीज़ों के सबब से इन्सान ज़िन्दा
रहता है, मेरी रूह की ज़िन्दगी भी इन ही पर मब्नी
है। तू मुझे बहाल करके जीने देगा।

17 यक़ीनन यह तल्ख़ तजरिबा मेरी बरकत का
बाइस बन गया। तेरी मुहब्बत ने मेरी जान को क़ब्र
से महफ़ूज़ रखा, तू ने मेरे तमाम गुनाहों को अपनी
पीठ के पीछे फैंक दिया है।
18 क्यूँकि पाताल तेरी हम्द-ओ-सना नहीं करता,
और मौत तेरी सताइश में गीत नहीं गाती, ज़मीन की
गहराइयों में उतरे हुए तेरी वफ़ादारी के इन्तिज़ार में
नहीं रहते।
19 नहीं, जो ज़िन्दा है वही तेरी तारीफ़ करता, वही
तेरी तम्जीद करता है, जिस तरह मैं आज कर रहा हूँ।
पुश्त-दर-पुश्त बाप अपने बच्चों को तेरी वफ़ादारी के
बारे में बताते हैं।
20 रब मुझे बचाने के लिए तय्यार था। आओ, हम
उम्र भर रब के घर में तारदार साज़ बजाएँ।”

इलाज का तरीक़-ए-कार

21 यसायाह ने हिदायत दी थी, “अन्जीर की टिक्की
ला कर बादशाह के नासूर पर बांध दो! तब उसे
शिफ़ा मिलेगी।” 22 पहले हिज़क़ियाह ने पूछा था,
“रब कौन सा निशान देगा जिस से मुझे यक़ीन आए
कि मैं दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक हूँगा?”

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

39 1 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह
मरूदक-बलदान बिन बलदान ने

हिज़क़ियाह की बीमारी और शिफ़ा की ख़बर
सुन कर वफ़द के हाथ ख़त और तुह्फ़े भेजे।
2 हिज़क़ियाह ने ख़ुशी से वफ़द का इस्तिक़्बाल
करके उसे वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने
में मह्फ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी,
बल्सान का तेल और बाक़ी क़ीमती तेल। उस ने पूरा
अस्लिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो
उस के ख़ज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में
कोई ख़ास चीज़ न रही जो उस ने उन्हें न दिखाई।
3 तब यसायाह नबी हिज़क़ियाह बादशाह के पास
आया और पूछा, "इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ
से आए हैं?" हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "दूरदराज़
मुल्क बाबल से मेरे पास आए हैं।" 4 यसायाह बोला,
"उन्हों ने महल में क्या कुछ देखा?" हिज़क़ियाह ने
कहा, "उन्हों ने महल में सब कुछ देख लिया है।
मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैं ने उन्हें नहीं
दिखाई।"
5 तब यसायाह ने कहा, "रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान सुनें! 6 एक दिन आने वाला है कि तेरे महल
का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी ख़ज़ाने
तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन
सब को दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है
कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 7 तेरे बेटों में से
भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं
हुए। तब वह ख़्वाजासरा बन कर शाह-ए-बाबल के
महल में ख़िदमत करेंगे।"
8 हिज़क़ियाह बोला, "रब का जो पैग़ाम आप ने मुझे
दिया है वह ठीक है।" क्यूँकि उस ने सोचा, "बड़ी
बात यह है कि मेरे जीते जी अम्न-ओ-अमान होगा।"

अल्लाह की क़ौम को तसल्ली

40 1 तुम्हारा रब फ़रमाता है, "तसल्ली दो, मेरी
क़ौम को तसल्ली दो! 2 नर्मी से यरूशलम से
बात करो, बुलन्द आवाज़ से उसे बताओ कि तेरी
ग़ुलामी के दिन पूरे हो गए हैं, तेरा क़ुसूर मुआफ़ हो
गया है। क्यूँकि तुझे रब के हाथ से तमाम गुनाहों की
दुगनी सज़ा मिल गई है।"
3 एक आवाज़ पुकार रही है, "रेगिस्तान में रब की
राह तय्यार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता
सीधा बनाओ। 4 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलन्द जगह मैदान बन
जाए। जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए, जो नाहमवार
है उसे हमवार किया जाए। 5 तब अल्लाह का जलाल
ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इन्सान मिल कर उसे
देखेंगे। यह रब के अपने मुँह का फ़रमान है।"
6 एक आवाज़ ने कहा, "ज़ोर से आवाज़ दे!" मैं ने
पूछा, "मैं क्या कहूँ?" "यह कि तमाम इन्सान घास
ही हैं, उन की तमाम शान-ओ-शौकत जंगली फूल
की मानिन्द है। 7 जब रब का साँस उन पर से गुज़रे
तो घास मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, क्यूँकि
इन्सान घास ही है। 8 घास तो मुरझा जाती और फूल
गिर जाता है, लेकिन हमारे ख़ुदा का कलाम अबद
तक क़ाइम रहता है।"
9 ऐ सिय्यून, ऐ ख़ुशख़बरी के पैग़म्बर, बुलन्दियों
पर चढ़ जा! ऐ यरूशलम, ऐ ख़ुशख़बरी के पैग़म्बर,
ज़ोर से आवाज़ दे! पुकार कर कह और ख़ौफ़ मत
खा। यहूदाह के शहरों को बता, "वह देखो, तुम्हारा
ख़ुदा!"
10 देखो, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ बड़ी क़ुदरत के
साथ आ रहा है, वह बड़ी ताक़त के साथ हुकूमत
करेगा। देखो, उस का अज्र उस के पास है, और
उस का इनआम उस के आगे आगे चलता है। 11 वह
चरवाहे की तरह अपने गल्ले की गल्लाबानी करेगा। वह
भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ूओं में मह्फ़ूज़ रख कर
सीने के साथ लगाए फिरेगा और उन की माओं को
बड़े ध्यान से अपने साथ ले चलेगा।

अल्लाह की नाक़ाबिल-ए-बयान अज़मत

12 किस ने अपने हाथ से दुनिया का पानी नाप लिया
है? किस ने अपने हाथ से आसमान की पैमाइश
की है? किस ने ज़मीन की मिट्टी की मिक़्दार मालूम

की या तराज़ू से पहाड़ों का कुल वज़न मुतअय्यिन
किया है? 13 किस ने रब के रूह की तहक़ीक़ कर
पाई? क्या उस का कोई मुशीर है जो उसे तालीम दे?
14 क्या उसे किसी से मश्वरा लेने की ज़रूरत है ताकि
उसे समझ आ कर रास्त राह की तालीम मिल जाए?
हरगिज़ नहीं! क्या किसी ने कभी उसे इल्म-ओ-इर्फ़ान
या समझदार ज़िन्दगी गुज़ारने का फ़न सिखाया है?
हरगिज़ नहीं!

15 यक़ीनन तमाम अक़्वाम रब के नज़्दीक बाल्टी
के एक क़तरे या तराज़ू में गर्द की मानिन्द हैं। जज़ीरों
को वह रेत के ज़र्रों की तरह उठा लेता है। 16 ख़्वाह
लुबनान के तमाम दरख़्त और जानवर रब के लिए
क़ुर्बान क्यूँ न होते तो भी मुनासिब क़ुर्बानी के लिए
काफ़ी न होते। 17 उस के सामने तमाम अक़्वाम कुछ
भी नहीं हैं। उस की नज़र में वह हेच और नाचीज़ हैं।

18 अल्लाह का मुवाज़ना किस से हो सकता है? उस
का मुक़ाबला किस तस्वीर या मुजस्समे से हो सकता
है? 19 बुत तो यूँ बनता है कि पहले दस्तकार उसे
ढाल देता है, फिर सुनार उस पर सोना चढ़ा कर उसे
चाँदी की ज़न्जीरों से सजा देता है। 20 जो ग़ुर्बत के
बाइस यह नहीं करवा सकता वह कम अज़ कम कोई
ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो गल सड़ नहीं जाती। फिर
वह किसी माहिर दस्तकार से बुत को यूँ बनवाता है
कि वह अपनी जगह से न हिले।

21 क्या तुम को मालूम नहीं? क्या तुम ने बात नहीं
सुनी? क्या तुम्हें इब्तिदा से सुनाया नहीं गया? क्या
तुम्हें दुनिया के क़ियाम से ले कर आज तक समझ
नहीं आई? 22 रब रू-ए-ज़मीन के ऊपर बुलन्दियों पर
तख़्तनशीन है जहाँ से इन्सान टिड्डियों जैसे लगते हैं।
वह आसमान को पर्दे की तरह तान कर और हर
तरफ़ खैंच कर रहने के क़ाबिल ख़ैमा बना देता है।
23 वह सरदारों को नाचीज़ और दुनिया के क़ाज़ियों
को हेच बना देता है। 24 वह नए पौदों की मानिन्द हैं
जिन की पनीरी अभी अभी लगी है, बीज अभी अभी
बोए गए हैं, पौदों ने अभी अभी जड़ पकड़ी है कि रब
उन पर फूँक मारता है और वह मुरझा जाते हैं। तब
आँधी उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती है।

25 क़ुद्दूस ख़ुदा फ़रमाता है, "तुम मेरा मुवाज़ना किस
से करना चाहते हो? कौन मेरे बराबर है?" 26 अपनी
नज़र उठा कर आसमान की तरफ़ देखो। किस ने यह
सब कुछ ख़ल्क़ किया? वह जो आसमानी लश्कर
की पूरी तादाद बाहर ला कर हर एक को नाम ले कर
बुलाता है। उस की क़ुदरत और ज़बरदस्त ताक़त
इतनी अज़ीम है कि एक भी दूर नहीं रहता।

27 ऐ याक़ूब की क़ौम, तू क्यूँ कहती है कि मेरी
राह रब की नज़र से छुपी रहती है? ऐ इस्राईल, तू
क्यूँ शिकायत करता है कि मेरा मुआमला मेरे ख़ुदा
के इल्म में नहीं आता?

28 क्या तुझे मालूम नहीं, क्या तू ने नहीं सुना कि
रब लाज़वाल ख़ुदा और दुनिया की इन्तिहा तक का
ख़ालिक़ है? वह कभी नहीं थकता, कभी निढाल
नहीं होता। कोई भी उस की समझ की गहराइयों तक
नहीं पहुँच सकता। 29 वह थकेमान्दों को ताज़गी और
बेबसों को तक़वियत देता है। 30 गो नौजवान थक
कर निढाल हो जाएँ और जवान आदमी ठोकर खा
कर गिर जाएँ, 31 लेकिन रब से उम्मीद रखने वाले
नई ताक़त पाएँगे और उक़ाब के से पर फैला कर
बुलन्दियों तक उड़ेंगे। न वह दौड़ते हुए थकेंगे, न
चलते हुए निढाल हो जाएंगे।

दुश्मन के हमले रब ही की तरफ़ से हैं

41 1 "ऐ जज़ीरो, ख़ामोश रह कर मेरी बात
सुनो! अक़्वाम अज़ सर-ए-नौ तक़वियत
पाएँ और मेरे हुज़ूर आएँ, फिर बात करें। आओ, हम
एक दूसरे से मिल कर अदालत में हाज़िर हो जाएँ!

2 कौन उस आदमी को जगा कर मशरिक़ से लाया
है जिस के दामन में इन्साफ़ है? कौन दीगर क़ौमों
को इस शख़्स के हवाले करके बादशाहों को ख़ाक
में मिलाता है? उस की तलवार से वह गर्द हो जाते हैं,
उस की कमान से लोग हवा में भूसे की तरह उड़ कर
बिखर जाते हैं। 3 वह उन का ताक़्क़ुब करके सहीह-

सलामत आगे निकलता है, भागते हुए उस के पाँओ
रास्ते को नहीं छूते। 4 किस ने यह सब कुछ किया,
किस ने यह अन्जाम दिया? उसी ने जो इब्तिदा ही से
नस्लों को बुलाता आया है। मैं, रब अव्वल हूँ, और
आख़िर में आने वालों के साथ भी मैं वही हूँ।"
5 जज़ीरे यह देख कर डर गए, दुनिया के दूरदराज़
इलाक़े काँप उठे हैं। वह क़रीब आते हुए 6 एक
दूसरे को सहारा दे कर कहते हैं, "हौसला रख!"
7 दस्तकार सुनार की हौसलाअफ़्ज़ाई करता है, और
जो बुत की नाहमवारियों को हथौड़े से ठीक करता
है वह अहरन पर काम करने वाले की हिम्मत बढ़ाता
और टाँके का मुआइना करके कहता है, "अब ठीक
है!" फिर मिल कर बुत को कीलों से मज़बूत करते
हैं ताकि हिले न।

मत डरना, क्यूँकि मैं तेरा ख़ुदा हूँ

8 "लेकिन तू मेरे ख़ादिम इस्राईल, तू फ़र्क़ है। ऐ
याक़ूब की क़ौम, मैं ने तुझे चुन लिया, और तू मेरे
दोस्त इब्राहीम की औलाद है। 9 मैं तुझे पकड़ कर
दुनिया की इन्तिहा से लाया, उस के दूरदराज़ कोनों से
बुलाया। मैं ने फ़रमाया, 'तू मेरा ख़ादिम है।' मैं ने तुझे
रद्द नहीं किया बल्कि तुझे चुन लिया है। 10 चुनाँचे मत
डर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। दहशत मत खा, क्यूँकि
मैं तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तुझे मज़बूत करता, तेरी मदद
करता, तुझे अपने दहने हाथ के इन्साफ़ से क़ाइम
रखता हूँ। 11 देख, जितने भी तेरे ख़िलाफ़ तैश में आ
गए हैं वह सब शर्मिन्दा हो जाएंगे, उन का मुँह काला
हो जाएगा। तुझ से झगड़ने वाले हेच ही साबित हो
कर हलाक हो जाएंगे। 12 तब तू अपने मुख़ालिफ़ों
का पता करेगा लेकिन उन का नाम-ओ-निशान तक
नहीं मिलेगा। तुझ से लड़ने वाले ख़त्म ही होंगे, ऐसा
ही लगेगा कि वह कभी थे नहीं। 13 क्यूँकि मैं रब तेरा
ख़ुदा हूँ। मैं तेरे दहने हाथ को पकड़ कर तुझे बताता
हूँ, 'मत डरना, मैं ही तेरी मदद करता हूँ।'
14 ऐ कीड़े याक़ूब मत डर, ऐ छोटी क़ौम इस्राईल
ख़ौफ़ मत खा। क्यूँकि मैं ही तेरी मदद करूँगा, और
जो इवज़ाना दे कर तुझे छुड़ा रहा है वह इस्राईल का
क़ुद्दूस है।" यह है रब का फ़रमान। 15 "मेरे हाथ से तू
गाहने का नया और मुतअद्दिद तेज़ नोकें रखने वाला
आला बनेगा। तब तू पहाड़ों को गाह कर रेज़ा रेज़ा
कर देगा, और पहाड़ियाँ भूसे की मानिन्द हो जाएँगी।
16 तू उन्हें उछाल उछाल कर उड़ाएगा तो हवा उन्हें
ले जाएगी, आँधी उन्हें दूर तक बिखेर देगी। लेकिन
तू रब की ख़ुशी मनाएगा और इस्राईल के क़ुद्दूस पर
फ़ख़र करेगा।

अल्लाह रेगिस्तान में पानी मुहय्या करता है

17 ग़रीब और ज़रूरतमन्द पानी की तलाश में हैं,
लेकिन बेफ़ाइदा, उन की ज़बानें प्यास के मारे ख़ुश्क
हो गई हैं। लेकिन मैं, रब उन की सुनूँगा, मैं जो
इस्राईल का ख़ुदा हूँ उन्हें तर्क नहीं करूँगा। 18 मैं
बंजर बुलन्दियों पर नदियाँ जारी करूँगा और वादियों
में चश्मे फूटने दूँगा। मैं रेगिस्तान को जोहड़ में और
सूखी सूखी ज़मीन को पानी के सोतों में बदल दूँगा।
19 मेरे हाथ से रेगिस्तान में देवदार, कीकर, मेहंदी
और ज़ैतून के दरख़्त लगेंगे, बयाबान में जूनीपर,
सनोबर और सर्व के दरख़्त मिल कर उगेंगे। 20 मैं
यह इस लिए करूँगा कि लोग ध्यान दे कर जान लें
कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है, कि इस्राईल
के क़ुद्दूस ने यह पैदा किया है।"

देवता बेकार हैं

21 रब जो याक़ूब का बादशाह है फ़रमाता है,
"आओ, अदालत में अपना मुआमला पेश करो,
अपने दलाइल बयान करो। 22 आओ, अपने बुतों को
ले आओ ताकि वह हमें बताएँ कि क्या क्या पेश
आना है। माज़ी में क्या क्या हुआ? बताओ, ताकि
हम ध्यान दें। या हमें मुस्तक़बिल की बातें सुनाओ,
23 वह कुछ जो आने वाले दिनों में होगा, ताकि हमें
मालूम हो जाए कि तुम देवता हो। कम अज़ कम
कुछ न कुछ करो, ख़्वाह अच्छा हो या बुरा, ताकि
हम घबरा कर डर जाएँ। 24 तुम तो कुछ भी नहीं हो,

और तुम्हारा काम भी बेकार है। जो तुम्हें चुन लेता है
वह क़ाबिल-ए-घिन है।
25 अब मैं ने शिमाल से एक आदमी को जगा दिया
है, और वह मेरा नाम ले कर मशरिक़ से आ रहा है।
यह शख़्स हुक्मरानों को मिट्टी की तरह कुचल देता
है, उन्हें गारे को नर्म करने वाले कुम्हार की तरह रौंद
देता है। 26 किस ने इब्तिदा से इस का एलान किया
ताकि हमें इल्म हो? किस ने पहले से इस की पेशगोई
की ताकि हम कहें, 'उस ने बिलकुल सहीह कहा है'?
कोई नहीं था जिस ने पहले से इस का एलान करके
इस की पेशगोई की। कोई नहीं था जिस ने तुम्हारे
मुँह से इस के बारे में एक लफ़्ज़ भी सुना। 27 किस ने
सिय्यून को पहले बता दिया, 'वह देखो, तेरा सहारा
आने को है!' मैं ही ने यह फ़रमाया, मैं ही ने यरूशलम
को ख़ुशख़बरी का पैग़म्बर अता किया।
28 लेकिन जब मैं अपने इर्दगिर्द देखता हूँ तो कोई
नहीं है जो मुझे मश्वरा दे, कोई नहीं जो मेरे सवाल का
जवाब दे। 29 देखो, यह सब धोका ही धोका हैं। उन
के काम हेच और उन के ढाले हुए मुजस्समे ख़ाली
हवा ही हैं।

अल्लाह का पैग़म्बर अक़्वाम के लिए मशअल-ए-राह है

42 1 देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैं क़ाइम रखता
हूँ, मेरा बर्गुज़ीदा जो मुझे पसन्द है। मैं अपने
रूह को उस पर डालूँगा, और वह अक़्वाम में इन्साफ़
क़ाइम करेगा। 2 वह न तो चीख़ेगा, न चिल्लाएगा,
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 3 न वह
कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा, न बुझती हुई बत्ती को
बुझाएगा। वफ़ादारी से वह इन्साफ़ क़ाइम करेगा।
4 और जब तक उस ने दुनिया में इन्साफ़ क़ाइम न
कर लिया हो तब तक न उस की बत्ती बुझेगी, न उसे
कुचला जाएगा। जज़ीरे उस की हिदायत से उम्मीद
रखेंगे।"
5 रब ख़ुदा ने आसमान को ख़ल्क़ करके ख़ैमे की
तरह ज़मीन के ऊपर तान लिया। उसी ने ज़मीन को
और जो कुछ उस में से फूट निकलता है तश्कील
दिया, और उसी ने रू-ए-ज़मीन पर बसने और चलने
वालों में दम फूँक कर जान डाली। अब यही ख़ुदा
अपने ख़ादिम से फ़रमाता है, 6 "मैं, रब ने इन्साफ़
से तुझे बुलाया है। मैं तेरे हाथ को पकड़ कर तुझे
महफ़ूज़ रखूँगा। क्यूँकि मैं तुझे क़ौम का अह्द और
दीगर अक़्वाम की रौशनी बना दूँगा 7 ताकि तू अंधों
की आँखें खोले, क़ैदियों को कोठड़ी से रिहा करे
और तारीकी की क़ैद में बसने वालों को छुटकारा दे।
8 मैं रब हूँ, यही मेरा नाम है! मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा
कि जो जलाल मुझे मिलना है वह किसी और को
दे दिया जाए, कि लोग बुतों की तम्जीद करें जबकि
उन्हें मेरी तम्जीद करनी चाहिए। 9 देखो, जिस की भी
पेशगोई मैं ने की थी वह वुक़ू में आया है। अब मैं
नई बातों का एलान करता हूँ। इस से पहले कि वह
वुजूद में आएँ मैं उन्हें तुम्हें सुना देता हूँ।"

रब की तम्जीद में गीत गाओ!

10 रब की तम्जीद में गीत गाओ, दुनिया की इन्तिहा
तक उस की मद्हसराई करो! ऐ समुन्दर के मुसाफ़िरो
और जो कुछ उस में है, उस की सताइश करो! ऐ
जज़ीरो, अपने बाशिन्दों समेत उस की तारीफ़ करो!
11 बयाबान और उस के क़स्बे ख़ुशी के नारे लगाएँ,
जिन आबादियों में क़ीदार बसता है वह शादमान
हों। सिला के बाशिन्दे बाग़ बाग़ हो कर पहाड़ों की
चोटियों पर ज़ोर से शादियाना बजाएँ। 12 सब रब को
जलाल दें और जज़ीरों तक उस की तारीफ़ फैलाएँ।
13 रब सूरमे की तरह लड़ने के लिए निकलेगा,
फ़ौजी की तरह जोश में आएगा और जंग के नारे लगा
लगा कर अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा।
14 वह फ़रमाता है, "मैं बड़ी देर से ख़ामोश रहा
हूँ। मैं चुप रहा और अपने आप को रोकता रहा।
लेकिन अब मैं दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह
कराहता हूँ। मेरा साँस फूल जाता और मैं बेताबी
से हाँपता रहता हूँ। 15 मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को
तबाह करके उन की तमाम हरियाली झुलसा दूँगा।

दरया ख़ुश्क ज़मीन बन जाएंगे, और जोहड़ सूख
जाएंगे। 16 मैं अंधों को ऐसी राहों पर ले चलूँगा जिन
से वह वाक़िफ़ नहीं होंगे, ग़ैरमानूस रास्तों पर उन की
राहनुमाई करूँगा। उन के आगे मैं अंधेरे को रौशन
और नाहमवार ज़मीन को हमवार करूँगा। यह सब
कुछ मैं सरअन्जाम दूँगा, एक बात भी अधूरी नहीं
रह जाएगी।
17 लेकिन जो बुतों पर भरोसा रख कर उन से कहते
हैं, 'तुम हमारे देवता हो' वह सख़्त शर्म खा कर पीछे
हट जाएंगे।

सज़ा का सबब अंधापन है

18 ऐ बहरो, सुनो! ऐ अंधो, नज़र उठाओ ताकि देख
सको! 19 कौन मेरे ख़ादिम जैसा अंधा है? कौन मेरे
पैग़म्बर जैसा बहरा है, उस जैसा जिसे मैं भेज रहा
हूँ? गो मैं ने उस के साथ अह्द बांधा तो भी रब के
ख़ादिम जैसा अंधा और नाबीना कोई नहीं है। 20 गो
तू ने बहुत कुछ देखा है तू ने तवज्जुह नहीं दी, गो तेरे
कान हर बात सुन लेते हैं तू सुनता नहीं।" 21 रब ने
अपनी रास्ती की ख़ातिर अपनी शरीअत की अज़मत
और जलाल को बढ़ाया है, क्यूँकि यह उस की मर्ज़ी
थी। 22 लेकिन अब उस की क़ौम को ग़ारत किया
गया, सब कुछ लूट लिया गया है। सब के सब गढ़ों
में जकड़े या जेलों में छुपाए हुए हैं। वह लूट का माल
बन गए हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें बचाए। उन्हें
छीन लिया गया है, और कोई नहीं है जो कहे, "उन्हें
वापस करो!"
23 काश तुम में से कोई ध्यान दे, कोई आइन्दा के
लिए तवज्जुह दे। 24 सोच लो! किस ने इजाज़त दी
कि याक़ूब की औलाद को ग़ारत किया जाए? किस
ने इस्राईल को लुटेरों के हवाले कर दिया? क्या यह
रब की तरफ़ से नहीं हुआ, जिस के ख़िलाफ़ हम ने
गुनाह किया है? लोग तो उस की राहों पर चलना ही
नहीं चाहते थे, वह उस की शरीअत के ताबे रहने के
लिए तय्यार ही न थे। 25 इसी वजह से उस ने उन पर
अपना सख़्त ग़ज़ब नाज़िल किया, उन्हें शदीद जंग
की ज़द में आने दिया। लेकिन अफ़सोस, गो आग ने
क़ौम को घेर कर झुलसा दिया ताहम उसे समझ नहीं
आई, गो वह भस्म हुई तो भी उस ने दिल से सबक़
नहीं सीखा।

रब क़ौम को वतन में वापस लाएगा

43 1 लेकिन अब रब जिस ने तुझे ऐ याक़ूब
ख़ल्क़ किया और तुझे ऐ इस्राईल तश्कील
दिया फ़रमाता है, "ख़ौफ़ मत खा, क्यूँकि मैं ने
इवज़ाना दे कर तुझे छुड़ाया है, मैं ने तेरा नाम ले कर
तुझे बुलाया है, तू मेरा ही है। 2 पानी की गहराइयों में
से गुज़रते वक़्त मैं तेरे साथ हूँगा, दरयाओं को पार
करते वक़्त तू नहीं डूबेगा। आग में से गुज़रते वक़्त
न तू झुलस जाएगा, न शोलों से भस्म हो जाएगा।
3 क्यूँकि मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ, मैं इस्राईल का क़ुद्दूस
और तेरा नजातदहिन्दा हूँ। तुझे छुड़ाने के लिए मैं
इवज़ाना के तौर पर मिस्र देता, तेरी जगह एथोपिया
और सिबा अदा करता हूँ। 4 तू मेरी नज़र में क़ीमती
और अज़ीज़ है, तू मुझे प्यारा है, इस लिए मैं तेरे बदले
में लोग और तेरी जान के इवज़ क़ौमें अदा करता हूँ।
5 चुनाँचे मत डरना, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तेरी
औलाद को मशरिक़ और मग़रिब से जमा करके
वापस लाऊँगा। 6 शिमाल को मैं हुक्म दूँगा, 'मुझे
दो!' और जुनूब को, 'उन्हें मत रोकना!' मेरे बेटे-
बेटियों को दुनिया की इन्तिहा से वापस ले आओ,
7 उन सब को जो मेरा नाम रखते हैं और जिन्हें मैं ने
अपने जलाल की ख़ातिर ख़ल्क़ किया, जिन्हें मैं ने
तश्कील दे कर बनाया है।"
8 उस क़ौम को निकाल लाओ जो आँखें रखने के
बावुजूद देख नहीं सकती, जो कान रखने के बावुजूद
सुन नहीं सकती। 9 तमाम ग़ैरक़ौमें जमा हो जाएँ,
तमाम उम्मतें इकट्ठी हो जाएँ। उन में से कौन इस
की पेशगोई कर सकता, कौन माज़ी की बातें सुना
सकता है? वह अपने गवाहों को पेश करें जो उन्हें
दुरुस्त साबित करें, ताकि लोग सुन कर कहें, "उन
की बात बिलकुल सहीह है।" 10 लेकिन रब फ़रमाता

है, “ऐ इस्राईली क़ौम, तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही
मेरे ख़ादिम हो जिसे मैं ने चुन लिया ताकि तुम जान
लो, मुझ पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं
ही हूँ। न मुझ से पहले कोई ख़ुदा वुजूद में आया,
न मेरे बाद कोई आएगा। 11 मैं, सिर्फ़ मैं रब हूँ, और
मेरे सिवा कोई और नजातदहिन्दा नहीं है। 12 मैं ही
ने इस का एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही
तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे
दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं हुआ
बल्कि सिर्फ़ मुझ ही से। तुम ही मेरे गवाह हो कि मैं
ही ख़ुदा हूँ।” यह रब का फ़रमान है। 13 “अज़ल से
मैं वही हूँ। कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके।
जब मैं कुछ अमल में लाता हूँ तो कौन इसे बदल
सकता है?”

14 रब जो तुम्हारा छुड़ाने वाला और इस्राईल का
क़ुद्दूस है फ़रमाता है, “तुम्हारी ख़ातिर मैं बाबल के
ख़िलाफ़ फ़ौज भेज कर तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। तब
बाबल की शादमानी गिर्या-ओ-ज़ारी में बदल जाएगी।
15 मैं रब हूँ, तुम्हारा क़ुद्दूस जो इस्राईल का ख़ालिक़
और तुम्हारा बादशाह है।”

16 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने समुन्दर में से गुज़रने
की राह और गहरे पानी में से रास्ता बना दिया।
17 मेरे कहने पर मिस्र की फ़ौज अपने सूरमाओं, रथों
और घोड़ों समेत लड़ने के लिए निकल आई। अब
वह मिल कर समुन्दर की तह में पड़े हुए हैं और
दुबारा कभी नहीं उठेंगे। वह बत्ती की तरह बुझ
गए। 18 लेकिन माज़ी की बातें छोड़ दो, जो कुछ
गुज़र गया है उस पर ध्यान न दो। 19 क्यूँकि देखो,
मैं एक नया काम वुजूद में ला रहा हूँ जो अभी फूट
निकलने को है। क्या यह तुम्हें नज़र नहीं आ रहा?
मैं रेगिस्तान में रास्ता और बयाबान में नहरें बना
रहा हूँ। 20 जंगली जानवर, गीदड़ और उक़ाबी उल्लू
मेरा एहतिराम करेंगे, क्यूँकि मैं रेगिस्तान में पानी
मुहय्या करूँगा, बयाबान में नहरें बनाऊँगा ताकि
अपनी बर्गुज़ीदा क़ौम को पानी पिलाऊँ। 21 जो क़ौम
मैं ने अपने लिए तश्कील दी है वह मेरे काम सुना कर
मेरी तम्जीद करे।

रब इस्राईल के गुनाहों से तंग आ गया है

22 ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इस्राईल, बात यह नहीं
कि तू ने मुझ से फ़र्याद की, कि तू मेरी मर्ज़ी दरयाफ़्त
करने के लिए कोशाँ रहा। 23 क्यूँकि न तू ने मेरे लिए
अपनी भेड़-बकरियाँ भस्म कीं, न अपनी ज़बह की
क़ुर्बानियों से मेरा एहतिराम किया। न मैं ने ग़ल्ला की
नज़रों से तुझ पर बोझ डाला, न बख़ूर की क़ुर्बानी से
तंग किया। 24 तू ने न मेरे लिए क़ीमती मसाला ख़रीदा,
न मुझे अपनी क़ुर्बानियों की चर्बी से ख़ुश किया। इस
के बरअक्स तू ने अपने गुनाहों से मुझ पर बोझ डाला
और अपनी बुरी हरकतों से मुझे तंग किया। 25 ताहम
मैं, हाँ मैं ही अपनी ख़ातिर तेरे जराइम को मिटा देता
और तेरे गुनाहों को ज़हन से निकाल देता हूँ।

26 जा, कचहरी में मेरे ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर कर!
आ, हम दोनों अदालत में हाज़िर हो जाएँ! अपना
मुआमला पेश कर ताकि तू बेक़ुसूर साबित हो।
27 शुरू में तेरे ख़ानदान के बानी ने गुनाह किया, और
उस वक़्त से ले कर आज तक तेरे नुमाइन्दे मुझ से
बेवफ़ा होते आए हैं। 28 इस लिए मैं मक़्दिस के बुज़ुर्गों
को यूँ रुसवा करूँगा कि उन की मुक़द्दस हालत जाती
रहेगी, मैं याक़ूब की औलाद इस्राईल को मुकम्मल
तबाही और लान-तान के लिए मख़्सूस करूँगा।

रब की क़ौम के लिए नई ज़िन्दगी

44 1 लेकिन अब सुन, ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम!
मेरी बात पर तवज्जुह दे, ऐ इस्राईल जिसे
मैं ने चुन लिया है। 2 रब जिस ने तुझे बनाया और
माँ के पेट से ही तश्कील दे कर तेरी मदद करता
आया है वह फ़रमाता है, ‘ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम,
मत डर! ऐ यसूरून जिसे मैं ने चुन लिया है, ख़ौफ़
न खा। 3 क्यूँकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी डालूँगा
और ख़ुश्की पर नदियाँ बहने दूँगा। मैं अपना रूह
तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा, अपनी बरकत तेरे

बच्चों को बख़्शूँगा। 4 तब वह पानी के दरमियान की
हरियाली की तरह फूट निकलेंगे, नहरों पर सफ़ेदा के
दरख़्तों की तरह फलें फूलेंगे।'
5 एक कहेगा, 'मैं रब का हूँ,' दूसरा याक़ूब का नाम
ले कर पुकारेगा और तीसरा अपने हाथ पर 'रब का
बन्दा' लिख कर इस्राईल का एज़ाज़ी नाम रखेगा।"
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का बादशाह और
छुड़ाने वाला है फ़रमाता है, "मैं अव्वल और आख़िर
हूँ। मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 7 कौन मेरी
मानिन्द है? वह आवाज़ दे कर बताए और अपने
दलाइल पेश करे। वह तर्तीब से सब कुछ सुनाए जो
उस क़दीम वक़्त से हुआ है जब मैं ने अपनी क़ौम
को क़ाइम किया। वह आने वाली बातों का एलान
करके बताए कि आइन्दा क्या कुछ पेश आएगा।
8 घबरा कर दहशतज़दा न हो। क्या मैं ने बहुत
देर पहले तुझे इत्तिला नहीं दी थी कि यह कुछ पेश
आएगा? तुम ख़ुद मेरे गवाह हो। क्या मेरे सिवा कोई
और ख़ुदा है? हरगिज़ नहीं! और कोई चटान नहीं है,
मैं किसी और को नहीं जानता।"

ख़ुदसाख़्ता देवता

9 बुत बनाने वाले सब हेच ही हैं, और जो चीज़ें उन्हें
प्यारी लगती हैं वह बेफ़ाइदा हैं। उन के गवाह न देख
और न जान सकते हैं, लिहाज़ा आख़िरकार शर्मिन्दा
हो जाएंगे।
10 यह किस तरह के लोग हैं जो अपने लिए देवता
बनाते और बेफ़ाइदा बुत ढाल लेते हैं? 11 उन के
तमाम साथी शर्मिन्दा हो जाएंगे। आख़िर बुत बनाने
वाले इन्सान ही तो हैं। आओ, वह सब जमा हो कर
ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हो जाएँ। क्यूँकि वह दहशत खा
कर सख़्त शर्मिन्दा हो जाएंगे।
12 लोहार औज़ार ले कर उसे जलते हुए कोएलों में
इस्तेमाल करता है। फिर वह अपने हथौड़े से ठोंक
ठोंक कर बुत को तश्कील देता है। पूरे ज़ोर से काम
करते करते वह ताक़त के जवाब देने तक भूका हो
जाता, पानी न पीने की वजह से निढाल हो जाता है।
13 जब बुत को लकड़ी से बनाना है तो कारीगर फ़ीते
से नाप कर पैन्सिल से लकड़ी पर ख़ाका खैंचता है।
परकार भी काम आ जाता है। फिर कारीगर लकड़ी
को छुरी से तराश तराश कर आदमी की शक्ल बनाता
है। यूँ शानदार आदमी का मुजस्समा किसी के घर में
लगने के लिए तय्यार हो जाता है।
14 कारीगर बुत बनाने के लिए देवदार का दरख़्त
काट लेता है। कभी कभी वह बलूत या किसी और
क़िस्म का दरख़्त चुन कर उसे जंगल के दीगर दरख़्तों
के बीच में उगने देता है। या वह सनोबर [r]का दरख़्त
लगाता है, और बारिश उसे फलने फूलने देती है।
15 ध्यान दो कि इन्सान लकड़ी को ईंधन के लिए
भी इस्तेमाल करता, कुछ ले कर आग तापता, कुछ
जला कर रोटी पकाता है। बाक़ी हिस्से से वह बुत
बना कर उसे सिज्दा करता, देवता का मुजस्समा
तय्यार करके उस के सामने झुक जाता है। 16 वह
लकड़ी का आधा हिस्सा जला कर उस पर अपना
गोश्त भूनता, फिर जी भर कर खाना खाता है। साथ
साथ वह आग सेंक कर कहता है, "वाह, आग की
गर्मी कितनी अच्छी लग रही है, अब गर्मी महसूस हो
रही है।" 17 लेकिन बाक़ी लकड़ी से वह अपने लिए
देवता का बुत बनाता है जिस के सामने वह झुक कर
पूजा करता है। उस से वह इल्तिमास करता है, "मुझे
बचा, क्यूँकि तू मेरा देवता है।"
18 यह लोग कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते।
उन की आँखों और दिलों पर पर्दा पड़ा है, इस लिए
न वह देख सकते, न समझ सकते हैं। 19 वह इस पर
ग़ौर नहीं करते, उन्हें फ़हम और समझ तक नहीं कि
सोचें, "मैं ने लकड़ी का आधा हिस्सा आग में झोंक
कर उस के कोएलों पर रोटी पकाई और गोश्त भून
लिया। यह चीज़ें खाने के बाद मैं बाक़ी लकड़ी से
क़ाबिल-ए-घिन बुत क्यूँ बनाऊँ, लकड़ी के टुकड़े के

---

[r]शायद इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद सनोबर नहीं बल्कि laurel हो, एक छोटा सदाबहार काफ़ूरी दरख़्त।

सामने क्यूँ झुक जाऊँ?” 20 जो यूँ राख में मुलव्वस
हो जाए उस ने धोका खाया, उस के दिल ने उसे फ़रेब
दिया है। वह अपनी जान छुड़ा कर नहीं मान सकता
कि जो बुत मैं दहने हाथ में थामे हुए हूँ वह झूट है।

रब अपनी क़ौम को आज़ाद करता है

21 “ऐ याक़ूब की औलाद, ऐ इस्राईल, याद रख कि
तू मेरा ख़ादिम है। मैं ने तुझे तश्कील दिया, तू मेरा
ही ख़ादिम है। ऐ इस्राईल, मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा।
22 मैं ने तेरे जराइम और गुनाहों को मिटा डाला है,
वह धूप में धुन्द या तेज़ हवा से बिखरे बादलों की
तरह ओझल हो गए हैं। अब मेरे पास वापस आ,
क्यूँकि मैं ने इवज़ाना दे कर तुझे छुड़ाया है।”
23 ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा, क्यूँकि रब ने
सब कुछ किया है। ऐ ज़मीन की गहराइयो, शादियाना
बजाओ! ऐ पहाड़ो और जंगलो, अपने तमाम दरख़्तों
समेत ख़ुशी के गीत गाओ, क्यूँकि रब ने इवज़ाना दे
कर याक़ूब को छुड़ाया है, इस्राईल में उस ने अपना
जलाल ज़ाहिर किया है।
24 रब तेरा छुड़ाने वाला जिस ने तुझे माँ के पेट से ही
तश्कील दिया फ़रमाता है, “मैं रब हूँ। मैं ही सब कुछ
वुजूद में लाया, मैं ने अकेले ही आसमान को ज़मीन
के ऊपर तान लिया और ज़मीन को बिछाया। 25 मैं
ही क़िस्मत का हाल बताने वालों के अजीब-ओ-
ग़रीब निशान नाकाम होने देता, फ़ाल खोलने वालों
को अहमक़ साबित करता और दानाओं को पीछे
हटा कर उन के इल्म की हमाक़त ज़ाहिर करता हूँ।
26 मैं ही अपने ख़ादिम का कलाम पूरा होने देता और
अपने पैग़म्बरों का मन्सूबा तक्मील तक पहुँचाता हूँ,
मैं ही यरूशलम के बारे में फ़रमाता हूँ, ‘वह दुबारा
आबाद हो जाएगा,’ और यहूदाह के शहरों के बारे में,
‘वह नए सिरे से तामीर हो जाएंगे, मैं उन के खंडरात
दुबारा खड़े करूँगा।’ 27 मैं ही गहरे समुन्दर को हुक्म
देता हूँ, ‘सूख जा, मैं तेरी गहराइयों को ख़ुश्क करता
हूँ।’ 28 और मैं ही ने ख़ोरस के बारे में फ़रमाया, ‘यह
मेरा गल्लाबान है! यही मेरी मर्ज़ी पूरी करके कहेगा कि
यरूशलम दुबारा तामीर किया जाए, रब के घर की
बुन्याद नए सिरे से रखी जाए’!”

ख़ोरस रब का आला-ए-कार है

45 1 रब अपने मसह किए हुए ख़ादिम ख़ोरस
से फ़रमाता है, “मैं ने तेरे दहने हाथ को
पकड़ लिया है, इस लिए जहाँ भी तू जाए वहाँ क़ौमें
तेरे ताबे हो जाएँगी, बादशाहों की ताक़त जाती रहेगी,
दरवाज़े खुल जाएंगे और शहर के दरवाज़े बन्द नहीं
रहेंगे। 2 मैं ख़ुद तेरे आगे आगे जा कर क़िलाबन्दियों
को ज़मीनबोस कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाज़े टुकड़े
टुकड़े करके तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। 3 मैं तुझे अंधेरे
में छुपे ख़ज़ाने और पोशीदा माल-ओ-दौलत अता
करूँगा ताकि तू जान ले कि मैं रब हूँ जो तेरा नाम
ले कर तुझे बुलाता है, कि मैं इस्राईल का ख़ुदा हूँ।
4 गो तू मुझे नहीं जानता था, लेकिन अपने ख़ादिम
याक़ूब की ख़ातिर मैं ने तेरा नाम ले कर तुझे बुलाया,
अपने बर्गुज़ीदा इस्राईल के वास्ते तुझे एज़ाज़ी नाम
से नवाज़ा है।
5 मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं
है। गो तू मुझे नहीं जानता था तो भी मैं तुझे कमरबस्ता
करता हूँ 6 ताकि मशरिक़ से मग़रिब तक इन्सान जान
लें कि मेरे सिवा कोई और नहीं है। मैं ही रब हूँ,
और मेरे सिवा कोई और नहीं है। 7 मैं ही रौशनी को
तश्कील देता और अंधेरे को वुजूद में लाता हूँ, मैं ही
अच्छे और बुरे हालात पैदा करता, मैं रब ही यह सब
कुछ करता हूँ। 8 ऐ आसमान, रास्ती की बूँदा-बाँदी
से ज़मीन को तर-ओ-ताज़ा कर! ऐ बादलो, सदाक़त
बरसाओ! ज़मीन खुल कर नजात का फल लाए और
रास्ती का पौदा फूटने दे। मैं रब ही उसे वुजूद में लाया
हूँ।”

अपने ख़ालिक़ पर इल्ज़ाम लगाने वाले पर अफ़्सोस

9 उस पर अफ़्सोस जो अपने ख़ालिक़ से झगड़ा
करता है, गो वह मिट्टी के टूटे-फूटे बर्तनों का ठीकरा
ही है। क्या गारा कुम्हार से पूछता है, “तू क्या बना

रहा है?” क्या तेरी बनाई हुई कोई चीज़ तेरे बारे में
शिकायत करती है, “उस की कोई ताक़त नहीं”?
10 उस पर अफ़सोस जो बाप से सवाल करे, “तू क्यूँ
बाप बन रहा है?” या औरत से, “तू क्यूँ बच्चा जन्म
दे रही है?”
11 रब जो इस्राईल का क़ुद्दूस और उसे तश्कील देने
वाला है फ़रमाता है, “तुम किस तरह मेरे बच्चों के बारे
में मेरी पूछगछ कर सकते हो? जो कुछ मेरे हाथों ने
बनाया उस के बारे में तुम कैसे मुझे हुक्म दे सकते
हो? 12 मैं ही ने ज़मीन को बना कर इन्सान को उस
पर ख़ल्क़ किया। मेरे अपने हाथों ने आसमान को
ख़ैमे की तरह उस के ऊपर तान लिया और मैं ही ने
उस के सितारों के पूरे लश्कर को तर्तीब दिया। 13 मैं
ही ने ख़ोरस को इन्साफ़ से जगा दिया, और मैं ही
उस के तमाम रास्ते सीधे बना देता हूँ। वह मेरे शहर
को नए सिरे से तामीर करेगा और मेरे जिलावतनों को
आज़ाद करेगा। और यह सब कुछ मुफ़्त में होगा, न
वह पैसे लेगा, न तुह्फ़े।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।

रब वाहिद ख़ुदा है

14 रब फ़रमाता है, “मिस्र की दौलत, एथोपिया का
तिजारती माल और सिबा के दराज़क़द अफ़राद तेरे
मातहत हो कर तेरी मिलकियत बन जाएंगे। वह तेरे
पीछे चलेंगे, ज़न्जीरों में जकड़े तेरे ताबे हो जाएंगे।
तेरे सामने झुक कर वह इल्तिमास करके कहेंगे,
‘यक़ीनन अल्लाह तेरे साथ है। उस के सिवा कोई
और ख़ुदा है नहीं’।” 15 ऐ इस्राईल के ख़ुदा और
नजातदहिन्दा, यक़ीनन तू अपने आप को छुपाए
रखने वाला ख़ुदा है। 16 बुत बनाने वाले सब शर्मिन्दा
हो जाएंगे। उन के मुँह काले हो जाएंगे, और वह मिल
कर शर्मसार हालत में चले जाएंगे। 17 लेकिन इस्राईल
को छुटकारा मिलेगा, रब उसे अबदी नजात देगा।
तब तुम्हारी रुस्वाई कभी नहीं होगी, तुम हमेशा तक
शर्मिन्दा होने से मह्फ़ूज़ रहोगे।
18 क्यूँकि रब फ़रमाता है, “मैं ही रब हूँ, और मेरे
सिवा कोई और नहीं है! जो यह फ़रमाता है वह ख़ुदा
है, जिस ने आसमान को ख़ल्क़ किया और ज़मीन को
तश्कील दे कर मह्फ़ूज़ बुन्याद पर रखा। और ज़मीन
सुन्सान बयाबान न रही बल्कि उस ने उसे बसने के
क़ाबिल बना दिया ताकि जानदार उस में रह सकें।
19 मैं ने पोशीदगी में या दुनिया के किसी तारीक कोने
से बात नहीं की। मैं ने याक़ूब की औलाद से यह भी
नहीं कहा, ‘बेशक मुझे तलाश करो, लेकिन तुम मुझे
नहीं पाओगे।’ नहीं, मैं रब ही हूँ, जो इन्साफ़ बयान
करता, सच्चाई का एलान करता है।
20 तुम जो दीगर अक़्वाम से बच निकले हो आओ,
जमा हो जाओ। मिल कर मेरे हुज़ूर हाज़िर हो जाओ!
जो लकड़ी के बुत उठा कर अपने साथ लिए फिरते
हैं वह कुछ नहीं जानते! जो देवता छुटकारा नहीं दे
सकते उन से वह क्यूँ इल्तिजा करते हैं? 21 आओ,
अपना मुआमला सुनाओ, अपने दलाइल पेश करो!
बेशक पहले एक दूसरे से मश्वरा करो। किस ने बड़ी
देर पहले यह कुछ सुनाया था? क्या मैं, रब ने तवील
अर्सा पहले इस का एलान नहीं किया था? क्यूँकि
मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं रास्त ख़ुदा और
नजातदहिन्दा हूँ। मेरे सिवा कोई और नहीं है।
22 ऐ ज़मीन की इन्तिहाओ, सब मेरी तरफ़ रुजू
करके नजात पाओ! क्यूँकि मैं ही ख़ुदा हूँ, मेरे सिवा
कोई और नहीं है। 23 मैं ने अपने नाम की क़सम खा
कर फ़रमाया है, और मेरा फ़रमान रास्त है, वह कभी
मन्सूख़ नहीं होगा। फ़रमान यह है कि मेरे सामने हर
घुटना झुकेगा और हर ज़बान मेरी क़सम खा कर
24 कहेगी, ‘रब ही रास्ती और क़ुव्वत का मम्बा है’!”
जो पहले तैश में आ कर रब की मुख़ालफ़त
करते थे वह भी सब शर्मिन्दा हो कर उस के हुज़ूर
आएँगे। 25 लेकिन इस्राईल की तमाम औलाद रब में
रास्तबाज़ ठहर कर उस पर फ़ख़र करेगी।

देवता मदद नहीं कर सकते

46 1 बाबल के देवता बेल और नबू झुक कर
गिर गए हैं, और लादू जानवर उन के बुतों
को उठाए फिर रहे हैं। तुम्हारे जो बुत उठाए जा सकते
हैं थकेहारे जानवरों का बोझ बन गए हैं। 2 क्यूँकि
दोनों देवता झुक कर गिर गए हैं। वह बोझ बनने से
बच न सके, और अब ख़ुद जिलावतनी में जा रहे हैं।
3 "ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! ऐ इस्राईल के घराने
के बचे हुए अफ़राद, ध्यान दो! माँ के पेट से ही तुम
मेरे लिए बोझ रहे हो, पैदाइश से पहले ही मैं तुम्हें
उठाए फिर रहा हूँ। 4 तुम्हारे बूढ़े होने तक मैं वही
रहूँगा, तुम्हारे बाल के सफ़ेद हो जाने तक तुम्हें उठाए
फिरूँगा। यह इब्तिदा से मेरा ही काम रहा है, और
आइन्दा भी मैं तुझे उठाए फिरूँगा, आइन्दा भी तेरा
सहारा बन कर तुझे बचाए रखूँगा।
5 तुम मेरा मुक़ाबला किस से करोगे, मुझे किस के
बराबर ठहराओगे? तुम मेरा मुवाज़ना किस से करोगे
जो मेरी मानिन्द हो? 6 लोग बुत बनवाने के लिए बटवे
से कस्रत का सोना निकालते और चाँदी तराज़ू में
तोलते हैं। फिर वह सुनार को बुत बनाने का ठेका
देते हैं। जब तय्यार हो जाए तो वह झुक कर मुँह के
बल उस की पूजा करते हैं। 7 वह उसे अपने कंधों पर
रख कर इधर उधर लिए फिरते हैं, फिर उसे दुबारा
उस की जगह पर रख देते हैं। वहाँ वह खड़ा रहता
है और ज़रा भी नहीं हिलता। लोग चिल्ला कर उस से
फ़र्याद करते हैं, लेकिन वह जवाब नहीं देता, दुआगो
को मुसीबत से नहीं बचाता।
8 ऐ बेवफ़ा लोगो, इस का ख़याल रखो! मर्दानगी
दिखा कर सन्जीदगी से इस पर ध्यान दो! 9 जो कुछ
अज़ल से पेश आया है उसे याद रखो। क्यूँकि मैं ही
रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं। मैं ही रब हूँ,
और मेरी मानिन्द कोई नहीं।
10 मैं इब्तिदा से अन्जाम का एलान, क़दीम ज़माने
से आने वाली बातों की पेशगोई करता आया हूँ। अब
मैं फ़रमाता हूँ कि मेरा मन्सूबा अटल है, मैं अपनी
मर्ज़ी हर लिहाज़ से पूरी करूँगा। 11 मशरिक़ से मैं
शिकारी परिन्दा बुला रहा हूँ, दूरदराज़ मुल्क से एक
ऐसा आदमी जो मेरा मन्सूबा पूरा करे। ध्यान दो, जो
कुछ मैं ने फ़रमाया वह तक्मील तक पहुँचाऊँगा, जो
मन्सूबा मैं ने बांधा वह पूरा करूँगा।
12 ऐ ज़िद्दी लोगो जो रास्ती से कहीं दूर हो, मेरी
सुनो! 13 मैं अपनी रास्ती क़रीब ही लाया हूँ, वह दूर
नहीं है। मेरी नजात के आने में देर नहीं होगी। मैं
सिय्यून को नजात दूँगा, इस्राईल को अपनी शान-
ओ-शौकत से नवाज़ूँगा।

रब बाबल को सज़ा देगा

47 1 ऐ कुंवारी बाबल बेटी, उतर जा! ख़ाक में
बैठ जा! ऐ बाबलियों की बेटी, ज़मीन पर
बैठ जा जहाँ तख़्त नहीं है! अब से लोग तुझ से नहीं
कहेंगे, 'ऐ मेरी नाज़-पर्वर्दा, ऐ मेरी लाडली!'
2 अब चक्की ले कर आटा पीस! अपना निक़ाब
हटा, अपने लिबास का दामन उठा, अपनी टाँगों को
उरियाँ करके नदियाँ पार कर। 3 तेरी बरहनगी सब पर
ज़ाहिर होगी, सब तेरी शर्मसार हालत देखेंगे। क्यूँकि
मैं बदला ले कर किसी को नहीं छोड़ूँगा।"
4 जिस ने इवज़ाना दे कर हमें छुड़ाया है वही यह
फ़रमाता है, वह जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है
और जो इस्राईल का क़ुद्दूस है।
5 "ऐ बाबलियों की बेटी, चुपके से बैठ जा! तारीकी
में छुप जा! आइन्दा तू 'ममालिक की मलिका' नहीं
कहलाएगी।
6 जब मुझे अपनी क़ौम पर ग़ुस्सा आया तो मैं ने
उसे यूँ रुसवा किया कि उस की मुक़द्दस हालत जाती
रही, गो वह मेरा मौरूसी हिस्सा थी। उस वक़्त मैं ने
उन्हें तेरे हवाले कर दिया, लेकिन तू ने उन पर रहम
न किया बल्कि बूढ़ों की गर्दन पर भी अपना भारी
जूआ रख दिया। 7 तू बोली, 'मैं अबद तक मलिका
ही रहूँगी!' तू ने सन्जीदगी से ध्यान न दिया, न इस
के अन्जाम पर ग़ौर किया।

8 अब सुन, ऐ अय्याश, तू जो अपने आप को
महफ़ूज़ समझ कर कहती है, 'मैं ही हूँ, मेरे सिवा
कोई और नहीं है। मैं न कभी बेवा, न कभी बेऔलाद
हूँगी।' 9 मैं फ़रमाता हूँ कि एक ही दिन और एक ही
लम्हे में तू बेऔलाद भी बनेगी और बेवा भी। तेरे सारे
ज़बरदस्त जादूमंत्र के बावुजूद यह आफ़त पूरे ज़ोर से
तुझ पर आएगी।

10 तू ने अपनी बदकारी पर एतिमाद करके सोचा,
'कोई नहीं मुझे देखता।' लेकिन तेरी 'हिक्मत' और
'इल्म' तुझे ग़लत राह पर लाया है। उन की बिना पर
तू ने दिल में कहा, 'मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं
है।' 11 अब तुझ पर ऐसी आफ़त आएगी जिसे तेरे
जादूमंत्र दूर करने नहीं पाएँगे, तू ऐसी मुसीबत में फंस
जाएगी जिस से निपट नहीं सकेगी। अचानक ही तुझ
पर तबाही नाज़िल होगी, और तू उस के लिए तय्यार
ही नहीं होगी। 12 अब खड़ी हो जा, अपने जादू-टोने
का पूरा ख़ज़ाना खोल कर सब कुछ इस्तेमाल में ला
जो तू ने जवानी से बड़ी मेहनत-मशक़्क़त के साथ
अपना लिया है। शायद फ़ाइदा हो, शायद तू लोगों
को डरा कर भगा सके।

13 लेकिन दूसरों के बेशुमार मश्वरे बेकार हैं, उन्हों ने
तुझे सिर्फ़ थका दिया है। अब तेरे नजूमी खड़े हो जाएँ,
जो सितारों को देख देख कर हर महीने पेशगोइयाँ
करते हैं वह सामने आ कर तुझे उस से बचाएँ जो
तुझ पर आने वाला है। 14 यक़ीनन वह आग में जलने
वाला भूसा ही हैं जो अपनी जान को शोलों से बचा
नहीं सकते। और यह कोएलों की आग नहीं होगी
जिस के सामने इन्सान बैठ कर आग ताप सके।

15 यही उन सब का हाल है जिन पर तू ने मेहनत की
है और जो तेरी जवानी से तेरे साथ तिजारत करते
रहे हैं। हर एक लड़खड़ाते हुए अपनी अपनी राह
इख़तियार करेगा, और एक भी नहीं होगा जो तुझे
बचाए।

रब अपने नाम की ख़ातिर इस्राईल को बचाएगा

48 1 ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! तुम जो इस्राईल
कहलाते और यहूदाह के क़बीले के हो,
ध्यान दो! तुम जो रब के नाम की क़सम खा कर
इस्राईल के ख़ुदा को याद करते हो, अगरचे तुम्हारी
बात न सच्चाई, न इन्साफ़ पर मब्नी है, ग़ौर करो! 2 हाँ
तवज्जुह दो, तुम जो मुक़द्दस शहर के लोग कहलाते
और इस्राईल के ख़ुदा पर एतिमाद करते हो, सुनो
कि अल्लाह जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है क्या
फ़रमाता है।

3 जो कुछ पेश आया है उस का एलान मैं ने बड़ी देर
पहले किया। मेरे ही मुँह से उस की पेशगोई सादिर
हुई, मैं ही ने उस की इत्तिला दी। फिर अचानक ही
मैं उसे अमल में लाया और वह वुक़ूपज़ीर हुआ।
4 मैं जानता था कि तू कितना ज़िद्दी है। तेरे गले की
नसें लोहे जैसी बेलचक और तेरी पेशानी पीतल जैसी
सख़्त है। 5 यह जान कर मैं ने बड़ी देर पहले इन बातों
की पेशगोई की। उन के पेश आने से पहले मैं ने तुझे
उन की ख़बर दी ताकि तू दावा न कर सके, 'मेरे बुत
ने यह कुछ किया, मेरे तराशे और ढाले गए देवता ने
इस का हुक्म दिया।' 6 अब जब तू ने यह सुन लिया
है तो सब कुछ पर ग़ौर कर। तू क्यूँ इन बातों को
मानने के लिए तय्यार नहीं?

अब से मैं तुझे नई नई बातें बताऊँगा, ऐसी पोशीदा
बातें जो तुझे अब तक मालूम न थीं। 7 यह किसी
क़दीम ज़माने में वुजूद में नहीं आईं बल्कि अभी अभी
आज ही तेरे इल्म में आई हैं। क्यूँकि मैं नहीं चाहता
था कि तू कहे, 'मुझे पहले से इस का इल्म था।'
8 चुनाँचे न यह बातें तेरे कान तक पहुँची हैं, न तू इन
का इल्म रखता है, बल्कि क़दीम ज़माने से ही तेरा
कान यह सुन नहीं सकता था। क्यूँकि मैं जानता था
कि तू सरासर बेवफ़ा है, कि पैदाइश से ही नमकहराम
कहलाता है। 9 तो भी मैं अपने नाम की ख़ातिर अपना
ग़ज़ब नाज़िल करने से बाज़ रहता, अपनी तम्जीद
की ख़ातिर अपने आप को तुझे नेस्त-ओ-नाबूद करने

से रोके रखता हूँ। 10 देख, मैं ने तुझे पाक-साफ़ कर
दिया है, लेकिन चाँदी को साफ़ करने की कुठाली में
नहीं बल्कि मुसीबत की भट्टी में। उसी में मैं ने तुझे
आज़माया है। 11 अपनी ख़ातिर, हाँ अपनी ही ख़ातिर
मैं यह सब कुछ करता हूँ, ऐसा न हो कि मेरे नाम की
बेहुरमती हो जाए। क्यूँकि मैं इजाज़त नहीं दूँगा कि
किसी और को वह जलाल दिया जाए जिस का सिर्फ़
मैं हक़दार हूँ।

रब इस्राईल का नजातदहिन्दा है

12 ऐ याक़ूब की औलाद, मेरी सुन! ऐ मेरे बर्गुज़ीदा
इस्राईल, ध्यान दे! मैं ही वही हूँ। मैं ही अव्वल-ओ-
आख़िर हूँ। 13 मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुन्याद रखी,
मेरे ही दहने हाथ ने आसमान को ख़ैमे की तरह तान
लिया। जब मैं आवाज़ देता हूँ तो सब मिल कर खड़े
हो जाते हैं। 14 आओ, सब जमा हो कर सुनो! बुतों
में से किस ने इस की पेशगोई की? किसी ने नहीं!
जिस आदमी को रब प्यार करता है वह बाबल के
ख़िलाफ़ उस की मर्ज़ी पूरी करेगा, बाबलियों पर उस
की क़ुव्वत का इज़हार करेगा। 15 मैं, हाँ मैं ही ने
यह फ़रमाया। मैं ही उसे बुला कर यहाँ लाया हूँ, इस
लिए वह ज़रूर कामयाब होगा। 16 मेरे क़रीब आ कर
सुनो! शुरू से मैं ने अलानिया बात की, जब से यह
पेश आया मैं हाज़िर हूँ।"

और अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ और उस के रूह
ने मुझे भेजा है।

17 रब जो तेरा छुड़ाने वाला और इस्राईल का क़ुद्दूस
है फ़रमाता है, "मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ। मैं तुझे वह
कुछ सिखाता हूँ जो मुफ़ीद है और तुझे उन राहों
पर चलने देता हूँ जिन पर तुझे चलना है। 18 काश तू
मेरे अह्काम पर ध्यान देता! तब तेरी सलामती बहते
दरया जैसी और तेरी रास्तबाज़ी समुन्दर की मौजों
जैसी होती। 19 तेरी औलाद रेत की मानिन्द होती, तेरे
पेट का फल रेत के ज़र्रों जैसा अनगिनत होता। इस
का इम्कान ही न होता कि तेरा नाम-ओ-निशान मेरे
सामने से मिट जाए।"

20 बाबल से निकल जाओ! बाबलियों के बीच में से
हिज्रत करो! ख़ुशी के नारे लगा लगा कर एलान करो,
दुनिया की इन्तिहा तक ख़ुशख़बरी फैलाते जाओ
कि रब ने इवज़ाना दे कर अपने ख़ादिम याक़ूब को
छुड़ाया है। 21 उन्हें प्यास न लगी जब उस ने उन्हें
रेगिस्तान में से गुज़रने दिया। उस के हुक्म पर पत्थर
में से पानी बह निकला। जब उस ने चटान को चीर
डाला तो पानी फूट निकला।

22 लेकिन रब फ़रमाता है कि बेदीन सलामती नहीं
पाएँगे।

रब का पैग़म्बर अक़्वाम का नूर है

49 1 ऐ जज़ीरो, सुनो! ऐ दूरदराज़ क़ौमो, ध्यान
दो! रब ने मुझे पैदाइश से पहले ही बुलाया,
मेरी माँ के पेट से ही मेरे नाम को याद करता आया
है। 2 उस ने मेरे मुँह को तेज़ तलवार बना कर मुझे
अपने हाथ के साय में छुपाए रखा, मुझे तेज़ तीर बना
कर अपने तर्कश में पोशीदा रखा है। 3 वह मुझ से
हमकलाम हुआ, "तू मेरा ख़ादिम इस्राईल है, जिस
के ज़रीए मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।"

4 मैं तो बोला था, "मेरी मेहनत-मशक़्क़त बेसूद थी,
मैं ने अपनी ताक़त बेफ़ाइदा और बेमक़्सद ज़ाए कर
दी है। ताहम मेरा हक़्क़ अल्लाह के हाथ में है, मेरा
ख़ुदा ही मुझे अज्र देगा।"

5 लेकिन अब रब मुझ से हमकलाम हुआ है, वह
जो माँ के पेट से ही मुझे इस मक़्सद से तश्कील देता
आया है कि मैं उस की ख़िदमत करके याक़ूब की
औलाद को उस के पास वापस लाऊँ और इस्राईल
को उस के हुज़ूर जमा करूँ। रब ही के हुज़ूर मेरा
एहतिराम किया जाएगा, मेरा ख़ुदा ही मेरी क़ुव्वत
होगा। 6 वही फ़रमाता है, "तू मेरी ख़िदमत करके
न सिर्फ़ याक़ूब के क़बीले बहाल करेगा और उन्हें
वापस लाएगा जिन्हें मैं ने मह्फ़ूज़ रखा है बल्कि तू
इस से कहीं बढ़ कर करेगा। क्यूँकि मैं तुझे दीगर
अक़्वाम की रौशनी बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात
को दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचाए।"

7 रब जो इस्राईल का छुड़ाने वाला और उस का
क़ुद्दूस है उस से हमकलाम हुआ है जिसे लोग हक़ीर
जानते हैं, जिस से दीगर अक़्वाम घिन खाते हैं और जो
हुक्मरानों का ग़ुलाम है। उस से रब फ़रमाता है, "तुझे
देखते ही बादशाह खड़े हो जाएंगे और रईस मुँह के
बल झुक जाएंगे। यह रब की ख़ातिर ही पेश आएगा
जो वफ़ादार है और इस्राईल के क़ुद्दूस के बाइस ही
वुक़ूपज़ीर होगा जिस ने तुझे चुन लिया है।"
8 रब फ़रमाता है, "क़बूलियत के वक़्त मैं तेरी
सुनूँगा, नजात के दिन तेरी मदद करूँगा। तब मैं तुझे
महफ़ूज़ रख कर मुक़र्रर करूँगा कि तू मेरे और क़ौम
के दरमियान अह्द बने, कि तू मुल्क बहाल करके
तबाहशुदा मौरूसी ज़मीन को नए सिरे से तक़्सीम
करे, 9 कि तू क़ैदियों को कहे, 'निकल आओ' और
तारीकी में बसने वालों को, 'रौशनी में आ जाओ!'
तब मेरी भेड़ें रास्तों के किनारे किनारे चरेंगी, और
तमाम बंजर बुलन्दियों पर भी उन की हरी हरी
चरागाहें होंगी। 10 न उन्हें भूक सताएगी न प्यास। न
तपती गर्मी, न धूप उन्हें झुलसाएगी। क्यूँकि जो उन
पर तरस खाता है वह उन की क़ियादत करके उन्हें
चश्मों के पास ले जाएगा। 11 मैं पहाड़ों को हमवार
रास्तों में तब्दील कर दूँगा जबकि मेरी शाहराहें ऊँची
हो जाएँगी। 12 तब वह दूरदराज़ इलाक़ों से आएँगे,
कुछ शिमाल से, कुछ मग़रिब से, और कुछ मिस्र के
जुनूबी शहर अस्वान से भी।"
13 ऐ आसमान, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ ज़मीन, बाग़
बाग़ हो जा! ऐ पहाड़ो, शादमानी के गीत गाओ!
क्यूँकि रब ने अपनी क़ौम को तसल्ली दी है, उसे अपने
मुसीबतज़दा लोगों पर तरस आया है।

रब अपनी क़ौम को कभी नहीं भूलेगा

14 लेकिन सिय्यून कहती है, "रब ने मुझे तर्क कर
दिया है, क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझे भूल गया है।"
15 "यह कैसे हो सकता है? क्या माँ अपने
शीरख़्वार को भूल सकती है? जिस बच्चे को उस ने
जन्म दिया, क्या वह उस पर तरस नहीं खाएगी?
शायद वह भूल जाए, लेकिन मैं तुझे कभी नहीं
भूलूँगा! 16 देख, मैं ने तुझे अपनी दोनों हथेलियों में
कन्दा कर दिया है, तेरी ज़मीनबोस दीवारें हमेशा मेरे
सामने हैं।
17 जो तुझे नए सिरे से तामीर करना चाहते हैं वह
दौड़ कर वापस आ रहे हैं जबकि जिन लोगों ने तुझे
ढा कर तबाह किया वह तुझ से निकल रहे हैं। 18 ऐ
सिय्यून बेटी, नज़र उठा कर चारों तरफ़ देख! यह
सब जमा हो कर तेरे पास आ रहे हैं। मेरी हयात की
क़सम, यह सब तेरे ज़ेवरात बनेंगे जिन से तू अपने
आप को दुल्हन की तरह आरास्ता करेगी।" यह रब
का फ़रमान है।
19 "फ़िलहाल तेरे मुल्क में चारों तरफ़ खंडरात,
उजाड़ और तबाही नज़र आती है, लेकिन आइन्दा
वह अपने बाशिन्दों की कस्रत के बाइस छोटा होगा।
और जिन्हों ने तुझे हड़प कर लिया था वह दूर रहेंगे।
20 पहले तू बेऔलाद थी, लेकिन अब तेरे इतने बच्चे
होंगे कि वह तेरे पास आ कर कहेंगे, 'मेरे लिए जगह
कम है, मुझे और ज़मीन दें ताकि मैं आराम से ज़िन्दगी
गुज़ार सकूँ।' तू अपने कानों से यह सुनेगी।
21 तब तू हैरान हो कर दिल में सोचेगी, 'किस ने यह
बच्चे मेरे लिए पैदा किए? मैं तो बच्चों से महरूम और
बेऔलाद थी, मुझे जिलावतन करके हटाया गया था।
किस ने इन को पाला? मुझे तो तन्हा ही छोड़ दिया
गया था। तो फिर यह कहाँ से आ गए हैं'?"
22 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "देख, मैं
दीगर क़ौमों को हाथ से इशारा दे कर उन के
सामने अपना झंडा गाड़ दूँगा। तब वह तेरे बेटों
को उठा कर अपने बाज़ूओं में वापस ले आएँगे
और तेरी बेटियों को कंधे पर बिठा कर तेरे पास
पहुँचाएँगे। 23 बादशाह तेरे बच्चों की देख-भाल करेंगे,
और रानियाँ उन की दाइयाँ होंगी। वह मुँह के बल
झुक कर तेरे पाँओ की ख़ाक चाटेंगे। तब तू जान
लेगी कि मैं ही रब हूँ, कि जो भी मुझ से उम्मीद रखे
वह कभी शर्मिन्दा नहीं होगा।"

24 क्या सूरमे का लूटा हुआ माल उस के हाथ से
छीना जा सकता है? या क्या ज़ालिम के क़ैदी उस के
क़ब्ज़े से छूट सकते हैं? मुश्किल ही से। 25 लेकिन रब
फ़रमाता है, "यक़ीनन सूरमे का क़ैदी उस के हाथ से
छीन लिया जाएगा और ज़ालिम का लूटा हुआ माल
उस के क़ब्ज़े से छूट जाएगा। जो तुझ से झगड़े उस
के साथ मैं ख़ुद झगड़ूँगा, मैं ही तेरे बच्चों को नजात
दूँगा। 26 जिन्हों ने तुझ पर ज़ुल्म किया उन्हें मैं उन
का अपना गोश्त खिलाऊँगा, उन का अपना ख़ून यूँ
पिलाऊँगा कि वह उसे नई मै की तरह पी पी कर
मस्त हो जाएंगे। तब तमाम इन्सान जान लेंगे कि मैं
रब तेरा नजातदहिन्दा, तेरा छुड़ाने वाला और याक़ूब
का ज़बरदस्त सूरमा हूँ।"

तुम अपने ज़ाती गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हो

50 1 रब फ़रमाता है, "आओ, मुझे वह
तलाक़नामा दिखाओ जो मैं ने दे कर
तुम्हारी माँ को छोड़ दिया था। वह कहाँ है? या मुझे
वह क़र्ज़ख़्वाह दिखाओ जिस के हवाले मैं ने तुम्हें
अपना क़र्ज़ उतारने के लिए किया। वह कहाँ है?
देखो, तुम्हें अपने ही गुनाहों के सबब से फ़रोख़्त
किया गया, तुम्हारे अपने ही गुनाहों के सबब से
तुम्हारी माँ को फ़ारिग़ कर दिया गया।
2 जब मैं आया तो कोई नहीं था। क्या वजह? जब
मैं ने आवाज़ दी तो जवाब देने वाला कोई नहीं था।
क्यूँ? क्या मैं फ़िद्या दे कर तुम्हें छुड़ाने के क़ाबिल
न था? क्या मेरी इतनी ताक़त नहीं कि तुम्हें बचा
सकूँ? मेरी तो एक ही धमकी से समुन्दर ख़ुश्क
हो जाता और दरया रेगिस्तान बन जाते हैं। तब उन
की मछलियाँ पानी से महरूम हो कर गल जाती हैं,
और उन की बदबू चारों तरफ़ फैल जाती है। 3 मैं ही
आसमान को तारीकी का जामा पहनाता, मैं ही उसे
टाट के मातमी लिबास में लपेट देता हूँ।"

रब के पैग़म्बर की रुस्वाई

4 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे शागिर्द की सी
ज़बान अता की ताकि मैं वह कलाम जान लूँ जिस
से थकामाँदा तक़वियत पाए। सुब्ह-ब-सुब्ह वह मेरे
कान को जगा देता है ताकि मैं शागिर्द की तरह सुन
सकूँ। 5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मेरे कान को खोल
दिया, और न मैं सरकश हुआ, न पीछे हट गया। 6 मैं
ने मारने वालों को अपनी पीठ और बाल नोचने वालों
को अपने गाल पेश किए। मैं ने अपना चिहरा उन की
गालियों और थूक से न छुपाया।
7 लेकिन रब क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरी मदद करता है,
इस लिए मेरी रुस्वाई नहीं होगी। चुनाँचे मैं ने अपना
मुँह चक़्माक़ की तरह सख़्त कर लिया है, क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि मैं शर्मिन्दा नहीं हो जाऊँगा। 8 जो मुझे
रास्त ठहराता है वह क़रीब ही है। तो फिर कौन मेरे
साथ झगड़ेगा? आओ, हम मिल कर अदालत में खड़े
हो जाएँ। कौन मुझ पर इल्ज़ाम लगाने की जुरअत
करेगा? वह आ कर मेरा सामना करे! 9 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ ही मेरी मदद करता है। तो फिर कौन मुझे
मुजरिम ठहराएगा? यह तो सब पुराने कपड़े की तरह
घिस कर फटेंगे, कीड़े उन्हें खा जाएंगे।
10 तुम में से कौन रब का ख़ौफ़ मानता और उस के
ख़ादिम की सुनता है? जब उसे रौशनी के बग़ैर अंधेरे
में चलना पड़े तो वह रब के नाम पर भरोसा रखे और
अपने ख़ुदा पर इन्हिसार करे। 11 लेकिन तुम बाक़ी
लोग जो आग लगा कर अपने आप को जलते हुए
तीरों से लेस करते हो, अपनी ही आग के शोलों में
चले जाओ! ख़ुद उन तीरों की ज़द में आओ जो तुम
ने दूसरों के लिए जलाए हैं! मेरे हाथ से तुम्हें यही
अज्र मिलेगा, तुम सख़्त अज़ियत का शिकार हो कर
ज़मीन पर तड़पते रहोगे।

रब अपनी क़ौम को तसल्ली देता है

51 1 "तुम जो रास्ती के पीछे लगे रहते, जो रब
के तालिब हो, मेरी बात सुनो! उस चटान

पर ध्यान दो जिस में से तुम्हें तराश कर निकाला गया
है, उस कान पर ग़ौर करो जिस में से तुम्हें खोदा गया
है। 2 यानी अपने बाप इब्राहीम और अपनी माँ सारा
पर तवज्जुह दो, जिस ने दर्द-ए-ज़ह की तक्लीफ़ उठा
कर तुम्हें जन्म दिया। इब्राहीम बेऔलाद था जब मैं
ने उसे बुलाया, लेकिन फिर मैं ने उसे बरकत दे कर
बहुत औलाद बख़्शी।”

3 यक़ीनन रब सिय्यून को तसल्ली देगा। वह उस के
तमाम खंडरात को तशफ़्फ़ी दे कर उस के रेगिस्तान
को बाग़-ए-अदन में और उस की बंजर ज़मीन को रब
के बाग़ में बदल देगा। तब उस में ख़ुशी-ओ-शादमानी
पाई जाएगी, हर तरफ़ शुक्रगुज़ारी और गीतों की
आवाज़ें सुनाई देंगी।

4 “ऐ मेरी क़ौम, मुझ पर ध्यान दे! ऐ मेरी उम्मत,
मुझ पर ग़ौर कर! क्यूँकि हिदायत मुझ से सादिर
होगी, और मेरा इन्साफ़ क़ौमों की रौशनी बनेगा।
5 मेरी रास्ती क़रीब ही है, मेरी नजात रास्ते में है, और
मेरा ज़ोरावर बाज़ू क़ौमों में इन्साफ़ क़ाइम करेगा।
जज़ीरे मुझ से उम्मीद रखेंगे, वह मेरी क़ुदरत देखने
के इन्तिज़ार में रहेंगे। 6 अपनी आँखें आसमान की
तरफ़ उठाओ! नीचे ज़मीन पर नज़र डालो! आसमान
धुएँ की तरह बिखर जाएगा, ज़मीन पुराने कपड़े की
तरह घिसे फटेगी और उस के बाशिन्दे मच्छरों की
तरह मर जाएंगे। लेकिन मेरी नजात अबद तक क़ाइम
रहेगी, और मेरी रास्ती कभी ख़त्म नहीं होगी।

7 ऐ सहीह राह को जानने वालो, ऐ क़ौम जिस के
दिल में मेरी शरीअत है, मेरी बात सुनो! जब लोग
तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं तो उन से मत डरना, जब
वह तुम्हें गालियाँ देते हैं तो मत घबराना। 8 क्यूँकि
किरम उन्हें कपड़े की तरह खा जाएगा, कीड़ा उन्हें
ऊन की तरह हज़म करेगा। लेकिन मेरी रास्ती अबद
तक क़ाइम रहेगी, मेरी नजात पुश्त-दर-पुश्त बरक़रार
रहेगी।”

रब की रिहाई

9 ऐ रब के बाज़ू, उठ! जाग उठ और क़ुव्वत का
जामा पहन ले! यूँ अमल में आ जिस तरह क़दीम
ज़माने में आया था, जब तू ने मुतअद्दिद नस्लों पहले
रहब को टुकड़े टुकड़े कर दिया, समुन्दरी अज़दहे
को छेद डाला। 10 क्यूँकि तू ही ने समुन्दर को ख़ुश्क
किया, तू ही ने गहराइयों की तह पर रास्ता बनाया
ताकि वह जिन्हें तू ने इवज़ाना दे कर छुड़ाया था उस
में से गुज़र सकें।

11 जिन्हें रब ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है वह वापस
आएँगे। वह शादियाना बजा कर सिय्यून में दाख़िल
होंगे, और हर एक का सर अबदी ख़ुशी के ताज से
आरास्ता होगा। क्यूँकि ख़ुशी और शादमानी उन पर
ग़ालिब आ कर तमाम ग़म और आह-ओ-ज़ारी भगा
देगी।

12 “मैं, सिर्फ़ मैं ही तुझे तसल्ली देता हूँ। तो फिर तू
फ़ानी इन्सान से क्यूँ डरती है, जो घास की तरह मुरझा
कर ख़त्म हो जाता है? 13 तू रब अपने ख़ालिक़ को
क्यूँ भूल गई है, जिस ने आसमान को ख़ैमे की तरह
तान लिया और ज़मीन की बुन्याद रखी? जब ज़ालिम
तुझे तबाह करने पर तुला रहता है तो तू उस के तैश
से पूरे दिन क्यूँ ख़ौफ़ खाती रहती है? अब उस का
तैश कहाँ रहा? 14 जो ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ है वह
जल्द ही आज़ाद हो जाएगा। न वह मर कर क़ब्र में
उतरेगा, न रोटी से महरूम रहेगा। 15 क्यूँकि मैं रब
तेरा ख़ुदा हूँ जो समुन्दर को यूँ हरकत में लाता है कि
वह मुतलातिम हो कर गरजने लगता है। रब्ब-उल-
अफ़्वाज मेरा नाम है। 16 मैं ने अपने अल्फ़ाज़ तेरे मुँह
में डाल कर तुझे अपने हाथ के साय में छुपाए रखा
है ताकि नए सिरे से आसमान को तानूँ, ज़मीन की
बुन्यादें रखूँ और सिय्यून को बताऊँ, ‘तू मेरी क़ौम
है’।”

ऐ यरूशलम, जाग उठ!

17 ऐ यरूशलम, उठ! जाग उठ! ऐ शहर जिस ने
रब के हाथ से उस का ग़ज़ब भरा प्याला पी लिया
है, खड़ी हो जा! अब तू ने लड़खड़ा देने वाले प्याले
को आख़िरी क़तरे तक चाट लिया है। 18 जितने भी
बेटे तू ने जन्म दिए उन में से एक भी नहीं रहा जो
तेरी राहनुमाई करे। जितने भी बेटे तू ने पाले उन में
से एक भी नहीं जो तेरा हाथ पकड़ कर तेरे साथ
चले। 19 तुझ पर दो आफ़तें आईं यानी बर्बादी-ओ-
तबाही, काल और तलवार। लेकिन किस ने हमदर्दी
का इज़हार किया? किस ने तुझे तसल्ली दी? 20 तेरे
बेटे ग़श खा कर गिर गए हैं। हर गली में वह जाल
में फंसे हुए ग़ज़ाल [s]की तरह ज़मीन पर तड़प रहे हैं।
क्यूँकि रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ है, वह
इलाही डाँट-डपट का निशाना बन गए हैं।

21 चुनाँचे मेरी बात सुन, ऐ मुसीबतज़दा क़ौम, ऐ
नशे में मत्वाली उम्मत, गो तू मै के असर से नहीं
डगमगा रही। 22 रब तेरा आक़ा जो तेरा ख़ुदा है और
अपनी क़ौम के लिए लड़ता है वह फ़रमाता है, "देख,
मैं ने तेरे हाथ से वह प्याला दूर कर दिया जो तेरे
लड़खड़ाने का सबब बना। आइन्दा तू मेरा ग़ज़ब भरा
प्याला नहीं पिएगी। 23 अब मैं इसे उन को पकड़ा
दूँगा जिन्हों ने तुझे अज़ियत पहुँचाई है, जिन्हों ने तुझ
से कहा, 'औंधे मुँह झुक जा ताकि हम तुझ पर से
गुज़रें।' उस वक़्त तेरी पीठ ख़ाक में धँस कर दूसरों
के लिए रास्ता बन गई थी।"

ज़न्जीरों को तोड़!

52 1 ऐ सिय्यून, उठ, जाग उठ! अपनी ताक़त
से मुलब्बस हो जा! ऐ मुक़द्दस शहर
यरूशलम, अपने शानदार कपड़े से आरास्ता हो जा!
आइन्दा कभी भी ग़ैरमख़्तून या नापाक शख़्स तुझ
में दाख़िल नहीं होगा। 2 ऐ यरूशलम, अपने आप से
गर्द झाड़कर खड़ी हो जा और तख़्त पर बैठ जा।
ऐ गिरिफ़्तार की हुई सिय्यून बेटी, अपनी गर्दन की
ज़न्जीरों को खोल कर उन से आज़ाद हो जा! 3 क्यूँकि
रब फ़रमाता है, "तुम्हें मुफ़्त में बेचा गया, और अब
तुम्हें पैसे दिए बग़ैर छुड़ाया जाएगा।"

4 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "क़दीम
ज़माने में मेरी क़ौम मिस्र चली गई ताकि वहाँ परदेस
में रहे। बाद में असूर ने बिलावजह उस पर ज़ुल्म
किया है।" 5 रब फ़रमाता है, "अब जो ज़ियादती मेरी
क़ौम से हो रही है उस का मेरे साथ क्या वास्ता है?"
रब फ़रमाता है, "मेरी क़ौम तो मुफ़्त में छीन ली गई
है, और उस पर हुकूमत करने वाले शेख़ी मार कर
पूरा दिन मेरे नाम पर कुफ़्र बकते हैं। 6 चुनाँचे मेरी
क़ौम मेरे नाम को जान लेगी, उस दिन वह पहचान
लेगी कि मैं ही वही हूँ जो फ़रमाता है, 'मैं हाज़िर हूँ'!"

7 उस के क़दम कितने प्यारे हैं जो पहाड़ों पर
चलते हुए ख़ुशख़बरी सुनाता है। क्यूँकि वह अम्न-
ओ-अमान, ख़ुशी का पैग़ाम और नजात का एलान
करेगा, वह सिय्यून से कहेगा, "तेरा ख़ुदा बादशाह
है!" 8 सुन! तेरे पहरेदार आवाज़ बुलन्द कर रहे हैं,
वह मिल कर ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं। क्यूँकि जब
रब कोह-ए-सिय्यून पर वापस आएगा तो वह अपनी
आँखों से इस का मुशाहदा करेंगे।

9 ऐ यरूशलम के खंडरात, शादियाना बजाओ,
ख़ुशी के गीत गाओ! क्यूँकि रब ने अपनी क़ौम
को तसल्ली दी है, उस ने इवज़ाना दे कर यरूशलम
को छुड़ाया है। 10 रब अपनी मुक़द्दस क़ुदरत तमाम
अक़्वाम पर ज़ाहिर करेगा, दुनिया की इन्तिहा तक
सब हमारे ख़ुदा की नजात देखेंगे।

11 जाओ, चले जाओ! वहाँ से निकल जाओ!
किसी भी नापाक चीज़ को न छूना। जो रब का सामान
उठाए चल रहे हैं वह वहाँ से निकल कर पाक-साफ़
रहें। 12 लेकिन लाज़िम नहीं कि तुम भाग कर रवाना
हो जाओ। तुम्हें अचानक फ़रार होने की ज़रूरत नहीं

---

[s]ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा, oryx।

होगी, क्यूँकि रब तुम्हारे आगे भी चलेगा और तुम्हारे पीछे भी। यूँ इस्राईल का ख़ुदा दोनों तरफ़ से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।

रब का पैग़म्बर हमारे गुनाहों को उठाएगा

13 देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह सरबुलन्द, मुम्ताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा। 14 तुझे देख कर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए। क्यूँकि उस की शक्ल इतनी ख़राब थी, उस की सूरत किसी भी इन्सान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई थी। 15 लेकिन अब बहुत सी क़ौमें उसे देख कर हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम-ब-ख़ुद रह जाएंगे। क्यूँकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्हों ने नहीं सुना उस की उन्हें समझ आएगी।

53 1 लेकिन कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया? और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई? 2 उस के सामने वह कोंपल की तरह फूट निकला, उस ताज़ा और मुलाइम शिगूफे की तरह जो ख़ुश्क ज़मीन में छुपी हुई जड़ से निकल कर फलने फूलने लगती है। न वह ख़ूबसूरत था, न शानदार। हम ने उसे देखा तो उस की शक्ल-ओ-सूरत में कुछ नहीं था जो हमें पसन्द आता। 3 उसे हक़ीर और मर्दूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ उस की साथी रहें, और लोग यहाँ तक उस की तहक़ीर करते थे कि उसे देख कर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ क़दर नहीं करते थे।

4 लेकिन उस ने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मार कर ख़ाक में मिला दिया है। 5 लेकिन उसे हमारे ही जराइम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़्मों से हमें शिफ़ा मिली। 6 हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सब के क़ुसूर का निशाना बनाया।

7 उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उस ने सब कुछ बर्दाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरने वालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उस ने अपना मुँह न खोला। 8 उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। अब कौन उस की नस्ल का ख़याल करेगा? क्यूँकि उस का ज़िन्दों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया है। अपनी क़ौम के जुर्म के सबब से वह सज़ा का निशाना बन गया। 9 मुक़र्रर यह हुआ कि उस की क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उस ने तशद्दुद किया, न उस के मुँह में फ़रेब था।

10 लेकिन रब ही की मर्ज़ी थी कि उसे कुचला जाए। उसी ने उसे दुख का निशाना बनाया। और गो रब उस की जान के ज़रीए कफ़्फ़ारा देगा तो भी वह अपने फ़र्ज़न्दों को देखेगा। रब उस के दिनों में इज़ाफ़ा करेगा, और वह रब की मर्ज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा। 11 इतनी तक्लीफ़ बर्दाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इन्साफ़ क़ाइम करेगा, क्यूँकि वह उन के गुनाहों को अपने ऊपर उठा कर दूर कर देगा।

12 इस लिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़्सीम करेगा। क्यूँकि उस ने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया। हाँ, उस ने बहुतों का गुनाह उठा कर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

रब ने यरूशलम को दुबारा क़बूल कर लिया है

54 1 रब फ़रमाता है, “ख़ुशी के नारे लगा, तू जो बेऔलाद है, जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती। बुलन्द आवाज़ से शादियाना बजा, तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ। क्यूँकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा

हैं। 2 अपने ख़ैमे को बड़ा बना, उस के पर्दे हर तरफ़
बिछा! बचत मत करना! ख़ैमे के रस्से लम्बे लम्बे
करके मेख़ें मज़बूती से ज़मीन में ठोंक दे। 3 क्यूँकि
तू तेज़ी से दाईं और बाईं तरफ़ फैल जाएगी, और
तेरी औलाद दीगर क़ौमों पर क़ब्ज़ा करके तबाहशुदा
शहरों को अज़ सर-ए-नौ आबाद करेगी।
4 मत डरना, तेरी रुस्वाई नहीं होगी। शर्मसार न
हो, तेरी बेहुरमती नहीं होगी। अब तू अपनी जवानी
की शर्मिन्दगी भूल जाएगी, तेरे ज़हन से बेवा होने
की ज़िल्लत उतर जाएगी। 5 क्यूँकि तेरा ख़ालिक़ तेरा
शौहर है, रब्ब-उल-अफ़्वाज उस का नाम है, और तेरा
छुड़ाने वाला इस्राईल का क़ुद्दूस है, जो पूरी दुनिया
का ख़ुदा कहलाता है।"
6 तेरा ख़ुदा फ़रमाता है, "तू मतरूका और दिल से
मजरूह बीवी की मानिन्द है, उस औरत की मानिन्द
जिस के शौहर ने उसे रद्द किया, गो उस की शादी
उस वक़्त हुई जब कुंवारी ही थी। लेकिन अब मैं,
रब ने तुझे बुलाया है। 7 एक ही लम्हे के लिए मैं ने
तुझे तर्क किया, लेकिन अब बड़े रहम से तुझे जमा
करूँगा। 8 मैं ने अपने ग़ज़ब का पूरा ज़ोर तुझ पर
नाज़िल करके पल भर के लिए अपना चिहरा तुझ से
छुपा लिया, लेकिन अब अबदी शफ़्क़त से तुझ पर
रहम करूँगा।" रब तेरा छुड़ाने वाला यह फ़रमाता
है।
9 "बड़े सैलाब के बाद मैं ने नूह से क़सम खाई थी
कि आइन्दा सैलाब कभी पूरी ज़मीन पर नहीं आएगा।
इसी तरह अब मैं क़सम खा कर वादा करता हूँ कि
आइन्दा न मैं कभी तुझ से नाराज़ हूँगा, न तुझे मलामत
करूँगा। 10 गो पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ जुम्बिश
खाएँ, लेकिन मेरी शफ़्क़त तुझ पर से कभी नहीं
हटेगी, मेरा सलामती का अह्द कभी नहीं हिलेगा।"
यह रब का फ़रमान है जो तुझ पर तरस खाता है।

नया शहर यरूशलम

11 "बेचारी बेटी यरूशलम! शदीद तूफ़ान तुझ पर से
गुज़र गए हैं, और कोई नहीं है जो तुझे तसल्ली दे। देख,
मैं तेरी दीवारों के पत्थर मज़बूत चूने से जोड़ दूँगा
और तेरी बुन्यादों को संग-ए-लाजवर्द [t]से रख दूँगा।
12 मैं तेरी दीवारों को याक़ूत, तेरे दरवाज़ों को आब-
ए-बहर [u]और तेरी तमाम फ़सील को क़ीमती जवाहिर
से तामीर करूँगा। 13 तेरे तमाम फ़र्ज़न्द रब से तालीम
पाएँगे, और तेरी औलाद की सलामती अज़ीम होगी।
14 तुझे इन्साफ़ की मज़बूत बुन्याद पर रखा जाएगा,
चुनाँचे दूसरों के ज़ुल्म से दूर रह, क्यूँकि डरने की
ज़रूरत नहीं होगी। दह्शतज़दा न हो, क्यूँकि दह्शत
खाने का सबब तेरे क़रीब नहीं आएगा। 15 अगर कोई
तुझ पर हम्ला करे भी तो यह मेरी तरफ़ से नहीं होगा,
इस लिए हर हम्लाआवर शिकस्त खाएगा।
16 देख, मैं ही उस लोहार का ख़ालिक़ हूँ जो हवा
दे कर कोएलों को दहका देता है ताकि काम के लिए
मौज़ूँ हथियार बना ले। और मैं ही ने तबाह करने वाले
को ख़ल्क़ किया ताकि वह बर्बादी का काम अन्जाम
दे। 17 चुनाँचे जो भी हथियार तुझ पर हम्ला करने के
लिए तय्यार हो जाए वह नाकाम होगा, और जो भी
ज़बान तुझ पर इल्ज़ाम लगाए उसे तू मुजरिम साबित
करेगी। यही रब के ख़ादिमों का मौरूसी हिस्सा है,
मैं ही उन की रास्तबाज़ी बरक़रार रखूँगा।" रब ख़ुद
यह फ़रमाता है।

रब के पास आओ ताकि ज़िन्दगी पाओ

55 1 "क्या तुम प्यासे हो? आओ, सब पानी के
पास आओ! क्या तुम्हारे पास पैसे नहीं?
इधर आओ, सौदा ख़रीद कर खाना खाओ। यहाँ
की मै और दूध मुफ़्त है। आओ, उसे पैसे दिए
बग़ैर ख़रीदो। 2 उस पर पैसे क्यूँ ख़र्च करते हो
जो रोटी नहीं है? जो सेर नहीं करता उस के लिए

[t]lapis lazuli

[u]beryl

मेहनत-मशक़्क़त क्यूँ करते हो? सुनो, सुनो मेरी बात!
फिर तुम अच्छी ख़ुराक खाओगे, बेहतरीन खाने से
लुत्फ़अन्दोज़ होगे। 3 कान लगा कर मेरे पास आओ!
सुनो तो जीते रहोगे।
मैं तुम्हारे साथ अबदी अह्द बांधूँगा, तुम्हें उन
अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिन का वादा
दाऊद से किया था। 4 देख, मैं ने मुक़र्रर किया कि
वह अक़्वाम के सामने मेरा गवाह हो, कि अक़्वाम
का रईस और हुक्मरान हो। 5 देख, तू ऐसी क़ौम को
बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और तुझ से नावाक़िफ़
क़ौम रब तेरे ख़ुदा की ख़ातिर तेरे पास दौड़ी चली
आएगी। क्यूँकि जो इस्राईल का क़ुद्दूस है उस ने तुझे
शान-ओ-शौकत अता की है।"

मेरा कलाम बेतासीर नहीं रहता

6 अभी रब को तलाश करो जबकि उसे पाया जा
सकता है। अभी उसे पुकारो जबकि वह क़रीब ही
है। 7 बेदीन अपनी बुरी राह और शरीर अपने बुरे
ख़यालात छोड़े। वह रब के पास वापस आए तो वह
उस पर रहम करेगा। वह हमारे ख़ुदा के पास वापस
आए, क्यूँकि वह फ़राख़दिली से मुआफ़ कर देता है।
8 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मेरे ख़यालात और तुम्हारे
ख़यालात में और मेरी राहों और तुम्हारी राहों में बड़ा
फ़र्क़ है। 9 जितना आसमान ज़मीन से ऊँचा है उतनी
ही मेरी राहें तुम्हारी राहों और मेरे ख़यालात तुम्हारे
ख़यालात से बुलन्द हैं।
10 बारिश और बर्फ़ पर ग़ौर करो! ज़मीन पर पड़ने
के बाद यह ख़ाली हाथ वापस नहीं आती बल्कि
ज़मीन को यूँ सेराब करती है कि पौदे फूटने और
फलने फूलने लगते हैं बल्कि पकते पकते बीज बोने
वाले को बीज और भूके को रोटी मुहय्या करते हैं।
11 मेरे मुँह से निकला हुआ कलाम भी ऐसा ही है। वह
ख़ाली हाथ वापस नहीं आएगा बल्कि मेरी मर्ज़ी पूरी
करेगा और उस में कामयाब होगा जिस के लिए मैं ने
उसे भेजा था।
12 क्यूँकि तुम ख़ुशी से निकलोगे, तुम्हें सलामती से
लाया जाएगा। पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे आने पर
बाग़ बाग़ हो कर शादियाना बजाएँगी, और मैदान के
तमाम दरख़्त तालियाँ बजाएंगे। 13 काँटेदार झाड़ी की
बजाय ज़ूनीपर का दरख़्त उगेगा, और बिच्छूबूटी की
बजाय मेहंदी फले फूलेगी। यूँ रब के नाम को जलाल
मिलेगा, और उस की क़ुदरत का अबदी और अनमिट
निशान क़ाइम होगा।"

हर शख़्स अल्लाह की क़ौम में शामिल हो सकता है

56 1 रब फ़रमाता है, "इन्साफ़ को क़ाइम रखो
और वह कुछ किया करो जो रास्त है,
क्यूँकि मेरी नजात क़रीब ही है, और मेरी रास्ती
ज़ाहिर होने को है। 2 मुबारक है वह जो यूँ रास्ती
से लिपटा रहे। मुबारक है वह जो सबत के दिन की
बेहुरमती न करे बल्कि उसे मनाए, जो हर बुरे काम
से गुरेज़ करे।"
3 जो परदेसी रब का पैरोकार हो गया है वह न कहे
कि बेशक रब मुझे अपनी क़ौम से अलग कर रखेगा।
ख़्वाजासरा भी न सोचे कि हाय, मैं सूखा हुआ दरख़्त
ही हूँ!
4 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "जो ख़्वाजासरा मेरे सबत
के दिन मनाएँ, ऐसे क़दम उठाएँ जो मुझे पसन्द हों
और मेरे अह्द के साथ लिपटे रहें वह बेफ़िक्र रहें।
5 क्यूँकि मैं उन्हें अपने घर और उस की चारदीवारी
में ऐसी यादगार और ऐसा नाम अता करूँगा जो बेटे-
बेटियाँ मिलने से कहीं बेहतर होगा। और जो नाम
मैं उन्हें दूँगा वह अबदी होगा, वह कभी नहीं मिटने
का।
6 वह परदेसी भी बेफ़िक्र रहें जो रब के पैरोकार बन
कर उस की ख़िदमत करना चाहते, जो रब का नाम
अज़ीज़ रख कर उस की इबादत करते, जो सबत के
दिन की बेहुरमती नहीं करते बल्कि उसे मनाते और
जो मेरे अह्द के साथ लिपटे रहते हैं। 7 क्यूँकि मैं उन्हें
अपने मुक़द्दस पहाड़ के पास ला कर अपने दुआ के
घर में ख़ुशी दिलाऊँगा। जब वह मेरी क़ुर्बानगाह पर

अपनी भस्म होने वाली और ज़बह की क़ुर्बानियाँ
चढ़ाएँगे तो वह मुझे पसन्द आएँगी । क्यूँकि मेरा घर
तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा।”
8 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ जो इस्राईल की बिखरी हुई
क़ौम जमा कर रहा है फ़रमाता है, “उन में जो इकट्ठे
हो चुके हैं मैं और भी जमा कर दूँगा।”

क़ौम के राहनुमा सुस्त और लालची कुत्ते हैं

9 ऐ मैदान के तमाम हैवानो, आओ! ऐ जंगल
के तमाम जानवरो, आ कर खाओ! 10 इस्राईल के
पहरेदार अंधे हैं, सब के सब कुछ भी नहीं जानते।
सब के सब बहरे कुत्ते हैं जो भौंक ही नहीं सकते।
फ़र्श पर लेटे हुए वह अच्छे अच्छे ख़्वाब देखते रहते
हैं। ऊँघना उन्हें कितना पसन्द है! 11 लेकिन यह कुत्ते
लालची भी हैं और कभी सेर नहीं होते, हालाँकि
गल्लाबान कहलाते हैं। वह समझ से ख़ाली हैं, और
हर एक अपनी अपनी राह पर ध्यान दे कर अपने ही
नफ़ा की तलाश में रहता है। 12 हर एक आवाज़ देता
है, “आओ, मैं मै ले आता हूँ! आओ, हम जी भर कर
शराब पी लें। और कल भी आज की तरह हो बल्कि
इस से भी ज़्यादा रौनक़ हो!”

रब बेदीनों की अदालत करता है

57 1 रास्तबाज़ हलाक हो जाता है, लेकिन
किसी को पर्वा नहीं। दियानतदार दुनिया से
छीन लिए जाते हैं, लेकिन कोई ध्यान नहीं देता। कोई
नहीं समझता कि रास्तबाज़ को बुराई से बचने के
लिए छीन लिया जाता है। 2 क्यूँकि उस की मन्ज़िल-
ए-मक़सूद सलामती है। सीधी राह पर चलने वाले
मरते वक़्त पाँओ फैला कर आराम करते हैं।
3 “लेकिन ऐ जादूगरनी की औलाद, ज़िनाकार और
फ़ह्हाशी के बच्चो, इधर आओ! 4 तुम किस का
मज़ाक़ उड़ा रहे हो, किस पर ज़बान चला कर मुँह
चिड़ाते हो? तुम मुजरिमों और धोकेबाज़ों के ही बच्चे
हो!
5 तुम बलूत बल्कि हर घने दरख़्त के साय में मस्ती
में आ जाते हो, वादियों और चटानों के शिगाफ़ों में
अपने बच्चों को ज़बह करते हो। 6 वादियों के रगड़े
हुए पत्थर तेरा हिस्सा और तेरा मुक़द्दर बन गए हैं।
क्यूँकि उन ही को तू ने मै और ग़ल्ला की नज़रें पेश कीं।
इस के मद्द-ए-नज़र मैं अपना फ़ैसला क्यूँ बदलों?
7 तू ने अपना बिस्तर ऊँचे पहाड़ पर लगाया, उस पर
चढ़ कर अपनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं। 8 अपने घर के
दरवाज़े और चौखट के पीछे तू ने अपनी बुतपरस्ती
के निशान लगाए। मुझे तर्क करके तू अपना बिस्तर
बिछा कर उस पर लेट गई। तू ने उसे इतना बड़ा
बना दिया कि दूसरे भी उस पर लेट सकें। फिर तू ने
इस्मतफ़रोशी के पैसे मुक़र्रर किए। उन की सोह्बत
तुझे कितनी प्यारी थी, उन की बरहनगी से तू कितना
लुत्फ़ उठाती थी! 9 तू कस्रत का तेल और ख़ुश्बूदार
क्रीम ले कर मलिक देवता के पास गई। तू ने अपने
क़ासिदों को दूर दूर बल्कि पाताल तक भेज दिया।
10 गो तू सफ़र करते करते बहुत थक गई तो भी तू ने
कभी न कहा, ‘फ़ुज़ूल है!’ अब तक तुझे तक़वियत
मिलती रही, इस लिए तू निढाल न हुई।
11 तुझे किस से इतना ख़ौफ़-ओ-हिरास था कि तू ने
झूट बोल कर न मुझे याद किया, न पर्वा की? ऐसा
ही है ना, तू इस लिए मेरा ख़ौफ़ नहीं मानती कि मैं
ख़ामोश और छुपा रहा।
12 लेकिन मैं लोगों पर तेरी नाम-निहाद रास्तबाज़ी
और तेरे काम ज़ाहिर करूँगा। यक़ीनन यह तेरे लिए
मुफ़ीद नहीं होंगे। 13 आ, मदद के लिए आवाज़ दे!
देखते हैं कि तेरे बुतों का मज्मूआ तुझे बचा सकेगा
कि नहीं। लेकिन ऐसा नहीं होगा बल्कि उन्हें हवा
उठा ले जाएगी, एक फूँक उन्हें उड़ा देगी।
लेकिन जो मुझ पर भरोसा रखे वह मुल्क को मीरास
में पाएगा, मुक़द्दस पहाड़ उस की मौरूसी मिलकियत
बनेगा।”

रब अपनी क़ौम की मदद करेगा

14 अल्लाह फ़रमाता है, “रास्ता बनाओ, रास्ता
बनाओ! उसे साफ़-सुथरा करके हर रुकावट दूर करो
ताकि मेरी क़ौम आ सके।” 15 क्यूँकि जो अज़ीम
और सरबुलन्द है, जो अबद तक तख़्तनशीन और
जिस का नाम क़ुद्दूस है वह फ़रमाता है, “मैं न सिर्फ़
बुलन्दियों के मक़्दिस में बल्कि शिकस्ताहाल और
फ़रोतन रूह के साथ भी सुकूनत करता हूँ ताकि
फ़रोतन की रूह और शिकस्ताहाल के दिल को नई
ज़िन्दगी बख़्शूँ। 16 क्यूँकि मैं हमेशा तक उन के साथ
नहीं झगड़ूँगा, अबद तक नाराज़ नहीं रहूँगा। वर्ना
उन की रूह मेरे हुज़ूर निढाल हो जाती, उन लोगों
की जान जिन्हें मैं ने ख़ुद ख़ल्क़ किया। 17 मैं इस्राईल
का नाजाइज़ मनाफ़े देख कर तैश में आया और उसे
सज़ा दे कर अपना मुँह छुपाए रखा। तो भी वह अपने
दिल की बर्गश्ता राहों पर चलता रहा। 18 लेकिन गो
मैं उस के चाल-चलन से वाक़िफ़ हूँ मैं उसे फिर
भी शिफ़ा दूँगा, उस की राहनुमाई करके उसे दुबारा
तसल्ली दूँगा। और उस के जितने लोग मातम कर रहे
हैं 19 उन के लिए मैं होंटों का फल पैदा करूँगा।”
क्यूँकि रब फ़रमाता है, “उन की सलामती हो जो दूर
हैं और उन की जो क़रीब हैं। मैं ही उन्हें शिफ़ा दूँगा।”
20 लेकिन बेदीन मुतलातिम समुन्दर की मानिन्द हैं
जो थम नहीं सकता और जिस की लहरें गन्द और
कीचड़ उछालती रहती हैं। 21 मेरा ख़ुदा फ़रमाता है,
“बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

रब को पसन्दीदा रोज़ा

58 1 गला फाड़ कर आवाज़ दे, रुक रुक कर
बात न कर! नरसिंगे की सी बुलन्द आवाज़
के साथ मेरी क़ौम को उस की सरकशी सुना, याक़ूब
के घराने को उस के गुनाहों की फ़हरिस्त बयान कर।
2 रोज़-ब-रोज़ वह मेरी मर्ज़ी दरयाफ़्त करते हैं। हाँ, वह
मेरी राहों के शौक़ीन हैं, उस क़ौम की मानिन्द जिस
ने अपने ख़ुदा के अह्काम को तर्क नहीं किया बल्कि
रास्तबाज़ है। चुनाँचे वह मुझ से मुन्सिफ़ाना फ़ैसले
माँग कर ज़ाहिरन अल्लाह की क़ुर्बत से लुत्फ़अन्दोज़
होते हैं। 3 वह शिकायत करते हैं, ‘जब हम रोज़ा रखते
हैं तो तू तवज्जुह क्यूँ नहीं देता? जब हम अपने आप
को ख़ाकसार बना कर इनकिसारी का इज़हार करते
हैं तो तू ध्यान क्यूँ नहीं देता?’

सुनो! रोज़ा रखते वक़्त तुम अपना कारोबार मामूल
के मुताबिक़ चला कर अपने मज़दूरों को दबाए रखते
हो। 4 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम रोज़ा रखने के साथ साथ
झगड़ते और लड़ते भी हो। तुम एक दूसरे को शरारत
के मुक्के मारने से भी नहीं चूकते। यह कैसी बात है?
अगर तुम यूँ रोज़ा रखो तो इस की तवक़्क़ो नहीं कर
सकते कि तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। 5 क्या
मुझे इस क़िस्म का रोज़ा पसन्द है? क्या यह काफ़ी है
कि बन्दा अपने आप को कुछ देर के लिए ख़ाकसार
बना कर इनकिसारी का इज़हार करे? कि वह अपने
सर को आबी नर्सल की तरह झुका कर टाट और
राख में लेट जाए? क्या तुम वाक़ई समझते हो कि
यह रोज़ा है, कि ऐसा वक़्त रब को पसन्द है?

6 यह किस तरह हो सकता है? जो रोज़ा मैं पसन्द
करता हूँ वह फ़र्क़ है। हक़ीक़ी रोज़ा यह है कि तू
बेइन्साफ़ी की ज़न्जीरों में जकड़े हुओं को रिहा करे,
मज़्लूमों का जूआ हटाए, कुचले हुओं को आज़ाद
करे, हर जूए को तोड़े, 7 भूके को अपने खाने में शरीक
करे, बेघर मुसीबतज़दा को पनाह दे, बरहना को
कपड़े पहनाए और अपने रिश्तेदार की मदद करने
से गुरेज़ न करे!

8 अगर तू ऐसा करे तो तू सुब्ह की पहली किरनों
की तरह चमक उठेगा, और तेरे ज़ख़्म जल्द ही भरेंगे।
तब तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे आगे चलेगी, और रब
का जलाल तेरे पीछे तेरी हिफ़ाज़त करेगा। 9 तब तू
फ़र्याद करेगा और रब जवाब देगा। जब तू मदद के
लिए पुकारेगा तो वह फ़रमाएगा, ‘मैं हाज़िर हूँ।’

अपने दरमियान दूसरों पर जूआ डालने, उंगलियाँ
उठाने और दूसरों की बदनामी करने का सिलसिला
ख़त्म कर! 10 भूके को अपनी रोटी दे और मज़्लूमों

की ज़रूरियात पूरी कर! फिर तेरी रौशनी अंधेरे
में चमक उठेगी और तेरी रात दोपहर की तरह
रौशन होगी। 11 रब हमेशा तेरी क़ियादत करेगा, वह
झुलसते हुए इलाक़ों में भी तेरी जान की ज़रूरियात
पूरी करेगा और तेरे आज़ा को तक़वियत देगा। तब तू
सेराब बाग़ की मानिन्द होगा, उस चश्मे की मानिन्द
जिस का पानी कभी ख़त्म नहीं होता। 12 तेरे लोग
क़दीम खंडरात को नए सिरे से तामीर करेंगे। जो
बुन्यादें गुज़री नस्लों ने रखी थीं उन्हें तू दुबारा रखेगा।
तब तू 'रख़ने को बन्द करने वाला' और 'गलियों को
दुबारा रहने के क़ाबिल बनाने वाला' कहलाएगा।
13 सबत के दिन अपने पैरों को काम करने से रोक।
मेरे मुक़द्दस दिन के दौरान कारोबार मत करना बल्कि
उसे 'राहतबख़्श' और 'मुअज़्ज़ज़' क़रार दे। उस दिन
न मामूल की राहों पर चल, न अपने कारोबार चला,
न ख़ाली गप्पें हाँक। यूँ तू सबत का सहीह एहतिराम
करेगा। 14 तब रब तेरी राहत का मम्बा होगा, और
मैं तुझे रथ में बिठा कर मुल्क की बुलन्दियों पर से
गुज़रने दूँगा, तुझे तेरे बाप याक़ूब की मीरास में से सेर
करूँगा।" रब के मुँह ने यह फ़रमाया है।

तुम्हारे क़ुसूर ने तुम्हें रब से दूर कर दिया है

59 1 यक़ीनन रब का बाज़ू छोटा नहीं कि वह
बचा न सके, उस का कान बहरा नहीं कि
सुन न सके। 2 हक़ीक़त में तुम्हारे बुरे कामों ने तुम्हें
उस से अलग कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने उस का
चिहरा तुम से छुपाए रखा, इस लिए वह तुम्हारी नहीं
सुनता। 3 क्यूँकि तुम्हारे हाथ ख़ूनआलूदा, तुम्हारी
उंगलियाँ गुनाह से नापाक हैं। तुम्हारे होंट झूट
बोलते और तुम्हारी ज़बान शरीर बातें फुसफुसाती है।
4 अदालत में कोई मुन्सिफ़ाना मुक़द्दमा नहीं चलाता,
कोई सच्चे दलाइल पेश नहीं करता। लोग सच्चाई से
ख़ाली बातों पर एतिबार करके झूट बोलते हैं, वह
बदकारी से हामिला हो कर बेदीनी को जन्म देते हैं।
5–6 वह ज़हरीले साँपों के अंडों पर बैठ जाते हैं ताकि
बच्चे निकलें। जो उन के अंडे खाए वह मर जाता है,
और अगर उन के अंडे दबाए तो ज़हरीला साँप निकल
आता है। यह लोग मकड़ी के जाले तान लेते हैं, ऐसा
कपड़ा जो पहनने के लिए बेकार है। अपने हाथों के
बनाए हुए इस कपड़े से वह अपने आप को ढाँप नहीं
सकते। उन के आमाल बुरे ही हैं, उन के हाथ तशद्दुद
ही करते हैं। 7 जहाँ भी ग़लत काम करने का मौक़ा
मिले वहाँ उन के पाँओ भाग कर पहुँच जाते हैं। वह
बेक़ुसूर को क़त्ल करने के लिए तय्यार रहते हैं। उन
के ख़यालात शरीर ही हैं, अपने पीछे वह तबाही-
ओ-बर्बादी छोड़ जाते हैं। 8 न वह सलामती की राह
जानते हैं, न उन के रास्तों में इन्साफ़ पाया जाता है।
क्यूँकि उन्हों ने उन्हें टेढ़ा-मेढ़ा बना रखा है, और जो
भी उन पर चले वह सलामती को नहीं जानता।

तौबा की दुआ

9 इसी लिए इन्साफ़ हम से दूर है, रास्ती हम
तक पहुँचती नहीं। हम रौशनी के इन्तिज़ार में रहते
हैं, लेकिन अफ़सोस, अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता
है। हम आब-ओ-ताब की उम्मीद रखते हैं, लेकिन
अफ़सोस, जहाँ भी चलते हैं वहाँ घनी तारीकी छाई
रहती है। 10 हम अंधों की तरह दीवार को हाथ से छू
छू कर रास्ता मालूम करते हैं, आँखों से महरूम लोगों
की तरह टटोल टटोल कर आगे बढ़ते हैं। दोपहर के
वक़्त भी हम ठोकर खा खा कर यूँ फिरते हैं जैसे
धुन्दल्का हो। गो हम तनआवर लोगों के दरमियान
रहते हैं, लेकिन ख़ुद मुर्दों की मानिन्द हैं। 11 हम सब
निढाल हालत में रीछों की तरह ग़ुर्राते, कबूतरों की
मानिन्द ग़ूँ ग़ूँ करते हैं। हम इन्साफ़ के इन्तिज़ार में
रहते हैं, लेकिन बेसूद। हम नजात की उम्मीद रखते
हैं, लेकिन वह हम से दूर ही रहती है।
12 क्यूँकि हमारे मुतअद्दिद जराइम तेरे सामने हैं,
और हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं। हमें
मुतवातिर अपने जराइम का एहसास है, हम अपने
गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं। 13 हम मानते हैं कि रब
से बेवफ़ा रहे बल्कि उस का इन्कार भी किया है।
हम ने अपना मुँह अपने ख़ुदा से फेर कर ज़ुल्म और

धोके की बातें फैलाई हैं। हमारे दिलों में झूट का बीज
बढ़ते बढ़ते मुँह में से निकला। 14 नतीजे में इन्साफ़
पीछे हट गया, और रास्ती दूर खड़ी रहती है। सच्चाई
चौक में ठोकर खा कर गिर गई है, और दयानतदारी
दाख़िल ही नहीं हो सकती। 15 चुनाँचे सच्चाई कहीं भी
पाई नहीं जाती, और ग़लत काम से गुरेज़ करने वाले
को लूटा जाता है।

रब का जवाब

यह सब कुछ रब को नज़र आया, और वह नाख़ुश
था कि इन्साफ़ नहीं है। 16 उस ने देखा कि कोई नहीं
है, वह हैरान हुआ कि मुदाख़लत करने वाला कोई
नहीं है। तब उस के ज़ोरावर बाज़ू ने उस की मदद
की, और उस की रास्ती ने उस को सहारा दिया।
17 रास्ती के ज़िराबक्तर से मुलब्बस हो कर उस ने सर
पर नजात का ख़ोद रखा, इन्तिक़ाम का लिबास पहन
कर उस ने ग़ैरत की चादर ओढ़ ली। 18 हर एक को
वह उस का मुनासिब मुआवज़ा देगा। वह मुख़ालिफ़ों
पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करेगा और दुश्मनों से बदला
लेगा बल्कि जज़ीरों को भी उन की हरकतों का अज्र
देगा। 19 तब इन्सान मग़रिब में रब के नाम का ख़ौफ़
मानेंगे और मशरिक़ में उसे जलाल देंगे। क्यूँकि वह
रब की फूँक से चलाए हुए ज़ोरदार सैलाब की तरह
उन पर टूट पड़ेगा।

20 रब फ़रमाता है, "छुड़ाने वाला कोह-ए-सिय्यून
पर आएगा। वह याक़ूब के उन फ़र्ज़न्दों के पास
आएगा जो अपने गुनाहों को छोड़ कर वापस
आएँगे।"

21 रब फ़रमाता है, "जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, उन
के साथ मेरा यह अह्द है : मेरा रूह जो तुझ पर ठहरा
हुआ है और मेरे अल्फ़ाज़ जो मैं ने तेरे मुँह में डाले हैं
वह अब से अबद तक न तेरे मुँह से, न तेरी औलाद
के मुँह से और न तेरी औलाद की औलाद से हटेंगे।"
यह रब का फ़रमान है।

अक़्वाम यरूशलम के नूर के पास आएँगी

60 1 "उठ, खड़ी हो कर चमक उठ! क्यूँकि
तेरा नूर आ गया है, और रब का जलाल तुझ
पर तुलू हुआ है। 2 क्यूँकि गो ज़मीन पर तारीकी छाई
हुई है और अक़्वाम घने अंधेरे में रहती हैं, लेकिन तुझ
पर रब का नूर तुलू हो रहा है, और उस का जलाल
तुझ पर ज़ाहिर हो रहा है। 3 अक़्वाम तेरे नूर के पास
और बादशाह उस चमकती दमकती रौशनी के पास
आएँगे जो तुझ पर तुलू होगी।

4 अपनी नज़र उठा कर चारों तरफ़ देख! सब के
सब जमा हो कर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे बेटे दूर दूर
से पहुँच रहे हैं, और तेरी बेटियों को गोद में उठा कर
क़रीब लाया जा रहा है। 5 उस वक़्त तू यह देख कर
चमक उठेगी। तेरा दिल ख़ुशी के मारे तेज़ी से धड़कने
लगेगा और कुशादा हो जाएगा। क्यूँकि समुन्दर के
ख़ज़ाने तेरे पास लाए जाएंगे, अक़्वाम की दौलत
तेरे पास पहुँचेगी। 6 ऊँटों का ग़ोल बल्कि मिदियान
और ऐफ़ा के जवान ऊँट तेरे मुल्क को ढाँप देंगे।
वह सोने और बख़ूर से लदे हुए और रब की हम्द-
ओ-सना करते हुए मुल्क-ए-सबा से आएँगे। 7 क़ीदार
की तमाम भेड़-बकरियाँ तेरे हवाले की जाएँगी, और
नबायोत के मेंढे तेरी ख़िदमत के लिए हाज़िर होंगे।
उन्हें मेरी क़ुर्बानगाह पर चढ़ाया जाएगा और मैं उन्हें
पसन्द करूँगा। यूँ मैं अपने जलाल के घर को शान-
ओ-शौकत से आरास्ता करूँगा।

8 यह कौन हैं जो बादलों की तरह और काबुक के
पास वापस आने वाले कबूतरों की मानिन्द उड़ कर
आ रहे हैं? 9 यह तरसीस के ज़बरदस्त बहरी जहाज़ हैं
जो तेरे पास पहुँच रहे हैं। क्यूँकि जज़ीरे मुझ से उम्मीद
रखते हैं। यह जहाज़ तेरे बेटों को उन की सोने-चाँदी
समेत दूरदराज़ इलाक़ों से ले कर आ रहे हैं। यूँ रब
तेरे ख़ुदा के नाम और इस्राईल के क़ुद्दूस की ताज़ीम
होगी जिस ने तुझे शान-ओ-शौकत से नवाज़ा है।

10 परदेसी तेरी दीवारें अज़ सर-ए-नौ तामीर करेंगे,
और उन के बादशाह तेरी ख़िदमत करेंगे। क्यूँकि गो

मैं ने अपने ग़ज़ब में तुझे सज़ा दी, लेकिन अब मैं
अपने फ़ज़्ल से तुझ पर रहम करूँगा। 11 तेरी फ़सील
के दरवाज़े हमेशा खुले रहेंगे। उन्हें न दिन को बन्द
किया जाएगा, न रात को ताकि अक़्वाम का माल-
ओ-दौलत और उन के गिरिफ़्तार किए गए बादशाहों
को शहर के अन्दर लाया जा सके। 12 क्यूँकि जो
क़ौम या सल्तनत तेरी ख़िदमत करने से इन्कार करे
वह बर्बाद हो जाएगी, उसे पूरे तौर पर तबाह किया
जाएगा।

13 लुबनान की शान-ओ-शौकत तेरे सामने हाज़िर
होगी। जूनीपर, सनोबर और सर्व के दरख़्त मिल कर
तेरे पास आएँगे ताकि मेरे मक़्दिस को आरास्ता करें।
यूँ मैं अपने पाँओ की चौकी को जलाल दूँगा। 14 तुझ
पर ज़ुल्म करने वालों के बेटे झुक झुक कर तेरे हुज़ूर
आएँगे, तेरी तह्क़ीर करने वाले तेरे पाँओ के सामने
औंधे मुँह हो जाएंगे। वह तुझे 'रब का शहर' और
'इस्राईल के क़ुद्दूस का सिय्यून' क़रार देंगे। 15 पहले
तुझे तर्क किया गया था, लोग तुझ से नफ़रत रखते
थे, और तुझ में से कोई नहीं गुज़रता था। लेकिन अब
मैं तुझे अबदी फ़ख़र का बाइस बना दूँगा, और तमाम
नस्लें तुझे देख कर ख़ुश होंगी।

16 तू अक़्वाम का दूध पिएगी, और बादशाह तुझे
दूध पिलाएँगे। तब तू जान लेगी कि मैं रब तेरा
नजातदहिन्दा हूँ, कि मैं जो याक़ूब का ज़बरदस्त
सूरमा हूँ तेरा छुड़ाने वाला हूँ।

17 मैं तेरे पीतल को सोने में, तेरे लोहे को चाँदी में,
तेरी लकड़ी को पीतल में और तेरे पत्थर को लोहे में
बदलूँगा। मैं सलामती को तेरी मुहाफ़िज़ और रास्ती
को तेरी निगरान बनाऊँगा। 18 अब से तेरे मुल्क में न
तशद्दुद का ज़िक्र होगा, न बर्बादी-ओ-तबाही का।
अब से तेरी चारदीवारी 'नजात' और तेरे दरवाज़े
'हम्द-ओ-सना' कहलाएँगे।

19 आइन्दा तुझे न दिन के वक़्त सूरज, न रात के
वक़्त चाँद की ज़रूरत होगी, क्यूँकि रब ही तेरी
अबदी रौशनी होगा, तेरा ख़ुदा ही तेरी आब-ओ-ताब
होगा। 20 आइन्दा तेरा सूरज कभी ग़ुरूब नहीं होगा,
तेरा चाँद कभी नहीं घटेगा। क्यूँकि रब तेरा अबदी
नूर होगा, और मातम के तेरे दिन ख़त्म हो जाएंगे।

21 तब तेरी क़ौम के तमाम अफ़राद रास्तबाज़ होंगे,
और मुल्क हमेशा तक उन की मिलकियत रहेगा।
क्यूँकि वह मेरे हाथ से लगाई हुई पनीरी होंगे, मेरे हाथ
का काम जिस से मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।
22 तब सब से छोटे ख़ानदान की तादाद बढ़ कर
हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल होगी, सब से कमज़ोर
कुम्बा ताक़तवर क़ौम बनेगा। मुक़र्ररा वक़्त पर मैं,
रब यह सब कुछ तेज़ी से अन्जाम दूँगा।"

मातम का वक़्त ख़त्म है

61 1 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का रूह मुझ पर
है, क्यूँकि रब ने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़तियार दिया
है। उस ने मुझे शिकस्तादिलों की मर्हम-पट्टी करने
के लिए और यह एलान करने के लिए भेजा है कि
क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और ज़न्जीरों में जकड़े हुए
आज़ाद हो जाएंगे, 2 कि बहाली का साल और हमारे
ख़ुदा के इन्तिक़ाम का दिन आ गया है। उस ने मुझे
भेजा है कि मैं तमाम मातम करने वालों को तसल्ली दूँ
3 और सिय्यून के सोगवारों को दिलासा दे कर राख
के बजाय शानदार ताज, मातम के बजाय ख़ुशी का
तेल और शिकस्ता रूह के बजाय हम्द-ओ-सना का
लिबास मुहय्या करूँ।

तब वह 'रास्ती के दरख़्त' कहलाएँगे, ऐसे पौदे जो
रब ने अपना जलाल ज़ाहिर करने के लिए लगाए हैं।
4 वह क़दीम खंडरात को अज़ सर-ए-नौ तामीर करके
देर से बर्बाद हुए मक़ामों को बहाल करेंगे। वह उन
तबाहशुदा शहरों को दुबारा क़ाइम करेंगे जो नस्ल-
दर-नस्ल वीरान-ओ-सुन्सान रहे हैं। 5 ग़ैरमुल्की खड़े
हो कर तुम्हारी भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करेंगे,
परदेसी तुम्हारे खेतों और बाग़ों में काम करेंगे। 6 उस
वक़्त तुम 'रब के इमाम' कहलाओगे, लोग तुम्हें
'हमारे ख़ुदा के ख़ादिम' क़रार देंगे।

तुम अक़्वाम की दौलत से लुत्फ़अन्दोज़ होगे,
उन की शान-ओ-शौकत अपना कर उस पर फ़ख़र
करोगे। 7 तुम्हारी शर्मिन्दगी नहीं रहेगी बल्कि तुम
इज़्ज़त का दुगना हिस्सा पाओगे, तुम्हारी रुस्वाई नहीं
रहेगी बल्कि तुम शानदार हिस्सा मिलने के बाइस
शादियाना बजाओगे। क्यूँकि तुम्हें वतन में दुगना
हिस्सा मिलेगा, और अबदी ख़ुशी तुम्हारी मीरास
होगी।

8 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मुझे इन्साफ़ पसन्द है। मैं
ग़ारतगरी और कजरवी से नफ़रत रखता हूँ। मैं अपने
लोगों को वफ़ादारी से उन का अज्र दूँगा, मैं उन के
साथ अबदी अह्द बांधूँगा। 9 उन की नस्ल अक़्वाम
में और उन की औलाद दीगर उम्मतों में मश्हूर होगी।
जो भी उन्हें देखे वह जान लेगा कि रब ने उन्हें बरकत
दी है।"

10 मैं रब से निहायत ही शादमान हूँ, मेरी जान अपने
ख़ुदा की तारीफ़ में ख़ुशी के गीत गाती है। क्यूँकि
जिस तरह दूल्हा अपना सर इमाम की सी पगड़ी से
सजाता और दुल्हन अपने आप को अपने ज़ेवरात से
आरास्ता करती है उसी तरह अल्लाह ने मुझे नजात
का लिबास पहना कर रास्ती की चादर में लपेटा
है। 11 क्यूँकि जिस तरह ज़मीन अपनी हरियाली को
निकलने देती और बाग़ अपने बीजों को फूटने देता है
उसी तरह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ अक़्वाम के सामने
अपनी रास्ती और सताइश फूटने देगा।

यरूशलम की बहाली

62 1 सिय्यून की ख़ातिर मैं ख़ामोश नहीं रहूँगा,
यरूशलम की ख़ातिर तब तक आराम नहीं
करूँगा जब तक उस की रास्ती तुलू-ए-सुब्ह की तरह
न चमके और उस की नजात मशअल की तरह न
भड़के।

2 अक़्वाम तेरी रास्ती देखेंगी, तमाम बादशाह तेरी
शान-ओ-शौकत का मुशाहदा करेंगे। उस वक़्त तुझे
नया नाम मिलेगा, ऐसा नाम जो रब का अपना मुँह
मुतअय्यिन करेगा। 3 तू रब के हाथ में शानदार ताज
और अपने ख़ुदा के हाथ में शाही कुलाह होगी।
4 आइन्दा लोग तुझे न कभी 'मतरूका' न तेरे मुल्क
को 'वीरान-ओ-सुन्सान' क़रार देंगे बल्कि तू मेरा
लुत्फ़ और तेरा मुल्क ब्याही कहलाएगा। क्यूँकि रब
तुझ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा, और तेरा मुल्क शादीशुदा
होगा। 5 जिस तरह जवान आदमी कुंवारी से शादी
करता है उसी तरह तेरे फ़र्ज़न्द तुझे ब्याह लेंगे। और
जिस तरह दूल्हा दुल्हन के बाइस ख़ुशी मनाता है उसी
तरह तेरा ख़ुदा तेरे सबब से ख़ुशी मनाएगा।

6 ऐ यरूशलम, मैं ने तेरी फ़सील पर पहरेदार लगाए
हैं जो दिन रात आवाज़ दें। उन्हें एक लम्हे के लिए
भी ख़ामोश रहने की इजाज़त नहीं है। ऐ रब को याद
दिलाने वालो, उस वक़्त तक न ख़ुद आराम करो,
7 न रब को आराम करने दो जब तक वह यरूशलम
को अज़ सर-ए-नौ क़ाइम न कर ले। जब पूरी दुनिया
शहर की तारीफ़ करेगी तब ही तुम सुकून का साँस
ले सकते हो। 8 रब ने अपने दाएँ हाथ और ज़ोरावर
बाज़ू की क़सम खा कर वादा किया है, "आइन्दा न मैं
तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों को खिलाऊँगा, न बड़ी मेहनत
से बनाई गई तेरी मै को अजनबियों को पिलाऊँगा।
9 क्यूँकि आइन्दा फ़सल की कटाई करने वाले ही रब
की सताइश करते हुए उसे खाएँगे, और अंगूर चुनने
वाले ही मेरे मक़्दिस के सहनों में आ कर उन का रस
पिएँगे।"

10 दाख़िल हो जाओ, शहर के दरवाज़ों में दाख़िल
हो जाओ! क़ौम के लिए रास्ता तय्यार करो! रास्ता
बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे पत्थरों से साफ़ करो!
तमाम अक़्वाम के ऊपर झंडा गाड़ दो!

11 क्यूँकि रब ने दुनिया की इन्तिहा तक एलान
किया है, "सिय्यून बेटी को बताओ कि देख, तेरी
नजात आने वाली है। देख, उस का अज्र उस के पास
है, उस का इनआम उस के आगे आगे चल रहा है।"
12 तब वह 'मुक़द्दस क़ौम' और 'वह क़ौम जिसे रब ने
इवज़ाना दे कर छुड़ाया है' कहलाएँगे। ऐ यरूशलम
बेटी, तू 'मर्ग़ूब' और 'ग़ैरमतरूका शहर' कहलाएगी।

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

63 1 यह कौन है जो अदोम से आ रहा है, जो
सुर्ख़ सुर्ख़ कपड़े पहने बुस्रा शहर से पहुँच
रहा है? यह कौन है जो रोब से मुलब्बस बड़ी ताक़त
के साथ आगे बढ़ रहा है? "मैं ही हूँ, वह जो इन्साफ़
से बोलता, जो बड़ी क़ुदरत से तुझे बचाता है।"
2 तेरे कपड़े क्यूँ इतने लाल हैं? लगता है कि तेरा
लिबास हौज़ में अंगूर कुचलने से सुर्ख़ हो गया है।
3 "मैं अंगूरों को अकेला ही कुचलता रहा हूँ,
अक़्वाम में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैं ने ग़ुस्से
में आ कर उन्हें कुचला, तैश में उन्हें रौंदा। उन के
ख़ून की छींटें मेरे कपड़ों पर पड़ गईं, मेरा सारा
लिबास आलूदा हुआ। 4 क्यूँकि मेरा दिल इन्तिक़ाम
लेने पर तुला हुआ था, अपनी क़ौम का इवज़ाना देने
का साल आ गया था। 5 मैं ने अपने इर्दगिर्द नज़र
दौड़ाई, लेकिन कोई नहीं था जो मेरी मदद करता। मैं
हैरान था कि किसी ने भी मेरा साथ न दिया। चुनाँचे
मेरे अपने बाज़ू ने मेरी मदद की, और मेरे तैश ने मुझे
सहारा दिया। 6 ग़ुस्से में आ कर मैं ने अक़्वाम को
पामाल किया, तैश में उन्हें मदहोश करके उन का
ख़ून ज़मीन पर गिरा दिया।"

रब की तम्जीद

7 मैं रब की मेहरबानियाँ सुनाऊँगा, उस के क़ाबिल-
ए-तारीफ़ कामों की तम्जीद करूँगा। जो कुछ रब
ने हमारे लिए किया, जो मुतअद्दिद भलाइयाँ उस ने
अपने रहम और बड़े फ़ज़्ल से इस्राईल को दिखाई हैं
उन की सताइश करूँगा।
8 उस ने फ़रमाया, "यक़ीनन यह मेरी क़ौम के हैं,
ऐसे फ़र्ज़न्द जो बेवफ़ा नहीं होंगे।" यह कह कर वह
उन का नजातदहिन्दा बन गया, 9 वह उन की तमाम
मुसीबत में शरीक हुआ, और उस के हुज़ूर के फ़रिश्ते
ने उन्हें छुटकारा दिया। वह उन्हें प्यार करता, उन पर
तरस खाता था, इस लिए उस ने इवज़ाना दे कर उन्हें
छुड़ाया। हाँ, क़दीम ज़माने से आज तक वह उन्हें
उठाए फिरता रहा।
10 लेकिन वह सरकश हुए, उन्हों ने उस के क़ुद्दूस
रूह को दुख पहुँचाया। तब वह मुड़ कर उन का
दुश्मन बन गया। ख़ुद वह उन से लड़ने लगा।
11 फिर उस की क़ौम को वह क़दीम ज़माना याद
आया जब मूसा अपनी क़ौम के दरमियान था, और
वह पुकार उठे, "वह कहाँ है जो अपनी भेड़-बकरियों
को उन के गल्लाबानों समेत समुन्दर में से निकाल
लाया? वह कहाँ है जिस ने अपने रूह-उल-क़ुद्स को
उन के दरमियान नाज़िल किया, 12 जिस की जलाली
क़ुदरत मूसा के दाएँ हाथ हाज़िर रही ताकि उस को
सहारा दे? वह कहाँ है जिस ने पानी को इस्राईलियों
के सामने तक़्सीम करके अपने लिए अबदी शुहरत
पैदा की 13 और उन्हें गहराइयों में से गुज़रने दिया?
उस वक़्त वह खुले मैदान में चलने वाले घोड़े की
तरह आराम से गुज़रे और कहीं भी ठोकर न खाई।
14 जिस तरह गाय-बैल आराम के लिए वादी में उतरते
हैं उसी तरह उन्हें रब के रूह से आराम और सुकून
हासिल हुआ।"
इसी तरह तू ने अपनी क़ौम की राहनुमाई की ताकि
तेरे नाम को जलाल मिले।

तौबा की दुआ

15 ऐ अल्लाह, आसमान से हम पर नज़र डाल,
बुलन्दियों पर अपनी मुक़द्दस और शानदार
सुकूनतगाह से देख! इस वक़्त तेरी ग़ैरत और क़ुदरत
कहाँ है? हम तेरी नर्मी और मेहरबानियों से महरूम
रह गए हैं! 16 तू तो हमारा बाप है। क्यूँकि इब्राहीम
हमें नहीं जानता और इस्राईल हमें नहीं पहचानता,
लेकिन तू, रब हमारा बाप है, क़दीम ज़माने से ही
तेरा नाम 'हमारा छुड़ाने वाला' है। 17 ऐ रब, तू हमें
अपनी राहों से क्यूँ भटकने देता है? तू ने हमारे दिलों
को इतना सख़्त क्यूँ कर दिया कि हम तेरा ख़ौफ़
नहीं मान सकते? हमारी ख़ातिर वापस आ! क्यूँकि
हम तेरे ख़ादिम, तेरी मौरूसी मिलकियत के क़बीले

हैं। 18 तेरा मक़्दिस थोड़ी ही देर के लिए तेरी क़ौम
की मिलकियत रहा, लेकिन अब हमारे मुख़ालिफ़ों
ने उसे पाँओ तले रौंद डाला है। 19 लगता है कि हम
कभी तेरी हुकूमत के तहत नहीं रहे, कि हम पर कभी
तेरे नाम का ठप्पा नहीं लगा था।

64 1 काश तू आसमान को फाड़ कर उतर
आए, कि पहाड़ तेरे सामने थरथराएँ।
2 काश तू डालियों को भड़का देने वाली आग या
पानी को एक दम उबालने वाली आतिश की तरह
नाज़िल हो ताकि तेरे दुश्मन तेरा नाम जान लें और
क़ौमें तेरे सामने लरज़ उठें! 3 क्यूँकि क़दीम ज़माने
में जब तू ख़ौफ़नाक और ग़ैरमुतवक़्क़े काम किया
करता था तो यूँ ही नाज़िल हुआ, और पहाड़ यूँ ही
तेरे सामने काँपने लगे। 4 क़दीम ज़माने से ही किसी
ने तेरे सिवा किसी और ख़ुदा को न देखा न सुना है।
सिर्फ़ तू ही ऐसा ख़ुदा है जो उन की मदद करता है
जो तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं।

5 तू उन से मिलता है जो ख़ुशी से रास्त काम
करते, जो तेरी राहों पर चलते हुए तुझे याद करते
हैं! अफ़्सोस, तू हम से नाराज़ हुआ, क्यूँकि हम शुरू
से तेरा गुनाह करके तुझ से बेवफ़ा रहे हैं। तो फिर
हम किस तरह बच जाएंगे? 6 हम सब नापाक हो गए
हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त काम गन्दे चीथड़ों
की मानिन्द हैं। हम सब पत्तों की तरह मुरझा गए हैं,
और हमारे गुनाह हमें हवा के झोंकों की तरह उड़ा
कर ले जा रहे हैं।

7 कोई नहीं जो तेरा नाम पुकारे या तुझ से लिपटने
की कोशिश करे। क्यूँकि तू ने अपना चिहरा हम से
छुपा कर हमें हमारे क़ुसूरों के हवाले छोड़ दिया है।

8 ऐ रब, ताहम तू ही हमारा बाप, हमारा कुम्हार है।
हम सब मिट्टी ही हैं जिसे तेरे हाथ ने तश्कील दिया है।
9 ऐ रब, हद से ज़्यादा हम से नाराज़ न हो! हमारे गुनाह
तुझे हमेशा तक याद न रहें। ज़रा इस का लिहाज़ कर
कि हम सब तेरी क़ौम हैं। 10 तेरे मुक़द्दस शहर वीरान
हो गए हैं, यहाँ तक कि सिय्यून भी बयाबान ही है,
यरूशलम वीरान-ओ-सुन्सान है। 11 हमारा मुक़द्दस
और शानदार घर जहाँ हमारे बापदादा तेरी सताइश
करते थे नज़र-ए-आतिश हो गया है, जो कुछ भी हम
अज़ीज़ रखते थे वह खंडर बन गया है।

12 ऐ रब, क्या तू इन वाक़िआत के बावुजूद भी
अपने आप को हम से दूर रखेगा? क्या तू ख़ामोश
रह कर हमें हद से ज़्यादा पस्त होने देगा?।

रब का ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल होगा

65 1 "जो मेरे बारे में दरयाफ़्त नहीं करते थे
उन्हें मैं ने मुझे ढूँडने का मौक़ा दिया। जो
मुझे तलाश नहीं करते थे उन्हें मैं ने मुझे पाने का
मौक़ा दिया। मैं बोला, 'मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ!'
हालाँकि जिस क़ौम से मैं मुख़ातिब हुआ वह मेरा नाम
नहीं पुकारती थी।

2 दिन भर मैं ने अपने हाथ फैलाए रखे ताकि
एक सरकश क़ौम का इस्तिक़्बाल करूँ, हालाँकि
यह लोग ग़लत राह पर चलते और अपने कजरौ
ख़यालात के पीछे पड़े रहते हैं। 3 यह मुतवातिर और
मेरे रू-ब-रू ही मुझे नाराज़ करते हैं। क्यूँकि यह बाग़ों
में क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर ईंटों की क़ुर्बानगाहों पर बख़ूर
जलाते हैं। 4 यह क़ब्रिस्तान में बैठ कर ख़ुफ़िया ग़ारों
में रात गुज़ारते हैं। यह सूअर का गोश्त खाते हैं, उन
की देगों में क़ाबिल-ए-घिन शोरबा होता है। 5 साथ
साथ यह एक दूसरे से कहते हैं, 'मुझ से दूर रहो,
क़रीब मत आना! क्यूँकि मैं तेरी निस्बत कहीं ज़्यादा
मुक़द्दस हूँ।'

इस क़िस्म के लोग मेरी नाक में धुएँ की मानिन्द हैं,
एक आग जो दिन भर जलती रहती है। 6 देखो, यह
बात मेरे सामने ही क़लमबन्द हुई है कि मैं ख़ामोश
नहीं रहूँगा बल्कि पूरा पूरा अज्र दूँगा। मैं उन की झोली
उन के अज्र से भर दूँगा।" 7 रब फ़रमाता है, "उन्हें न
सिर्फ़ उन के अपने गुनाहों की सज़ा मिलेगी बल्कि
बापदादा के गुनाहों की भी। चूँकि उन्हों ने पहाड़ों पर
बख़ूर की क़ुर्बानियाँ चढ़ा कर मेरी तह्क़ीर की इस
लिए मैं उन की झोली उन की हरकतों के मुआवज़े
से भर दूँगा।"

मौत न चुनो बल्कि हयात!

8 रब फ़रमाता है, "जब तक अंगूर में थोड़ा सा रस
बाक़ी हो लोग कहते हैं, 'उसे ज़ाए मत करना, क्यूँकि
अब तक उस में कुछ न कुछ है जो बरकत का बाइस
है।' मैं इस्राईल के साथ भी ऐसा ही करूँगा। क्यूँकि
अपने ख़ादिमों की ख़ातिर मैं सब को नेस्त नहीं
करूँगा। 9 मैं याक़ूब और यहूदाह को ऐसी औलाद
बख़्श दूँगा जो मेरे पहाड़ों को मीरास में पाएगी।
तब पहाड़ मेरे बरगुज़ीदों की मिलकियत होंगे, और
मेरे ख़ादिम उन पर बसेंगे। 10 वादी-ए-शारून में भेड़-
बकरियाँ चरेंगी, वादी-ए-अकूर में गाय-बैल आराम
करेंगे। यह सब कुछ मेरी उस क़ौम को दस्तयाब
होगा जो मेरी तालिब रहेगी।

11 लेकिन तुम जो रब को तर्क करके मेरे मुक़द्दस
पहाड़ को भूल गए हो, ख़बरदार! गो इस वक़्त तुम
ख़ुशक़िसमती के देवता जद के लिए मेज़ बिछाते और
तक़्दीर के देवता मनात के लिए मै का बर्तन भर देते
हो, 12 लेकिन तुम्हारी तक़्दीर और है। मैं ने तुम्हारे
लिए तलवार की तक़्दीर मुक़र्रर की है। तुम सब को
क़साई के सामने झुकना पड़ेगा, क्यूँकि जब मैं ने
तुम्हें बुलाया तो तुम ने जवाब न दिया। जब मैं तुम
से हमकलाम हुआ तो तुम ने न सुना बल्कि वह कुछ
किया जो मुझे बुरा लगा। तुम ने वह कुछ इख़तियार
किया जो मुझे नापसन्द है।"

13 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "मेरे
ख़ादिम खाना खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे। मेरे
ख़ादिम पानी पिएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे। मेरे
ख़ादिम मसरूर होंगे, लेकिन तुम शर्मसार होगे। 14 मेरे
ख़ादिम ख़ुशी के मारे शादियाना बजाएंगे, लेकिन तुम
रंजीदा हो कर रो पड़ोगे, तुम मायूस हो कर वावैला
करोगे। 15 आख़िरकार तुम्हारा नाम ही मेरे बरगुज़ीदों
के पास बाक़ी रहेगा, और वह भी सिर्फ़ लानत के तौर
पर इस्तेमाल होगा। क़सम खाते वक़्त वह कहेंगे,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ तुम्हें इसी तरह क़त्ल करे।'
लेकिन मेरे ख़ादिमों का एक और नाम रखा जाएगा।
16 मुल्क में जो भी अपने लिए बरकत माँगे या क़सम
खाए वह वफ़ादार ख़ुदा का नाम लेगा। क्यूँकि गुज़री
मुसीबतों की यादें मिट जाएँगी, वह मेरी आँखों से
छुप जाएँगी।

नए ज़माने का आग़ाज़

17 क्यूँकि मैं नया आसमान और नई ज़मीन ख़ल्क़
करूँगा। तब गुज़री चीज़ें याद नहीं आएँगी, उन का
ख़याल तक नहीं आएगा।

18 चुनाँचे ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम हो! जो कुछ मैं ख़ल्क़
करूँगा उस की हमेशा तक ख़ुशी मनाओ! क्यूँकि
देखो, मैं यरूशलम को शादमानी का बाइस और उस
के बाशिन्दों को ख़ुशी का सबब बनाऊँगा। 19 मैं ख़ुद
भी यरूशलम की ख़ुशी मनाऊँगा और अपनी क़ौम से
लुत्फ़अन्दोज़ हूँगा।

आइन्दा उस में रोना और वावैला सुनाई नहीं देगा।
20 वहाँ कोई भी पैदाइश के थोड़े दिनों बाद फ़ौत
नहीं होगा, कोई भी वक़्त से पहले नहीं मरेगा। जो
सौ साल का होगा उसे जवान समझा जाएगा, और
जो सौ साल की उम्र से पहले ही फ़ौत हो जाए उसे
मलऊन समझा जाएगा।

21 लोग घर बना कर उन में बसेंगे, वह अंगूर के
बाग़ लगा कर उन का फल खाएँगे। 22 आइन्दा ऐसा
नहीं होगा कि घर बनाने के बाद कोई और उस में
बसे, कि बाग़ लगाने के बाद कोई और उस का
फल खाए। क्यूँकि मेरी क़ौम की उम्र दरख़्तों जैसी
दराज़ होगी, और मेरे बर्गुज़ीदा अपने हाथों के काम
से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे। 23 न उन की मेहनत-मशक़्क़त
रायगाँ जाएगी, न उन के बच्चे अचानक तशद्दुद का
निशाना बन कर मरेंगे। क्यूँकि वह रब की मुबारक
नस्ल होंगे, वह ख़ुद और उन की औलाद भी। 24 इस
से पहले कि वह आवाज़ दें मैं जवाब दूँगा, वह अभी
बोल रहे होंगे कि मैं उन की सुनूँगा।"

25 रब फ़रमाता है, "भेड़िया और लेला मिल कर
चरेंगे, शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और साँप
की ख़ुराक ख़ाक ही होगी। मेरे पूरे मुक़द्दस पहाड़ पर

न ग़लत काम किया जाएगा, न किसी को नुक़्सान पहुँचेगा।”

दो मालिकों की ख़िदमत करना नामुमकिन है

66 1 रब फ़रमाता है, “आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँओ की चौकी, तो फिर
वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे? वह जगह
कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?” 2 रब फ़रमाता
है, “मेरे हाथ ने यह सब कुछ बनाया, तब ही यह
सब कुछ वुजूद में आया। और मैं उसी का ख़याल
रखता हूँ जो मुसीबतज़दा और शिकस्तादिल है, जो
मेरे कलाम के सामने काँपता है।

3 लेकिन बैल को ज़बह करने वाला क़ातिल के
बराबर और लेले को क़ुर्बान करने वाला कुत्ते की
गर्दन तोड़ने वाले के बराबर है। ग़ल्ला की नज़र पेश
करने वाला सूअर का ख़ून चढ़ाने वाले से बेहतर
नहीं, और बख़ूर जलाने वाला बुतपरस्त की मानिन्द
है। इन लोगों ने अपनी ग़लत राहों को इख़तियार
किया है, और इन की जान अपनी घिनौनी चीज़ों
से लुत्फ़अन्दोज़ होती है। 4 जवाब में मैं भी उन से
बदसुलूकी की राह इख़तियार करूँगा, मैं उन पर वह
कुछ नाज़िल करूँगा जिस से वह दहशत खाते हैं।
क्यूँकि जब मैं ने उन्हें आवाज़ दी तो किसी ने जवाब
न दिया, जब मैं बोला तो उन्हों ने न सुना बल्कि वही
कुछ करते रहे जो मुझे बुरा लगा, वही करने पर तुले
रहे जो मुझे नापसन्द है।”

यरूशलम के साथ ख़ुशी मनाओ

5 ऐ रब के कलाम के सामने लरज़ने वालो, उस का
फ़रमान सुनो! “तुम्हारे अपने भाई तुम से नफ़रत करते
और मेरे नाम के बाइस तुम्हें रद्द करते हैं। वह मज़ाक़
उड़ा कर कहते हैं, ‘रब अपने जलाल का इज़हार
करे ताकि हम तुम्हारी ख़ुशी का मुशाहदा कर सकें।’
लेकिन वह शर्मिन्दा हो जाएंगे।

6 सुनो! शहर में शोर-ओ-ग़ौग़ा हो रहा है। सुनो! रब
के घर से हलचल की आवाज़ सुनाई दे रही है। सुनो!
रब अपने दुश्मनों को उन की मुनासिब सज़ा दे रहा
है।

7 दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला होने से पहले ही यरूशलम
ने बच्चा जन्म दिया, ज़च्चगी की ईज़ा से पहले ही उस
के बेटा पैदा हुआ। 8 किस ने कभी ऐसी बात सुनी
है? किस ने कभी इस क़िस्म का मुआमला देखा है?
क्या कोई मुल्क एक ही दिन के अन्दर अन्दर पैदा
हो सकता है? क्या कोई क़ौम एक ही लम्हे में जन्म
ले सकती है? लेकिन सिय्यून के साथ ऐसा ही हुआ
है। दर्द-ए-ज़ह अभी शुरू ही होना था कि उस के बच्चे
पैदा हुए।” 9 रब फ़रमाता है, “क्या मैं बच्चे को यहाँ
तक लाऊँ कि वह माँ के पेट से निकलने वाला हो
और फिर उसे जन्म लेने न दूँ? हरगिज़ नहीं!” तेरा
ख़ुदा फ़रमाता है, “क्या मैं जो बच्चे को पैदा होने देता
हूँ बच्चे को रोक दूँ? कभी नहीं!”

10 “ऐ यरूशलम को प्यार करने वालो, सब उस के
साथ ख़ुशी मनाओ! ऐ शहर पर मातम करने वालो,
सब उस के साथ शादियाना बजाओ! 11 क्यूँकि
अब तुम उस की तसल्ली दिलाने वाली छाती से
जी भर कर दूध पियोगे, तुम उस के शानदार दूध
की कस्रत से लुत्फ़अन्दोज़ होगे।” 12 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, “मैं यरूशलम में सलामती का दरया
बहने दूँगा और उस पर अक़्वाम की शान-ओ-शौकत
का सैलाब आने दूँगा। तब वह तुम्हें अपना दूध
पिला कर उठाए फिरेगी, तुम्हें गोद में बिठा कर प्यार
करेगी। 13 मैं तुम्हें माँ की सी तसल्ली दूँगा, और तुम
यरूशलम को देख कर तसल्ली पाओगे। 14 इन बातों
का मुशाहदा करके तुम्हारा दिल ख़ुश होगा और तुम
ताज़ा हरियाली की तरह फलो फूलोगे।”

उस वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा कि रब का हाथ उस
के ख़ादिमों के साथ है जबकि उस के दुश्मन उस
के ग़ज़ब का निशाना बनेंगे। 15 रब आग की सूरत में
आ रहा है, आँधी जैसे रथों के साथ नाज़िल हो रहा
है ताकि दहकते कोएलों से अपना ग़ुस्सा ठंडा करे
और शोलाअफ़्शाँ आग से मलामत करे। 16 क्यूँकि
रब आग और अपनी तलवार के ज़रीए तमाम इन्सानों

की अदालत करके अपने हाथ से मुतअद्दिद लोगों
को हलाक करेगा।
17 रब फ़रमाता है, “जो अपने आप को बुतों के
बाग़ों के लिए मख़्सूस और पाक-साफ़ करते हैं और
दरमियान के राहनुमा की पैरवी करके सूअर, चूहे
और दीगर घिनौनी चीज़ें खाते हैं वह मिल कर हलाक
हो जाएंगे।

दीगर अक़्वाम भी रब की परस्तिश करेंगी

18 चुनाँचे मैं जो उन के आमाल और ख़यालात से
वाक़िफ़ हूँ तमाम अक़्वाम और अलग अलग ज़बानें
बोलने वालों को जमा करने के लिए नाज़िल हो रहा
हूँ। तब वह आ कर मेरे जलाल का मुशाहदा करेंगे।
19 मैं उन के दरमियान इलाही निशान क़ाइम करके
बचे हुओं में से कुछ दीगर अक़्वाम के पास भेज
दूँगा। वह तरसीस, लिबिया, तीर चलाने की माहिर
क़ौम लुदिया, तूबल, यूनान और उन दूरदराज़ जज़ीरों
के पास जाएंगे जिन्हों ने न मेरे बारे में सुना, न मेरे
जलाल का मुशाहदा किया है। इन अक़्वाम में वह
मेरे जलाल का एलान करेंगे।
20 फिर वह तमाम अक़्वाम में रहने वाले तुम्हारे
भाइयों को घोड़ों, रथों, गाड़ियों, ख़च्चरों और ऊँटों
पर सवार करके यरूशलम ले आएँगे। यहाँ मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर वह उन्हें ग़ल्ला की नज़र के तौर
पर पेश करेंगे। क्यूँकि रब फ़रमाता है कि जिस तरह
इस्राईली अपनी ग़ल्ला की नज़रें पाक बर्तनों में रख
कर रब के घर में ले आते हैं उसी तरह वह तुम्हारे
इस्राईली भाइयों को यहाँ पेश करेंगे। 21 उन में से मैं
बाज़ को इमाम और लावी का उह्दा दूँगा।” यह रब
का फ़रमान है।
22 रब फ़रमाता है, “जितने यक़ीन के साथ मेरा
बनाया हुआ नया आसमान और नई ज़मीन मेरे सामने
क़ाइम रहेगा उतने यक़ीन के साथ तुम्हारी नस्ल और
तुम्हारा नाम अबद तक क़ाइम रहेगा। 23 उस वक़्त
तमाम इन्सान मेरे पास आ कर मुझे सिज्दा करेंगे। हर
नए चाँद और हर सबत को वह बाक़ाइदगी से आते
रहेंगे।” यह रब का फ़रमान है। 24 “तब वह शहर से
निकल कर उन की लाशों पर नज़र डालेंगे जो मुझ
से सरकश हुए थे। क्यूँकि न उन्हें खाने वाले कीड़े
कभी मरेंगे, न उन्हें जलाने वाली आग कभी बुझेगी।
तमाम इन्सान उन से घिन खाएँगे।”

यरमियाह

रब का नबी यरमियाह

1 1 ज़ैल में यरमियाह बिन ख़िलक़ियाह के
पैग़ामात क़लमबन्द किए गए हैं। (बिनयमीन
के क़बाइली इलाक़े के शहर अनतोत में कुछ इमाम
रहते थे, और यरमियाह का वालिद उन में से था)।
2 रब का फ़रमान पहली बार यहूदाह के बादशाह
यूसियाह बिन अमून की हुकूमत के 13वें साल में
यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 3 और यरमियाह को यह
पैग़ामात यहूयक़ीम बिन यूसियाह के दौर-ए-हुकूमत
से ले कर सिदक़ियाह बिन यूसियाह की हुकूमत के
11वें साल के पाँचवें महीने [v]तक मिलते रहे। उस
वक़्त यरूशलम के बाशिन्दों को जिलावतन कर
दिया गया।

यरमियाह की बुलाहट

4 एक दिन रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
5 "मैं तुझे माँ के पेट में तश्कील देने से पहले ही
जानता था, तेरी पैदाइश से पहले ही मैं ने तुझे मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करके अक़्वाम के लिए नबी मुक़र्रर
किया।"
6 मैं ने एतिराज़ किया, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़,
अफ़्सोस! मैं तेरा कलाम सुनाने का सहीह इल्म नहीं
रखता, मैं तो बच्चा ही हूँ।" 7 लेकिन रब ने मुझ से
फ़रमाया, "मत कह 'मैं बच्चा ही हूँ।' क्यूँकि जिन के
पास भी मैं तुझे भेजूँगा उन के पास तू जाएगा, और
जो कुछ भी मैं तुझे सुनाने को कहूँगा उसे तू सुनाएगा।
8 लोगों से मत डरना, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तुझे
बचाए रखूँगा।" यह रब का फ़रमान है।
9 फिर रब ने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे होंटों को छू
दिया और फ़रमाया, "देख, मैं ने अपने अल्फ़ाज़ को
तेरे मुँह में डाल दिया है। 10 आज मैं तुझे क़ौमों और
सल्तनतों पर मुक़र्रर कर देता हूँ। कहीं तुझे उन्हें जड़
से उखाड़ कर गिरा देना, कहीं बर्बाद करके ढा देना
और कहीं तामीर करके पौदे की तरह लगा देना है।"

बादाम की शाख़ और उबलती देग की रोया

11 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, "ऐ
यरमियाह, तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैं ने जवाब
दिया, "बादाम की एक शाख़, उस दरख़्त की जो
'देखने वाला' कहलाता है।" 12 रब ने फ़रमाया, "तू
ने सहीह देखा है। इस का मतलब है कि मैं अपने
कलाम की देख-भाल कर रहा हूँ, मैं ध्यान दे रहा हूँ
कि वह पूरा हो जाए।"
13 फिर रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ,
"तुझे क्या नज़र आ रहा है?" मैं ने जवाब दिया,
"शिमाल में देग दिखाई दे रही है। जो कुछ उस में
है वह उबल रहा है, और उस का मुँह हमारी तरफ़
झुका हुआ है।" 14 तब रब ने मुझ से कहा, "इसी
तरह शिमाल से मुल्क के तमाम बाशिन्दों पर आफ़त
टूट पड़ेगी।" 15 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मैं शिमाली
ममालिक के तमाम घरानों को बुला लूँगा, और हर
एक आ कर अपना तख़्त यरूशलम के दरवाज़ों के
सामने ही खड़ा करेगा। हाँ, वह उस की पूरी फ़सील
को घेर कर उस पर बल्कि यहूदाह के तमाम शहरों पर
छापा मारेंगे। 16 यूँ मैं अपनी क़ौम पर फ़ैसले सादिर
करके उन के ग़लत कामों की सज़ा दूँगा। क्यूँकि
उन्हों ने मुझे तर्क करके अजनबी माबूदों के लिए

---

[v]जुलाई ता अगस्त।

बख़ूर जलाया और अपने हाथों से बने हुए बुतों को
सिज्दा किया है।
17 चुनाँचे कमरबस्ता हो जा! उठ कर उन्हें सब
कुछ सुना दे जो मैं फ़रमाऊँगा। उन से दहशत मत
खाना, वर्ना मैं तुझे उन के सामने ही दहशतज़दा कर
दूँगा। 18 देख, आज मैं ने तुझे क़िलाबन्द शहर, लोहे
के सतून और पीतल की चारदीवारी जैसा मज़बूत
बना दिया है ताकि तू पूरे मुल्क का सामना कर सके,
ख़्वाह यहूदाह के बादशाह, अफ़सर, इमाम या अवाम
तुझ पर हम्ला क्यूँ न करें। 19 तुझ से लड़ने के बावुजूद
वह तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्यूँकि मैं तेरे साथ
हूँ, मैं ही तुझे बचाए रखूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

अल्लाह की जवान इस्राईल के लिए फ़िक्र

2 1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "जा,
ज़ोर से यरूशलम के कान में पुकार कि रब
फ़रमाता है, 'मुझे तेरी जवानी की वफ़ादारी ख़ूब याद
है। जब तेरी शादी क़रीब आई तो तू मुझे कितना
प्यार करती थी, यहाँ तक कि तू रेगिस्तान में भी जहाँ
खेतीबाड़ी नामुमकिन थी मेरे पीछे पीछे चलती रही।
3 उस वक़्त इस्राईल रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
था, वह उस की फ़सल का पहला फल था। जिस ने
भी उस में से कुछ खाया वह मुजरिम ठहरा, और उस
पर आफ़त नाज़िल हुई। यह रब का फ़रमान है'।"

इस्राईल के बापदादा के गुनाह

4 ऐ याक़ूब की औलाद, रब का कलाम सुनो! ऐ
इस्राईल के तमाम घरानो, ध्यान दो! 5 रब फ़रमाता
है, "तुम्हारे बापदादा ने मुझ में कौन सी नाइन्साफ़ी
पाई कि मुझ से इतने दूर हो गए? हेच बुतों के पीछे
हो कर वह ख़ुद हेच हो गए। 6 उन्हों ने पूछा तक
नहीं कि रब कहाँ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया
और रेगिस्तान में सहीह राह दिखाई, गो वह इलाक़ा
वीरान-ओ-सुन्सान था। हर तरफ़ घाटियों, पानी की
सख़्त कमी और तारीकी का सामना करना पड़ा।
न कोई उस में से गुज़रता, न कोई वहाँ रहता है।
7 मैं तो तुम्हें बाग़ों से भरे मुल्क में लाया ताकि तुम
उस के फल और अच्छी पैदावार से लुत्फ़अन्दोज़
हो सको। लेकिन तुम ने क्या किया? मेरे मुल्क में
दाख़िल होते ही तुम ने उसे नापाक कर दिया, और
मैं अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन खाने लगा। 8 न
इमामों ने पूछा कि रब कहाँ है, न शरीअत को अमल
में लाने वाले मुझे जानते थे। क़ौम के गल्लाबान मुझ
से बेवफ़ा हुए, और नबी बेफ़ाइदा बुतों के पीछे लग
कर बाल देवता के पैग़ामात सुनाने लगे।"

रब का अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा

9 रब फ़रमाता है, "इसी वजह से मैं आइन्दा भी
अदालत में तुम्हारे साथ लड़ूँगा। हाँ, न सिर्फ़ तुम्हारे
साथ बल्कि तुम्हारी आने वाली नस्लों के साथ भी।
10 जाओ, समुन्दर को पार करके जज़ीरा-ए-क़ुब्रुस की
तफ़्तीश करो! अपने क़ासिदों को मुल्क-ए-क़ीदार में
भेज कर ग़ौर से दरयाफ़्त करो कि क्या वहाँ कभी
यहाँ का सा काम हुआ है? 11 क्या किसी क़ौम ने
कभी अपने देवताओं को तब्दील किया, गो वह
हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं? हरगिज़ नहीं! लेकिन
मेरी क़ौम अपनी शान-ओ-शौकत के ख़ुदा को छोड़
कर बेफ़ाइदा बुतों की पूजा करने लगी है।" 12 रब
फ़रमाता है, "ऐ आसमान, यह देख कर हैबतज़दा
हो जा, तेरे रोंगटे खड़े हो जाएँ, हक्का-बक्का रह जा!
13 क्यूँकि मेरी क़ौम से दो संगीन जुर्म सरज़द हुए हैं।
एक, उन्हों ने मुझे तर्क किया, गो मैं ज़िन्दगी के पानी
का सरचश्मा हूँ। दूसरे, उन्हों ने अपने ज़ाती हौज़
बनाए हैं जो दराड़ों की वजह से भर ही नहीं सकते।

इस्राईल की बेवफ़ाई के नताइज

14 क्या इस्राईल इब्तिदा से ही ग़ुलाम है? क्या उस
के वालिदैन ग़ुलाम थे कि वह अब तक ग़ुलाम है?
हरगिज़ नहीं! तो फिर वह क्यूँ दूसरों का लूटा हुआ
माल बन गया है? 15 जवान शेरबबर दहाड़ते हुए
उस पर टूट पड़े हैं, गरजते गरजते उन्हों ने मुल्क-ए-
इस्राईल को बर्बाद कर दिया है। उस के शहर नज़र-ए-

आतिश हो कर वीरान-ओ-सुन्सान हो गए हैं। 16 साथ
साथ मेम्फ़िस और तह्फ़न्हीस के लोग भी तेरे सर को
मुंडवा रहे हैं।

17 ऐ इस्राईली क़ौम, क्या यह तेरे ग़लत काम का
नतीजा नहीं? क्यूँकि तू ने रब अपने ख़ुदा को उस
वक़्त तर्क किया जब वह तेरी राहनुमाई कर रहा था।
18 अब मुझे बता कि मिस्र को जा कर दरया-ए-नील
का पानी पीने का क्या फ़ाइदा? मुल्क-ए-असूर में जा
कर दरया-ए-फ़ुरात का पानी पीने से क्या हासिल?
19 तेरा ग़लत काम तुझे सज़ा दे रहा है, तेरी बेवफ़ा
हरकतें ही तेरी सरज़निश कर रही हैं। चुनाँचे जान ले
और ध्यान दे कि रब अपने ख़ुदा को छोड़ कर उस
का ख़ौफ़ न मानने का फल कितना बुरा और कड़वा
है।" यह क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।

20 "क्यूँकि शुरू से ही तू अपने जूए और रस्सों को
तोड़ कर कहती रही, 'मैं तेरी ख़िदमत नहीं करूँगी!'
तू हर बुलन्दी पर और हर घने दरख़्त के साय में लेट
कर इस्मतफ़रोशी करती रही। 21 पहले तू अंगूर की
मख़्सूस और क़ाबिल-ए-एतिमाद नस्ल की पनीरी थी
जिसे मैं ने ख़ुद ज़मीन में लगाया। तो यह क्या हुआ
कि तू बिगड़ कर जंगली [w]बेल बन गई? 22 अब तेरे
क़ुसूर का दाग़ उतर नहीं सकता, ख़्वाह तू कितना
खारी सोडा और साबुन क्यूँ न इस्तेमाल करे।" यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

23 "तू किस तरह यह कहने की जुरअत कर सकती
है कि मैं ने अपने आप को आलूदा नहीं किया, मैं
बाल देवताओं के पीछे नहीं गई। वादी में अपनी
हरकतों पर तो ग़ौर कर! जान ले कि तुझ से क्या
कुछ सरज़द हुआ है। तू बेमक़्सद इधर उधर भागने
वाली ऊँटनी है। 24 बल्कि तू रेगिस्तान में रहने की
आदी गधी ही है जो शहवत के मारे हाँपती है। मस्ती
के इस आलम में कौन उस पर क़ाबू पा सकता है?
जो भी उस से मिलना चाहे उसे ज़्यादा जिद्द-ओ-जह्द
की ज़रूरत नहीं, क्यूँकि मस्ती के मौसम में वह हर
एक के लिए हाज़िर है। 25 ऐ इस्राईल, इतना न दौड़
कि तेरे जूते घिस कर फट जाएँ और तेरा गला ख़ुश्क
हो जाए। लेकिन अफ़्सोस, तू बज़िद है, 'नहीं, मुझे
छोड़ दे! मैं अजनबी माबूदों को प्यार करती हूँ, और
लाज़िम है कि मैं उन के पीछे भागती जाऊँ।'

26 सुनो! इस्राईली क़ौम के तमाम अफ़राद उन
के बादशाहों, अफ़्सरों, इमामों और नबियों समेत
शर्मिन्दा हो जाएंगे। वह पकड़े हुए चोर की सी शर्म
मह्सूस करेंगे। 27 यह लोग लकड़ी के बुत से कहते
हैं, 'तू मेरा बाप है' और पत्थर के देवता से, 'तू ने
मुझे जन्म दिया।' लेकिन गो यह मेरी तरफ़ रुजू नहीं
करते बल्कि अपना मुँह मुझ से फेर कर चलते हैं तो
भी जूँ ही कोई आफ़त उन पर आ जाए तो यह मुझ से
इल्तिजा करने लगते हैं कि आ कर हमें बचा! 28 अब
यह बुत कहाँ हैं जो तू ने अपने लिए बनाए? वही खड़े
हो कर दिखाएँ कि तुझे मुसीबत से बचा सकते हैं। ऐ
यहूदाह, आख़िर जितने तेरे शहर हैं उतने तेरे देवता
भी हैं।" 29 रब फ़रमाता है, "तुम मुझ पर क्यूँ इल्ज़ाम
लगाते हो? तुम तो सब मुझ से बेवफ़ा हो गए हो।
30 मैं ने तुम्हारे बच्चों को सज़ा दी, लेकिन बेफ़ाइदा।
वह मेरी तर्बियत क़बूल नहीं करते। बल्कि तुम ने
फाड़ने वाले शेरबबर की तरह अपने नबियों पर टूट
कर उन्हें तलवार से क़त्ल किया।

31 ऐ मौजूदा नस्ल, रब के कलाम पर ध्यान दो! क्या
मैं इस्राईल के लिए रेगिस्तान या तारीकतरीन इलाक़े
की मानिन्द था? मेरी क़ौम क्यूँ कहती है, 'अब हम
आज़ादी से इधर उधर फिर सकते हैं, आइन्दा हम
तेरे हुज़ूर नहीं आएँगे?' 32 क्या कुंवारी कभी अपने
ज़ेवरात को भूल सकती है, या दुल्हन अपना उरूसी
लिबास? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी क़ौम बेशुमार
दिनों से मुझे भूल गई है।

33 तू इश्क़ ढूँडने में कितनी माहिर है! बदकार
औरतें भी तुझ से बहुत कुछ सीख लेती हैं। 34 तेरे

---

[w]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अजनबी।

लिबास का दामन बेगुनाह ग़रीबों के ख़ून से आलूदा
है, गो तू ने उन्हें नक़बज़नी जैसा ग़लत काम करते
वक़्त न पकड़ा। इस सब कुछ के बावुजूद भी 35 तू
बज़िद है कि मैं बेक़ुसूर हूँ, अल्लाह का मुझ पर ग़ुस्सा
ठंडा हो गया है। लेकिन मैं तेरी अदालत करूँगा,
इस लिए कि तू कहती है, 'मुझ से गुनाह सरज़द नहीं
हुआ।'
36 तू कभी इधर, कभी इधर जा कर इतनी आसानी
से अपना रुख़ क्यूँ बदलती है? यक़ीन कर कि
जिस तरह तू अपने इत्तिहादी असूर से मायूस हो कर
शर्मिन्दा हुई है उसी तरह तू नए इत्तिहादी मिस्र से भी
नादिम हो जाएगी। 37 तू उस जगह से भी अपने हाथों
को सर पर रख कर निकलेगी। क्यूँकि रब ने उन्हें
रद्द किया है जिन पर तू भरोसा रखती है। उन से तुझे
मदद हासिल नहीं होगी।"

इस्राईल की रब से बेवफ़ाई

3 1 रब फ़रमाता है, "अगर कोई अपनी बीवी को
तलाक़ दे और अलग होने के बाद बीवी की
किसी और से शादी हो जाए तो क्या पहले शौहर को
उस से दुबारा शादी करने की इजाज़त है? हरगिज़
नहीं, बल्कि ऐसी हरकत से पूरे मुल्क की बेहुरमती
हो जाती है। देख, यही तेरी हालत है। तू ने मुतअद्दिद
आशिक़ों से ज़िना किया है, और अब तू मेरे पास
वापस आना चाहती है। यह कैसी बात है?
2 अपनी नज़र बंजर पहाड़ियों की तरफ़ उठा कर
देख! क्या कोई जगह है जहाँ ज़िना करने से तेरी
बेहुरमती नहीं हुई? रेगिस्तान में तन्हा बैठने वाले
बदू की तरह तू रास्तों के किनारे पर अपने आशिक़ों
की ताक में बैठी रही है। अपनी इस्मतफ़रोशी और
बदकारी से तू ने मुल्क की बेहुरमती की है। 3 इसी
वजह से बहार में बरसात का मौसम रोका गया और
बारिश नहीं पड़ी। लेकिन अफ़सोस, तू कस्बी की
सी पेशानी रखती है, तू शर्म खाने के लिए तय्यार
ही नहीं। 4 इस वक़्त भी तू चीख़ती चिल्लाती आवाज़
देती है, 'ऐ मेरे बाप, जो मेरी जवानी से मेरा दोस्त है,
5 क्या तू हमेशा तक मेरे साथ नाराज़ रहेगा? क्या तेरा
क़हर कभी ठंडा नहीं होगा?' यही तेरे अपने अल्फ़ाज़
हैं, लेकिन साथ साथ तू ग़लत काम करने की हर
मुमकिन कोशिश करती रहती है।"
6 यूसियाह बादशाह की हुकूमत के दौरान रब मुझ
से हमकलाम हुआ, "क्या तू ने वह कुछ देखा जो
बेवफ़ा इस्राईल ने किया है? उस ने हर बुलन्दी पर
और हर घने दरख़्त के साय में ज़िना किया है। 7 मैं
ने सोचा कि यह सब कुछ करने के बाद वह मेरे
पास वापस आएगी। लेकिन अफ़सोस, ऐसा न हुआ।
उस की ग़द्दार बहन यहूदाह भी इन तमाम वाक़िआत
की गवाह थी। 8 बेवफ़ा इस्राईल की ज़िनाकारी
नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त थी, इस लिए मैं ने उसे घर से
निकाल कर तलाक़नामा दे दिया। फिर भी मैं ने देखा
कि उस की ग़द्दार बहन यहूदाह ने ख़ौफ़ न खाया
बल्कि ख़ुद निकल कर ज़िना करने लगी। 9 इस्राईल
को इस जुर्म की सन्जीदगी महसूस न हुई बल्कि उस
ने पत्थर और लकड़ी के बुतों के साथ ज़िना करके
मुल्क की बेहुरमती की। 10 इस के बावुजूद उस की
बेवफ़ा बहन यहूदाह पूरे दिल से नहीं बल्कि सिर्फ़
ज़ाहिरी तौर पर मेरे पास वापस आई।" यह रब का
फ़रमान है।

मेरे पास लौट आ

11 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "बेवफ़ा इस्राईल
ग़द्दार यहूदाह की निस्बत ज़्यादा रास्तबाज़ है। 12 जा,
शिमाल की तरफ़ देख कर बुलन्द आवाज़ से एलान
कर, 'ऐ बेवफ़ा इस्राईल, रब फ़रमाता है कि वापस
आ! आइन्दा मैं ग़ुस्से से तेरी तरफ़ नहीं देखूँगा,
क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ। मैं हमेशा तक नाराज़ नहीं
रहूँगा। यह रब का फ़रमान है।
13 लेकिन लाज़िम है कि तू अपना क़ुसूर तस्लीम
करे। इक़्रार कर कि मैं रब अपने ख़ुदा से सरकश
हुई। मैं इधर उधर घूम कर हर घने दरख़्त के साय
में अजनबी माबूदों की पूजा करती रही, मैं ने रब की
न सुनी'।" यह रब का फ़रमान है। 14 रब फ़रमाता

है, “ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस आओ, क्यूँकि मैं तुम्हारा
मालिक हूँ। मैं तुम्हें हर जगह से निकाल कर सिय्यून
में वापस लाऊँगा। किसी शहर से मैं एक को निकाल
लाऊँगा, और किसी ख़ानदान से दो अफ़राद को।
15 तब मैं तुम्हें ऐसे गल्लाबानों से नवाज़ूँगा जो मेरी
सोच रखेंगे और जो समझ और अक़्ल के साथ
तुम्हारी गल्लाबानी करेंगे। 16 फिर तुम्हारी तादाद बहुत
बढ़ेगी और तुम चारों तरफ़ फैल जाओगे।” रब
फ़रमाता है, “उन दिनों में रब के अह्द के सन्दूक़ का
ज़िक्र नहीं किया जाएगा। न उस का ख़याल आएगा,
न उसे याद किया जाएगा। न उस की कमी महसूस
होगी, न उसे दुबारा बनाया जाएगा। 17 क्यूँकि उस
वक़्त यरूशलम ‘रब का तख़्त’ कहलाएगा, और उस
में तमाम अक़्वाम रब के नाम की ताज़ीम में जमा
हो जाएँगी। तब वह अपने शरीर और ज़िद्दी दिलों
के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारेंगी। 18 तब यहूदाह
का घराना इस्राईल के घराने के पास आएगा, और
वह मिल कर शिमाली मुल्क से उस मुल्क में वापस
आएँगे जो मैं ने तुम्हारे बापदादा को मीरास में दिया
था।
19 मैं ने सोचा, काश मैं तेरे साथ बेटों का सा सुलूक
करके तुझे एक ख़ुशगवार मुल्क दे सकूँ, एक ऐसी
मीरास जो दीगर अक़्वाम की निस्बत कहीं शानदार
हो। मैं समझा कि तुम मुझे अपना बाप ठहरा कर
अपना मुँह मुझ से नहीं फेरोगे। 20 लेकिन ऐ इस्राईली
क़ौम, तू मुझ से बेवफ़ा रही है, बिलकुल उस औरत
की तरह जो अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई है।” यह
रब का फ़रमान है।
21 “सुनो! बंजर बुलन्दियों पर चीख़ें और इल्तिजाएँ
सुनाई दे रही हैं। इस्राईली रो रहे हैं, इस लिए कि
वह ग़लत राह इख़तियार करके रब अपने ख़ुदा को
भूल गए हैं। 22 ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस आओ ताकि
मैं तुम्हारे बेवफ़ा दिलों को शिफ़ा दे सकूँ।”
“ऐ रब, हम हाज़िर हैं। हम तेरे पास आते हैं,
क्यूँकि तू ही रब हमारा ख़ुदा है। 23 वाक़ई, पहाड़ियों
और पहाड़ों पर बुतपरस्ती का तमाशा फ़रेब ही
है। यक़ीनन रब हमारा ख़ुदा इस्राईल की नजात है।
24 हमारी जवानी से ले कर आज तक शर्मनाक देवता
हमारे बापदादा की मेहनत का फल खाते आए हैं,
ख़्वाह उन की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, ख़्वाह
उन के बेटे-बेटियाँ। 25 आओ, हम अपनी शर्म के
बिस्तर पर लेट जाएँ और अपनी बेइज़्ज़ती की रज़ाई
में छुप जाएँ। क्यूँकि हम ने अपने बापदादा समेत रब
अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। अपनी जवानी से ले
कर आज तक हम ने रब अपने ख़ुदा की नहीं सुनी।”

तौबा करो

4 1 रब फ़रमाता है, “ऐ इस्राईल, अगर तू वापस
आना चाहे तो मेरे पास वापस आ! अगर तू
अपने घिनौने बुतों को मेरे हुज़ूर से दूर करके आवारा
न फिरे 2 और रब की हयात की क़सम खाते वक़्त
दयानतदारी, इन्साफ़ और सदाक़त से अपना वादा
पूरा करे तो ग़ैरअक़्वाम मुझ से बरकत पा कर मुझ
पर फ़ख़र करेंगी।”
3 रब यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों से
फ़रमाता है, “अपने दिलों की ग़ैरमुस्तामल ज़मीन पर
हल चला कर उसे क़ाबिल-ए-काश्त बनाओ! अपने
बीज काँटेदार झाड़ियों में बो कर ज़ाए मत करना।
4 ऐ यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दो, अपने आप
को रब के लिए मख़्सूस करके अपना ख़तना कराओ
यानी अपने दिलों का ख़तना कराओ, वर्ना मेरा क़हर
तुम्हारे ग़लत कामों के बाइस कभी न बुझने वाली
आग की तरह तुझ पर नाज़िल होगा।

शिमाल से आफ़त का एलान

5 यहूदाह में एलान करो और यरूशलम को इत्तिला
दो, ‘मुल्क भर में नरसिंगा बजाओ!’ गला फाड़ कर
चिल्लाओ, ‘इकट्ठे हो जाओ! आओ, हम क़िलाबन्द
शहरों में पनाह लें!’ 6 झंडा गाड़ दो ताकि लोग उसे
देख कर सिय्यून में पनाह लें। महफ़ूज़ मक़ाम में भाग
जाओ और कहीं न रुको, क्यूँकि मैं शिमाल की तरफ़
से आफ़त ला रहा हूँ, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

7 शेरबबर जंगल में अपनी छुपने की जगह से
निकल आया, क़ौमों को हलाक करने वाला अपने
मक़ाम से रवाना हो चुका है ताकि तेरे मुल्क को
तबाह करे। तेरे शहर बर्बाद हो जाएंगे, और उन में
कोई नहीं रहेगा।
8 चुनाँचे टाट का लिबास पहन कर आह-ओ-ज़ारी
करो, क्यूँकि रब का सख़्त ग़ज़ब अब तक हम पर
नाज़िल हो रहा है।"
9 रब फ़रमाता है, "उस दिन बादशाह और उस के
अफ़सर हिम्मत हारेंगे, इमामों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे
और नबी ख़ौफ़ से सुन हो कर रह जाएंगे।"
10 तब मैं बोल उठा, "हाय, हाय! ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू ने इस क़ौम और यरूशलम को कितना
सख़्त फ़रेब दिया जब तू ने फ़रमाया, तुम्हें अम्न-ओ-
अमान हासिल होगा हालाँकि हमारे गलों पर तलवार
फिरने को है।" 11 उस वक़्त इस क़ौम और यरूशलम
को इत्तिला दी जाएगी, "रेगिस्तान के बंजर टीलों से
सब कुछ झुलसाने वाली लू मेरी क़ौम के पास आ
रही है। और यह गन्दुम को फटक कर भूसे से अलग
करने वाली मुफ़ीद हवा नहीं होगी 12 बल्कि आँधी
जैसी तेज़ हवा मेरी तरफ़ से आएगी। क्यूँकि अब मैं
उन पर अपने फ़ैसले सादिर करूँगा।"
13 देखो, दुश्मन तूफ़ानी बादलों की तरह आगे बढ़
रहा है! उस के रथ आँधी जैसे, और उस के घोड़े
उक़ाब से तेज़ हैं। हाय, हम पर अफ़सोस! हमारा
अन्जाम आ गया है।
14 ऐ यरूशलम, अपने दिल को धो कर बुराई से
साफ़ कर ताकि तुझे छुटकारा मिले। तू अन्दर ही
अन्दर कब तक अपने शरीर मन्सूबे बांधती रहेगी?
15 सुनो! दान से बुरी ख़बरें आ रही हैं, इफ़्राईम के
पहाड़ी इलाक़े से आफ़त का पैग़ाम पहुँच रहा है।
16 ग़ैरअक़्वाम को इत्तिला दो और यरूशलम के बारे
में एलान करो, "मुहासरा करने वाले फ़ौजी दूरदराज़
मुल्क से आ रहे हैं! वह जंग के नारे लगा लगा कर
यहूदाह के शहरों पर टूट पड़ेंगे। 17 तब वह खेतों की
चौकीदारी करने वालों की तरह यरूशलम को घेर
लेंगे। क्यूँकि यह शहर मुझ से सरकश हो गया है।"
यह रब का फ़रमान है। 18 "यह तेरे अपने ही चाल-
चलन और हरकतों का नतीजा है। हाय, तेरी बेदीनी
का अन्जाम कितना तल्ख़ और दिलख़राश है!"

यरमियाह का अपनी क़ौम के लिए दुख

19 हाय, मेरी तड़पती जान, मेरी तड़पती जान! मैं
दर्द के मारे पेच-ओ-ताब खा रहा हूँ। हाय, मेरा दिल!
वह बेकाबू हो कर धड़क रहा है। मैं ख़ामोश नहीं
रह सकता, क्यूँकि नरसिंगे की आवाज़ और जंग के
नारे मेरे कान तक पहुँच गए हैं। 20 यके बाद दीगरे
शिकस्तों की ख़बरें मिल रही हैं, चारों तरफ़ मुल्क
की तबाही हुई है। अचानक ही मेरे तम्बू बर्बाद हैं,
एक ही लम्हे में मेरे ख़ैमे ख़त्म हो गए हैं। 21 मुझे कब
तक जंग का झंडा देखना पड़ेगा, कब तक नरसिंगे
की आवाज़ सुननी पड़ेगी?
22 "मेरी क़ौम अहमक़ है और मुझे नहीं जानती। वह
बेवुक़ूफ़ और नासमझ बच्चे हैं। गो वह ग़लत काम
करने में बहुत तेज़ हैं, लेकिन भलाई करना उन की
समझ से बाहर है।"
23 मैं ने मुल्क पर नज़र डाली तो वीरान-ओ-सुन्सान
था। जब आसमान की तरफ़ देखा तो अंधेरा था।
24 मेरी निगाह पहाड़ों पर पड़ी तो थरथरा रहे थे,
तमाम पहाड़ियाँ हिच्कोले खा रही थीं। 25 कहीं कोई
शख़्स नज़र न आया, तमाम परिन्दे भी उड़ कर जा
चुके थे। 26 मैं ने मुल्क पर नज़र दौड़ाई तो क्या देखता
हूँ कि ज़रख़ेज़ ज़मीन रेगिस्तान बन गई है। रब और
उस के शदीद ग़ज़ब के सामने उस के तमाम शहर
नेस्त-ओ-नाबूद हो गए हैं। 27 क्यूँकि रब फ़रमाता है,
"पूरा मुल्क बर्बाद हो जाएगा, अगरचे मैं उसे पूरे तौर
पर ख़त्म नहीं करूँगा। 28 ज़मीन मातम करेगी और
आसमान तारीक हो जाएगा, क्यूँकि मैं यह फ़रमा
चुका हूँ, और मेरा इरादा अटल है। न मैं यह करने से
पछताऊँगा, न इस से बाज़ आऊँगा।"
29 घुड़सवारों और तीर चलाने वालों का शोर-
शराबा सुन कर लोग तमाम शहरों से निकल कर

जंगलों और चटानों में खिसक जाएंगे। तमाम शहर
वीरान-ओ-सुन्सान होंगे, किसी में भी लोग नहीं
बसेंगे।
30 तो फिर तू क्या कर रही है, तू जिसे ख़ाक में
मिला दिया गया है? अब क़िर्मिज़ी लिबास और सोने
के ज़ेवरात पहनने की क्या ज़रूरत है? इस वक़्त
अपनी आँखों को सुरमे से सजाने और अपने आप को
आरास्ता करने का कोई फ़ाइदा नहीं। तेरे आशिक़ तो
तुझे हक़ीर जानते बल्कि तुझे जान से मारने के दरपै
हैं। 31 क्यूँकि मुझे दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की
आवाज़, पहली बार जन्म देने वाली की आह-ओ-
ज़ारी सुनाई दे रही है। सिय्यून बेटी कराह रही है,
वह अपने हाथ फैलाए हुए कह रही है, "हाय, मुझ
पर अफ़्सोस! मेरी जान क़ातिलों के हाथ में आ कर
निकल रही है।"

अब मुआफ़ी नामुमकिन है

5 1 "यरूशलम की गलियों में घूमो फिरो! हर
जगह का मुलाहज़ा करके पता करो कि क्या
हो रहा है। उस के चौकों की तफ़्तीश भी करो। अगर
तुम्हें एक भी शख़्स मिल जाए जो इन्साफ़ करे और
दयानतदारी का तालिब रहे तो मैं शहर को मुआफ़
कर दूँगा। 2 वह रब की हयात की क़सम खाते वक़्त
भी झूट बोलते हैं।"
3 ऐ रब, तेरी आँखें दयानतदारी देखना चाहती हैं।
तू ने उन्हें मारा, लेकिन उन्हें दुख न हुआ। तू ने
उन्हें कुचल डाला, लेकिन वह तर्बियत पाने के लिए
तय्यार नहीं। उन्हों ने अपने चिहरे को पत्थर से कहीं
ज़्यादा सख़्त बना कर तौबा करने से इन्कार किया है।
4 मैं ने सोचा, "सिर्फ़ ग़रीब लोग ऐसे हैं। यह इस लिए
अहमक़ाना हरकतें कर रहे हैं कि रब की राह और
अपने ख़ुदा की शरीअत से वाक़िफ़ नहीं हैं। 5 आओ,
मैं बुज़ुर्गों के पास जा कर उन से बात करता हूँ। वह
तो ज़रूर रब की राह और अल्लाह की शरीअत को
जानते होंगे।" लेकिन अफ़्सोस, सब के सब ने अपने
जूए और रस्से तोड़ डाले हैं।
6 इस लिए शेरबबर जंगल से निकल कर उन पर
हम्ला करेगा, भेड़िया बयाबान से आ कर उन्हें बर्बाद
करेगा, चीता उन के शहरों के क़रीब ताक में बैठ कर
हर निकलने वाले को फाड़ डालेगा। क्यूँकि वह बार
बार सरकश हुए हैं, मुतअद्दिद दफ़ा उन्हों ने अपनी
बेवफ़ाई का इज़हार किया है।
7 "मैं तुझे कैसे मुआफ़ करूँ? तेरी औलाद ने मुझे
तर्क करके उन की क़सम खाई है जो ख़ुदा नहीं हैं। गो
मैं ने उन की हर ज़रूरत पूरी की तो भी उन्हों ने ज़िना
किया, चक्ले के सामने उन की लम्बी क़तारें लगी
रहीं। 8 यह लोग मोटे-ताज़े घोड़े हैं जो मस्ती में आ
गए हैं। हर एक हिनहिनाता हुआ अपने पड़ोसी की
बीवी को आँख मारता है।" 9 रब फ़रमाता है, "क्या
मैं जवाब में उन्हें सज़ा न दूँ? क्या मैं ऐसी क़ौम से
इन्तिक़ाम न लूँ? 10 जाओ, उस के अंगूर के बाग़ों पर
टूट पड़ो और सब कुछ बर्बाद कर दो। लेकिन उन्हें
मुकम्मल तौर पर ख़त्म मत करना। बेलों की शाख़ों
को दूर करो, क्यूँकि वह रब के लोग नहीं हैं।"

रब अपनी क़ौम से जवाब तलब करेगा

11 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "इस्राईल और यहूदाह के
बाशिन्दे हर तरह से मुझ से बेवफ़ा रहे हैं। 12 उन्हों ने
रब का इन्कार करके कहा है, वह कुछ नहीं करेगा।
हम पर मुसीबत नहीं आएगी। हमें न तलवार, न काल
से नुक़्सान पहुँचेगा। 13 नबियों की क्या हैसियत है?
वह तो बकवास ही करते हैं, और रब का कलाम
उन में नहीं है। बल्कि उन ही के साथ ऐसा किया
जाएगा।"
14 इस लिए रब लश्करों का ख़ुदा फ़रमाता है, "ऐ
यरमियाह, चूँकि लोग ऐसी बातें कर रहे हैं इस लिए
तेरे मुँह में मेरे अल्फ़ाज़ आग बन कर इस क़ौम को
लकड़ी की तरह भस्म कर देंगे।" 15 रब फ़रमाता है,
"ऐ इस्राईल, मैं दूर की क़ौम को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा,
ऐसी पुख़्ता और क़दीम क़ौम जिस की ज़बान तू नहीं
जानता और जिस की बातें तू नहीं समझता। 16 उन
के तर्कश खुली क़ब्रें हैं, सब के सब ज़बरदस्त सूरमे

हैं। 17 वह सब कुछ हड़प कर लेंगे : तेरी फ़सलें, तेरी
ख़ुराक, तेरे बेटे-बेटियाँ, तेरी भेड़-बकरियाँ, तेरे गाय-
बैल, तेरी अंगूर की बेलें और तेरे अन्जीर के दरख़्त।
जिन क़िलाबन्द शहरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें
वह तलवार से ख़ाक में मिला देंगे।

18 फिर भी मैं उस वक़्त तुम्हें मुकम्मल तौर पर
बर्बाद नहीं करूँगा।" यह रब का फ़रमान है। 19 "ऐ
यरमियाह, अगर लोग तुझ से पूछें, रब हमारे ख़ुदा ने
यह सब कुछ हमारे साथ क्यूँ किया? तो उन्हें बता,
तुम मुझे तर्क करके अपने वतन में अजनबी माबूदों
की ख़िदमत करते रहे हो, इस लिए तुम वतन से दूर
मुल्क में अजनबियों की ख़िदमत करोगे।

20 इस्राईल में एलान करो और यहूदाह को इत्तिला
दो 21 कि ऐ बेवुक़ूफ़ और नासमझ क़ौम, सुनो!
लेकिन अफ़्सोस, उन की आँखें तो हैं लेकिन वह देख
नहीं सकते, उन के कान तो हैं लेकिन वह सुन नहीं
सकते।" 22 रब फ़रमाता है, "क्या तुम्हें मेरा ख़ौफ़
नहीं मानना चाहिए, मेरे हुज़ूर नहीं काँपना चाहिए?
सोच लो! मैं ही ने रेत से समुन्दर की सरहद मुक़र्रर
की, एक ऐसी बाड़ बनाई जिस पर से वह कभी नहीं
गुज़र सकता। गो वह ज़ोर से लहरें मारे तो भी नाकाम
रहता है, गो उस की मौजें ख़ूब गरजें तो भी मुक़र्ररा
हद से आगे नहीं बढ़ सकतीं।

23 लेकिन अफ़्सोस, इस क़ौम का दिल ज़िद्दी और
सरकश है। यह लोग सहीह राह से हट कर अपनी ही
राहों पर चल पड़े हैं। 24 वह दिल में कभी नहीं कहते,
आओ, हम रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें। क्यूँकि
वही हमें वक़्त पर ख़िज़ाँ और बहार के मौसम में
बारिश मुहय्या करता है, वही इस की ज़मानत देता
है कि हमारी फ़सलें बाक़ाइदगी से पक जाएँ। 25 अब
तुम्हारे ग़लत कामों ने तुम्हें इन नेमतों से महरूम कर
दिया, तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें इन अच्छी चीज़ों से रोक
रखा है।

26 क्यूँकि मेरी क़ौम में ऐसे बेदीन अफ़राद पाए जाते
हैं जो दूसरों की ताक लगाए रहते हैं। जिस तरह
शिकारी परिन्दे पकड़ने के लिए झुक कर छुप जाता
है, उसी तरह वह दूसरों की घात में बैठ जाते हैं। वह
फंदे लगा कर लोगों को उन में फंसाते हैं। 27 और
जिस तरह शिकारी अपने पिंजरे को चिड़ियों से भर
देता है उसी तरह इन शरीर लोगों के घर फ़रेब से
भरे रहते हैं। अपनी चालों से वह अमीर, ताक़तवर
28 और मोटे-ताज़े हो गए हैं। उन के ग़लत कामों की
हद नहीं रहती। वह इन्साफ़ करते ही नहीं। न वह
यतीमों की मदद करते हैं ताकि उन्हें वह कुछ मिल
जाए जो उन का हक़ है, न ग़रीबों के हुक़ूक़ क़ाइम
रखते हैं।" 29 रब फ़रमाता है, "अब मुझे बताओ,
क्या मुझे उन्हें इस की सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या
मुझे इस क़िस्म की हरकतें करने वाली क़ौम से
बदला नहीं लेना चाहिए?

30 जो कुछ मुल्क में हुआ है वह हौलनाक और
क़ाबिल-ए-घिन है। 31 क्यूँकि नबी झूटी पेशगोइयाँ
सुनाते और इमाम अपनी ही मर्ज़ी से हुकूमत करते
हैं। और मेरी क़ौम उन का यह रवय्या अज़ीज़ रखती
है। लेकिन मुझे बताओ, जब यह सब कुछ ख़त्म हो
जाएगा तो फिर तुम क्या करोगे?

यरूशलम दुश्मनों से घिरा हुआ है

6 1 ऐ बिनयमीन की औलाद, यरूशलम से निकल
कर कहीं और पनाह लो! तक़ूअ में नरसिंगा
फूँको! बैत-करम में भागने का ऐसा इशारा खड़ा कर
जो सब को नज़र आए! क्यूँकि शिमाल से आफ़त
नाज़िल हो रही है, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

2 सिय्यून बेटी कितनी मनमोहन और नाज़ुक है।
लेकिन मैं उसे हलाक कर दूँगा, 3 और चरवाहे अपने
रेवड़ों को ले कर उस पर टूट पड़ेंगे। वह अपने ख़ैमों
को उस के इर्दगिर्द लगा लेंगे, और हर एक का रेवड़
चर चर कर अपना हिस्सा खा जाएगा।

4 वह कहेंगे, 'आओ, हम उस से लड़ने के लिए
तय्यार हो जाएँ। आओ, हम दोपहर के वक़्त हम्ला
करें! लेकिन अफ़्सोस, दिन ढल रहा है, और शाम
के साय लम्बे होते जा रहे हैं। 5 कोई बात नहीं, रात

के वक़्त ही हम उस पर छापा मारेंगे, उसी वक़्त हम
उस के बुर्जों को गिरा देंगे'।"
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "दरख़्तों को
काटो, मिट्टी के ढेरों से यरूशलम का घेराऊ करो!
शहर को सज़ा देनी है, क्यूँकि उस में ज़ुल्म ही
ज़ुल्म पाया जाता है। 7 जिस तरह कुएँ से ताज़ा पानी
निकलता रहता है उसी तरह यरूशलम की बदी भी
ताज़ा ताज़ा उस से निकलती रहती है। ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद की आवाज़ें उस में गूँजती रहती हैं, उस की
बीमार हालत और ज़ख़्म लगातार मेरे सामने रहते हैं।
8 ऐ यरूशलम, मेरी तर्बियत को क़बूल कर, वर्ना
मैं तंग आ कर तुझ से अपना मुँह फेर लूँगा, मैं तुझे
तबाह कर दूँगा और तू ग़ैरआबाद हो जाएगी।"
9 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "जिस तरह अंगूर
चुनने के बाद ग़रीब लोग तमाम बचा-खुचा फल तोड़
लेते हैं उसी तरह इस्राईल का बचा-खुचा हिस्सा भी
एहतियात से तोड़ लिया जाएगा। चुनने वाले की तरह
दुबारा अपने हाथ को अंगूर की शाख़ों पर से गुज़रने
दे।"
10 ऐ रब, मैं किस से बात करूँ, किस को आगाह
करूँ? कौन सुनेगा? देख, उन के कान नामख़्तून हैं,
इस लिए वह सुन ही नहीं सकते। रब का कलाम उन्हें
मज़्हकाख़ेज़ लगता है, वह उन्हें नापसन्द है। 11 इस
लिए मैं रब के ग़ज़ब से भरा हुआ हूँ, मैं उसे बर्दाश्त
करते करते इतना थक गया हूँ कि उसे मज़ीद नहीं
रोक सकता।
"उसे गलियों में खेलने वाले बच्चों और जमाशुदा
नौजवानों पर नाज़िल कर, क्यूँकि सब को गिरिफ़्तार
किया जाएगा, ख़्वाह आदमी हो या औरत, बुज़ुर्ग हो
या उम्रसीदा। 12 उन के घरों को खेतों और बीवियों
समेत दूसरों के हवाले किया जाएगा, क्यूँकि मैं अपना
हाथ मुल्क के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ बढ़ाऊँगा।" यह
रब का फ़रमान है। 13 "छोटे से ले कर बड़े तक सब
ग़लत नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबी से ले कर इमाम
तक सब धोकेबाज़ हैं। 14 वह मेरी क़ौम के ज़ख़्म पर
आरिज़ी मर्हम-पट्टी लगा कर कहते हैं, अब सब कुछ
ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ गया है
हालाँकि सलामती है ही नहीं। 15 ऐसा घिनौना रवय्या
उन के लिए शर्म का बाइस होना चाहिए, लेकिन वह
शर्म नहीं करते बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इस लिए जब
सब कुछ गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब
मैं इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खा कर
ख़ाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

सहीह रास्ते की तलाश में रहो

16 रब फ़रमाता है, "रास्तों के पास खड़े हो कर उन
का मुआइना करो! क़दीम राहों की तफ़्तीश करके
पता करो कि उन में से कौन सी अच्छी है, फिर
उस पर चलो। तब तुम्हारी जान को सुकून मिलेगा।
लेकिन अफ़्सोस, तुम इन्कार करके कहते हो, नहीं,
हम यह राह इख़्तियार नहीं करेंगे! 17 देखो, मैं ने तुम
पर पहरेदार मुक़र्रर किए और कहा, 'जब नरसिंगा
फूँका जाएगा तो ध्यान दो!' लेकिन तुम ने इन्कार
किया, 'नहीं, हम तवज्जुह नहीं देंगे।'
18 चुनाँचे ऐ क़ौमो, सुनो! ऐ जमाअत, जान ले कि
उन के साथ क्या कुछ किया जाएगा। 19 ऐ ज़मीन,
ध्यान दे कि मैं इस क़ौम पर क्या आफ़त नाज़िल
करूँगा। और यह उन के अपने मन्सूबों का फल
होगा, क्यूँकि उन्हों ने मेरी बातों पर तवज्जुह न दी
बल्कि मेरी शरीअत को रद्द कर दिया। 20 मुझे सबा
के बख़ूर या दूरदराज़ ममालिक के क़ीमती मसालों
की क्या पर्वा! तुम्हारी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
मुझे पसन्द नहीं, तुम्हारी ज़बह की क़ुर्बानियों से मैं
लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होता।" 21 रब फ़रमाता है, "मैं इस
क़ौम के रास्ते में ऐसी रुकावटें खड़ी कर दूँगा जिन
से बाप और बेटा ठोकर खा कर गिर जाएंगे। पड़ोसी
और दोस्त मिल कर हलाक हो जाएंगे।"

शिमाल से दुश्मन का हम्ला

22 रब फ़रमाता है, "शिमाली मुल्क से फ़ौज आ
रही है, दुनिया की इन्तिहा से एक अज़ीम क़ौम को
जगाया जा रहा है। 23 उस के ज़ालिम और बेरहम

फ़ौजी कमान और शम्शीर से लेस हैं। सुनो उन का शोर! मुतलातिम समुन्दर की सी आवाज़ सुनाई दे रही है। ऐ सिय्यून बेटी, वह घोड़ों पर सफ़आरा हो कर तुझ पर हम्ला करने आ रहे हैं।"

24 उन के बारे में इत्तिला पा कर हमारे हाथ हिम्मत हार गए हैं। हम पर ख़ौफ़ तारी हो गया है, हमें दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत का सा दर्द हो रहा है। 25 शहर से निकल कर खेत में या सड़क पर मत चलना, क्यूँकि वहाँ दुश्मन तलवार थामे खड़ा है, चारों तरफ़ दह्शत ही दह्शत फैल गई है।

26 ऐ मेरी क़ौम, टाट का लिबास पहन कर राख में लोट-पोट हो जा। यूँ मातम कर जिस तरह इक्लौता बेटा मर गया हो। ज़ोर से वावैला कर, क्यूँकि अचानक ही हलाकू हम पर छापा मारेगा।

यरमियाह क़ौम को आज़माता है

27 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "मैं ने तुझे धातों को जाँचने की ज़िम्मादारी दी है, और मेरी क़ौम वह धात है जिस का चाल-चलन तुझे मालूम करके परखना है।" 28 ऐ रब, यह तमाम लोग बदतरीन क़िस्म के सरकश हैं। तुहमत लगाना इन की रोज़ी बन गया है। यह पीतल और लोहा ही हैं, सब के सब तबाही का बाइस हैं। 29 धौंकनी ख़ूब हवा दे रही है ताकि सीसा आग में पिघल कर चाँदी से अलग हो जाए। लेकिन अफ़्सोस, सारी मेहनत रायगाँ है। सीसा यानी बेदीनों को अलग नहीं किया जा सकता, ख़ालिस चाँदी बाक़ी नहीं रहती। 30 चुनाँचे उन्हें 'रद्दी चाँदी' क़रार दिया जाता है, क्यूँकि रब ने उन्हें रद्द कर दिया है।

रब के घर के बारे में पैग़ाम

7 1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 "रब के घर के सहन के दरवाज़े पर खड़ा हो कर एलान कर कि ऐ यहूदाह के तमाम बाशिन्दो, रब का कलाम सुनो! जितने भी रब की परस्तिश करने के लिए इन दरवाज़ों में दाख़िल होते हैं वह सब तवज्जुह दें! 3 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि अपनी ज़िन्दगी और चाल-चलन दुरुस्त करो तो मैं आइन्दा भी तुम्हें इस मक़ाम पर बसने दूँगा। 4 उन के फ़रेबदिह अल्फ़ाज़ पर एतिमाद मत करो जो कहते हैं, 'यहाँ हम मह्फ़ूज़ हैं क्यूँकि यह रब का घर, रब का घर, रब का घर है।' 5 सुनो, शर्त तो यह है कि तुम अपनी ज़िन्दगी और चाल-चलन दुरुस्त करो और एक दूसरे के साथ इन्साफ़ का सुलूक करो, 6 कि तुम परदेसी, यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो, इस जगह बेक़ुसूर का ख़ून न बहाओ और अजनबी माबूदों के पीछे लग कर अपने आप को नुक़्सान न पहुँचाओ। 7 अगर तुम ऐसा करो तो मैं आइन्दा भी तुम्हें इस जगह बसने दूँगा, उस मुल्क में जो मैं ने तुम्हारे बापदादा को हमेशा के लिए बख़्श दिया था।

8 लेकिन अफ़्सोस, तुम फ़रेबदिह अल्फ़ाज़ पर भरोसा रखते हो जो फ़ुज़ूल ही हैं। 9 तुम चोर, क़ातिल और ज़िनाकार हो। नीज़ तुम झूटी क़सम खाते, बाल देवता के हुज़ूर बख़ूर जलाते और अजनबी माबूदों के पीछे लग जाते हो, ऐसे देवताओं के पीछे जिन से तुम पहले वाक़िफ़ नहीं थे। 10 लेकिन साथ साथ तुम यहाँ मेरे हुज़ूर भी आते हो। जिस मकान पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है उसी में तुम खड़े हो कर कहते हो, 'हम मह्फ़ूज़ हैं।' तुम रब के घर में इबादत करने के साथ साथ किस तरह यह तमाम घिनौनी हरकतें जारी रख सकते हो?"

11 रब फ़रमाता है, "क्या तुम्हारे नज़्दीक यह मकान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है डाकुओं का अड्डा बन गया है? ख़बरदार! यह सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। 12 सैला शहर का चक्कर लगाओ जहाँ मैं ने पहले अपना नाम बसाया था। मालूम करो कि मैं ने अपनी क़ौम इस्राईल की बेदीनी के सबब से उस शहर के साथ क्या किया।" 13 रब फ़रमाता है, "तुम यह शरीर हरकतें करते रहे, और मैं बार बार तुम से हमकलाम होता रहा, लेकिन तुम ने मेरी न सुनी। मैं तुम्हें बुलाता रहा, लेकिन तुम जवाब देने के लिए तय्यार न हुए। 14 इस लिए अब मैं इस घर के

साथ वह कुछ करूँगा जो मैं ने सैला के साथ किया
था, गो इस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है, यह
वह मकान है जिस पर तुम एतिमाद रखते हो और
जिसे मैं ने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया
था। 15 मैं तुम्हें अपने हुज़ूर से निकाल दूँगा, बिलकुल
उसी तरह जिस तरह मैं ने तुम्हारे तमाम भाइयों यानी
इस्राईल [x]की औलाद को निकाल दिया था।

लोगों की नाफ़रमानी

16 ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत कर।
इस के लिए न इल्तिजा कर, न मिन्नत। इन लोगों की
ख़ातिर मुझे तंग न कर, क्यूँकि मैं तेरी नहीं सुनूँगा।
17 क्या तुझे वह कुछ नज़र नहीं आ रहा जो यह
यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में कर
रहे हैं? 18 और सब इस में मुलव्वस हैं। बच्चे लकड़ी
चुन कर ढेर बनाते हैं, फिर बाप उसे आग लगाते हैं
जबकि औरतें आटा गूँध गूँध कर आग पर आसमान
की मलिका नामी देवी के लिए टिक्कियाँ पकाती हैं।
मुझे तंग करने के लिए वह अजनबी माबूदों को मै
की नज़रें भी पेश करते हैं।

19 लेकिन हक़ीक़त में यह मुझे उतना तंग नहीं
कर रहे जितना अपने आप को। ऐसी हरकतों से
वह अपनी ही रुस्वाई कर रहे हैं।" 20 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "मेरा क़हर और ग़ज़ब इस
मक़ाम पर, इन्सान-ओ-हैवान पर, खुले मैदान के
दरख़्तों पर और ज़मीन की पैदावार पर नाज़िल होगा।
सब कुछ नज़र-ए-आतिश हो जाएगा, और कोई उसे
बुझा नहीं सकेगा।"

21 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "भस्म होने वाली क़ुर्बानियों को मुझे पेश
न करो, बल्कि उन का गोश्त दीगर क़ुर्बानियों समेत
ख़ुद खा लो। 22 क्यूँकि जिस दिन मैं तुम्हारे बापदादा
को मिस्र से निकाल लाया उस दिन मैं ने उन्हें भस्म
होने वाली क़ुर्बानियाँ और दीगर क़ुर्बानियाँ चढ़ाने का
हुक्म न दिया। 23 मैं ने उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया कि
मेरी सुनो! तब ही मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा और तुम मेरी
क़ौम होगे। पूरे तौर पर उस राह पर चलते रहो जो मैं
तुम्हें दिखाता हूँ। तब ही तुम्हारी ख़ैर होगी। 24 लेकिन
उन्हों ने मेरी न सुनी, न ध्यान दिया बल्कि अपने
शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने
लगे। उन्हों ने मेरी तरफ़ रुजू न किया बल्कि अपना
मुँह मुझ से फेर लिया। 25 जब से तुम्हारे बापदादा
मिस्र से निकल आए आज तक मैं रोज़-ब-रोज़ और
बार बार अपने ख़ादिमों यानी नबियों को तुम्हारे पास
भेजता रहा। 26 तो भी उन्हों ने न मेरी सुनी, न तवज्जुह
दी। वह बज़िद रहे बल्कि अपने बापदादा की निस्बत
ज़्यादा बुरे थे।

27 ऐ यरमियाह, तू उन्हें यह तमाम बातें बताएगा,
लेकिन वह तेरी नहीं सुनेंगे। तू उन्हें बुलाएगा, लेकिन
वह जवाब नहीं देंगे। 28 तब तू उन्हें बताएगा, 'इस
क़ौम ने न रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनी, न उस
की तर्बियत क़बूल की। दयानतदारी ख़त्म हो कर
उन के मुँह से मिट गई है।'

वादी-ए-बिन-हिन्नूम में क़ाबिल-ए-घिन रुसूम

29 अपने बालों को काट कर फैंक दे! जा, बंजर
टीलों पर मातम का गीत गा, क्यूँकि यह नस्ल रब
के ग़ज़ब का निशाना बन गई है, और उस ने इसे रद्द
करके छोड़ दिया है।"

30 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "जो कुछ यहूदाह के
बाशिन्दों ने किया वह मुझे बहुत बुरा लगता है। उन्हों
ने अपने घिनौने बुतों को मेरे नाम के लिए मख़्सूस घर
में रख कर उस की बेहुरमती की है। 31 साथ साथ
उन्हों ने वादी-ए-बिन-हिन्नूम में वाक़े तूफ़त की ऊँची
जगहें तामीर कीं ताकि अपने बेटे-बेटियों को जला
कर क़ुर्बान करें। मैं ने कभी भी ऐसी रस्म अदा करने
का हुक्म नहीं दिया बल्कि इस का ख़याल मेरे ज़हन
में आया तक नहीं।

---

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : इफ़्राईम।

32 चुनाँचे रब का कलाम सुनो! वह दिन आने वाले
हैं जब यह मक़ाम 'तूफ़त' या 'वादी-ए-बिन-हिन्नूम'
नहीं कहलाएगा बल्कि 'क़त्ल-ओ-ग़ारत की वादी।'
उस वक़्त लोग तूफ़त में इतनी लाशें दफ़नाएँगे कि
आख़िरकार ख़ाली जगह नहीं रहेगी। 33 तब इस क़ौम
की लाशें परिन्दों और जंगली जानवरों की ख़ुराक
बन जाएँगी, और कोई नहीं होगा जो उन्हें भगा दे।
34 मैं यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों
में ख़ुशी-ओ-शादमानी की आवाज़ें ख़त्म कर दूँगा,
दूल्हा दुल्हन की आवाज़ें बन्द हो जाएँगी। क्यूँकि
मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा।"

8 1 रब फ़रमाता है, "उस वक़्त दुश्मन क़ब्रों
को खोल कर यहूदाह के बादशाहों, अफ़सरों,
इमामों, नबियों और यरूशलम के आम बाशिन्दों की
हड्डियों को निकालेगा 2 और ज़मीन पर बिखेर देगा।
वहाँ वह उन के सामने पड़ी रहेंगी जो उन्हें प्यारे थे
यानी सूरज, चाँद और सितारों के तमाम लश्कर के
सामने। क्यूँकि वह उन ही की ख़िदमत करते, उन ही
के पीछे चलते, उन ही के तालिब रहते, और उन ही
को सिज्दा करते थे। उन की हड्डियाँ दुबारा न इकट्ठी
की जाएँगी, न दफ़न की जाएँगी बल्कि खेत में गोबर
की तरह बिखरी पड़ी रहेंगी। 3 और जहाँ भी मैं इस
शरीर क़ौम के बचे हुओं को मुन्तशिर करूँगा वहाँ
वह सब कहेंगे कि काश हम भी ज़िन्दा न रहें बल्कि
मर जाएँ।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

क़ौम तबाहकुन राह से हटने के लिए तय्यार नहीं

4 "उन्हें बता, रब फ़रमाता है कि जब कोई गिर
जाता है तो क्या दुबारा उठने की कोशिश नहीं
करता? ज़रूर। और जब कोई सहीह रास्ते से दूर
हो जाता है तो क्या वह दुबारा वापस आ जाने की
कोशिश नहीं करता? बेशक। 5 तो फिर यरूशलम
के यह लोग सहीह राह से बार बार क्यूँ भटक जाते
हैं? यह फ़रेब के साथ लिपटे रहते और वापस आने
से इन्कार ही करते हैं। 6 मैं ने ध्यान दे कर देखा है
कि यह झूट ही बोलते हैं। कोई भी पछता कर नहीं
कहता, 'यह कैसा ग़लत काम है जो मैं ने किया!'
जिस तरह जंग में घोड़े दुश्मन पर टूट पड़ते हैं उसी
तरह हर एक सीधा अपनी ग़लत राह पर दौड़ता रहता
है। 7 फ़िज़ा में उड़ने वाले लक़्लक़ पर ग़ौर करो जिसे
आने जाने के मुक़र्ररा औक़ात ख़ूब मालूम होते हैं।
फ़ाख़ता, अबाबील और बुल्बुल पर भी ध्यान दो
जो सर्दियों के मौसम में कहीं और होते हैं, गर्मियों
के मौसम में कहीं और। वह मुक़र्ररा औक़ात से
कभी नहीं हटते। लेकिन अफ़्सोस, मेरी क़ौम रब की
शरीअत नहीं जानती।

8 तुम किस तरह कह सकते हो, 'हम दानिशमन्द
हैं, क्यूँकि हमारे पास रब की शरीअत है'? हक़ीक़त
में क़ातिबों के फ़रेबदिह क़लम ने इसे तोड़-मरोड़
कर बयान किया है। 9 सुनो, दानिशमन्दों की रुस्वाई
हो जाएगी, वह दहशतज़दा हो कर पकड़े जाएंगे।
देखो, रब का कलाम रद्द करने के बाद उन की अपनी
हिक्मत कहाँ रही?

10 इस लिए मैं उन की बीवियों को परदेसियों के
हवाले कर दूँगा और उन के खेतों को ऐसे लोगों के
सपुर्द जो उन्हें निकाल देंगे। क्यूँकि छोटे से ले कर
बड़े तक सब के सब नाजाइज़ नफ़ा के पीछे पड़े
हैं, नबियों से ले कर इमामों तक सब धोकेबाज़ हैं।
11 वह मेरी क़ौम के ज़ख़्म पर आरिज़ी मर्हम-पट्टी लगा
कर कहते हैं, 'अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब
सलामती का दौर आ गया है' हालाँकि सलामती है
ही नहीं।

12 गो ऐसा घिनौना रवय्या उन के लिए शर्म का
बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते
बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इस लिए जब सब कुछ गिर
जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन पर
सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खा कर ख़ाक में
मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

13 रब फ़रमाता है, "मैं उन की पूरी फ़सल छीन
लूँगा। अंगूर की बेल पर एक दाना भी नहीं रहेगा,
अन्जीर के तमाम दरख़्त फल से महरूम हो जाएंगे

बल्कि तमाम पत्ते भी झड़ जाएंगे। जो कुछ भी मैं ने
उन्हें अता किया था वह उन से छीन लिया जाएगा।
14 तब तुम कहोगे, 'हम यहाँ क्यूँ बैठे रहें? आओ,
हम क़िलाबन्द शहरों में पनाह ले कर वहीं हलाक
हो जाएँ। हम ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया है,
और अब हम इस का नतीजा भुगत रहे हैं। क्यूँकि
उसी ने हमें हलाकत के हवाले करके हमें ज़हरीला
पानी पिला दिया है। 15 हम सलामती के इन्तिज़ार में
रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शिफ़ा पाने की
उम्मीद रखते थे, लेकिन इस के बजाय हम पर दहशत
छा गई। 16 सुनो! दुश्मन के घोड़े नथने फुला रहे हैं।
दान से उन का शोर हम तक पहुँच रहा है। उन के
हिनहिनाने से पूरा मुल्क थरथरा रहा है, क्यूँकि आते
वक़्त यह पूरे मुल्क को उस के शहरों और बाशिन्दों
समेत हड़प कर लेंगे'।"

अपनी क़ौम पर यरमियाह का नोहा

17 रब फ़रमाता है, "मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ अफ़ई भेज
दूँगा, ऐसे ज़हरीले साँप जिन के ख़िलाफ़ हर जादूमंत्र
बेअसर रहेगा। यह तुम्हें काटेंगे।" 18 लाइलाज ग़म
मुझ पर हावी हो गया, मेरा दिल निढाल हो गया है।
19 सुनो! मेरी क़ौम दूरदराज़ मुल्क से चीख़ चीख़ कर
मदद के लिए आवाज़ दे रही है। लोग पूछते हैं, "क्या
रब सिय्यून में नहीं है, क्या यरूशलम का बादशाह
अब से वहाँ सुकूनत नहीं करता?" "सुनो, उन्हों ने
अपने मुजस्समों और बेकार अजनबी बुतों की पूजा
करके मुझे क्यूँ तैश दिलाया?"
20 लोग आहें भर भर कर कहते हैं, "फ़सल कट
गई है, फल चुना गया है, लेकिन अब तक हमें नजात
हासिल नहीं हुई।"
21 मेरी क़ौम की मुकम्मल तबाही देख कर मेरा दिल
टूट गया है। मैं मातम कर रहा हूँ, क्यूँकि उस की
हालत इतनी बुरी है कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं।
22 क्या जिलिआद में मर्हम नहीं? क्या वहाँ डाक्टर
नहीं मिलता? मुझे बताओ, मेरी क़ौम का ज़ख़्म क्यूँ
नहीं भरता?

9 1 काश मेरा सर पानी का मम्बा और मेरी आँखें
आँसूओं का चश्मा हों ताकि मैं दिन रात अपनी
क़ौम के मक़्तूलों पर आह-ओ-ज़ारी कर सकूँ।

धोकेबाज़ों की क़ौम

2 काश रेगिस्तान में कहीं मुसाफ़िरों के लिए सराय
हो ताकि मैं अपनी क़ौम को छोड़ कर वहाँ चला
जाऊँ। क्यूँकि सब ज़िनाकार, सब ग़द्दारों का जथ्था
हैं।
3 रब फ़रमाता है, "वह अपनी ज़बान से झूट के तीर
चलाते हैं, और मुल्क में उन की ताक़त दयानतदारी
पर मब्नी नहीं होती। नीज़, वह बदतर होते जा रहे हैं।
मुझे तो वह जानते ही नहीं। 4 हर एक अपने पड़ोसी
से ख़बरदार रहे, और अपने किसी भी भाई पर भरोसा
मत रखना। क्यूँकि हर भाई चालाकी करने में माहिर
है, और हर पड़ोसी तुहमत लगाने पर तुला रहता है।
5 हर एक अपने पड़ोसी को धोका देता है, कोई भी
सच नहीं बोलता। उन्हों ने अपनी ज़बान को झूट
बोलना सिखाया है, और अब वह ग़लत काम करते
करते थक गए हैं। 6 ऐ यरमियाह, तू फ़रेब से घिरा
रहता है, और यह लोग फ़रेब के बाइस ही मुझे जानने
से इन्कार करते हैं।"
7 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "देखो,
मैं उन्हें ख़ाम चाँदी की तरह पिघला कर आज़माऊँगा,
क्यूँकि मैं अपनी क़ौम, अपनी बेटी के साथ और क्या
कर सकता हूँ? 8 उन की ज़बानें मोहलिक तीर हैं। उन
के मुँह पड़ोसी से सुलह-सलामती की बातें करते हैं
जबकि अन्दर ही अन्दर वह उस की ताक में बैठे
हैं।" 9 रब फ़रमाता है, "क्या मुझे उन्हें इस की सज़ा
नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे ऐसी क़ौम से बदला नहीं
लेना चाहिए?"

नोहा करो!

10 मैं पहाड़ों के बारे में आह-ओ-ज़ारी करूँगा,
बयाबान की चरागाहों पर मातम का गीत गाऊँगा।
क्यूँकि वह यूँ तबाह हो गए हैं कि न कोई उन में

से गुज़रता, न रेवड़ों की आवाज़ें उन में सुनाई देती
हैं। परिन्दे और जानवर सब भाग कर चले गए हैं।
11 "यरूशलम को मैं मल्बे का ढेर बना दूँगा, और
आइन्दा गीदड़ उस में जा बसेंगे। यहूदाह के शहरों
को मैं वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। एक भी उन में
नहीं बसेगा।"

12 कौन इतना दानिशमन्द है कि यह समझ सके?
किस को रब से इतनी हिदायत मिली है कि वह बयान
कर सके कि मुल्क क्यूँ बर्बाद हो गया है? वह क्यूँ
रेगिस्तान जैसा बन गया है, इतना वीरान कि उस में
से कोई नहीं गुज़रता?

13 रब ने फ़रमाया, "वजह यह है कि उन्हों ने मेरी
शरीअत को तर्क किया, वह हिदायत जो मैं ने ख़ुद
उन्हें दी थी। न उन्हों ने मेरी सुनी, न मेरी शरीअत की
पैरवी की। 14 इस के बजाय वह अपने ज़िद्दी दिलों
की पैरवी करके बाल देवताओं के पीछे लग गए हैं।
उन्हों ने वही कुछ किया जो उन के बापदादा ने उन्हें
सिखाया था।"

15 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "देखो, मैं इस क़ौम को कड़वा
खाना खिला कर ज़हरीला पानी पिला दूँगा। 16 मैं
उन्हें ऐसी क़ौमों में मुन्तशिर कर दूँगा जिन से न वह
और न उन के बापदादा वाक़िफ़ थे। मेरी तलवार उस
वक़्त तक उन के पीछे पड़ी रहेगी जब तक हलाक न
हो जाएँ।" 17 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ध्यान
दे कर गिर्या करने वाली औरतों को बुलाओ। जो
जनाज़ों पर वावैला करती हैं उन में से सब से माहिर
औरतों को बुलाओ।

18 वह जल्द आ कर हम पर आह-ओ-ज़ारी करें
ताकि हमारी आँखों से आँसू बह निकलें, हमारी
पलकों से पानी ख़ूब टपकने लगे।

19 क्यूँकि सिय्यून से गिर्या की आवाज़ें बुलन्द हो
रही हैं, 'हाय, हमारे साथ कैसी ज़ियादती हुई है,
हमारी कैसी रुस्वाई हुई है! हम मुल्क को छोड़ने पर
मज्बूर हैं, क्यूँकि दुश्मन ने हमारे घरों को ढा दिया
है'।"

20 ऐ औरतो, रब का पैग़ाम सुनो। अपने कानों को
उस की हर बात पर धरो! अपनी बेटियों को नोहा
करने की तालीम दो, एक दूसरी को मातम का यह
गीत सिखाओ,

21 "मौत फलाँग कर हमारी खिड़कियों में से घुस
आई और हमारे क़िलों में दाख़िल हुई है। अब वह
बच्चों को गलियों में से और नौजवानों को चौकों में
से मिटा डालने जा रही है।"

22 रब फ़रमाता है, "नाशें खेतों में गोबर की तरह
इधर उधर बिखरी पड़ी रहेंगी। जिस तरह कटा हुआ
गन्दुम फ़सल काटने वाले के पीछे इधर उधर पड़ा
रहता है उसी तरह लाशें इधर उधर पड़ी रहेंगी।
लेकिन उन्हें इकट्ठा करने वाला कोई नहीं होगा।"

23 रब फ़रमाता है, "न दानिशमन्द अपनी हिक्मत
पर फ़ख़र करे, न ज़ोरावर अपने ज़ोर पर या अमीर
अपनी दौलत पर। 24 फ़ख़र करने वाला फ़ख़र करे
कि उसे समझ हासिल है, कि वह रब को जानता है
और कि मैं रब हूँ जो दुनिया में मेहरबानी, इन्साफ़
और रास्ती को अमल में लाता हूँ। क्यूँकि यही चीज़ें
मुझे पसन्द हैं।"

25 रब फ़रमाता है, "ऐसा वक़्त आ रहा है जब मैं
उन सब को सज़ा दूँगा जिन का सिर्फ़ जिस्मानी ख़तना
हुआ है। 26 इन में मिस्र, यहूदाह, अदोम, अम्मोन,
मोआब और वह शामिल हैं जो रेगिस्तान के किनारे
किनारे रहते हैं। क्यूँकि गो यह तमाम अक़्वाम ज़ाहिरी
तौर पर ख़तना की रस्म अदा करती हैं, लेकिन उन
का ख़तना बातिनी तौर पर नहीं हुआ। ध्यान दो कि
इस्राईल की भी यही हालत है।"

बुत बेफ़ाइदा हैं

10 1 ऐ इस्राईल के घराने, रब का पैग़ाम सुन!
2 रब फ़रमाता है, "दीगर अक़्वाम की
बुतपरस्ती मत अपनाना। यह लोग इल्म-ए-नुजूम
से मुस्तक़बिल जान लेने की कोशिश करते करते
परेशान हो जाते हैं, लेकिन तुम उन की बातों से
परेशान न हो जाओ। 3 क्यूँकि दीगर क़ौमों के रस्म-

ओ-रिवाज फ़ुज़ूल ही हैं। जंगल में दरख़्त कट जाता
है, फिर कारीगर उसे अपने औज़ार से तश्कील देता
है। 4 लोग उसे अपनी सोना-चाँदी से सजा कर कीलों
से कहीं लगा देते हैं ताकि हिले न। 5 बुत उन पुतलों
की मानिन्द हैं जो खीरे के खेत में खड़े किए जाते हैं
ताकि परिन्दों को भगा दें। न वह बोल सकते, न चल
सकते हैं, इस लिए लोग उन्हें उठा कर अपने साथ
ले जाते हैं। उन से मत डरना, क्यूँकि न वह नुक़्सान
का बाइस हैं, न भलाई का।”

6 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है, तू अज़ीम है,
तेरे नाम की अज़मत ज़ोरदार तरीक़े से ज़ाहिर हुई
है। 7 ऐ अक़्वाम के बादशाह, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं
मानेगा? क्यूँकि तू इस लाइक़ है। अक़्वाम के तमाम
दानिशमन्दों और उन के तमाम ममालिक में तुझ
जैसा कोई नहीं है। 8 सब अहमक़ और बेवुक़ूफ़
साबित हुए हैं, क्यूँकि उन की तर्बियत लकड़ी के
बेकार बुतों से हासिल हुई है। 9 तरसीस से चाँदी की
चादरें और ऊफ़ाज़ से सोना लाया जाता है। उन से
कारीगर और सुनार बुत बना देते हैं जिसे क़िर्मिज़ी
और अर्ग़वानी रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं। सब
कुछ माहिर उस्तादों के हाथ से बनाया जाता है।

10 लेकिन रब ही हक़ीक़ी ख़ुदा है। वही ज़िन्दा ख़ुदा
और अबदी बादशाह है। जब वह नाराज़ हो जाता है
तो ज़मीन लरज़ने लगती है। अक़्वाम उस का क़हर
बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।

11 बुतपरस्तों को बताओ कि देवताओं ने न
आसमान को बनाया और न ज़मीन को, उन का नाम-
ओ-निशान तो आसमान-ओ-ज़मीन से मिट जाएगा।
12 देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को
ख़ल्क़ किया, उसी ने अपनी हिक्मत से दुनिया की
बुन्याद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़
आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 13 उस के
हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते
हैं। वह दुनिया की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता,
बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने
गोदामों से हवा निकलने देता है।

14 तमाम इन्सान अहमक़ और समझ से ख़ाली हैं।
हर सुनार अपने बुतों के बाइस शर्मिन्दा हुआ है। उस
के बुत धोका ही हैं, उन में दम नहीं। 15 वह फ़ुज़ूल
और मज़्हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो
जाएंगे। 16 अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है
इन की मानिन्द नहीं है। वह सब का ख़ालिक़ है,
और इस्राईली क़ौम उस का मौरूसी हिस्सा है। रब्ब-
उल-अफ़्वाज ही उस का नाम है।

आने वाली जिलावतनी

17 ऐ मुहासराशुदा शहर, अपना सामान समेट कर
मुल्क से निकलने की तय्यारियाँ कर ले। 18 क्यूँकि
रब फ़रमाता है, “इस बार मैं मुल्क के बाशिन्दों को
बाहर फैंक दूँगा। मैं उन्हें तंग करूँगा ताकि उन्हें
पकड़ा जाए।”

19 हाय, मेरा बेड़ा ग़र्क़ हो गया है! हाय, मेरा ज़ख़्म
भर नहीं सकता। पहले मैं ने सोचा कि यह ऐसी
बीमारी है जिसे मुझे बर्दाश्त ही करना है। 20 लेकिन
अब मेरा ख़ैमा तबाह हो गया है, उस के तमाम रस्से
टूट गए हैं। मेरे बेटे मेरे पास से चले गए हैं, एक भी
नहीं रहा। कोई नहीं है जो मेरा ख़ैमा दुबारा लगाए, जो
उस के पर्दे नए सिरे से लटकाए। 21 क्यूँकि क़ौम के
गल्लाबान अहमक़ हो गए हैं, उन्हों ने रब को तलाश
नहीं किया। इस लिए वह कामयाब नहीं रहे, और
उन का पूरा रेवड़ तित्तर-बित्तर हो गया है।

22 सुनो! एक ख़बर पहुँच रही है, शिमाली मुल्क से
शोर-ओ-ग़ौग़ा सुनाई दे रहा है। यहूदाह के शहर उस
की ज़द में आ कर बर्बाद हो जाएंगे। आइन्दा गीदड़
ही उन में बसेंगे।

23 ऐ रब, मैं ने जान लिया है कि इन्सान की राह उस
के अपने हाथ में नहीं होती। अपनी मर्ज़ी से न वह
चलता, न क़दम उठाता है। 24 ऐ रब, मेरी तम्बीह कर,
लेकिन मुनासिब हद तक। तैश में आ कर मेरी तम्बीह
न कर, वर्ना मैं भस्म हो जाऊँगा। 25 अपना ग़ज़ब उन
अक़्वाम पर नाज़िल कर जो तुझे नहीं जानतीं, उन
उम्मतों पर जो तेरा नाम ले कर तुझे नहीं पुकारतीं।

क्यूँकि उन्हों ने याक़ूब को हड़प कर लिया है। उन्हों ने उसे मुकम्मल तौर पर निगल कर उस की चरागाह को तबाह कर दिया है।

क़ौम की अह्दशिकनी

11 1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 "यरूशलम और यहूदाह के बाशिन्दों से कह कि उस अह्द की शराइत पर ध्यान दो जो मैं ने तुम्हारे साथ बांधा था। 3 रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि उस पर लानत जो उस अह्द की शराइत पूरी न करे 4 जो मैं ने तुम्हारे बापदादा से बांधा था जब उन्हें मिस्र से निकाल लाया, उस मक़ाम से जो लोहा पिघलाने वाली भट्टी की मानिन्द था। उस वक़्त मैं बोला, 'मेरी सुनो और मेरे हर हुक्म पर अमल करो तो तुम मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 5 फिर मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था, मैं तुम्हें वह मुल्क दूँगा जिस में दूध और शहद की कस्रत है।' आज तुम उसी मुल्क में रह रहे हो।"

मैं, यरमियाह ने जवाब दिया, "ऐ रब, आमीन, ऐसा ही हो!"

6 तब रब ने मुझे हुक्म दिया कि यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में फिर कर यह तमाम बातें सुना दे। एलान कर, "अह्द की शराइत पर ध्यान दे कर उन पर अमल करो। 7 तुम्हारे बापदादा को मिस्र से निकालते वक़्त मैं ने उन्हें आगाह किया कि मेरी सुनो। आज तक मैं बार बार यही बात दुहराता रहा, 8 लेकिन उन्हों ने न मेरी सुनी, न ध्यान दिया बल्कि हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा। अह्द की जिन बातों पर मैं ने उन्हें अमल करने का हुक्म दिया था उन पर उन्हों ने अमल न किया। नतीजे में मैं उन पर वह तमाम लानतें लाया जो अह्द में बयान की गई हैं।"

9 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, "यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों ने मेरे ख़िलाफ़ साज़िश की है। 10 उन से वही गुनाह सरज़द हुए हैं जो उन के बापदादा ने किए थे। क्यूँकि यह भी मेरी बातें सुनने के लिए तय्यार नहीं हैं, यह भी अजनबी माबूदों के पीछे हो लिए हैं ताकि उन की ख़िदमत करें। इस्राईल और यहूदाह ने मिल कर वह अह्द तोड़ा है जो मैं ने उन के बापदादा से बांधा था।

11 इस लिए रब फ़रमाता है कि मैं उन पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा जिस से वह बच नहीं सकेंगे। तब वह मदद के लिए मुझ से फ़र्याद करेंगे, लेकिन मैं उन की नहीं सुनूँगा। 12 फिर यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दे अपने शहरों से निकल कर चीख़ते चिल्लाते उन देवताओं से मिन्नत करेंगे जिन के सामने बख़ूर जलाते रहे हैं। लेकिन अब जब वह मुसीबत में मुब्तला होंगे तो यह उन्हें नहीं बचाएँगे। 13 ऐ यहूदाह, तेरे देवता तेरे शहरों जैसे बेशुमार हो गए हैं। शर्मनाक देवता बाल के लिए बख़ूर जलाने की इतनी क़ुर्बानगाहें खड़ी की गई हैं जितनी यरूशलम में गलियाँ होती हैं। 14 ऐ यरमियाह, इस क़ौम के लिए दुआ मत करना! इस के लिए न मिन्नत कर, न समाजत। क्यूँकि जब आफ़त उन पर आएगी और वह चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद करेंगे तो मैं उन की नहीं सुनूँगा।

15 मेरी प्यारी क़ौम मेरे घर में क्यूँ हाज़िर होती है? वह तो अपनी बेशुमार साज़िशों से बाज़ ही नहीं आती। क्या आने वाली आफ़त क़ुर्बानी का मुक़द्दस गोश्त पेश करने से रुक जाएगी? अगर ऐसा होता तो तू ख़ुशी मना सकती।

16 रब ने तेरा नाम 'ज़ैतून का फलता फूलता दरख़्त जिस का ख़ूबसूरत फल है' रखा, लेकिन अब वह ज़बरदस्त आँधी का शोर मचा कर दरख़्त को आग लगाएगा। तब उस की तमाम डालियाँ भस्म हो जाएँगी। 17 ऐ इस्राईल और यहूदाह, रब्ब-उल-अफ़्वाज ने ख़ुद तुम्हें ज़मीन में लगाया। लेकिन अब उस ने तुम पर आफ़त लाने का फ़ैसला किया है। क्यूँ? तुम्हारे ग़लत काम की वजह से, और इस लिए कि तुम ने बाल देवता को बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश करके मुझे तैश दिलाया है।"

यरमियाह के लिए जान का ख़तरा

18 रब ने मुझे इत्तिला दी तो मुझे मालूम हुआ। हाँ,
उस वक़्त तू ही ने मुझे उन के मन्सूबों से आगाह
किया। 19 पहले मैं उस भूले-भाले भेड़ के बच्चे की
मानिन्द था जिसे क़साई के पास लाया जा रहा हो।
मुझे क्या पता था कि यह मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर
रहे हैं। आपस में वह कह रहे थे, "आओ, हम दरख़्त
को फल समेत ख़त्म करें, आओ हम उसे ज़िन्दों के
मुल्क में से मिटाएँ ताकि उस का नाम-ओ-निशान
तक याद न रहे।"
20 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तू आदिल मुन्सिफ़ है जो
लोगों के सब से गहरे ख़यालात और राज़ जाँच
लेता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह
इन्तिक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्यूँकि
मैं ने अपना मुआमला तेरे ही सपुर्द कर दिया है।
21 रब फ़रमाता है, "अनतोत के आदमी तुझे क़त्ल
करना चाहते हैं। वह कहते हैं, 'रब का नाम ले कर
नबुव्वत मत करना, वर्ना तू हमारे हाथों मार दिया
जाएगा'।" 22 चूँकि यह लोग ऐसी बातें करते हैं इस
लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "मैं उन्हें सज़ा
दूँगा! उन के जवान आदमी तलवार से और उन के
बेटे-बेटियाँ काल से हलाक हो जाएंगे। 23 उन में से
एक भी नहीं बचेगा। क्यूँकि जिस साल उन की सज़ा
नाज़िल होगी, उस वक़्त मैं अनतोत के आदमियों पर
सख़्त आफ़त लाऊँगा।"

बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यूँ हासिल होती है?

12 1 ऐ रब, तू हमेशा हक़ पर है, लिहाज़ा
अदालत में तुझ से शिकायत करने का क्या
फ़ाइदा? ताहम मैं अपना मुआमला तुझे पेश करना
चाहता हूँ। बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यूँ हासिल
होती है? ग़द्दार इतने सुकून से ज़िन्दगी क्यूँ गुज़ारते
हैं? 2 तू ने उन्हें ज़मीन में लगा दिया, और अब वह
जड़ पकड़ कर ख़ूब उगने लगे बल्कि फल भी ला रहे
हैं। गो तेरा नाम उन की ज़बान पर रहता है, लेकिन उन
का दिल तुझ से दूर है। 3 लेकिन ऐ रब, तू मुझे जानता
है। तू मेरा मुलाहज़ा करके मेरे दिल को परखता रहता
है। गुज़ारिश है कि तू उन्हें भेड़ों की तरह घसीट कर
ज़बह करने के लिए ले जा। उन्हें क़त्ल-ओ-ग़ारत के
दिन के लिए मख़्सूस कर!
4 मुल्क कब तक काल की गिरिफ़्त में रहेगा? खेतों
में हरियाली कब तक मुरझाई हुई नज़र आएगी?
बाशिन्दों की बुराई के बाइस जानवर और परिन्दे
ग़ाइब हो गए हैं। क्यूँकि लोग कहते हैं, "अल्लाह को
नहीं मालूम कि हमारे साथ क्या हो जाएगा।"
5 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "पैदल चलने वालों
से दौड़ का मुक़ाबला करना तुझे थका देता है,
तो फिर तू किस तरह घोड़ों का मुक़ाबला करेगा?
तू अपने आप को सिर्फ़ वहाँ महफ़ूज़ समझता है
जहाँ चारों तरफ़ अम्न-ओ-अमान फैला हुआ है, तो
फिर तू दरया-ए-यर्दन के गुंजान जंगल से किस तरह
निपटेगा? 6 क्यूँकि तेरे सगे भाई, हाँ तेरे बाप का घर
भी तुझ से बेवफ़ा हो गया है। यह भी बुलन्द आवाज़
से तेरे पीछे तुझे गालियाँ देते हैं। उन पर एतिमाद मत
करना, ख़्वाह वह तेरे साथ अच्छी बातें क्यूँ न करें।

अल्लाह अपने मुल्क पर मातम करता है

7 मैं ने अपने घर इस्राईल को तर्क कर दिया है।
जो मेरी मौरूसी मिलकियत थी उसे मैं ने रद्द किया
है। मैं ने अपने लख़्त-ए-जिगर को उस के दुश्मनों
के हवाले कर दिया है। 8 क्यूँकि मेरी क़ौम जो मेरी
मौरूसी मिलकियत है मेरे साथ बुरा सुलूक करती है।
जंगल में शेरबबर की तरह वह मेरे ख़िलाफ़ दहाड़ती
है, इस लिए मैं उस से नफ़रत करता हूँ। 9 अब मेरी
मौरूसी मिलकियत उस रंगीन शिकारी परिन्दे की
मानिन्द है जिसे दीगर शिकारी परिन्दों ने घेर रखा है।
जाओ, तमाम दरिन्दों को इकट्ठा करो ताकि वह आ
कर उसे खा जाएँ। 10 मुतअद्दिद गल्लाबानों ने मेरे अंगूर
के बाग़ को ख़राब कर दिया है। मेरे प्यारे खेत को
उन्हों ने पाँओ तले रौंद कर रेगिस्तान में बदल दिया
है। 11 अब वह बंजर ज़मीन बन कर उजाड़ हालत

में मेरे सामने मातम करता है। पूरा मुल्क वीरान-ओ-
सुन्सान है, लेकिन कोई पर्वा नहीं करता।
12 तबाहकुन फ़ौजी बयाबान की बंजर बुलन्दियों
पर से उतर कर क़रीब पहुँच रहे हैं। क्यूँकि रब की
तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब
कुछ खा जाएगी। कोई भी नहीं बचेगा।
13 इस क़ौम ने गन्दुम का बीज बोया, लेकिन काँटों
की फ़सल पक गई। ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त करने के
बावुजूद भी कुछ हासिल न हुआ, क्यूँकि रब का
सख़्त ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल हो रहा है। चुनाँचे अब
रुस्वाई की फ़सल काटो!”

अल्लाह का पड़ोसी ममालिक के लिए पैग़ाम

14 रब फ़रमाता है, “मैं उन तमाम शरीर पड़ोसी
ममालिक को जड़ से उखाड़ दूँगा जो मेरी क़ौम
इस्राईल की मिलकियत को छीनने की कोशिश कर
रहे हैं, वह मिलकियत जो मैं ने ख़ुद उन्हें मीरास
में दी थी। साथ साथ मैं यहूदाह को भी जड़ से
उन के दरमियान से निकाल दूँगा। 15 लेकिन बाद
में मैं उन पर तरस खा कर हर एक को फिर उस
की अपनी मौरूसी ज़मीन और अपने मुल्क में पहुँचा
दूँगा। 16 पहले उन दीगर क़ौमों ने मेरी क़ौम को बाल
देवता की क़सम खाने का तर्ज़ सिखाया। लेकिन अब
अगर वह मेरी क़ौम की राहें अच्छी तरह सीख कर
मेरे ही नाम और मेरी ही हयात की क़सम खाएँ तो
मेरी क़ौम के दरमियान रह कर अज़ सर-ए-नौ क़ाइम
हो जाएँगी। 17 लेकिन जो क़ौम मेरी नहीं सुनेगी उसे
मैं हत्मी तौर पर जड़ से उखाड़ कर नेस्त कर दूँगा।”
यह रब का फ़रमान है।

गली सड़ी लँगोटी

13 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, “जा, कतान
की लँगोटी ख़रीद कर उसे बांध ले। लेकिन
वह भीग न जाए।” 2 मैं ने ऐसा ही किया। लँगोटी
ख़रीद कर मैं ने उसे बांध लिया। 3 तब रब का कलाम
दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ, 4 “अब वह लँगोटी ले
जो तू ने ख़रीद कर बांध ली है। दरया-ए-फ़ुरात के
पास जा कर उसे किसी चटान की दराड़ में छुपा दे।”
5 चुनाँचे मैं रवाना हो कर दरया-ए-फ़ुरात के किनारे
पहुँच गया। वहाँ मैं ने लँगोटी को कहीं छुपा दिया
जिस तरह रब ने हुक्म दिया था। 6 बहुत दिन गुज़र
गए। फिर रब मुझ से एक बार फिर हमकलाम हुआ,
“उठ, दरया-ए-फ़ुरात के पास जा कर वह लँगोटी
निकाल ला जो मैं ने तुझे वहाँ छुपाने को कहा था।”
7 चुनाँचे मैं रवाना हो कर दरया-ए-फ़ुरात के पास
पहुँच गया। वहाँ मैं ने खोद कर लँगोटी को उस
जगह से निकाल लिया जहाँ मैं ने उसे छुपा दिया
था। लेकिन अफ़्सोस, वह गल सड़ गई थी, बिलकुल
बेकार हो गई थी।
8 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 9 “जिस
तरह यह कपड़ा ज़मीन में दब कर गल सड़ गया उसी
तरह मैं यहूदाह और यरूशलम का बड़ा घमंड ख़ाक
में मिला दूँगा। 10 यह ख़राब लोग मेरी बातें सुनने के
लिए तय्यार नहीं बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। अजनबी माबूदों
के पीछे लग कर यह उन ही की ख़िदमत और पूजा
करते हैं। लेकिन इन का अन्जाम लँगोटी की मानिन्द
ही होगा। यह बेकार हो जाएंगे। 11 क्यूँकि जिस तरह
लँगोटी आदमी की कमर के साथ लिपटी रहती है
उसी तरह मैं ने पूरे इस्राईल और पूरे यहूदाह को अपने
साथ लिपटने का मौक़ा फ़राहम किया ताकि वह मेरी
क़ौम और मेरी शुहरत, तारीफ़ और इज़्ज़त का बाइस
बन जाएँ। लेकिन अफ़्सोस, वह सुनने के लिए तय्यार
नहीं थे।” यह रब का फ़रमान है।

मै के घड़े भरे हुए हैं

12 “उन्हें बता दे कि रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘हर घड़े को मै से भरना है।’ वह जवाब में कहेंगे,
‘हम तो ख़ुद जानते हैं कि हर घड़े को मै से भरना
है।’ 13 तब उन्हें इस का मतलब बता। ‘रब फ़रमाता
है कि इस मुल्क के तमाम बाशिन्दे घड़े हैं जिन्हें
मैं मै से भर दूँगा। दाऊद के तख़्त पर बैठने वाले

बादशाह, इमाम, नबी और यरूशलम के तमाम रहने
वाले सब के सब भर भर कर नशे में धुत हो जाएंगे।
14 तब मैं उन्हें एक दूसरे के साथ टकरा दूँगा, और
बाप बेटों के साथ मिल कर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे।
न मैं तरस खाऊँगा, न उन पर रहम करूँगा बल्कि
हमदर्दी दिखाए बग़ैर उन्हें तबाह करूँगा'।" यह रब
का फ़रमान है।

क़ैद की हैबतनाक हालत

15 ध्यान से सुनो! मग़ुरूर न हो, क्यूँकि रब ने ख़ुद
फ़रमाया है। 16 इस से पहले कि तारीकी फैल जाए
और तुम्हारे पाँओ धुन्दलेपन में पहाड़ों के साथ
ठोकर खाएँ, रब अपने ख़ुदा को जलाल दो! क्यूँकि
उस वक़्त गो तुम रौशनी के इन्तिज़ार में रहोगे, लेकिन
अल्लाह अंधेरे को मज़ीद बढ़ाएगा, गहरी तारीकी तुम
पर छा जाएगी। 17 लेकिन अगर तुम न सुनो तो मैं
तुम्हारे तकब्बुर को देख कर पोशीदगी में गिर्या-ओ-
ज़ारी करूँगा। मैं ज़ार ज़ार रोऊँगा, मेरी आँखों से
आँसू ज़ोर से टपकेंगे, क्यूँकि दुश्मन रब के रेवड़ को
पकड़ कर जिलावतन कर देगा।

18 बादशाह और उस की माँ को इत्तिला दे, "अपने
तख़्तों से उतर कर ज़मीन पर बैठ जाओ, क्यूँकि
तुम्हारी शान का ताज तुम्हारे सरों से गिर गया है।"
19 दश्त-ए-नजब के शहर बन्द किए जाएंगे, और
उन्हें खोलने वाला कोई नहीं होगा। पूरे यहूदाह को
जिलावतन कर दिया जाएगा, एक भी नहीं बचेगा।

20 ऐ यरूशलम, अपनी नज़र उठा कर उन्हें देख
जो शिमाल से आ रहे हैं। अब वह रेवड़ कहाँ रहा
जो तेरे सपुर्द किया गया, तेरी शानदार भेड़-बकरियाँ
किधर हैं? 21 तू उस दिन क्या कहेगी जब रब उन्हें
तुझ पर मुक़र्रर करेगा जिन्हें तू ने अपने क़रीबी दोस्त
बनाया था? जन्म देने वाली औरत का सा दर्द तुझ
पर ग़ालिब आएगा। 22 और अगर तेरे दिल में सवाल
उभर आए कि मेरे साथ यह क्यूँ हो रहा है तो सुन! यह
तेरे संगीन गुनाहों की वजह से हो रहा है। इन ही की
वजह से तेरे कपड़े उतारे गए हैं और तेरी इस्मतदरी
हुई है।

23 क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग या चीता
अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है? हरगिज़ नहीं!
तुम भी बदल नहीं सकते। तुम ग़लत काम के इतने
आदी हो गए हो कि सहीह काम कर ही नहीं सकते।

24 "जिस तरह भूसा रेगिस्तान की तेज़ हवा में उड़
कर तित्तर-बित्तर हो जाता है उसी तरह मैं तेरे बाशिन्दों
को मुन्तशिर कर दूँगा।" 25 रब फ़रमाता है, "यही तेरा
अन्जाम होगा, मैं ने ख़ुद मुक़र्रर किया है कि तुझे यह
अज्र मिलना है। क्यूँकि तू ने मुझे भूल कर झूट पर
भरोसा रखा है। 26 मैं ख़ुद तेरे कपड़े उतारूँगा ताकि
तेरी बरहनगी सब को नज़र आए। 27 मैं ने पहाड़ी और
मैदानी इलाक़ों में तेरी घिनौनी हरकतों पर ख़ूब ध्यान
दिया है। तेरी ज़िनाकारी, तेरा मस्ताना हिनहिनाना,
तेरी बेशर्म इस्मतफ़रोशी, सब कुछ मुझे नज़र आता
है। ऐ यरूशलम, तुझ पर अफ़्सोस! तू पाक-साफ़
हो जाने के लिए तय्यार नहीं। मज़ीद कितनी देर
लगेगी?"

काल के दौरान रब का पैग़ाम

14 1 काल के दौरान रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ,

2 "यहूदाह मातम कर रहा है, उस के दरवाज़ों की
हालत क़ाबिल-ए-रहम है। लोग सोगवार हालत में
फ़र्श पर बैठे हैं, और यरूशलम की चीख़ें आसमान
तक बुलन्द हो रही हैं। 3 अमीर अपने नौकरों को
पानी भरने भेजते हैं, लेकिन हौज़ों के पास पहुँच कर
पता चलता है कि पानी नहीं है, इस लिए वह ख़ाली
हाथ वापस आ जाते हैं। शर्मिन्दगी और नदामत के
मारे वह अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 4 बारिश न होने
की वजह से ज़मीन में दराड़ें पड़ गई हैं। खेतों में काम
करने वाले भी शर्म के मारे अपने सरों को ढाँप लेते
हैं। 5 घास नहीं है, इस लिए हिरनी अपने नौमौलूद
बच्चे को छोड़ देती है। 6 जंगली गधे बंजर टीलों पर

खड़े गीदड़ों की तरह हाँपते हैं। हरियाली न मिलने
की वजह से वह बेजान हो रहे हैं।”
7 ऐ रब, हमारे गुनाह हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे रहे
हैं। तो भी अपने नाम की ख़ातिर हम पर रहम कर।
हम मानते हैं कि बुरी तरह बेवफ़ा हो गए हैं, हम ने तेरा
ही गुनाह किया है। 8 ऐ अल्लाह, तू इस्राईल की उम्मीद
है, तू ही मुसीबत के वक़्त उसे छुटकारा देता है। तो
फिर हमारे साथ तेरा सुलूक मुल्क में अजनबी का
सा क्यूँ है? तू रात को कभी इधर कभी इधर ठहरने
वाले मुसाफ़िर जैसा क्यूँ है? 9 तू क्यूँ उस आदमी की
मानिन्द है जो अचानक दम-ब-ख़ुद हो जाता है, उस
सूरमे की मानिन्द जो बेबस हो कर बचा नहीं सकता।
ऐ रब, तू तो हमारे दरमियान ही रहता है, और हम पर
तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हमें तर्क न कर!

इस क़ौम के लिए दुआ मत करना

10 लेकिन रब इस क़ौम के बारे में फ़रमाता है,
“यह लोग आवारा फिरने के शौक़ीन हैं, यह अपने
पाँओ को रोक ही नहीं सकते। मैं उन से नाख़ुश
हूँ। अब मुझे उन के ग़लत काम याद रहेंगे, अब मैं
उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा।” 11 रब मज़ीद मुझ से
हमकलाम हुआ, “इस क़ौम की बहबूदी के लिए दुआ
मत करना। 12 गो यह रोज़ा भी रखें तो भी मैं इन की
इल्तिजाओं पर ध्यान नहीं दूँगा। गो यह भस्म होने
वाली और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ पेश भी करें तो भी मैं
इन से ख़ुश नहीं हूँगा बल्कि इन्हें काल, तलवार और
बीमारियों से नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा।”
13 यह सुन कर मैं ने एतिराज़ किया, “ऐ रब क़ादिर-
ए-मुतलक़, नबी इन्हें बताते आए हैं, ‘न क़त्ल-ओ-
ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा बल्कि मैं यहीं
तुम्हारे लिए अम्न-ओ-अमान का पक्का बन्द-ओ-बस्त
कर लूँगा’।”
14 रब ने जवाब दिया, “नबी मेरा नाम ले कर झूटी
पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। मैं ने न उन्हें भेजा, न
उन्हें कोई ज़िम्मादारी दी और न उन से हमकलाम
हुआ। यह तुम्हें झूटी रोयाएँ, फ़ुज़ूल पेशगोइयाँ और
अपने दिल के वहम सुनाते रहे हैं।” 15 चुनाँचे रब
फ़रमाता है, “यह नबी तलवार और काल की ज़द में
आ कर मर जाएंगे। क्यूँकि गो मैं ने उन्हें नहीं भेजा
तो भी यह मेरे नाम में नबुव्वत करके कहते हैं कि
मुल्क में न क़त्ल-ओ-ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल
पड़ेगा। 16 और जिन लोगों को वह अपनी नबुव्वतें
सुनाते रहे हैं वह तलवार और काल का शिकार बन
जाएंगे, उन की लाशें यरूशलम की गलियों में फैंक
दी जाएँगी। उन्हें दफ़नाने वाला कोई नहीं होगा, न
उन को, न उन की बीवियों को और न उन के बेटे-
बेटियों को। यूँ मैं उन पर उन की अपनी बदकारी
नाज़िल करूँगा।

ऐ रब, हमें मुआफ़ कर!

17 ऐ यरमियाह, उन्हें यह कलाम सुना, ‘दिन रात
मेरे आँसू बह रहे हैं। वह रुक नहीं सकते, क्यूँकि
मेरी क़ौम, मेरी कुंवारी बेटी को गहरी चोट लग गई
है, ऐसा ज़ख़्म जो भर नहीं सकता। 18 दीहात में जा
कर मुझे वह सब नज़र आते हैं जो तलवार से क़त्ल
किए गए हैं। जब मैं शहर में वापस आता हूँ तो चारों
तरफ़ काल के बुरे असरात दिखाई देते हैं। नबी और
इमाम मुल्क में मारे मारे फिर रहे हैं, और उन्हें मालूम
नहीं कि क्या करें’।”
19 ऐ रब, क्या तू ने यहूदाह को सरासर रद्द किया
है? क्या तुझे सिय्यून से इतनी घिन आती है? तू ने
हमें इतनी बार क्यूँ मारा कि हमारा इलाज नामुमकिन
हो गया है? हम अम्न-ओ-अमान के इन्तिज़ार में
रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शिफ़ा पाने की
उम्मीद रखते थे, लेकिन इस के बजाय हम पर दहशत
छा गई।
20 ऐ रब, हम अपनी बेदीनी और अपने बापदादा
का क़ुसूर तस्लीम करते हैं। हम ने तेरा ही गुनाह
किया है। 21 अपने नाम की ख़ातिर हमें हक़ीर न
जान, अपने जलाली तख़्त की बेहुरमती होने न दे!
हमारे साथ अपना अह्द याद कर, उसे मन्सूख़ न
कर। 22 क्या दीगर अक़्वाम के देवताओं में से कोई

है जो बारिश बरसा सके? या क्या आसमान ख़ुद ही
बारिशें ज़मीन पर भेज देता है? हरगिज़ नहीं, बल्कि
तू ही यह सब कुछ करता है, ऐ रब हमारे ख़ुदा। इसी
लिए हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं। तू ही ने यह सारा
इन्तिज़ाम क़ाइम किया है।

सज़ा ज़रूर आएगी, क्यूँकि देर हो गई है

15 1 फिर रब मुझ से हमकलाम हुआ, "अब
से मेरा दिल इस क़ौम की तरफ़ माइल नहीं
होगा, ख़्वाह मूसा और समूएल मेरे सामने आ कर उन
की शफ़ाअत क्यूँ न करें। उन्हें मेरे हुज़ूर से निकाल दे,
वह चले जाएँ! 2 अगर वह तुझ से पूछें, 'हम किधर
जाएँ?' तो उन्हें जवाब दे, 'रब फ़रमाता है कि जिसे
मरना है वह मरे, जिसे तलवार की ज़द में आना है
वह तलवार का लुक़्मा बने, जिसे भूके मरना है वह
भूके मरे, जिसे क़ैद में जाना है वह क़ैद हो जाए'।"
3 रब फ़रमाता है, "मैं उन्हें चार क़िस्म की सज़ा दूँगा।
एक, तलवार उन्हें क़त्ल करेगी। दूसरे, कुत्ते उन की
लाशें घसीट कर ले जाएंगे। तीसरे और चौथे, परिन्दे
और दरिन्दे उन्हें खा खा कर ख़त्म कर देंगे। 4 जब
मैं अपनी क़ौम से निपट लूँगा तो दुनिया के तमाम
ममालिक उस की हालत देख कर काँप उठेंगे। उन
के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह यहूदाह के बादशाह
मनस्सी बिन हिज़क़ियाह की उन शरीर हरकतों का
अन्जाम देखेंगे जो उस ने यरूशलम में की हैं।

5 ऐ यरूशलम, कौन तुझ पर तरस खाएगा, कौन
हमदर्दी का इज़हार करेगा? कौन तेरे घर आ कर तेरा
हाल पूछेगा?" 6 रब फ़रमाता है, "तू ने मुझे रद्द किया,
अपना मुँह मुझ से फेर लिया है। अब मैं अपना हाथ
तेरे ख़िलाफ़ बढ़ा कर तुझे तबाह कर दूँगा। क्यूँकि
मैं हमदर्दी दिखाते दिखाते तंग आ गया हूँ।

7 जिस तरह गन्दुम को हवा में उछाल कर भूसे
से अलग किया जाता है उसी तरह मैं उन्हें मुल्क
के दरवाज़ों के सामने फटकूँगा। चूँकि मेरी क़ौम ने
अपने ग़लत रास्तों को तर्क न किया इस लिए मैं उसे
बेऔलाद बना कर बर्बाद कर दूँगा। 8 उस की बेवाएँ
समुन्दर की रेत जैसी बेशुमार होंगी। दोपहर के वक़्त
ही मैं नौजवानों की माओं पर तबाही नाज़िल करूँगा,
अचानक ही उन पर पेच-ओ-ताब और दहशत छा
जाएगी। 9 सात बच्चों की माँ निढाल हो कर जान से
हाथ धो बैठेगी। दिन के वक़्त ही उस का सूरज डूब
जाएगा, उस का फ़ख़र और इज़्ज़त जाती रहेगी। जो
लोग बच जाएंगे उन्हें मैं दुश्मन के आगे आगे तलवार
से मार डालूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

यरमियाह रब से शिकायत करता है

10 ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़्सोस! अफ़्सोस कि तू
ने मुझ जैसे शख़्स को जन्म दिया जिस के साथ पूरा
मुल्क झगड़ता और लड़ता है। गो मैं ने न उधार दिया
न लिया तो भी सब मुझ पर लानत करते हैं। 11 रब ने
जवाब दिया, "यक़ीनन मैं तुझे मज़बूत करके अपना
अच्छा मक़्सद पूरा करूँगा। यक़ीनन मैं होने दूँगा कि
मुसीबत के वक़्त दुश्मन तुझ से मिन्नत करे।

12 क्यूँकि कोई उस लोहे को तोड़ नहीं सकेगा जो
शिमाल से आएगा, हाँ लोहे और पीतल का वह
सरिया तोड़ा नहीं जाएगा। 13 मैं तेरे ख़ज़ाने दुश्मन को
मुफ़्त में दूँगा। तुझे तमाम गुनाहों का अज्र मिलेगा जब
वह पूरे मुल्क में तेरी दौलत लूटने आएगा। 14 तब मैं
तुझे दुश्मन के ज़रीए एक मुल्क में पहुँचा दूँगा जिस
से तू नावाक़िफ़ है। क्यूँकि मेरे ग़ज़ब की भड़कती
आग तुझे भस्म कर देगी।"

15 ऐ रब, तू सब कुछ जानता है। मुझे याद कर, मेरा
ख़याल कर, ताक़्क़ुब करने वालों से मेरा इन्तिक़ाम
ले! उन्हें यहाँ तक बर्दाश्त न कर कि आख़िरकार मेरा
सफ़ाया हो जाए। इसे ध्यान में रख कि मेरी रुस्वाई
तेरी ही ख़ातिर हो रही है। 16 ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा,
जब भी तेरा कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ तो मैं ने उसे
हज़म किया, और मेरा दिल उस से ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम
हुआ। क्यूँकि मुझ पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।
17 जब दीगर लोग रंगरलियों में अपने दिल बहलाते
थे तो मैं कभी उन के साथ न बैठा, कभी उन की बातों
से लुत्फ़अन्दोज़ न हुआ। नहीं, तेरा हाथ मुझ पर था,

इस लिए मैं दूसरों से दूर ही बैठा रहा। क्यूँकि तू ने
मेरे दिल को क़ौम पर क़हर से भर दिया था। 18 क्या
वजह है कि मेरा दर्द कभी ख़त्म नहीं होता, कि मेरा
ज़ख़्म लाइलाज है और कभी नहीं भरता? तू मेरे लिए
फ़रेबदिह चश्मा बन गया है, ऐसी नदी जिस के पानी
पर एतिमाद नहीं किया जा सकता।

19 रब जवाब में फ़रमाता है, "अगर तू मेरे पास
वापस आए तो मैं तुझे वापस आने दूँगा, और तू
दुबारा मेरे सामने हाज़िर हो सकेगा। और अगर तू
फ़ुज़ूल बातें न करे बल्कि मेरे लाइक़ अल्फ़ाज़ बोले
तो मेरा तर्जुमान होगा। लाज़िम है कि लोग तेरी तरफ़
रुजू करें, लेकिन ख़बरदार, कभी उन की तरफ़ रुजू न
कर!" 20 रब फ़रमाता है, "मैं तुझे पीतल की मज़बूत
दीवार बना दूँगा ताकि तू इस क़ौम का सामना कर
सके। यह तुझ से लड़ेंगे लेकिन तुझ पर ग़ालिब नहीं
आएँगे, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तेरी मदद करके
तुझे बचाए रखूँगा। 21 मैं तुझे बेदीनों के हाथ से
बचाऊँगा और फ़िद्या दे कर ज़ालिमों की गिरिफ़्त
से छुड़ाऊँगा।"

यरमियाह को शादी करने की इजाज़त नहीं

16 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "इस
मक़ाम में न तेरी शादी हो, न तेरे बेटे-बेटियाँ
पैदा हो जाएँ।" 3 क्यूँकि रब यहाँ पैदा होने वाले बेटे-
बेटियों और उन के माँ-बाप के बारे में फ़रमाता है,
4 "वह मोहलिक बीमारियों से मर कर खेतों में गोबर
की तरह पड़े रहेंगे। न कोई उन पर मातम करेगा, न
उन्हें दफ़नाएगा, क्यूँकि वह तलवार और काल से
हलाक हो जाएंगे, और उन की लाशें परिन्दों और
दरिन्दों की ख़ुराक बन जाएँगी।"

5 रब फ़रमाता है, "ऐसे घर में मत जाना जिस में
कोई फ़ौत हो गया है। [y]उस में न मातम करने के लिए,
न अफ़सोस करने के लिए दाख़िल होना। क्यूँकि अब
से मैं इस क़ौम पर अपनी सलामती, मेहरबानी और
रहम का इज़हार नहीं करूँगा।" यह रब का फ़रमान
है। 6 "इस मुल्क के बाशिन्दे मर जाएंगे, ख़्वाह बड़े
हों या छोटे। और न कोई उन्हें दफ़नाएगा, न मातम
करेगा। कोई नहीं होगा जो ग़म के मारे अपनी जिल्द
को काटे या अपने सर को मुंडवाए। 7 किसी का बाप
या माँ भी इन्तिक़ाल कर जाए तो भी लोग मातम करने
वाले घर में नहीं जाएंगे, न तसल्ली देने के लिए जनाज़े
के खाने-पीने में शरीक होंगे। 8 ऐसे घर में भी दाख़िल
न होना जहाँ लोग ज़ियाफ़त कर रहे हैं। उन के साथ
खाने-पीने के लिए मत बैठना।" 9 क्यूँकि रब्ब-उल-
अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, "तुम्हारे
जीते जी, हाँ तुम्हारे देखते देखते मैं यहाँ ख़ुशी-ओ-
शादमानी की आवाज़ें बन्द कर दूँगा। अब से दूल्हा
दुल्हन की आवाज़ें ख़ामोश हो जाएँगी।

10 जब तू इस क़ौम को यह सब कुछ बताएगा तो
लोग पूछेंगे, 'रब इतनी बड़ी आफ़त हम पर लाने पर
क्यूँ तुला हुआ है? हम से क्या जुर्म हुआ है? हम ने
रब अपने ख़ुदा का क्या गुनाह किया है?' 11 उन्हें
जवाब दे, 'वजह यह है कि तुम्हारे बापदादा ने मुझे
तर्क कर दिया। वह मेरी शरीअत के ताबे न रहे बल्कि
मुझे छोड़ कर अजनबी माबूदों के पीछे लग गए और
उन ही की ख़िदमत और पूजा करने लगे। 12 लेकिन
तुम अपने बापदादा की निस्बत कहीं ज़्यादा ग़लत
काम करते हो। देखो, मेरी कोई नहीं सुनता बल्कि हर
एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारता है। 13 इस लिए मैं तुम्हें इस मुल्क से निकाल
कर एक ऐसे मुल्क में फैंक दूँगा जिस से न तुम
और न तुम्हारे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तुम दिन
रात अजनबी माबूदों की ख़िदमत करोगे, क्यूँकि उस
वक़्त मैं तुम पर रहम नहीं करूँगा'।"

जिलावतनी से वापसी

14 लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, "ऐसा वक़्त आने
वाला है कि लोग क़सम खाते वक़्त नहीं कहेंगे, 'रब

---

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जिस में जनाज़े का खाना खिलाया जा रहा है।

की हयात की क़सम जो इस्राईलियों को मिस्र से
निकाल लाया।' 15 इस के बजाय वह कहेंगे, 'रब की
हयात की क़सम जो इस्राईलियों को शिमाली मुल्क
और उन दीगर ममालिक से निकाल लाया जिन में
उस ने उन्हें मुन्तशिर कर दिया था।' क्यूँकि मैं उन्हें
उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैं ने उन के बापदादा
को दिया था।"

आने वाली सज़ा

16 लेकिन मौजूदा हाल के बारे में रब फ़रमाता है,
"मैं बहुत से माहीगीर भेज दूँगा जो जाल डाल कर
उन्हें पकड़ेंगे। इस के बाद मैं मुतअद्दिद शिकारी
भेज दूँगा जो उन का ताक़्क़ुब करके उन्हें हर जगह
पकड़ेंगे, ख़्वाह वह किसी पहाड़ या टीले पर छुप
गए हों, ख़्वाह चटानों की किसी दराड़ में। 17 क्यूँकि
उन की तमाम हरकतें मुझे नज़र आती हैं। मेरे सामने
वह छुप नहीं सकते, और उन का क़ुसूर मेरे सामने
पोशीदा नहीं है। 18 अब मैं उन्हें उन के गुनाहों की
दुगनी सज़ा दूँगा, क्यूँकि उन्हों ने अपने बेजान बुतों
और घिनौनी चीज़ों से मेरी मौरूसी ज़मीन को भर कर
मेरे मुल्क की बेहुरमती की है।"

यरमियाह का रब पर एतिमाद

19 ऐ रब, तू मेरी क़ुव्वत और मेरा क़िला है, मुसीबत
के दिन मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। दुनिया की इन्तिहा
से अक़्वाम तेरे पास आ कर कहेंगी, "हमारे बापदादा
को मीरास में झूट ही मिला, ऐसे बेकार बुत जो उन
की मदद न कर सके। 20 इन्सान किस तरह अपने
लिए ख़ुदा बना सकता है? उस के बुत तो ख़ुदा नहीं
हैं।"

21 रब फ़रमाता है, "चुनाँचे इस बार मैं उन्हें सहीह
पहचान अता करूँगा। वह मेरी क़ुव्वत और ताक़त
को पहचान लेंगे, और वह जान लेंगे कि मेरा नाम रब
है।

यहूदाह का गुनाह और उस की सज़ा

17 1 ऐ यहूदाह के लोगो, तुम्हारा गुनाह तुम्हारी
ज़िन्दगियों का अनमिट हिस्सा बन गया है।
उसे हीरे की नोक रखने वाले लोहे के आले से तुम्हारे
दिलों की तख़्तियों और तुम्हारी क़ुर्बानगाहों के सींगों
पर कन्दा किया गया है। 2 न सिर्फ़ तुम बल्कि तुम्हारे
बच्चे भी अपनी क़ुर्बानगाहों और असीरत देवी के
खम्बों को याद करते हैं, ख़्वाह वह घने दरख़्तों के
साय में या ऊँची जगहों पर क्यूँ न हों। 3 ऐ मेरे पहाड़
जो दीहात से घिरा हुआ है, तेरे पूरे मुल्क पर गुनाह
का असर है, इस लिए मैं होने दूँगा कि सब कुछ लूट
लिया जाएगा। तेरा माल, तेरे ख़ज़ाने और तेरी ऊँची
जगहों की क़ुर्बानगाहें सब छीन ली जाएँगी।

4 अपने क़ुसूर के सबब से तुझे अपनी मौरूसी
मिलकियत छोड़नी पड़ेगी, वह मिलकियत जो तुझे
मेरी तरफ़ से मिली थी। मैं तुझे तेरे दुश्मनों का ग़ुलाम
बना दूँगा, और तू एक नामालूम मुल्क में बसेगा।
क्यूँकि तुम लोगों ने मुझे तैश दिलाया है, और अब
तुम पर मेरा ग़ज़ब कभी न बुझने वाली आग की तरह
भड़कता रहेगा।"

मुख़्तलिफ़ फ़रमान

5 रब फ़रमाता है, "उस पर लानत जिस का दिल रब
से दूर हो कर सिर्फ़ इन्सान और उसी की ताक़त पर
भरोसा रखता है। 6 वह रेगिस्तान में झाड़ी की मानिन्द
होगा, उसे किसी भी अच्छी चीज़ का तजरिबा नहीं
होगा बल्कि वह बयाबान के ऐसे पथरीले और कल्लर
वाले इलाक़ों में बसेगा जहाँ कोई और नहीं रहता।
7 लेकिन मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखता है,
जिस का एतिमाद उसी पर है। 8 वह पानी के किनारे
पर लगे उस दरख़्त की मानिन्द है जिस की जड़ें नहर
तक फैली हुई हैं। झुलसाने वाली गर्मी भी आए तो
उसे डर नहीं, बल्कि उस के पत्ते हरे-भरे रहते हैं।
काल भी पड़े तो वह परेशान नहीं होता बल्कि वक़्त
पर फल लाता रहता है।

9 दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदिह है, और उस का
इलाज नामुमकिन है। कौन उस का सहीह इल्म रखता
है? 10 मैं, रब ही दिल की तफ़्तीश करता हूँ। मैं हर
एक की बातिनी हालत जाँच कर उसे उस के चाल-
चलन और अमल का मुनासिब अज्र देता हूँ।
11 जिस शख़्स ने ग़लत तरीक़े से दौलत जमा की
है वह उस तीतर की मानिन्द है जो किसी दूसरे के
अंडों पर बैठ जाता है। क्यूँकि ज़िन्दगी के उरूज पर
उसे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा, और आख़िरकार उस
की हमाक़त सब पर ज़ाहिर हो जाएगी।"
12 हमारा मक़्दिस अल्लाह का जलाली तख़्त है जो
अज़ल से अज़ीम है। 13 ऐ रब, तू ही इस्राईल की
उम्मीद है। तुझे तर्क करने वाले सब शर्मिन्दा हो
जाएंगे। तुझ से दूर होने वाले ख़ाक में मिलाए जाएंगे,
क्यूँकि उन्हों ने रब को छोड़ दिया है जो ज़िन्दगी के
पानी का सरचश्मा है।

मदद के लिए यरमियाह की दरख़्वास्त

14 ऐ रब, तू ही मुझे शिफ़ा दे तो मुझे शिफ़ा मिलेगी।
तू ही मुझे बचा तो मैं बचूँगा। क्यूँकि तू ही मेरा फ़ख़र
है। 15 लोग मुझ से पूछते रहते हैं, "रब का जो कलाम
तू ने पेश किया वह कहाँ है? उसे पूरा होने दे!" 16 ऐ
अल्लाह, तू ने मुझे अपनी क़ौम का गल्लाबान बनाया है,
और मैं ने यह ज़िम्मादारी कभी नहीं छोड़ी। मैं ने कभी
ख़्वाहिश नहीं रखी कि मुसीबत का दिन आए। तू यह
सब कुछ जानता है, जो भी बात मेरे मुँह से निकली है
वह तेरे सामने है। 17 अब मेरे लिए दहशत का बाइस
न बन! मुसीबत के दिन मैं तुझ में ही पनाह लेता हूँ।
18 मेरा ताक़्क़ुब करने वाले शर्मिन्दा हो जाएँ, लेकिन
मेरी रुस्वाई न हो। उन पर दहशत छा जाए, लेकिन
मैं इस से बचा रहूँ। उन पर मुसीबत का दिन नाज़िल
कर, उन को दो बार कुचल कर ख़ाक में मिला दे।

सबत का दिन मनाओ

19 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "शहर के अवामी
दरवाज़े में खड़ा हो जा, जिसे यहूदाह के बादशाह
इस्तेमाल करते हैं जब शहर में आते और उस से
निकलते हैं। इसी तरह यरूशलम के दीगर दरवाज़ों
में भी खड़ा हो जा। 20 वहाँ लोगों से कह, 'ऐ दरवाज़ों
में से गुज़रने वालो, रब का कलाम सुनो! ऐ यहूदाह
के बादशाहो और यहूदाह और यरूशलम के तमाम
बाशिन्दो, मेरी तरफ़ कान लगाओ!
21 रब फ़रमाता है कि अपनी जान ख़तरे में न डालो
बल्कि ध्यान दो कि तुम सबत के दिन माल-ओ-
अस्बाब शहर में न लाओ और उसे उठा कर शहर
के दरवाज़ों में दाख़िल न हो। 22 न सबत के दिन
बोझ उठा कर अपने घर से कहीं और ले जाओ, न
कोई और काम करो, बल्कि उसे इस तरह मनाना
कि मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। मैं ने तुम्हारे बापदादा
को यह करने का हुक्म दिया था, 23 लेकिन उन्हों ने
मेरी न सुनी, न तवज्जुह दी बल्कि अपने मौक़िफ़ पर
अड़े रहे और न मेरी सुनी, न मेरी तर्बियत क़बूल की।
24 रब फ़रमाता है कि अगर तुम वाक़ई मेरी सुनो
और सबत के दिन अपना माल-ओ-अस्बाब इस शहर
में न लाओ बल्कि आराम करने से यह दिन मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस मानो 25 तो फिर आइन्दा भी दाऊद की
नस्ल के बादशाह और सरदार इस शहर के दरवाज़ों
में से गुज़रेंगे। तब वह घोड़ों और रथों पर सवार हो
कर अपने अफ़सरों और यहूदाह और यरूशलम के
बाशिन्दों के साथ शहर में आते जाते रहेंगे। अगर
तुम सबत को मानो तो यह शहर हमेशा तक आबाद
रहेगा। 26 फिर पूरे मुल्क से लोग यहाँ आएँगे। यहूदाह
के शहरों और यरूशलम के गिर्द-ओ-नवाह के दीहात
से, बिनयमीन के क़बाइली इलाक़े से, मग़रिब के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े से, पहाड़ी इलाक़े से और दश्त-
ए-नजब से सब अपनी क़ुर्बानियाँ ला कर रब के घर में
पेश करेंगे। उन की तमाम भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ,
ज़बह, ग़ल्ला, बख़ूर और सलामती की क़ुर्बानियाँ रब
के घर में चढ़ाई जाएँगी। 27 लेकिन अगर तुम मेरी न
सुनो और सबत का दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस न मानो
तो फिर तुम्हें सख़्त सज़ा मिलेगी। अगर तुम सबत
के दिन अपना माल-ओ-अस्बाब शहर में लाओ तो

मैं इन ही दरवाज़ों में एक न बुझने वाली आग लगा
दूँगा जो जलती जलती यरूशलम के महलों को भस्म
कर देगी'।"

अल्लाह अज़ीम कुम्हार है

18 1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 "उठ
और कुम्हार के घर में जा! वहाँ मैं तुझ
से हमकलाम हूँगा।" 3 चुनाँचे मैं कुम्हार के घर में
पहुँच गया। उस वक़्त वह चाक पर काम कर रहा
था। 4 लेकिन मिट्टी का जो बर्तन वह अपने हाथों से
तश्कील दे रहा था वह ख़राब हो गया। यह देख कर
कुम्हार ने उसी मिट्टी से नया बर्तन बना दिया जो उसे
ज़्यादा पसन्द था।

5 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ, 6 "ऐ इस्राईल,
क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा सुलूक नहीं कर सकता
जैसा कुम्हार अपने बर्तन से करता है? जिस तरह
मिट्टी कुम्हार के हाथ में तश्कील पाती है उसी तरह
तुम मेरे हाथ में तश्कील पाते हो।" यह रब का
फ़रमान है। 7 "कभी मैं एलान करता हूँ कि किसी
क़ौम या सल्तनत को जड़ से उखाड़ दूँगा, उसे गिरा
कर तबाह कर दूँगा। 8 लेकिन कई बार यह क़ौम
अपनी ग़लत राह को तर्क कर देती है। इस सूरत में
मैं पछता कर उस पर वह आफ़त नहीं लाता जो मैं ने
लाने को कहा था। 9 कभी मैं किसी क़ौम या सल्तनत
को पनीरी की तरह लगाने और तामीर करने का
एलान भी करता हूँ। 10 लेकिन अफ़सोस, कई दफ़ा
यह क़ौम मेरी नहीं सुनती बल्कि ऐसा काम करने
लगती है जो मुझे नापसन्द है। इस सूरत में मैं पछता
कर उस पर वह मेहरबानी नहीं करता जिस का एलान
मैं ने किया था।

11 अब यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों से
मुख़ातिब हो कर कह, 'रब फ़रमाता है कि मैं तुम
पर आफ़त लाने की तय्यारियाँ कर रहा हूँ, मैं ने
तुम्हारे ख़िलाफ़ मन्सूबा बांध लिया है। चुनाँचे हर
एक अपनी ग़लत राह से हट कर वापस आए, हर एक
अपना चाल-चलन और अपना रवय्या दुरुस्त करे।'
12 लेकिन अफ़सोस, यह एतिराज़ करेंगे, 'दफ़ा करो!
हम अपने ही मन्सूबे जारी रखेंगे। हर एक अपने शरीर
दिल की ज़िद के मुताबिक़ ही ज़िन्दगी गुज़ारेगा'।"

क़ौम रब को भूल गई है

13 इस लिए रब फ़रमाता है, "दीगर अक़्वाम से
दरयाफ़्त करो कि उन में कभी ऐसी बात सुनने में आई
है। कुंवारी इस्राईल से निहायत घिनौना जुर्म हुआ है!
14 क्या लुबनान की पथरीली चोटियों की बर्फ़ कभी
पिघल कर ख़त्म हो जाती है? क्या दूरदराज़ चश्मों
से बहने वाला बर्फ़ीला पानी कभी थम जाता है?
15 लेकिन मेरी क़ौम मुझे भूल गई है। यह लोग बातिल
बुतों के सामने बख़ूर जलाते हैं, उन चीज़ों के सामने
जिन के बाइस वह ठोकर खा कर क़दीम राहों से हट
गए हैं और अब कच्चे रास्तों पर चल रहे हैं। 16 इस
लिए उन का मुल्क वीरान हो जाएगा, एक ऐसी जगह
जिसे दूसरे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी
गुज़रे उस के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, वह अफ़सोस से
अपना सर हिलाएगा। 17 दुश्मन आएगा तो मैं अपनी
क़ौम को उस के आगे आगे मुन्तशिर करूँगा। जिस
तरह गर्द मशरिक़ी हवा के तेज़ झोंकों से उड़ कर
बिखर जाती है उसी तरह वह तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।
जब आफ़त उन पर नाज़िल होगी तो मैं उन की तरफ़
रुजू नहीं करूँगा बल्कि अपना मुँह उन से फेर लूँगा।"

यरमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

18 यह सुन कर लोग आपस में कहने लगे, "आओ,
हम यरमियाह के ख़िलाफ़ मन्सूबे बांधें, क्यूँकि उस
की बातें सहीह नहीं हैं। न इमाम शरीअत की हिदायत
से, न दानिशमन्द अच्छे मश्वरों से, और न नबी अल्लाह
के कलाम से महरूम हो जाएगा। आओ, हम ज़बानी
उस पर हम्ला करें और उस की बातों पर ध्यान न दें,
ख़्वाह वह कुछ भी क्यूँ न कहे।"

19 ऐ रब, मुझ पर तवज्जुह दे और उस पर ग़ौर कर
जो मेरे मुख़ालिफ़ कह रहे हैं। 20 क्या इन्सान को नेक
काम के बदले में बुरा काम करना चाहिए? क्यूँकि

उन्हों ने मुझे फंसाने के लिए गढ़ा खोद कर तय्यार कर रखा है। याद कर कि मैं ने तेरे हुज़ूर खड़े हो कर उन के लिए शफ़ाअत की ताकि तेरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल न हो। 21 अब होने दे कि उन के बच्चे भूके मर जाएँ और वह ख़ुद तलवार की ज़द में आएँ। उन की बीवियाँ बेऔलाद और शौहरों से महरूम हो जाएँ। उन के आदमियों को मौत के घाट उतारा जाए, उन के नौजवान जंग में लड़ते लड़ते हलाक हो जाएँ। 22 अचानक उन पर जंगी दस्ते ला ताकि उन के घरों से चीख़ों की आवाज़ें बुलन्द हों। क्यूँकि उन्हों ने मुझे पकड़ने के लिए गढ़ा खोदा है, उन्हों ने मेरे पाँओ को फंसाने के लिए मेरे रास्ते में फंदे छुपा रखे हैं।

23 ऐ रब, तू उन की मुझे क़त्ल करने की तमाम साज़िशें जानता है। उन का क़ुसूर मुआफ़ न कर, और उन के गुनाहों को न मिटा बल्कि उन्हें हमेशा याद कर। होने दे कि वह ठोकर खा कर तेरे सामने गिर जाएँ। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा तो उन से भी निपट ले।

क़ौम मिट्टी के टूटे हुए बर्तन की मानिन्द होगी

19 1 रब ने हुक्म दिया, "कुम्हार के पास जा कर मिट्टी का बर्तन ख़रीद ले। फिर अवाम के कुछ बुज़ुर्गों और चन्द एक बुज़ुर्ग इमामों को अपने साथ ले कर 2 शहर से निकल जा। वादी-ए-बिन-हिन्नूम में चला जा जो शहर के दरवाज़े बनाम 'ठीकरे का दरवाज़ा' के सामने है। वहाँ वह कलाम सुना जो मैं तुझे सुनाने को कहूँगा। 3 उन्हें बता,

'ऐ यहूदाह के बादशाहो और यरूशलम के बाशिन्दो, रब का कलाम सुनो! रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं इस मक़ाम पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इस की ख़बर मिलेगी उस के कान बजेंगे। 4 क्यूँकि उन्हों ने मुझे तर्क करके इस मक़ाम को अजनबी माबूदों के हवाले कर दिया है। जिन बुतों से न उन के बापदादा और न यहूदाह के बादशाह कभी वाक़िफ़ थे उन के हुज़ूर उन्हों ने क़ुर्बानियाँ पेश कीं। नीज़, उन्हों ने इस जगह को बेक़ुसूरों के ख़ून से भर दिया है। 5 उन्हों ने ऊँची जगहों पर बाल देवता के लिए क़ुर्बानगाहें तामीर कीं ताकि अपने बेटों को उन पर जला कर उसे पेश करें। मैं ने यह करने का कभी हुक्म नहीं दिया था। न मैं ने कभी इस का ज़िक्र किया, न कभी मेरे ज़हन में इस का ख़याल तक आया।

6 चुनाँचे ख़बरदार! रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आने वाला है जब यह वादी "तूफ़त" या "बिन-हिन्नूम" नहीं कहलाएगी बल्कि "वादी-ए-क़त्ल-ओ-ग़ारत।" 7 इस जगह मैं यहूदाह और यरूशलम के मन्सूबे ख़ाक में मिला दूँगा। मैं होने दूँगा कि उन के दुश्मन उन्हें मौत के घाट उतारें, कि जो उन्हें जान से मारना चाहें वह इस में कामयाब हो जाएँ। तब मैं उन की लाशों को परिन्दों और दरिन्दों को खिला दूँगा। 8 मैं इस शहर को हौलनाक तरीक़े से तबाह करूँगा। तब दूसरे उसे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उस के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उस की तबाहशुदा हालत देख कर वह "तौबा तौबा" कहेगा। 9 जब उन का जानी दुश्मन शहर का मुहासरा करेगा तो इतना सख़्त काल पड़ेगा कि बाशिन्दे अपने बच्चों और एक दूसरे को खा जाएंगे।'

10 फिर साथ वालों की मौजूदगी में मिट्टी के बर्तन को ज़मीन पर पटख़ दे। 11 साथ साथ उन्हें बता, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि जिस तरह मिट्टी का बर्तन पाश पाश हो गया है और उस की मरम्मत नामुमकिन है उसी तरह मैं इस क़ौम और शहर को भी पाश पाश कर दूँगा। उस वक़्त लाशों को तूफ़त में दफ़नाया जाएगा, क्यूँकि कहीं और जगह नहीं मिलेगी। 12 इस शहर और इस के बाशिन्दों के साथ मैं यही सुलूक करूँगा। मैं इस शहर को तूफ़त की मानिन्द बना दूँगा। यह रब का फ़रमान है। 13 यरूशलम के घर यहूदाह के शाही महलों समेत तूफ़त की तरह नापाक हो जाएंगे। हाँ, वह तमाम घर नापाक हो जाएंगे जिन की छतों पर तमाम आसमानी लश्कर के लिए बख़ूर जलाया जाता और अजनबी माबूदों को मै की नज़रें पेश की जाती थीं'।"

14 इस के बाद यरमियाह वादी-ए-तूफ़त से वापस
आया जहाँ रब ने उसे नबुव्वत करने के लिए भेजा
था। फिर वह रब के घर के सहन में खड़े हो कर तमाम
लोगों से मुख़ातिब हुआ, 15 "रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि सुनो! मैं इस शहर
और यहूदाह के दीगर शहरों पर वह तमाम मुसीबत
लाने को हूँ जिस का एलान मैं ने किया है। क्यूँकि
तुम अड़ गए हो और मेरी बातें सुनने के लिए तय्यार
ही नहीं।"

यरमियाह फ़श्हूर इमाम से टकरा जाता है

20 1 उस वक़्त एक इमाम रब के घर में था
जिस का नाम फ़श्हूर बिन इम्मेर था। वह
रब के घर का आला अफ़्सर था। जब यरमियाह की
यह पेशगोइयाँ उस के कानों तक पहुँच गईं 2 तो उस
ने यरमियाह नबी की पिटाई करवा कर उस के पाँओ
काठ में ठोंक दिए। यह काठ रब के घर से मुल्हिक़
शहर के ऊपर वाले दरवाज़े बनाम बिनयमीन में था।
3 अगले दिन फ़श्हूर ने उसे आज़ाद कर दिया। तब
यरमियाह ने उस से कहा, "रब ने आप का एक नया
नाम रखा है। अब से आप का नाम फ़श्हूर नहीं है
बल्कि 'चारों तरफ़ दह्शत ही दह्शत।' 4 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, 'मैं होने दूँगा कि तू अपने लिए और अपने
तमाम दोस्तों के लिए दह्शत की अलामत बनेगा।
क्यूँकि तू अपनी आँखों से अपने दोस्तों की क़त्ल-
ओ-ग़ारत देखेगा। मैं यहूदाह के तमाम बाशिन्दों को
बाबल के बादशाह के क़ब्ज़े में कर दूँगा जो बाज़ को
मुल्क-ए-बाबल में ले जाएगा और बाज़ को मौत के
घाट उतार देगा। 5 मैं इस शहर की सारी दौलत दुश्मन
के हवाले कर दूँगा, और वह इस की तमाम पैदावार,
क़ीमती चीज़ें और शाही ख़ज़ाने लूट कर मुल्क-ए-
बाबल ले जाएगा। 6 ऐ फ़श्हूर, तू भी अपने घर वालों
समेत मुल्क-ए-बाबल में जिलावतन होगा। वहाँ तू
मर कर दफ़नाया जाएगा। और न सिर्फ़ तू बल्कि तेरे
वह सारे दोस्त भी जिन्हें तू ने झूटी पेशगोइयाँ सुनाई
हैं'।"

यरमियाह की रब से शिकायत

7 ऐ रब, तू ने मुझे मनवाया, और मैं मान गया। तू
मुझे अपने क़ाबू में ला कर मुझ पर ग़ालिब आया।
अब मैं पूरा दिन मज़ाक़ का निशाना बना रहता हूँ।
हर एक मेरी हंसी उड़ाता रहता है। 8 क्यूँकि जब भी
मैं अपना मुँह खोलता हूँ तो मुझे चिल्ला कर 'ज़ुल्म-
ओ-तबाही' का नारा लगाना पड़ता है। चुनाँचे मैं रब
के कलाम के बाइस पूरा दिन गालियों और मज़ाक़
का निशाना बना रहता हूँ। 9 लेकिन अगर मैं कहूँ,
"आइन्दा मैं न रब का ज़िक्र करूँगा, न उस का नाम
ले कर बोलूँगा" तो फिर उस का कलाम आग की
तरह मेरे दिल में भड़कने लगता है। और यह आग
मेरी हड्डियों में बन्द रहती और कभी नहीं निकलती।
मैं इसे बर्दाश्त करते करते थक गया हूँ, यह मेरे बस
की बात नहीं रही। 10 मुतअद्दिद लोगों की सरगोशियाँ
मेरे कानों तक पहुँचती हैं। वह कहते हैं, "चारों तरफ़
दह्शत ही दह्शत? यह क्या कह रहा है? उस की
रपट लिखवाओ! आओ, हम उस की रिपोर्ट करें।"
मेरे तमाम नाम-निहाद दोस्त इस इन्तिज़ार में हैं कि मैं
फिसल जाऊँ। वह कहते हैं, "शायद वह धोका खा
कर फंस जाए और हम उस पर ग़ालिब आ कर उस
से इन्तिक़ाम ले सकें।"
11 लेकिन रब ज़बरदस्त सूरमे की तरह मेरे साथ है,
इस लिए मेरा ताक़्क़ुब करने वाले मुझ पर ग़ालिब
नहीं आएँगे बल्कि ख़ुद ठोकर खा कर गिर जाएंगे।
उन के मुँह काले हो जाएंगे, क्यूँकि वह नाकाम
हो जाएंगे। उन की रुस्वाई हमेशा ही याद रहेगी
और कभी नहीं मिटेगी। 12 ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तू
रास्तबाज़ का मुआइना करके दिल और ज़हन को
परखता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से
वह इन्तिक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा।
क्यूँकि मैं ने अपना मुआमला तेरे ही सपुर्द कर दिया
है। 13 रब की मद्हसराई करो! रब की तम्जीद करो!
क्यूँकि उस ने ज़रूरतमन्द की जान को शरीरों के हाथ
से बचा लिया है।

मैं क्यूँ पैदा हुआ?

14 उस दिन पर लानत जब मैं पैदा हुआ! वह दिन
मुबारक न हो जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया। 15 उस
आदमी पर लानत जिस ने मेरे बाप को बड़ी ख़ुशी
दिला कर इत्तिला दी कि तेरे बेटा पैदा हुआ है! 16 वह
उन शहरों की मानिन्द हो जिन को रब ने बेरहमी
से ख़ाक में मिला दिया। अल्लाह करे कि सुब्ह के
वक़्त उसे चीख़ें सुनाई दें और दोपहर के वक़्त जंग
के नारे। 17 क्यूँकि उसे मुझे उसी वक़्त मार डालना
चाहिए था जब मैं अभी माँ के पेट में था। फिर मेरी माँ
मेरी क़ब्र बन जाती, उस का पाँओ हमेशा तक भारी
रहता। 18 मैं क्यूँ माँ के पेट में से निकला? क्या सिर्फ़
इस लिए कि मुसीबत और ग़म देखूँ और ज़िन्दगी के
इख़तिताम तक रुस्वाई की ज़िन्दगी गुज़ारूँ?

बाबल की फ़ौज यरूशलम पर फ़त्ह पाएगी

21 1 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने फ़श्हूर
बिन मल्कियाह और मासियाह के बेटे
सफ़नियाह इमाम को यरमियाह के पास भेज दिया।
उस के पास पहुँच कर उन्हों ने कहा, 2 "बाबल
का बादशाह नबूकद्नज़्ज़र हम पर हम्ला कर रहा है।
शायद जिस तरह रब ने माज़ी में कई बार किया
इस दफ़ा भी हमारी मदद करके नबूकद्नज़्ज़र को
मोजिज़ाना तौर पर यरूशलम को छोड़ने पर मज्बूर
करे। रब से इस के बारे में दरयाफ़्त करें।"

तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
3 और उस ने दोनों आदमियों से कहा, "सिदक़ियाह
को बताओ कि 4 रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है, 'बेशक शहर से निकल कर बाबल की मुहासरा
करने वाली फ़ौज और उस के बादशाह से लड़ो।
लेकिन मैं तुम्हें पीछे धकेल कर शहर में पनाह लेने
पर मज्बूर करूँगा। वहाँ उस के बीच में ही तुम अपने
हथियारों समेत जमा हो जाओगे। 5 मैं ख़ुद अपना
हाथ बढ़ा कर बड़ी क़ुदरत से तुम्हारे साथ लड़ूँगा, मैं
अपने ग़ुस्से और तैश का पूरा इज़हार करूँगा, मेरा
सख़्त ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होगा। 6 शहर के बाशिन्दे
मेरे हाथ से हलाक हो जाएंगे, ख़्वाह इन्सान हों या
हैवान। मोहलिक वबा उन्हें मौत के घाट उतार देगी।'
7 रब फ़रमाता है, 'इस के बाद मैं यहूदाह के बादशाह
सिदक़ियाह को उस के अफ़्सरों और बाक़ी बाशिन्दों
समेत बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र के हवाले
कर दूँगा। वबा, तलवार और काल से बचने वाले
सब अपने जानी दुश्मन के क़ाबू में आ जाएंगे। तब
नबूकद्नज़्ज़र बेरहमी से उन्हें तलवार से मार देगा। न
उसे उन पर तरस आएगा, न वह हमदर्दी का इज़हार
करेगा।'

8 इस क़ौम को बता कि रब फ़रमाता है, 'मैं तुम्हें
अपनी जान को बचाने का मौक़ा फ़राहम करता हूँ।
इस से फ़ाइदा उठाओ, वर्ना तुम मरोगे। 9 अगर तुम
तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में
रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो
तो शहर से निकल कर अपने आप को बाबल की
मुहासरा करने वाली फ़ौज के हवाले करो। जो कोई
यह करे उस की जान छूट जाएगी।' [z]

10 रब फ़रमाता है, 'मैं ने अटल फ़ैसला किया है
कि इस शहर पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि इसे
नुक़्सान पहुँचाऊँगा। इसे शाह-ए-बाबल के हवाले
कर दिया जाएगा जो इसे आग लगा कर तबाह
करेगा।'

11 यहूदाह के शाही ख़ानदान से कह, 'रब का
कलाम सुनो! 12 ऐ दाऊद के घराने, रब फ़रमाता है
कि हर सुब्ह लोगों का इन्साफ़ करो। जिसे लूट लिया
गया हो उसे ज़ालिम के हाथ से बचाओ! ऐसा न हो
कि मेरा ग़ज़ब तुम्हारी शरीर हरकतों की वजह से
तुम पर नाज़िल हो कर आग की तरह भड़क उठे
और कोई न हो जो उसे बुझा सके।

---

[z] लफ़्ज़ी तर्जुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

13 रब फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू वादी के ऊपर
ऊँची चटान पर रह कर फ़ख़र करती है कि कौन
हम पर हम्ला करेगा, कौन हमारे घरों में घुस सकता
है? लेकिन अब मैं ख़ुद तुझ से निपट लूँगा। 14 रब
फ़रमाता है कि मैं तुम्हारी हरकतों का पूरा अज्र दूँगा।
मैं यरूशलम के जंगल में ऐसी आग लगा दूँगा जो
इर्दगिर्द सब कुछ भस्म कर देगी'।"

शाही महल नज़र-ए-आतिश हो जाएगा

22 1 रब ने फ़रमाया, "शाह-ए-यहूदाह के महल
के पास जा कर मेरा यह कलाम सुना, 2 'ऐ
यहूदाह के बादशाह, रब का फ़रमान सुन! ऐ तू जो
दाऊद के तख़्त पर बैठा है, अपने मुलाज़िमों और
महल के दरवाज़ों में आने वाले लोगों समेत मेरी बात
पर ग़ौर कर! 3 रब फ़रमाता है कि इन्साफ़ और रास्ती
क़ाइम रखो। जिसे लूट लिया गया है उसे ज़ालिम के
हाथ से छुड़ाओ। परदेसी, यतीम और बेवा को मत
दबाना, न उन से ज़ियादती करना, और इस जगह
बेक़ुसूर लोगों की ख़ूँरेज़ी मत करना। 4 अगर तुम
एहतियात से इस पर अमल करो तो आइन्दा भी
दाऊद की नस्ल के बादशाह अपने अफ़सरों और
रआया के साथ रथों और घोड़ों पर सवार हो कर
इस महल में दाख़िल होंगे। 5 लेकिन अगर तुम मेरी
इन बातों की न सुनो तो मेरे नाम की क़सम! यह महल
मल्बे का ढेर बन जाएगा। यह रब का फ़रमान है।

6 क्यूँकि रब शाह-ए-यहूदाह के महल के बारे में
फ़रमाता है कि तू जिलिआद जैसा ख़ुशगवार और
लुबनान की चोटी जैसा ख़ूबसूरत था। लेकिन अब मैं
तुझे बयाबान में बदल दूँगा, तू ग़ैरआबाद शहर की
मानिन्द हो जाएगा। 7 मैं आदमियों को तुझे तबाह
करने के लिए मख़्सूस करके हर एक को हथियार से
लेस करूँगा, और वह देवदार के तेरे उम्दा शहतीरों
को काट कर आग में झोंक देंगे। 8 तब मुतअद्दिद
क़ौमों के अफ़राद यहाँ से गुज़र कर पूछेंगे कि रब ने
इस जैसे बड़े शहर के साथ ऐसा सुलूक क्यूँ किया?
9 उन्हें जवाब दिया जाएगा, वजह यह है कि इन्हों ने
रब अपने ख़ुदा का अह्द तर्क करके अजनबी माबूदों
की पूजा और ख़िदमत की है'।"

यहूआख़ज़ बादशाह वापस नहीं आएगा

10 इस लिए गिर्या-ओ-ज़ारी न करो कि यूसियाह
बादशाह कूच कर गया है बल्कि उस पर मातम करो
जिसे जिलावतन किया गया है, क्यूँकि वह कभी
वापस नहीं आएगा, कभी अपना वतन दुबारा नहीं
देखेगा।

11 क्यूँकि रब यूसियाह के बेटे और जानशीन सल्लूम
यानी यहूआख़ज़ के बारे में फ़रमाता है, "यहूआख़ज़
यहाँ से चला गया है और कभी वापस नहीं आएगा।
12 जहाँ उसे गिरिफ़्तार करके पहुँचाया गया है वहीं
वह वफ़ात पाएगा। वह यह मुल्क दुबारा कभी नहीं
देखेगा।

यहूयक़ीम पर इल्ज़ाम

13 यहूयक़ीम बादशाह पर अफ़्सोस जो नाजाइज़
तरीक़े से अपना घर तामीर कर रहा है, जो नाइन्साफ़ी
से उस की दूसरी मन्ज़िल बना रहा है। क्यूँकि वह
अपने हमवतनों को मुफ़्त में काम करने पर मज्बूर
कर रहा है और उन्हें उन की मेहनत का मुआवज़ा
नहीं दे रहा। 14 वह कहता है, 'मैं अपने लिए कुशादा
महल बनवा लूँगा जिस की दूसरी मन्ज़िल पर बड़े
बड़े कमरे होंगे। मैं घर में बड़ी खिड़कियाँ बनवा कर
दीवारों को देवदार की लकड़ी से ढाँप दूँगा। इस के
बाद मैं उसे सुर्ख़ रंग से आरास्ता करूँगा।' 15 क्या
देवदार की शानदार इमारतें बनवाने से यह साबित
होता है कि तू बादशाह है? हरगिज़ नहीं! तेरे बाप
को भी खाने-पीने की हर चीज़ मुयस्सर थी, लेकिन
उस ने इस का ख़याल किया कि इन्साफ़ और रास्ती
क़ाइम रहे। नतीजे में उसे बरकत मिली। 16 उस ने
तवज्जुह दी कि ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों का हक़
मारा न जाए, इसी लिए उसे कामयाबी हासिल हुई।"
रब फ़रमाता है, "जो इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारे वही
मुझे सहीह तौर पर जानता है। 17 लेकिन तू फ़र्क़ है।

तेरी आँखें और दिल नाजाइज़ नफ़ा कमाने पर तुले
रहते हैं। न तू बेक़ुसूर को क़त्ल करने से, न ज़ुल्म
करने या जब्रन कुछ लेने से झिजकता है।”
18 चुनाँचे रब यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह के बारे में फ़रमाता है, “लोग उस पर मातम
नहीं करेंगे कि ‘हाय मेरे भाई, हाए मेरी बहन,’ न
वह रो कर कहेंगे, ‘हाय, मेरे आक़ा! हाय, उस की
शान जाती रही है।’ 19 इस के बजाय उसे गधे की
तरह दफ़नाया जाएगा। लोग उसे घसीट कर बाहर
यरूशलम के दरवाज़ों से कहीं दूर फैंक देंगे।

यहूयाकीन बादशाह को दुश्मन के हवाले किया जाएगा

20 ऐ यरूशलम, लुबनान पर चढ़ कर ज़ार-ओ-
क़तार रो! बसन की बुलन्दियों पर जा कर चीख़ें
मार! अबारीम के पहाड़ों की चोटियों पर आह-ओ-
ज़ारी कर! क्यूँकि तेरे तमाम आशिक़ [a]पाश पाश हो
गए हैं। 21 मैं ने तुझे उस वक़्त आगाह किया था
जब तू सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार रही थी, लेकिन तू
ने कहा, ‘मैं नहीं सुनूँगी।’ तेरी जवानी से ही तेरा यही
रवय्या रहा। उस वक़्त से ले कर आज तक तू ने मेरी
नहीं सुनी। 22 तेरे तमाम गल्लाबानों को आँधी उड़ा ले
जाएगी, और तेरे आशिक़ जिलावतन हो जाएंगे। तब
तू अपनी बुरी हरकतों के बाइस शर्मिन्दा हो जाएगी,
क्यूँकि तेरी ख़ूब रुस्वाई हो जाएगी। 23 बेशक इस
वक़्त तू लुबनान में रहती है और तेरा बसेरा देवदार
के दरख़्तों में है। लेकिन जल्द ही तू आहें भर भर कर
दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो जाएगी, तू जन्म देने वाली
औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगी।”
24 रब फ़रमाता है, “ऐ यहूदाह के बादशाह
यहूयाकीन बिन यहूयक़ीम, मेरी हयात की क़सम!
ख़्वाह तू मेरे दहने हाथ की मुहरदार अंगूठी क्यूँ न
होता तो भी मैं तुझे उतार कर फैंक देता। [b]25 मैं तुझे
उस जानी दुश्मन के हवाले करूँगा जिस से तू डरता
है यानी बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र और उस
की क़ौम के हवाले। 26 मैं तुझे तेरी माँ समेत एक
अजनबी मुल्क में फैंक दूँगा। जहाँ तुम पैदा नहीं
हुए वहीं वफ़ात पाओगे। 27 तुम वतन में वापस आने
के शदीद आरज़ूमन्द होगे लेकिन उस में कभी नहीं
लौटोगे।”
28 लोग एतिराज़ करते हैं, “क्या यह आदमी
यहूयाकीन [c]वाक़ई ऐसा हक़ीर और टूटा-फूटा बर्तन
है जो किसी को भी पसन्द नहीं आता? उसे अपने
बच्चों समेत क्यूँ ज़ोर से निकाल कर किसी नामालूम
मुल्क में फैंक दिया जाएगा?”
29 ऐ मुल्क, ऐ मुल्क, ऐ मुल्क! रब का पैग़ाम सुन!
30 रब फ़रमाता है, “रजिस्टर में दर्ज करो कि यह
आदमी बेऔलाद है, कि यह उम्र भर नाकाम रहेगा।
क्यूँकि उस के बच्चों में से कोई दाऊद के तख़्त पर
बैठ कर यहूदाह की हुकूमत करने में कामयाब नहीं
होगा।”

रब क़ौम के सहीह गल्लाबान मुक़र्रर करेगा

23 1 रब फ़रमाता है, “उन गल्लाबानों पर
अफ़्सोस जो मेरी चरागाह की भेड़ों को
तबाह करके मुन्तशिर कर रहे हैं।” 2 इस लिए रब जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “ऐ मेरी क़ौम को
चराने वाले गल्लाबानो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों की
मुनासिब सज़ा दूँगा, क्यूँकि तुम ने मेरी भेड़ों की फ़िक्र
नहीं की बल्कि उन्हें मुन्तशिर करके तित्तर-बित्तर कर
दिया है।” रब फ़रमाता है, “सुनो, मैं तुम्हारी शरीर
हरकतों से निपट लूँगा।
3 मैं ख़ुद अपने रेवड़ की बची हुई भेड़ों को जमा
करूँगा। जहाँ भी मैं ने उन्हें मुन्तशिर कर दिया
था, उन तमाम ममालिक से मैं उन्हें उन की अपनी
चरागाह में वापस लाऊँगा। वहाँ वह फलें फूलेंगे,

[a]आशिक़ से मुराद यहूदाह के इत्तिहादी हैं।
[b]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।
[c]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

और उन की तादाद बढ़ती जाएगी। 4 मैं ऐसे गल्लाबानों
को उन पर मुक़र्रर करूँगा जो उन की सहीह गल्लाबानी
करेंगे। आइन्दा न वह ख़ौफ़ खाएँगे, न घबरा जाएंगे।
एक भी गुम नहीं हो जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

रब सहीह बादशाह मुक़र्रर करेगा

5 रब फ़रमाता है, "वह वक़्त आने वाला है कि मैं
दाऊद के लिए एक रास्तबाज़ कोंपल फूटने दूँगा,
एक ऐसा बादशाह जो हिक्मत से हुकूमत करेगा, जो
मुल्क में इन्साफ़ और रास्ती क़ाइम रखेगा। 6 उस के
दौर-ए-हुकूमत में यहूदाह को छुटकारा मिलेगा और
इस्राईल महफ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। वह 'रब हमारी
रास्तबाज़ी' कहलाएगा।

7 चुनाँचे वह वक़्त आने वाला है जब लोग क़सम
खाते वक़्त नहीं कहेंगे, 'रब की हयात की क़सम
जो इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया।' 8 इस
के बजाय वह कहेंगे, 'रब की हयात की क़सम
जो इस्राईलियों को शिमाली मुल्क और दीगर उन
तमाम ममालिक से निकाल लाया जिन में उस ने उन्हें
मुन्तशिर कर दिया था।' उस वक़्त वह दुबारा अपने
ही मुल्क में बसेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

झूटे नबियों पर यक़ीन मत करना

9 झूटे नबियों को देख कर मेरा दिल टूट गया है, मेरी
तमाम हड्डियाँ लरज़ रही हैं। मैं नशे में धुत आदमी की
मानिन्द हूँ। मै से मग़लूब शख़्स की तरह मैं रब और
उस के मुक़द्दस अल्फ़ाज़ के सबब से डगमगा रहा
हूँ।

10 यह मुल्क ज़िनाकारों से भरा हुआ है, इस लिए
उस पर अल्लाह की लानत है। ज़मीन झुलस गई है,
बयाबान की चरागाहों की हरियाली मुरझा गई है।
नबी ग़लत राह पर दौड़ रहे हैं, और जिस में वह
ताक़तवर हैं वह ठीक नहीं। 11 रब फ़रमाता है, "नबी
और इमाम दोनों ही बेदीन हैं। मैं ने अपने घर में भी
उन का बुरा काम पाया है। 12 इस लिए जहाँ भी चलें
वह फिसल जाएंगे, वह अंधेरे में ठोकर खा कर गिर
जाएंगे। क्यूँकि मैं मुक़र्ररा वक़्त पर उन पर आफ़त
लाऊँगा।" यह रब का फ़रमान है।

13 "मैं ने देखा कि सामरिया के नबी बाल के नाम
में नबुव्वत करके मेरी क़ौम इस्राईल को ग़लत राह
पर लाए। यह क़ाबिल-ए-घिन है, 14 लेकिन जो कुछ
मुझे यरूशलम के नबियों में नज़र आता है वह उतना
ही घिनौना है। वह ज़िना करते और झूट के पैरोकार
हैं। साथ साथ वह बदकारों की हौसलाअफ़्ज़ाई भी
करते हैं, और नतीजे में कोई भी अपनी बदी से बाज़
नहीं आता। मेरी नज़र में वह सब सदूम की मानिन्द
हैं। हाँ, यरूशलम के बाशिन्दे अमूरा के बराबर हैं।"
15 इस लिए रब इन नबियों के बारे में फ़रमाता है, "मैं
उन्हें कड़वा खाना खिलाऊँगा और ज़हरीला पानी
पिलाऊँगा, क्यूँकि यरूशलम के नबियों ने पूरे मुल्क
में बेदीनी फैलाई है।"

16 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "नबियों की
पेशगोइयों पर ध्यान मत देना। वह तुम्हें फ़रेब दे रहे
हैं। क्यूँकि वह रब का कलाम नहीं सुनाते बल्कि
महज़ अपने दिल में से उभरने वाली रोया पेश करते
हैं। 17 जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें वह बताते रहते हैं,
'रब फ़रमाता है कि हालात सहीह-सलामत रहेंगे।' जो
अपने दिलों की ज़िद के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते
हैं, उन सब को वह तसल्ली दे कर कहते हैं, 'तुम पर
आफ़त नहीं आएगी।' 18 लेकिन उन में से किस ने रब
की मजलिस में शरीक हो कर वह कुछ देखा और
सुना है जो रब बयान कर रहा है? किसी ने नहीं! किस
ने तवज्जुह दे कर उस का कलाम सुना है? किसी ने
नहीं!

19 देखो, रब की ग़ज़बनाक आँधी चलने लगी है,
उस का तेज़ी से घूमता हुआ बगूला बेदीनों के सरों पर
मंडला रहा है। 20 और रब का यह ग़ज़ब उस वक़्त
तक ठंडा नहीं होगा जब तक उस के दिल का इरादा
तक्मील तक न पहुँच जाए। आने वाले दिनों में तुम्हें
इस की पूरी समझ आएगी।

21 यह नबी दौड़ कर अपनी बातें सुनाते रहते हैं
अगरचे मैं ने उन्हें नहीं भेजा। गो मैं उन से हमकलाम

नहीं हुआ तो भी यह पेशगोइयाँ करते हैं। 22 अगर
यह मेरी मजलिस में शरीक होते तो मेरी क़ौम को मेरे
अल्फ़ाज़ सुना कर उसे उस के बुरे चाल-चलन और
ग़लत हरकतों से हटाने की कोशिश करते।"

23 रब फ़रमाता है, "क्या मैं सिर्फ़ क़रीब का ख़ुदा
हूँ? हरगिज़ नहीं! मैं दूर का ख़ुदा भी हूँ। 24 क्या कोई
मेरी नज़र से ग़ाइब हो सकता है? नहीं, ऐसी जगह है
नहीं जहाँ वह मुझ से छुप सके। आसमान-ओ-ज़मीन
मुझ से मामूर रहते हैं।" यह रब का फ़रमान है।

25 "इन नबियों की बातें मुझ तक पहुँच गई हैं। यह
मेरा नाम ले कर झूट बोलते हैं कि मैं ने ख़्वाब देखा
है, ख़्वाब देखा है! 26 यह नबी झूटी पेशगोइयाँ और
अपने दिलों के वस्वसे सुनाने से कब बाज़ आएँगे?
27 जो ख़्वाब वह एक दूसरे को बताते हैं उन से वह
चाहते हैं कि मेरी क़ौम मेरा नाम यूँ भूल जाए जिस
तरह उन के बापदादा बाल की पूजा करने से मेरा नाम
भूल गए थे।" 28 रब फ़रमाता है, "जिस नबी ने ख़्वाब
देखा हो वह बेशक अपना ख़्वाब बयान करे, लेकिन
जिस पर मेरा कलाम नाज़िल हुआ हो वह वफ़ादारी
से मेरा कलाम सुनाए। भूसे का गन्दुम से क्या वास्ता
है?"

29 रब फ़रमाता है, "क्या मेरा कलाम आग की
मानिन्द नहीं? क्या वह हथौड़े की तरह चटान को
टुकड़े टुकड़े नहीं करता?" 30 चुनाँचे रब फ़रमाता
है, "अब मैं उन नबियों से निपट लूँगा जो एक दूसरे
के पैग़ामात चुरा कर दावा करते हैं कि वह मेरी तरफ़
से हैं।" 31 रब फ़रमाता है, "मैं उन से निपट लूँगा जो
अपने शख़्सी ख़यालात सुना कर दावा करते हैं, 'यह
रब का फ़रमान है'।" 32 रब फ़रमाता है, "मैं उन से
निपट लूँगा जो झूटे ख़्वाब सुना कर मेरी क़ौम को
अपनी धोकेबाज़ी और शेख़ी की बातों से ग़लत राह
पर लाते हैं, हालाँकि मैं ने उन्हें न भेजा, न कुछ कहने
को कहा था। उन लोगों का इस क़ौम के लिए कोई
भी फ़ाइदा नहीं।" यह रब का फ़रमान है।

रब के लिए तुम बोझ का बाइस हो

33 "ऐ यरमियाह, अगर इस क़ौम के आम लोग या
इमाम या नबी तुझ से पूछें, 'आज रब ने तुझ पर
कलाम का क्या बोझ नाज़िल किया है?' तो जवाब
दे, 'रब फ़रमाता है कि तुम ही मुझ पर बोझ हो!
लेकिन मैं तुम्हें उतार फैंकूँगा।' 34 और अगर कोई
नबी, इमाम या आम शख़्स दावा करे, 'रब ने मुझ पर
कलाम का बोझ नाज़िल किया है' तो मैं उसे उस के
घराने समेत सज़ा दूँगा।

35 इस के बजाय एक दूसरे से सवाल करो कि 'रब
ने क्या जवाब दिया?' या 'रब ने क्या फ़रमाया?'
36 आइन्दा रब के पैग़ाम के लिए लफ़्ज़ 'बोझ'
इस्तेमाल न करो, क्यूँकि जो भी बात तुम करो वह
तुम्हारा अपना बोझ होगी। क्यूँकि तुम ज़िन्दा ख़ुदा
के अल्फ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर बयान करते हो,
उस कलाम को जो रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे ख़ुदा
ने नाज़िल किया है। 37 चुनाँचे आइन्दा नबी से सिर्फ़
इतना ही पूछो कि 'रब ने तुझे क्या जवाब दिया?'
या 'रब ने क्या फ़रमाया?' 38 लेकिन अगर तुम 'रब
का बोझ' कहने पर इसरार करो तो रब का जवाब
सुनो! चूँकि तुम कहते हो कि 'मुझ पर रब का बोझ
नाज़िल हुआ है' गो मैं ने यह मना किया था, 39 इस
लिए मैं तुम्हें अपनी याद से मिटा कर यरूशलम समेत
अपने हुज़ूर से दूर फैंक दूँगा, गो मैं ने ख़ुद यह शहर
तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को फ़राहम किया था।
40 मैं तुम्हारी अबदी रुस्वाई कराऊँगा, और तुम्हारी
शर्मिन्दगी हमेशा तक याद रहेगी।"

अन्जीर की दो टोकरियाँ

24 1 एक दिन रब ने मुझे रोया दिखाई। उस
वक़्त बाबल का बादशाह नबूकद्नज़्ज़र
यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन [d]बिन यहूयक़ीम को

[d]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

यहूदाह के बुज़ुर्गों, कारीगरों और लोहारों समेत
बाबल में जिलावतन कर चुका था।

रोया में मैं ने देखा कि अन्जीरों से भरी दो टोकरियाँ
रब के घर के सामने पड़ी हैं। 2 एक टोकरी में मौसम
के शुरू में पकने वाले बेहतरीन अन्जीर थे जबकि
दूसरी में ख़राब अन्जीर थे जो खाए भी नहीं जा सकते
थे।

3 रब ने मुझ से सवाल किया, "ऐ यरमियाह, तुझे
क्या नज़र आता है?" मैं ने जवाब दिया, "मुझे अन्जीर
नज़र आते हैं। कुछ बेहतरीन हैं जबकि दूसरे इतने
ख़राब हैं कि उन्हें खाया भी नहीं जा सकता।"

4 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ, 5 "रब इस्राईल
का ख़ुदा फ़रमाता है कि अच्छे अन्जीर यहूदाह के
वह लोग हैं जिन्हें मैं ने जिलावतन करके मुल्क-ए-
बाबल में भेजा है। उन्हें मैं मेहरबानी की निगाह से
देखता हूँ। 6 क्यूँकि उन पर मैं अपने करम का इज़हार
करके उन्हें इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें
गिराऊँगा नहीं बल्कि तामीर करूँगा, उन्हें जड़ से
उखाड़ूँगा नहीं बल्कि पनीरी की तरह लगाऊँगा। 7 मैं
उन्हें समझदार दिल अता करूँगा ताकि वह मुझे जान
लें, वह पहचान लें कि मैं रब हूँ। तब वह मेरी क़ौम
होंगे और मैं उन का ख़ुदा हूँगा, क्यूँकि वह पूरे दिल
से मेरे पास वापस आएँगे।

8 लेकिन बाक़ी लोग उन ख़राब अन्जीरों की
मानिन्द हैं जो खाए नहीं जाते। उन के साथ मैं वह
सुलूक करूँगा जो ख़राब अन्जीरों के साथ किया
जाता है। उन में यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह,
उस के अफ़्सर, यरूशलम और यहूदाह में बचे हुए
लोग और मिस्र में पनाह लेने वाले सब शामिल हैं। 9 मैं
होने दूँगा कि वह दुनिया के तमाम ममालिक के लिए
दहशत और आफ़त की अलामत बन जाएंगे। जहाँ
भी मैं उन्हें मुन्तशिर करूँगा वहाँ वह इब्रतअंगेज़
मिसाल बन जाएंगे। हर जगह लोग उन की बेइज़्ज़ती,
उन्हें लान-तान और उन पर लानत करेंगे। 10 जब तक
वह उस मुल्क में से मिट न जाएँ जो मैं ने उन के
बापदादा को दे दिया था उस वक़्त तक मैं उन के
दरमियान तलवार, काल और मोहलिक बीमारियाँ
भेजता रहूँगा।"

मुल्क-ए-बाबल में 70 साल रहने की पेशगोई

25 1 यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के
चौथे साल में अल्लाह का कलाम यरमियाह
पर नाज़िल हुआ। उसी साल बाबल का बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र तख़्तनशीन हुआ था। यह कलाम
यहूदाह के तमाम बाशिन्दों के बारे में था। 2 चुनाँचे
यरमियाह नबी ने यरूशलम के तमाम बाशिन्दों और
यहूदाह की पूरी क़ौम से मुख़ातिब हो कर कहा,

3 "23 साल से रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
होता रहा है यानी यूसियाह बिन अमून की हुकूमत
के तेरहवें साल से ले कर आज तक। बार बार मैं
तुम्हें पैग़ामात सुनाता रहा हूँ, लेकिन तुम ने ध्यान
नहीं दिया। 4 मेरे इलावा रब दीगर तमाम नबियों को
भी बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा, लेकिन तुम ने न
सुना, न तवज्जुह दी, 5 गो मेरे ख़ादिम तुम्हें बार बार
आगाह करते रहे, 'तौबा करो! हर एक अपनी ग़लत
राहों और बुरी हरकतों से बाज़ आ कर वापस आए।
फिर तुम हमेशा तक उस मुल्क में रहोगे जो रब ने तुम्हें
और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 6 अजनबी
माबूदों की पैरवी करके उन की ख़िदमत और पूजा
मत करना! अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से मुझे
तैश न दिलाना, वर्ना मैं तुम्हें नुक़्सान पहुँचाऊँगा'।"

7 रब फ़रमाता है, "अफ़्सोस! तुम ने मेरी न सुनी
बल्कि मुझे अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से
ग़ुस्सा दिला कर अपने आप को नुक़्सान पहुँचाया।"
8 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "चूँकि तुम ने मेरे
पैग़ामात पर ध्यान न दिया, 9 इस लिए मैं शिमाल की
तमाम क़ौमों और अपने ख़ादिम बाबल के बादशाह
नबूकद्नज़्ज़र को बुला लूँगा ताकि वह इस मुल्क,
इस के बाशिन्दों और गिर्द-ओ-नवाह के ममालिक
पर हम्ला करें। तब यह सफ़्हा-ए-हस्ती से यूँ मिट
जाएंगे कि लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह
उन का मज़ाक़ उड़ाएँगे। यह इलाक़े दाइमी खंडरात

बन जाएंगे। 10 मैं उन के दरमियान ख़ुशी-ओ-शादमानी
और दूल्हे दुल्हन की आवाज़ें बन्द कर दूँगा। चक्कियाँ
ख़ामोश पड़ जाएँगी और चराग़ बुझ जाएंगे। 11 पूरा
मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा, चारों तरफ़ मल्बे
के ढेर नज़र आएँगे। तब तुम और इर्दगिर्द की क़ौमें
70 साल तक शाह-ए-बाबल की ख़िदमत करोगे।

12 लेकिन 70 साल के बाद मैं शाह-ए-बाबल और
उस की क़ौम को मुनासिब सज़ा दूँगा। मैं मुल्क-
ए-बाबल को यूँ बर्बाद करूँगा कि वह हमेशा तक
वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा। 13 उस वक़्त मैं उस मुल्क
पर सब कुछ नाज़िल करूँगा जो मैं ने उस के बारे
में फ़रमाया है, सब कुछ पूरा हो जाएगा जो इस
किताब में दर्ज है और जिस की पेशगोई यरमियाह
ने तमाम अक़्वाम के बारे में की है। 14 उस वक़्त
उन्हें भी मुतअद्दिद क़ौमों और बड़े बड़े बादशाहों
की ख़िदमत करनी पड़ेगी। यूँ मैं उन्हें उन की हरकतों
और आमाल का मुनासिब अज्र दूँगा।"

रब के ग़ज़ब का प्याला

15 रब जो इस्राईल का ख़ुदा है मुझ से हमकलाम
हुआ, "देख, मेरे हाथ में मेरे ग़ज़ब से भरा हुआ प्याला
है। इसे ले कर उन तमाम क़ौमों को पिला दे जिन
के पास मैं तुझे भेजता हूँ। 16 जो भी क़ौम यह पिए
वह मेरी तलवार के आगे डगमगाती हुई दीवाना हो
जाएगी।"

17 चुनाँचे मैं ने रब के हाथ से प्याला ले कर उसे उन
तमाम अक़्वाम को पिला दिया जिन के पास रब ने
मुझे भेजा। 18 पहले यरूशलम और यहूदाह के शहरों
को उन के बादशाहों और बुज़ुर्गों समेत ग़ज़ब का
प्याला पीना पड़ा। तब मुल्क मल्बे का ढेर बन गया
जिसे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। आज तक
वह मज़ाक़ और लानत का निशाना है।

19 फिर यके बाद दीगरे मुतअद्दिद क़ौमों को ग़ज़ब
का प्याला पीना पड़ा। ज़ैल में उन की फ़हरिस्त
है : मिस्र का बादशाह फ़िरऔन, उस के दरबारी,
अफ़सर, पूरी मिस्री क़ौम 20 और मुल्क में बसने वाले
ग़ैरमुल्की, मुल्क-ए-ऊज़ के तमाम बादशाह,

फ़िलिस्ती बादशाह और उन के शहर अस्क़लून,
ग़ज़्ज़ा और अक्रून, नीज़ फ़िलिस्ती शहर अश्दूद का
बचा-खुचा हिस्सा,

21 अदोम, मोआब और अम्मोन,

22 सूर और सैदा के तमाम बादशाह, बहीरा-ए-रूम
के साहिली इलाक़े,

23 ददान, तैमा और बूज़ के शहर, वह क़ौमें जो
रेगिस्तान के किनारे किनारे रहती हैं,

24 मुल्क-ए-अरब के तमाम बादशाह, रेगिस्तान में
मिल कर बसने वाले ग़ैरमुल्कियों के बादशाह,

25 ज़िम्री, ऐलाम और मादी के तमाम बादशाह,

26 शिमाल के दूर-ओ-नज़्दीक के तमाम बादशाह।

यके बाद दीगरे दुनिया के तमाम ममालिक को
ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। आख़िर में शेशक के
बादशाह [e]को भी यह प्याला पीना पड़ा।

27 फिर रब ने कहा, "उन्हें बता, 'रब्ब-उल-
अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
ग़ज़ब का प्याला ख़ूब पियो! इतना पियो कि नशे में
आ कर क़ै आने लगे। उस वक़्त तक पीते जाओ जब
तक तुम मेरी तलवार के आगे गिर कर पड़े न रहो।'
28 अगर वह तेरे हाथ से प्याला न लें बल्कि उसे पीने
से इन्कार करें तो उन्हें बता, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज ख़ुद
फ़रमाता है कि पियो! 29 देखो, जिस शहर पर मेरे नाम
का ठप्पा लगा है उसी पर मैं आफ़त लाने लगा हूँ।
अगर मैं ने उसी से शुरू किया तो फिर तुम किस तरह
बचे रहोगे? यक़ीनन तुम्हें सज़ा मिलेगी, क्यूँकि मैं ने
तै कर लिया है कि दुनिया के तमाम बाशिन्दे तलवार
की ज़द में आ जाएँ'।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।

---

[e]ग़ालिबन इस से मुराद बाबल का बादशाह है।

तमाम अक़्वाम की अदालत

30 “ऐ यरमियाह, उन्हें यह तमाम पेशगोइयाँ सुना
कर बता कि रब बुलन्दियों से दहाड़ेगा। उस की
मुक़द्दस सुकूनतगाह से उस की कड़कती आवाज़
निकलेगी, वह ज़ोर से अपनी चरागाह के ख़िलाफ़
गरजेगा। जिस तरह अंगूर का रस निकालने वाले
अंगूर को रौंदते वक़्त ज़ोर से नारे लगाते हैं उसी तरह
वह नारे लगाएगा, अलबत्ता जंग के नारे। क्यूँकि वह
दुनिया के तमाम बाशिन्दों के ख़िलाफ़ जंग के नारे
लगाएगा। 31 उस का शोर दुनिया की इन्तिहा तक
गूँजेगा, क्यूँकि रब अदालत में अक़्वाम से मुक़द्दमा
लड़ेगा, वह तमाम इन्सानों का इन्साफ़ करके शरीरों
को तलवार के हवाले कर देगा।” यह रब का फ़रमान
है। 32 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “देखो, यके
बाद दीगरे तमाम क़ौमों पर आफ़त नाज़िल हो रही
है, ज़मीन की इन्तिहा से ज़बरदस्त तूफ़ान आ रहा है।
33 उस वक़्त रब के मारे हुए लोगों की लाशें दुनिया
के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़ी रहेंगी। न कोई उन
पर मातम करेगा, न उन्हें उठा कर दफ़न करेगा। वह
खेत में बिखरे गोबर की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।
34 ऐ गल्लाबानो, वावैला करो! ऐ रेवड़ के
राहनुमाओ, राख में लोट-पोट हो जाओ! क्यूँकि वक़्त
आ गया है कि तुम्हें ज़बह किया जाए। तुम गिर
कर नाज़ुक बर्तन की तरह पाश पाश हो जाओगे।
35 गल्लाबान कहीं भी भाग कर पनाह नहीं ले सकेंगे,
रेवड़ के राहनुमा बच ही नहीं सकेंगे। 36 सुनो!
गल्लाबानों की चीख़ें और रेवड़ के राहनुमाओं की
आहें! क्यूँकि रब उन की चरागाह को तबाह कर
रहा है। 37 पुरसुकून मुर्ग़ज़ारों का सत्यानास होगा
जब रब का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होगा, 38 जब रब
जवान शेरबबर की तरह अपनी छुपने की जगह से
निकल कर लोगों पर टूट पड़ेगा। तब ज़ालिम की
तेज़ तलवार और रब का शदीद क़हर उन का मुल्क
तबाह करेगा।”

रब के घर में यरमियाह का पैग़ाम

26 1 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह यहूदाह के
तख़्त पर बैठ गया तो थोड़ी देर के बाद
रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 2 रब ने
फ़रमाया, “ऐ यरमियाह, रब के घर के सहन में खड़ा
हो कर उन तमाम लोगों से मुख़ातिब हो जो रब के
घर में सिज्दा करने के लिए यहूदाह के दीगर शहरों
से आए हैं। उन्हें मेरा पूरा पैग़ाम सुना दे, एक बात भी
न छोड़! 3 शायद वह सुनें और हर एक अपनी बुरी
राह से बाज़ आ जाए। इस सूरत में मैं पछता कर उन
पर वह सज़ा नाज़िल नहीं करूँगा जिस का मन्सूबा
मैं ने उन के बुरे आमाल देख कर बांध लिया है।
4 उन्हें बता, ‘रब फ़रमाता है कि मेरी सुनो और मेरी
उस शरीअत पर अमल करो जो मैं ने तुम्हें दी है।
5 नीज़, नबियों के पैग़ामात पर ध्यान दो। अफ़्सोस,
गो मैं अपने ख़ादिमों को बार बार तुम्हारे पास भेजता
रहा तो भी तुम ने उन की न सुनी। 6 अगर तुम आइन्दा
भी न सुनो तो मैं इस घर को यूँ तबाह करूँगा जिस
तरह मैं ने सैला का मक़्दिस तबाह किया था। मैं इस
शहर को भी यूँ ख़ाक में मिला दूँगा कि इब्रतअंगेज़
मिसाल बन जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में जब
कोई अपने दुश्मन पर लानत भेजना चाहे तो वह
कहेगा कि उस का यरूशलम का सा अन्जाम हो’।”

यरमियाह की अदालत

7 जब यरमियाह ने रब के घर में रब के यह अल्फ़ाज़
सुनाए तो इमामों, नबियों और तमाम बाक़ी लोगों ने
ग़ौर से सुना। 8 यरमियाह ने उन्हें सब कुछ पेश किया
जो रब ने उसे सुनाने को कहा था। लेकिन जूँ ही
वह इख़तिताम पर पहुँच गया तो इमाम, नबी और
बाक़ी तमाम लोग उसे पकड़ कर चीख़ने लगे, “तुझे
मरना ही है! 9 तू रब का नाम ले कर क्यूँ कह रहा
है कि रब का घर सैला की तरह तबाह हो जाएगा,
और यरूशलम मल्बे का ढेर बन कर ग़ैरआबाद हो

जाएगा?” ऐसी बातें कह कर तमाम लोगों ने रब के
घर में यरमियाह को घेरे रखा।
10 जब यहूदाह के बुज़ुर्गों को इस की ख़बर मिली
तो वह शाही महल से निकल कर रब के घर के पास
पहुँचे। वहाँ वह रब के घर के सहन के नए दरवाज़े
में बैठ गए ताकि यरमियाह की अदालत करें। 11 तब
इमामों और नबियों ने बुज़ुर्गों और तमाम लोगों के
सामने यरमियाह पर इल्ज़ाम लगाया, “लाज़िम है कि
इस आदमी को सज़ा-ए-मौत दी जाए! क्यूँकि इस ने
इस शहर यरूशलम के ख़िलाफ़ नबुव्वत की है। आप
ने अपने कानों से यह बात सुनी है।”
12 तब यरमियाह ने बुज़ुर्गों और बाक़ी तमाम लोगों
से कहा, “रब ने ख़ुद मुझे यहाँ भेजा ताकि मैं रब
के घर और यरूशलम के ख़िलाफ़ उन तमाम बातों
की पेशगोई करूँ जो आप ने सुनी हैं। 13 चुनाँचे अपनी
राहों और आमाल को दुरुस्त करें! रब अपने ख़ुदा की
सुनें ताकि वह पछता कर आप पर वह सज़ा नाज़िल
न करे जिस का एलान उस ने किया है। 14 जहाँ तक
मेरा ताल्लुक़ है, मैं तो आप के हाथ में हूँ। मेरे साथ
वह सुलूक करें जो आप को अच्छा और मुनासिब
लगे। 15 लेकिन एक बात जान लें। अगर आप मुझे
सज़ा-ए-मौत दें तो आप बेक़ुसूर के क़ातिल ठहरेंगे।
आप और यह शहर उस के तमाम बाशिन्दों समेत
क़ुसूरवार ठहरेंगे। क्यूँकि रब ही ने मुझे आप के पास
भेजा ताकि आप के सामने ही यह बातें करूँ।”
16 यह सुन कर बुज़ुर्गों और अवाम के तमाम लोगों
ने इमामों और नबियों से कहा, “यह आदमी सज़ा-ए-
मौत के लाइक़ नहीं है! क्यूँकि उस ने रब हमारे ख़ुदा
का नाम ले कर हम से बात की है।”
17 फिर मुल्क के कुछ बुज़ुर्ग खड़े हो कर पूरी
जमाअत से मुख़ातिब हुए, 18 “जब हिज़क़ियाह
यहूदाह का बादशाह था तो मोरशत के रहने वाले
नबी मीकाह ने नबुव्वत करके यहूदाह के तमाम
बाशिन्दों से कहा, ‘रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है
कि सिय्यून पर खेत की तरह हल चलाया जाएगा,
और यरूशलम मल्बे का ढेर बन जाएगा। रब के घर
की पहाड़ी पर गुंजान जंगल उगेगा।’ 19 क्या यहूदाह
के बादशाह हिज़क़ियाह या यहूदाह के किसी और
शख़्स ने मीकाह को सज़ा-ए-मौत दी? हरगिज़ नहीं,
बल्कि हिज़क़ियाह ने रब का ख़ौफ़ मान कर उस का
ग़ुस्सा ठंडा करने की कोशिश की। नतीजे में रब ने
पछता कर वह सज़ा उन पर नाज़िल न की जिस का
एलान वह कर चुका था। सुनें, अगर हम यरमियाह
को सज़ा-ए-मौत दें तो अपने आप पर सख़्त सज़ा
लाएँगे।”

ऊरियाह नबी का क़त्ल

20 उन दिनों में एक और नबी भी यरमियाह की तरह
रब का नाम ले कर नबुव्वत करता था। उस का
नाम ऊरियाह बिन समायाह था, और वह क़िर्यत-
यारीम का रहने वाला था। उस ने भी यरूशलम
और यहूदाह के ख़िलाफ़ वही पेशगोइयाँ सुनाईं जो
यरमियाह सुनाता था।
21 जब यहूयक़ीम बादशाह और उस के तमाम
फ़ौजी और सरकारी अफ़्सरों ने उस की बातें सुनीं तो
बादशाह ने उसे मार डालने की कोशिश की। लेकिन
ऊरियाह को इस की ख़बर मिली, और वह डर कर
भाग गया। चलते चलते वह मिस्र पहुँच गया। 22 तब
यहूयक़ीम ने इल्नातन बिन अक्बोर और चन्द एक
आदमियों को वहाँ भेज दिया। 23 वहाँ पहुँच कर वह
ऊरियाह को पकड़ कर यहूयक़ीम के पास वापस
लाए। बादशाह के हुक्म पर उस का सर क़लम कर
दिया गया और उस की नाश को निचले तब्क़े के
लोगों के क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया।
24 लेकिन यरमियाह की जान छूट गई। उसे अवाम
के हवाले न किया गया, गो वह उसे मार डालना
चाहते थे, क्यूँकि अख़ीक़ाम बिन साफ़न उस के हक़
में था।

जूए की अलामत

27 1 जब सिदक़ियाह बिन यूसियाह यहूदाह के
तख़्त पर बैठ गया तो रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ। 2 रब ने मुझे फ़रमाया,
"अपने लिए जूआ और उस के रस्से बना कर
उसे अपनी गर्दन पर रख ले! 3 फिर अदोम, मोआब,
अम्मोन, सूर और सैदा के शाही सफ़ीरों के पास
जा जो इस वक़्त यरूशलम में सिदक़ियाह बादशाह
के पास जमा हैं। 4 उन के हाथ उन के बादशाहों
को पैग़ाम भेज, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है कि 5 मैं ने अपना हाथ बढ़ा कर
बड़ी क़ुदरत से दुनिया को इन्सान-ओ-हैवान समेत
ख़ल्क़ किया है, और मैं ही यह चीज़ें उसे अता
करता हूँ जो मेरी नज़र में लाइक़ है। 6 इस वक़्त
मैं तुम्हारे तमाम ममालिक को अपने ख़ादिम शाह-
ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र के हवाले करूँगा। जंगली
जानवर तक सब उस के ताबे हो जाएंगे। 7 तमाम
अक़्वाम उस की और उस के बेटे और पोते की
ख़िदमत करेंगी। फिर एक वक़्त आएगा कि बाबल
की हुकूमत ख़त्म हो जाएगी। तब मुतअद्दिद क़ौमें
और बड़े बड़े बादशाह उसे अपने ही ताबे कर लेंगे।
8 लेकिन इस वक़्त लाज़िम है कि हर क़ौम और
सल्तनत शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की ख़िदमत
करके उस का जूआ क़बूल करे। जो इन्कार करे
उसे मैं तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों से
उस वक़्त तक सज़ा दूँगा जब तक वह पूरे तौर पर
नबूकद्नज़्ज़र के हाथ से तबाह न हो जाए। यह रब
का फ़रमान है।
9 चुनाँचे अपने नबियों, फ़ालगीरों, ख़्वाब देखने
वालों, क़िस्मत का हाल बताने वालों और जादूगरों
पर ध्यान न दो जब वह तुम्हें बताते हैं कि तुम शाह-
ए-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे। 10 क्यूँकि वह
तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ पेश कर रहे हैं जिन का सिर्फ़
यह नतीजा निकलेगा कि मैं तुम्हें वतन से निकाल
कर मुन्तशिर करूँगा और तुम हलाक हो जाओगे।
11 लेकिन जो क़ौम शाह-ए-बाबल का जूआ क़बूल
करके उस की ख़िदमत करे उसे मैं उस के अपने
मुल्क में रहने दूँगा, और वह उस की खेतीबाड़ी
करके उस में बसेगी। यह रब का फ़रमान है'।"
12 मैं ने यही पैग़ाम यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
को भी सुनाया। मैं बोला, "शाह-ए-बाबल के जूए
को क़बूल करके उस की और उस की क़ौम की
ख़िदमत करो तो तुम ज़िन्दा रहोगे। 13 क्या ज़रूरत
है कि तू अपनी क़ौम समेत तलवार, काल और
मोहलिक बीमारियों की ज़द में आ कर हलाक हो
जाए? क्यूँकि रब ने फ़रमाया है कि हर क़ौम जो
शाह-ए-बाबल की ख़िदमत करने से इन्कार करे उस
का यही अन्जाम होगा। 14 उन नबियों पर तवज्जुह
मत देना जो तुम से कहते हैं, 'तुम शाह-ए-बाबल की
ख़िदमत नहीं करोगे।' उन की यह पेशगोई झूट ही है।
15 रब फ़रमाता है, 'मैं ने उन्हें नहीं भेजा बल्कि वह
मेरा नाम ले कर झूटी पेशगोइयाँ सुना रहे हैं। अगर
तुम उन की सुनो तो मैं तुम्हें मुन्तशिर कर दूँगा, और
तुम नबुव्वत करने वाले उन नबियों समेत हलाक हो
जाओगे'।"
16 फिर मैं इमामों और पूरी क़ौम से मुख़ातिब हुआ,
"रब फ़रमाता है, 'उन नबियों की न सुनो जो नबुव्वत
करके कहते हैं कि अब रब के घर का सामान जल्द
ही मुल्क-ए-बाबल से वापस लाया जाएगा। वह तुम्हें
झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। 17 उन पर तवज्जुह
मत देना। बाबल के बादशाह की ख़िदमत करो तो
तुम ज़िन्दा रहोगे। यह शहर क्यूँ मल्बे का ढेर बन
जाए? 18 अगर यह लोग वाक़ई नबी हों और इन्हें
रब का कलाम मिला हो तो इन्हें रब के घर, शाही
महल और यरूशलम में अब तक बचे हुए सामान के
लिए दुआ करनी चाहिए। वह रब्ब-उल-अफ़्वाज से
शफ़ाअत करें कि यह चीज़ें मुल्क-ए-बाबल न ले जाई
जाएँ बल्कि यहीं रहें।
19–22 अब तक पीतल के सतून, पीतल का
हौज़ बनाम समुन्दर, पानी के बासन उठाने वाली
हथगाड़ियाँ और इस शहर का बाक़ी बचा हुआ

सामान यहीं मौजूद है। नबूकद्नज़्ज़र ने इन्हें उस
वक़्त अपने साथ नहीं लिया था जब वह यहूदाह के
बादशाह यहूयाकीन [f]बिन यहूयक़ीम को यरूशलम
और यहूदाह के तमाम शुरफ़ा समेत जिलावतन
करके मुल्क-ए-बाबल ले गया था। लेकिन रब्ब-उल-
अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है इन चीज़ों के बारे
में फ़रमाता है कि जितनी भी क़ीमती चीज़ें अब तक
रब के घर, शाही महल या यरूशलम में कहीं और
बच गई हैं वह भी मुल्क-ए-बाबल में पहुँचाई जाएँगी।
वहीं वह उस वक़्त तक रहेंगी जब तक मैं उन पर
नज़र डाल कर उन्हें इस जगह वापस न लाऊँ।' यह
रब का फ़रमान है।"

हननियाह नबी की मुख़ालफ़त

28 1 उसी साल के पाँचवें महीने [g]में जिबऊन
का रहने वाला नबी हननियाह बिन अज़्ज़ूर
रब के घर में आया। उस वक़्त यानी सिदक़ियाह
की हुकूमत के चौथे साल में वह इमामों और क़ौम
की मौजूदगी में मुझ से मुख़ातिब हुआ, 2 "रब्ब-
उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है
कि मैं शाह-ए-बाबल का जूआ तोड़ डालूँगा। 3 दो
साल के अन्दर अन्दर मैं रब के घर का वह सारा
सामान इस जगह वापस पहुँचाऊँगा जो शाह-ए-
बाबल नबूकद्नज़्ज़र यहाँ से निकाल कर बाबल
ले गया था। 4 उस वक़्त मैं यहूदाह के बादशाह
यहूयाकीन [h]बिन यहूयक़ीम और यहूदाह के दीगर
तमाम जिलावतनों को भी बाबल से वापस लाऊँगा।
क्यूँकि मैं यक़ीनन शाह-ए-बाबल का जूआ तोड़
डालूँगा। यह रब का फ़रमान है।"

5 यह सुन कर यरमियाह ने इमामों और रब के घर
में खड़े बाक़ी परस्तारों की मौजूदगी में हननियाह
नबी से कहा, 6 "आमीन! रब ऐसा ही करे, वह तेरी
पेशगोई पूरी करके रब के घर का सामान और तमाम
जिलावतनों को बाबल से इस जगह वापस लाए।
7 लेकिन उस पर तवज्जुह दे जो मैं तेरी और पूरी क़ौम
की मौजूदगी में बयान करता हूँ! 8 क़दीम ज़माने से ले
कर आज तक जितने नबी मुझ से और तुझ से पहले
ख़िदमत करते आए हैं उन्हों ने मुतअद्दिद मुल्कों
और बड़ी बड़ी सल्तनतों के बारे में नबुव्वत की थी
कि उन पर जंग, आफ़त और मोहलिक बीमारियाँ
नाज़िल होंगी। 9 चुनाँचे ख़बरदार! जो नबी सलामती
की पेशगोई करे उस की तस्दीक़ उस वक़्त होगी जब
उस की पेशगोई पूरी हो जाएगी। उसी वक़्त लोग जान
लेंगे कि उसे वाक़ई रब की तरफ़ से भेजा गया है।"

10 तब हननियाह ने लकड़ी के जूए को यरमियाह
की गर्दन पर से उतार कर उसे तोड़ दिया। 11 तमाम
लोगों के सामने उस ने कहा, "रब फ़रमाता है कि
दो साल के अन्दर अन्दर मैं इसी तरह शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र का जूआ तमाम क़ौमों की गर्दन पर
से उतार कर तोड़ डालूँगा।" तब यरमियाह वहाँ से
चला गया।

12 इस वाकिए के थोड़ी देर बाद रब यरमियाह से
हमकलाम हुआ, 13 "जा, हननियाह को बता, 'रब
फ़रमाता है कि तू ने लकड़ी का जूआ तो तोड़ दिया
है, लेकिन उस की जगह तू ने अपनी गर्दन पर लोहे
का जूआ रख लिया है।' 14 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं ने लोहे का
जूआ इन तमाम क़ौमों पर रख दिया है ताकि वह
नबूकद्नज़्ज़र की ख़िदमत करें। और न सिर्फ़ यह
उस की ख़िदमत करेंगे बल्कि मैं जंगली जानवरों को
भी उस के हाथ में कर दूँगा।"

15 फिर यरमियाह ने हननियाह से कहा, "ऐ
हननियाह, सुन! गो रब ने तुझे नहीं भेजा तो भी तू
ने इस क़ौम को झूट पर भरोसा रखने पर आमादा
किया है। 16 इस लिए रब फ़रमाता है, 'मैं तुझे रू-ए-
ज़मीन पर से मिटाने को हूँ। इसी साल तू मर जाएगा,

---

[f]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

[g]जुलाई ता अगस्त।

[h]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

इस लिए कि तू ने रब से सरकश होने का मश्वरा दिया
है'।"
17 और ऐसा ही हुआ। उसी साल के सातवें महीने
[i]यानी दो महीने के बाद हननियाह नबी कूच कर गया।

यरमियाह जिलावतनों को ख़त भेजता है

29 1 एक दिन यरमियाह नबी ने यरूशलम से
एक ख़त मुल्क-ए-बाबल भेजा। यह ख़त
उन बचे हुए बुज़ुर्गों, इमामों, नबियों और बाक़ी
इस्राईलियों के नाम लिखा था जिन्हें नबूकद्नज़्ज़र
बादशाह जिलावतन करके बाबल ले गया था। 2 उन
में यहूयाकीन [j]बादशाह, उस की माँ और दरबारी,
और यहूदाह और यरूशलम के बुज़ुर्ग, कारीगर और
लोहार शामिल थे। 3 यह ख़त इलिआसा बिन साफ़न
और जमरियाह बिन ख़िलक़ियाह के हाथ बाबल
पहुँचा जिन्हें यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह ने
बाबल में शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र के पास भेजा
था। ख़त में लिखा था,
4 "रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, 'ऐ तमाम जिलावतनो जिन्हें मैं यरूशलम
से निकाल कर बाबल ले गया हूँ, ध्यान से सुनो!
5 बाबल में घर बना कर उन में बसने लगो।
बाग़ लगा कर उन का फल खाओ। 6 शादी करके
बेटे-बेटियाँ पैदा करो। अपने बेटे-बेटियों की शादी
कराओ ताकि उन के भी बच्चे पैदा हो जाएँ। ध्यान दो
कि मुल्क-ए-बाबल में तुम्हारी तादाद कम न हो जाए
बल्कि बढ़ जाए। 7 उस शहर की सलामती के तालिब
रहो जिस में मैं तुम्हें जिलावतन करके ले गया हूँ। रब
से उस के लिए दुआ करो! क्यूँकि तुम्हारी सलामती
उसी की सलामती पर मुन्हसिर है।'
8 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, 'ख़बरदार! तुम्हारे दरमियान रहने वाले
नबी और क़िस्मत का हाल बताने वाले तुम्हें फ़रेब
न दें। उन ख़्वाबों पर तवज्जुह मत देना जो यह
देखते हैं।' 9 रब फ़रमाता है, 'यह मेरा नाम ले कर
तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं, गो मैं ने उन्हें नहीं
भेजा।' 10 क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'तुम्हें बाबल में
रहते हुए कुल 70 साल गुज़र जाएंगे। लेकिन इस के
बाद मैं तुम्हारी तरफ़ रुजू करूँगा, मैं अपना पुरफ़ज़्ल
वादा पूरा करके तुम्हें वापस लाऊँगा।' 11 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, 'मैं उन मन्सूबों से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो
मैं ने तुम्हारे लिए बांधे हैं। यह मन्सूबे तुम्हें नुक़्सान
नहीं पहुँचाएँगे बल्कि तुम्हारी सलामती का बाइस
होंगे, तुम्हें उम्मीद दिला कर एक अच्छा मुस्तक़बिल
फ़राहम करेंगे। 12 उस वक़्त तुम मुझे पुकारोगे, तुम
आ कर मुझ से दुआ करोगे तो मैं तुम्हारी सुनूँगा।
13 तुम मुझे तलाश करके पा लोगे। क्यूँकि अगर तुम
पूरे दिल से मुझे ढूँडो 14 तो मैं होने दूँगा कि तुम
मुझे पाओ।' यह रब का फ़रमान है। 'फिर मैं तुम्हें
बहाल करके उन तमाम क़ौमों और मक़ामों से जमा
करूँगा जहाँ मैं ने तुम्हें मुन्तशिर कर दिया था। और
मैं तुम्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जिस से मैं ने
तुम्हें निकाल कर जिलावतन कर दिया था।' यह रब
का फ़रमान है।
15 तुम्हारा दावा है कि रब ने यहाँ बाबल में भी
हमारे लिए नबी बरपा किए हैं। 16–17 लेकिन रब का
जवाब सुनो! दाऊद के तख़्त पर बैठने वाले बादशाह
और यरूशलम में बचे हुए तमाम बाशिन्दों के बारे में
रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'तुम्हारे जितने भाई
जिलावतनी से बच गए हैं उन के ख़िलाफ़ मैं तलवार,
काल और मोहलिक बीमारियाँ भेज दूँगा। मैं उन्हें गले
हुए अन्जीरों की मानिन्द बना दूँगा, जो ख़राब होने की
वजह से खाए नहीं जाएंगे। 18 मैं तलवार, काल और
मोहलिक बीमारियों से उन का यूँ ताक़्क़ुब करूँगा
कि दुनिया के तमाम ममालिक उन की हालत देख
कर घबरा जाएंगे। जिस क़ौम में भी मैं उन्हें मुन्तशिर
करूँगा वहाँ लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी
पर लानत भेजते वक़्त लोग कहेंगे कि उसे यहूदाह

[i]सितम्बर ता अक्तूबर।

[j]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

के बाशिन्दों का सा अन्जाम नसीब हो। हर जगह
वह मज़ाक़ और रुस्वाई का निशाना बन जाएंगे।
19 क्यूँ? इस लिए कि उन्हों ने मेरी न सुनी, गो मैं
अपने ख़ादिमों यानी नबियों के ज़रीए बार बार उन्हें
पैग़ामात भेजता रहा। लेकिन तुम ने भी मेरी न सुनी।'
यह रब का फ़रमान है।

20 अब रब का फ़रमान सुनो, तुम सब जो
जिलावतन हो चुके हो, जिन्हें मैं यरूशलम से निकाल
कर बाबल भेज चुका हूँ। 21 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, 'अख़ियब बिन
क़ौलायाह और सिदक़ियाह बिन मासियाह मेरा नाम
ले कर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। इस लिए मैं
उन्हें शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र के हाथ में दूँगा जो
उन्हें तेरे देखते देखते सज़ा-ए-मौत देगा। 22 उन का
अन्जाम इब्रतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। किसी पर
लानत भेजते वक़्त यहूदाह के जिलावतन कहेंगे, "रब
तेरे साथ सिदक़ियाह और अख़ियब का सा सुलूक
करे जिन्हें शाह-ए-बाबल ने आग में भून लिया!"
23 क्यूँकि उन्हों ने इस्राईल में बेदीन हरकतें की हैं।
अपने पड़ोसियों की बीवियों के साथ ज़िना करने के
साथ साथ उन्हों ने मेरा नाम ले कर ऐसे झूटे पैग़ाम
सुनाए हैं जो मैं ने उन्हें सुनाने को नहीं कहा था। मुझे
इस का पूरा इल्म है, और मैं इस का गवाह हूँ।' यह
रब का फ़रमान है।"

समायाह के लिए रब का पैग़ाम

24 रब ने फ़रमाया, "बाबल के रहने वाले समायाह
नख़लामी को इत्तिला दे, 25 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि तू ने अपनी ही
तरफ़ से इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को ख़त
भेजा। दीगर इमामों और यरूशलम के बाक़ी तमाम
बाशिन्दों को भी इस की कापियाँ मिल गईं। ख़त में
लिखा था,

26 'रब ने आप को यहोयदा की जगह अपने घर
की देख-भाल करने की ज़िम्मादारी दी है। आप की
ज़िम्मादारियों में यह भी शामिल है कि हर दीवाने
और नबुव्वत करने वाले को काठ में डाल कर
उस की गर्दन में लोहे की ज़न्जीरें डालें। 27 तो फिर
आप ने अनतोत के रहने वाले यरमियाह के ख़िलाफ़
क़दम क्यूँ नहीं उठाया जो आप के दरमियान नबुव्वत
करता रहता है? 28 क्यूँकि उस ने हमें जो बाबल में
हैं ख़त भेज कर मश्वरा दिया है कि देर लगेगी, इस
लिए घर बना कर उन में बसने लगो, बाग़ लगा कर
उन का फल खाओ'।"

29 जब सफ़नियाह को समायाह का ख़त मिल गया
तो उस ने यरमियाह को सब कुछ सुनाया। 30 तब
यरमियाह पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 31 "तमाम
जिलावतनों को ख़त भेज कर लिख दे, 'रब समायाह
नख़लामी के बारे में फ़रमाता है कि गो मैं ने समायाह
को नहीं भेजा तो भी उस ने तुम्हें पेशगोइयाँ सुना कर
झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। 32 चुनाँचे
रब फ़रमाता है कि मैं समायाह नख़लामी को उस की
औलाद समेत सज़ा दूँगा। इस क़ौम में उस की नस्ल
ख़त्म हो जाएगी, और वह ख़ुद उन अच्छी चीज़ों
से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा जो मैं अपनी क़ौम को
फ़राहम करूँगा। क्यूँकि उस ने रब से सरकश होने
का मश्वरा दिया है'।"

इस्राईल और यहूदाह बहाल हो जाएंगे

30 1 रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल
हुआ, 2 "रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है
कि जो भी पैग़ाम मैं ने तुझ पर नाज़िल किए उन्हें
किताब की सूरत में क़लमबन्द कर! 3 क्यूँकि रब
फ़रमाता है कि वह वक़्त आने वाला है जब मैं अपनी
क़ौम इस्राईल और यहूदाह को बहाल करके उस
मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैं ने उन के बापदादा
को मीरास में दिया था।"

4 यह इस्राईल और यहूदाह के बारे में रब के फ़रमान
हैं। 5 "रब फ़रमाता है, 'ख़ौफ़ज़दा चीख़ें सुनाई दे रही
हैं। अम्न का नाम-ओ-निशान तक नहीं बल्कि चारों
तरफ़ दहशत ही दहशत फैली हुई है। 6 क्या मर्द बच्चे
जन्म दे सकता है? तो फिर तमाम मर्द क्यूँ अपने हाथ

कमर पर रख कर दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरतों की
तरह तड़प रहे हैं? हर एक का रंग फ़क़ पड़ गया है।
7 अफ़सोस! वह दिन कितना हौलनाक होगा! उस
जैसा कोई नहीं होगा। याक़ूब की औलाद को बड़ी
मुसीबत पेश आएगी, लेकिन आख़िरकार उसे रिहाई
मिलेगी।' 8 रब फ़रमाता है, 'उस दिन मैं उन की गर्दन
पर रखे जूए और उन की ज़न्जीरों को तोड़ डालूँगा।
तब वह ग़ैरमुल्कियों के ग़ुलाम नहीं रहेंगे 9 बल्कि रब
अपने ख़ुदा और दाऊद की नस्ल के उस बादशाह की
ख़िदमत करेंगे जिसे मैं बरपा करके उन पर मुक़र्रर
करूँगा।'
10 चुनाँचे रब फ़रमाता है, 'ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम,
मत डर! ऐ इस्राईल, दहशत मत खा! देख, मैं तुझे
दूरदराज़ इलाक़ों से और तेरी औलाद को जिलावतनी
से छुड़ा कर वापस ले आऊँगा। याक़ूब वापस आ
कर सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारेगा, और उसे परेशान
करने वाला कोई नहीं होगा।' 11 क्यूँकि रब फ़रमाता
है, 'मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाऊँगा। मैं उन तमाम
क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा जिन में मैं ने तुझे
मुन्तशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हा-
ए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद
तक तेरी तम्बीह करूँगा, क्यूँकि मैं तुझे सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ सकता।'
12 क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'तेरा ज़ख़्म लाइलाज है,
तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 13 कोई नहीं है जो तेरे
हक़ में बात करे, तेरे फोड़ों का मुआलजा और तेरी
शिफ़ा मुमकिन ही नहीं! 14 तेरे तमाम आशिक़ [k]तुझे
भूल गए हैं और तेरी पर्वा ही नहीं करते। तेरा क़ुसूर
बहुत संगीन है, तुझ से बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं।
इसी लिए मैं ने तुझे दुश्मन की तरह मारा, ज़ालिम की
तरह तम्बीह दी है।
15 अब जब चोट लग गई है और लाइलाज दर्द
महसूस हो रहा है तो तू मदद के लिए क्यूँ चीख़ता है?
यह मैं ही ने तेरे संगीन क़ुसूर और मुतअद्दिद गुनाहों
की वजह से तेरे साथ किया है।
16 लेकिन जो तुझे हड़प करें उन्हें भी हड़प किया
जाएगा। तेरे तमाम दुश्मन जिलावतन हो जाएंगे।
जिन्हों ने तुझे लूट लिया उन्हें भी लूटा जाएगा, जिन्हों
ने तुझे ग़ारत किया उन्हें भी ग़ारत किया जाएगा।'
17 क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'मैं तेरे ज़ख़्मों को भर कर
तुझे शिफ़ा दूँगा, क्यूँकि लोगों ने तुझे मर्दूद क़रार दे
कर कहा है कि सिय्यून को देखो जिस की फ़िक्र कोई
नहीं करता।' 18 रब फ़रमाता है, 'देखो, मैं याक़ूब के
ख़ैमों की बदनसीबी ख़त्म करूँगा, मैं इस्राईल के
घरों पर तरस खाऊँगा। तब यरूशलम को खंडरात
पर नए सिरे से तामीर किया जाएगा, और महल को
दुबारा उस की पुरानी जगह पर खड़ा किया जाएगा।
19 उस वक़्त वहाँ शुक्रगुज़ारी के गीत और ख़ुशी
मनाने वालों की आवाज़ें बुलन्द हो जाएँगी। और मैं
ध्यान दूँगा कि उन की तादाद कम न हो जाए बल्कि
मज़ीद बढ़ जाए। उन्हें हक़ीर नहीं समझा जाएगा
बल्कि मैं उन की इज़्ज़त बहुत बढ़ा दूँगा। 20 उन के
बच्चे क़दीम ज़माने की तरह महफ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे,
और उन की जमाअत मज़बूती से मेरे हुज़ूर क़ाइम
रहेगी। लेकिन जितनों ने उन पर ज़ुल्म किया है उन्हें
मैं सज़ा दूँगा।
21 उन का हुक्मरान उन का अपना हमवतन होगा,
वह दुबारा उन में से उठ कर तख़्तनशीन हो जाएगा।
मैं ख़ुद उसे अपने क़रीब लाऊँगा तो वह मेरे क़रीब
आएगा।' क्यूँकि रब फ़रमाता है, 'सिर्फ़ वही अपनी
जान ख़तरे में डाल कर मेरे क़रीब आने की जुरअत
कर सकता है जिसे मैं ख़ुद अपने क़रीब लाया हूँ।
22 उस वक़्त तुम मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा
हूँगा'।"
23 देखो, रब का ग़ज़ब ज़बरदस्त आँधी की तरह
नाज़िल हो रहा है। तेज़ बगूले के झोंके बेदीनों के सरों
पर उतर रहे हैं। 24 और रब का शदीद क़हर उस वक़्त

[k]आशिक़ से मुराद इस्राईल के इत्तिहादी हैं।

तक ठंडा नहीं होगा जब तक उस ने अपने दिल के
मन्सूबों को तक्मील तक नहीं पहुँचाया। आने वाले
दिनों में तुम्हें इस की साफ़ समझ आएगी।

जिलावतनों की वापसी

31 1 रब फ़रमाता है, "उस वक़्त मैं तमाम
इस्राईली घरानों का ख़ुदा हूँगा, और वह
मेरी क़ौम होंगे।" 2 रब फ़रमाता है, "तलवार से बचे
हुए लोगों को रेगिस्तान में ही मेरा फ़ज़्ल हासिल हुआ
है, और इस्राईल अपनी आरामगाह के पास पहुँच रहा
है।"

3 रब ने दूर से इस्राईल पर ज़ाहिर हो कर फ़रमाया,
"मैं ने तुझे हमेशा ही प्यार किया है, इस लिए मैं
तुझे बड़ी शफ़क़त से अपने पास खैंच लाया हूँ। 4 ऐ
कुंवारी इस्राईल, तेरी नए सिरे से तामीर हो जाएगी,
क्यूँकि मैं ख़ुद तुझे तामीर करूँगा। तू दुबारा अपने
दफ़ों से आरास्ता हो कर ख़ुशी मनाने वालों के
लोकनाच के लिए निकलेगी। 5 तू दुबारा सामरिया की
पहाड़ियों पर अंगूर के बाग़ लगाएगी। और जो पौदों
को लगाएँगे वह ख़ुद उन के फल से लुत्फ़अन्दोज़
होंगे। 6 क्यूँकि वह दिन आने वाला है जब इफ़्राईम
के पहाड़ी इलाक़े के पहरेदार आवाज़ दे कर कहेंगे,
'आओ हम सिय्यून के पास जाएँ ताकि रब अपने
ख़ुदा को सिज्दा करें'।"

7 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "याक़ूब को देख कर ख़ुशी
मनाओ! क़ौमों के सरबराह को देख कर शादमानी
का नारा मारो! बुलन्द आवाज़ से अल्लाह की हम्द-
ओ-सना करके कहो, 'ऐ रब, अपनी क़ौम को बचा,
इस्राईल के बचे हुए हिस्से को छुटकारा दे।' 8 क्यूँकि
मैं उन्हें शिमाली मुल्क से वापस लाऊँगा, उन्हें दुनिया
की इन्तिहा से जमा करूँगा। अंधे और लंगड़े उन में
शामिल होंगे, हामिला और जन्म देने वाली औरतें
भी साथ चलेंगी। उन का बड़ा हुजूम वापस आएगा।
9 और जब मैं उन्हें वापस लाऊँगा तो वह रोते हुए
और इल्तिजाएँ करते हुए मेरे पीछे चलेंगे। मैं उन्हें
नदियों के किनारे किनारे और ऐसे हमवार रास्तों पर
वापस ले चलूँगा, जहाँ ठोकर खाने का ख़तरा नहीं
होगा। क्यूँकि मैं इस्राईल का बाप हूँ, और इफ़्राईम
[l]मेरा पहलौठा है।

10 ऐ क़ौमो, रब का कलाम सुनो! दूरदराज़ जज़ीरों
तक एलान करो, 'जिस ने इस्राईल को मुन्तशिर कर
दिया है वह उसे दुबारा जमा करेगा और चरवाहे
की सी फ़िक्र रख कर उस की गल्लाबानी करेगा।'
11 क्यूँकि रब ने फ़िद्या दे कर याक़ूब को बचाया
है, उस ने इवज़ाना दे कर उसे ज़ोरावर के हाथ से
छुड़ाया है। 12 तब वह आ कर सिय्यून की बुलन्दी पर
ख़ुशी के नारे लगाएँगे, उन के चिहरे रब की बरकतों
को देख कर चमक उठेंगे। क्यूँकि उस वक़्त वह
उन्हें अनाज, नई मै, ज़ैतून के तेल और जवान भेड़-
बकरियों और गाय-बैलों की कस्रत से नवाज़ेगा। उन
की जान सेराब बाग़ की तरह सरसब्ज़ होगी, और उन
की निढाल हालत सँभल जाएगी। 13 फिर कुंवारियाँ
ख़ुशी के मारे लोकनाच नाचेंगी, जवान और बुज़ुर्ग
आदमी भी उस में हिस्सा लेंगे। यूँ मैं उन का मातम
ख़ुशी में बदल दूँगा, मैं उन के दिलों से ग़म निकाल
कर उन्हें अपनी तसल्ली और शादमानी से भर दूँगा।"
14 रब फ़रमाता है, "मैं इमामों की जान को तर-ओ-
ताज़ा करूँगा, और मेरी क़ौम मेरी बरकतों से सेर हो
जाएगी।"

15 रब फ़रमाता है, "रामा में शोर मच गया है, रोने
पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राख़िल अपने
बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं कर
रही, क्यूँकि वह हलाक हो गए हैं।"

16 लेकिन रब फ़रमाता है, "रोने और आँसू बहाने से
बाज़ आ, क्यूँकि तुझे अपनी मेहनत का अज्र मिलेगा।
यह रब का वादा है कि वह दुश्मन के मुल्क से लौट
आएँगे। 17 तेरा मुस्तक़बिल पुरउम्मीद होगा, क्यूँकि

---

[l]यहाँ इफ़्राईम इस्राईल का दूसरा नाम है।

तेरे बच्चे अपने वतन में वापस आएँगे।” यह रब का
फ़रमान है।
18 “इस्राईल [m]की गिर्या-ओ-ज़ारी मुझ तक पहुँच
गई है। क्यूँकि वह कहता है, ‘हाय, तू ने मेरी सख़्त
तादीब की है। मेरी यूँ तर्बियत हुई है जिस तरह बछड़े
की होती है जब उस की गर्दन पर पहली बार जूआ
रखा जाता है। ऐ रब, मुझे वापस ला ताकि मैं वापस
आऊँ, क्यूँकि तू ही रब मेरा ख़ुदा है। 19 मेरे वापस
आने पर मुझे नदामत महसूस हुई, और समझ आने
पर मैं अपना सीना पीटने लगा। मुझे शर्मिन्दगी और
रुस्वाई का शदीद एहसास हो रहा है, क्यूँकि अब
मैं अपनी जवानी के शर्मनाक फल की फ़सल काट
रहा हूँ।’ 20 लेकिन रब फ़रमाता है कि इस्राईल मेरा
क़ीमती बेटा, मेरा लाडला है। गो मैं बार बार उस के
ख़िलाफ़ बातें करता हूँ तो भी उसे याद करता रहता
हूँ। इस लिए मेरा दिल उस के लिए तड़पता है, और
लाज़िम है कि मैं उस पर तरस खाऊँ।
21 ऐ मेरी क़ौम, ऐसे निशान खड़े कर जिन से लोगों
को सहीह रास्ते का पता चले! उस पक्की सड़क पर
ध्यान दे जिस पर तू ने सफ़र किया है। ऐ कुंवारी
इस्राईल, वापस आ, अपने इन शहरों में लौट आ!
22 ऐ बेवफ़ा बेटी, तू कब तक भटकती फिरेगी? रब
ने मुल्क में एक नई चीज़ पैदा की है, यह कि आइन्दा
औरत आदमी के गिर्द रहेगी।”

इस्राईल और यहूदाह दुबारा आबाद हो जाएंगे

23 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, “जब मैं इस्राईलियों को बहाल करूँगा
तो मुल्क-ए-यहूदाह और उस के शहरों के बाशिन्दे
दुबारा कहेंगे, ‘ऐ रास्ती के घर, ऐ मुक़द्दस पहाड़,
रब तुझे बरकत दे!’ 24 तब यहूदाह और उस के शहर
दुबारा आबाद होंगे। किसान भी मुल्क में बसेंगे, और
वह भी जो अपने रेवड़ों के साथ इधर उधर फिरते
हैं। 25 क्यूँकि मैं थकेमान्दों को नई ताक़त दूँगा और
ग़श खाने वालों को तर-ओ-ताज़ा करूँगा।”
26 तब मैं जाग उठा और चारों तरफ़ देखा। मेरी नींद
कितनी मीठी रही थी!
27 रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आने वाला है जब मैं
इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने का बीज बो
कर इन्सान-ओ-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा। 28 पहले
मैं ने बड़े ध्यान से उन्हें जड़ से उखाड़ दिया, गिरा
दिया, ढा दिया, हाँ तबाह करके ख़ाक में मिला दिया।
लेकिन आइन्दा मैं उतने ही ध्यान से उन्हें तामीर
करूँगा, उन्हें पनीरी की तरह लगा दूँगा।” यह रब
का फ़रमान है। 29 “उस वक़्त लोग यह कहने से बाज़
आएँगे कि वालिदैन ने खट्टे अंगूर खाए, लेकिन दाँत
उन के बच्चों के खट्टे हो गए हैं। 30 क्यूँकि अब से खट्टे
अंगूर खाने वाले के अपने ही दाँत खट्टे होंगे। अब से
उसी को सज़ा-ए-मौत दी जाएगी जो क़ुसूरवार है।”

नया अह्द

31 रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं
इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने के साथ एक
नया अह्द बांधूँगा। 32 यह उस अह्द की मानिन्द
नहीं होगा जो मैं ने उन के बापदादा के साथ उस दिन
बांधा था जब मैं उन का हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र से
निकाल लाया। क्यूँकि उन्हों ने वह अह्द तोड़ दिया,
गो मैं उन का मालिक था।” यह रब का फ़रमान है।
33 “जो नया अह्द मैं उन दिनों के बाद इस्राईल
के घराने के साथ बांधूँगा उस के तहत मैं अपनी
शरीअत उन के अन्दर डाल कर उन के दिलों पर
कन्दा करूँगा। तब मैं ही उन का ख़ुदा हूँगा, और
वह मेरी क़ौम होंगे। 34 उस वक़्त से इस की ज़रूरत
नहीं रहेगी कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम
दे कर कहे, ‘रब को जान लो।’ क्यूँकि छोटे से ले कर
बड़े तक सब मुझे जानेंगे। क्यूँकि मैं उन का क़ुसूर

---

[m]लफ़्ज़ी तर्जुमा : इफ़्राईम।

मुआफ़ करूँगा और आइन्दा उन के गुनाहों को याद
नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।
35 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने मुक़र्रर किया है कि
दिन के वक़्त सूरज चमके और रात के वक़्त चाँद
सितारों समेत रौशनी दे। मैं ही समुन्दर को यूँ उछाल
देता हूँ कि उस की मौजें गरजने लगती हैं। रब्ब-उल-
अफ़्वाज ही मेरा नाम है।” 36 रब फ़रमाता है, “जब
तक यह क़ुदरती उसूल मेरे सामने क़ाइम रहेंगे उस
वक़्त तक इस्राईल क़ौम मेरे सामने क़ाइम रहेगी।
37 क्या इन्सान आसमान की पैमाइश कर सकता है?
या क्या वह ज़मीन की बुन्यादों की तफ़्तीश कर
सकता है? हरगिज़ नहीं! इसी तरह यह मुमकिन ही
नहीं कि मैं इस्राईल की पूरी क़ौम को उस के गुनाहों
के सबब से रद्द करूँ।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम को नए सिरे से तामीर किया जाएगा

38 रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आने वाला है जब
यरूशलम को रब के लिए नए सिरे से तामीर किया
जाएगा। तब उस की फ़सील हनन-एल के बुर्ज से ले
कर कोने के दरवाज़े तक तय्यार हो जाएगी। 39 वहाँ
से शहर की सरहद सीधी जरीब पहाड़ी तक पहुँचेगी,
फिर जोआ की तरफ़ मुड़ेगी। 40 उस वक़्त जो वादी
लाशों और भस्म हुई चर्बी की राख से नापाक हुई
है वह पूरे तौर पर रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
होगी। उस की ढलानों पर के तमाम खेत भी वादी-
ए-क़िद्रोन तक शामिल होंगे, बल्कि मशरिक़ में घोड़े
के दरवाज़े के कोने तक सब कुछ मुक़द्दस होगा।
आइन्दा शहर को न कभी दुबारा जड़ से उखाड़ा
जाएगा, न तबाह किया जाएगा।”

यरमियाह मुहासरे के दौरान खेत ख़रीदता है

32 1 यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह की
हुकूमत के दसवें साल में रब यरमियाह
से हमकलाम हुआ। उस वक़्त नबूकद्नज़्ज़र जो 18
साल से बाबल का बादशाह था 2 अपनी फ़ौज के
साथ यरूशलम का मुहासरा कर रहा था। यरमियाह
उन दिनों में शाही महल के मुहाफ़िज़ों के सहन में
क़ैद था। 3 सिदक़ियाह ने यह कह कर उसे गिरिफ़्तार
किया था, “तू क्यूँ इस क़िस्म की पेशगोई सुनाता
है? तू कहता है, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर
को शाह-ए-बाबल के हाथ में देने वाला हूँ। जब वह
उस पर क़ब्ज़ा करेगा 4 तो सिदक़ियाह बाबल की
फ़ौज से नहीं बचेगा। उसे शाह-ए-बाबल के हवाले
कर दिया जाएगा, और वह उस के रू-ब-रू उस से
बात करेगा, अपनी आँखों से उसे देखेगा। 5 शाह-ए-
बाबल सिदक़ियाह को बाबल ले जाएगा, और वहाँ
वह उस वक़्त तक रहेगा जब तक मैं उसे दुबारा
क़बूल न करूँ। रब फ़रमाता है कि अगर तुम बाबल
की फ़ौज से लड़ो तो नाकाम रहोगे’।”
6 जब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ
तो यरमियाह ने कहा, “रब मुझ से हमकलाम हुआ,
7 ‘तेरा चचाज़ाद भाई हनम-एल बिन सल्लूम तेरे पास
आ कर कहेगा कि अनतोत में मेरा खेत ख़रीद लें।
आप सब से क़रीबी रिश्तेदार हैं, इस लिए उसे
ख़रीदना आप का हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन
हमारे ख़ानदान की मिलकियत रहे।’ [n] 8 ऐसा ही हुआ
जिस तरह रब ने फ़रमाया था। मेरा चचाज़ाद भाई
हनम-एल शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में आया और
मुझ से कहा, ‘बिनयमीन के क़बीले के शहर अनतोत
में मेरा खेत ख़रीद लें। यह खेत ख़रीदना आप का
मौरूसी हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे
ख़ानदान की मिलकियत रहे। आएँ, उसे ख़रीद लें!’
तब मैं ने जान लिया कि यह वही बात है जो रब ने
फ़रमाई थी। 9 चुनाँचे मैं ने अपने चचाज़ाद भाई हनम-
एल से अनतोत का खेत ख़रीद कर उसे चाँदी के 17
सिक्के दे दिए। 10 मैं ने इन्तिक़ालनामा लिख कर उस
पर मुहर लगाई, फिर चाँदी के सिक्के तोल कर अपने
भाई को दे दिए। मैं ने गवाह भी बुलाए थे ताकि वह

[n] लफ़्ज़ी तर्जुमा : इवज़ाना दे कर उसे छुड़ाना (ताकि ख़ानदान का हिस्सा रहे) आप ही का हक़ है।

पूरी कार-रवाई की तस्दीक़ करें। 11–12 इस के बाद
मैं ने मुहरशुदा इन्तिक़ालनामा तमाम शराइत और
क़वाइद समेत बारूक बिन नैरियाह बिन महसियाह
के सपुर्द कर दिया। साथ साथ मैं ने उसे एक नक़ल
भी दी जिस पर मुहर नहीं लगी थी। हनम-एल,
इन्तिक़ालनामे पर दस्तख़त करने वाले गवाह और
सहन में हाज़िर बाक़ी हमवतन सब इस के गवाह
थे। 13 उन के देखते देखते मैं ने बारूक को हिदायत
दी,

14 'रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि मुहरशुदा इन्तिक़ालनामा और उस की
नक़ल ले कर मिट्टी के बर्तन में डाल दे ताकि लम्बे
अर्से तक महफ़ूज़ रहें। 15 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि एक वक़्त
आएगा जब इस मुल्क में दुबारा घर, खेत और अंगूर
के बाग़ ख़रीदे जाएंगे।'

यरमियाह अल्लाह की तम्जीद करता है

16 बारूक बिन नैरियाह को इन्तिक़ालनामा देने के
बाद मैं ने रब से दुआ की,

17 'ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू ने अपना हाथ बढ़ा
कर बड़ी क़ुदरत से आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया,
तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं। 18 तू हज़ारों
पर शफ़क़त करता और साथ साथ बच्चों को उन के
वालिदैन के गुनाहों की सज़ा देता है। ऐ अज़ीम और
क़ादिर ख़ुदा जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है,
19 तेरे मक़ासिद अज़ीम और तेरे काम ज़बरदस्त हैं,
तेरी आँखें इन्सान की तमाम राहों को देखती रहती
हैं। तू हर एक को उस के चाल-चलन और आमाल
का मुनासिब अज्र देता है।

20 मिस्र में तू ने इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए,
और तेरा यह सिलसिला आज तक जारी रहा है,
इस्राईल में भी और बाक़ी क़ौमों में भी। यूँ तेरे नाम
को वह इज़्ज़त-ओ-जलाल मिला जो तुझे आज तक
हासिल है। 21 तू इलाही निशान और मोजिज़े दिखा
कर अपनी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया।
तू ने अपना हाथ बढ़ा कर अपनी अज़ीम क़ुदरत
मिस्रियों पर ज़ाहिर की तो उन पर शदीद दहशत तारी
हुई। 22 तब तू ने अपनी क़ौम को यह मुल्क बख़्श
दिया जिस में दूध और शहद की कस्रत थी और जिस
का वादा तू ने क़सम खा कर उन के बापदादा से
किया था।

23 लेकिन जब हमारे बापदादा ने मुल्क में दाख़िल
हो कर उस पर क़ब्ज़ा किया तो उन्हों ने न तेरी सुनी,
न तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी। जो कुछ
भी तू ने उन्हें करने को कहा था उस पर उन्हों ने अमल
न किया। नतीजे में तू उन पर यह आफ़त लाया।
24 दुश्मन मिट्टी के पुश्ते बना कर फ़सील के क़रीब
पहुँच चुका है। हम तलवार, काल और मोहलिक
बीमारियों से इतने कमज़ोर हो गए हैं कि जब बाबल
की फ़ौज शहर पर हम्ला करेगी तो वह उस के क़ब्ज़े
में आएगा। जो कुछ भी तू ने फ़रमाया था वह पेश
आया है। तू ख़ुद इस का गवाह है। 25 लेकिन ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, कमाल है कि गो शहर को बाबल
की फ़ौज के हवाले किया जाएगा तो भी तू मुझ से
हमकलाम हुआ है कि चाँदी दे कर खेत ख़रीद ले
और गवाहों से कार-रवाई की तस्दीक़ करवा'।"

रब का जवाब

26 तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,
27 "देख, मैं रब और तमाम इन्सानों का ख़ुदा हूँ। तो
फिर क्या कोई काम है जो मुझ से नहीं हो सकता?"
28 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "मैं इस शहर को बाबल
और उस के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र के हवाले कर
दूँगा। वह ज़रूर उस पर क़ब्ज़ा करेगा। 29 बाबल के
जो फ़ौजी इस शहर पर हम्ला कर रहे हैं इस में घुस
कर सब कुछ जला देंगे, सब कुछ नज़र-ए-आतिश
करेंगे। तब वह तमाम घर राख हो जाएंगे जिन की
छतों पर लोगों ने बाल देवता के लिए बख़ूर जला
कर और अजनबी माबूदों को मै की नज़रें पेश करके
मुझे तैश दिलाया।"

30 रब फ़रमाता है, “इस्राईल और यहूदाह के
क़बीले जवानी से ले कर आज तक वही कुछ करते
आए हैं जो मुझे नापसन्द है। अपने हाथों के काम से
वह मुझे बार बार ग़ुस्सा दिलाते रहे हैं। 31 यरूशलम
की बुन्यादें डालने से ले कर आज तक इस शहर
ने मुझे हद से ज़्यादा मुश्तइल कर दिया है। अब
लाज़िम है कि मैं उसे नज़रों से दूर कर दूँ। 32 क्यूँकि
इस्राईल और यहूदाह के बाशिन्दों ने अपनी बुरी
हरकतों से मुझे तैश दिलाया है, ख़्वाह बादशाह हो या
मुलाज़िम, ख़्वाह इमाम हो या नबी, ख़्वाह यहूदाह हो
या यरूशलम। 33 उन्हों ने अपना मुँह मुझ से फेर कर
मेरी तरफ़ रुजू करने से इन्कार किया है। गो मैं उन्हें
बार बार तालीम देता रहा तो भी वह सुनने या मेरी
तर्बियत क़बूल करने के लिए तय्यार नहीं थे। 34 न
सिर्फ़ यह बल्कि जिस घर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा
है उस में उन्हों ने अपने घिनौने बुतों को रख कर उस
की बेहुरमती की है। 35 वादी-ए-बिन-हिन्नूम की ऊँची
जगहों पर उन्हों ने बाल देवता की क़ुर्बानगाहें तामीर
कीं ताकि वहाँ अपने बेटे-बेटियों को मलिक देवता
के लिए क़ुर्बान करें। मैं ने उन्हें ऐसी क़ाबिल-ए-घिन
हरकतें करने का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि मुझे इस
का ख़याल तक नहीं आया। यूँ उन्हों ने यहूदाह को
गुनाह करने पर उकसाया है।

36 इस वक़्त तुम कह रहे हो, ‘यह शहर ज़रूर शाह-
ए-बाबल के क़ब्ज़े में आ जाएगा, क्यूँकि तलवार,
काल और मोहलिक बीमारियों ने हमें कमज़ोर कर
दिया है।’ लेकिन अब शहर के बारे में रब का फ़रमान
सुनो, जो इस्राईल का ख़ुदा है!

37 बेशक मैं बड़े तैश में आ कर शहर के बाशिन्दों
को मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा,
लेकिन मैं उन्हें उन जगहों से फिर जमा करके वापस
भी लाऊँगा ताकि वह दुबारा यहाँ सुकून के साथ रह
सकें। 38 तब वह मेरी क़ौम होंगे, और मैं उन का ख़ुदा
हूँगा। 39 मैं होने दूँगा कि वह सोच और चाल-चलन
में एक हो कर हर वक़्त मेरा ख़ौफ़ मानेंगे। क्यूँकि
उन्हें मालूम होगा कि ऐसा करने से हमें और हमारी
औलाद को बरकत मिलेगी।

40 मैं उन के साथ अबदी अह्द बांध कर वादा
करूँगा कि उन पर शफ़क़त करने से बाज़ नहीं
आऊँगा। साथ साथ मैं अपना ख़ौफ़ उन के दिलों में
डाल दूँगा ताकि वह मुझ से दूर न हो जाएँ। 41 उन्हें
बरकत देना मेरे लिए ख़ुशी का बाइस होगा, और मैं
वफ़ादारी और पूरे दिल-ओ-जान से उन्हें पनीरी की
तरह इस मुल्क में दुबारा लगा दूँगा।” 42 क्यूँकि रब
फ़रमाता है, “मैं ही ने यह बड़ी आफ़त इस क़ौम पर
नाज़िल की, और मैं ही उन्हें उन तमाम बरकतों से
नवाज़ूँगा जिन का वादा मैं ने किया है। 43 बेशक तुम
इस वक़्त कहते हो, ‘हाय, हमारा मुल्क वीरान-ओ-
सुन्सान है, उस में न इन्सान और न हैवान रह गया
है, क्यूँकि सब कुछ बाबल के हवाले कर दिया गया
है।’ लेकिन मैं फ़रमाता हूँ कि पूरे मुल्क में दुबारा
खेत ख़रीदे 44 और फ़रोख़्त किए जाएंगे। लोग मामूल
के मुताबिक़ इन्तिक़ालनामे लिख कर उन पर मुहर
लगाएँगे और कार-रवाई की तस्दीक़ के लिए गवाह
बुलाएँगे। तमाम इलाक़े यानी बिनयमीन के क़बाइली
इलाक़े में, यरूशलम के दीहात में, यहूदाह और
पहाड़ी इलाक़े के शहरों में, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े के शहरों में और दश्त-ए-नजब के शहरों में
ऐसा ही किया जाएगा। मैं ख़ुद उन की बदनसीबी
ख़त्म करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यरूशलम में दुबारा ख़ुशी होगी

33 1 यरमियाह अब तक शाही मुहाफ़िज़ों के
सहन में गिरिफ़्तार था कि रब एक बार
फिर उस से हमकलाम हुआ, 2 “जो सब कुछ ख़ल्क़
करता, तश्कील देता और क़ाइम रखता है उस का
नाम रब है। यही रब फ़रमाता है, 3 मुझे पुकार तो मैं
तुझे जवाब में ऐसी अज़ीम और नाक़ाबिल-ए-फ़हम
बातें बयान करूँगा जो तू नहीं जानता।

4 क्यूँकि रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
तुम ने इस शहर के मकानों बल्कि चन्द एक शाही

मकानों को भी ढा दिया है ताकि उन के पत्थरों और
लकड़ी से फ़सील को मज़बूत करो और शहर को
दुश्मन के पुश्तों और तलवार से बचाए रखो। 5 गो
तुम बाबल की फ़ौज से लड़ना चाहते हो, लेकिन शहर
के घर इस्राईलियों की लाशों से भर जाएंगे। क्यूँकि
उन ही पर मैं अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। यरूशलम
की तमाम बेदीनी के बाइस मैं ने अपना मुँह उस से
छुपा लिया है।

6 लेकिन बाद में मैं उसे शिफ़ा दे कर तन्दुरुस्ती
बख़्शूँगा, मैं उस के बाशिन्दों को सेहत अता करूँगा
और उन पर देरपा सलामती और वफ़ादारी का
इज़हार करूँगा। 7 क्यूँकि मैं यहूदाह और इस्राईल
को बहाल करके उन्हें वैसे तामीर करूँगा जैसे पहले
थे। 8 मैं उन्हें उन की तमाम बेदीनी से पाक-साफ़
करके उन की तमाम सरकशी और तमाम गुनाहों
को मुआफ़ कर दूँगा। 9 तब यरूशलम पूरी दुनिया
में मेरे लिए मुसर्रत, शुहरत, तारीफ़ और जलाल का
बाइस बनेगा। दुनिया के तमाम ममालिक मेरी उस
पर मेहरबानी देख कर मुतअस्सिर हो जाएंगे। वह
घबरा कर काँप उठेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि मैं
ने यरूशलम को कितनी बरकत और सुकून मुहय्या
किया है।

10 तुम कहते हो, 'हमारा शहर वीरान-ओ-सुन्सान
है। उस में न इन्सान, न हैवान रहते हैं।' लेकिन
रब फ़रमाता है कि यरूशलम और यहूदाह के दीगर
शहरों की जो गलियाँ इस वक़्त वीरान और इन्सान-
ओ-हैवान से ख़ाली हैं, 11 उन में दुबारा ख़ुशी-ओ-
शादमानी, दूल्हे दुल्हन की आवाज़ और रब के घर
में शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पहुँचाने वालों के गीत
सुनाई देंगे। उस वक़्त वह गाएँगे, 'रब्ब-उल-अफ़्वाज
का शुक्र करो, क्यूँकि रब भला है, और उस की
शफ़क़त अबदी है।' क्यूँकि मैं इस मुल्क को पहले
की तरह बहाल कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।

12 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि फ़िलहाल यह
मक़ाम वीरान और इन्सान-ओ-हैवान से ख़ाली है।
लेकिन आइन्दा यहाँ और बाक़ी तमाम शहरों में
दुबारा ऐसी चरागाहें होंगी जहाँ गल्लाबान अपने रेवड़ों
को चराएँगे। 13 तब पूरे मुल्क में चरवाहे अपने रेवड़ों
को गिनते और सँभालते हुए नज़र आएँगे, ख़्वाह
पहाड़ी इलाक़े के शहरों या मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में देखो, ख़्वाह दश्त-ए-नजब या बिनयमीन के
क़बाइली इलाक़े में मालूम करो, ख़्वाह यरूशलम के
दीहात या यहूदाह के बाक़ी शहरों में दरयाफ़्त करो।
यह रब का फ़रमान है।

अबदी अह्द का वादा

14 रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आने वाला
है जब मैं वह अच्छा वादा पूरा करूँगा जो मैं
ने इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से
किया है। 15 उस वक़्त मैं दाऊद की नस्ल से एक
रास्तबाज़ कोंपल फूटने दूँगा, और वही मुल्क में
इन्साफ़ और रास्ती क़ाइम करेगा। 16 उन दिनों में
यहूदाह को छुटकारा मिलेगा और यरूशलम पुरअम्न
ज़िन्दगी गुज़ारेगा। तब यरूशलम 'रब हमारी रास्ती'
कहलाएगा। 17 क्यूँकि रब फ़रमाता है कि इस्राईल के
तख़्त पर बैठने वाला हमेशा ही दाऊद की नस्ल का
होगा। 18 इसी तरह रब के घर में ख़िदमतगुज़ार इमाम
हमेशा ही लावी के क़बीले के होंगे। वही मुतवातिर
मेरे हुज़ूर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला और
ज़बह की क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे।"

19 रब एक बार फिर यरमियाह से हमकलाम हुआ,
20 "रब फ़रमाता है कि मैं ने दिन और रात से अह्द
बांधा है कि वह मुक़र्ररा वक़्त पर और तर्तीबवार
गुज़रें। कोई इस अह्द को तोड़ नहीं सकता। 21 इसी
तरह मैं ने अपने ख़ादिम दाऊद से भी अह्द बांध कर
वादा किया कि इस्राईल का बादशाह हमेशा उसी
की नस्ल का होगा। नीज़, मैं ने लावी के इमामों
से भी अह्द बांध कर वादा किया कि रब के घर
में ख़िदमतगुज़ार इमाम हमेशा लावी के क़बीले के
ही होंगे। रात और दिन से बंधे हुए अह्द की तरह
इन अह्दों को भी तोड़ा नहीं जा सकता। 22 मैं अपने
ख़ादिम दाऊद की औलाद और अपने ख़िदमतगुज़ार

लावियों को सितारों और समुन्दर की रेत जैसा
बेशुमार बना दूँगा।”
23 रब यरमियाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ,
24 “क्या तुझे लोगों की बातें मालूम नहीं हुईं? यह
कह रहे हैं, ‘गो रब ने इस्राईल और यहूदाह को चुन
कर अपनी क़ौम बना लिया था, लेकिन अब उस ने
दोनों को रद्द कर दिया है।’ यूँ वह मेरी क़ौम को हक़ीर
जानते हैं बल्कि इसे अब से क़ौम ही नहीं समझते।”
25 लेकिन रब फ़रमाता है, “जो अह्द मैं ने दिन और
रात से बांधा है वह मैं नहीं तोड़ूँगा, न कभी आसमान-
ओ-ज़मीन के मुक़र्ररा उसूल मन्सूख़ करूँगा। 26 इसी
तरह यह मुमकिन ही नहीं कि मैं याक़ूब और अपने
ख़ादिम दाऊद की औलाद को कभी रद्द करूँ। नहीं,
मैं हमेशा ही दाऊद की नस्ल में से किसी को तख़्त पर
बिठाऊँगा ताकि वह इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब
की औलाद पर हुकूमत करे, क्यूँकि मैं उन्हें बहाल
करके उन पर तरस खाऊँगा।”

सिदक़ियाह बाबल की क़ैद में मर जाएगा

34 1 रब उस वक़्त यरमियाह से हमकलाम
हुआ जब शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र
अपनी पूरी फ़ौज ले कर यरूशलम और यहूदाह के
तमाम शहरों पर हम्ला कर रहा था। उस के साथ
दुनिया के उन तमाम ममालिक और क़ौमों की फ़ौजें
थीं जिन्हें उस ने अपने ताबे कर लिया था।
2 “रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि
यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के पास जा कर उसे
बता, रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर यरूशलम को
शाह-ए-बाबल के हवाले करने को हूँ, और वह इसे
नज़र-ए-आतिश कर देगा। 3 तू भी उस के हाथ से
नहीं बचेगा बल्कि ज़रूर पकड़ा जाएगा। तुझे उस
के हवाले किया जाएगा, और तू शाह-ए-बाबल को
अपनी आँखों से देखेगा, वह तेरे रू-ब-रू तुझ से बात
करेगा। फिर तुझे बाबल जाना पड़ेगा। 4 लेकिन ऐ
सिदक़ियाह बादशाह, रब का यह फ़रमान भी सुन!
रब तेरे बारे में फ़रमाता है कि तू तलवार से नहीं
5 बल्कि तबई मौत मरेगा, और लोग उसी तरह तेरी
ताज़ीम में लकड़ी का बड़ा ढेर बना कर आग लगाएँगे
जिस तरह तेरे बापदादा के लिए करते आए हैं।
वह तुझ पर भी मातम करेंगे और कहेंगे, ‘हाय, मेरे
आक़ा’!” यह रब का फ़रमान है।
6 यरमियाह नबी ने सिदक़ियाह बादशाह को
यरूशलम में यह पैग़ाम सुनाया। 7 उस वक़्त बाबल
की फ़ौज यरूशलम, लकीस और अज़ीक़ा से लड़
रही थी। यहूदाह के तमाम क़िलाबन्द शहरों में से
यही तीन अब तक क़ाइम रहे थे।

ग़ुलामों के साथ बेवफ़ाई

8 रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर
नाज़िल हुआ। उस वक़्त सिदक़ियाह बादशाह ने
यरूशलम के बाशिन्दों के साथ अह्द बांधा था कि
हम अपने हमवतन ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे।
9 हर एक ने अपने हमवतन ग़ुलामों और लौंडियों
को आज़ाद करने का वादा किया था, क्यूँकि सब
मुत्तफ़िक़ हुए थे कि हम अपने हमवतनों को ग़ुलामी
में नहीं रखेंगे। 10 तमाम बुज़ुर्ग और बाक़ी तमाम लोग
यह करने पर राज़ी हुए थे। यह अह्द करने पर उन्हों
ने अपने ग़ुलामों को वाक़ई आज़ाद कर दिया था।
11 लेकिन बाद में वह अपना इरादा बदल कर अपने
आज़ाद किए हुए ग़ुलामों को वापस लाए और उन्हें
दुबारा अपने ग़ुलाम बना लिया था। 12 तब रब का
कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।
13 “रब जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘जब
मैं तुम्हारे बापदादा को मिस्र की ग़ुलामी से निकाल
लाया तो मैं ने उन से अह्द बांधा। उस की एक शर्त
यह थी 14 कि जब किसी हमवतन ने अपने आप को
बेच कर छः साल तक तेरी ख़िदमत की है तो लाज़िम
है कि सातवें साल तू उसे आज़ाद कर दे। यह शर्त तुम
सब पर सादिक़ आती है। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे
बापदादा ने न मेरी सुनी, न मेरी बात पर ध्यान दिया।
15 अब तुम ने पछता कर वह कुछ किया जो मुझे
पसन्द था। हर एक ने एलान किया कि हम अपने

हमवतन ग़ुलामों को आज़ाद कर देंगे। तुम उस घर
में आए जिस पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है और
अह्द बांध कर मेरे हुज़ूर उस वादे की तस्दीक़ की।
16 लेकिन अब तुम ने अपना इरादा बदल कर मेरे नाम
की बेहुरमती की है। अपने ग़ुलामों और लौंडियों को
आज़ाद कर देने के बाद हर एक उन्हें अपने पास
वापस लाया है। पहले तुम ने उन्हें बताया कि जहाँ
जी चाहो चले जाओ, और अब तुम ने उन्हें दुबारा
ग़ुलाम बनने पर मज्बूर किया है।'

17 चुनाँचे सुनो जो कुछ रब फ़रमाता है! 'तुम ने
मेरी नहीं सुनी, क्यूँकि तुम ने अपने हमवतन ग़ुलामों
को आज़ाद नहीं छोड़ा। इस लिए अब रब तुम्हें
तलवार, मोहलिक बीमारियों और काल के लिए
आज़ाद छोड़ देगा। तुम्हें देख कर दुनिया के तमाम
ममालिक के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।' यह रब का
फ़रमान है। 18–19 'देखो, यहूदाह और यरूशलम के
बुज़ुर्गों, दरबारियों, इमामों और अवाम ने मेरे साथ
अह्द बांधा। इस की तस्दीक़ करने के लिए वह
एक बछड़े को दो हिस्सों में तक़्सीम करके उन के
दरमियान से गुज़र गए। तो भी उन्हों ने अह्द तोड़ कर
उस की शराइत पूरी न कीं। चुनाँचे मैं होने दूँगा कि
वह उस बछड़े की मानिन्द हो जाएँ जिस के दो हिस्सों
में से वह गुज़र गए हैं। 20 मैं उन्हें उन के दुश्मनों के
हवाले कर दूँगा, उन ही के हवाले जो उन्हें जान से
मारने के दरपै हैं। उन की लाशें परिन्दों और जंगली
जानवरों की ख़ुराक बन जाएँगी।

21 मैं यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह और उस के
अफ़्सरों को उन के दुश्मन के हवाले कर दूँगा, उन
ही के हवाले जो उन्हें जान से मारने पर तुले हुए हैं।
वह यक़ीनन शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की फ़ौज
के क़ब्ज़े में आ जाएंगे। क्यूँकि गो फ़ौजी इस वक़्त
पीछे हट गए हैं, 22 लेकिन मेरे हुक्म पर वह वापस
आ कर यरूशलम पर हम्ला करेंगे। और इस मर्तबा
वह उस पर क़ब्ज़ा करके उसे नज़र-ए-आतिश कर
देंगे। मैं यहूदाह के शहरों को भी यूँ ख़ाक में मिला
दूँगा कि कोई उन में नहीं रह सकेगा'।" यह रब का
फ़रमान है।

यरमियाह रैकाबियों को आज़माता है

35 1 जब यहूयक़ीम बिन यूसियाह अभी
यहूदाह का बादशाह था तो रब मुझ से
हमकलाम हुआ, 2 "रैकाबी ख़ानदान के पास जा कर
उन्हें रब के घर के सहन के किसी कमरे में आने की
दावत दे। जब वह आएँ तो उन्हें मै पिला दे।"

3 चुनाँचे मैं याज़नियाह बिन यरमियाह बिन
हबस्सिनियाह के पास गया और उसे उस के भाइयों
और तमाम बेटों यानी रैकाबियों के पूरे घराने समेत
4 रब के घर में लाया। हम हनान के बेटों के कमरे
में बैठ गए। हनान मर्द-ए-ख़ुदा यिज्दलियाह का बेटा
था। यह कमरा बुज़ुर्गों के कमरे से मुल्हिक़ और रब
के घर के दरबान मासियाह बिन सल्लूम के कमरे के
ऊपर था। 5 वहाँ मैं ने मै के जाम और प्याले रैकाबी
आदमियों को पेश करके उन से कहा, "आएँ, कुछ
मै पी लें।"

6 लेकिन उन्हों ने इन्कार करके कहा, "हम मै नहीं
पीते, क्यूँकि हमारे बाप यूनदब बिन रैकाब ने हमें
और हमारी औलाद को मै पीने से मना किया है। 7 उस
ने हमें यह हिदायत भी दी, 'न मकान तामीर करना, न
बीज बोना और न अंगूर का बाग़ लगाना। यह चीज़ें
कभी भी तुम्हारी मिलकियत में शामिल न हों, क्यूँकि
लाज़िम है कि तुम हमेशा ख़ैमों में ज़िन्दगी गुज़ारो।
फिर तुम लम्बे अर्से तक उस मुल्क में रहोगे जिस में
तुम मेहमान हो।' 8 चुनाँचे हम अपने बाप यूनदब बिन
रैकाब की इन तमाम हिदायात के ताबे रहते हैं। न हम
और न हमारी बीवियाँ या बच्चे कभी मै पीते हैं। 9 हम
अपनी रिहाइश के लिए मकान नहीं बनाते, और न
अंगूर के बाग़, न खेत या फ़सलें हमारी मिलकियत
में होती हैं। 10 इस के बजाय हम आज तक ख़ैमों में
रहते हैं। जो भी हिदायत हमारे बाप यूनदब ने हमें दी
उस पर हम पूरे उतरे हैं। 11 हम सिर्फ़ आरिज़ी तौर
पर शहर में ठहरे हुए हैं। क्यूँकि जब शाह-ए-बाबल

नबूकद्नज़्ज़र इस मुल्क में घुस आया तो हम बोले,
'आएँ, हम यरूशलम शहर में जाएँ ताकि बाबल और
शाम की फ़ौजों से बच जाएँ।' हम सिर्फ़ इसी लिए
यरूशलम में ठहरे हुए हैं।"

12 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,
13 "रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है कि यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों
के पास जा कर कह, 'तुम मेरी तर्बियत क्यूँ क़बूल
नहीं करते? तुम मेरी क्यूँ नहीं सुनते? 14 यूनदब बिन
रैकाब पर ग़ौर करो। उस ने अपनी औलाद को मै
पीने से मना किया, इस लिए उस का घराना आज
तक मै नहीं पीता। यह लोग अपने बाप की हिदायात
के ताबे रहते हैं। इस के मुक़ाबले में तुम लोग क्या
कर रहे हो? गो मैं बार बार तुम से हमकलाम हुआ
तो भी तुम ने मेरी नहीं सुनी।

15 बार बार मैं अपने नबियों को तुम्हारे पास भेजता
रहा ताकि मेरे ख़ादिम तुम्हें आगाह करते रहें कि हर
एक अपनी बुरी राह तर्क करके वापस आए! अपना
चाल-चलन दुरुस्त करो और अजनबी माबूदों की
पैरवी करके उन की ख़िदमत मत करो! फिर तुम उस
मुल्क में रहोगे जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा
को बख़्श दिया था। लेकिन तुम ने न तवज्जुह दी, न
मेरी सुनी। 16 यूनदब बिन रैकाब की औलाद अपने
बाप की हिदायात पर पूरी उतरी है, लेकिन इस क़ौम
ने मेरी नहीं सुनी।'

17 इस लिए रब जो लश्करों का और इस्राईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, 'सुनो! मैं यहूदाह पर और
यरूशलम के हर बाशिन्दे पर वह तमाम आफ़त
नाज़िल करूँगा जिस का एलान मैं ने किया है। गो
मैं उन से हमकलाम हुआ तो भी उन्हों ने न सुनी। मैं
ने उन्हें बुलाया, लेकिन उन्हों ने जवाब न दिया'।"

18 लेकिन रैकाबियों से यरमियाह ने कहा, "रब्ब-
उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
'तुम अपने बाप यूनदब के हुक्म पर पूरे उतर कर
उस की हर हिदायत और हर हुक्म पर अमल करते
हो।' 19 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का
ख़ुदा है फ़रमाता है, 'यूनदब बिन रैकाब की औलाद
में से हमेशा कोई न कोई होगा जो मेरे हुज़ूर ख़िदमत
करेगा'।"

रब के घर में यरमियाह की किताब की तिलावत

36 1 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में रब
का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 2 "तूमार ले
कर उस में इस्राईल, यहूदाह और बाक़ी तमाम क़ौमों
के बारे में वह तमाम पैग़ामात क़लमबन्द कर जो मैं
ने यूसियाह की हुकूमत से ले कर आज तक तुझ पर
नाज़िल किए हैं। 3 शायद यहूदाह के घराने में हर एक
अपनी बुरी राह से बाज़ आ कर वापस आए अगर
उस आफ़त की पूरी ख़बर उन तक पहुँचे जो मैं इस
क़ौम पर नाज़िल करने को हूँ। फिर मैं उन की बेदीनी
और गुनाह को मुआफ़ करूँगा।"

4 चुनाँचे यरमियाह ने बारूक बिन नैरियाह को बुला
कर उस से वह तमाम पैग़ामात तूमार में लिखवाए जो
रब ने उस पर नाज़िल किए थे। 5 फिर यरमियाह ने
बारूक से कहा, "मुझे नज़रबन्द किया गया है, इस
लिए मैं रब के घर में नहीं जा सकता। 6 लेकिन आप
तो जा सकते हैं। रोज़े के दिन यह तूमार अपने साथ
ले कर रब के घर में जाएँ। हाज़िरीन के सामने रब
की उन तमाम बातों को पढ़ कर सुनाएँ जो मैं ने आप
से लिखवाई हैं। सब को तूमार की बातें सुनाएँ, उन्हें
भी जो यहूदाह की दीगर आबादियों से यहाँ पहुँचे
हैं। 7 शायद वह इल्तिजा करें कि रब उन पर रहम
करे। शायद हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आ कर
वापस आए। क्यूँकि जो ग़ज़ब इस क़ौम पर नाज़िल
होने वाला है और जिस का एलान रब कर चुका है
वह बहुत सख़्त है।"

8 बारूक बिन नैरियाह ने ऐसा ही किया। यरमियाह
नबी की हिदायत के मुताबिक़ उस ने रब के घर
में तूमार में दर्ज रब के कलाम की तिलावत की।
9 उस वक़्त लोग रोज़ा रखे हुए थे, क्यूँकि बादशाह
यहूयक़ीम बिन यूसियाह की हुकूमत के पाँचवें

साल और नवें महीने [o]में एलान किया गया था कि
यरूशलम के बाशिन्दे और यहूदाह के दीगर शहरों से
आए हुए तमाम लोग रब के हुज़ूर रोज़ा रखें। 10 जब
बारूक ने तूमार की तिलावत की तो तमाम लोग
हाज़िर थे। उस वक़्त वह रब के घर में शाही मुहर्रिर
जमरियाह बिन साफ़न के कमरे में बैठा था। यह
कमरा रब के घर के ऊपर वाले सहन में था, और
सहन का नया दरवाज़ा वहाँ से दूर नहीं था।

11 तूमार में दर्ज रब के तमाम पैग़ामात सुन कर
जमरियाह बिन साफ़न का बेटा मीकायाह 12 शाही
महल में मीरमुन्शी के दफ़्तर में चला गया। वहाँ तमाम
सरकारी अफ़्सर बैठे थे यानी इलीसमा मीरमुन्शी,
दिलायाह बिन समायाह, इल्नातन बिन अक्बोर,
जमरियाह बिन साफ़न, सिदक़ियाह बिन हननियाह
और बाक़ी तमाम मुलाज़िम। 13 मीकायाह ने उन्हें
सब कुछ सुनाया जो बारूक ने तूमार की तिलावत
करके पेश किया था। 14 तब तमाम बुज़ुर्गों ने यहूदी
बिन नतनियाह बिन सलमियाह बिन कूशी को बारूक
के पास भेज कर उसे इत्तिला दी, "जिस तूमार की
तिलावत आप ने लोगों के सामने की उसे ले कर
हमारे पास आएँ।" चुनाँचे बारूक बिन नैरियाह हाथ
में तूमार को थामे हुए उन के पास आया।

15 अफ़्सरों ने कहा, "ज़रा बैठ कर हमारे लिए भी
तूमार की तिलावत करें।" चुनाँचे बारूक ने उन्हें
सब कुछ पढ़ कर सुना दिया। 16 यरमियाह की तमाम
पेशगोइयाँ सुनते ही वह घबरा गए और डर के मारे
एक दूसरे को देखने लगे। फिर उन्हों ने बारूक से
कहा, "लाज़िम है कि हम बादशाह को इन तमाम
बातों से आगाह करें। 17 हमें ज़रा बताएँ, आप ने
यह तमाम बातें किस तरह क़लमबन्द कीं? क्या
यरमियाह ने सब कुछ ज़बानी आप को पेश किया?"
18 बारूक ने जवाब दिया, "जी, वह मुझे यह तमाम
बातें सुनाता गया, और मैं सब कुछ सियाही से इस
तूमार में दर्ज करता गया।"

19 यह सुन कर अफ़्सरों ने बारूक से कहा, "अब
चले जाएँ, आप और यरमियाह दोनों छुप जाएँ! किसी
को भी पता न चले कि आप कहाँ हैं।"

यहूयक़ीम तूमार को जला देता है

20 अफ़्सरों ने तूमार को शाही मीरमुन्शी इलीसमा के
दफ़्तर में महफ़ूज़ रख दिया, फिर दरबार में दाख़िल
हो कर बादशाह को सब कुछ बता दिया। 21 बादशाह
ने यहूदी को तूमार ले आने का हुक्म दिया। यहूदी,
इलीसमा मीरमुन्शी के दफ़्तर से तूमार को ले कर
बादशाह और तमाम अफ़्सरों की मौजूदगी में उस
की तिलावत करने लगा।

22 चूँकि नवाँ महीना [p]था इस लिए बादशाह महल
के उस हिस्से में बैठा था जो सर्दियों के मौसम के
लिए बनाया गया था। उस के सामने पड़ी अंगीठी
में आग जल रही थी। 23 जब भी यहूदी तीन या चार
कालम पढ़ने से फ़ारिग़ हुआ तो बादशाह ने मुन्शी की
छुरी ले कर उन्हें तूमार से काट लिया और आग में
फैंक दिया। यहूदी पढ़ता और बादशाह काटता गया।
आख़िरकार पूरा तूमार राख हो गया था।

24 गो बादशाह और उस के तमाम मुलाज़िमों ने
यह तमाम बातें सुनीं तो भी न वह घबराए, न उन्हों
ने परेशान हो कर अपने कपड़े फाड़े। 25 और गो
इल्नातन, दिलायाह और जमरियाह ने बादशाह से
मिन्नत की कि वह तूमार को न जलाए तो भी उस
ने उन की न मानी 26 बल्कि बाद में यरहमिएल
शाहज़ादा, सिरायाह बिन अज़्रीएल और सलमियाह
बिन अब्दिएल को भेजा ताकि वह बारूक मुन्शी और
यरमियाह नबी को गिरिफ़्तार करें। लेकिन रब ने उन्हें
छुपाए रखा था।

अल्लाह का कलाम दुबारा क़लमबन्द किया जाता है

27 बादशाह के तूमार को जलाने के बाद रब
यरमियाह से दुबारा हमकलाम हुआ,

---

[o]नवम्बर ता दिसम्बर।

[p]तक़रीबन दिसम्बर।

28 “नया तूमार ले कर उस में वही तमाम पैग़ामात
क़लमबन्द कर जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाह-ए-
यहूदाह ने जला दिया था। 29 साथ साथ यहूयक़ीम
के बारे में एलान कर कि रब फ़रमाता है, ‘तू ने
तूमार को जला कर यरमियाह से शिकायत की कि
तू ने इस किताब में क्यूँ लिखा है कि शाह-ए-बाबल
ज़रूर आ कर इस मुल्क को तबाह करेगा, और इस
में न इन्सान, न हैवान रहेगा?’ 30 चुनाँचे यहूदाह के
बादशाह के बारे में रब का फ़ैसला सुन!

आइन्दा उस के ख़ानदान का कोई भी फ़र्द दाऊद
के तख़्त पर नहीं बैठेगा। यहूयक़ीम की लाश बाहर
फैंकी जाएगी, और वहाँ वह खुले मैदान में पड़ी
रहेगी। कोई भी उसे दिन की तपती गर्मी या रात
की शदीद सर्दी से बचाए नहीं रखेगा। 31 मैं उसे उस
के बच्चों और मुलाज़िमों समेत उन की बेदीनी का
मुनासिब अज्र दूँगा। क्यूँकि मैं उन पर और यरूशलम
और यहूदाह के बाशिन्दों पर वह तमाम आफ़त
नाज़िल करूँगा जिस का एलान मैं कर चुका हूँ।
अफ़्सोस, उन्हों ने मेरी नहीं सुनी।”

32 चुनाँचे यरमियाह ने नया तूमार ले कर उसे
बारूक बिन नैरियाह को दे दिया। फिर उस ने बारूक
मुन्शी से वह तमाम पैग़ामात दुबारा लिखवाए जो
उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाह-ए-यहूदाह यहूयक़ीम
ने जला दिया था। उन के इलावा मज़ीद बहुत से
पैग़ामात का इज़ाफ़ा हुआ।

मिस्र सिदक़ियाह की मदद नहीं कर सकता

37 1 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन [q]बिन
यहूयक़ीम को तख़्त से उतारने के बाद
शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने सिदक़ियाह बिन
यूसियाह को तख़्त पर बिठा दिया। 2 लेकिन न
सिदक़ियाह, न उस के अफ़्सरों या अवाम ने उन
पैग़ामात पर ध्यान दिया जो रब ने यरमियाह नबी
की मारिफ़त फ़रमाए थे।

3 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यहूकल बिन
सलमियाह और इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को
यरमियाह के पास भेजा ताकि वह गुज़ारिश करें,
“मेहरबानी करके रब हमारे ख़ुदा से हमारी शफ़ाअत
करें।”

4 यरमियाह को अब तक क़ैद में डाला नहीं गया
था, इस लिए वह आज़ादी से लोगों में चल फिर
सकता था। 5 उस वक़्त फ़िरऔन की फ़ौज मिस्र
से निकल कर इस्राईल की तरफ़ बढ़ रही थी। जब
यरूशलम का मुहासरा करने वाली बाबल की फ़ौज
को यह ख़बर मिली तो वह वहाँ से पीछे हट गई।
6 तब रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ,

7 “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि शाह-ए-
यहूदाह ने तुम्हें मेरी मर्ज़ी दरयाफ़्त करने भेजा है। उसे
जवाब दो कि फ़िरऔन की जो फ़ौज तुम्हारी मदद
करने के लिए निकल आई है वह अपने मुल्क वापस
लौटने को है। 8 फिर बाबल के फ़ौजी वापस आ कर
यरूशलम पर हम्ला करेंगे। वह इसे अपने क़ब्ज़े में ले
कर नज़र-ए-आतिश कर देंगे। 9 क्यूँकि रब फ़रमाता
है कि यह सोच कर धोका मत खाओ कि बाबल की
फ़ौज ज़रूर हमें छोड़ कर चली जाएगी। ऐसा कभी
नहीं होगा! 10 ख़्वाह तुम हम्लाआवर पूरी बाबली फ़ौज
को शिकस्त क्यूँ न देते और सिर्फ़ ज़ख़्मी आदमी बचे
रहते तो भी तुम नाकाम रहते, तो भी यह बाज़ एक
आदमी अपने ख़ैमों में से निकल कर यरूशलम को
नज़र-ए-आतिश करते।”

यरमियाह को क़ैद में डाला जाता है

11 जब फ़िरऔन की फ़ौज इस्राईल की तरफ़ बढ़ने
लगी तो बाबल के फ़ौजी यरूशलम को छोड़ कर
पीछे हट गए। 12 उन दिनों में यरमियाह बिनयमीन के
क़बाइली इलाक़े के लिए रवाना हुआ, क्यूँकि वह
अपने रिश्तेदारों के साथ कोई मौरूसी मिलकियत
तक़्सीम करना चाहता था। लेकिन जब वह शहर

---

[q]इब्रानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

से निकलते हुए 13 बिनयमीन के दरवाज़े तक पहुँच
गया तो पहरेदारों का एक अफ़सर उसे पकड़ कर
कहने लगा, “तुम भगोड़े हो! तुम बाबल की फ़ौज
के पास जाना चाहते हो!” अफ़सर का नाम इरियाह
बिन सलमियाह बिन हननियाह था। 14 यरमियाह ने
एतिराज़ किया, “यह झूट है, मैं भगोड़ा नहीं हूँ! मैं
बाबल की फ़ौज के पास नहीं जा रहा।” लेकिन
इरियाह न माना बल्कि उसे गिरिफ़्तार करके सरकारी
अफ़सरों के पास ले गया। 15 उसे देख कर उन्हें
यरमियाह पर ग़ुस्सा आया, और वह उस की पिटाई
करा कर उसे शाही मुहर्रिर यूनतन के घर में लाए
जिसे उन्हों ने क़ैदख़ाना बनाया था। 16 वहाँ उसे एक
ज़मीनदोज़ कमरे में डाल दिया गया जो पहले हौज़
था और जिस की छत मेहराबदार थी। वह मुतअद्दिद
दिन उस में बन्द रहा।

17 एक दिन सिदक़ियाह ने उसे महल में बुलाया।
वहाँ अलाहिदगी में उस से पूछा, “क्या रब की तरफ़
से मेरे लिए कोई पैग़ाम है?” यरमियाह ने जवाब
दिया, “जी हाँ। आप को शाह-ए-बाबल के हवाले
किया जाएगा।” 18 तब यरमियाह ने सिदक़ियाह
बादशाह से अपनी बात जारी रख कर कहा, “मुझ
से क्या जुर्म हुआ है? मैं ने आप के अफ़सरों और
अवाम का क्या क़ुसूर किया है कि मुझे जेल में
डलवा दिया? 19 आप के वह नबी कहाँ हैं जिन्हों
ने आप को पेशगोई सुनाई कि शाह-ए-बाबल न आप
पर, न इस मुल्क पर हम्ला करेगा? 20 ऐ मेरे मालिक
और बादशाह, मेहरबानी करके मेरी बात सुनें, मेरी
गुज़ारिश पूरी करें! मुझे यूनतन मुहर्रिर के घर में वापस
न भेजें, वर्ना मैं मर जाऊँगा।”

21 तब सिदक़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि
यरमियाह को शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रखा जाए।
उस ने यह हिदायत भी दी कि जब तक शहर में रोटी
दस्तयाब हो यरमियाह को नानबाई-गली से हर रोज़
एक रोटी मिलती रहे। चुनाँचे यरमियाह मुहाफ़िज़ों के
सहन में रहने लगा।

यरमियाह को सज़ा-ए-मौत देने का इरादा

38 1 सफ़तियाह बिन मत्तान, जिदलियाह बिन
फ़श्हूर, यूकल बिन सलमियाह और फ़श्हूर
बिन मल्कियाह को मालूम हुआ कि यरमियाह तमाम
लोगों को बता रहा है 2 कि रब फ़रमाता है,

“अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो
तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान
को बचाना चाहो तो शहर से निकल कर अपने आप
को बाबल की फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह
करे उस की जान छूट जाएगी। [r] 3 क्यूँकि रब फ़रमाता
है कि यरूशलम को ज़रूर शाह-ए-बाबल की फ़ौज
के हवाले किया जाएगा। वह यक़ीनन उस पर क़ब्ज़ा
करेगा।”

4 तब मज़कूरा अफ़सरों ने बादशाह से कहा, “इस
आदमी को सज़ा-ए-मौत दीनी चाहिए, क्यूँकि यह
शहर में बचे हुए फ़ौजियों और बाक़ी तमाम लोगों
को ऐसी बातें बता रहा है जिन से वह हिम्मत हार
गए हैं। यह आदमी क़ौम की बहबूदी नहीं चाहता
बल्कि उसे मुसीबत में डालने पर तुला रहता है।”

5 सिदक़ियाह बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है,
वह आप के हाथ में है। मैं आप को रोक नहीं
सकता।” 6 तब उन्हों ने यरमियाह को पकड़ कर
मल्कियाह शाहज़ादा के हौज़ में डाल दिया। यह हौज़
शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में था। रस्सों के ज़रीए उन्हों
ने यरमियाह को उतार दिया। हौज़ में पानी नहीं था
बल्कि सिर्फ़ कीचड़, और यरमियाह कीचड़ में धँस
गया।

7 लेकिन एथोपिया के एक दरबारी बनाम अबद-
मलिक को पता चला कि यरमियाह के साथ क्या
कुछ किया जा रहा है। जब बादशाह शहर के दरवाज़े
बनाम बिनयमीन में कचहरी लगाए बैठा था 8 तो

---

[r] लफ़्ज़ी तर्जुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

अबद-मलिक शाही महल से निकल कर उस के
पास गया और कहा, 9 “मेरे आक़ा और बादशाह,
जो सुलूक इन आदमियों ने यरमियाह के साथ किया
है वह निहायत बुरा है। उन्हों ने उसे एक हौज़ में फैंक
दिया है जहाँ वह भूका मरेगा। क्यूँकि शहर में रोटी
ख़त्म हो गई है।”
10 यह सुन कर बादशाह ने अबद-मलिक को हुक्म
दिया, “इस से पहले कि यरमियाह मर जाए यहाँ से
30 आदमियों को ले कर नबी को हौज़ से निकाल
दें।” 11 अबद-मलिक आदमियों को अपने साथ ले
कर शाही महल के गोदाम के नीचे के एक कमरे में
गया। वहाँ से उस ने कुछ पुराने चीथड़े और घिसे
फटे कपड़े चुन कर उन्हें रस्सों के ज़रीए हौज़ में
यरमियाह तक उतार दिया। 12 अबद-मलिक बोला,
“रस्से बांधने से पहले यह पुराने चीथड़े और घिसे
फटे कपड़े बग़ल में रखें।” यरमियाह ने ऐसा ही
किया, 13 तो वह उसे रस्सों से खैंच कर हौज़ से
निकाल लाए। इस के बाद यरमियाह शाही मुहाफ़िज़ों
के सहन में रहा।

सिदक़ियाह को आख़िरी मर्तबा आगाह किया जाता है

14 एक दिन सिदक़ियाह बादशाह ने यरमियाह को
रब के घर के तीसरे दरवाज़े के पास बुला कर उस से
कहा, “मैं आप से एक बात दरयाफ़्त करना चाहता
हूँ। मुझे इस का साफ़ जवाब दें, कोई भी बात मुझ से
मत छुपाएँ।” 15 यरमियाह ने एतिराज़ किया, “अगर
मैं आप को साफ़ जवाब दूँ तो आप मुझे मार डालेंगे।
और अगर मैं आप को मश्वरा दूँ भी तो आप उसे
क़बूल नहीं करेंगे।” 16 तब सिदक़ियाह बादशाह ने
अलाहिदगी में क़सम खा कर यरमियाह से वादा
किया, “रब की हयात की क़सम जिस ने हमें जान
दी है, न मैं आप को मार डालूँगा, न आप के जानी
दुश्मनों के हवाले करूँगा।”
17 तब यरमियाह बोला, “रब जो लश्करों का और
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘अपने आप को
शाह-ए-बाबल के अफ़सरान के हवाले कर। फिर
तेरी जान छूट जाएगी और यह शहर नज़र-ए-आतिश
नहीं हो जाएगा। तू और तेरा ख़ानदान जीता रहेगा।
18 दूसरी सूरत में इस शहर को बाबल के हवाले किया
जाएगा और फ़ौजी इसे नज़र-ए-आतिश करेंगे। तू भी
उन के हाथ से नहीं बचेगा’।”
19 लेकिन सिदक़ियाह बादशाह ने एतिराज़ किया,
“मुझे उन हमवतनों से डर लगता है जो ग़द्दारी करके
बाबल की फ़ौज के पास भाग गए हैं। हो सकता है
कि बाबल के फ़ौजी मुझे उन के हवाले करें और
वह मेरे साथ बदसुलूकी करें।” 20 यरमियाह ने जवाब
दिया, “वह आप को उन के हवाले नहीं करेंगे। रब
की सुन कर वह कुछ करें जो मैं ने आप को बताया
है। फिर आप की सलामती होगी और आप की जान
छूट जाएगी। 21 लेकिन अगर आप शहर से निकल
कर हथियार डालने के लिए तय्यार नहीं हैं तो फिर
यह पैग़ाम सुनें जो रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है!
22 शाही महल में जितनी ख़वातीन बच गई हैं उन
सब को शाह-ए-बाबल के अफ़सरों के पास पहुँचाया
जाएगा। तब यह ख़वातीन आप के बारे में कहेंगी,
‘हाय, जिन आदमियों पर तू पूरा एतिमाद रखता था
वह फ़रेब दे कर तुझ पर ग़ालिब आ गए हैं। तेरे पाँओ
दलदल में धँस गए हैं, लेकिन यह लोग ग़ाइब हो गए
हैं।’ 23 हाँ, तेरे तमाम बाल-बच्चों को बाहर बाबल की
फ़ौज के पास लाया जाएगा। तू ख़ुद भी उन के हाथ से
नहीं बचेगा बल्कि शाह-ए-बाबल तुझे पकड़ लेगा।
यह शहर नज़र-ए-आतिश हो जाएगा।”
24 फिर सिदक़ियाह ने यरमियाह से कहा,
“ख़बरदार! किसी को भी यह मालूम न हो कि हम ने
क्या क्या बातें की हैं, वर्ना आप मर जाएंगे। 25 जब
मेरे अफ़सरों को पता चले कि मेरी आप से गुफ़्तगु
हुई है तो वह आप के पास आ कर पूछेंगे, ‘तुम ने
बादशाह से क्या बात की, और बादशाह ने तुम से
क्या कहा? हमें साफ़ जवाब दो और झूट न बोलो,
वर्ना हम तुम्हें मार डालेंगे।’ 26 जब वह इस तरह
की बातें करेंगे तो उन्हें सिर्फ़ इतना सा बताएँ, ‘मैं

बादशाह से मिन्नत कर रहा था कि वह मुझे यूनतन
के घर में वापस न भेजें, वर्ना मैं मर जाऊँगा'।"
27 ऐसा ही हुआ। तमाम सरकारी अफ़्सर यरमियाह
के पास आए और उस से सवाल करने लगे। लेकिन
उस ने उन्हें सिर्फ़ वह कुछ बताया जो बादशाह ने उसे
कहने को कहा था। तब वह ख़ामोश हो गए, क्यूँकि
किसी ने भी उस की बादशाह से गुफ़्तगु नहीं सुनी
थी।
28 इस के बाद यरमियाह यरूशलम की शिकस्त
तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में क़ैदी रहा।

यरूशलम की शिकस्त

39 1 यरूशलम यूँ दुश्मन के हाथ में आया :
यहूदाह के बादशाह के नवें साल और 10वें
महीने [s]में शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र अपनी तमाम
फ़ौज ले कर यरूशलम पहुँचा और शहर का मुहासरा
करने लगा। 2 सिदक़ियाह के 11वें साल के चौथे
महीने और नवें दिन [t]दुश्मन ने फ़सील में रख़ना डाल
दिया। 3 तब नबूकद्नज़्ज़र के तमाम आला अफ़्सर
शहर में आ कर उस के दरमियानी दरवाज़े में बैठ
गए। उन में नैर्गल-सराज़र जो रब-माग था, सम्गर-नबू,
सर-सकीम जो रब-सारीस था और शाह-ए-बाबल के
बाक़ी बुज़ुर्ग शामिल थे।
4 उन्हें देख कर यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह
और उस के तमाम फ़ौजी भाग गए। रात के वक़्त
वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़
के साथ मुल्हिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह
वादी-ए-यर्दन की तरफ़ दौड़ने लगे, 5 लेकिन बाबल
के फ़ौजियों ने उन का ताक़्क़ुब करके सिदक़ियाह
को यरीहू के मैदानी इलाक़े में पकड़ लिया। फिर
उसे मुल्क-ए-हमात के शहर रिब्ला में शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र के पास लाया गया, और वहीं उस ने
सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 6 सिदक़ियाह
के देखते देखते शाह-ए-बाबल ने रिब्ला में उस के
बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उस ने यहूदाह
के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया।
7 फिर उस ने सिदक़ियाह की आँखें निकलवा कर
उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ लिया और बाबल
को ले जाने के लिए मह्फ़ूज़ रखा।
8 बाबल के फ़ौजियों ने शाही महल और दीगर लोगों
के घरों को जला कर यरूशलम की फ़सील को गिरा
दिया। 9 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने
सब को जिलावतन कर दिया जो यरूशलम और
यहूदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उन में शामिल
थे जो जंग के दौरान ग़द्दारी करके शाह-ए-बाबल के
पीछे लग गए थे। 10 लेकिन नबूज़रादान ने सब से
निचले तब्क़े के बाज़ लोगों को मुल्क-ए-यहूदाह में
छोड़ दिया, ऐसे लोग जिन के पास कुछ नहीं था।
उन्हें उस ने उस वक़्त अंगूर के बाग़ और खेत दिए।
11–12 नबूकद्नज़्ज़र बादशाह ने शाही मुहाफ़िज़ों के
अफ़्सर नबूज़रादान को हुक्म दिया, "यरमियाह को
अपने पास रखें। उस का ख़याल रखें। उसे नुक़्सान
न पहुँचाएँ बल्कि जो भी दरख़्वास्त वह करे उसे पूरा
करें।"
13 चुनाँचे शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान
ने किसी को यरमियाह के पास भेजा। उस वक़्त
नबूशज़्बान जो रब-सारीस था, नैर्गल-सराज़र जो
रब-माग था और शाह-ए-बाबल के बाक़ी अफ़्सर
नबूज़रादान के पास थे। 14 यरमियाह अब तक शाही
मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था। उन्हों ने हुक्म
दिया कि उसे वहाँ से निकाल कर जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम बिन साफ़न के हवाले कर दिया जाए
ताकि वह उसे उस के अपने घर पहुँचा दे। यूँ
यरमियाह अपने लोगों के दरमियान बसने लगा।

अबद-मलिक के लिए ख़ुशख़बरी

15 जब यरमियाह अभी शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में
गिरिफ़्तार था तो रब उस से हमकलाम हुआ,

---

[s]दिसम्बर ता जन्वरी।

[t]18 जुलाई।

16 “जा कर एथोपिया के अबद-मलिक को बता,
‘रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है कि देख, मैं इस शहर के साथ वह सब कुछ
करने को हूँ जिस का एलान मैं ने किया था।
मैं उस पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि उसे
नुक़्सान पहुँचाऊँगा। तू अपनी आँखों से यह देखेगा।
17 लेकिन रब फ़रमाता है कि तुझे मैं उस दिन
छुटकारा दूँगा, तुझे उन के हवाले नहीं किया जाएगा
जिन से तू डरता है। 18 मैं ख़ुद तुझे बचाऊँगा। चूँकि तू
ने मुझ पर भरोसा किया इस लिए तू तलवार की ज़द
में नहीं आएगा बल्कि तेरी जान छूट जाएगी। [ᵘ]यह
रब का फ़रमान है’।”

यरमियाह को आज़ाद किया जाता है

40 1 आज़ाद होने के बाद भी रब का
कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। शाही
मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने उसे रामा में रिहा
किया था। क्यूँकि जब यरूशलम और बाक़ी यहूदाह
के क़ैदियों को मुल्क-ए-बाबल में ले जाने के लिए
जमा किया गया तो मालूम हुआ कि यरमियाह भी
ज़न्जीरों में जकड़ा हुआ उन में शामिल है। 2 तब
नबूज़रादान ने यरमियाह को बुला कर उस से कहा,
“रब आप के ख़ुदा ने एलान किया था कि इस जगह
पर आफ़त आएगी। 3 और अब वह यह आफ़त उसी
तरह ही लाया जिस तरह उस ने फ़रमाया था। सब
कुछ इस लिए हुआ कि आप की क़ौम रब का गुनाह
करती रही और उस की न सुनी। 4 लेकिन आज मैं वह
ज़न्जीरें खोल देता हूँ जिन से आप के हाथ जकड़े हुए
हैं। आप आज़ाद हैं। अगर चाहें तो मेरे साथ बाबल
जाएँ। तब मैं ही आप की निगरानी करूँगा। बाक़ी
आप की मर्ज़ी। अगर यहीं रहना पसन्द करेंगे तो यहीं
रहें। पूरे मुल्क में जहाँ भी जाना चाहें जाएँ। कोई आप
को नहीं रोकेगा।”

5 यरमियाह अब तक झिजक रहा था, इस
लिए नबूज़रादान ने कहा, “फिर जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम बिन साफ़न के पास चले जाएँ! शाह-ए-
बाबल ने उसे सूबा यहूदाह के शहरों पर मुक़र्रर किया
है। उस के साथ रहें। या फिर जहाँ भी रहना पसन्द
करें वहीं रहें।”

नबूज़रादान ने यरमियाह को कुछ ख़ुराक और एक
तुह्फ़ा दे कर उसे रुख़्सत कर दिया। 6 जिदलियाह
मिस्फ़ाह में ठहरा हुआ था। यरमियाह उस के पास
जा कर मुल्क के बचे हुए लोगों के बीच में बसने
लगा।

जिदलियाह को क़त्ल करने की साज़िशें

7 दीहात में अब तक यहूदाह के कुछ फ़ौजी अफ़्सर
अपने दस्तों समेत छुपे रहते थे। जब उन्हें ख़बर मिली
कि शाह-ए-बाबल ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को
यहूदाह का गवर्नर बना कर उन ग़रीब आदमियों और
बाल-बच्चों पर मुक़र्रर किया है जो जिलावतन नहीं हुए
हैं 8 तो वह मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए।
अफ़्सरों के नाम इस्माईल बिन नतनियाह, क़रीह
के बेटे यूहनान और यूनतन, सिरायाह बिन तन्हूमत,
ईफी नतूफ़ाती के बेटे और याज़नियाह बिन माकाती
थे। उन के फ़ौजी भी साथ आए। 9 जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम बिन साफ़न ने क़सम खा कर उन से वादा
किया, “बाबल के ताबे हो जाने से मत डरना! मुल्क
में आबाद हो कर शाह-ए-बाबल की ख़िदमत करें
तो आप की सलामती होगी। 10 मैं ख़ुद मिस्फ़ाह में
ठहर कर आप की सिफ़ारिश करूँगा जब बाबल के
नुमाइन्दे आएँगे। इतने में अंगूर, मौसम-ए-गर्मा का
फल और ज़ैतून की फ़सलें जमा करके अपने बर्तनों
में मह्फ़ूज़ रखें। उन शहरों में आबाद रहें जिन पर
आप ने क़ब्ज़ा कर लिया है।”

11 यहूदाह के मुतअद्दिद बाशिन्दे मोआब, अम्मोन,
अदोम और दीगर पड़ोसी ममालिक में हिज्रत कर

[ᵘ]लफ़्ज़ी तर्जुमा : तू ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

गए थे। अब जब उन्हें इत्तिला मिली कि शाह-ए-
बाबल ने कुछ बचे हुए लोगों को यहूदाह में छोड़ कर
जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न को गवर्नर
बना दिया है 12 तो वह सब यहूदाह में वापस आए।
जिन ममालिक में भी वह मुन्तशिर हुए थे वहाँ से
वह मिस्फ़ाह आए ताकि जिदलियाह से मिलें। उस
मौसम-ए-गर्मा में वह अंगूर और बाक़ी फल की बड़ी
फ़सल जमा कर सके।

13 एक दिन यूहनान बिन क़रीह और वह तमाम
फ़ौजी अफ़्सर जो अब तक दीहात में ठहरे हुए थे
जिदलियाह से मिलने आए। 14 मिस्फ़ाह में पहुँच कर
वह जिदलियाह से कहने लगे, "क्या आप को नहीं
मालूम कि अम्मोन के बादशाह बालीस ने इस्माईल
बिन नतनियाह को आप को क़त्ल करने के लिए भेजा
है?" लेकिन जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम ने उन की
बात का यक़ीन न किया। 15 तब यूहनान बिन क़रीह
मिस्फ़ाह आया और अलाहिदगी में जिदलियाह से
मिला। वह बोला, "मुझे इस्माईल बिन नतनियाह के
पास जा कर उसे मार देने की इजाज़त दें। किसी को
भी पता नहीं चलेगा। क्या ज़रूरत है कि वह आप को
क़त्ल करे? अगर वह इस में कामयाब हो जाए तो
आप के पास जमाशुदा हमवतन सब के सब मुन्तशिर
हो जाएंगे और यहूदाह का बचा हुआ हिस्सा हलाक
हो जाएगा।" 16 जिदलियाह ने यूहनान को डाँट कर
कहा, "ऐसा मत करना! जो कुछ आप इस्माईल के
बारे में बता रहे हैं वह झूट है।"

इस्माईल जिदलियाह गवर्नर को क़त्ल करता है

41 1 इस्माईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा
शाही नस्ल का था और पहले शाह-ए-
यहूदाह का आला अफ़्सर था। सातवें महीने [v]में
वह दस आदमियों को अपने साथ ले कर मिस्फ़ाह
में जिदलियाह से मिलने आया। जब वह मिल कर
खाना खा रहे थे 2 तो इस्माईल और उस के दस
आदमी अचानक उठे और अपनी तलवारों को खैंच
कर जिदलियाह को मार डाला। यूँ इस्माईल ने उस
आदमी को क़त्ल किया जिसे बाबल के बादशाह ने
सूबा यहूदाह पर मुक़र्रर किया था। 3 उस ने मिस्फ़ाह
में जिदलियाह के साथ रहने वाले तमाम हमवतनों
को भी क़त्ल किया और वहाँ ठहरने वाले बाबल के
फ़ौजियों को भी।

4 अगले दिन जब किसी को मालूम नहीं था कि
जिदलियाह को क़त्ल किया गया है 5 तो 80 आदमी
वहाँ पहुँचे जो सिकम, सैला और सामरिया से आ
कर रब के तबाहशुदा घर में उस की परस्तिश करने
जा रहे थे। उन के पास ग़ल्ला और बख़ूर की क़ुर्बानियाँ
थीं, और उन्हों ने ग़म के मारे अपनी दाढ़ियाँ मुंडवा
कर अपने कपड़े फाड़ लिए और अपनी जिल्द को
ज़ख़्मी कर दिया था। 6 इस्माईल रोते रोते मिस्फ़ाह से
निकल कर उन से मिलने आया। जब वह उन के पास
पहुँचा तो कहने लगा, "जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम
के पास आओ और देखो कि क्या हुआ है!"

7 जूँ ही वह शहर में दाख़िल हुए तो इस्माईल और
उस के साथियों ने उन्हें क़त्ल करके एक हौज़ में
फैंक दिया। 8 सिर्फ़ दस आदमी बच गए जब उन्हों
ने इस्माईल से कहा, "हमें मत क़त्ल करना, क्यूँकि
हमारे पास गन्दुम, जौ और शहद के ज़ख़ीरे हैं जो हम
ने खुले मैदान में कहीं छुपा रखे हैं।" यह सुन कर उस
ने उन्हें दूसरों की तरह न मारा बल्कि ज़िन्दा छोड़ा।

9 जिस हौज़ में इस्माईल ने मज़कूरा आदमियों
की लाशें फैंक दीं वह बहुत बड़ा था। यहूदाह
के बादशाह आसा ने उसे उस वक़्त बनवाया था
जब इस्राईली बादशाह बाशा से जंग थी और वह
मिस्फ़ाह को मज़बूत बना रहा था। इस्माईल ने इसी
हौज़ को मक़्तूलों से भर दिया था। 10 मिस्फ़ाह के
बाक़ी लोगों को उस ने क़ैदी बना लिया। उन में
यहूदाह के बादशाह की बेटियाँ और बाक़ी वह तमाम
लोग शामिल थे जिन पर शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार

---

[v]सितम्बर ता अक्तूबर।

नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम को मुक़र्रर
किया था। फिर इस्माईल उन सब को अपने साथ ले
कर मुल्क-ए-अम्मोन के लिए रवाना हुआ।
11 लेकिन यूहनान बिन क़रीह और उस के साथी
अफ़सरों को इत्तिला दी गई कि इस्माईल से क्या
जुर्म हुआ है। 12 तब वह अपने तमाम फ़ौजियों को
जमा करके इस्माईल से लड़ने के लिए निकले और
उस का ताक़्क़ुब करते करते उसे जिबऊन के जोहड़
के पास जा लिया। 13 जूँ ही इस्माईल के क़ैदियों ने
यूहनान और उस के अफ़सरों को देखा तो वह ख़ुश
हुए। 14 सब ने इस्माईल को छोड़ दिया और मुड़
कर यूहनान के पास भाग आए। 15 इस्माईल आठ
साथियों समेत फ़रार हुआ और यूहनान के हाथ से
बच कर मुल्क-ए-अम्मोन में चला गया।
16 यूँ मिस्फ़ाह के बचे हुए तमाम लोग जिबऊन में
यूहनान और उस के साथी अफ़सरों के ज़ेर-ए-निगरानी
आए। उन में वह तमाम फ़ौजी, ख़वातीन, बच्चे और
दरबारी शामिल थे जिन्हें इस्माईल ने जिदलियाह को
क़त्ल करने के बाद क़ैदी बनाया था। 17 लेकिन वह
मिस्फ़ाह वापस न गए बल्कि आगे चलते चलते बैत-
लहम के क़रीब के गाँव बनाम सराय-किम्हाम में रुक
गए। वहाँ वह मिस्र के लिए रवाना होने की तय्यारियाँ
करने लगे, 18 क्यूँकि वह बाबल के इन्तिक़ाम से
डरते थे, इस लिए कि जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम
को क़त्ल करने से इस्माईल बिन नतनियाह ने उस
आदमी को मौत के घाट उतारा था जिसे शाह-ए-
बाबल ने यहूदाह का गवर्नर मुक़र्रर किया था।

यरमियाह मिस्र न जाने का मश्वरा देता है

42 1 यूहनान बिन क़रीह, यज़नियाह बिन
हूसायाह और दीगर फ़ौजी अफ़सर बाक़ी
तमाम लोगों के साथ छोटे से ले कर बड़े तक
2 यरमियाह नबी के पास आए और कहने लगे,
“हमारी मिन्नत क़बूल करें और रब अपने ख़ुदा से
हमारे लिए दुआ करें। आप ख़ुद देख सकते हैं कि
गो हम पहले मुतअद्दिद लोग थे, लेकिन अब थोड़े
ही रह गए हैं। 3 दुआ करें कि रब आप का ख़ुदा हमें
दिखाए कि हम कहाँ जाएँ और क्या कुछ करें।”
4 यरमियाह ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं दुआ में
ज़रूर रब आप के ख़ुदा को आप की गुज़ारिश पेश
करूँगा। और जो भी जवाब रब दे वह मैं लफ़्ज़-ब-
लफ़्ज़ आप को बता दूँगा। मैं आप को किसी भी
बात से महरूम नहीं रखूँगा।” 5 उन्हों ने कहा, “रब
हमारा वफ़ादार और क़ाबिल-ए-एतिमाद गवाह है।
अगर हम हर बात पर अमल न करें जो रब आप
का ख़ुदा आप की मारिफ़त हम पर नाज़िल करेगा
तो वही हमारे ख़िलाफ़ गवाही दे। 6 ख़्वाह उस की
हिदायत हमें अच्छी लगे या बुरी, हम रब अपने ख़ुदा
की सुनेंगे। क्यूँकि हम जानते हैं कि जब हम रब अपने
ख़ुदा की सुनें तब ही हमारी सलामती होगी। इसी लिए
हम आप को उस के पास भेज रहे हैं।”
7 दस दिन गुज़रने के बाद रब का कलाम यरमियाह
पर नाज़िल हुआ। 8 उस ने यूहनान, उस के साथी
अफ़सरों और बाक़ी तमाम लोगों को छोटे से ले
कर बड़े तक अपने पास बुला कर 9 कहा, “आप
ने मुझे रब इस्राईल के ख़ुदा के पास भेजा ताकि मैं
आप की गुज़ारिश उस के सामने लाऊँ। अब उस का
फ़रमान सुनें! 10 ‘अगर तुम इस मुल्क में रहो तो मैं
तुम्हें नहीं गिराऊँगा बल्कि तामीर करूँगा, तुम्हें जड़
से नहीं उखाड़ूँगा बल्कि पनीरी की तरह लगा दूँगा।
क्यूँकि मुझे उस मुसीबत पर अफ़्सोस है जिस में मैं
ने तुम्हें मुब्तला किया है। 11 इस वक़्त तुम शाह-ए-
बाबल से डरते हो, लेकिन उस से ख़ौफ़ मत खाना!’
रब फ़रमाता है, ‘उस से दहशत न खाओ, क्यूँकि मैं
तुम्हारे साथ हूँ और तुम्हारी मदद करके उस के हाथ
से छुटकारा दूँगा। 12 मैं तुम पर रहम करूँगा, इस
लिए वह भी तुम पर रहम करके तुम्हें तुम्हारे मुल्क
में वापस आने देगा।
13 लेकिन अगर तुम रब अपने ख़ुदा की सुनने के
लिए तय्यार न हो बल्कि कहो कि हम इस मुल्क में
नहीं रहेंगे 14 बल्कि मिस्र जाएंगे जहाँ न जंग देखेंगे,
न जंगी नरसिंगे की आवाज़ सुनेंगे और न भूके रहेंगे

15 तो रब का जवाब सुनो! ऐ यहूदाह के बचे हुए
लोगो, रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अगर
तुम मिस्र में जा कर वहाँ पनाह लेने पर तुले हुए हो
16 तो यक़ीन जानो कि जिस तलवार और काल से
तुम डरते हो वह वहीं मिस्र में तुम्हारा पीछा करता
रहेगा। वहाँ जा कर तुम यक़ीनन मरोगे। 17 जितने
भी मिस्र जा कर वहाँ रहने पर तुले हुए हों वह सब
तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों की ज़द में
आ कर मर जाएंगे। जिस मुसीबत में मैं उन्हें डाल
दूँगा उस से कोई नहीं बचेगा।'

18 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है, 'पहले मेरा सख़्त ग़ज़ब यरूशलम के
बाशिन्दों पर नाज़िल हुआ। अगर तुम मिस्र जाओ तो
मेरा ग़ज़ब तुम पर भी नाज़िल होगा। तुम्हें देख कर
लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और तुम उन की लान-
तान और हिक़ारत का निशाना बनोगे। लानत करने
वाला अपने दुश्मनों के लिए तुम्हारे जैसा अन्जाम
चाहेगा। जहाँ तक तुम्हारे वतन का ताल्लुक़ है, तुम
उसे आइन्दा कभी नहीं देखोगे।'

19 ऐ यहूदाह के बचे हुए लोगो, अब रब आप से
हमकलाम हुआ है। उस का जवाब साफ़ है। मिस्र
को मत जाना! यह बात ख़ूब जान लें कि आज मैं ने
आप को आगाह कर दिया है। 20 आप ने ख़ुद अपनी
जान को ख़तरे में डाल दिया जब आप ने मुझे रब
अपने ख़ुदा के पास भेज कर कहा, 'रब हमारे ख़ुदा से
हमारे लिए दुआ करें। उस का पूरा जवाब हमें सुनाएँ,
क्यूँकि हम उस की तमाम बातों पर अमल करेंगे।'
21 आज मैं ने यह किया है, लेकिन आप रब अपने
ख़ुदा की सुनने के लिए तय्यार नहीं हैं। जो कुछ भी
उस ने मुझे आप को सुनाने को कहा है उस पर आप
अमल नहीं करना चाहते। 22 चुनाँचे अब जान लें कि
जहाँ आप जा कर पनाह लेना चाहते हैं वहाँ आप
तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों की ज़द में
आ कर हलाक हो जाएंगे।"

यरमियाह की आगाही को नज़रअन्दाज़ किया जाता है

43 1 यरमियाह ख़ामोश हुआ। जो कुछ भी रब
उन के ख़ुदा ने यरमियाह को उन्हें सुनाने को
कहा था उसे उस ने उन सब तक पहुँचाया था। 2 फिर
अज़रियाह बिन हूसायाह, यूहनान बिन अख़ीक़ाम
और तमाम बदतमीज़ आदमी बोल उठे, "तुम झूट
बोल रहे हो! रब हमारे ख़ुदा ने तुम्हें यह सुनाने को
नहीं भेजा कि मिस्र को न जाओ, न वहाँ आबाद हो
जाओ। 3 इस के पीछे बारूक बिन नैरियाह का हाथ
है। वही तुम्हें हमारे ख़िलाफ़ उकसा रहा है, क्यूँकि
वह चाहता है कि हम बाबलियों के हाथ में आ जाएँ
ताकि वह हमें क़त्ल करें या जिलावतन करके मुल्क-
ए-बाबल ले जाएँ।"

4 ऐसी बातें करते करते यूहनान बिन क़रीह, दीगर
फ़ौजी अफ़्सरों और बाक़ी तमाम लोगों ने रब
का हुक्म रद्द किया। वह मुल्क-ए-यहूदाह में न
रहे 5 बल्कि सब यूहनान और बाक़ी तमाम फ़ौजी
अफ़्सरों की राहनुमाई में मिस्र चले गए। उन में
यहूदाह के वह बचे हुए सब लोग शामिल थे जो
पहले मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर हुए थे, लेकिन
अब यहूदाह में दुबारा आबाद होने के लिए वापस
आए थे। 6 वह तमाम मर्द, औरतें और बच्चे बादशाह
की बेटियों समेत भी उन में शामिल थे जिन्हें शाही
मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन
अख़ीक़ाम के सपुर्द किया था। यरमियाह नबी और
बारूक बिन नैरियाह को भी साथ जाना पड़ा। 7 यूँ
वह रब की हिदायत रद्द करके रवाना हुए और चलते
चलते मिस्री सरहद के शहर तह्फ़न्हीस तक पहुँचे।

शाह-ए-बाबल के मिस्र में घुस आने की पेशगोई

8 तह्फ़न्हीस में रब का कलाम यरमियाह पर
नाज़िल हुआ, 9 "अपने हमवतनों की मौजूदगी में
चन्द एक बड़े पत्थर फ़िरऔन के महल के दरवाज़े के
क़रीब ले जा कर फ़र्श की कच्ची ईंटों के नीचे दबा दे।

10 फिर उन्हें बता दे, ‘रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं अपने ख़ादिम शाह-ए-
बाबल नबूकद्नज़्ज़र को बुला कर यहाँ लाऊँगा और
उस का तख़्त उन पत्थरों के ऊपर खड़ा करूँगा जो
मैं ने यरमियाह के ज़रीए दबाए हैं। नबूकद्नज़्ज़र उन
ही के ऊपर अपना शाही तम्बू लगाएगा। 11 क्यूँकि
वह आएगा और मिस्र पर हम्ला करके हर एक के
साथ वह कुछ करेगा जो उस के नसीब में है। एक मर
जाएगा, दूसरा क़ैद में जाएगा और तीसरा तलवार की
ज़द में आएगा। 12–13 नबूकद्नज़्ज़र मिस्री देवताओं
के मन्दिरों को जला कर राख कर देगा और उन के
बुतों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें अपने साथ ले जाएगा।
जिस तरह चरवाहा अपने कपड़े से जूएँ निकाल
निकाल कर उसे साफ़ कर लेता है उसी तरह शाह-
ए-बाबल मिस्र को माल-ओ-मता से साफ़ करेगा।
मिस्र आते वक़्त वह सूरज देवता के मन्दिर में जा
कर उस के सतूनों को ढा देगा और बाक़ी मिस्री
देवताओं के मन्दिर भी नज़र-ए-आतिश करेगा। फिर
शाह-ए-बाबल सहीह-सलामत वहाँ से वापस चला
जाएगा’।”

तुम बुतपरस्ती से बाज़ क्यूँ नहीं आते?

44 1 रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह
पर नाज़िल हुआ। उस में वह उन तमाम
हमवतनों से हमकलाम हुआ जो शिमाली मिस्र के
शहरों मिज्दाल, तह्फ़न्हीस और मेम्फ़िस और जुनूबी
मिस्र बनाम पत्रूस में रहते थे।

2 “रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम ने ख़ुद वह बड़ी आफ़त देखी जो
मैं यरूशलम और यहूदाह के दीगर तमाम शहरों पर
लाया। आज वह वीरान-ओ-सुन्सान हैं, और उन में
कोई नहीं बसता। 3 यूँ उन्हें उन की बुरी हरकतों का
अज्र मिला। क्यूँकि अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर
जला कर उन की ख़िदमत करने से उन्हों ने मुझे तैश
दिलाया। और यह ऐसे देवता थे जिन से पहले न वह,
न तुम और न तुम्हारे बापदादा वाक़िफ़ थे। 4 बार बार
मैं नबियों को उन के पास भेजता रहा, और बार बार
मेरे ख़ादिम कहते रहे कि ऐसी घिनौनी हरकतें मत
करना, क्यूँकि मुझे इन से नफ़रत है! 5 लेकिन उन्हों
ने न सुनी, न ध्यान दिया। न वह अपनी बेदीनी से
बाज़ आए, न अजनबी माबूदों को बख़ूर जलाने का
सिलसिला बन्द किया।

6 तब मेरा शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। मेरे
क़हर की ज़बरदस्त आग ने यहूदाह के शहरों और
यरूशलम की गलियों में फैलते फैलते उन्हें वीरान-
ओ-सुन्सान कर दिया। आज तक उन का यही हाल
है।’

7 अब रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, ‘तुम अपना सत्यानास क्यूँ कर रहे हो?
ऐसे क़दम उठाने से तुम यहूदाह से आए हुए मर्दों और
औरतों को बच्चों और शीरख़्वारों समेत हलाकत की
तरफ़ ला रहे हो। इस सूरत में एक भी नहीं बचेगा।
8 मुझे अपने हाथों के काम से तैश क्यूँ दिलाते हो?
यहाँ मिस्र में पनाह ले कर तुम अजनबी माबूदों के
लिए बख़ूर क्यूँ जलाते हो? इस से तुम अपने आप
को नेस्त-ओ-नाबूद कर रहे हो, तुम दुनिया की तमाम
क़ौमों के लिए लानत और मज़ाक़ का निशाना बनोगे।
9 क्या तुम अपनी क़ौम के संगीन गुनाहों को भूल
गए हो? क्या तुम्हें वह कुछ याद नहीं जो तुम्हारे
बापदादा, यहूदाह के राजे रानियों और तुम से तुम्हारी
बीवियों समेत मुल्क-ए-यहूदाह और यरूशलम की
गलियों में सरज़द हुआ है? 10 आज तक तुम ने न
इनकिसारी का इज़हार किया, न मेरा ख़ौफ़ माना,
और न मेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी।
तुम उन हिदायात के ताबे न रहे जो मैं ने तुम्हें और
तुम्हारे बापदादा को अता की थीं।’

11 चुनाँचे रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है, ‘मैं तुम पर आफ़त लाने का अटल
इरादा रखता हूँ। तमाम यहूदाह ख़त्म हो जाएगा।
12 मैं यहूदाह के उस बचे हुए हिस्से को सफ़्हा-ए-
हस्ती से मिटा दूँगा जो मिस्र में जा कर पनाह लेने
पर तुला हुआ था। सब मिस्र में हलाक हो जाएंगे,

ख़्वाह तलवार से, ख़्वाह काल से। छोटे से ले कर बड़े तक सब के सब तलवार या काल की ज़द में आ कर मर जाएंगे। उन्हें देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह दूसरों की लान-तान और हिक़ारत का निशाना बनेंगे। लानत करने वाला अपने दुश्मनों के लिए उन ही का सा अन्जाम चाहेगा। 13 जिस तरह मैं ने यरूशलम को सज़ा दी ऐन उसी तरह मैं मिस्र में आने वाले हमवतनों को तलवार, काल और मोहलिक बीमारियों से सज़ा दूँगा। 14 यहूदाह के जितने बचे हुए लोग यहाँ मिस्र में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब यहीं हलाक हो जाएंगे। कोई भी बच कर मुल्क-ए-यहूदाह में नहीं लौटेगा, गो तुम सब वहाँ दुबारा आबाद होने की शदीद आर्ज़ू रखते हो। सिर्फ़ चन्द एक इस में कामयाब हो जाएंगे'।"

आसमानी मलिका की पूजा पर ज़िद

15 उस वक़्त शिमाली और जुनूबी मिस्र में रहने वाले यहूदाह के तमाम मर्द और औरतें एक बड़े इजतिमा के लिए जमा हुए थे। मर्दों को ख़ूब मालूम था कि हमारी बीवियाँ अजनबी माबूदों को बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश करती हैं। अब उन्हों ने यरमियाह से कहा, 16 "जो बात आप ने रब का नाम ले कर हम से की है वह हम नहीं मानते। 17 हम उन तमाम बातों पर ज़रूर अमल करेंगे जो हम ने कही हैं। हम आसमानी मलिका देवी के लिए बख़ूर जलाएँगे और उसे मै की नज़रें पेश करेंगे। हम वही कुछ करेंगे जो हम, हमारे बापदादा, हमारे बादशाह और हमारे बुज़ुर्ग मुल्क-ए-यहूदाह और यरूशलम की गलियों में किया करते थे। क्यूँकि उस वक़्त रोटी की कस्रत थी और हमारा अच्छा हाल था। उस वक़्त हम किसी भी मुसीबत से दोचार न हुए। 18 लेकिन जब से हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करने से बाज़ आए हैं उस वक़्त से हर लिहाज़ से हाजतमन्द रहे हैं। उसी वक़्त से हम तलवार और काल की ज़द में आ कर नेस्त हो रहे हैं।" 19 औरतों ने बात जारी रख कर कहा, "क्या आप समझते हैं कि हमारे शौहरों को इस का इल्म नहीं था कि हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करती हैं, कि हम उस की शक्ल की टिक्कियाँ बना कर उस की पूजा करती हैं?"

चन्द एक के बचने की पेशगोई

20 यरमियाह एतिराज़ करने वाले तमाम मर्दों और औरतों से दुबारा मुख़ातिब हुआ, 21 "देखो, रब ने उस बख़ूर पर ध्यान दिया जो तुम और तुम्हारे बापदादा ने बादशाहों, बुज़ुर्गों और अवाम समेत यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में जलाया है। यह बात उसे ख़ूब याद है। 22 आख़िरकार एक वक़्त आया जब तुम्हारी शरीर और घिनौनी हरकतें क़ाबिल-ए-बर्दाश्त न रहीं, और रब को तुम्हें सज़ा देनी पड़ी। यही वजह है कि आज तुम्हारा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान है, कि उसे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लानत करने वाला अपने दुश्मन के लिए ऐसा ही अन्जाम चाहता है। 23 आफ़त इसी लिए तुम पर आई कि तुम ने बुतों के लिए बख़ूर जला कर रब की न सुनी। न तुम ने उस की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी, न उस की हिदायात और अह्काम पर अमल किया। आज तक मुल्क का यही हाल रहा है।"

24 फिर यरमियाह ने तमाम लोगों से औरतों समेत कहा, "ऐ मिस्र में रहने वाले यहूदाह के तमाम हमवतनो, रब का कलाम सुनो! 25 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि तुम और तुम्हारी बीवियों ने इसरार किया है, 'हम ज़रूर अपनी उन मन्नतों को पूरा करेंगे जो हम ने मानी हैं, हम ज़रूर आसमानी मलिका को बख़ूर और मै की नज़रें पेश करेंगे।' और तुम ने अपने अल्फ़ाज़ और अपनी हरकतों से साबित कर दिया है कि तुम सन्जीदगी से अपने इस एलान पर अमल करना चाहते हो। तो ठीक है, अपना वादा और अपनी मन्नतें पूरी करो!

26 लेकिन ऐ मिस्र में रहने वाले तमाम हमवतनो, रब के कलाम पर ध्यान दो! रब फ़रमाता है कि मेरे अज़ीम नाम की क़सम, आइन्दा मिस्र में तुम में

से कोई मेरा नाम ले कर क़सम नहीं खाएगा, कोई
नहीं कहेगा, ‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ की हयात की
क़सम!’ 27 क्यूँकि मैं तुम्हारी निगरानी कर रहा हूँ,
लेकिन तुम पर मेहरबानी करने के लिए नहीं बल्कि
तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिए। मिस्र में रहने वाले
यहूदाह के तमाम लोग तलवार और काल की ज़द
में आ जाएंगे और पिसते पिसते हलाक हो जाएंगे।
28 सिर्फ़ चन्द एक दुश्मन की तलवार से बच कर
मुल्क-ए-यहूदाह वापस आएँगे। तब यहूदाह के जितने
बचे हुए लोग मिस्र में पनाह लेने के लिए आए हैं
वह सब जान लेंगे कि किस की बात दुरुस्त निकली
है, मेरी या उन की। 29 रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हें
निशान भी देता हूँ ताकि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि
मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ ख़ाली बातें नहीं कर रहा बल्कि
तुम्हें यक़ीनन मिस्र में सज़ा दूँगा। 30 निशान यह होगा
कि जिस तरह मैं ने यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह
को उस के जानी दुश्मन नबूकद्नज़्ज़र के हवाले कर
दिया उसी तरह मैं हुफ़्रा फ़िरऔन को भी उस के जानी
दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।”

बारूक के लिए तसल्ली का पैग़ाम

45 1 यहूदाह के बादशाह यहूयक़ीम बिन
यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में
यरमियाह नबी को बारूक बिन नैरियाह के लिए रब
का पैग़ाम मिला। उस वक़्त यरमियाह बारूक से वह
तमाम बातें लिखवा रहा था जो उस पर नाज़िल हुई
थीं। यरमियाह ने कहा, 2 “ऐ बारूक, रब इस्राईल का
ख़ुदा तेरे बारे में फ़रमाता है 3 कि तू कहता है, ‘हाय,
मुझ पर अफ़्सोस! रब ने मेरे दर्द में इज़ाफ़ा कर दिया
है, अब मुझे रंज-ओ-अलम भी सहना पड़ता है। मैं
कराहते कराहते थक गया हूँ। कहीं भी आराम-ओ-
सुकून नहीं मिलता।’

4 ऐ बारूक, रब जवाब में फ़रमाता है कि जो कुछ
मैं ने ख़ुद तामीर किया उसे मैं गिरा दूँगा, जो पौदा मैं
ने ख़ुद लगाया उसे जड़ से उखाड़ दूँगा। पूरे मुल्क के
साथ ऐसा ही सुलूक करूँगा। 5 तो फिर तू अपने लिए
क्यूँ बड़ी कामयाबी हासिल करने का आरज़ूमन्द है?
ऐसा ख़याल छोड़ दे, क्यूँकि मैं तमाम इन्सानों पर
आफ़त ला रहा हूँ। यह रब का फ़रमान है। लेकिन
जहाँ भी तू जाए वहाँ मैं होने दूँगा कि तेरी जान छूट
जाए।” [w]

मिस्र की शिकस्त की पेशगोई

46 1 यरमियाह पर मुख़्तलिफ़ क़ौमों के बारे में
भी पैग़ामात नाज़िल हुए। यह ज़ैल में दर्ज
हैं।

2 पहला पैग़ाम मिस्र के बारे में है। यहूदाह के
बादशाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह के चौथे साल में
शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने दरया-ए-फ़ुरात पर
वाक़े शहर कर्किमीस के पास मिस्री फ़ौज को
शिकस्त दी थी। उन दिनों में मिस्री बादशाह निकोह
फ़िरऔन की फ़ौज के बारे में रब का कलाम नाज़िल
हुआ,

3 “अपनी बड़ी और छोटी ढालें तय्यार करके जंग
के लिए निकलो! 4 घोड़ों को रथों में जोतो! दीगर
घोड़ों पर सवार हो जाओ! ख़ोद पहन कर खड़े
हो जाओ! अपने नेज़ों को रौग़न से चमका कर
ज़िराबक्तर पहन लो! 5 लेकिन मुझे क्या नज़र आ रहा
है? मिस्री फ़ौजियों पर दहशत तारी हुई है। वह पीछे
हट रहे हैं, उन के सूरमाओं ने हथियार डाल दिए
हैं। वह भाग भाग कर फ़रार हो रहे हैं और पीछे भी
नहीं देखते। रब फ़रमाता है कि चारों तरफ़ दहशत
ही दहशत फैल गई है। 6 किसी को भी बचने न दो,
ख़्वाह वह कितनी तेज़ी से क्यूँ न भाग रहा हो या
कितना ज़बरदस्त फ़ौजी क्यूँ न हो। शिमाल में दरया-
ए-फ़ुरात के किनारे ही वह ठोकर खा कर गिर गए
हैं।

---

[w] लफ़्ज़ी तर्जुमा : मैं तुझे तेरी जान ग़नीमत के तौर पर बख़्श दूँगा।

7 यह क्या है जो दरया-ए-नील की तरह चढ़ रहा है,
जो सैलाब बन कर सब कुछ ग़र्क़ कर रहा है? 8 मिस्र
दरया-ए-नील की तरह चढ़ रहा है, वही सैलाब बन
कर सब कुछ ग़र्क़ कर रहा है। वह कहता है, 'मैं चढ़
कर पूरी ज़मीन को ग़र्क़ कर दूँगा। मैं शहरों को उन के
बाशिन्दों समेत तबाह करूँगा।' 9 ऐ घोड़ो, दुश्मन पर
टूट पड़ो! ऐ रथो, दीवानों की तरह दौड़ो! ऐ फ़ौजियो,
लड़ने के लिए निकलो! ऐ एथोपिया और लिबिया के
सिपाहियो, अपनी ढालें पकड़ कर चलो, ऐ लुदिया
के तीर चलाने वालो, अपने कमान तान कर आगे
बढ़ो!

10 लेकिन आज क़ादिर-ए-मुतलक़, रब्ब-उल-
अफ़्वाज का ही दिन है। इन्तिक़ाम के इस दिन वह
अपने दुश्मनों से बदला लेगा। उस की तलवार उन्हें
खा खा कर सेर हो जाएगी, और उन का ख़ून पी पी
कर उस की प्यास बुझेगी। क्यूँकि शिमाल में दरया-ए-
फ़ुरात के किनारे उन्हें क़ादिर-ए-मुतलक़, रब्ब-उल-
अफ़्वाज को क़ुर्बान किया जाएगा।

11 ऐ कुंवारी मिस्र बेटी, मुल्क-ए-जिलिआद में जा
कर अपने ज़ख़्मों के लिए बल्सान ख़रीद ले। लेकिन
क्या फ़ाइदा? ख़्वाह तू कितनी दवाई क्यूँ न इस्तेमाल
करे तेरी चोटें भर ही नहीं सकतीं! 12 तेरी शर्मिन्दगी
की ख़बर दीगर अक़्वाम में फैल गई है, तेरी चीख़ें
पूरी दुनिया में गूँज रही हैं। क्यूँकि तेरे सूरमे एक दूसरे
से ठोकर खा कर गिर गए हैं।"

शाह-ए-बाबल के मिस्र में घुस आने की पेशगोई

13 जब शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र मिस्र पर हम्ला
करने आया तो रब इस के बारे में यरमियाह से
हमकलाम हुआ,

14 "मिस्री शहरों मिज्दाल, मेम्फ़िस और तह्फ़न्हीस
में एलान करो, 'जंग की तय्यारियाँ करके लड़ने के
लिए खड़े हो जाओ! क्यूँकि तलवार तुम्हारे आस-
पास सब कुछ खा रही है।'

15 ऐ मिस्र, तेरे सूरमाओं को ख़ाक में क्यूँ मिलाया
गया है? वह खड़े नहीं रह सकते, क्यूँकि रब ने उन्हें
दबा दिया है। 16 उस ने मुतअद्दिद अफ़राद को ठोकर
खाने दिया, और वह एक दूसरे पर गिर गए। उन्हों ने
कहा, 'आओ, हम अपनी ही क़ौम और अपने वतन
में वापस चले जाएँ जहाँ ज़ालिम की तलवार हम तक
नहीं पहुँच सकती।' 17 वहाँ वह पुकार उठे, 'मिस्र का
बादशाह शोर तो बहुत मचाता है लेकिन इस के पीछे
कुछ भी नहीं। जो सुनहरा मौक़ा उसे मिला वह जाता
रहा है'।"

18 दुनिया का बादशाह जिस का नाम रब्ब-उल-
अफ़्वाज है फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम, जो
तुम पर हम्ला करने आ रहा है वह दूसरों से उतना बड़ा
है जितना तबूर दीगर पहाड़ों से और कर्मिल समुन्दर
से ऊँचा है। 19 ऐ मिस्र के बाशिन्दो, अपना माल-
ओ-अस्बाब बांध कर जिलावतन होने की तय्यारियाँ
करो। क्यूँकि मेम्फ़िस मिस्मार हो कर नज़र-ए-आतिश
हो जाएगा। उस में कोई नहीं रहेगा।

20 मिस्र ख़ूबसूरत सी जवान गाय है, लेकिन शिमाल
से मोहलिक मक्खी आ कर उस पर धावा बोल
रही है। हाँ, वह आ रही है। 21 मिस्री फ़ौज के भाड़े
के फ़ौजी मोटे-ताज़े बछड़े हैं, लेकिन वह भी मुड़
कर फ़रार हो जाएंगे। एक भी क़ाइम नहीं रहेगा।
क्यूँकि आफ़त का दिन उन पर आने वाला है, वह
वक़्त जब उन्हें पूरी सज़ा मिलेगी। 22 मिस्र साँप की
तरह फुंकारते हुए पीछे हट जाएगा जब दुश्मन के
फ़ौजी पूरे ज़ोर से उस पर हम्ला करेंगे, जब वह
लक्कड़हारों की तरह अपनी कुल्हाड़ियाँ पकड़े हुए
उस पर टूट पड़ेंगे।" 23 रब फ़रमाता है, "तब वह
मिस्र का जंगल काट डालेंगे, गो वह कितना घना
क्यूँ न हो। क्यूँकि उन की तादाद टिड्डियों से ज़्यादा
होगी बल्कि वह अनगिनत होंगे। 24 मिस्र बेटी की
बेइज़्ज़ती की जाएगी, उसे शिमाली क़ौम के हवाले
किया जाएगा।"

25 रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "मैं थीबस शहर के देवता आमून,
फ़िरऔन और तमाम मिस्र को उस के देवताओं और
बादशाहों समेत सज़ा दूँगा। हाँ, मैं फ़िरऔन और उस

पर एतिमाद रखने वाले तमाम लोगों की अदालत
करूँगा।” 26 रब फ़रमाता है, “मैं उन्हें उन के जानी
दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, और वह शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र और उस के अफ़सरों के क़ाबू में आ
जाएंगे। लेकिन बाद में मिस्र पहले की तरह दुबारा
आबाद हो जाएगा।
27 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, ऐ याक़ूब मेरे ख़ादिम,
ख़ौफ़ मत खा! ऐ इस्राईल, हौसला मत हार! देख, मैं
तुझे दूरदराज़ मुल्क से छुटकारा दूँगा। तेरी औलाद
को मैं उस मुल्क से नजात दूँगा जहाँ उसे जिलावतन
किया गया है। फिर याक़ूब वापस आ कर आराम-
ओ-सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारेगा। कोई नहीं होगा जो
उसे हैबतज़दा करे।” 28 रब फ़रमाता है, “ऐ याक़ूब
मेरे ख़ादिम, ख़ौफ़ न खा, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं
उन तमाम क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा जिन
में मैं ने तुझे मुन्तशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस
तरह सफ़्हा-ए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं
मुनासिब हद तक तेरी तम्बीह करूँगा, क्यूँकि मैं तुझे
सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ सकता।”

फ़िलिस्तियों को सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटाया जाएगा

47 1 फ़िरऔन के ग़ज़्ज़ा शहर पर हम्ला करने
से पहले यरमियाह नबी पर फ़िलिस्तियों के
बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,
2 “रब फ़रमाता है कि शिमाल से पानी आ रहा है
जो सैलाब बन कर पूरे मुल्क को ग़र्क़ कर देगा। पूरा
मुल्क शहरों और बाशिन्दों समेत उस में डूब जाएगा।
लोग चीख़ उठेंगे, और मुल्क के तमाम बाशिन्दे आह-
ओ-ज़ारी करेंगे। 3 क्यूँकि सरपट दौड़ते हुए घोड़ों
की टापें सुनाई देंगी, दुश्मन के रथों का शोर और
पहियों की गड़गड़ाहट उन के कानों तक पहुँचेगी।
बाप ख़ौफ़ज़दा हो कर यूँ साकित हो जाएंगे कि वह
अपने बच्चों की मदद करने के लिए पीछे भी देख नहीं
सकेंगे। 4 क्यूँकि वह दिन आने वाला है जब तमाम
फ़िलिस्तियों को नेस्त-ओ-नाबूद किया जाएगा ताकि
सूर और सैदा के आख़िरी मदद करने वाले भी ख़त्म
हो जाएँ। क्यूँकि रब फ़िलिस्तियों को सफ़्हा-ए-हस्ती
से मिटाने वाला है, जज़ीरा-ए-क्रेते के उन बचे हुओं
को जो यहाँ आ कर आबाद हुए हैं।
5 ग़ज़्ज़ा बेटी मातम के आलम में अपना सर
मुंडवाएगी, अस्क़लून शहर मिस्मार हो जाएगा। ऐ
मैदानी इलाक़े के बचे हुए लोगो, तुम कब तक अपनी
जिल्द को ज़ख़्मी करते रहोगे? 6 ‘हाय, ऐ रब की
तलवार, क्या तू कभी नहीं आराम करेगी? दुबारा
अपने मियान में छुप जा! ख़ामोश हो कर आराम
कर!’ 7 लेकिन वह किस तरह आराम कर सकती
है जब रब ने ख़ुद उसे चलाया है, जब उसी ने उसे
अस्क़लून और साहिली इलाक़े पर धावा बोलने का
हुक्म दिया है?”

मोआब के अन्जाम की पेशगोई

48 1 मोआब के बारे में रब्ब-उल-अफ़्वाज जो
इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है,
“नबू शहर पर अफ़्सोस, क्यूँकि वह तबाह हो गया
है। दुश्मन ने क़िर्यताइम की बेहुरमती करके उस पर
क़ब्ज़ा कर लिया है। चटान के क़िले की रुस्वाई हो
गई, वह पाश पाश हो गया है। 2 अब से कोई मोआब
की तारीफ़ नहीं करेगा। हस्बोन में आदमी उस की
शिकस्त की साज़िशें करके कह रहे हैं, आओ, हम
मोआबी क़ौम को नेस्त-ओ-नाबूद करें। ‘ऐ मदमीन,
तू भी तबाह हो जाएगा, तलवार तेरे भी पीछे पड़
जाएगी।’
3 सुनो! होरोनाइम से चीख़ें बुलन्द हो रही हैं।
तबाही और बड़ी शिकस्त का शोर मच रहा है।
4 मोआब चूर चूर हो गया है, उस के बच्चे ज़ोर से
चिल्ला रहे हैं। 5 लोग रोते रोते लूहीत की तरफ़ चढ़
रहे हैं। होरोनाइम की तरफ़ उतरते रास्ते पर शिकस्त
की आह-ओ-ज़ारी सुनाई दे रही है। 6 भाग कर अपनी
जान बचाओ! रेगिस्तान में झाड़ी की मानिन्द बन
जाओ।
7 चूँकि तुम मोआबियों ने अपनी कामयाबियों और
दौलत पर भरोसा रखा, इस लिए तुम भी क़ैद में

जाओगे। तुम्हारा देवता कमोस भी अपने पुजारियों
और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा। 8 तबाह
करने वाला हर शहर पर हम्ला करेगा, एक भी नहीं
बचेगा। जिस तरह रब ने फ़रमाया है, वादी भी तबाह
हो जाएगी और मैदान-ए-मुर्तफ़ा भी। 9 मोआब पर
नमक डाल दो, क्यूँकि वह मिस्मार हो जाएगा। उस
के शहर वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएंगे, और उन में
कोई नहीं बसेगा।

10 उस पर लानत जो सुस्ती से रब का काम
करे! उस पर लानत जो अपनी तलवार को ख़ून
बहाने से रोक ले! 11 अपनी जवानी से ले कर आज
तक मोआब आराम-ओ-सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारता
आया है, उस मै की मानिन्द जो कभी नहीं छेड़ी गई
और कभी एक बर्तन से दूसरे में उंडेली नहीं गई। इस
लिए उस का मज़ा क़ाइम और ज़ाइक़ा बेहतरीन रहा
है।" 12 लेकिन रब फ़रमाता है, "वह दिन आने वाला
है जब मैं ऐसे आदमियों को उस के पास भेजूँगा जो मै
को बर्तनों से निकाल कर ज़ाए कर देंगे, और बर्तनों
को ख़ाली करने के बाद पाश पाश कर देंगे। 13 तब
मोआब को अपने देवता कमोस पर यूँ शर्म आएगी
जिस तरह इस्राईल को बैत-एल के उस बुत पर शर्म
आई जिस पर वह भरोसा रखता था।

14 हाय, तुम अपने आप पर कितना फ़ख़र करते
हो कि हम सूरमे और ज़बरदस्त जंगजू हैं। 15 लेकिन
दुनिया का बादशाह जिस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज
है फ़रमाता है कि मोआब तबाह हो जाएगा, और
दुश्मन उस के शहरों में घुस आएगा। उस के बेहतरीन
जवान क़त्ल-ओ-ग़ारत की ज़द में आ कर हलाक हो
जाएंगे।

मोआब की ताक़त टूट गई है

16 मोआब का अन्जाम क़रीब ही है, आफ़त उस पर
नाज़िल होने वाली है। 17 ऐ पड़ोस में बसने वालो,
उस पर मातम करो! जितने उस की शुहरत जानते
हो आह-ओ-ज़ारी करो। बोलो, 'हाय, मोआब का
ज़ोरदार असा-ए-शाही टूट गया है, उस की शान-ओ-
शौकत की अलामत ख़ाक में मिलाई गई है।'

18 ऐ दीबोन बेटी, अपने शानदार तख़्त पर से उतर
कर प्यासी ज़मीन पर बैठ जा। क्यूँकि मोआब को
तबाह करने वाला तेरे ख़िलाफ़ भी चढ़ आएगा, वह
तेरे क़िलाबन्द शहरों को भी मिस्मार करेगा। 19 ऐ
अरोईर की रहने वाली, सड़क के किनारे खड़ी हो
कर गुज़रने वालों पर ग़ौर कर! अपनी जान बचाने
वालों से पूछ ले कि क्या हुआ है। 20 तब तुझे जवाब
मिलेगा, 'मोआब रुसवा हुआ है, वह पाश पाश हो
गया है। बुलन्द आवाज़ से वावैला करो! दरया-ए-
अर्नोन के किनारे एलान करो कि मोआब ख़त्म है।'

21 मैदान-ए-मुर्तफ़ा पर अल्लाह की अदालत नाज़िल
हुई है। हौलून, यहज़, मिफ़ात, 22 दीबोन, नबू, बैत-
दिब्लाताइम, 23 क़िर्यताइम, बैत-जमूल, बैत-मऊन,
24 क़रियोत और बुस्रा, ग़रज़ मोआब के तमाम शहरों
की अदालत हुई है, ख़्वाह वह दूर हों या क़रीब।"

25 रब फ़रमाता है, "मोआब की ताक़त टूट गई है,
उस का बाज़ू पाश पाश हो गया है। 26 उसे मै पिला
पिला कर मत्वाला करो, वह अपनी क़ै में लोट-पोट
हो कर सब के लिए मज़ाक़ का निशाना बन जाए।
क्यूँकि वह मग़रूर हो कर रब के ख़िलाफ़ खड़ा हो
गया है।

27 तुम मोआबियों ने इस्राईल को अपने मज़ाक़ का
निशाना बनाया था। तुम यूँ उसे गालियाँ देते रहे जैसे
उसे चोरी करते वक़्त पकड़ा गया हो। 28 लेकिन
अब तुम्हारी बारी आ गई है। अपने शहरों को छोड़
कर चटानों में जा बसो! कबूतर बन कर चटानों की
दराड़ों में अपने घोंसले बनाओ।

29 हम ने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है,
क्यूँकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर, घमंडी,
ख़ुदपसन्द और अनापरस्त है।"

30 रब फ़रमाता है, "मैं उस के तकब्बुर से वाक़िफ़
हूँ। लेकिन उस की डींगें अबस हैं, उन के पीछे कुछ
नहीं है। 31 इस लिए मैं मोआब पर आह-ओ-ज़ारी कर
रहा, तमाम मोआब के सबब से चिल्ला रहा हूँ। क़ीर-

हरासत के बाशिन्दों का अन्जाम देख कर मैं आहें
भर रहा हूँ। 32 ऐ सिब्माह की अंगूर की बेल, याज़ेर
की निस्बत मैं कहीं ज़्यादा तुझ पर मातम कर रहा हूँ।
तेरी कोंपलें याज़ेर तक फैली हुई थीं बल्कि समुन्दर
को पार भी करती थीं। लेकिन अब तबाह करने वाला
दुश्मन तेरे पके हुए अंगूरों और मौसम-ए-गर्मा के फल
पर टूट पड़ा है। 33 अब ख़ुशी-ओ-शादमानी मोआब
के बाग़ों और खेतों से जाती रही है। मैं ने अंगूर का
रस निकालने का काम रोक दिया है। कोई ख़ुशी के
नारे लगा लगा कर अंगूर को पाँओ तले नहीं रौंदता।
शोर तो मच रहा है, लेकिन ख़ुशी के नारे बुलन्द नहीं
हो रहे बल्कि जंग के।

34 हस्बोन में लोग मदद के लिए पुकार रहे हैं, उन
की आवाज़ इलीआली और यहज़ तक सुनाई दे रही
है। इसी तरह ज़ुग़र की चीख़ें होरोनाइम और इज्लत-
शलीशियाह तक पहुँच गई हैं। क्यूँकि निम्रीम का पानी
भी ख़ुश्क हो जाएगा।" 35 रब फ़रमाता है, "मोआब
में जो ऊँची जगहों पर चढ़ कर अपने देवताओं को
बख़ूर और बाक़ी क़ुर्बानियाँ पेश करते हैं उन का मैं
ख़ातमा कर दूँगा।

36 इस लिए मेरा दिल बाँसरी के मातमी सुर निकाल
कर मोआब और क़ीर-हरासत के लिए नोहा कर रहा
है। क्यूँकि उन की हासिलशुदा दौलत जाती रही है।
37 हर सर गंजा, हर दाढ़ी मुंडवाई गई है। हर हाथ की
जिल्द को ज़ख़्मी कर दिया गया है, हर कमर टाट से
मुलब्बस है। 38 मोआब की तमाम छतों पर और उस
के चौकों में आह-ओ-ज़ारी बुलन्द हो रही है।"

क्यूँकि रब फ़रमाता है, "मैं ने मोआब को बेकार
मिट्टी के बर्तन की तरह तोड़ डाला है। 39 हाय,
मोआब पाश पाश हो गया है! लोग ज़ार-ओ-क़तार
रो रहे हैं, और मोआब ने शर्म के मारे अपना मुँह ढाँप
लिया है। वह मज़ाक़ का निशाना बन गया है, उसे
देख कर तमाम पड़ोसियों के रोंगटे खड़े हो गए हैं।"

मोआब रब के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है

40 रब फ़रमाता है, "वह देखो! दुश्मन उक़ाब की
तरह मोआब पर झपट्टा मारता है। अपने परों को फैला
कर वह पूरे मुल्क पर साया डालता है। 41 क़रियोत
क़िलों समेत उस के क़ब्ज़े में आ गया है। उस दिन
मोआबी सूरमाओं का दिल दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगा। 42 क्यूँकि
मोआबी क़ौम सफ़्हा-ए-हस्ती से मिट जाएगी, इस
लिए कि वह मग़रूर हो कर रब के ख़िलाफ़ खड़ी
हो गई है।

43 ऐ मोआबी क़ौम, दहशत, गढ़ा और फंदा तेरे
नसीब में हैं।" 44 क्यूँकि रब फ़रमाता है, "जो दहशत
से भाग कर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो
गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फंस जाएगा। क्यूँकि
मैं मोआब पर उस की अदालत का साल लाऊँगा।

45 पनाहगुज़ीन थकेहारे हस्बोन के साय में रुक
जाते हैं। लेकिन अफ़्सोस, हस्बोन से आग निकल
आई है और सीहोन बादशाह के शहर में से शोला
भड़क उठा है जो मोआब की पेशानी को और शोर
मचाने वालों के चाँदों को नज़र-ए-आतिश करेगा।
46 ऐ मोआब, तुझ पर अफ़्सोस! कमोस देवता के
परस्तार नेस्त-ओ-नाबूद हैं, तेरे बेटे-बेटियाँ क़ैदी बन
कर जिलावतन हो गए हैं।

47 लेकिन आने वाले दिनों में मैं मोआब को बहाल
करूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

यहाँ मोआब पर अदालत का फ़ैसला इख़तिताम
पर पहुँच गया है।

अम्मोनियों की अदालत

49 1 अम्मोनियों के बारे में रब फ़रमाता है,
"क्या इस्राईल की कोई औलाद नहीं,
कोई वारिस नहीं जो जद के क़बाइली इलाक़े में
रह सके? मलिक देवता के परस्तारों ने उस पर क्यूँ
क़ब्ज़ा किया है? क्या वजह है कि यह लोग जद के
शहरों में आबाद हो गए हैं?" 2 चुनाँचे रब फ़रमाता है,

"वह वक़्त आने वाला है कि मेरे हुक्म पर अम्मोनी
दार-उल-हकूमत रब्बा के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाए
जाएंगे। तब वह मल्बे का ढेर बन जाएगा, और गिर्द-
ओ-नवाह की आबादियाँ नज़र-ए-आतिश हो जाएँगी।
तब इस्राईल उन्हें मुल्क-ब-दर करेगा जिन्हों ने उसे
मुल्क-ब-दर किया था।" यह रब का फ़रमान है।
3 "ऐ हस्बोन, वावैला कर, क्यूँकि अई शहर बर्बाद
हुआ है। ऐ रब्बा की बेटियो, मदद के लिए चिल्लाओ!
टाट ओढ़ कर मातम करो! फ़सील के अन्दर बेचैनी
से इधर उधर फिरो! क्यूँकि मलिक देवता अपने
पुजारियों और बुज़ुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा।
4 ऐ बेवफ़ा बेटी, तू अपनी ज़रख़ेज़ वादियों पर इतना
फ़ख़र क्यूँ करती है? तू अपने माल-ओ-दौलत पर
भरोसा करके शेख़ी मारती है कि अब मुझ पर
कोई हम्ला नहीं करेगा।" 5 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-
उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "मैं तमाम पड़ोसियों की
तरफ़ से तुझ पर दहशत छा जाने दूँगा। तुम सब
को चारों तरफ़ मुन्तशिर कर दिया जाएगा, और तेरे
पनाहगुज़ीनों को कोई जमा नहीं करेगा।
6 लेकिन बाद में मैं अम्मोनियों को बहाल करूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

अदोम की अदालत

7 रब्ब-उल-अफ़्वाज अदोम के बारे में फ़रमाता है,
"क्या तेमान में हिक्मत का नाम-ओ-निशान नहीं रहा?
क्या दानिशमन्द सहीह मश्वरा नहीं दे सकते? क्या उन
की दानाई बेकार हो गई है?
8 ऐ ददान के बाशिन्दो, भाग कर हिज्रत करो, ज़मीन
के अन्दर छुप जाओ। क्यूँकि मैं एसौ की औलाद पर
आफ़त नाज़िल करता हूँ, मेरी सज़ा का दिन क़रीब
आ गया है। 9 ऐ अदोम, अगर तू अंगूर का बाग़ होता
और मज़दूर फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा बहुत
उन के पीछे रह जाता। अगर डाकू रात के वक़्त तुझे
लूट लेते तो वह सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठा
कर ले जा सकते हैं। लेकिन तेरा अन्जाम इस से कहीं
ज़्यादा बुरा होगा। 10 क्यूँकि मैं ने एसौ को नंगा करके
उस की तमाम छुपने की जगहें ढूँड निकाली हैं। वह
कहीं भी छुप नहीं सकेगा। उस की औलाद, भाई
और हमसाय हलाक हो जाएंगे, एक भी बाक़ी नहीं
रहेगा। 11 अपने यतीमों को पीछे छोड़ दे, क्यूँकि मैं
उन की जान को बचाए रखूँगा। तुम्हारी बेवाएँ भी
मुझ पर भरोसा रखें।"
12 रब फ़रमाता है, "जिन्हें मेरे ग़ज़ब का प्याला पीने
का फ़ैसला नहीं सुनाया गया था उन्हें भी पीना पड़ा।
तो फिर तेरी जान किस तरह बचेगी? नहीं, तू यक़ीनन
सज़ा का प्याला पी लेगा।" 13 रब फ़रमाता है, "मेरे
नाम की क़सम, बुस्रा शहर गिर्द-ओ-नवाह के तमाम
शहरों समेत अबदी खंडरात बन जाएगा। उसे देख
कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह उसे
लान-तान करेंगे। लानत करने वाला अपने दुश्मन के
लिए बुस्रा ही का सा अन्जाम चाहेगा।"
14 मैं ने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, "एक क़ासिद
को अक़्वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे,
'जमा हो कर अदोम पर हम्ला करने के लिए निकलो!
उस से लड़ने के लिए उठो!'
15 अब मैं तुझे छोटा बना दूँगा, एक ऐसी क़ौम जिसे
दीगर लोग हक़ीर जानेंगे। 16 माज़ी में दूसरे तुझ से
दहशत खाते थे, लेकिन इस बात ने और तेरे ग़ुरूर
ने तुझे फ़रेब दिया है। बेशक तू चटानों की दराड़ों में
बसेरा करता है, और पहाड़ी बुलन्दियाँ तेरे क़ब्ज़े में
हैं। लेकिन ख़्वाह तू अपना घोंसला उक़ाब की सी
ऊँची जगहों पर क्यूँ न बनाए तो भी मैं तुझे वहाँ से
उतार कर ख़ाक में मिला दूँगा।" यह रब का फ़रमान
है।
17 "मुल्क-ए-अदोम यूँ बर्बाद हो जाएगा कि वहाँ
से गुज़रने वालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उस के
ज़ख़्मों को देख कर वह 'तौबा तौबा' कहेंगे।" 18 रब
फ़रमाता है, "उस का अन्जाम सदूम, अमूरा और
उन के पड़ोसी शहरों की मानिन्द होगा जिन्हें अल्लाह
ने उलटा कर नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया। वहाँ कोई
नहीं बसेगा। 19 जिस तरह शेरबबर यर्दन के जंगल
से निकल कर शादाब चरागाहों में चरने वाली भेड़-

बकरियों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं अचानक
अदोम पर हम्ला करके उसे उस के अपने मुल्क से
भगा दूँगा। तब वह जिसे मैं ने मुक़र्रर किया है अदोम
पर हुकूमत करेगा। क्यूँकि कौन मेरी मानिन्द है?
कौन मुझ से जवाब तलब कर सकता है? कौन सा
गल्लाबान मेरा मुक़ाबला कर सकता है?"
20 चुनाँचे अदोम पर रब का फ़ैसला सुनो! तेमान के
बाशिन्दों के लिए उस के मन्सूबे पर ध्यान दो! दुश्मन
पूरे रेवड़ को सब से नन्हे बच्चों से ले कर बड़ों तक
घसीट कर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरान-ओ-
सुन्सान हो जाएगी। 21 अदोम इतने धड़ाम से गिर
जाएगा कि ज़मीन थरथरा उठेगी। लोगों की चीख़ें
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम तक सुनाई देंगी। 22 वह देखो! दुश्मन
उक़ाब की तरह उड़ कर अदोम पर झपट्टा मारता है।
वह अपने परों को फैला कर बुस्रा पर साया डालता
है। उस दिन अदोमी सूरमाओं का दिल दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगा।

दमिश्क़ की अदालत

23 रब दमिश्क़ के बारे में फ़रमाता है, "हमात और
अर्फ़ाद शर्मिन्दा हो गए हैं। बुरी ख़बरें सुन कर वह
हिम्मत हार गए हैं। परेशानी ने उन्हें उस मुतलातिम
समुन्दर जैसा बेचैन कर दिया है जो थम नहीं सकता।
24 दमिश्क़ हिम्मत हार कर भागने के लिए मुड़ गया
है। दह्शत उस पर छा गई है, और वह दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला औरत की तरह तड़प रहा है।
25 हाय, दमिश्क़ को तर्क किया गया है! जिस
मश्हूर शहर से मेरा दिल लुत्फ़अन्दोज़ होता था
वह वीरान-ओ-सुन्सान है।" 26 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "उस दिन उस के जवान आदमी गलियों
में गिर कर रह जाएंगे, उस के तमाम फ़ौजी हलाक
हो जाएंगे। 27 मैं दमिश्क़ की फ़सील को आग लगा
दूँगा जो फैलते फैलते बिन-हदद बादशाह के महलों
को भी अपनी लपेट में ले लेगी।"

बदू क़बीलों की अदालत

28 ज़ैल में क़ीदार और हसूर के बदू क़बीलों
के बारे में कलाम दर्ज है। बाद में शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र ने उन्हें शिकस्त दी। रब फ़रमाता है,
"उठो! क़ीदार पर हम्ला करो! मशरिक़ में बसने
वाले बदू क़बीलों को तबाह करो! 29 तुम उन के
ख़ैमों, भेड़-बकरियों और ऊँटों को छीन लोगे, उन के
ख़ैमों के पर्दों और बाक़ी सामान को लूट लोगे। चीख़ें
सुनाई देंगी, 'हाय, चारों तरफ़ दह्शत ही दह्शत'!"
30 रब फ़रमाता है, "ऐ हसूर में बसने वाले क़बीलो,
जल्दी से भाग जाओ, ज़मीन की दराड़ों में छुप
जाओ! क्यूँकि शाह-ए-बाबल ने तुम पर हम्ला करने
का फ़ैसला करके तुम्हारे ख़िलाफ़ मन्सूबा बांध लिया
है।" 31 रब फ़रमाता है, "ऐ बाबल के फ़ौजियो,
उठ कर उस क़ौम पर हम्ला करो जो अलाहिदगी में
पुरसुकून और मह्फ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारती है, जिस के
न दरवाज़े, न कुंडे हैं। 32 उन के ऊँट और बड़े बड़े
रेवड़ लूट का माल बन जाएंगे। क्यूँकि मैं रेगिस्तान
के किनारे पर रहने वाले इन क़बीलों को चारों
तरफ़ मुन्तशिर कर दूँगा। उन पर चारों तरफ़ से
आफ़त आएगी।" यह रब का फ़रमान है। 33 "हसूर
हमेशा तक वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा, उस में कोई
नहीं बसेगा। गीदड़ ही उस में अपने घर बना लेंगे।"

मुल्क-ए-ऐलाम की अदालत

34 शाह-ए-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत के
इब्तिदाई दिनों में रब यरमियाह नबी से हमकलाम
हुआ। पैग़ाम ऐलाम के मुताल्लिक़ था।
35 "रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं ऐलाम की
कमान को तोड़ डालता हूँ, उस हथियार को जिस
पर ऐलाम की ताक़त मब्नी है। 36 आसमान की
चारों सिम्तों से मैं ऐलामियों के ख़िलाफ़ तेज़ हवाएँ
चलाऊँगा जो उन्हें उड़ा कर चारों तरफ़ मुन्तशिर
कर देंगी। कोई ऐसा मुल्क नहीं होगा जिस तक
ऐलामी जिलावतन नहीं पहुँचेंगे।' 37 रब फ़रमाता है,

‘मैं ऐलाम को उस के जानी दुश्मनों के सामने पाश
पाश कर दूँगा। मैं उन पर आफ़त लाऊँगा, मेरा सख़्त
क़हर उन पर नाज़िल होगा। जब तक वह नेस्त न हों
मैं तलवार को उन के पीछे चलाता रहूँगा। 38 तब मैं
ऐलाम में अपना तख़्त खड़ा करके उस के बादशाह
और बुज़ुर्गों को तबाह कर दूँगा।’ यह रब का फ़रमान
है।

39 लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, ‘आने वाले दिनों
में मैं ऐलाम को बहाल करूँगा’।”

बाबल की अदालत

50 1 मुल्क-ए-बाबल और उस के दार-उल-
हकूमत बाबल के बारे में रब का कलाम
यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ,

2 “अक़्वाम के सामने एलान करो, हर जगह इत्तिला
दो! झंडा गाड़ कर कुछ न छुपाओ बल्कि सब को
साफ़ बताओ, ‘बाबल शहर दुश्मन के क़ब्ज़े में आ
गया है! बेल देवता की बेहुरमती हुई है, मर्दुक देवता
पाश पाश हो गया है। बाबल के तमाम देवताओं की
बेहुरमती हुई है, तमाम बुत चिकनाचूर हो गए हैं!’
3 क्यूँकि शिमाल से एक क़ौम बाबल पर चढ़ आई है
जो पूरे मुल्क को बर्बाद कर देगी। इन्सान और हैवान
सब हिज्रत कर जाएंगे, मुल्क में कोई नहीं रहेगा।”

4 रब फ़रमाता है, “जब यह वक़्त आएगा तो
इस्राईल और यहूदाह के लोग मिल कर अपने वतन में
वापस आएँगे। तब वह रोते हुए रब अपने ख़ुदा को
तलाश करने आएँगे। 5 वह सिय्यून का रास्ता पूछ
पूछ कर अपना रुख़ उस तरफ़ कर लेंगे और कहेंगे,
‘आओ, हम रब के साथ लिपट जाएँ, हम उस के
साथ अबदी अह्द बांध लें जो कभी न भुलाया जाए।’
6 मेरी क़ौम की हालत गुमशुदा भेड़-बकरियों की
मानिन्द थी। क्यूँकि उन के गल्लाबानों ने उन्हें ग़लत
राह पर ला कर फ़रेबदिह पहाड़ों पर आवारा फिरने
दिया था। यूँ पहाड़ों पर इधर उधर घूमते घूमते वह
अपनी आरामगाह भूल गए थे। 7 जो भी उन को पाते
वह उन्हें पकड़ कर खा जाते थे। उन के मुख़ालिफ़
कहते थे, ‘इस में हमारा क्या क़ुसूर है? उन्हों ने तो रब
का गुनाह किया है, गो वह उन की हक़ीक़ी चरागाह
है और उन के बापदादा उस पर उम्मीद रखते थे।’

बाबल से हिज्रत करो!

8 ऐ मेरी क़ौम, मुल्क-ए-बाबल और उस के दार-
उल-हकूमत से भाग निकलो! उन बकरों की मानिन्द
बन जाओ जो रेवड़ की राहनुमाई करते हैं। 9 क्यूँकि
मैं शिमाली मुल्क में बड़ी क़ौमों के इत्तिहाद को
बाबल पर हम्ला करने पर उभारूँगा, जो उस के
ख़िलाफ़ सफ़आरा हो कर उस पर क़ब्ज़ा करेगा।
दुश्मन के तीरअन्दाज़ इतने माहिर होंगे कि हर तीर
निशाने पर लग जाएगा।” 10 रब फ़रमाता है, “बाबल
को यूँ लूट लिया जाएगा कि तमाम लूटने वाले सेर
हो जाएंगे।

11 ऐ मेरे मौरूसी हिस्से को लूटने वालो, बेशक तुम
इस वक़्त शादियाना बजा कर ख़ुशी मनाते हो। बेशक
तुम गाहते हुए बछड़ों की तरह उछलते कूदते और
घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो। 12 लेकिन आइन्दा
तुम्हारी माँ बेहद शर्मिन्दा हो जाएगी, जिस ने तुम्हें
जन्म दिया वह रुसवा हो जाएगी। आइन्दा बाबल
सब से ज़लील क़ौम होगी, वह ख़ुश्क और वीरान
रेगिस्तान ही होगी। 13 जब रब का ग़ज़ब उन पर
नाज़िल होगा तो वहाँ कोई आबाद नहीं रहेगा बल्कि
मुल्क सरासर वीरान-ओ-सुन्सान रहेगा। बाबल से
गुज़रने वालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, उस के ज़ख़्मों
को देख कर सब ‘तौबा तौबा’ कहेंगे।

14 ऐ तीरअन्दाज़ो, बाबल शहर को घेर कर उस पर
तीर बरसाओ! तमाम तीर इस्तेमाल करो, एक भी
बाक़ी न रहे, क्यूँकि उस ने रब का गुनाह किया है।
15 चारों तरफ़ उस के ख़िलाफ़ जंग के नारे लगाओ!
देखो, उस ने हथियार डाल दिए हैं। उस के बुर्ज गिर
गए, उस की दीवारें मिस्मार हो गई हैं। रब इन्तिक़ाम
ले रहा है, चुनाँचे बाबल से ख़ूब बदला लो। जो
सुलूक उस ने दूसरों के साथ किया, वही उस के
साथ करो। 16 बाबल में जो बीज बोते और फ़सल के

वक़्त दरान्ती चलाते हैं उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दो। उस वक़्त शहर के परदेसी मोहलिक तलवार से भाग कर अपने अपने वतन में वापस चले जाएंगे।

17 इस्राईली क़ौम शेरबबरों के हमले से बिखरे हुए रेवड़ की मानिन्द है। क्यूँकि पहले शाह-ए-असूर ने आ कर उसे हड़प कर लिया, फिर शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने उस की हड्डियों को चबा लिया।" 18 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, "पहले मैं ने शाह-ए-असूर को सज़ा दी, और अब मैं शाह-ए-बाबल को उस के मुल्क समेत वही सज़ा दूँगा। 19 लेकिन इस्राईल को मैं उस की अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा, और वह दुबारा कर्मिल और बसन की ढलानों पर चरेगा, वह दुबारा इफ़्राईम और जिलिआद के पहाड़ी इलाक़ों में सेर हो जाएगा।" 20 रब फ़रमाता है, "उन दिनों में जो इस्राईल का क़ुसूर ढूँड निकालने की कोशिश करे उसे कुछ नहीं मिलेगा। यही यहूदाह की हालत भी होगी। उस के गुनाह पाए नहीं जाएंगे, क्यूँकि जिन लोगों को मैं ज़िन्दा छोड़ूँगा उन्हें मैं मुआफ़ कर दूँगा।"

अल्लाह अपने घर का बदला लेता है

21 रब फ़रमाता है, "मुल्क-ए-मराताइम और फ़िक़ोद के बाशिन्दों पर हम्ला करो! उन्हें मारते मारते सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटा दो! जो भी हुक्म मैं ने दिया उस पर अमल करो।

22 मुल्क-ए-बाबल में जंग का शोर-शराबा सुनो! बाबल की हौलनाक शिकस्त देखो! 23 जो पहले तमाम दुनिया का हथोड़ा था उसे तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया गया है। बाबल को देख कर लोगों को सख़्त धच्का लगता है।

24 ऐ बाबल, मैं ने तेरे लिए फंदा लगा दिया, और तुझे पता न चला बल्कि तू उस में फंस गया। चूँकि तू ने रब का मुक़ाबला किया इसी लिए तेरा खोज लगाया गया और तुझे पकड़ा गया।" 25 क़ादिर-ए-मुतलक़ जो रब्ब-उल-अफ़्वाज है फ़रमाता है, "मैं अपना अस्लिहाख़ाना खोल कर अपना ग़ज़ब नाज़िल करने के हथियार निकाल लाया हूँ, क्यूँकि मुल्क-ए-बाबल में उन की अशद्द ज़रूरत है।

26 चारों तरफ़ से बाबल पर चढ़ आओ! उस के अनाज के गोदामों को खोल कर सारे माल का ढेर लगाओ! फिर सब कुछ नेस्त-ओ-नाबूद करो, कुछ बचा न रहे। 27 उस के तमाम बैलों को ज़बह करो! सब क़साई की ज़द में आएँ! उन पर अफ़्सोस, क्यूँकि उन का मुक़र्ररा दिन, उन की सज़ा का वक़्त आ गया है।

28 सुनो! मुल्क-ए-बाबल से बचे हुए पनाहगुज़ीन सिय्यून में बता रहे हैं कि रब हमारे ख़ुदा ने किस तरह इन्तिक़ाम लिया। क्यूँकि अब उस ने अपने घर का बदला लिया है!

29 तमाम तीरअन्दाज़ों को बुलाओ ताकि बाबल पर हम्ला करें! उसे घेर लो ताकि कोई न बचे। उसे उस की हरकतों का मुनासिब अज्र दो! जो बुरा सुलूक उस ने दूसरों के साथ किया वही उस के साथ करो। क्यूँकि उस का रवय्या रब, इस्राईल के क़ुद्दूस के साथ गुस्ताख़ाना था। 30 इस लिए उस के नौजवान गलियों में गिर कर मर जाएंगे, उस के तमाम फ़ौजी उस दिन हलाक हो जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

31 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ गुस्ताख़ शहर, मैं तुझ से निपटने वाला हूँ। क्यूँकि वह दिन आ गया है जब तुझे सज़ा मिलनी है। 32 तब गुस्ताख़ शहर ठोकर खा कर गिर जाएगा, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा। मैं उस के तमाम शहरों में आग लगा दूँगा जो गिर्द-ओ-नवाह में सब कुछ राख कर देगी।"

रब अपनी क़ौम को रिहा करवाता है

33 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "इस्राईल और यहूदाह के लोगों पर ज़ुल्म हुआ है। जिन्हों ने उन्हें असीर करके जिलावतन किया है वह उन्हें रिहा नहीं करना चाहते, उन्हें जाने नहीं देते। 34 लेकिन उन का छुड़ाने वाला क़वी है, उस का नाम रब्ब-उल-अफ़्वाज है। वह ख़ूब लड़ कर उन का मुआमला

दुरुस्त करेगा ताकि मुल्क को आराम-ओ-सुकून मिल
जाए। लेकिन बाबल के बाशिन्दों को वह थरथराने
देगा।”
35 रब फ़रमाता है, “तलवार बाबल की क़ौम पर
टूट पड़े! वह बाबल के बाशिन्दों, उस के बुज़ुर्गों
और दानिशमन्दों पर टूट पड़े! 36 तलवार उस के
झूटे नबियों पर टूट पड़े ताकि बेवुक़ूफ़ साबित हों।
तलवार उस के सूरमाओं पर टूट पड़े ताकि उन पर
दहशत छा जाए। 37 तलवार बाबल के घोड़ों, रथों
और परदेसी फ़ौजियों पर टूट पड़े ताकि वह औरतों
की मानिन्द बन जाएँ। तलवार उस के ख़ज़ानों पर
टूट पड़े ताकि वह छीन लिए जाएँ। 38 तलवार उस
के पानी के ज़ख़ीरों पर टूट पड़े ताकि वह ख़ुश्क हो
जाएँ। क्यूँकि मुल्क-ए-बाबल बुतों से भरा हुआ है,
ऐसे बुतों से जिन के बाइस लोग दीवानों की तरह
फिरते हैं। 39 आख़िर में गलियों में सिर्फ़ रेगिस्तान
के जानवर और जंगली कुत्ते फिरेंगे, वहाँ उक़ाबी
उल्लू बसेंगे। वह हमेशा तक इन्सान की बस्तियों
से महरूम और नस्ल-दर-नस्ल ग़ैरआबाद रहेगा।”
40 रब फ़रमाता है, “उस की हालत सदूम और अमूरा
की सी होगी जिन्हें मैं ने पड़ोस के शहरों समेत उलटा
कर सफ़्हा-ए-हस्ती से मिटा दिया। आइन्दा वहाँ कोई
नहीं बसेगा, कोई नहीं आबाद होगा।” यह रब का
फ़रमान है।

शिमाल से दुश्मन आ रहा है

41 “देखो, शिमाल से फ़ौज आ रही है, एक बड़ी
क़ौम और मुतअद्दिद बादशाह दुनिया की इन्तिहा से
रवाना हुए हैं। 42 उस के ज़ालिम और बेरहम फ़ौजी
कमान और शम्शीर से लेस हैं। जब वह अपने घोड़ों
पर सवार हो कर चलते हैं तो गरजते समुन्दर का सा
शोर बरपा होता है। ऐ बाबल बेटी, वह सब जंग के
लिए तय्यार हो कर तुझ से लड़ने आ रहे हैं। 43 उन
की ख़बर सुनते ही शाह-ए-बाबल हिम्मत हार गया है।
ख़ौफ़ज़दा हो कर वह दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की
तरह तड़पने लगा है।
44 जिस तरह शेरबबर यर्दन के जंगलों से निकल
कर शादाब चरागाहों में चरने वाली भेड़ों पर टूट
पड़ता है उसी तरह मैं बाबल को एक दम उस के
मुल्क से भगा दूँगा। फिर मैं अपने चुने हुए आदमी को
बाबल पर मुक़र्रर करूँगा। क्यूँकि कौन मेरे बराबर
है? कौन मुझ से जवाब तलब कर सकता है? वह
गल्लाबान कहाँ है जो मेरा मुक़ाबला कर सके?”
45 चुनाँचे बाबल पर रब का फ़ैसला सुनो, मुल्क-ए-
बाबल के लिए उस के मन्सूबे पर ध्यान दो! “दुश्मन
पूरे रेवड़ को सब से नन्हे बच्चों से ले कर बड़ों तक
घसीट कर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरान-ओ-
सुन्सान हो जाएगी।
46 जूँ ही नारा बुलन्द होगा कि बाबल दुश्मन के
क़ब्ज़े में आ गया है तो ज़मीन लरज़ उठेगी। तब
मदद के लिए बाबल की चीख़ें दीगर ममालिक तक
गूँजेंगी।”

बाबल का ज़माना ख़त्म है

51 1 रब फ़रमाता है, “मैं बाबल और उस
के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ मोहलिक आँधी
चलाऊँगा। 2 मैं मुल्क-ए-बाबल में ग़ैरमुल्की भेजूँगा
ताकि वह उसे अनाज की तरह फटक कर तबाह
करें। आफ़त के दिन वह पूरे मुल्क को घेरे रखेंगे।
3 तीरअन्दाज़ को तीर चलाने से रोको! फ़ौजी को
ज़िराबक्तर पहन कर लड़ने के लिए खड़े होने न दो!
उन के नौजवानों को ज़िन्दा मत छोड़ना बल्कि फ़ौज
को सरासर नेस्त-ओ-नाबूद कर देना!
4 तब मुल्क-ए-बाबल में हर तरफ़ लाशें नज़र
आएँगी, तलवार के चिरे हुए उस की गलियों में पड़े
रहेंगे। 5 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने इस्राईल और
यहूदाह को अकेला [x]नहीं छोड़ा, उन के ख़ुदा ने उन्हें
तर्क नहीं किया। मुल्क-ए-बाबल का क़ुसूर निहायत

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : रंडवा।

संगीन है, उस ने इस्राईल के क़ुद्दूस का गुनाह किया
है। 6 बाबल से भाग निकलो! दौड़ कर अपनी जान
बचाओ, वर्ना तुम्हें भी बाबल के क़ुसूर का अज्र
मिलेगा। क्यूँकि रब के इन्तिक़ाम का वक़्त आ पहुँचा
है, अब बाबल को मुनासिब सज़ा मिलेगी।

7 बाबल रब के हाथ में सोने का प्याला था जिसे उस
ने पूरी दुनिया को पिला दिया। अक़्वाम उस की मै पी
पी कर मत्वाली हो गईं, इस लिए वह दीवानी हो गई
हैं। 8 लेकिन अब यह प्याला अचानक गिर कर टूट
गया है। चुनाँचे बाबल पर आह-ओ-ज़ारी करो! उस
के दर्द और तक्लीफ़ को दूर करने के लिए बल्सान ले
आओ, शायद उसे शिफ़ा मिले। 9 लेकिन लोग कहेंगे,
'हम बाबल की मदद करना चाहते थे, लेकिन उस के
ज़ख़्म भर नहीं सकते। इस लिए आओ, हम उसे छोड़
दें और हर एक अपने अपने मुल्क में जा बसे। क्यूँकि
उस की सख़्त अदालत हो रही है, जितना आसमान
और बादल बुलन्द हैं उतनी ही सख़्त उस की सज़ा
है।'

10 रब की क़ौम बोले, 'रब हमारी रास्ती रौशनी में
लाया है। आओ, हम सिय्यून में वह कुछ सुनाएँ जो
रब हमारे ख़ुदा ने किया है।'

11 तीरों को तेज़ करो! अपना तर्कश उन से भर लो!
रब मादी बादशाहों को हरकत में लाया है, क्यूँकि
वह बाबल को तबाह करने का इरादा रखता है।
रब इन्तिक़ाम लेगा, अपने घर की तबाही का बदला
लेगा। 12 बाबल की फ़सील के ख़िलाफ़ जंग का झंडा
गाड़ दो! शहर के इर्दगिर्द पहरादारी का बन्द-ओ-
बस्त मज़बूत करो, हाँ मज़ीद संत्री खड़े करो। क्यूँकि
रब ने बाबल के बाशिन्दों के ख़िलाफ़ मन्सूबा बांध
कर उस का एलान किया है, और अब वह उसे पूरा
करेगा।

13 ऐ बाबल बेटी, तू गहरे पानी के पास बसती और
निहायत दौलतमन्द हो गई है। लेकिन ख़बरदार! तेरा
अन्जाम क़रीब ही है, तेरी ज़िन्दगी का धागा कट गया
है। 14 रब्ब-उल-अफ़्वाज ने अपने नाम की क़सम खा
कर फ़रमाया है कि मैं तुझे दुश्मनों से भर दूँगा, और
वह टिड्डियों के ग़ोल की तरह पूरे शहर को ढाँप लेंगे।
हर जगह वह तुझ पर फ़त्ह के नारे लगाएँगे।

15 देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को
ख़ल्क़ किया, उसी ने अपनी हिक्मत से दुनिया की
बुन्याद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़
आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 16 उस के
हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते
हैं। वह दुनिया की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता,
बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने
गोदामों से हवा निकलने देता है।

17 तमाम इन्सान अहमक़ और समझ से ख़ाली हैं।
हर सुनार अपने बुतों के बाइस शर्मिन्दा हुआ है। उस
के बुत धोका ही हैं, उन में दम नहीं। 18 वह फ़ुज़ूल
और मज़्हकाख़ेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो
जाएंगे। 19 अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है
इन की मानिन्द नहीं है। वह सब का ख़ालिक़ है,
और इस्राईली क़ौम उस का मौरूसी हिस्सा है। रब्ब-
उल-अफ़्वाज ही उस का नाम है।

अब रब बाबल पर हम्ला करेगा

20 ऐ बाबल, तू मेरा हथोड़ा, मेरा जंगी हथियार था।
तेरे ही ज़रीए मैं ने क़ौमों को पाश पाश कर दिया,
सल्तनतों को ख़ाक में मिला दिया। 21 तेरे ही ज़रीए
मैं ने घोड़ों को सवारों समेत और रथों को रथबानों
समेत पाश पाश कर दिया। 22 तेरे ही ज़रीए मैं ने
मर्दों और औरतों, बुज़ुर्गों और बच्चों, नौजवानों और
कुंवारियों को पारा पारा कर दिया। 23 तेरे ही ज़रीए
मैं ने गल्लाबान और उस के रेवड़, किसान और उस
के बैलों, गवर्नरों और सरकारी मुलाज़िमों को रेज़ा
रेज़ा कर दिया।

24 लेकिन अब मैं बाबल और उस के तमाम
बाशिन्दों को उन की सिय्यून के साथ बदसुलूकी का
पूरा अज्र दूँगा। तुम अपनी आँखों से इस के गवाह
होगे।" यह रब का फ़रमान है।

25 रब फ़रमाता है, "ऐ बाबल, पहले तू मोहलिक
पहाड़ था जिस ने तमाम दुनिया का सत्यानास कर

दिया। लेकिन अब मैं तुझ से निपट लेता हूँ। मैं अपना
हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ा कर तुझे ऊँची ऊँची चटानों से
पटख़ दूँगा। आख़िरकार मल्बे का झुलसा हुआ ढेर
ही बाक़ी रहेगा। 26 तू इतना तबाह हो जाएगा कि तेरे
पत्थर न किसी मकान के कोनों के लिए, न किसी
बुन्याद के लिए इस्तेमाल हो सकेंगे।" यह रब का
फ़रमान है।

27 "आओ, मुल्क में जंग का झंडा गाड़ दो!
अक़्वाम में नरसिंगा फूँक फूँक कर उन्हें बाबल के
ख़िलाफ़ लड़ने के लिए मख़्सूस करो! उस से लड़ने
के लिए अरारात, मिन्नी और अश्कनाज़ की सल्तनतों
को बुलाओ! बाबल से लड़ने के लिए कमाँडर मुक़र्रर
करो। घोड़े भेज दो जो टिड्डियों के हौलनाक ग़ोल की
तरह उस पर टूट पड़ें। 28 अक़्वाम को बाबल से लड़ने
के लिए मख़्सूस करो! मादी बादशाह अपने गवर्नरों,
अफ़सरों और तमाम मुती ममालिक समेत तय्यार हो
जाएँ। 29 ज़मीन लरज़ती और थरथराती है, क्यूँकि
रब का मन्सूबा अटल है, वह मुल्क-ए-बाबल को यूँ
तबाह करना चाहता है कि आइन्दा उस में कोई न
रहे।

30 बाबल के जंगआज़मूदा फ़ौजी लड़ने से बाज़ आ
कर अपने क़िलों में छुप गए हैं। उन की ताक़त जाती
रही है, वह औरतों की मानिन्द हो गए हैं। अब बाबल
के घरों को आग लग गई है, फ़सील के दरवाज़ों
के कुंडे टूट गए हैं। 31 यके बाद दीगरे क़ासिद दौड़
कर शाह-ए-बाबल को इत्तिला देते हैं, 'शहर चारों
तरफ़ से दुश्मन के क़ब्ज़े में है! 32 दरया को पार
करने के तमाम रास्ते उस के हाथ में हैं, सरकंडे का
दलदली इलाक़ा जल रहा है, और फ़ौजी ख़ौफ़ के
मारे बेहिस्स-ओ-हरकत हो गए हैं'।"

33 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है, "फ़सल की कटाई से पहले पहले
गाहने की जगह के फ़र्श को दबा दबा कर मज़बूत
किया जाता है। यही बाबल बेटी की हालत है। फ़सल
की कटाई क़रीब आ गई है, और थोड़ी देर के बाद
बाबल को पाँओ तले ख़ूब दबाया जाएगा।

रब बाबल से यरूशलम का इन्तिक़ाम लेगा

34 सिय्यून बेटी रोती है, 'शाह-ए-बाबल
नबूकद्नज़्ज़र ने मुझे हड़प कर लिया, चूस लिया,
ख़ाली बर्तन की तरह एक तरफ़ रख दिया है। उस ने
अज़दहे की तरह मुझे निगल लिया, अपने पेट को
मेरी लज़ीज़ चीज़ों से भर लिया है। फिर उस ने मुझे
वतन से निकाल दिया।' 35 लेकिन अब सिय्यून की
रहने वाली कहे, 'जो ज़ियादती मेरे साथ हुई वह
बाबल के साथ की जाए। जो क़त्ल-ओ-ग़ारत मुझ
में हुई वह बाबल के बाशिन्दों में मच जाए'!"

36 रब यरूशलम से फ़रमाता है, "देख, मैं ख़ुद तेरे
हक़ में लड़ूँगा, मैं ख़ुद तेरा बदला लूँगा। तब उस
का समुन्दर ख़ुश्क हो जाएगा, उस के चश्मे बन्द हो
जाएंगे। 37 बाबल मल्बे का ढेर बन जाएगा। गीदड़
ही उस में अपना घर बना लेंगे। उसे देख कर गुज़रने
वालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह 'तौबा तौबा'
कह कर आगे निकलेंगे। कोई भी वहाँ नहीं बसेगा।

38 इस वक़्त बाबल के बाशिन्दे शेरबबर की तरह
दहाड़ रहे हैं, वह शेर के बच्चों की तरह ग़ुर्रा रहे हैं।
39 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह अभी मस्त होंगे
कि मैं उन के लिए ज़ियाफ़त तय्यार करूँगा, एक
ऐसी ज़ियाफ़त जिस में वह मत्वाले हो कर ख़ुशी के
नारे मारेंगे, फिर अबदी नींद सो जाएंगे। उस नींद से
वह कभी नहीं उठेंगे। 40 मैं उन्हें भेड़ के बच्चों, मेंढों
और बकरों की तरह क़साई के पास ले जाऊँगा।

41 हाय, बाबल दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!
जिस की तारीफ़ पूरी दुनिया करती थी वह छीन लिया
गया है! अब उसे देख कर क़ौमों के रोंगटे खड़े हो
जाते हैं। 42 समुन्दर बाबल पर चढ़ आया है, उस की
गरजती लहरों ने उसे ढाँप लिया है। 43 उस के शहर
रेगिस्तान बन गए हैं, अब चारों तरफ़ ख़ुश्क और
वीरान बयाबान ही नज़र आता है। न कोई उस में
रहता, न उस में से गुज़रता है।

44 मैं बाबल के देवता बेल को सज़ा दे कर उस
के मुँह से वह कुछ निकाल दूँगा जो उस ने हड़प कर

लिया था। अब से दीगर अक़्वाम जौक़-दर-जौक़ उस
के पास नहीं आएँगी, क्यूँकि बाबल की फ़सील भी
गिर गई है।
45 ऐ मेरी क़ौम, बाबल से निकल आ! हर एक
अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भाग जाए, क्यूँकि
रब का शदीद ग़ज़ब उस पर नाज़िल होने को है।
46 जब अफ़्वाहें मुल्क में फैल जाएँ तो हिम्मत मत
हारना, न ख़ौफ़ खाना। क्यूँकि हर साल कोई और
अफ़्वाह फैलेगी, ज़ुल्म पर ज़ुल्म और हुक्मरान पर
हुक्मरान आता रहेगा। 47 क्यूँकि वह वक़्त क़रीब ही
है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब पूरे मुल्क
की बेहुरमती हो जाएगी, और उस के मक़्तूल उस
के बीच में गिर कर पड़े रहेंगे। 48 तब आसमान-ओ-
ज़मीन और जो कुछ उन में है बाबल पर शादियाना
बजाएंगे। क्यूँकि तबाहकुन दुश्मन शिमाल से उस पर
हम्ला करने आ रहा है।" यह रब का फ़रमान है।
49 "बाबल ने पूरी दुनिया में बेशुमार लोगों को क़त्ल
किया है, लेकिन अब वह ख़ुद हलाक हो जाएगा, इस
लिए कि उस ने इतने इस्राईलियों को क़त्ल किया है।
50 ऐ तलवार से बचे हुए इस्राईलियो, रुके न रहो
बल्कि रवाना हो जाओ! दूरदराज़ मुल्क में रब को
याद करो, यरूशलम का भी ख़याल करो! 51 बेशक
तुम कहते हो, 'हम शर्मिन्दा हैं, हमारी सख़्त रुस्वाई
हुई है, शर्म के मारे हम ने अपने मुँह को ढाँप लिया है।
क्यूँकि परदेसी रब के घर की मुक़द्दसतरीन जगहों में
घुस आए हैं।'
52 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आने वाला
है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब उस के
पूरे मुल्क में मौत के घाट उतरने वालों की आहें सुनाई
देंगी। 53 ख़्वाह बाबल की ताक़त आसमान तक ऊँची
क्यूँ न हो, ख़्वाह वह अपने बुलन्द क़िले को कितना
मज़बूत क्यूँ न करे तो भी वह गिर जाएगा। मैं तबाह
करने वाले फ़ौजी उस पर चढ़ा लाऊँगा।" यह रब का
फ़रमान है।
54 "सुनो! बाबल में चीख़ें बुलन्द हो रही हैं, मुल्क-
ए-बाबल धड़ाम से गिर पड़ा है। 55 क्यूँकि रब बाबल
को बर्बाद कर रहा, वह उस का शोर-शराबा बन्द कर
रहा है। दुश्मन की लहरें मुतलातिम समुन्दर की तरह
उस पर चढ़ रही हैं, उन की गरजती आवाज़ फ़िज़ा
में गूँज रही है। 56 क्यूँकि तबाहकुन दुश्मन बाबल
पर हम्ला करने आ रहा है। तब उस के सूरमाओं
को पकड़ा जाएगा और उन की कमानें टूट जाएँगी।
क्यूँकि रब इन्तिक़ाम का ख़ुदा है, वह हर इन्सान को
उस का मुनासिब अज्र देगा।"
57 दुनिया का बादशाह जिस का नाम रब्ब-उल-
अफ़्वाज है फ़रमाता है, "मैं बाबल के बड़ों को
मत्वाला करूँगा, ख़्वाह वह बुज़ुर्ग, दानिशमन्द,
गवर्नर, सरकारी अफ़्सर या फ़ौजी क्यूँ न हों। तब वह
अबदी नींद सो जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।"
58 रब फ़रमाता है, "बाबल की मोटी मोटी फ़सील
को ख़ाक में मिलाया जाएगा, और उस के ऊँचे ऊँचे
दरवाज़े राख हो जाएंगे। तब यह कहावत बाबल
पर सादिक़ आएगी, 'अक़्वाम की मेहनत-मशक़्क़त
बेफ़ाइदा रही, जो कुछ उन्हों ने बड़ी मुश्किल से
बनाया वह नज़र-ए-आतिश हो गया है'।"

यरमियाह अपना पैग़ाम बाबल भेजता है

59 यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह के चौथे साल में
यरमियाह नबी ने यह कलाम सिरायाह बिन नैरियाह
बिन मह्सियाह के सपुर्द कर दिया जो उस वक़्त
बादशाह के साथ बाबल के लिए रवाना हुआ। सफ़र
का पूरा बन्द-ओ-बस्त सिरायाह के हाथ में था।
60 यरमियाह ने तूमार में बाबल पर नाज़िल होने
वाली आफ़त की पूरी तफ़्सील लिख दी थी। उस के
बाबल के बारे में तमाम पैग़ामात उस में क़लमबन्द
थे। 61 उस ने सिरायाह से कहा, "बाबल पहुँच कर
ध्यान से तूमार की तमाम बातों की तिलावत करें।
62 तब दुआ करें, 'ऐ रब, तू ने एलान किया है कि मैं
बाबल को यूँ तबाह करूँगा कि आइन्दा न इन्सान,
न हैवान उस में बसेगा। शहर अबद तक वीरान-
ओ-सुन्सान रहेगा।' 63 पूरी किताब की तिलावत के
इख़्तिताम पर उसे पत्थर के साथ बांध लें, फिर

दरया-ए-फ़ुरात में फैंक कर 64 बोलें, ‘बाबल का बेड़ा
इस पत्थर की तरह ग़र्क़ हो जाएगा। जो आफ़त मैं उस
पर नाज़िल करूँगा उस से उसे यूँ ख़ाक में मिलाया
जाएगा कि दुबारा कभी नहीं उठेगा। वह सरासर
ख़त्म हो जाएगा’।”

यरमियाह के पैग़ामात यहाँ इख़तिताम पर पहुँच गए
हैं।

शाह-ए-यहूदाह सिदक़ियाह की हुकूमत

52 1 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत
का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमूतल
बिन्त यरमियाह लिब्ना शहर की रहने वाली थी।
2 यहूयक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता
रहा जो रब को नापसन्द था। 3 रब यरूशलम और
यहूदाह के बाशिन्दों से इतना नाराज़ हुआ कि आख़िर
में उस ने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश
हुआ, 4 इस लिए शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र तमाम
फ़ौज अपने साथ ले कर दुबारा यरूशलम पहुँचा
ताकि उस पर हम्ला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की
फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम
दसवें महीने के दसवें दिन [y]शुरू हुआ। पूरे शहर के
इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए। 5 सिदक़ियाह की
हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम क़ाइम रहा।
6 लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और
अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन [z]7 बाबल के फ़ौजियों ने
फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात सिदक़ियाह
अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब
हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह
फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के
साथ मुल्हिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादी-ए-
यर्दन की तरफ़ भागने लगे, 8 लेकिन बाबल की फ़ौज
ने बादशाह का ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के मैदान
में पकड़ लिया। उस के फ़ौजी उस से अलग हो कर
चारों तरफ़ मुन्तशिर हो गए, 9 और वह ख़ुद गिरिफ़्तार
हो गया। फिर उसे मुल्क-ए-हमात के शहर रिब्ला में
शाह-ए-बाबल के पास लाया गया, और वहीं उस ने
सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 10 सिदक़ियाह
के देखते देखते शाह-ए-बाबल ने रिब्ला में उस के
बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उस ने यहूदाह
के तमाम बुज़ुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया।
11 फिर उस ने सिदक़ियाह की आँखें निकलवा कर
उसे पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ लिया और बाबल
ले गया जहाँ वह जीते जी रहा।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

12 शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र की हुकूमत के
19वें साल में बादशाह का ख़ास अफ़्सर नबूज़रादान
यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर
था। पाँचवें महीने के सातवें दिन [a]उस ने आ कर
13 रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम
मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो
गई। 14 उस ने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की पूरी
फ़सील को भी गिरा दिया। 15 फिर नबूज़रादान ने सब
को जिलावतन कर दिया जो यरूशलम में पीछे रह
गए थे। वह भी उन में शामिल थे जो जंग के दौरान
ग़द्दारी करके शाह-ए-बाबल के पीछे लग गए थे।
नबूज़रादान बाक़ीमान्दा कारीगर और ग़रीबों में से
भी कुछ बाबल ले गया। 16 लेकिन उस ने सब से
निचले तब्क़े के बाज़ लोगों को मुल्क-ए-यहूदाह में

---

[y] 15 जन्वरी।

[z] 18 जुलाई।

[a] 17 अगस्त।

छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को
सँभालें।

17 बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जा कर पीतल
के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठाने वाली
हथगाड़ियों और समुन्दर नामी पीतल के हौज़ को
तोड़ दिया और सारा पीतल उठा कर बाबल ले गए।
18 वह रब के घर की ख़िदमत सरअन्जाम देने के लिए
दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे,
बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काओ के कटोरे, प्याले
और पीतल का बाक़ी सारा सामान। 19 ख़ालिस सोने
और चाँदी के बर्तन भी इस में शामिल थे यानी बासन,
जलते हुए कोएले के बर्तन, छिड़काओ के कटोरे,
बालटियाँ, शमादान, प्याले और मै की नज़रें पेश
करने के बर्तन। शाही मुहाफ़िज़ों का यह अफ़्सर सारा
सामान उठा कर बाबल ले गया। 20 जब दोनों सतूनों,
समुन्दर नामी हौज़, हौज़ को उठाने वाले पीतल के
बैलों और बासनों को उठाने वाली हथगाड़ियों का
पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे
तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब
के घर के लिए बनवाई थीं। 21 हर सतून की ऊँचाई
27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट था। दोनों खोखले थे,
और उन की दीवारों की मोटाई 3 इंच थी। 22 उन के
बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े सात फ़ुट थी, और
वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।
23 96 अनार लगे हुए थे। जाली के इर्दगिर्द कुल 100
अनार लगे थे।

24 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान ने ज़ैल
के क़ैदियों को अलग कर दिया : इमाम-ए-आज़म
सिरायाह, उस के बाद आने वाले इमाम सफ़नियाह,
रब के घर के तीन दरबानों, 25 शहर के बचे हुओं में
से उस अफ़्सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर
था, सिदक़ियाह बादशाह के सात मुशीरों, उम्मत की
भर्ती करने वाले अफ़्सर और शहर में मौजूद उस
के 60 मर्दों को। 26 नबूज़रादान इन सब को अलग
करके सूबा हमात के शहर रिब्ला ले गया जहाँ शाह-
ए-बाबल था। 27 वहाँ नबूकद्नज़्ज़र ने उन्हें सज़ा-ए-
मौत दी।

यूँ यहूदाह के बाशिन्दों को जिलावतन कर दिया
गया। 28 नबूकद्नज़्ज़र ने अपनी हुकूमत के 7वें साल
में यहूदाह के 3,023 अफ़राद, 29 18वें साल में
यरूशलम के 832 अफ़राद, 30 और 23वें साल में
745 अफ़राद को जिलावतन कर दिया। यह आख़िरी
लोग शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़्सर नबूज़रादान के ज़रीए
बाबल लाए गए। कुल 4,600 अफ़राद जिलावतन
हुए।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

31 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी
के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह
बना। उसी साल के 12वें महीने के 25वें दिन [b]उस
ने यहूयाकीन को क़ैदख़ाने से आज़ाद कर दिया।
32 उस ने उस के साथ नर्म बातें करके उसे इज़्ज़त की
ऐसी कुर्सी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए
गए बाक़ी बादशाहों की निस्बत ज़्यादा अहम थी।
33 यहूयाकीन को क़ैदी के कपड़े उतारने की इजाज़त
मिली, और उसे ज़िन्दगी भर बादशाह की मेज़ पर
बाक़ाइदगी से खाना खाने का शरफ़ हासिल रहा।
34 बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र
भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा
ज़रूरियात पूरी होती रहें।

---

[b]31 मार्च।

नोहा

वीरान-ओ-सुन्सान

1 1 हाय, अफ़सोस! यरूशलम बेटी कितनी तन्हा
बैठी है, गो उस में पहले इतनी रौनक़ थी। जो
पहले अक़्वाम में अव्वल दर्जा रखती थी वह बेवा
बन गई है, जो पहले ममालिक की रानी थी वह
ग़ुलामी में आ गई है।
2 रात को वह रो रो कर गुज़ारती है, उस के गाल
आँसूओं से तर रहते हैं। आशिक़ों में से कोई नहीं रहा
जो उसे तसल्ली दे। दोस्त सब के सब बेवफ़ा हो कर
उस के दुश्मन बन गए हैं।
3 पहले भी यहूदाह बेटी बड़ी मुसीबत में फंसी
हुई थी, पहले भी उसे सख़्त मज़दूरी करनी पड़ी।
लेकिन अब वह जिलावतन हो कर दीगर अक़्वाम
के बीच में रहती है, अब उसे कहीं भी ऐसी जगह
नहीं मिलती जहाँ सुकून से रह सके। क्यूँकि जब वह
बड़ी तक्लीफ़ में मुब्तला थी तो दुश्मन ने उस का
ताक़्क़ुब करके उसे घेर लिया।
4 सिय्यून की राहें मातमज़दा हैं, क्यूँकि कोई ईद
मनाने के लिए नहीं आता। शहर के तमाम दरवाज़े
वीरान-ओ-सुन्सान हैं। उस के इमाम आहें भर रहे,
उस की कुंवारियाँ ग़म खा रही हैं और उसे ख़ुद शदीद
तल्ख़ी महसूस हो रही है।
5 उस के मुख़ालिफ़ मालिक बन गए, उस के दुश्मन
सुकून से रह रहे हैं। क्यूँकि रब ने शहर को उस के
मुतअद्दिद गुनाहों का अज्र दे कर उसे दुख पहुँचाया
है। उस के फ़र्ज़न्द दुश्मन के आगे आगे चल कर
जिलावतन हो गए हैं।
6 सिय्यून बेटी की तमाम शान-ओ-शौकत जाती रही
है। उस के बुज़ुर्ग चरागाह न पाने वाले हिरन हैं जो
थकते थकते शिकारियों के आगे आगे भागते हैं।
7 अब जब यरूशलम मुसीबतज़दा और बेवतन है
तो उसे वह क़ीमती चीज़ें याद आती हैं जो उसे क़दीम
ज़माने से ही हासिल थीं। क्यूँकि जब उस की क़ौम
दुश्मन के हाथ में आई तो कोई नहीं था जो उस की
मदद करता बल्कि उस के मुख़ालिफ़ तमाशा देखने
दौड़े आए, वह उस की तबाही से ख़ुश हो कर हंस
पड़े।
8 यरूशलम बेटी से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है,
इसी लिए वह लान-तान का निशाना बन गई है। जो
पहले उस की इज़्ज़त करते थे वह सब उसे हक़ीर
जानते हैं, क्यूँकि उन्हों ने उस की बरहनगी देखी है।
अब वह आहें भर भर कर अपना मुँह दूसरी तरफ़
फेर लेती है।
9 गो उस के दामन में बहुत गन्दगी थी, तो भी उस
ने अपने अन्जाम का ख़याल तक न किया। अब वह
धड़ाम से गिर गई है, और कोई नहीं है जो उसे तसल्ली
दे। "ऐ रब, मेरी मुसीबत का लिहाज़ कर! क्यूँकि
दुश्मन शेख़ी मार रहा है।"
10 जो कुछ भी यरूशलम को प्यारा था उस पर
दुश्मन ने हाथ डाला है। हत्ता कि उसे देखना पड़ा
कि ग़ैरअक़्वाम उस के मक़्दिस में दाख़िल हो रहे हैं,
गो तू ने ऐसे लोगों को अपनी जमाअत में शरीक होने
से मना किया था।
11 तमाम बाशिन्दे आहें भर भर कर रोटी की तलाश
में रहते हैं। हर एक खाने का कोई न कोई टुकड़ा पाने
के लिए अपनी बेशक़ीमत चीज़ें बेच रहा है। ज़हन में
एक ही ख़याल है कि अपनी जान को किसी न किसी
तरह बचाए। "ऐ रब, मुझ पर नज़र डाल कर ध्यान
दे कि मेरी कितनी तज़्लील हुई है।

12 ऐ यहाँ से गुज़रने वालो, क्या यह सब कुछ
तुम्हारे नज़्दीक बेमानी है? ग़ौर से सोच लो, जो ईज़ा

मुझे बर्दाश्त करनी पड़ती है क्या वह कहीं और पाई जाती है? हरगिज़ नहीं! यह रब की तरफ़ से है, उसी का सख़्त ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है।

13 बुलन्दियों से उस ने मेरी हड्डियों पर आग नाज़िल करके उन्हें कुचल दिया। उस ने मेरे पाँओ के सामने जाल बिछा कर मुझे पीछे हटा दिया। उसी ने मुझे वीरान-ओ-सुन्सान करके हमेशा के लिए बीमार कर दिया।

14 मेरे जराइम का जूआ भारी है। रब के हाथ ने उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़ कर मेरी गर्दन पर रख दिया। अब मेरी ताक़त ख़त्म है, रब ने मुझे उन ही के हवाले कर दिया जिन का मुक़ाबला मैं कर ही नहीं सकता।

15 रब ने मेरे दरमियान के तमाम सूरमाओं को रद्द कर दिया, उस ने मेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकलवाया जो मेरे जवानों को पाश पाश करे। हाँ, रब ने कुंवारी यहूदाह बेटी को अंगूर का रस निकालने के हौज़ में फैंक कर कुचल डाला।

16 इस लिए मैं रो रही हूँ, मेरी आँखों से आँसू टपकते रहते हैं। क्यूँकि क़रीब कोई नहीं है जो मुझे तसल्ली दे कर मेरी जान को तर-ओ-ताज़ा करे। मेरे बच्चे तबाह हैं, क्यूँकि दुश्मन ग़ालिब आ गया है।”

17 सिय्यून बेटी अपने हाथ फैलाती है, लेकिन कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। रब के हुक्म पर याक़ूब के पड़ोसी उस के दुश्मन बन गए हैं। यरूशलम उन के दरमियान घिनौनी चीज़ बन गई है।

18 “रब हक़-ब-जानिब है, क्यूँकि मैं उस के कलाम से सरकश हुई। ऐ तमाम अक़्वाम, सुनो! मेरी ईज़ा पर ग़ौर करो! मेरे नौजवान और कुंवारियाँ जिलावतन हो गए हैं।

19 मैं ने अपने आशिक़ों को बुलाया, लेकिन उन्हों ने बेवफ़ा हो कर मुझे तर्क कर दिया। अब मेरे इमाम और बुज़ुर्ग अपनी जान बचाने के लिए ख़ुराक ढूँडते ढूँडते शहर में हलाक हो गए हैं।

20 ऐ रब, मेरी तंगदस्ती पर ध्यान दे! बातिन में मैं तड़प रही हूँ, मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा है, इस लिए कि मैं इतनी ज़्यादा सरकश रही हूँ। बाहर गली में तलवार ने मुझे बच्चों से महरूम कर दिया, घर के अन्दर मौत मेरे पीछे पड़ी है।

21 मेरी आहें तो लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन कोई मुझे तसल्ली देने के लिए नहीं आता। इस के बजाय मेरे तमाम दुश्मन मेरी मुसीबत के बारे में सुन कर बग़लें बजा रहे हैं। वह ख़ुश हैं कि तू ने मेरे साथ ऐसा सुलूक किया है। ऐ रब, वह दिन आने दे जिस का एलान तू ने किया है ताकि वह भी मेरी तरह की मुसीबत में फंस जाएँ।

22 उन की तमाम बुरी हरकतें तेरे सामने आएँ। उन से यूँ निपट ले जिस तरह तू ने मेरे गुनाहों के जवाब में मुझ से निपट लिया है। क्यूँकि आहें भरते भरते मेरा दिल निढाल हो गया है।”

रब का ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हुआ है

2 1 हाय, रब का क़हर काले बादलों की तरह सिय्यून बेटी पर छा गया है! इस्राईल की जो शान-ओ-शौकत पहले आसमान की तरह बुलन्द थी उसे अल्लाह ने ख़ाक में मिला दिया है। जब उस का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो उस ने अपने घर का भी ख़याल न किया, गो वह उस के पाँओ की चौकी है।

2 रब ने बेरहमी से याक़ूब की आबादियों को मिटा डाला, क़हर में यहूदाह बेटी के क़िलों को ढा दिया। उस ने यहूदाह की सल्तनत और बुज़ुर्गों को ख़ाक में मिला कर उन की बेहुरमती की है।

3 ग़ज़बनाक हो कर उस ने इस्राईल की पूरी ताक़त ख़त्म कर दी। फिर जब दुश्मन क़रीब आया तो उस ने अपने दहने हाथ को इस्राईल की मदद करने से रोक लिया। न सिर्फ़ यह बल्कि वह शोलाज़न आग बन गया जिस ने याक़ूब में चारों तरफ़ फैल कर सब कुछ भस्म कर दिया।

4 अपनी कमान को तान कर वह अपने दहने हाथ से तीर चलाने के लिए उठा। दुश्मन की तरह उस ने सब कुछ जो मनमोहन था मौत के घाट उतारा। सिय्यून

बेटी का ख़ैमा उस के क़हर के भड़कते कोएलों से
भर गया।

5 रब ने इस्राईल का दुश्मन सा बन कर मुल्क को
उस के महलों और क़िलों समेत तबाह कर दिया
है। उसी के हाथों यहूदाह बेटी की आह-ओ-ज़ारी में
इज़ाफ़ा होता गया।
6 उस ने अपनी सुकूनतगाह को बाग़ की झोंपड़ी
की तरह गिरा दिया, उसी मक़ाम को बर्बाद कर दिया
जहाँ क़ौम उस से मिलने के लिए जमा होती थी। रब
के हाथों यूँ हुआ कि अब सिय्यून की ईदों और सबतों
की याद ही नहीं रही। उस के शदीद क़हर ने बादशाह
और इमाम दोनों को रद्द कर दिया है।
7 अपनी क़ुर्बानगाह और मक़्दिस को मुस्तरद
करके रब ने यरूशलम के महलों की दीवारें दुश्मन
के हवाले कर दीं। तब रब के घर में भी ईद के दिन
का सा शोर मच गया।
8 रब ने फ़ैसला किया कि सिय्यून बेटी की फ़सील
को गिरा दिया जाए। उस ने फ़ीते से दीवारों को
नाप नाप कर अपने हाथ को न रोका जब तक सब
कुछ तबाह न हो गया। तब क़िलाबन्दी के पुश्ते और
फ़सील मातम करते करते ज़ाए हो गए।
9 शहर के दरवाज़े ज़मीन में धँस गए, उन के कुंडे
टूट कर बेकार हो गए। यरूशलम के बादशाह और
राहनुमा दीगर अक़्वाम में जिलावतन हो गए हैं। अब
न शरीअत रही, न सिय्यून के नबियों को रब की रोया
मिलती है।
10 सिय्यून बेटी के बुज़ुर्ग ख़ामोशी से ज़मीन पर बैठ
गए हैं। टाट के लिबास ओढ़ कर उन्हों ने अपने सरों
पर ख़ाक डाल ली है। यरूशलम की कुंवारियाँ भी
अपने सरों को झुकाए बैठी हैं।

11 मेरी आँखें रो रो कर थक गई हैं, शदीद दर्द ने मेरे
दिल को बेहाल कर दिया है। क्यूँकि मेरी क़ौम नेस्त
हो गई है। शहर के चौकों में बच्चे पज़्मुर्दा हालत में
फिर रहे हैं, शीरख़्वार बच्चे ग़श खा रहे हैं। यह देख
कर मेरा कलेजा फट रहा है।
12 अपनी माँ से वह पूछते हैं, "रोटी और मै कहाँ
है?" लेकिन बेफ़ाइदा। वह मौत के घाट उतरने वाले
ज़ख़्मी आदमियों की तरह चौकों में भूके मर रहे हैं,
उन की जान माँ की गोद में ही निकल रही है।

13 ऐ यरूशलम बेटी, मैं किस से तेरा मुवाज़ना
करके तेरी हौसलाअफ़्ज़ाई करूँ? ऐ कुंवारी सिय्यून
बेटी, मैं किस से तेरा मुक़ाबला करके तुझे तसल्ली
दूँ? क्यूँकि तुझे समुन्दर जैसा वसी नुक़्सान पहुँचा
है। कौन तुझे शिफ़ा दे सकता है?
14 तेरे नबियों ने तुझे झूटी और बेकार रोयाएँ पेश
कीं। उन्हों ने तेरा क़ुसूर तुझ पर ज़ाहिर न किया,
हालाँकि उन्हें करना चाहिए था ताकि तू इस सज़ा
से बच जाती। इस के बजाय उन्हों ने तुझे झूट और
फ़रेबदिह पैग़ामात सुनाए।
15 अब तेरे पास से गुज़रने वाले ताली बजा कर
आवाज़े कसते हैं। यरूशलम बेटी को देख कर वह
सर हिलाते हुए तौबा तौबा कहते हैं, "क्या यह वह
शहर है जो 'तक्मील-ए-हुस्न' और 'तमाम दुनिया की
ख़ुशी' कहलाता था?"
16 तेरे तमाम दुश्मन मुँह पसार कर तेरे ख़िलाफ़ बातें
करते हैं। वह आवाज़े कसते और दाँत पीसते हुए
कहते हैं, "हम ने उसे हड़प कर लिया है। लो, वह दिन
आ गया है जिस के इन्तिज़ार में हम रहे। आख़िरकार
वह पहुँच गया, आख़िरकार हम ने अपनी आँखों से
उसे देख लिया है।"
17 अब रब ने अपनी मर्ज़ी पूरी की है। अब उस ने
सब कुछ पूरा किया है जो बड़ी देर से फ़रमाता आया
है। बेरहमी से उस ने तुझे ख़ाक में मिला दिया। उसी
ने होने दिया कि दुश्मन तुझ पर शादियाना बजाता,
कि तेरे मुख़ालिफ़ों की ताक़त तुझ पर ग़ालिब आ
गई है।

18 लोगों के दिल रब को पुकारते हैं। ऐ सिय्यून बेटी
की फ़सील, तेरे आँसू दिन रात बहते बहते नदी बन
जाएँ। न इस से बाज़ आ, न अपनी आँखों को रोने से
रुकने दे!
19 उठ, रात के हर पहर की इब्तिदा में आह-ओ-
ज़ारी कर! अपने दिल की हर बात पानी की तरह रब
के हुज़ूर उंडेल दे। अपने हाथों को उस की तरफ़ उठा
कर अपने बच्चों की जानों के लिए इल्तिजा कर जो
इस वक़्त गली गली में भूके मर रहे हैं।

20 ऐ रब, ध्यान से देख कि तू ने किस से ऐसा सुलूक
किया है। क्या यह औरतें अपने पेट का फल, अपने
लाडले बच्चों को खाएँ? क्या रब के मक़्दिस में ही
इमाम और नबी को मार डाला जाए?
21 लड़कों और बुज़ुर्गों की लाशें मिल कर गलियों
में पड़ी हैं। मेरे जवान लड़के-लड़कियाँ तलवार की
ज़द में आ कर गिर गए हैं। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल
हुआ तो तू ने उन्हें मार डाला, बेरहमी से उन्हें मौत
के घाट उतार दिया।
22 जिन से मैं दहशत खाता था उन्हें तू ने बुलाया।
जिस तरह बड़ी ईदों के मौक़े पर हुजूम शहर में जमा
होते हैं उसी तरह दुश्मन चारों तरफ़ से मुझ पर टूट
पड़े। जब रब का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो न कोई बचा,
न कोई बाक़ी रह गया। जिन्हें मैं ने पाला और जो मेरे
ज़ेर-ए-निगरानी परवान चढ़े उन्हें दुश्मन ने हलाक कर
दिया।

मुसीबत में रब की मेहरबानी पर उम्मीद

3 1 हाय, मुझे कितना दुख उठाना पड़ा! और यह
सब कुछ इस लिए हो रहा है कि रब का ग़ज़ब
मुझ पर नाज़िल हुआ है, उसी की लाठी मुझे तर्बियत
दे रही है।
2 उस ने मुझे हाँक हाँक कर तारीकी में चलने दिया,
कहीं भी रौशनी नज़र नहीं आई।
3 रोज़ाना वह बार बार अपना हाथ मेरे ख़िलाफ़
उठाता रहता है।
4 उस ने मेरे जिस्म और जिल्द को सड़ने दिया, मेरी
हड्डियों को तोड़ डाला।
5 मुझे घेर कर उस ने ज़हर और सख़्त मुसीबत की
दीवार मेरे इर्दगिर्द खड़ी कर दी।
6 उस ने मुझे तारीकी में बसाया। अब मैं उन की
मानिन्द हूँ जो बड़ी देर से क़ब्र में पड़े हैं।
7 उस ने मुझे पीतल की भारी ज़न्जीरों में जकड़ कर
मेरे इर्दगिर्द ऐसी दीवारें खड़ी कीं जिन से मैं निकल
नहीं सकता।
8 ख़्वाह मैं मदद के लिए कितनी चीख़ें क्यूँ न मारूँ
वह मेरी इल्तिजाएँ अपने हुज़ूर पहुँचने नहीं देता।
9 जहाँ भी मैं चलना चाहूँ वहाँ उस ने तराशे पत्थरों
की मज़बूत दीवार से मुझे रोक लिया। मेरे तमाम रास्ते
भूलभुलय्याँ बन गए हैं।
10 अल्लाह रीछ की तरह मेरी घात में बैठ गया,
शेरबबर की तरह मेरी ताक लगाए छुप गया।
11 उस ने मुझे सहीह रास्ते से भटका दिया, फिर
मुझे फाड़ कर बेसहारा छोड़ दिया।
12 अपनी कमान को तान कर उस ने मुझे अपने
तीरों का निशाना बनाया।
13 उस के तीरों ने मेरे गुर्दों को चीर डाला।
14 मैं अपनी पूरी क़ौम के लिए मज़ाक़ का निशाना
बन गया हूँ। वह पूरे दिन अपने गीतों में मुझे लान-तान
करते हैं।
15 अल्लाह ने मुझे कड़वे ज़हर से सेर किया, मुझे
नागवार तल्ख़ी का प्याला पिलाया।
16 उस ने मेरे दाँतों को बजरी चबाने दी, मुझे कुचल
कर ख़ाक में मिला दिया।
17 मेरी जान से सुकून छीन लिया गया, अब मैं
ख़ुशहाली का मज़ा भूल ही गया हूँ।

18 चुनाँचे मैं बोला, “मेरी शान और रब पर से मेरी
उम्मीद जाती रही है।”
19 मेरी तक्लीफ़दिह और बेवतन हालत का ख़याल
कड़वे ज़हर की मानिन्द है।

20 तो भी मेरी जान को उस की याद आती रहती है,
सोचते सोचते वह मेरे अन्दर दब जाती है।

21 लेकिन मुझे एक बात की उम्मीद रही है, और
यही मैं बार बार ज़हन में लाता हूँ,
22 रब की मेहरबानी है कि हम नेस्त-ओ-नाबूद नहीं
हुए। क्यूँकि उस की शफ़क़त कभी ख़त्म नहीं होती
23 बल्कि हर सुब्ह अज़ सर-ए-नौ हम पर चमक
उठती है। ऐ मेरे आक़ा, तेरी वफ़ादारी अज़ीम है।
24 मेरी जान कहती है, "रब मेरा मौरूसी हिस्सा है,
इस लिए मैं उस के इन्तिज़ार में रहूँगी।"
25 क्यूँकि रब उन पर मेहरबान है जो उस पर उम्मीद
रख कर उस के तालिब रहते हैं।
26 चुनाँचे अच्छा है कि हम ख़ामोशी से रब की
नजात के इन्तिज़ार में रहें।
27 अच्छा है कि इन्सान जवानी में अल्लाह का जूआ
उठाए फिरे।
28 जब जूआ उस की गर्दन पर रखा जाए तो वह
चुपके से तन्हाई में बैठ जाए।
29 वह ख़ाक में औंधे मुँह हो जाए, शायद अभी तक
उम्मीद हो।
30 वह मारने वाले को अपना गाल पेश करे, चुपके
से हर तरह की रुस्वाई बर्दाश्त करे।

31 क्यूँकि रब इन्सान को हमेशा तक रद्द नहीं
करता।
32 उस की शफ़क़त इतनी अज़ीम है कि गो वह कभी
इन्सान को दुख पहुँचाए तो भी वह आख़िरकार उस
पर दुबारा रहम करता है।
33 क्यूँकि वह इन्सान को दबाने और ग़म पहुँचाने
में ख़ुशी महसूस नहीं करता।

34 मुल्क में तमाम क़ैदियों को पाँओ तले कुचला
जा रहा है।
35 अल्लाह तआला के देखते देखते इन्सान की
हक़तल्फ़ी की जा रही है,
36 अदालत में लोगों का हक़ मारा जा रहा है।
लेकिन रब को यह सब कुछ नज़र आता है।
37 कौन कुछ करवा सकता है अगर रब ने इस का
हुक्म न दिया हो?
38 आफ़तें और अच्छी चीज़ें दोनों अल्लाह तआला
के फ़रमान पर वुजूद में आती हैं।
39 तो फिर इन्सानों में से कौन अपने गुनाहों की
सज़ा पाने पर शिकायत करे?
40 आओ, हम अपने चाल-चलन का जाइज़ा लें,
उसे अच्छी तरह जाँच कर रब के पास वापस आएँ।
41 हम अपने दिल को हाथों समेत आसमान की
तरफ़ माइल करें जहाँ अल्लाह है।

42 हम इक़्रार करें, "हम बेवफ़ा हो कर सरकश हो
गए हैं, और तू ने हमें मुआफ़ नहीं किया।
43 तू अपने क़हर के पर्दे के पीछे छुप कर हमारा
ताक़्क़ुब करने लगा, बेरहमी से हमें मारता गया।
44 तू बादल में यूँ छुप गया है कि कोई भी दुआ तुझ
तक नहीं पहुँच सकती।
45 तू ने हमें अक़्वाम के दरमियान कूड़ा-कर्कट बना
दिया।
46 हमारे तमाम दुश्मन हमें ताने देते हैं।
47 दहशत और गढ़े हमारे नसीब में हैं, हम धड़ाम
से गिर कर तबाह हो गए हैं।"

48 आँसू मेरी आँखों से टपक टपक कर नदियाँ बन
गए हैं, मैं इस लिए रो रहा हूँ कि मेरी क़ौम तबाह हो
गई है।
49 मेरे आँसू रुक नहीं सकते बल्कि उस वक़्त तक
जारी रहेंगे
50 जब तक रब आसमान से झाँक कर मुझ पर
ध्यान न दे।
51 अपने शहर की औरतों से दुश्मन का सुलूक देख
कर मेरा दिल छलनी हो रहा है।
52 जो बिलावजह मेरे दुश्मन हैं उन्हों ने परिन्दे की
तरह मेरा शिकार किया।

53 उन्हों ने मुझे जान से मारने के लिए गढ़े में डाल
कर मुझ पर पत्थर फैंक दिए।
54 सैलाब मुझ पर आया, और मेरा सर पानी में डूब
गया। मैं बोला, “मेरी ज़िन्दगी का धागा कट गया
है।”

55 ऐ रब, जब मैं गढ़े की गहराइयों में था तो मैं ने
तेरे नाम को पुकारा।
56 मैं ने इल्तिजा की, “अपना कान बन्द न रख
बल्कि मेरी आहें और चीख़ें सुन!” और तू ने मेरी
सुनी।
57 जब मैं ने तुझे पुकारा तो तू ने क़रीब आ कर
फ़रमाया, “ख़ौफ़ न खा।”
58 ऐ रब, तू अदालत में मेरे हक़ में मुक़द्दमा लड़ा,
बल्कि तू ने मेरी जान का इवज़ाना भी दिया।
59 ऐ रब, जो ज़ुल्म मुझ पर हुआ वह तुझे साफ़ नज़र
आता है। अब मेरा इन्साफ़ कर!
60 तू ने उन की तमाम कीनापर्वरी पर तवज्जुह दी
है। जितनी भी साज़िशें उन्हों ने मेरे ख़िलाफ़ की हैं
उन से तू वाक़िफ़ है।
61 ऐ रब, उन की लान-तान, उन के मेरे ख़िलाफ़
तमाम मन्सूबे तेरे कान तक पहुँच गए हैं।
62 जो कुछ मेरे मुख़ालिफ़ पूरा दिन मेरे ख़िलाफ़
फुसफुसाते और बुड़बुड़ाते हैं उस से तू ख़ूब आश्ना
है।
63 देख कि यह क्या करते हैं! ख़्वाह बैठे या खड़े
हों, हर वक़्त वह अपने गीतों में मुझे अपने मज़ाक़
का निशाना बनाते हैं।
64 ऐ रब, उन्हें उन की हरकतों का मुनासिब अज्र
दे!
65 उन के ज़हनों को कुन्द कर, तेरी लानत उन पर
आ पड़े!
66 उन पर अपना पूरा ग़ज़ब नाज़िल कर! जब तक
वह तेरे आसमान के नीचे से ग़ाइब न हो जाएँ उन का
ताक़्क़ुब करता रह!

यरूशलम की मुसीबत

4 1 हाय, सोने की आब-ओ-ताब न रही, ख़ालिस
सोना भी माँद पड़ गया है। मक़्दिस के जवाहिर
तमाम गलियों में बिखरे पड़े हैं।
2 पहले तो सिय्यून के गिराँक़दर फ़र्ज़न्द ख़ालिस
सोने जैसे क़ीमती थे, लेकिन अब वह गोया मिट्टी के
बर्तन समझे जाते हैं जो आम कुम्हार ने बनाए हैं।
3 गो गीदड़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं,
लेकिन मेरी क़ौम रेगिस्तान में रहने वाले उक़ाबी उल्लू
जैसी ज़ालिम हो गई है।
4 शीरख़्वार बच्चे की ज़बान प्यास के मारे तालू से
चिपक गई है। छोटे बच्चे भूक के मारे रोटी माँगते हैं,
लेकिन खिलाने वाला कोई नहीं है।
5 जो पहले लज़ीज़ खाना खाते थे वह अब गलियों
में तबाह हो रहे हैं। जो पहले अर्ग़वानी रंग के शानदार
कपड़े पहनते थे वह अब कूड़े-कर्कट में लोट-पोट हो
रहे हैं।

6 मेरी क़ौम से सदूम की निस्बत कहीं ज़्यादा संगीन
गुनाह सरज़द हुआ है। और सदूम का क़ुसूर इतना
संगीन था कि वह एक ही लम्हे में तबाह हुआ। किसी
ने भी मुदाख़लत न की।
7 सिय्यून के रईस कितने शानदार थे! जिल्द बर्फ़
जैसी निखरी, दूध जैसी सफ़ेद थी। रुख़सार मूँगे की
तरह गुलाबी, शक्ल-ओ-सूरत संग-ए-लाजवर्द [c]जैसी
चमकदार थी।
8 लेकिन अब वह कोएले जैसे काले नज़र आते हैं।
जब गलियों में घूमते हैं तो उन्हें पहचाना नहीं जाता।
उन की हड्डियों पर की जिल्द सुकड़ कर लकड़ी की
तरह सूखी हुई है।

---

[c] lapis lazuli

9 जो तलवार से हलाक हुए उन का हाल उन से
बेहतर था जो भूके मर गए। क्यूँकि खेतों से ख़ुराक
न मिलने पर वह घुल घुल कर मर गए।
10 जब मेरी क़ौम तबाह हुई तो इतना सख़्त काल
पड़ गया कि नर्मदिल माओं ने भी अपने बच्चों को
पका कर खा लिया।

11 रब ने अपना पूरा ग़ज़ब सिय्यून पर नाज़िल
किया, उसे अपने शदीद क़हर का निशाना बनाया।
उस ने यरूशलम में इतनी ज़बरदस्त आग लगाई कि
वह बुन्यादों तक भस्म हो गया।
12 अब दुश्मन यरूशलम के दरवाज़ों में दाख़िल हुए
हैं, हालाँकि दुनिया के तमाम बादशाह बल्कि सब
लोग समझते थे कि यह मुमकिन ही नहीं।
13 लेकिन यह सब कुछ उस के नबियों और इमामों
के सबब से हुआ जिन्हों ने शहर ही में रास्तबाज़ों की
ख़ूँरेज़ी की।
14 अब यही लोग अंधों की तरह गलियों में टटोल
टटोल कर फिरते हैं। वह ख़ून से इतने आलूदा हैं कि
सब लोग उन के कपड़ों से लगने से गुरेज़ करते हैं।
15 उन्हें देख कर लोग गरजते हैं, "हटो, तुम नापाक
हो! भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, हमें हाथ मत
लगाना!" फिर जब वह दीगर अक़्वाम में जा कर
इधर उधर फिरने लगते हैं तो वहाँ के लोग भी कहते
हैं कि यह मज़ीद यहाँ न ठहरें।
16 रब ने ख़ुद उन्हें मुन्तशिर कर दिया, अब से वह
उन का ख़याल नहीं करेगा। अब न इमामों की इज़्ज़त
होती है, न बुज़ुर्गों पर मेहरबानी की जाती है।

17 हम चारों तरफ़ आँख दौड़ाते रहे, लेकिन
बेफ़ाइदा, कोई मदद न मिली। देखते देखते हमारी
नज़र धुन्दला गई। क्यूँकि हम अपने बुर्जों पर खड़े
एक ऐसी क़ौम के इन्तिज़ार में रहे जो हमारी मदद
कर ही नहीं सकती थी।
18 हम अपने चौकों में जा न सके, क्यूँकि वहाँ
दुश्मन हमारी ताक में बैठा था। हमारा ख़ातमा क़रीब
आया, हमारा मुक़र्ररा वक़्त इख़तितामपज़ीर हुआ,
हमारा अन्जाम आ पहुँचा।
19 जिस तरह आसमान पर मंडलाने वाला उक़ाब
एक दम शिकार पर झपट पड़ता है उसी तरह हमारा
ताक़्क़ुब करने वाले हम पर टूट पड़े, और वह भी
कहीं ज़्यादा तेज़ी से। वह पहाड़ों पर हमारे पीछे पीछे
भागे और रेगिस्तान में हमारी घात में रहे।
20 हमारा बादशाह भी उन के गढ़ों में फंस गया।
जो हमारी जान था और जिसे रब ने मसह करके चुन
लिया था उसे भी पकड़ लिया गया, गो हम ने सोचा
था कि उस के साय में बस कर अक़्वाम के दरमियान
महफ़ूज़ रहेंगे।

21 ऐ अदोम बेटी, बेशक शादियाना बजा! बेशक
मुल्क-ए-ऊज़ में रह कर ख़ुशी मना! लेकिन ख़बरदार,
अल्लाह के ग़ज़ब का प्याला तुझे भी पिलाया जाएगा।
तब तू उसे पी पी कर मस्त हो जाएगी और नशे में
अपने कपड़े उतार कर बरहना फिरेगी।
22 ऐ सिय्यून बेटी, तेरी सज़ा का वक़्त पूरा हो गया
है। अब से रब तुझे क़ैदी बना कर जिलावतन नहीं
करेगा। लेकिन ऐ अदोम बेटी, वह तुझे तेरे क़ुसूर का
पूरा अज्र देगा, वह तेरे गुनाहों पर से पर्दा उठा लेगा।

ऐ रब, हमें अपने हुज़ूर वापस ला!

5 1 ऐ रब, याद कर कि हमारे साथ क्या कुछ
हुआ! ग़ौर कर कि हमारी कैसी रुस्वाई हुई है।
2 हमारी मौरूसी मिलकियत परदेसियों के हवाले
की गई, हमारे घर अजनबियों के हाथ में आ गए हैं।
3 हम वालिदों से महरूम हो कर यतीम हो गए हैं,
हमारी माएँ बेवाओं की तरह ग़ैरमहफ़ूज़ हैं।
4 ख़्वाह पीने का पानी हो या लकड़ी, हर चीज़ की
पूरी क़ीमत अदा करनी पड़ती है, हालाँकि यह हमारी
अपनी ही चीज़ें थीं।

5 हमारा ताक़्क़ुब करने वाले हमारे सर पर चढ़ आए
हैं, और हम थक गए हैं। कहीं भी सुकून नहीं मिलता।

6 हम ने अपने आप को मिस्र और असूर के हवाले
कर दिया ताकि रोटी मिल जाए और भूके न मरें।
7 हमारे बापदादा ने गुनाह किया, लेकिन वह कूच
कर गए हैं। अब हम ही उन की सज़ा भुगत रहे हैं।
8 ग़ुलाम हम पर हुकूमत करते हैं, और कोई नहीं है
जो हमें उन के हाथ से बचाए।
9 हम अपनी जान को ख़तरे में डाल कर रोज़ी कमाते
हैं, क्यूँकि बयाबान में तलवार हमारी ताक में बैठी
रहती है।
10 भूक के मारे हमारी जिल्द तनूर जैसी गर्म हो कर
चुरमुर हो गई है।
11 सिय्यून में औरतों की इस्मतदरी, यहूदाह के
शहरों में कुंवारियों की बेहुरमती हुई है।
12 दुश्मन ने रईसों को फाँसी दे कर बुज़ुर्गों की
बेइज़्ज़ती की है।
13 नौजवानों को चक्की का पाट उठाए फिरना है,
लड़के लकड़ी के बोझ तले डगमगा कर गिर जाते
हैं।
14 अब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े से और जवान अपने
साज़ों से बाज़ रहते हैं।
15 ख़ुशी हमारे दिलों से जाती रही है, हमारा
लोकनाच आह-ओ-ज़ारी में बदल गया है।
16 ताज हमारे सर पर से गिर गया है। हम पर
अफ़सोस, हम से गुनाह सरज़द हुआ है।
17 इसी लिए हमारा दिल निढाल हो गया, हमारी
नज़र धुन्दला गई है।
18 क्यूँकि कोह-ए-सिय्यून तबाह हुआ है, लोमड़ियाँ
उस की गलियों में फिरती हैं।

19 ऐ रब, तेरा राज अबदी है, तेरा तख़्त पुश्त-दर-
पुश्त क़ाइम रहता है।
20 तू हमें हमेशा तक क्यूँ भूलना चाहता है? तू ने
हमें इतनी देर तक क्यूँ तर्क किए रखा है?
21 ऐ रब, हमें अपने पास वापस ला ताकि हम
वापस आ सकें। हमें बहाल कर ताकि हमारा हाल
पहले की तरह हो।
22 या क्या तू ने हमें हत्मी तौर पर मुस्तरद कर दिया
है? क्या तेरा हम पर ग़ुस्सा हद से ज़्यादा बढ़ गया
है?।

हिज़्क़ीएल

अल्लाह के रथ की रोया

1 1–3 जब मैं यानी इमाम हिज़्क़ीएल बिन बूज़ी
तीस साल का था तो मैं यहूदाह के जिलावतनों
के साथ मुल्क-ए-बाबल के दरया किबार के किनारे
ठहरा हुआ था। यहूयाकीन बादशाह को जिलावतन
हुए पाँच साल हो गए थे। चौथे महीने के पाँचवें
दिन [d]आसमान खुल गया और अल्लाह ने मुझ पर
मुख़्तलिफ़ रोयाएँ ज़ाहिर कीं। उस वक़्त रब मुझ
से हमकलाम हुआ, और उस का हाथ मुझ पर आ
ठहरा।

4 रोया में मैं ने ज़बरदस्त आँधी देखी जिस ने शिमाल
से आ कर बड़ा बादल मेरे पास पहुँचाया। बादल
में चमकती दमकती आग नज़र आई, और वह तेज़
रौशनी से घिरा हुआ था। आग का मर्कज़ चमकदार
धात की तरह तमतमा रहा था।

5 आग में चार जानदारों जैसे चल रहे थे जिन की
शक्ल-ओ-सूरत इन्सान की सी थी। 6 लेकिन हर एक
के चार चिहरे और चार पर थे। 7 उन की टाँगें इन्सानों
जैसी सीधी थीं, लेकिन पाँओ के तल्वे बछड़ों के से
खुर थे। वह पालिश किए हुए पीतल की तरह जगमगा
रहे थे। 8 चारों के चिहरे और पर थे, और चारों परों
के नीचे इन्सानी हाथ दिखाई दिए। 9 जानदार अपने
परों से एक दूसरे को छू रहे थे। चलते वक़्त मुड़ने की
ज़रूरत नहीं थी, क्यूँकि हर एक के चार चिहरे चारों
तरफ़ देखते थे। जब कभी किसी सिम्त जाना होता तो
उसी सिम्त का चिहरा चल पड़ता। 10 चारों के चिहरे
एक जैसे थे। सामने का चिहरा इन्सान का, दाईं तरफ़
का चिहरा शेरबबर का, बाईं तरफ़ का चिहरा बैल
का और पीछे का चिहरा उक़ाब का था। 11 उन के
पर ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे। दो पर बाएँ और दाएँ
हाथ के जानदारों से लगते थे, और दो पर उन के
जिस्मों को ढाँपे रखते थे। 12 जहाँ भी अल्लाह का रूह
जाना चाहता था वहाँ यह जानदार चल पड़ते। उन्हें
मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्यूँकि वह हमेशा अपने
चारों चिहरों में से एक का रुख़ इख़तियार करते थे।

13 जानदारों के बीच में ऐसा लग रहा था जैसे
कोएले दहक रहे हों, कि उन के दरमियान मशअलें
इधर उधर चल रही हों। झिलमिलाती आग में से
बिजली भी चमक कर निकलती थी। 14 जानदार ख़ुद
इतनी तेज़ी से इधर उधर घूम रहे थे कि बादल की
बिजली जैसे नज़र आ रहे थे।

15 जब मैं ने ग़ौर से उन पर नज़र डाली तो देखा
कि हर एक जानदार के पास पहिया है जो ज़मीन को
छू रहा है। 16 लगता था कि चारों पहिए पुखराज [e]से
बने हुए हैं। चारों एक जैसे थे। हर पहिए के अन्दर
एक और पहिया ज़ाविया-ए-क़ाइमा में घूम रहा था,
17 इस लिए वह मुड़े बग़ैर हर रुख़ इख़तियार कर
सकते थे। 18 उन के लम्बे चक्कर ख़ौफ़नाक थे, और
चक्करों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। 19 जब
चार जानदार चलते तो चारों पहिए भी साथ चलते,
जब जानदार ज़मीन से उड़ते तो पहिए भी साथ उड़ते
थे। 20 जहाँ भी अल्लाह का रूह जाता वहाँ जानदार
भी जाते थे। पहिए भी उड़ कर साथ साथ चलते थे,
क्यूँकि जानदारों की रूह पहियों में थी। 21 जब कभी
जानदार चलते तो यह भी चलते, जब रुक जाते तो
यह भी रुक जाते, जब उड़ते तो यह भी उड़ते। क्यूँकि
जानदारों की रूह पहियों में थी।

22 जानदारों के सरों के ऊपर गुम्बद सा फैला हुआ
था जो साफ़-शफ़्फ़ाफ़ बिल्लौर जैसी लग रहा था। उसे

---

[d] 31 जुलाई।

[e] topas

देख कर इन्सान घबरा जाता था। 23 चारों जानदार
इस गुम्बद के नीचे थे, और हर एक अपने परों को
फैला कर एक से बाईं तरफ़ के साथी और दूसरे से
दाईं तरफ़ के साथी को छू रहा था। बाक़ी दो परों से
वह अपने जिस्म को ढाँपे रखता था। 24 चलते वक़्त
उन के परों का शोर मुझ तक पहुँचा। यूँ लग रहा था
जैसे क़रीब ही ज़बरदस्त आबशार बह रही हो, कि
क़ादिर-ए-मुतलक़ कोई बात फ़रमा रहा हो, या कि
कोई लश्कर हरकत में आ गया हो। रुकते वक़्त वह
अपने परों को नीचे लटकने देते थे।

25 फिर गुम्बद के ऊपर से आवाज़ सुनाई दी, और
जानदारों ने रुक कर अपने परों को लटकने दिया।
26 मैं ने देखा कि उन के सरों के ऊपर के गुम्बद पर
संग-ए-लाजवर्द [f] का तख़्त सा नज़र आ रहा है जिस
पर कोई बैठा था जिस की शक्ल-ओ-सूरत इन्सान
की मानिन्द है। 27 लेकिन कमर से ले कर सर तक
वह चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था, जबकि
कमर से ले कर पाँओ तक आग की मानिन्द भड़क
रहा था। तेज़ रौशनी उस के इर्दगिर्द झिलमिला रही
थी। 28 उसे देख कर क़ौस-ए-क़ुज़ह की वह आब-
ओ-ताब याद आती थी जो बारिश होते वक़्त बादल
में दिखाई देती है। यूँ रब का जलाल नज़र आया। यह
देखते ही मैं औंधे मुँह गिर गया। इसी हालत में कोई
मुझ से बात करने लगा।

हिज़्क़ीएल की बुलाहट, तूमार की रोया

2 1 वह बोला, "ऐ आदमज़ाद, खड़ा हो जा! मैं
तुझ से बात करना चाहता हूँ।" 2 जूँ ही वह मुझ
से हमकलाम हुआ तो रूह ने मुझ में आ कर मुझे
खड़ा कर दिया। फिर मैं ने आवाज़ को यह कहते हुए
सुना,

3 "ऐ आदमज़ाद, मैं तुझे इस्राईलियों के पास भेज
रहा हूँ, एक ऐसी सरकश क़ौम के पास जिस ने मुझ
से बग़ावत की है। शुरू से ले कर आज तक वह
अपने बापदादा समेत मुझ से बेवफ़ा रहे हैं। 4 जिन
लोगों के पास मैं तुझे भेज रहा हूँ वह बेशर्म और
ज़िद्दी हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है। 5 ख़्वाह यह बाग़ी सुनें या न
सुनें, वह ज़रूर जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी
बरपा हुआ है। 6 ऐ आदमज़ाद, उन से या उन की
बातों से मत डरना। गो तू काँटेदार झाड़ियों से घिरा
रहेगा और तुझे बिच्छूओं के दरमियान बसना पड़ेगा
तो भी ख़ौफ़ज़दा न हो। न उन की बातों से ख़ौफ़
खाना, न उन के रवय्ये से दहशत खाना। क्यूँकि यह
क़ौम सरकश है। 7 ख़्वाह यह सुनें या न सुनें लाज़िम
है कि तू मेरे पैग़ामात उन्हें सुनाए। क्यूँकि वह बाग़ी
ही हैं। 8 ऐ आदमज़ाद, जब मैं तुझ से हमकलाम हूँगा
तो ध्यान दे और इस सरकश क़ौम की तरह बग़ावत
मत करना। अपने मुँह को खोल कर वह कुछ खा जो
मैं तुझे खिलाता हूँ।"

9 तब एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा हुआ नज़र आया
जिस में तूमार था। 10 तूमार को खोला गया तो मैं ने
देखा कि उस में आगे भी और पीछे भी मातम और
आह-ओ-ज़ारी क़लमबन्द हुई है।

3 1 उस ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, जो कुछ तुझे
दिया जा रहा है उसे खा ले! तूमार को खा, फिर
जा कर इस्राईली क़ौम से मुख़ातिब हो जा।" 2 मैं
ने अपना मुँह खोला तो उस ने मुझे तूमार खिलाया।
3 साथ साथ उस ने फ़रमाया, "आदमज़ाद, जो तूमार
मैं तुझे खिलाता हूँ उसे खा, पेट भर कर खा!" जब
मैं ने उसे खाया तो शहद की तरह मीठा लगा।

4 तब अल्लाह मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, अब जा कर इस्राईली घराने को मेरे
पैग़ामात सुना दे। 5 मैं तुझे ऐसी क़ौम के पास नहीं
भेज रहा जिस की अजनबी ज़बान तुझे समझ न
आए बल्कि तुझे इस्राईली क़ौम के पास भेज रहा
हूँ। 6 बेशक ऐसी बहुत सी क़ौमें हैं जिन की अजनबी
ज़बानें तुझे नहीं आतीं, लेकिन उन के पास मैं तुझे

---

[f] lapis lazuli

नहीं भेज रहा। अगर मैं तुझे उन ही के पास भेजता
तो वह ज़रूर तेरी सुनतीं। 7 लेकिन इस्राईली घराना
तेरी सुनने के लिए तय्यार नहीं होगा, क्यूँकि वह मेरी
सुनने के लिए तय्यार ही नहीं। क्यूँकि पूरी क़ौम का
माथा सख़्त और दिल अड़ा हुआ है। 8 लेकिन मैं ने
तेरा चिहरा भी उन के चिहरे जैसा सख़्त कर दिया,
तेरा माथा भी उन के माथे जैसा मज़बूत कर दिया है।
9 तू उन का मुक़ाबला कर सकेगा, क्यूँकि मैं ने तेरे
माथे को हीरे जैसा मज़बूत, चक़्माक़ जैसा पाएदार
कर दिया है। गो यह क़ौम बाग़ी है तो भी उन से
ख़ौफ़ न खा, न उन के सुलूक से दहशतज़दा हो।"
10 अल्लाह ने मज़ीद फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, मेरी
हर बात पर ध्यान दे कर उसे ज़हन में बिठा। 11 अब
रवाना हो कर अपनी क़ौम के उन अफ़राद के पास
जा जो बाबल में जिलावतन हुए हैं। उन्हें वह कुछ
सुना दे जो रब क़ादिर-ए-मुतलक़ उन्हें बताना चाहता
है, ख़्वाह वह सुनें या न सुनें।"
12 फिर अल्लाह के रूह ने मुझे वहाँ से उठाया।
जब रब का जलाल अपनी जगह से उठा तो मैं ने
अपने पीछे एक गड़गड़ाती आवाज़ सुनी। 13 फ़िज़ा
चारों जानदारों के शोर से गूँज उठी जब उन के पर
एक दूसरे से लगने और उन के पहिए घूमने लगे।
14 अल्लाह का रूह मुझे उठा कर वहाँ से ले गया, और
मैं तल्ख़मिज़ाजी और बड़ी सरगर्मी से रवाना हुआ।
क्यूँकि रब का हाथ ज़ोर से मुझ पर ठहरा हुआ था।
15 चलते चलते मैं दरया-ए-किबार की आबादी तल-
अबीब में रहने वाले जिलावतनों के पास पहुँच गया।
मैं उन के दरमियान बैठ गया। सात दिन तक मेरी
हालत गुमसुम रही।

मेरी क़ौम को आगाह कर!

16 सात दिन के बाद रब मुझ से हमकलाम हुआ,
17 "ऐ आदमज़ाद, मैं ने तुझे इस्राईली क़ौम पर
पहरेदार बनाया, इस लिए जब भी तुझे मुझ से कलाम
मिले तो उन्हें मेरी तरफ़ से आगाह कर!
18 मैं तेरे ज़रीए बेदीन को इत्तिला दूँगा कि उसे मरना
ही है ताकि वह अपनी बुरी राह से हट कर बच जाए।
अगर तू उसे यह पैग़ाम न पहुँचाए, न उसे तम्बीह करे
और वह अपने क़ुसूर के बाइस मर जाए तो मैं तुझे
ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा। 19 लेकिन
अगर वह तेरी तम्बीह पर अपनी बेदीनी और बुरी राह
से न हटे तो यह अलग बात है। बेशक वह मरेगा,
लेकिन तू ज़िम्मादार नहीं ठहरेगा बल्कि अपनी जान
को छुड़ाएगा।
20 जब रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी को छोड़ कर
बुरी राह पर आ जाएगा तो मैं तुझे उसे आगाह करने
की ज़िम्मादारी दूँगा। अगर तू यह करने से बाज़ रहा
तो तू ही ज़िम्मादार ठहरेगा जब मैं उसे ठोकर खिला
कर मार डालूँगा। उस वक़्त उस के रास्त काम याद
नहीं रहेंगे बल्कि वह अपने गुनाह के सबब से मरेगा।
लेकिन तू ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा।
21 लेकिन अगर तू उसे तम्बीह करे और वह अपने
गुनाह से बाज़ आए तो वह मेरी तम्बीह को क़बूल
करने के बाइस बचेगा, और तू भी अपनी जान को
छुड़ाएगा।"
22 वहीं रब का हाथ दुबारा मुझ पर आ ठहरा। उस
ने फ़रमाया, "उठ, यहाँ से निकल कर वादी के खुले
मैदान में चला जा! वहाँ मैं तुझ से हमकलाम हूँगा।"
23 मैं उठा और निकल कर वादी के खुले मैदान
में चला गया। जब पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि रब
का जलाल वहाँ यूँ मौजूद है जिस तरह पहली रोया में
दरया-ए-किबार के किनारे पर था। मैं मुँह के बल गिर
गया। 24 तब अल्लाह के रूह ने आ कर मुझे दुबारा
खड़ा किया और फ़रमाया, "अपने घर में जा कर
अपने पीछे कुंडी लगा। 25 ऐ आदमज़ाद, लोग तुझे
रस्सियों में जकड़ कर बन्द रखेंगे ताकि तू निकल कर
दूसरों में न फिर सके। 26 मैं होने दूँगा कि तेरी ज़बान
तालू से चिपक जाए और तू ख़ामोश रह कर उन्हें डाँट
न सके। क्यूँकि यह क़ौम सरकश है। 27 लेकिन जब
भी मैं तुझ से हमकलाम हूँगा तो तेरे मुँह को खोलूँगा।
तब तू मेरा कलाम सुना कर कहेगा, 'रब क़ादिर-ए-

मुतलक़ फ़रमाता है!' तब जो सुनने के लिए तय्यार
हो वह सुने, और जो तय्यार न हो वह न सुने। क्यूँकि
यह क़ौम सरकश है।

यरूशलम का मुहासरा

4 1 ऐ आदमज़ाद, अब एक कच्ची ईंट ले और
उसे अपने सामने रख कर उस पर यरूशलम
शहर का नक़्शा कन्दा कर। 2 फिर यह नक़्शा शहर
का मुहासरा दिखाने के लिए इस्तेमाल कर। बुर्ज
और पुश्ते बना कर घेरा डाल। यरूशलम के बाहर
लश्करगाह लगा कर शहर के इर्दगिर्द क़िलाशिकन
मशीनें तय्यार रख। 3 फिर लोहे की प्लेट ले कर अपने
और शहर के दरमियान रख। इस से मुराद लोहे की
दीवार है। शहर को घूर घूर कर ज़ाहिर कर कि तू उस
का मुहासरा कर रहा है। इस निशान से तू दिखाएगा
कि इस्राईलियों के साथ क्या कुछ होने वाला है।
4–5 इस के बाद अपने बाएँ पहलू पर लेट कर
अलामती तौर पर मुल्क-ए-इस्राईल की सज़ा पा।
जितने भी साल वह गुनाह करते आए हैं उतने ही दिन
तुझे इसी हालत में लेटे रहना है। वह 390 साल गुनाह
करते रहे हैं, इस लिए तू 390 दिन उन के गुनाहों की
सज़ा पाएगा। 6 इस के बाद अपने दाएँ पहलू पर लेट
जा और मुल्क-ए-यहूदाह की सज़ा पा। मैं ने मुक़र्रर
किया है कि तू 40 दिन यह करे, क्यूँकि यहूदाह 40
साल गुनाह करता रहा है। 7 घेरे हुए शहर यरूशलम
को घूर घूर कर अपने नंगे बाज़ू से उसे धमकी दे और
उस के ख़िलाफ़ पेशगोई कर। 8 साथ साथ मैं तुझे
रस्सियों में जकड़ लूँगा ताकि तू उतने दिन करवटें
बदल न सके जितने दिन तेरा मुहासरा किया जाएगा।
9 अब कुछ गन्दुम, जौ, लोबिया, मसूर, बाजरा और
यहाँ मुस्तामल घटिया क़िस्म का गन्दुम जमा करके
एक ही बर्तन में डाल। बाएँ पहलू पर लेटते वक़्त
यानी पूरे 390 दिन इन ही से रोटी बना कर खा।
10–11 फ़ी दिन तुझे रोटी का एक पाओ खाने और
पानी का पौना लिटर पीने की इजाज़त है। यह चीज़ें
एहतियात से तोल कर मुक़र्ररा औक़ात पर खा और
पी। 12 रोटी को जौ की रोटी की तरह तय्यार करके
खा। ईंधन के लिए इन्सान का फ़ुज़्ला इस्तेमाल
कर। ध्यान दे कि सब इस के गवाह हों।" 13 रब ने
फ़रमाया, "जब मैं इस्राईलियों को दीगर अक़्वाम में
मुन्तशिर करूँगा तो उन्हें नापाक रोटी खानी पड़ेगी।"
14 यह सुन कर मैं बोल उठा, "हाय, हाय! ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं कभी भी नापाक नहीं हुआ।
जवानी से ले कर आज तक मैं ने कभी ऐसे जानवर
का गोश्त नहीं खाया जिसे ज़बह नहीं किया गया था
या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ा था। नापाक गोश्त
कभी मेरे मुँह में नहीं आया।"
15 तब रब ने जवाब दिया, "ठीक है, रोटी को बनाने
के लिए तू इन्सान के फ़ुज़्ले के बजाय गोबर इस्तेमाल
कर सकता है। मैं तुझे इस की इजाज़त देता हूँ।"
16 उस ने मज़ीद फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, मैं
यरूशलम में रोटी का बन्द-ओ-बस्त ख़त्म हो जाने
दूँगा। तब लोग अपना खाना बड़ी एहतियात से
और परेशानी में तोल तोल कर खाएँगे। वह पानी
का क़तरा क़तरा गिन कर उसे लरज़ते हुए पिएँगे।
17 क्यूँकि खाने और पानी की क़िल्लत होगी। सब मिल
कर तबाह हो जाएंगे, सब अपने गुनाहों के सबब से
सड़ जाएंगे।

यरूशलम के ख़िलाफ़ तलवार

5 1 ऐ आदमज़ाद, तेज़ तलवार ले कर अपने सर
के बाल और दाढ़ी मुंडवा। फिर तराज़ू में बालों
को तोल कर तीन हिस्सों में तक़्सीम कर। 2 कच्ची ईंट
पर कन्दा यरूशलम के नक़्शे के ज़रीए ज़ाहिर कर
कि शहर का मुहासरा ख़त्म हो गया है। फिर बालों
की एक तिहाई शहर के नक़्शे के बीच में जला दे,
एक तिहाई तलवार से मार मार कर शहर के इर्दगिर्द
ज़मीन पर गिरने दे, और एक तिहाई हवा में उड़ा कर
मुन्तशिर कर। क्यूँकि मैं इसी तरह अपनी तलवार
को मियान से खैंच कर लोगों के पीछे पड़ जाऊँगा।
3 लेकिन बालों में से थोड़े थोड़े बचा ले और अपनी
झोली में लपेट कर महफ़ूज़ रख। 4 फिर इन में से

कुछ ले और आग में फैंक कर भस्म कर। यही आग
इस्राईल के पूरे घराने में फैल जाएगी।”
5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, “यही
यरूशलम की हालत है! गो मैं ने उसे दीगर
अक़्वाम के दरमियान रख कर दीगर ममालिक का
मर्कज़ बना दिया 6 तो भी वह मेरे अह्काम और
हिदायात से सरकश हो गया है। गिर्द-ओ-नवाह की
अक़्वाम-ओ-ममालिक की निस्बत उस की हरकतें
कहीं ज़्यादा बुरी हैं। क्यूँकि उस के बाशिन्दों ने मेरे
अह्काम को रद्द करके मेरी हिदायात के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारने से इन्कार कर दिया है।” 7 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, “तुम्हारी हरकतें
इर्दगिर्द की क़ौमों की निस्बत कहीं ज़्यादा बुरी
हैं। न तुम ने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ारी, न मेरे अह्काम पर अमल किया। बल्कि तुम
इतने शरारती थे कि गिर्द-ओ-नवाह की अक़्वाम
के रस्म-ओ-रिवाज से भी बदतर ज़िन्दगी गुज़ारने
लगे।” 8 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है, “ऐ यरूशलम, अब मैं ख़ुद तुझ से निपट लूँगा।
दीगर अक़्वाम के देखते देखते मैं तेरी अदालत
करूँगा। 9 तेरी घिनौनी बुतपरस्ती के सबब से मैं तेरे
साथ ऐसा सुलूक करूँगा जैसा मैं ने पहले कभी नहीं
किया है और आइन्दा भी कभी नहीं करूँगा। 10 तब
तेरे दरमियान बाप अपने बेटों को और बेटे अपने
बाप को खाएँगे। मैं तेरी अदालत यूँ करूँगा कि
जितने बचेंगे वह सब हवा में उड़ कर चारों तरफ़
मुन्तशिर हो जाएंगे।”
11 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरी हयात
की क़सम, तू ने अपने घिनौने बुतों और रस्म-ओ-
रिवाज से मेरे मक़्दिस की बेहुरमती की है, इस
लिए मैं तुझे मुंडवा कर तबाह कर दूँगा। न मैं तुझ
पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। 12 तेरे बाशिन्दों
की एक तिहाई मोहलिक बीमारियों और काल से
शहर में हलाक हो जाएगी। दूसरी तिहाई तलवार की
ज़द में आ कर शहर के इर्दगिर्द मर जाएगी। तीसरी
तिहाई को मैं हवा में उड़ा कर मुन्तशिर कर दूँगा
और फिर तलवार को मियान से खैंच कर उन का
पीछा करूँगा। 13 यूँ मेरा क़हर ठंडा हो जाएगा और
मैं इन्तिक़ाम ले कर अपना ग़ुस्सा उतारूँगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं, रब ग़ैरत में उन से हमकलाम हुआ
हूँ।
14 मैं तुझे मल्बे का ढेर और इर्दगिर्द की अक़्वाम
की लान-तान का निशाना बना दूँगा। हर गुज़रने वाला
तेरी हालत देख कर ‘तौबा तौबा’ कहेगा। 15 जब मेरा
ग़ज़ब तुझ पर टूट पड़ेगा और मैं तेरी सख़्त अदालत
और सरज़निश करूँगा तो उस वक़्त तू पड़ोस की
अक़्वाम के लिए मज़ाक़ और लानत-मलामत का
निशाना बन जाएगा। तेरी हालत को देख कर उन
के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह मुह्तात रहने का
सबक़ सीखेंगे। यह मेरा, रब का फ़रमान है।
16 ऐ यरूशलम के बाशिन्दो, मैं काल के मोहलिक
और तबाहकुन तीर तुम पर बरसाऊँगा ताकि तुम
हलाक हो जाओ। काल यहाँ तक ज़ोर पकड़ेगा कि
खाने का बन्द-ओ-बस्त ख़त्म हो जाएगा। 17 मैं तुम्हारे
ख़िलाफ़ काल और वहशी जानवर भेजूँगा ताकि तू
बेऔलाद हो जाए। मोहलिक बीमारियाँ और क़त्ल-
ओ-ग़ारत तेरे बीच में से गुज़रेगी, और मैं तेरे ख़िलाफ़
तलवार चलाऊँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

बुलन्दियों पर मज़ारों की अदालत

6 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद,
इस्राईल के पहाड़ों की तरफ़ रुख़ करके उन के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर। 3 उन से कह, ‘ऐ इस्राईल के
पहाड़ो, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का कलाम सुनो! वह
पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों और वादियों के बारे में
फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ तलवार चला कर
तुम्हारी ऊँची जगहों के मन्दिरों को तबाह कर दूँगा।
4 जिन क़ुर्बानगाहों पर तुम अपने जानवर और बख़ूर
जलाते हो वह ढा दूँगा। मैं तेरे मक़्तूलों को तेरे बुतों
के सामने ही फैंक छोड़ूँगा। 5 मैं इस्राईलियों की लाशों
को उन के बुतों के सामने डाल कर तुम्हारी हड्डियों
को तुम्हारी क़ुर्बानगाहों के इर्दगिर्द बिखेर दूँगा।

6 जहाँ भी तुम आबाद हो वहाँ तुम्हारे शहर खंडरात
बन जाएंगे और ऊँची जगहों के मन्दिर मिस्मार हो
जाएंगे। क्यूँकि लाज़िम है कि जिन क़ुर्बानगाहों पर
तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह ख़ाक
में मिलाई जाएँ, कि तुम्हारे बुतों को पाश पाश किया
जाए, कि तुम्हारी बुतपरस्ती की चीज़ें नेस्त-ओ-नाबूद
हो जाएँ। 7 मक़्तूल तुम्हारे दरमियान गिर कर पड़े
रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

8 लेकिन मैं चन्द एक को ज़िन्दा छोड़ूँगा। क्यूँकि
जब तुम्हें दीगर ममालिक और अक़्वाम में मुन्तशिर
किया जाएगा तो कुछ तलवार से बचे रहेंगे। 9 जब
यह लोग क़ैदी बन कर मुख़्तलिफ़ ममालिक में लाए
जाएंगे तो उन्हें मेरा ख़याल आएगा। उन्हें याद आएगा
कि मुझे कितना ग़म खाना पड़ा जब उन के ज़िनाकार
दिल मुझ से दूर हुए और उन की आँखें अपने बुतों से
ज़िना करती रहीं। तब वह यह सोच कर कि हम ने
कितना बुरा काम किया और कितनी मकरूह हरकतें
की हैं अपने आप से घिन खाएँगे। 10 उस वक़्त वह
जान लेंगे कि मैं रब हूँ, कि उन पर यह आफ़त लाने
का एलान करते वक़्त मैं ख़ाली बातें नहीं कर रहा
था'।"

11 फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझ से फ़रमाया,
"तालियाँ बजा कर पाँओ ज़ोर से ज़मीन पर मार!
साथ साथ यह कह, इस्राईली क़ौम की घिनौनी
हरकतों पर अफ़्सोस! वह तलवार, काल और
मोहलिक बीमारियों की ज़द में आ कर हलाक हो
जाएंगे। 12 जो दूर है वह मोहलिक वबा से मर जाएगा,
जो क़रीब है वह तलवार से क़त्ल हो जाएगा, और
जो बच जाए वह भूके मरेगा। यूँ मैं अपना ग़ज़ब उन
पर नाज़िल करूँगा। 13 वह जान लेंगे कि मैं रब हूँ
जब उन के मक़्तूल उन के बुतों के दरमियान, उन
की क़ुर्बानगाहों के इर्दगिर्द, हर पहाड़ और पहाड़ की
चोटी पर और हर हरे दरख़्त और बलूत के घने दरख़्त
के साय में नज़र आएँगे। जहाँ भी वह अपने बुतों को
ख़ुश करने के लिए कोशाँ रहे वहाँ उन की लाशें पाई
जाएँगी। 14 मैं अपना हाथ उन के ख़िलाफ़ उठा कर
मुल्क को यहूदाह के रेगिस्तान से ले कर दिबला तक
तबाह कर दूँगा। उन की तमाम आबादियाँ वीरान-
ओ-सुन्सान हो जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।"

मुल्क का बुरा अन्जाम

7 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ आदमज़ाद,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ मुल्क-ए-इस्राईल से
फ़रमाता है कि तेरा अन्जाम क़रीब ही है! जहाँ
भी देखो, पूरा मुल्क तबाह हो जाएगा। 3 अब तेरा
सत्यानास होने वाला है, मैं ख़ुद अपना ग़ज़ब तुझ
पर नाज़िल करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख
परख कर तेरी अदालत करूँगा, तेरी मकरूह हरकतों
का पूरा अज्र दूँगा। 4 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न
रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब
अज्र दूँगा। क्यूँकि तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे
दरमियान ही उग कर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ।"

5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "आफ़त पर
आफ़त ही आ रही है। 6 तेरा अन्जाम, हाँ, तेरा
अन्जाम आ रहा है। अब वह उठ कर तुझ पर लपक
रहा है। 7 ऐ मुल्क के बाशिन्दे, तेरी फ़ना पहुँच रही
है। अब वह वक़्त क़रीब ही है, वह दिन जब तेरे
पहाड़ों पर ख़ुशी के नारों के बजाय अफ़्रा-तफ़्री का
शोर मचेगा। 8 अब मैं जल्द ही अपना ग़ज़ब तुझ
पर नाज़िल करूँगा, जल्द ही अपना ग़ुस्सा तुझ पर
उतारूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख परख कर तेरी
अदालत करूँगा, तेरी घिनौनी हरकतों का पूरा अज्र
दूँगा। 9 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा
बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज्र दूँगा।
क्यूँकि तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान
ही उग कर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं
यानी रब ही ज़र्ब लगा रहा हूँ।

10 देखो, मज़्कूरा दिन क़रीब ही है! तेरी हलाकत
पहुँच रही है। नाइन्साफ़ी के फूल और शोख़ी की
कोंपलें फूट निकली हैं। 11 लोगों का ज़ुल्म बढ़ बढ़

कर लाठी बन गया है जो उन्हें उन की बेदीनी की
सज़ा देगी। कुछ नहीं रहेगा, न वह ख़ुद, न उन की
दौलत, न उन का शोर-शराबा, और न उन की शान-
ओ-शौकत। 12 अदालत का दिन क़रीब ही है। उस
वक़्त जो कुछ ख़रीदे वह ख़ुश न हो, और जो कुछ
फ़रोख़्त करे वह ग़म न खाए। क्यूँकि अब इन चीज़ों
का कोई फ़ाइदा नहीं, इलाही ग़ज़ब सब पर नाज़िल
हो रहा है। 13 बेचने वाले बच भी जाएँ तो वह अपना
कारोबार नहीं कर सकेंगे। क्यूँकि सब पर इलाही
ग़ज़ब का फ़ैसला अटल है और मन्सूख़ नहीं हो
सकता। लोगों के गुनाहों के बाइस एक जान भी
नहीं छूटेगी। 14 बेशक लोग बिगुल बजा कर जंग की
तय्यारियाँ करें, लेकिन क्या फ़ाइदा? लड़ने के लिए
कोई नहीं निकलेगा, क्यूँकि सब के सब मेरे क़हर
का निशाना बन जाएंगे।

15 बाहर तलवार, अन्दर मोहलिक वबा और भूक।
क्यूँकि दीहात में लोग तलवार की ज़द में आ जाएंगे,
शहर में काल और मोहलिक वबा से हलाक हो
जाएंगे। 16 जितने भी बचेंगे वह पहाड़ों में पनाह लेंगे,
घाटियों में फ़ाख़्ताओं की तरह ग़ूँ ग़ूँ करके अपने
गुनाहों पर आह-ओ-ज़ारी करेंगे। 17 हर हाथ से ताक़त
जाती रहेगी, हर घुटना डाँवाँडोल हो जाएगा।

18 वह टाट के मातमी कपड़े ओढ़ लेंगे, उन पर
कपकपी तारी हो जाएगी। हर चिहरे पर शर्मिन्दगी
नज़र आएगी, हर सर मुंडवाया गया होगा। 19 अपनी
चाँदी को वह गलियों में फैंक देंगे, अपने सोने को
ग़िलाज़त समझेंगे। क्यूँकि जब रब का ग़ज़ब उन पर
नाज़िल होगा तो न उन की चाँदी उन्हें बचा सकेगी,
न सोना। उन से न वह अपनी भूक मिटा सकेंगे,
न अपने पेट को भर सकेंगे, क्यूँकि यही चीज़ें उन
के लिए गुनाह का बाइस बन गई थीं। 20 उन्हों ने
अपने ख़ूबसूरत ज़ेवरात पर फ़ख़र करके उन से अपने
घिनौने बुत और मकरूह मुजस्समे बनाए, इस लिए
मैं होने दूँगा कि वह अपनी दौलत से घिन खाएँगे।

21 मैं यह सब कुछ परदेसियों के हवाले कर दूँगा,
और वह उसे लूट लेंगे। दुनिया के बेदीन उसे छीन कर
उस की बेहुरमती करेंगे। 22 मैं अपना मुँह इस्राईलियों
से फेर लूँगा तो अजनबी मेरे क़ीमती मक़ाम की
बेहुरमती करेंगे। डाकू उस में घुस कर उसे नापाक
करेंगे। 23 ज़न्जीरें तय्यार कर! क्यूँकि मुल्क में क़त्ल-
ओ-ग़ारत आम हो गई है, शहर ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से
भर गया है। 24 मैं दीगर अक़्वाम के सब से शरीर
लोगों को बुलाऊँगा ताकि इस्राईलियों के घरों पर
क़ब्ज़ा करें, मैं ज़ोरावरों का तकब्बुर ख़ाक में मिला
दूँगा। जो भी मक़ाम उन्हें मुक़द्दस हो उस की बेहुरमती
की जाएगी।

25 जब दहशत उन पर तारी होगी तो वह अम्न-
ओ-अमान तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। अम्न-ओ-
अमान कहीं भी पाया नहीं जाएगा। 26 आफ़त पर
आफ़त ही उन पर आएगी, यके बाद दीगरे बुरी ख़बरें
उन तक पहुँचेंगी। वह नबी से रोया मिलने की उम्मीद
करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। न इमाम उन्हें शरीअत की
तालीम, न बुज़ुर्ग उन्हें मश्वरा दे सकेंगे। 27 बादशाह
मातम करेगा, रईस हैबतज़दा होगा, और अवाम के
हाथ थरथराएँगे। मैं उन के चाल-चलन के मुताबिक़
उन से निपटूँगा, उन के अपने ही उसूलों के मुताबिक़
उन की अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं
ही रब हूँ।”

रब के घर में बुतपरस्ती की रोया

8 1 जिलावतनी के छटे साल के छटे महीने के
पाँचवें दिन [8]मैं अपने घर में बैठा था। यहूदाह
के बुज़ुर्ग पास ही बैठे थे। तब रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2 रोया में मैं ने किसी को
देखा जिस की शक्ल-ओ-सूरत इन्सान की मानिन्द
थी। लेकिन कमर से ले कर पाँओ तक वह आग
की मानिन्द भड़क रहा था जबकि कमर से ले कर
सर तक चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था।

[8] 17 सितम्बर।

3 उस ने कुछ आगे बढ़ा दिया जो हाथ सा लग रहा
था और मेरे बालों को पकड़ लिया। फिर रूह ने मुझे
उठाया और ज़मीन और आसमान के दरमियान चलते
चलते यरूशलम तक पहुँचाया। अभी तक मैं अल्लाह
की रोया देख रहा था। मैं रब के घर के अन्दरूनी
सहन के उस दरवाज़े के पास पहुँच गया जिस का
रुख़ शिमाल की तरफ़ है। दरवाज़े के क़रीब एक बुत
पड़ा था जो रब को मुश्तइल करके ग़ैरत दिलाता है।
4 वहाँ इस्राईल के ख़ुदा का जलाल मुझ पर उसी
तरह ज़ाहिर हुआ जिस तरह पहले मैदान की रोया
में मुझ पर ज़ाहिर हुआ था। 5 वह मुझ से हमकलाम
हुआ, "ऐ आदमज़ाद, शिमाल की तरफ़ नज़र उठा।"
मैं ने अपनी नज़र शिमाल की तरफ़ उठाई तो दरवाज़े
के बाहर क़ुर्बानगाह देखी। साथ साथ दरवाज़े के
क़रीब ही वह बुत खड़ा था जो रब को ग़ैरत दिलाता
है। 6 फिर रब बोला, "ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे वह
कुछ नज़र आता है जो इस्राईली क़ौम यहाँ करती
है? यह लोग यहाँ बड़ी मकरूह हरकतें कर रहे हैं
ताकि मैं अपने मक़्दिस से दूर हो जाऊँ। लेकिन तू
इन से भी ज़्यादा मकरूह चीज़ें देखेगा।"
7 वह मुझे रब के घर के बैरूनी सहन के दरवाज़े के
पास ले गया तो मैं ने दीवार में सूराख़ देखा। 8 अल्लाह
ने फ़रमाया, "आदमज़ाद, इस सूराख़ को बड़ा बना।"
मैं ने ऐसा किया तो दीवार के पीछे दरवाज़ा नज़र
आया। 9 तब उस ने फ़रमाया, "अन्दर जा कर वह
शरीर और घिनौनी हरकतें देख जो लोग यहाँ कर रहे
हैं।"
10 मैं दरवाज़े में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि
दीवारों पर चारों तरफ़ बुतपरस्ती की तस्वीरें कन्दा
हुई हैं। हर क़िस्म के रेंगने वाले और दीगर मकरूह
जानवर बल्कि इस्राईली क़ौम के तमाम बुत उन पर
नज़र आए। 11 इस्राईली क़ौम के 70 बुज़ुर्ग बख़ूरदान
पकड़े उन के सामने खड़े थे। बख़ूरदानों में से बख़ूर
का ख़ुश्बूदार धुआँ उठ रहा था। याज़नियाह बिन
साफ़न भी बुज़ुर्गों में शामिल था।
12 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, क्या
तू ने देखा कि इस्राईली क़ौम के बुज़ुर्ग अंधेरे में क्या
कुछ कर रहे हैं? हर एक ने अपने घर में अपने बुतों के
लिए कमरा मख़्सूस कर रखा है। क्यूँकि वह समझते
हैं, 'हम रब को नज़र नहीं आते, उस ने हमारे मुल्क
को तर्क कर दिया है।' 13 लेकिन आ, मैं तुझे इस से
भी ज़्यादा क़ाबिल-ए-घिन हरकतें दिखाता हूँ।"
14 वह मुझे रब के घर के अन्दरूनी सहन के
शिमाली दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ औरतें बैठी
थीं जो रो रो कर तम्मूज़ देवता [h]का मातम कर रही
थीं। 15 रब ने सवाल किया, "आदमज़ाद, क्या तुझे
यह नज़र आता है? लेकिन आ, मैं तुझे इस से भी
ज़्यादा क़ाबिल-ए-घिन हरकतें दिखाता हूँ।"
16 वह मुझे रब के घर के अन्दरूनी सहन में ले
गया। रब के घर के दरवाज़े पर यानी सामने वाले
बरामदे और क़ुर्बानगाह के दरमियान ही 25 आदमी
खड़े थे। उन का रुख़ रब के घर की तरफ़ नहीं बल्कि
मशरिक़ की तरफ़ था, और वह सूरज को सिज्दा कर
रहे थे।
17 रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे यह
नज़र आता है? और यह मकरूह हरकतें भी यहूदाह
के बाशिन्दों के लिए काफ़ी नहीं हैं बल्कि वह पूरे
मुल्क को ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से भर कर मुझे मुश्तइल
करने के लिए कोशाँ रहते हैं। देख, अब वह अपनी
नाकों के सामने अंगूर की बेल लहरा कर बुतपरस्ती
की एक और रस्म अदा कर रहे हैं! 18 चुनाँचे मैं अपना
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। न मैं उन पर तरस
खाऊँगा, न रहम करूँगा। ख़्वाह वह मदद के लिए
कितने ज़ोर से क्यूँ न चीख़ें मैं उन की नहीं सुनूँगा।"

---

[h]तम्मूज़ मसोपुतामिया का एक देवता था जिस के पैरोकार समझते थे कि वह मौसम-ए-गर्मा के इख़तिताम पर हरियाली के साथ साथ मर जाता और मौसम-ए-बहार में दुबारा जी उठता है।

यरूशलम तबाह हो जाएगा

9 1 फिर मैं ने अल्लाह की बुलन्द आवाज़ सुनी,
“यरूशलम की अदालत क़रीब आ गई है!
आओ, हर एक अपना तबाहकुन हथियार पकड़
कर खड़ा हो जाए!” 2 तब छः आदमी रब के घर
के शिमाली दरवाज़े में दाख़िल हुए। हर एक अपना
तबाहकुन हथियार थामे चल रहा था। उन के साथ
एक और आदमी था जिस का लिबास कतान का था।
उस के पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था।
यह आदमी क़रीब आ कर पीतल की क़ुर्बानगाह के
पास खड़े हो गए।

3 इस्राईल के ख़ुदा का जलाल अब तक करूबी
फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था। अब वह वहाँ से
उड़ कर रब के घर की दहलीज़ के पास रुक गया।
फिर रब कतान से मुलब्बस उस मर्द से हमकलाम
हुआ जिस के पटके से कातिब का सामान लटका
हुआ था। 4 उस ने फ़रमाया, “जा, यरूशलम शहर
में से गुज़र कर हर एक के माथे पर निशान लगा
दे जो बाशिन्दों की तमाम मकरूह हरकतों को देख
कर आह-ओ-ज़ारी करता है।” 5 मेरे सुनते सुनते रब
ने दीगर आदमियों से कहा, “पहले आदमी के पीछे
पीछे चल कर लोगों को मार डालो! न किसी पर
तरस खाओ, न रहम करो 6 बल्कि बुज़ुर्गों को कुंवारे-
कुंवारियों और बाल-बच्चों समेत मौत के घाट उतारो।
सिर्फ़ उन्हें छोड़ना जिन के माथे पर निशान है। मेरे
मक़्दिस से शुरू करो!”

चुनाँचे आदमियों ने उन बुज़ुर्गों से शुरू किया जो
रब के घर के सामने खड़े थे। 7 फिर रब उन से दुबारा
हमकलाम हुआ, “रब के घर के सहनों को मक़्तूलों
से भर कर उस की बेहुरमती करो, फिर वहाँ से
निकल जाओ!” वह निकल गए और शहर में से गुज़र
कर लोगों को मार डालने लगे। 8 रब के घर के सहन
में सिर्फ़ मुझे ही ज़िन्दा छोड़ा गया था।

मैं औंधे मुँह गिर कर चीख़ उठा, “ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, क्या तू यरूशलम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल
करके इस्राईल के तमाम बचे हुओं को मौत के
घाट उतारेगा?” 9 रब ने जवाब दिया, “इस्राईल
और यहूदाह के लोगों का क़ुसूर निहायत ही संगीन
है। मुल्क में क़त्ल-ओ-ग़ारत आम है, और शहर
नाइन्साफ़ी से भर गया है। क्यूँकि लोग कहते हैं,
‘रब ने मुल्क को तर्क किया है, हम उसे नज़र ही
नहीं आते।’ 10 इस लिए न मैं उन पर तरस खाऊँगा,
न रहम करूँगा बल्कि उन की हरकतों की मुनासिब
सज़ा उन के सरों पर लाऊँगा।”

11 फिर कतान से मुलब्बस वह आदमी लौट आया
जिस के पटके से कातिब का सामान लटका हुआ
था। उस ने इत्तिला दी, “जो कुछ तू ने फ़रमाया वह
मैं ने पूरा किया है।”

10 1 मैं ने उस गुम्बद पर नज़र डाली जो करूबी
फ़रिश्तों के सरों के ऊपर फैली हुई थी।
उस पर संग-ए-लाजवर्द [i]का तख़्त सा नज़र आया।
2 रब ने कतान से मुलब्बस मर्द से फ़रमाया, “करूबी
फ़रिश्तों के नीचे लगे पहियों के बीच में जा। वहाँ
से दो मुट्ठी भर कोएले ले कर शहर पर बिखेर दे।”
आदमी मेरे देखते देखते फ़रिश्तों के बीच में चला
गया। 3 उस वक़्त करूबी फ़रिश्ते रब के घर के जुनूब
में खड़े थे, और अन्दरूनी सहन बादल से भरा हुआ
था।

4 फिर रब का जलाल जो करूबी फ़रिश्तों के ऊपर
ठहरा हुआ था वहाँ से उठ कर रब के घर की दहलीज़
पर रुक गया। पूरा मकान बादल से भर गया बल्कि
सहन भी रब के जलाल की आब-ओ-ताब से भर
गया। 5 करूबी फ़रिश्ते अपने परों को इतने ज़ोर
से फड़फड़ा रहे थे कि उस का शोर बैरूनी सहन
तक सुनाई दे रहा था। यूँ लग रहा था कि क़ादिर-
ए-मुतलक़ ख़ुदा बोल रहा है। 6 जब रब ने कतान से
मुलब्बस आदमी को हुक्म दिया कि करूबी फ़रिश्तों

---

[i] lapis lazuli

के पहियों के बीच में से जलते हुए कोएले ले तो वह
उन के दरमियान चल कर एक पहिए के पास खड़ा
हुआ। 7 फिर करूबी फ़रिश्तों में से एक ने अपना
हाथ बढ़ा कर बीच में जलने वाले कोएलों में से कुछ
ले लिया और आदमी के हाथों में डाल दिया। कतान
से मुलब्बस यह आदमी कोएले ले कर चला गया।

रब अपने घर को छोड़ देता है

8 मैं ने देखा कि करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे
कुछ है जो इन्सानी हाथ जैसा लग रहा है। 9 हर
फ़रिश्ते के पास एक पहिया था। पुखराज [j]से बने यह
चार पहिए 10 एक जैसे थे। हर पहिए के अन्दर एक
और पहिया ज़ाविया-ए-क़ाइमा में घूम रहा था, 11 इस
लिए यह मुड़े बग़ैर हर रुख़ इख़तियार कर सकते
थे। जिस तरफ़ एक चल पड़ता उस तरफ़ बाक़ी भी
मुड़े बग़ैर चलने लगते। 12 फ़रिश्तों के जिस्मों की हर
जगह पर आँखें ही आँखें थीं। आँखें न सिर्फ़ सामने
नज़र आईं बल्कि उन की पीठ, हाथों और परों पर
भी बल्कि चारों पहियों पर भी। 13 तो भी यह पहिए
ही थे, क्यूँकि मैं ने ख़ुद सुना कि उन के लिए यही
नाम इस्तेमाल हुआ।

14 हर फ़रिश्ते के चार चिहरे थे। पहला चिहरा
करूबी का, दूसरा आदमी का, तीसरा शेरबबर का
और चौथा उक़ाब का चिहरा था। 15 फिर करूबी
फ़रिश्ते उड़ गए। वही जानदार थे जिन्हें मैं दरया-
ए-किबार के किनारे देख चुका था। 16 जब फ़रिश्ते
हरकत में आ जाते तो पहिए भी चलने लगते, और
जब फ़रिश्ते फड़फड़ा कर उड़ने लगते तो पहिए भी
उन के साथ उड़ने लगते। 17 फ़रिश्तों के रुकने पर
पहिए रुक जाते, और उन के उड़ने पर यह भी उड़
जाते, क्यूँकि जानदारों की रूह उन में थी।

18 फिर रब का जलाल अपने घर की दहलीज़ से हट
गया और दुबारा करूबी फ़रिश्तों के ऊपर आ कर
ठहर गया। 19 मेरे देखते देखते फ़रिश्ते अपने परों को
फैला कर चल पड़े। चलते चलते वह रब के घर के
मशरिक़ी दरवाज़े के पास रुक गए। ख़ुदा-ए- इस्राईल
का जलाल उन के ऊपर ठहरा रहा।

20 वही जानदार थे जिन्हें मैं ने दरया-ए-किबार के
किनारे ख़ुदा-ए- इस्राईल के नीचे देखा था। मैं ने जान
लिया कि यह करूबी फ़रिश्ते हैं। 21 हर एक के चार
चिहरे और चार पर थे, और परों के नीचे कुछ नज़र
आया जो इन्सानी हाथों की मानिन्द था। 22 उन के
चिहरों की शक्ल-ओ-सूरत उन चिहरों की मानिन्द थी
जो मैं ने दरया-ए-किबार के किनारे देखे थे। चलते
वक़्त हर जानदार सीधा अपने किसी एक चिहरे का
रुख़ इख़तियार करता था।

अल्लाह की यरूशलम के बुज़ुर्गों के लिए सख़्त सज़ा

11 1 तब रूह मुझे उठा कर रब के घर के
मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ
दरवाज़े पर 25 मर्द खड़े थे। मैं ने देखा कि क़ौम
के दो बुज़ुर्ग याज़नियाह बिन अज़्ज़ूर और फ़लतियाह
बिन बिनायाह भी उन में शामिल हैं। 2 रब ने फ़रमाया,
“ऐ आदमज़ाद, यह वही मर्द हैं जो शरीर मन्सूबे बांध
रहे और यरूशलम में बुरे मश्वरे दे रहे हैं। 3 यह कहते
हैं, ‘आने वाले दिनों में घर तामीर करने की ज़रूरत
नहीं। हमारा शहर तो देग है जबकि हम उस में पकने
वाला बेहतरीन गोश्त हैं।’ 4 आदमज़ाद, चूँकि वह
ऐसी बातें करते हैं इस लिए नबुव्वत कर! उन के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर!”

5 तब रब का रूह मुझ पर आ ठहरा, और उस ने
मुझे यह पेश करने को कहा, “रब फ़रमाता है, ‘ऐ
इस्राईली क़ौम, तुम इस क़िस्म की बातें करते हो। मैं
तो उन ख़यालात से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ जो तुम्हारे दिलों
से उभरते रहते हैं। 6 तुम ने इस शहर में मुतअद्दिद
लोगों को क़त्ल करके उस की गलियों को लाशों से
भर दिया है।’

---

[j]topas

7 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'बेशक
शहर देग है, लेकिन तुम उस में पकने वाला अच्छा
गोश्त नहीं होगे बल्कि वही जिन को तुम ने उस
के दरमियान क़त्ल किया है। तुम्हें मैं इस शहर से
निकाल दूँगा। 8 जिस तलवार से तुम डरते हो, उसी
को मैं तुम पर नाज़िल करूँगा।' यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है। 9 'मैं तुम्हें शहर से निकालूँगा
और परदेसियों के हवाले करके तुम्हारी अदालत
करूँगा। 10 तुम तलवार की ज़द में आ कर मर
जाओगे। इस्राईल की हुदूद पर ही मैं तुम्हारी अदालत
करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 11 चुनाँचे
न यरूशलम शहर तुम्हारे लिए देग होगा, न तुम उस
में बेहतरीन गोश्त होगे बल्कि मैं इस्राईल की हुदूद ही
पर तुम्हारी अदालत करूँगा। 12 तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ, जिस के अह्काम के मुताबिक़ तुम
ने ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी। क्यूँकि तुम ने मेरे उसूलों की
पैरवी नहीं की बल्कि अपनी पड़ोसी क़ौमों के उसूलों
की'।"

13 मैं अभी इस पेशगोई का एलान कर रहा था कि
फ़लतियाह बिन बिनायाह फ़ौत हुआ। यह देख कर
मैं मुँह के बल गिर गया और बुलन्द आवाज़ से चीख़
उठा, "हाय, हाय! ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, क्या
तू इस्राईल के बचे-खुचे हिस्से को सरासर मिटाना
चाहता है?"

अल्लाह इस्राईल को बहाल करेगा

14 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 15 "ऐ आदमज़ाद,
यरूशलम के बाशिन्दे तेरे भाइयों, तेरे रिश्तेदारों और
बाबल में जिलावतन हुए तमाम इस्राईलियों के बारे में
कह रहे हैं, 'यह लोग रब से कहीं दूर हो गए हैं, अब
इस्राईल हमारे ही क़ब्ज़े में है।' 16 जो इस क़िस्म की
बातें करते हैं उन्हें जवाब दे, रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि जी हाँ, मैं ने उन्हें दूर दूर भगा दिया,
और अब वह दीगर क़ौमों के दरमियान ही रहते हैं।
मैं ने ख़ुद उन्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर
दिया, ऐसे इलाक़ों में जहाँ उन्हें मक़्दिस में मेरे हुज़ूर
आने का मौक़ा थोड़ा ही मिलता है। 17 लेकिन रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ यह भी फ़रमाता है, 'मैं तुम्हें दीगर
क़ौमों में से निकाल लूँगा, तुम्हें उन मुल्कों से जमा
करूँगा जहाँ मैं ने तुम्हें मुन्तशिर कर दिया था। तब
मैं तुम्हें मुल्क-ए-इस्राईल दुबारा अता करूँगा।'

18 फिर वह यहाँ आ कर तमाम मकरूह बुत और
घिनौनी चीज़ें दूर करेंगे। 19 उस वक़्त मैं उन्हें नया
दिल बख़्श कर उन में नई रूह डालूँगा। मैं उन
का संगीन दिल निकाल कर उन्हें गोश्त-पोस्त का
नर्म दिल अता करूँगा। 20 तब वह मेरे अह्काम
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और ध्यान से मेरी
हिदायात पर अमल करेंगे। वह मेरी क़ौम होंगे, और
मैं उन का ख़ुदा हूँगा। 21 लेकिन जिन लोगों के दिल
उन के घिनौने बुतों से लिपटे रहते हैं उन के सर पर
मैं उन के ग़लत काम का मुनासिब अज्र लाऊँगा। यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

रब यरूशलम को छोड़ देता है

22 फिर करूबी फ़रिश्तों ने अपने परों को फैलाया,
उन के पहिए हरकत में आ गए और ख़ुदा-ए- इस्राईल
का जलाल जो उन के ऊपर था 23 उठ कर शहर से
निकल गया। चलते चलते वह यरूशलम के मशरिक़
में वाक़े पहाड़ पर ठहर गया। 24 अल्लाह के रूह की
अताकरदा इस रोया में रूह मुझे उठा कर मुल्क-ए-
बाबल के जिलावतनों के पास वापस ले गया। फिर
रोया ख़त्म हुई, 25 और मैं ने जिलावतनों को सब
कुछ सुनाया जो रब ने मुझे दिखाया था।

नबी सामान लपेट कर जिलावतनी की पेशगोई करता है

12 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, तू एक सरकश क़ौम के
दरमियान रहता है। गो उन की आँखें हैं तो भी कुछ
नहीं देखते, गो उन के कान हैं तो भी कुछ नहीं सुनते।
क्यूँकि यह क़ौम हटधर्म है।

3 ऐ आदमज़ाद, अब अपना सामान यूँ लपेट ले
जिस तरह तुझे जिलावतन किया जा रहा हो। फिर
दिन के वक़्त और उन के देखते देखते घर से रवाना
हो कर किसी और जगह चला जा। शायद उन्हें समझ
आए कि उन्हें जिलावतन होना है, हालाँकि यह क़ौम
सरकश है। 4 दिन के वक़्त उन के देखते देखते अपना
सामान घर से निकाल ले, यूँ जैसे तू जिलावतनी
के लिए तय्यारियाँ कर रहा हो। फिर शाम के वक़्त
उन की मौजूदगी में जिलावतन का सा किरदार अदा
करके रवाना हो जा। 5 घर से निकलने के लिए दीवार
में सूराख़ बना, फिर अपना सारा सामान उस में से
बाहर ले जा। सब इस के गवाह हों। 6 उन के देखते
देखते अंधेरे में अपना सामान कंधे पर रख कर वहाँ
से निकल जा। लेकिन अपना मुँह ढाँप ले ताकि तू
मुल्क को देख न सके। लाज़िम है कि तू यह सब
कुछ करे, क्यूँकि मैं ने मुक़र्रर किया है कि तू इस्राईली
क़ौम को आगाह करने का निशान बन जाए।"

7 मैं ने वैसा ही किया जैसा रब ने मुझे हुक्म दिया
था। मैं ने अपना सामान यूँ लपेट लिया जैसे मुझे
जिलावतन किया जा रहा हो। दिन के वक़्त मैं उसे
घर से बाहर ले गया, शाम को मैं ने अपने हाथों से
दीवार में सूराख़ बना लिया। लोगों के देखते देखते मैं
सामान को अपने कंधे पर उठा कर वहाँ से निकल
आया। उतने में अंधेरा हो गया था।

8 सुब्ह के वक़्त रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ, 9 "ऐ आदमज़ाद, इस हटधर्म क़ौम इस्राईल
ने तुझ से पूछा कि तू क्या कर रहा है? 10 उन्हें
जवाब दे, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस
पैग़ाम का ताल्लुक़ यरूशलम के रईस और शहर में
बसने वाले तमाम इस्राईलियों से है।' 11 उन्हें बता,
'मैं तुम्हें आगाह करने का निशान हूँ। जो कुछ मैं ने
किया वह तुम्हारे साथ हो जाएगा। तुम क़ैदी बन कर
जिलावतन हो जाओगे। 12 जो रईस तुम्हारे दरमियान
है वह अंधेरे में अपना सामान कंधे पर उठा कर
चला जाएगा। दीवार में सूराख़ बनाया जाएगा ताकि
वह निकल सके। वह अपना मुँह ढाँप लेगा ताकि
मुल्क को न देख सके। 13 लेकिन मैं अपना जाल उस
पर डाल दूँगा, और वह मेरे फंदे में फंस जाएगा। मैं
उसे बाबल लाऊँगा जो बाबलियों के मुल्क में है,
अगरचे वह उसे अपनी आँखों से नहीं देखेगा। वहीं
वह वफ़ात पाएगा। 14 जितने भी मुलाज़िम और दस्ते
उस के इर्दगिर्द होंगे उन सब को मैं हवा में उड़ा कर
चारों तरफ़ मुन्तशिर कर दूँगा। अपनी तलवार को
मियान से खैंच कर मैं उन के पीछे पड़ा रहूँगा। 15 जब
मैं उन्हें दीगर अक़्वाम और मुख़्तलिफ़ ममालिक में
मुन्तशिर करूँगा तो वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।
16 लेकिन मैं उन में से चन्द एक को बचा कर तलवार,
काल और मोहलिक वबा की ज़द में नहीं आने दूँगा।
क्यूँकि लाज़िम है कि जिन अक़्वाम में भी वह जा बसें
वहाँ वह अपनी मकरूह हरकतें बयान करें। तब यह
अक़्वाम भी जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ'।"

एक और निशान : हिज़्क़ीएल का काँपना

17 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 18 "ऐ आदमज़ाद,
खाना खाते वक़्त अपनी रोटी को लरज़ते हुए खा
और अपने पानी को परेशानी के मारे थरथराते हुए
पी। 19 साथ साथ उम्मत को बता, 'रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मुल्क-ए-इस्राईल के शहर
यरूशलम के बाशिन्दे परेशानी में अपना खाना खाएँगे
और दहशतज़दा हालत में अपना पानी पिएँगे, क्यूँकि
उन का मुल्क तबाह और हर बरकत से ख़ाली हो
जाएगा। और सबब उस के बाशिन्दों का ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद होगा। 20 जिन शहरों में लोग अब तक आबाद
हैं वह बर्बाद हो जाएंगे, मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो
जाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ'।"

अल्लाह का कलाम जल्द ही पूरा हो जाएगा

21 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 22 "ऐ आदमज़ाद,
यह कैसी कहावत है जो मुल्क-ए-इस्राईल में आम हो
गई है? लोग कहते हैं, 'जूँ जूँ दिन गुज़रते जाते हैं तूँ
तूँ हर रोया ग़लत साबित होती जाती है।' 23 जवाब में
उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं

इस कहावत को ख़त्म करूँगा, आइन्दा यह इस्राईल
में इस्तेमाल नहीं होगी।' उन्हें यह भी बता, 'वह वक़्त
क़रीब ही है जब हर रोया पूरी हो जाएगी। 24 क्यूँकि
आइन्दा इस्राईली क़ौम में न फ़रेबदिह रोया, न
चापलूसी की पेशगोइयाँ पाई जाएँगी। 25 क्यूँकि मैं
रब हूँ। जो कुछ मैं फ़रमाता हूँ वह वुजूद में आता
है। ऐ सरकश क़ौम, देर नहीं होगी बल्कि तुम्हारे
ही अय्याम में मैं बात भी करूँगा और उसे पूरा भी
करूँगा।' यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"
26 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, 27 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम तेरे बारे में कहती है, 'जो
रोया यह आदमी देखता है वह बड़ी देर के बाद ही
पूरी होगी, उस की पेशगोइयाँ दूर के मुस्तक़बिल के
बारे में हैं।' 28 लेकिन उन्हें जवाब दे, 'रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ भी मैं फ़रमाता हूँ
उस में मज़ीद देर नहीं होगी बल्कि वह जल्द ही पूरा
होगा।' यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

झूटे नबी हलाक हो जाएंगे

13 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईल के नाम-निहाद नबियों
के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! जो नबुव्वत करते वक़्त
अपने दिलों से उभरने वाली बातें ही पेश करते हैं,
उन से कह,
'रब का फ़रमान सुनो! 3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि उन अहमक़ नबियों पर अफ़्सोस
जिन्हें अपनी ही रूह से तहरीक मिलती है और जो
हक़ीक़त में रोया नहीं देखते। 4 ऐ इस्राईल, तेरे नबी
खंडरात में लोमड़ियों की तरह आवारा फिर रहे हैं।
5 न कोई दीवार के रख़नों में खड़ा हुआ, न किसी
ने उस की मरम्मत की ताकि इस्राईली क़ौम रब के
उस दिन क़ाइम रह सके जब जंग छिड़ जाएगी। 6 उन
की रोयाएँ धोका ही धोका, उन की पेशगोइयाँ झूट
ही झूट हैं। वह कहते हैं, "रब फ़रमाता है" गो रब
ने उन्हें नहीं भेजा। ताज्जुब की बात है कि तो भी
वह तवक़्क़ो करते हैं कि मैं उन की पेशगोइयाँ पूरी
होने दूँ! 7 हक़ीक़त में तुम्हारी रोयाएँ धोका ही धोका
और तुम्हारी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। तो भी तुम
कहते हो, "रब फ़रमाता है" हालाँकि मैं ने कुछ नहीं
फ़रमाया।
8 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
तुम्हारी फ़रेबदिह बातों और झूटी रोयाओं की वजह
से तुम से निपट लूँगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है। 9 मैं अपना हाथ उन नबियों के ख़िलाफ़
बढ़ा दूँगा जो धोके की रोयाएँ देखते और झूटी
पेशगोइयाँ सुनाते हैं। न वह मेरी क़ौम की मजलिस
में शरीक होंगे, न इस्राईली क़ौम की फ़हरिस्तों में
दर्ज होंगे। मुल्क-ए-इस्राईल में वह कभी दाख़िल नहीं
होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़
हूँ। 10 वह मेरी क़ौम को ग़लत राह पर ला कर
अम्न-ओ-अमान का एलान करते हैं अगरचे अम्न-
ओ-अमान है नहीं। जब क़ौम अपने लिए कच्ची सी
दीवार बना लेती है तो यह नबी उस पर सफेदी फेर
देते हैं। 11 लेकिन ऐ सफेदी करने वालो, ख़बरदार!
यह दीवार गिर जाएगी। मूसलाधार बारिश बरसेगी,
ओले पड़ेंगे और सख़्त आँधी उस पर टूट पड़ेगी।
12 तब दीवार गिर जाएगी, और लोग तन्ज़न तुम से
पूछेंगे कि अब वह सफेदी कहाँ है जो तुम ने दीवार
पर फेरी थी?
13 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तैश में
आ कर दीवार पर ज़बरदस्त आँधी आने दूँगा, ग़ुस्से
में उस पर मूसलाधार बारिश और मोहलिक ओले
बरसा दूँगा। 14 मैं उस दीवार को ढा दूँगा जिस पर
तुम ने सफेदी फेरी थी, उसे ख़ाक में यूँ मिला दूँगा
कि उस की बुन्याद नज़र आएगी। और जब वह गिर
जाएगी तो तुम भी उस की ज़द में आ कर तबाह हो
जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 15 यूँ
मैं दीवार और उस की सफेदी करने वालों पर अपना
ग़ुस्सा उतारूँगा। तब मैं तुम से कहूँगा कि दीवार भी
ख़त्म है और उस की सफेदी करने वाले भी, 16 यानी
इस्राईल के वह नबी जिन्हों ने यरूशलम को ऐसी
पेशगोइयाँ और रोयाएँ सुनाईं जिन के मुताबिक़ अम्न-

ओ-अमान का दौर क़रीब ही है, हालाँकि अम्न-ओ-अमान का इम्कान ही नहीं। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।'

17 ऐ आदमज़ाद, अब अपनी क़ौम की उन बेटियों का सामना कर जो नबुव्वत करते वक़्त वही बातें पेश करती हैं जो उन के दिलों से उभर आती हैं। उन के ख़िलाफ़ नबुव्वत करके 18 कह,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन औरतों पर अफ़्सोस जो तमाम लोगों के लिए कलाई से बांधने वाले तावीज़ सी लेती हैं, जो लोगों को फंसाने के लिए छोटों और बड़ों के सरों के लिए पर्दे बना लेती हैं। ऐ औरतो, क्या तुम वाक़ई समझती हो कि मेरी क़ौम में से बाज़ को फाँस सकती और बाज़ को अपने लिए ज़िन्दा छोड़ सकती हो? 19 मेरी क़ौम के दरमियान ही तुम ने मेरी बेहुरमती की, और यह सिर्फ़ चन्द एक मुट्ठी भर जौ और रोटी के दो चार टुकड़ों के लिए। अफ़्सोस, मेरी क़ौम झूट सुनना पसन्द करती है। इस से फ़ाइदा उठा कर तुम ने उसे झूट पेश करके उन्हें मार डाला जिन्हें मरना नहीं था और उन्हें ज़िन्दा छोड़ा जिन्हें ज़िन्दा नहीं रहना था।

20 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे तावीज़ों से निपट लूँगा जिन के ज़रीए तुम लोगों को परिन्दों की तरह पकड़ लेती हो। मैं जादूगरी की यह चीज़ें तुम्हारे बाज़ूओं से नोच कर फाड़ डालूँगा और उन्हें रिहा करूँगा जिन्हें तुम ने परिन्दों की तरह पकड़ लिया है। 21 मैं तुम्हारे पर्दों को फाड़ कर हटा लूँगा और अपनी क़ौम को तुम्हारे हाथों से बचा लूँगा। आइन्दा वह तुम्हारा शिकार नहीं रहेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।

22 तुम ने अपने झूट से रास्तबाज़ों को दुख पहुँचाया, हालाँकि यह दुख मेरी तरफ़ से नहीं था। साथ साथ तुम ने बेदीनों की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह अपनी बुरी राहों से बाज़ न आएँ, हालाँकि वह बाज़ आने से बच जाते। 23 इस लिए आइन्दा न तुम फ़रेबदिह रोया देखोगी, न दूसरों की क़िस्मत का हाल बताओगी। मैं अपनी क़ौम को तुम्हारे हाथों से छुटकारा दूँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ'।"

अल्लाह बुतपरस्ती का मुनासिब जवाब देगा

14 1 इस्राईल के कुछ बुज़ुर्ग मुझ से मिलने आए और मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ, 3 "ऐ आदमज़ाद, इन आदमियों के दिल अपने बुतों से लिपटे रहते हैं। जो चीज़ें उन के लिए ठोकर और गुनाह का बाइस हैं उन्हें उन्हों ने अपने मुँह के सामने ही रखा है। तो फिर क्या मुनासिब है कि मैं उन्हें जवाब दूँ जब वह मुझ से दरयाफ़्त करने आते हैं? 4 उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, यह लोग अपने बुतों से लिपटे रहते और वह चीज़ें अपने मुँह के सामने रखते हैं जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं। साथ साथ यह नबी के पास भी जाते हैं ताकि मुझ से मालूमात हासिल करें। जो भी इस्राईली ऐसा करे उसे मैं ख़ुद जो रब हूँ जवाब दूँगा, ऐसा जवाब जो उस के मुतअद्दिद बुतों के ऐन मुताबिक़ होगा। 5 मैं उन से ऐसा सुलूक करूँगा ताकि इस्राईली क़ौम के दिल को मज़बूती से पकड़ लूँ। क्यूँकि अपने बुतों की ख़ातिर सब के सब मुझ से दूर हो गए हैं।'

6 चुनाँचे इस्राईली क़ौम को बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तौबा करो! अपने बुतों और तमाम मकरूह रस्म-ओ-रिवाज से मुँह मोड़ कर मेरे पास वापस आ जाओ। 7 उस के अन्जाम पर ध्यान दो जो ऐसा नहीं करेगा, ख़्वाह वह इस्राईली या इस्राईल में रहने वाला परदेसी हो। अगर वह मुझ से दूर हो कर अपने बुतों से लिपट जाए और वह चीज़ें अपने सामने रखे जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं तो जब वह नबी की मारिफ़त मुझ से मालूमात हासिल करने की कोशिश करेगा तो मैं, रब उसे मुनासिब जवाब दूँगा। 8 मैं ऐसे शख़्स का सामना करके उस से यूँ निपट लूँगा कि वह दूसरों के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। मैं उसे यूँ मिटा दूँगा कि मेरी क़ौम में उस का

नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा। तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ।
9 अगर किसी नबी को कुछ सुनाने पर उकसाया
गया जो मेरी तरफ़ से नहीं था तो यह इस लिए
हुआ कि मैं, रब ने ख़ुद उसे उकसाया। ऐसे नबी
के ख़िलाफ़ मैं अपना हाथ उठा कर उसे यूँ तबाह
करूँगा कि मेरी क़ौम में उस का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहेगा। 10 दोनों को उन के क़ुसूर की मुनासिब
सज़ा मिलेगी, नबी को भी और उसे भी जो हिदायत
पाने के लिए उस के पास आता है। 11 तब इस्राईली
क़ौम न मुझ से दूर हो कर आवारा फिरेगी, न अपने
आप को इन तमाम गुनाहों से आलूदा करेगी। वह
मेरी क़ौम होंगे, और मैं उन का ख़ुदा हूँगा। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

सिर्फ़ रास्तबाज़ ही बचे रहेंगे

12 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 13 "ऐ आदमज़ाद,
फ़र्ज़ कर कि कोई मुल्क बेवफ़ा हो कर मेरा गुनाह
करे, और मैं काल के ज़रीए उसे सज़ा दे कर उस में
से इन्सान-ओ-हैवान मिटा डालूँ। 14 ख़्वाह मुल्क में
नूह, दान्याल और अय्यूब क्यूँ न बसते तो भी मुल्क न
बचता। यह आदमी अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी
ही जानों को बचा सकते। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।
15 या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क में वहशी
दरिन्दों को भेज दूँ जो इधर उधर फिर कर सब को
फाड़ खाएँ। मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाए और
जंगली दरिन्दों की वजह से कोई उस में से गुज़रने
की जुरअत न करे। 16 मेरी हयात की क़सम, ख़्वाह
मज़कूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यूँ न बसते
तो भी अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी
बचा न सकते बल्कि पूरा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान
होता। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
17 या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क को जंग से
तबाह करूँ, मैं तलवार को हुक्म दूँ कि मुल्क में
से गुज़र कर इन्सान-ओ-हैवान को नेस्त-ओ-नाबूद
कर दे। 18 मेरी हयात की क़सम, ख़्वाह मज़कूरा
तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यूँ न बसते वह
अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी बचा
न सकते। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
19 या फ़र्ज़ कर कि मैं अपना ग़ुस्सा मुल्क पर उतार
कर उस में मोहलिक वबा यूँ फैला दूँ कि इन्सान-ओ-
हैवान सब के सब मर जाएँ। 20 मेरी हयात की क़सम,
ख़्वाह नूह, दान्याल और अय्यूब मुल्क में क्यूँ न
बसते तो भी वह अपने बेटे-बेटियों को बचा न सकते।
वह अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ़ अपनी ही जानों को
बचाते। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
21 अब यरूशलम के बारे में रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान सुनो! यरूशलम का कितना बुरा हाल
होगा जब मैं अपनी चार सख़्त सज़ाएँ उस पर नाज़िल
करूँगा। क्यूँकि इन्सान-ओ-हैवान जंग, काल, वहशी
दरिन्दों और मोहलिक वबा की ज़द में आ कर
हलाक हो जाएंगे। 22 तो भी चन्द एक बचेंगे, कुछ
बेटे-बेटियाँ जिलावतन हो कर बाबल में तुम्हारे
पास आएँगे। जब तुम उन का बुरा चाल-चलन और
हरकतें देखोगे तो तुम्हें तसल्ली मिलेगी कि हर आफ़त
मुनासिब थी जो मैं यरूशलम पर लाया। 23 उन
का चाल-चलन और हरकतें देख कर तुम्हें तसल्ली
मिलेगी, क्यूँकि तुम जान लोगे कि जो कुछ भी मैं ने
यरूशलम के साथ किया वह बिलावजह नहीं था।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

यरूशलम अंगूर की बेल की बेकार लकड़ी है

15 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, अंगूर की बेल की लकड़ी
किस लिहाज़ से जंगल की दीगर लकड़ियों से बेहतर
है? 3 क्या यह किसी काम आ जाती है? क्या यह
कम अज़ कम खूँटियाँ बनाने के लिए इस्तेमाल हो
सकती है जिन से चीज़ें लटकाई जा सकें? हरगिज़
नहीं! 4 उसे ईंधन के तौर पर आग में फैंका जाता है।
इस के बाद जब उस के दोनों सिरे भस्म हुए हैं और
बीच में भी आग लग गई है तो क्या वह किसी काम

आ जाती है? 5 आग लगने से पहले भी बेकार थी, तो
अब वह किस काम आएगी जब उस के दोनों सिरे
भस्म हुए हैं बल्कि बीच में भी आग लग गई है?
6 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
के बाशिन्दे अंगूर की बेल की लकड़ी जैसे हैं जिन्हें
मैं जंगल के दरख़्तों के दरमियान से निकाल कर
आग में फैंक देता हूँ। 7 क्यूँकि मैं उन के ख़िलाफ़
उठ खड़ा हूँगा। गो वह आग से बच निकले हैं तो भी
आख़िरकार आग ही उन्हें भस्म करेगी। जब मैं उन
के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हूँगा तो तुम जान लोगे कि मैं
ही रब हूँ। 8 पूरे मुल्क को मैं वीरान-ओ-सुन्सान कर
दूँगा, इस लिए कि वह बेवफ़ा साबित हुए हैं। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

यरूशलम बेवफ़ा औरत है

16 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम के ज़हन में उस की
मकरूह हरकतों की सन्जीदगी बिठा कर 3 एलान
कर कि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐ
यरूशलम बेटी, तेरी नस्ल मुल्क-ए-कनआन की है,
और वहीं तू पैदा हुई। तेरा बाप अमोरी, तेरी माँ
हित्ती थी। 4 पैदा होते वक़्त नाफ़ के साथ लगी नाल
को काट कर दूर नहीं किया गया। न तुझे पानी से
नहलाया गया, न तेरे जिस्म पर नमक मला गया, और
न तुझे कपड़ों में लपेटा गया। 5 न किसी को इतना
तरस आया, न किसी ने तुझ पर इतना रहम किया
कि इन कामों में से एक भी करता। इस के बजाय
तुझे खुले मैदान में फैंक कर छोड़ दिया गया। क्यूँकि
जब तू पैदा हुई तो सब तुझे हक़ीर जानते थे।
6 तब मैं वहाँ से गुज़रा। उस वक़्त तू अपने ख़ून में
तड़प रही थी। तुझे इस हालत में देख कर मैं बोला,
"जीती रह!" हाँ, तू अपने ख़ून में तड़प रही थी जब मैं
बोला, "जीती रह! 7 खेत में हरियाली की तरह फलती
फूलती जा!" तब तू फलती फूलती हुई परवान चढ़ी।
तू निहायत ख़ूबसूरत बन गई। छातियाँ और बाल
देखने में प्यारे लगे। लेकिन अभी तक तू नंगी और
बरहना थी।
8 मैं दुबारा तेरे पास से गुज़रा तो देखा कि तू शादी
के क़ाबिल हो गई है। मैं ने अपने लिबास का दामन
तुझ पर बिछा कर तेरी बरहनगी को ढाँप दिया।
मैं ने क़सम खा कर तेरे साथ अह्द बांधा और यूँ
तेरा मालिक बन गया। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है।
9 मैं ने तुझे नहला कर ख़ून से साफ़ किया, फिर तेरे
जिस्म पर तेल मला। 10 मैं ने तुझे शानदार लिबास
और चमड़े के नफ़ीस जूते पहनाए, तुझे बारीक कतान
और क़ीमती कपड़े से मुलब्बस किया। 11 फिर मैं ने
तुझे ख़ूबसूरत ज़ेवरात, चूड़ियों, हार, 12 नथ, बालियों
और शानदार ताज से सजाया। 13 यूँ तू सोने-चाँदी
से आरास्ता और बारीक कतान, रेशम और शानदार
कपड़े से मुलब्बस हुई। तेरी ख़ुराक बेहतरीन मैदे,
शहद और ज़ैतून के तेल पर मुश्तमिल थी। तू निहायत
ही ख़ूबसूरत हुई, और होते होते मलिका बन गई।'
14 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तेरे हुस्न की
शुहरत दीगर अक़्वाम में फैल गई, क्यूँकि मैं ने तुझे
अपनी शान-ओ-शौकत में यूँ शरीक किया था कि तेरा
हुस्न कामिल था।
15 लेकिन तू ने क्या किया? तू ने अपने हुस्न पर
भरोसा रखा। अपनी शुहरत से फ़ाइदा उठा कर तू
ज़िनाकार बन गई। हर गुज़रने वाले को तू ने अपने
आप को पेश किया, हर एक को तेरा हुस्न हासिल
हुआ। 16 तू ने अपने कुछ शानदार कपड़े ले कर
अपने लिए रंगदार बिस्तर बनाया और उसे ऊँची
जगहों पर बिछा कर ज़िना करने लगी। ऐसा न माज़ी
में कभी हुआ, न आइन्दा कभी होगा। 17 तू ने वही
नफ़ीस ज़ेवरात लिए जो मैं ने तुझे दिए थे और मेरी ही
सोने-चाँदी से अपने लिए मर्दों के बुत ढाल कर उन
से ज़िना करने लगी। 18 उन्हें अपने शानदार कपड़े
पहना कर तू ने मेरा ही तेल और बख़ूर उन्हें पेश
किया।' 19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'जो
ख़ुराक यानी बेहतरीन मैदा, ज़ैतून का तेल और शहद

मैं ने तुझे दिया था उसे तू ने उन्हें पेश किया ताकि
उस की ख़ुश्बू उन्हें पसन्द आए।
20 जिन बेटे-बेटियों को तू ने मेरे हाँ जन्म दिया था
उन्हें तू ने क़ुर्बान करके बुतों को खिलाया। क्या तू
अपनी ज़िनाकारी पर इकतिफ़ा न कर सकी? 21 क्या
ज़रूरत थी कि मेरे बच्चों को भी क़त्ल करके बुतों
के लिए जला दे? 22 ताज्जुब है कि जब भी तू ऐसी
मकरूह हरकतें और ज़िना करती थी तो तुझे एक बार
भी जवानी का ख़याल न आया, यानी वह वक़्त जब
तू नंगी और बरहना हालत में अपने ख़ून में तड़पती
रही।'
23 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'अफ़्सोस,
तुझ पर अफ़्सोस! अपनी बाक़ी तमाम शरारतों के
इलावा 24 तू ने हर चौक में बुतों के लिए क़ुर्बानगाह
तामीर करके हर एक के साथ ज़िना करने की जगह
भी बनाई। 25 हर गली के कोने में तू ने ज़िना करने
का कमरा बनाया। अपने हुस्न की बेहुरमती करके
तू अपनी इस्मतफ़रोशी ज़ोरों पर लाई। हर गुज़रने
वाले को तू ने अपना बदन पेश किया। 26 पहले तू
अपने शहवतपरस्त पड़ोसी मिस्र के साथ ज़िना करने
लगी। जब तू ने अपनी इस्मतफ़रोशी को ज़ोरों पर ला
कर मुझे मुश्तइल किया 27 तो मैं ने अपना हाथ तेरे
ख़िलाफ़ बढ़ा कर तेरे इलाक़े को छोटा कर दिया।
मैं ने तुझे फ़िलिस्ती बेटियों के लालच के हवाले कर
दिया, उन के हवाले जो तुझ से नफ़रत करती हैं और
जिन को तेरे ज़िनाकाराना चाल-चलन पर शर्म आती
है।
28 अब तक तेरी शहवत को तस्कीन नहीं मिली थी,
इस लिए तू असूरियों से ज़िना करने लगी। लेकिन
यह भी तेरे लिए काफ़ी न था। 29 अपनी ज़िनाकारी
में इज़ाफ़ा करके तू सौदागरों के मुल्क बाबल के
पीछे पड़ गई। लेकिन यह भी तेरी शहवत के लिए
काफ़ी नहीं था।' 30 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है, 'ऐसी हरकतें करके तू कितनी सरगर्म हुई! साफ़
ज़ाहिर हुआ कि तू ज़बरदस्त कस्बी है। 31 जब तू
ने हर चौक में बुतों की क़ुर्बानगाह बनाई और हर
गली के कोने में ज़िना करने का कमरा तामीर किया
तो तू आम कस्बी से मुख़्तलिफ़ थी। क्यूँकि तू ने
अपने गाहकों से पैसे लेने से इन्कार किया। 32 हाय,
तू कैसी बदकार बीवी है! अपने शौहर पर तू दीगर
मर्दों को तर्जीह देती है। 33 हर कस्बी को फ़ीस मिलती
है, लेकिन तू तो अपने तमाम आशिक़ों को तुह्फ़े
देती है ताकि वह हर जगह से आ कर तेरे साथ ज़िना
करें। 34 इस में तू दीगर कस्बियों से फ़र्क़ है। क्यूँकि
न गाहक तेरे पीछे भागते, न वह तेरी मुहब्बत का
मुआवज़ा देते हैं बल्कि तू ख़ुद उन के पीछे भागती
और उन्हें अपने साथ ज़िना करने का मुआवज़ा देती
है।'
35 ऐ कस्बी, अब रब का फ़रमान सुन ले! 36 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तू ने अपने आशिक़ों
को अपनी बरहनगी दिखा कर अपनी इस्मतफ़रोशी
की, तू ने मकरूह बुत बना कर उन की पूजा की, तू
ने उन्हें अपने बच्चों का ख़ून क़ुर्बान किया है। 37 इस
लिए मैं तेरे तमाम आशिक़ों को इकट्ठा करूँगा, उन
सब को जिन्हें तू पसन्द आई, उन्हें भी जो तुझे प्यारे
थे और उन्हें भी जिन से तू ने नफ़रत की। मैं उन्हें
चारों तरफ़ से जमा करके तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। तब
मैं उन के सामने ही तेरे तमाम कपड़े उतारूँगा ताकि
वह तेरी पूरी बरहनगी देखें। 38 मैं तेरी अदालत करके
तेरी ज़िनाकारी और क़ातिलाना हरकतों का फ़ैसला
करूँगा। मेरा ग़ुस्सा और मेरी ग़ैरत तुझे ख़ूँरेज़ी की
सज़ा देगी।
39 मैं तुझे तेरे आशिक़ों के हवाले करूँगा, और वह
तेरे बुतों की क़ुर्बानगाहें उन कमरों समेत ढा देंगे
जहाँ तू ज़िनाकारी करती रही है। वह तेरे कपड़े और
शानदार ज़ेवरात उतार कर तुझे उरियाँ और बरहना
छोड़ देंगे। 40 वह तेरे ख़िलाफ़ जुलूस निकालेंगे और
तुझे संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े कर देंगे।
41 तेरे घरों को जला कर वह मुतअद्दिद औरतों के
देखते देखते तुझे सज़ा देंगे। यूँ मैं तेरी ज़िनाकारी को
रोक दूँगा, और आइन्दा तू अपने आशिक़ों को ज़िना
करने के पैसे नहीं दे सकेगी।

42 तब मेरा ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा, और तू मेरी ग़ैरत
का निशाना नहीं रहेगी। मेरी नाराज़ी ख़त्म हो जाएगी,
और मुझे दुबारा तस्कीन मिलेगी।' 43 रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है, 'मैं तेरे सर पर तेरी हरकतों का
पूरा नतीजा लाऊँगा, क्यूँकि तुझे जवानी में मेरी मदद
की याद न रही बल्कि तू मुझे इन तमाम बातों से तैश
दिलाती रही। बाक़ी तमाम घिनौनी हरकतें तेरे लिए
काफ़ी नहीं थीं बल्कि तू ज़िना भी करने लगी।

44 तब लोग यह कहावत कह कर तेरा मज़ाक़
उड़ाएँगे, "जैसी माँ, वैसी बेटी!" 45 तू वाक़ई अपनी
माँ की मानिन्द है, जो अपने शौहर और बच्चों से सख़्त
नफ़रत करती थी। तू अपनी बहनों की मानिन्द भी
है, क्यूँकि वह भी अपने शौहरों और बच्चों से सख़्त
नफ़रत करती थीं। तेरी माँ हित्ती और तेरा बाप अमोरी
था। 46 तेरी बड़ी बहन सामरिया थी जो अपनी बेटियों
के साथ तेरे शिमाल में आबाद थी। और तेरी छोटी
बहन सदूम थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे जुनूब में
रहती थी। 47 तू न सिर्फ़ उन के ग़लत नमूने पर चल
पड़ी और उन की सी मकरूह हरकतें करने लगी
बल्कि उन से कहीं ज़्यादा बुरा काम करने लगी।'
48 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'मेरी हयात की
क़सम, तेरी बहन सदूम और उस की बेटियों से कभी
इतना ग़लत काम सरज़द न हुआ जितना कि तुझ से
और तेरी बेटियों से हुआ है। 49 तेरी बहन सदूम का
क्या क़ुसूर था? वह अपनी बेटियों समेत मुतकब्बिर
थी। गो उन्हें ख़ुराक की कस्रत और आराम-ओ-
सुकून हासिल था तो भी वह मुसीबतज़दों और ग़रीबों
का सहारा नहीं बनती थीं। 50 वह मग़रूर थीं और
मेरी मौजूदगी में ही घिनौना काम करती थीं। इसी
वजह से मैं ने उन्हें हटा दिया। तू ख़ुद इस की गवाह
है। 51 सामरिया पर भी ग़ौर कर। जितने गुनाह तुझ से
सरज़द हुए उन का आधा हिस्सा भी उस से न हुआ।
अपनी बहनों की निस्बत तू ने कहीं ज़्यादा घिनौनी
हरकतें की हैं। तेरे मुक़ाबले में तेरी बहनें फ़रिश्ते
हैं। 52 चुनाँचे अब अपनी ख़जालत को बर्दाश्त कर।
क्यूँकि अपने गुनाहों से तू अपनी बहनों की जगह
खड़ी हो गई है। तू ने उन से कहीं ज़्यादा क़ाबिल-
ए-घिन काम किए हैं, और अब वह तेरे मुक़ाबले में
मासूम बच्चे लगती हैं। शर्म खा खा कर अपनी रुस्वाई
को बर्दाश्त कर, क्यूँकि तुझ से ऐसे संगीन गुनाह
सरज़द हुए हैं कि तेरी बहनें रास्तबाज़ ही लगती हैं।

तो भी रब वफ़ादार रहेगा

53 लेकिन एक दिन आएगा जब मैं सदूम, सामरिया,
तुझे और तुम सब की बेटियों को बहाल करूँगा।
54 तब तू अपनी रुस्वाई बर्दाश्त कर सकेगी और
अपने सारे ग़लत काम पर शर्म खाएगी। सदूम और
सामरिया यह देख कर तसल्ली पाएँगी। 55 हाँ, तेरी
बहनें सदूम और सामरिया अपनी बेटियों समेत दुबारा
क़ाइम हो जाएँगी। तू भी अपनी बेटियों समेत दुबारा
क़ाइम हो जाएगी।

56 पहले तू इतनी मग़रूर थी कि अपनी बहन
सदूम का ज़िक्र तक नहीं करती थी। 57 लेकिन
फिर तेरी अपनी बुराई पर रौशनी डाली गई, और
अब तेरी तमाम पड़ोसनें तेरा ही मज़ाक़ उड़ाती हैं,
ख़्वाह अदोमी हों, ख़्वाह फ़िलिस्ती। सब तुझे हक़ीर
जानती हैं। 58 चुनाँचे अब तुझे अपनी ज़िनाकारी और
मकरूह हरकतों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। यह रब
का फ़रमान है।'

59 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'मैं तुझे
मुनासिब सज़ा दूँगा, क्यूँकि तू ने मेरा वह अह्द तोड़
कर उस क़सम को हक़ीर जाना है जो मैं ने तेरे साथ
अह्द बांधते वक़्त खाई थी। 60 तो भी मैं वह अह्द
याद करूँगा जो मैं ने तेरी जवानी में तेरे साथ बांधा
था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं तेरे साथ अबदी अह्द
क़ाइम करूँगा। 61 तब तुझे वह ग़लत काम याद
आएगा जो पहले तुझ से सरज़द हुआ था, और तुझे
शर्म आएगी जब मैं तेरी बड़ी और छोटी बहनों को
ले कर तेरे हवाले करूँगा ताकि वह तेरी बेटियाँ बन
जाएँ। लेकिन यह सब कुछ इस वजह से नहीं होगा
कि तू अह्द के मुताबिक़ चलती रही है। 62 मैं ख़ुद तेरे
साथ अपना अह्द क़ाइम करूँगा, और तू जान लेगी

कि मैं ही रब हूँ।' 63 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है, 'जब मैं तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करूँगा तब
तुझे उन का ख़याल आ कर शर्मिन्दगी महसूस होगी,
और तू शर्म के मारे गुमसुम रहेगी'।"

अंगूर की बेल और उक़ाब की तम्सील

17 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम को पहेली पेश
कर, तम्सील सुना दे। 3 उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बड़ा उक़ाब उड़ कर
मुल्क-ए-लुबनान में आया। उस के बड़े बड़े पर और
लम्बे लम्बे पंख थे, उस के घने और रंगीन बाल-
ओ-पर चमक रहे थे। लुबनान में उस ने एक देवदार
के दरख़्त की चोटी पकड़ ली 4 और उस की सब से
ऊँची शाख़ को तोड़ कर ताजिरों के मुल्क में ले गया।
वहाँ उस ने उसे सौदागरों के शहर में लगा दिया।
5 फिर उक़ाब इस्राईल में आया और वहाँ से कुछ
बीज ले कर एक बड़े दरया के किनारे पर ज़रख़ेज़
ज़मीन में बो दिया। 6 तब अंगूर की बेल फूट निकली
जो ज़्यादा ऊँची न हुई बल्कि चारों तरफ़ फैलती गई।
शाख़ों का रुख़ उक़ाब की तरफ़ रहा जबकि उस की
जड़ें ज़मीन में धंसती गईं। चुनाँचे अच्छी बेल बन गई
जो फूटती फूटती नई शाख़ें निकालती गई।

7 लेकिन फिर एक और बड़ा उक़ाब आया। उस के
भी बड़े बड़े पर और घने घने बाल-ओ-पर थे। अब
मैं क्या देखता हूँ, बेल दूसरे उक़ाब की तरफ़ रुख़
करने लगती है। उस की जड़ें और शाख़ें उस खेत में
न रहीं जिस में उसे लगाया गया था बल्कि वह दूसरे
उक़ाब से पानी मिलने की उम्मीद रख कर उसी की
तरफ़ फैलने लगी। 8 ताज्जुब यह था कि उसे अच्छी
ज़मीन में लगाया गया था, जहाँ उसे कस्रत का पानी
हासिल था। वहाँ वह ख़ूब फैल कर फल ला सकती
थी, वहाँ वह ज़बरदस्त बेल बन सकती थी।'

9 अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ पूछता है, 'क्या बेल
की नश्व-ओ-नुमा जारी रहेगी? हरगिज़ नहीं! क्या उसे
जड़ से उखाड़ कर फैंका नहीं जाएगा? ज़रूर! क्या
उस का फल छीन नहीं लिया जाएगा? बेशक बल्कि
आख़िरकार उस की ताज़ा ताज़ा कोंपलें भी सब
की सब मुरझा कर ख़त्म हो जाएँगी। तब उसे जड़
से उखाड़ने के लिए न ज़्यादा लोगों, न ताक़त की
ज़रूरत होगी। 10 गो उसे लगाया गया है तो भी बेल
की नश्व-ओ-नुमा जारी नहीं रहेगी। जूँ ही मशरिक़ी लू
उस पर चलेगी वह मुकम्मल तौर पर मुरझा जाएगी।
जिस खेत में उसे लगाया गया वहीं वह ख़त्म हो
जाएगी'।"

11 रब मुझ से मज़ीद हमकलाम हुआ, 12 "इस
सरकश क़ौम से पूछ, 'क्या तुझे इस तम्सील की
समझ नहीं आई?' तब उन्हें इस का मतलब समझा
दे। 'बाबल के बादशाह ने यरूशलम पर हम्ला किया।
वह उस के बादशाह और अफ़सरों को गिरिफ़्तार
करके अपने मुल्क में ले गया। 13 उस ने यहूदाह के
शाही ख़ानदान में से एक को चुन लिया और उस के
साथ अह्द बांध कर उसे तख़्त पर बिठा दिया। नए
बादशाह ने बाबल से वफ़ादार रहने की क़सम खाई।
बाबल के बादशाह ने यहूदाह के राहनुमाओं को
भी जिलावतन कर दिया 14 ताकि मुल्क-ए-यहूदाह
और उस का नया बादशाह कमज़ोर रह कर सरकश
होने के क़ाबिल न बनें बल्कि उस के साथ अह्द
क़ाइम रख कर ख़ुद क़ाइम रहें। 15 तो भी यहूदाह का
बादशाह बाग़ी हो गया और अपने क़ासिद मिस्र भेजे
ताकि वहाँ से घोड़े और फ़ौजी मंगवाएँ। क्या उसे
कामयाबी हासिल होगी? क्या जिस ने ऐसी हरकतें
की हैं बच निकलेगा? हरगिज़ नहीं! क्या जिस ने
अह्द तोड़ लिया है वह बचेगा? हरगिज़ नहीं!

16 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात
की क़सम, उस शख़्स ने क़सम के तहत शाह-ए-
बाबल से अह्द बांधा है, लेकिन अब उस ने यह
क़सम हक़ीर जान कर अह्द को तोड़ डाला है। इस
लिए वह बाबल में वफ़ात पाएगा, उस बादशाह के
मुल्क में जिस ने उसे तख़्त पर बिठाया था। 17 जब
बाबल की फ़ौज यरूशलम के इर्दगिर्द पुश्ते और बुर्ज
बना कर उस का मुहासरा करेगी ताकि बहुतों को मार

डाले तो फ़िरऔन अपनी बड़ी फ़ौज और मुतअद्दिद
फ़ौजियों को ले कर उस की मदद करने नहीं आएगा।
18 क्यूँकि यहूदाह के बादशाह ने अह्द को तोड़ कर
वह क़सम हक़ीर जानी है जिस के तहत यह बांधा
गया। गो उस ने शाह-ए-बाबल से हाथ मिला कर
अह्द की तस्दीक़ की थी तो भी बेवफ़ा हो गया,
इस लिए वह नहीं बचेगा। 19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, उस ने मेरे ही
अह्द को तोड़ डाला, मेरी ही क़सम को हक़ीर जाना
है। इस लिए मैं अह्द तोड़ने के तमाम नताइज उस
के सर पर लाऊँगा। 20 मैं उस पर अपना जाल डाल
दूँगा, उसे अपने फंदे में पकड़ लूँगा। चूँकि वह मुझ
से बेवफ़ा हो गया है इस लिए मैं उसे बाबल ले जा
कर उस की अदालत करूँगा। 21 उस के बेहतरीन
फ़ौजी सब मर जाएंगे, और जितने बच जाएंगे वह
चारों तरफ़ मुन्तशिर हो जाएंगे। तब तुम जान लोगे
कि मैं, रब ने यह सब कुछ फ़रमाया है।

22 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि अब मैं
ख़ुद देवदार के दरख़्त की चोटी से नर्म-ओ-नाज़ुक
कोंपल तोड़ कर उसे एक बुलन्द-ओ-बाला पहाड़ पर
लगा दूँगा। 23 और जब मैं उसे इस्राईल की बुलन्दियों
पर लगा दूँगा तो उस की शाख़ें फूट निकलेंगी, और
वह फल ला कर शानदार दरख़्त बनेगा। हर क़िस्म
के परिन्दे उस में बसेरा करेंगे, सब उस की शाख़ों
के साय में पनाह लेंगे। 24 तब मुल्क के तमाम दरख़्त
जान लेंगे कि मैं रब हूँ। मैं ही ऊँचे दरख़्त को ख़ाक
में मिला देता, और मैं ही छोटे दरख़्त को बड़ा बना
देता हूँ। मैं ही सायादार दरख़्त को सूखने देता और
मैं ही सूखे दरख़्त को फलने फूलने देता हूँ। यह मेरा,
रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी'।"

हर एक को सिर्फ़ अपने ही आमाल की सज़ा मिलेगी

18 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "तुम लोग
मुल्क-ए-इस्राईल के लिए यह कहावत क्यूँ
इस्तेमाल करते हो, 'वालिदैन ने खट्टे अंगूर खाए,
लेकिन उन के बच्चों ही के दाँत खट्टे हो गए हैं।'
3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात
की क़सम, आइन्दा तुम यह कहावत इस्राईल में
इस्तेमाल नहीं करोगे! 4 हर इन्सान की जान मेरी ही
है, ख़्वाह बाप की हो या बेटे की। जिस ने गुनाह
किया है सिर्फ़ उसी को सज़ा-ए-मौत मिलेगी।

5 लेकिन उस रास्तबाज़ का मुआमला फ़र्क़ है जो
रास्ती और इन्साफ़ की राह पर चलते हुए 6 न ऊँची
जगहों की नाजाइज़ क़ुर्बानियाँ खाता, न इस्राईली
क़ौम के बुतों की पूजा करता है। न वह अपने पड़ोसी
की बीवी की बेहुरमती करता, न माहवारी के दौरान
किसी औरत से हमबिसतर होता है। 7 वह किसी पर
ज़ुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत दे कर उस से
क़र्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर वह ज़मानत वापस
कर देता है। वह चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को
खाना खिलाता और नंगों को कपड़े पहनाता है। 8 वह
किसी से भी सूद नहीं लेता। वह ग़लत काम करने
से गुरेज़ करता और झगड़ने वालों का मुन्सिफ़ाना
फ़ैसला करता है। 9 वह मेरे क़वाइद के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारता और वफ़ादारी से मेरे अह्काम पर
अमल करता है। ऐसा शख़्स रास्तबाज़ है, और वह
यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है।

10 अब फ़र्ज़ करो कि उस का एक ज़ालिम बेटा है
जो क़ातिल है और वह कुछ करता है 11 जिस से
उस का बाप गुरेज़ करता था। वह ऊँची जगहों की
नाजाइज़ क़ुर्बानियाँ खाता, अपने पड़ोसी की बीवी
की बेहुरमती करता, 12 ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों
पर ज़ुल्म करता और चोरी करता है। जब क़र्ज़दार
क़र्ज़ा अदा करे तो वह उसे ज़मानत वापस नहीं
देता। वह बुतों की पूजा बल्कि कई क़िस्म की
मकरूह हरकतें करता है। 13 वह सूद भी लेता है।
क्या ऐसा आदमी ज़िन्दा रहेगा? हरगिज़ नहीं! इन
तमाम मकरूह हरकतों की बिना पर उसे सज़ा-ए-
मौत दी जाएगी। वह ख़ुद अपने गुनाहों का ज़िम्मादार
ठहरेगा।

14 लेकिन फ़र्ज़ करो कि इस बेटे के हाँ बेटा पैदा
हो जाए। गो बेटा सब कुछ देखता है जो उस के बाप
से सरज़द होता है तो भी वह बाप के ग़लत नमूने
पर नहीं चलता। 15 न वह ऊँची जगहों की नाजाइज़
क़ुर्बानियाँ खाता, न इस्राईली क़ौम के बुतों की पूजा
करता है। वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती
नहीं करता 16 और किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करता।
अगर कोई ज़मानत दे कर उस से क़र्ज़ा ले तो पैसे
वापस मिलने पर वह ज़मानत लौटा देता है। वह
चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता
और नंगों को कपड़े पहनाता है। 17 वह ग़लत काम
करने से गुरेज़ करके सूद नहीं लेता। वह मेरे क़वाइद
के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता और मेरे अह्काम पर
अमल करता है। ऐसे शख़्स को अपने बाप की सज़ा
नहीं भुगतनी पड़ेगी। उसे सज़ा-ए-मौत नहीं मिलेगी,
हालाँकि उस के बाप ने मज़कूरा गुनाह किए हैं। नहीं,
वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। 18 लेकिन उस के बाप को
ज़रूर उस के गुनाहों की सज़ा मिलेगी, वह यक़ीनन
मरेगा। क्यूँकि उस ने लोगों पर ज़ुल्म किया, अपने
भाई से चोरी की और अपनी ही क़ौम के दरमियान
बुरा काम किया।

19 लेकिन तुम लोग एतिराज़ करते हो, 'बेटा बाप
के क़ुसूर में क्यूँ न शरीक हो? उसे भी बाप की सज़ा
भुगतनी चाहिए।' जवाब यह है कि बेटा तो रास्तबाज़
और इन्साफ़ की राह पर चलता रहा है, वह एहतियात
से मेरे तमाम अह्काम पर अमल करता रहा है। इस
लिए लाज़िम है कि वह ज़िन्दा रहे। 20 जिस से गुनाह
सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे
को बाप की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे
की। रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी का अज्र पाएगा,
और बेदीन अपनी बेदीनी का।

21 तो भी अगर बेदीन आदमी अपने गुनाहों को तर्क
करे और मेरे तमाम क़वाइद के मुताबिक़ ज़िन्दगी
गुज़ार कर रास्तबाज़ी और इन्साफ़ की राह पर चल
पड़े तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, वह मरेगा नहीं।
22 जितने भी ग़लत काम उस से सरज़द हुए हैं उन का
हिसाब मैं नहीं लूँगा बल्कि उस के रास्तबाज़ चाल-
चलन का लिहाज़ करके उसे ज़िन्दा रहने दूँगा। 23 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की
हलाकत देख कर ख़ुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि
मैं चाहता हूँ कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़ कर
ज़िन्दा रहे।

24 इस के बरअक्स क्या रास्तबाज़ ज़िन्दा रहेगा
अगर वह अपनी रास्तबाज़ ज़िन्दगी तर्क करे और
गुनाह करके वही क़ाबिल-ए-घिन हरकतें करने लगे
जो बेदीन करते हैं? हरगिज़ नहीं! जितना भी अच्छा
काम उस ने किया उस का मैं ख़याल नहीं करूँगा
बल्कि उस की बेवफ़ाई और गुनाहों का। उन ही की
वजह से उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।

25 लेकिन तुम लोग दावा करते हो कि जो कुछ रब
करता है वह ठीक नहीं। ऐ इस्राईली क़ौम, सुनो!
यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने
ही आमाल पर ग़ौर करो! वही दुरुस्त नहीं। 26 अगर
रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ ज़िन्दगी तर्क करके
गुनाह करे तो वह इस बिना पर मर जाएगा। अपनी
नारास्ती की वजह से ही वह मर जाएगा। 27 इस
के बरअक्स अगर बेदीन अपनी बेदीन ज़िन्दगी तर्क
करके रास्ती और इन्साफ़ की राह पर चलने लगे तो
वह अपनी जान को छुड़ाएगा। 28 क्यूँकि अगर वह
अपना क़ुसूर तस्लीम करके अपने गुनाहों से मुँह मोड़
ले तो वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िन्दा रहेगा। 29 लेकिन
इस्राईली क़ौम दावा करती है कि जो कुछ रब करता
है वह ठीक नहीं। ऐ इस्राईली क़ौम, यह कैसी बात
है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमाल पर
ग़ौर करो! वही दुरुस्त नहीं।

30 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ इस्राईल की क़ौम, मैं तेरी अदालत करूँगा, हर
एक का उस के कामों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करूँगा।
चुनाँचे ख़बरदार! तौबा करके अपनी बेवफ़ा हरकतों
से मुँह फेरो, वर्ना तुम गुनाह में फंस कर गिर जाओगे।
31 अपने तमाम ग़लत काम तर्क करके नया दिल
और नई रूह अपना लो। ऐ इस्राईलियो, तुम क्यूँ

मर जाओ? 32 क्यूँकि मैं किसी की मौत से ख़ुश नहीं
होता। चुनाँचे तौबा करो, तब ही तुम ज़िन्दा रहोगे।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

इस्राईली बुज़ुर्गों पर मातमी गीत

19 1 ऐ नबी, इस्राईल के रईसों पर मातमी गीत
गा,
2 'तेरी माँ कितनी ज़बरदस्त शेरनी थी। जवान
शेरबबरों के दरमियान ही अपना घर बना कर उस
ने अपने बच्चों को पाल लिया।
3 एक बच्चे को उस ने ख़ास तर्बियत दी। जब बड़ा
हुआ तो जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि
इन्सान भी उस की ख़ुराक बन गए।
4 इस की ख़बर दीगर अक़्वाम तक पहुँची तो उन्हों
ने उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया। वह उस की नाक
में काँटे डाल कर उसे मिस्र में घसीट ले गए।

5 जब शेरनी के इस बच्चे पर से उम्मीद जाती रही तो
उस ने दीगर बच्चों में से एक को चुन कर उसे ख़ास
तर्बियत दी।
6 यह भी ताक़तवर हो कर दीगर शेरों में घूमने फिरने
लगा। उस ने जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि
इन्सान भी उस की ख़ुराक बन गए।
7 उन के क़िलों को गिरा कर उस ने उन के शहरों
को ख़ाक में मिला दिया। उस की दहाड़ती आवाज़
से मुल्क बाशिन्दों समेत ख़ौफ़ज़दा हो गया।
8 तब इर्दगिर्द के सूबों में बसने वाली अक़्वाम उस
से लड़ने आईं। उन्हों ने अपना जाल उस पर डाल
दिया, उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया।
9 वह उस की गर्दन में पट्टा और नाक में काँटे डाल
कर उसे शाह-ए-बाबल के पास घसीट ले गए। वहाँ
उसे क़ैद में डाला गया ताकि आइन्दा इस्राईल के
पहाड़ों पर उस की गरजती आवाज़ सुनाई न दे।

10 तेरी माँ पानी के किनारे लगाई गई अंगूर की सी
बेल थी। बेल कस्रत के पानी के बाइस फलदार और
शाख़दार थी।
11 उस की शाख़ें इतनी मज़बूत थीं कि उन से शाही
असा बन सकते थे। वह बाक़ी पौदों से कहीं ज़्यादा
ऊँची थी बल्कि उस की शाख़ें दूर दूर तक नज़र आती
थीं।
12 लेकिन आख़िरकार लोगों ने तैश में आ कर उसे
उखाड़ कर फैंक दिया। मशरिक़ी लू ने उस का फल
मुरझाने दिया। सब कुछ उतारा गया, लिहाज़ा वह
सूख गया और उस का मज़बूत तना नज़र-ए-आतिश
हुआ।
13 अब बेल को रेगिस्तान में लगाया गया है, वहाँ
जहाँ ख़ुश्क और प्यासी ज़मीन होती है।
14 उस के तने की एक टहनी से आग ने निकल कर
उस का फल भस्म कर दिया। अब कोई मज़बूत शाख़
नहीं रही जिस से शाही असा बन सके'।"

दर्ज-ए-बाला गीत मातमी है और आह-ओ-ज़ारी
करने के लिए इस्तेमाल हुआ है।

इस्राईल की मुसलसल बेवफ़ाई

20 1 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की
जिलावतनी के सातवें साल में इस्राईली
क़ौम के कुछ बुज़ुर्ग मेरे पास आए ताकि रब से कुछ
दरयाफ़्त करें। पाँचवें महीने का दसवाँ दिन [k]था। वह
मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझ से हमकलाम हुआ,
3 "ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के बुज़ुर्गों को बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम मुझ
से दरयाफ़्त करने आए हो? मेरी हयात की क़सम,
मैं तुम्हें कोई जवाब नहीं दूँगा! यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है।'
4 ऐ आदमज़ाद, क्या तू उन की अदालत करने के
लिए तय्यार है? फिर उन की अदालत कर! उन्हें उन

[k] 14 अगस्त।

के बापदादा की क़ाबिल-ए-घिन हरकतों का एहसास
दिला। 5 उन्हें बता, ‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि इस्राईली क़ौम को चुनते वक़्त मैं ने अपना हाथ
उठा कर उस से क़सम खाई। मुल्क-ए-मिस्र में ही मैं ने
अपने आप को उन पर ज़ाहिर किया और क़सम खा
कर कहा कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 6 यह मेरा अटल
वादा है कि मैं तुम्हें मिस्र से निकाल कर एक मुल्क
में पहुँचा दूँगा जिस का जाइज़ा मैं तुम्हारी ख़ातिर ले
चुका हूँ। यह मुल्क दीगर तमाम ममालिक से कहीं
ज़्यादा ख़ूबसूरत है, और इस में दूध और शहद की
कस्रत है। 7 उस वक़्त मैं ने इस्राईलियों से कहा, “हर
एक अपने घिनौने बुतों को फैंक दे! मिस्र के देवताओं
से लिपटे न रहो, क्यूँकि उन से तुम अपने आप को
नापाक कर रहे हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

8 लेकिन वह मुझ से बाग़ी हुए और मेरी सुनने के
लिए तय्यार न थे। किसी ने भी अपने बुतों को न फैंका
बल्कि वह इन घिनौनी चीज़ों से लिपटे रहे और मिस्री
देवताओं को तर्क न किया। यह देख कर मैं वहीं मिस्र
में अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करना चाहता था।
उसी वक़्त मैं अपना ग़ुस्सा उन पर उतारना चाहता
था। 9 लेकिन मैं बाज़ रहा, क्यूँकि मैं नहीं चाहता
था कि जिन अक़्वाम के दरमियान इस्राईली रहते थे
उन के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्यूँकि
उन क़ौमों की मौजूदगी में ही मैं ने अपने आप को
इस्राईलियों पर ज़ाहिर करके वादा किया था कि मैं
तुम्हें मिस्र से निकाल लाऊँगा।

10 चुनाँचे मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर रेगिस्तान में
लाया। 11 वहाँ मैं ने उन्हें अपनी हिदायात दीं, वह
अह्काम जिन की पैरवी करने से इन्सान जीता रहता
है। 12 मैं ने उन्हें सबत का दिन भी अता किया। मैं
चाहता था कि आराम का यह दिन मेरे उन के साथ
अह्द का निशान हो, कि इस से लोग जान लें कि मैं
रब ही उन्हें मुक़द्दस बनाता हूँ।

13 लेकिन रेगिस्तान में भी इस्राईली मुझ से बाग़ी
हुए। उन्हों ने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी न
गुज़ारी बल्कि मेरे अह्काम को मुस्तरद कर दिया,
हालाँकि इन्सान उन की पैरवी करने से ही जीता रहता
है। उन्हों ने सबत की भी बड़ी बेहुरमती की। यह देख
कर मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें वहीं
रेगिस्तान में हलाक करना चाहता था। 14 ताहम मैं
बाज़ रहा, क्यूँकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़्वाम
के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिन के
देखते देखते मैं इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया
था। 15 चुनाँचे मैं ने यह करने के बजाय अपना हाथ
उठा कर क़सम खाई, “मैं तुम्हें उस मुल्क में नहीं
ले जाऊँगा जो मैं ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया था,
हालाँकि उस में दूध और शहद की कस्रत है और
वह दीगर तमाम ममालिक की निस्बत कहीं ज़्यादा
ख़ूबसूरत है। 16 क्यूँकि तुम ने मेरी हिदायात को रद्द
करके मेरे अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारी
बल्कि सबत के दिन की भी बेहुरमती की। अभी तक
तुम्हारे दिल बुतों से लिपटे रहते हैं।”

17 लेकिन एक बार फिर मैं ने उन पर तरस खाया।
न मैं ने उन्हें तबाह किया, न पूरी क़ौम को रेगिस्तान
में मिटा दिया। 18 रेगिस्तान में ही मैं ने उन के बेटों
को आगाह किया, “अपने बापदादा के क़वाइद के
मुताबिक़ ज़िन्दगी मत गुज़ारना। न उन के अह्काम
पर अमल करो, न उन के बुतों की पूजा से अपने
आप को नापाक करो। 19 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मेरी
हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो और एहतियात
से मेरे अह्काम पर अमल करो। 20 मेरे सबत के दिन
आराम करके उन्हें मुक़द्दस मानो ताकि वह मेरे साथ
बंधे हुए अह्द का निशान रहें। तब तुम जान लोगे कि
मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

21 लेकिन यह बच्चे भी मुझ से बाग़ी हुए। न उन्हों
ने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी, न
एहतियात से मेरे अह्काम पर अमल किया, हालाँकि
इन्सान उन की पैरवी करने से ही जीता रहता है।
उन्हों ने मेरे सबत के दिनों की भी बेहुरमती की। यह
देख कर मैं अपना ग़ुस्सा उन पर नाज़िल करके उन्हें
वहीं रेगिस्तान में तबाह करना चाहता था। 22 लेकिन
एक बार फिर मैं अपने हाथ को रोक कर बाज़ रहा,

क्यूँकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़्वाम के सामने
मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिन के देखते देखते मैं
इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाया था। 23 चुनाँचे
मैं ने यह करने के बजाय अपना हाथ उठा कर
क़सम खाई, "मैं तुम्हें दीगर अक़्वाम-ओ-ममालिक
में मुन्तशिर करूँगा, 24 क्यूँकि तुम ने मेरे अह्काम
की पैरवी नहीं की बल्कि मेरी हिदायात को रद्द कर
दिया। गो मैं ने सबत का दिन मानने का हुक्म दिया
था तो भी तुम ने आराम के इस दिन की बेहुरमती
की। और यह भी काफ़ी नहीं था बल्कि तुम अपने
बापदादा के बुतों के भी पीछे लगे रहे।"

25 तब मैं ने उन्हें ऐसे अह्काम दिए जो अच्छे नहीं
थे, ऐसी हिदायात जो इन्सान को जीने नहीं देतीं।
26 नीज़, मैं ने होने दिया कि वह अपने पहलौठों को
क़ुर्बान करके अपने आप को नापाक करें। मक़्सद
यह था कि उन के रोंगटे खड़े हो जाएँ और वह जान
लें कि मैं ही रब हूँ।'

27 चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम को बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारे
बापदादा ने इस में भी मेरी तक्फ़ीर की कि वह मुझ
से बेवफ़ा हुए। 28 मैं ने तो उन से मुल्क-ए-इस्राईल
देने की क़सम खा कर वादा किया था। लेकिन जूँ ही
मैं उन्हें उस में लाया तो जहाँ भी कोई ऊँची जगह या
सायादार दरख़्त नज़र आया वहाँ वह अपने जानवरों
को ज़बह करने, तैश दिलाने वाली क़ुर्बानियाँ चढ़ाने,
ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाने और मै की नज़रें पेश करने
लगे। 29 मैं ने उन का सामना करके कहा, "यह किस
तरह की ऊँची जगहें हैं जहाँ तुम जाते हो?" आज
तक यह क़ुर्बानगाहें ऊँची जगहें कहलाती हैं।'

30 ऐ आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम को बता, 'रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम अपने
बापदादा की हरकतें अपना कर अपने आप को
नापाक करना चाहते हो? क्या तुम भी उन के घिनौने
बुतों के पीछे लग कर ज़िना करना चाहते हो?
31 क्यूँकि अपने नज़राने पेश करने और अपने बच्चों
को क़ुर्बान करने से तुम अपने आप को अपने बुतों
से आलूदा करते हो। ऐ इस्राईली क़ौम, आज तक
यही तुम्हारा रवय्या है! तो फिर मैं क्या करूँ? क्या
मुझे तुम्हें जवाब देना चाहिए जब तुम मुझ से कुछ
दरयाफ़्त करने के लिए आते हो? हरगिज़ नहीं!
मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हें जवाब में कुछ नहीं
बताऊँगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

अल्लाह अपनी क़ौम को वापस लाएगा

32 तुम कहते हो, "हम दीगर क़ौमों की मानिन्द
होना चाहते, दुनिया के दूसरे ममालिक की तरह
लकड़ी और पत्थर की चीज़ों की इबादत करना
चाहते हैं।" गो यह ख़याल तुम्हारे ज़हनों में उभर
आया है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। 33 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम,
मैं बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी क़ुदरत
का इज़हार करके तुम पर हुकूमत करूँगा। 34 मैं
बड़े ग़ुस्से और ज़ोरदार तरीक़े से अपनी क़ुदरत
का इज़हार करके तुम्हें उन क़ौमों और ममालिक
से निकाल कर जमा करूँगा जहाँ तुम मुन्तशिर हो
गए हो। 35 तब मैं तुम्हें अक़्वाम के रेगिस्तान में
ला कर तुम्हारे रू-ब-रू तुम्हारी अदालत करूँगा।
36 जिस तरह मैं ने तुम्हारे बापदादा की अदालत मिस्र
के रेगिस्तान में की उसी तरह तुम्हारी भी अदालत
करूँगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
37 जिस तरह गल्लाबान भेड़-बकरियों को अपनी लाठी
के नीचे से गुज़रने देता है ताकि उन्हें गिन ले उसी तरह
मैं तुम्हें अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने दूँगा और तुम्हें
अह्द के बंधन में शरीक करूँगा। 38 जो बेवफ़ा हो
कर मुझ से बाग़ी हो गए हैं उन्हें मैं तुम से दूर कर
दूँगा ताकि तुम पाक हो जाओ। अगरचे मैं उन्हें भी
उन दीगर ममालिक से निकाल लाऊँगा जिन में वह
रह रहे हैं तो भी वह मुल्क-ए-इस्राईल में दाख़िल नहीं
होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

39 ऐ इस्राईली क़ौम, तुम्हारे बारे में रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि जाओ, हर एक अपने बुतों
की इबादत करता जाए! लेकिन एक वक़्त आएगा

जब तुम ज़रूर मेरी सुनोगे, जब तुम अपनी क़ुर्बानियों
और बुतों की पूजा से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती
नहीं करोगे।
40 क्यूँकि रब फ़रमाता है कि आइन्दा पूरी इस्राईली
क़ौम मेरे मुक़द्दस पहाड़ यानी इस्राईल के बुलन्द
पहाड़ सिय्यून पर मेरी ख़िदमत करेगी। वहाँ मैं
ख़ुशी से उन्हें क़बूल करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारी
क़ुर्बानियाँ, तुम्हारे पहले फल और तुम्हारे तमाम
मुक़द्दस हदिए तलब करूँगा। 41 मेरे तुम्हें उन
अक़्वाम और ममालिक से निकाल कर जमा करने
के बाद जिन में तुम मुन्तशिर हो गए हो तुम इस्राईल
में मुझे क़ुर्बानियाँ पेश करोगे, और मैं उन की ख़ुश्बू
सूँघ कर ख़ुशी से तुम्हें क़बूल करूँगा। यूँ मैं तुम्हारे
ज़रीए दीगर अक़्वाम पर ज़ाहिर करूँगा कि मैं क़ुद्दूस
ख़ुदा हूँ। 42 तब जब मैं तुम्हें मुल्क-ए-इस्राईल यानी
उस मुल्क में लाऊँगा जिस का वादा मैं ने क़सम
खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था तो तुम जान
लोगे कि मैं ही रब हूँ। 43 वहाँ तुम्हें अपना वह चाल-
चलन और अपनी वह हरकतें याद आएँगी जिन से
तुम ने अपने आप को नापाक कर दिया था, और
तुम अपने तमाम बुरे आमाल के बाइस अपने आप
से घिन खाओगे। 44 ऐ इस्राईली क़ौम, तुम जान लोगे
कि मैं रब हूँ जब मैं अपने नाम की ख़ातिर नर्मी से तुम
से पेश आऊँगा, हालाँकि तुम अपने बुरे सुलूक और
तबाहकुन हरकतों की वजह से सख़्त सज़ा के लाइक़
थे। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

जंगल में आग लगने की तम्सील

45 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 46 "ऐ आदमज़ाद,
जुनूब की तरफ़ रुख़ करके उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर! दश्त-ए-नजब के जंगल के ख़िलाफ़ नबुव्वत
करके 47 उसे बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मैं तुझ में ऐसी आग लगाने वाला हूँ जो तेरे
तमाम दरख़्तों को भस्म करेगी, ख़्वाह वह हरे-भरे या
सूखे हुए हों। इस आग के भड़कते शोले नहीं बुझेंगे
बल्कि जुनूब से ले कर शिमाल तक हर चिहरे को
झुलसा देंगे। 48 हर एक को नज़र आएगा कि यह आग
मेरे, रब के हाथ ने लगाई है। यह बुझेगी नहीं'।"
49 यह सुन कर मैं बोला, "ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़, यह
बताने का क्या फ़ाइदा है? लोग पहले से मेरे बारे में
कहते हैं कि यह हमेशा नाक़ाबिल-ए-समझ तम्सीलें
पेश करता है।"

रब इस्राईल के ख़िलाफ़ तलवार चलाने को है

21 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, यरूशलम की तरफ़ रुख़
करके मुक़द्दस जगहों और मुल्क-ए-इस्राईल के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3 मुल्क को बता, 'रब
फ़रमाता है कि अब मैं तुझ से निपट लूँगा! अपनी
तलवार मियान से खैंच कर मैं तेरे तमाम बाशिन्दों को
मिटा दूँगा, ख़्वाह रास्तबाज़ हों या बेदीन। 4 क्यूँकि
मैं रास्तबाज़ों को बेदीनों समेत मार डालूँगा, इस लिए
मेरी तलवार मियान से निकल कर जुनूब से ले कर
शिमाल तक हर शख़्स पर टूट पड़ेगी। 5 तब तमाम
लोगों को पता चलेगा कि मैं, रब ने अपनी तलवार
को मियान से खैंच लिया है। तलवार मारती रहेगी
और मियान में वापस नहीं आएगी।'
6 ऐ आदमज़ाद, आहें भर भर कर यह पैग़ाम सुना!
लोगों के सामने इतनी तल्ख़ी से आह-ओ-ज़ारी कर
कि कमर में दर्द होने लगे। 7 जब वह तुझ से पूछें,
'आप क्यूँ कराह रहे हैं?' तो उन्हें जवाब दे, 'मुझे एक
हौलनाक ख़बर का इल्म है जो अभी आने वाली है।
जब यहाँ पहुँचेगी तो हर एक की हिम्मत टूट जाएगी
और हर हाथ बेहिस्स-ओ-हरकत हो जाएगा। हर जान
हौसला हारेगी और हर घुटना डाँवाँडोल हो जाएगा।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस ख़बर का
वक़्त क़रीब आ गया है, जो कुछ पेश आना है वह
जल्द ही पेश आएगा'।"
8 रब एक बार फिर मुझ से हमकलाम हुआ, 9 "ऐ
आदमज़ाद, नबुव्वत करके लोगों को बता,
'तलवार को रगड़ रगड़ कर तेज़ कर दिया गया
है। 10 अब वह क़त्ल-ओ-ग़ारत के लिए तय्यार है,

बिजली की तरह चमकने लगी है। हम यह देख
कर किस तरह ख़ुश हो सकते हैं? ऐ मेरे बेटे, तू ने
लाठी और हर तर्बियत को हक़ीर जाना है। 11 चुनाँचे
तलवार को तेज़ करवाने के लिए भेजा गया ताकि
उसे ख़ूब इस्तेमाल किया जा सके। अब वह रगड़
रगड़ कर तेज़ की गई है, अब वह क़ातिल के हाथ
के लिए तय्यार है।'

12 ऐ आदमज़ाद, चीख़ उठ! वावैला कर! अफ़सोस
से अपना सीना पीट! तलवार मेरी क़ौम और इस्राईल
के बुज़ुर्गों के ख़िलाफ़ चलने लगी है, और सब उस
की ज़द में आ जाएंगे। 13 क्यूँकि क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि जाँच-पड़ताल का वक़्त आ गया है,
और लाज़िम है कि वह आए, क्यूँकि तू ने लाठी की
तर्बियत को हक़ीर जाना है।

14 चुनाँचे ऐ आदमज़ाद, अब ताली बजा कर
नबुव्वत कर! तलवार को दो बल्कि तीन बार उन
पर टूटने दे! क्यूँकि क़त्ल-ओ-ग़ारत की यह मोहलिक
तलवार क़ब्ज़े तक मक़्तूलों में घोंपी जाएगी। 15 मैं ने
तलवार को उन के शहरों के हर दरवाज़े पर खड़ा
कर दिया है ताकि आने जाने वालों को मार डाले,
हर दिल हिम्मत हारे और मुतअद्दिद अफ़राद हलाक
हो जाएँ। अफ़सोस! उसे बिजली की तरह चमकाया
गया है, वह क़त्ल-ओ-ग़ारत के लिए तय्यार है।

16 ऐ तलवार, दाईं और बाईं तरफ़ घूमती फिर,
जिस तरफ़ भी तू मुड़े उस तरफ़ मारती जा! 17 मैं
भी तालियाँ बजा कर अपना ग़ुस्सा इस्राईल पर
उतारूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।"

दो रास्तों का नक़्शा, बाबल के ज़रीए यरूशलम की तबाही

18 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 "ऐ
आदमज़ाद, नक़्शा बना कर उस पर वह दो रास्ते
दिखा जो शाह-ए-बाबल की तलवार इख़तियार कर
सकती है। दोनों रास्ते एक ही मुल्क से शुरू हो जाएँ।
जहाँ यह एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ दो
साइन-बोर्ड खड़े कर जो दो मुख़्तलिफ़ शहरों के रास्ते
दिखाएँ, 20 एक अम्मोनियों के शहर रब्बा का और
दूसरा यहूदाह के क़िलाबन्द शहर यरूशलम का।

यह वह दो रास्ते हैं जो शाह-ए-बाबल की तलवार
इख़तियार कर सकती है। 21 क्यूँकि जहाँ यह दो
रास्ते एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ शाह-ए-
बाबल रुक कर मालूम करेगा कि कौन सा रास्ता
इख़तियार करना है। वह तीरों के ज़रीए क़ुरआ
डालेगा, अपने बुतों से इशारा मिलने की कोशिश
करेगा और किसी जानवर की कलेजी का मुआइना
करेगा। 22 तब उसे यरूशलम का रास्ता इख़तियार
करने की हिदायत मिलेगी, चुनाँचे वह अपने फ़ौजियों
के साथ यरूशलम के पास पहुँच कर क़त्ल-ओ-
ग़ारत का हुक्म देगा। तब वह ज़ोर से जंग के नारे
लगा लगा कर शहर को पुश्ते से घेर लेंगे, मुहासरे
के बुर्ज तामीर करेंगे और दरवाज़ों को तोड़ने की
क़िलाशिकन मशीनें खड़ी करेंगे। 23 जिन्हों ने शाह-
ए-बाबल से वफ़ादारी की क़सम खाई है उन्हें यह
पेशगोई ग़लत लगेगी, लेकिन वह उन्हें उन के क़ुसूर
की याद दिला कर उन्हें गिरिफ़्तार करेगा।

24 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तुम
लोगों ने ख़ुद अलानिया तौर पर बेवफ़ा होने से अपने
क़ुसूर की याद दिलाई है। तुम्हारे तमाम आमाल में
तुम्हारे गुनाह नज़र आते हैं। इस लिए तुम से सख़्ती
से निपटा जाएगा।

25 ऐ इस्राईल के बिगड़े हुए और बेदीन रईस, अब
वह वक़्त आ गया है जब तुझे हत्मी सज़ा दी जाएगी।
26 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि पगड़ी को
उतार, ताज को दूर कर! अब सब कुछ उलट जाएगा।
ज़लील को सरफ़राज़ और सरफ़राज़ को ज़लील
किया जाएगा।

27 मैं यरूशलम को मल्बे का ढेर, मल्बे का ढेर,
मल्बे का ढेर बना दूँगा। और शहर उस वक़्त तक
नए सिरे से तामीर नहीं किया जाएगा जब तक वह
न आए जो हक़दार है। उसी के हवाले मैं यरूशलम
करूँगा।'

अम्मोनी भी तलवार की ज़द में आएँगे

28 ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों और उन की लान-तान
के जवाब में नबुव्वत कर! उन्हें बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तलवार
क़त्ल-ओ-ग़ारत के लिए मियान से खैंच ली गई है,
उसे रगड़ रगड़ कर तेज़ किया गया है ताकि बिजली
की तरह चमकते हुए मारती जाए।
29 तेरे नबियों ने तुझे फ़रेबदिह रोयाएँ और झूटे
पैग़ामात सुनाए हैं। लेकिन तलवार बेदीनों की गर्दन
पर नाज़िल होने वाली है, क्यूँकि वह वक़्त आ गया
है जब उन्हें हत्मी सज़ा दी जाए।
30 लेकिन इस के बाद अपनी तलवार को मियान
में वापस डाल, क्यूँकि मैं तुझे भी सज़ा दूँगा। जहाँ तू
पैदा हुआ, तेरे अपने वतन में मैं तेरी अदालत करूँगा।
31 मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, अपने
क़हर की आग तेरे ख़िलाफ़ भड़काऊँगा। मैं तुझे ऐसे
वहशी आदमियों के हवाले करूँगा जो तबाह करने
का फ़न ख़ूब जानते हैं। 32 तू आग का ईंधन बन
जाएगा, तेरा ख़ून तेरे अपने मुल्क में बह जाएगा।
आइन्दा तुझे कोई याद नहीं करेगा। क्यूँकि यह मेरा,
रब का फ़रमान है'।"

यरूशलम ख़ूँरेज़ी का शहर है

22 1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, क्या तू यरूशलम की अदालत
करने के लिए तय्यार है? क्या तू इस क़ातिल शहर
पर फ़ैसला करने के लिए मुस्तइद है? फिर उस पर
उस की मकरूह हरकतें ज़ाहिर कर। 3 उसे बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम
बेटी, तेरा अन्जाम क़रीब ही है, और यह तेरा अपना
क़ुसूर है। क्यूँकि तू ने अपने दरमियान मासूमों का ख़ून
बहाया और अपने लिए बुत बना कर अपने आप को
नापाक कर दिया है। 4 अपनी ख़ूँरेज़ी से तू मुजरिम बन
गई है, अपनी बुतपरस्ती से नापाक हो गई है। तू ख़ुद
अपनी अदालत का दिन क़रीब लाई है। इसी वजह
से तेरा अन्जाम क़रीब आ गया है, इसी लिए मैं तुझे
दीगर अक़्वाम की लान-तान और तमाम ममालिक
के मज़ाक़ का निशाना बना दूँगा। 5 सब तुझ पर ठट्ठा
मारेंगे, ख़्वाह वह क़रीब हों या दूर। तेरे नाम पर दाग़
लग गया है, तुझ में फ़साद हद से ज़्यादा बढ़ गया है।
6 इस्राईल का जो भी बुज़ुर्ग तुझ में रहता है वह
अपनी पूरी ताक़त से ख़ून बहाने की कोशिश करता
है। 7 तेरे बाशिन्दे अपने माँ-बाप को हक़ीर जानते हैं।
वह परदेसी पर सख़्ती करके यतीमों और बेवाओं पर
ज़ुल्म करते हैं। 8 जो मुझे मुक़द्दस है उसे तू पाँओ तले
कुचल देती है। तू मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती भी
करती है।
9 तुझ में ऐसे तुहमत लगाने वाले हैं जो ख़ूँरेज़ी
पर तुले हुए हैं। तेरे बाशिन्दे पहाड़ों की नाजाइज़
क़ुर्बानगाहों के पास क़ुर्बानियाँ खाते और तेरे
दरमियान शर्मनाक हरकतें करते हैं। 10 बेटा माँ से
हमबिसतर हो कर बाप की बेहुरमती करता है, शौहर
माहवारी के दौरान बीवी से सोहबत करके उस से
ज़ियादती करता है। 11 एक अपने पड़ोसी की बीवी से
ज़िना करता है जबकि दूसरा अपनी बहू की बेहुरमती
और तीसरा अपनी सगी बहन की इस्मतदरी करता
है। 12 तुझ में ऐसे लोग हैं जो रिश्वत के इवज़ क़त्ल
करते हैं। सूद क़ाबिल-ए-क़बूल है, और लोग एक
दूसरे पर ज़ुल्म करके नाजाइज़ नफ़ा कमाते हैं। रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू
मुझे सरासर भूल गई है!
13 तेरा नाजाइज़ नफ़ा और तेरे बीच में ख़ूँरेज़ी देख
कर मैं ग़ुस्से में ताली बजाता हूँ। 14 सोच ले! जिस
दिन मैं तुझ से निपटूँगा तो क्या तेरा हौसला क़ाइम
और तेरे हाथ मज़बूत रहेंगे? यह मेरा, रब का फ़रमान
है, और मैं यह करूँगा भी। 15 मैं तुझे दीगर अक़्वाम-
ओ-ममालिक में मुन्तशिर करके तेरी नापाकी दूर
करूँगा। 16 फिर जब दीगर क़ौमों के देखते देखते
तेरी बेहुरमती हो जाएगी तब तू जान लेगी कि मैं ही
रब हूँ'।"

इस्राईली क़ौम भट्टी में धात का मैल है

17 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, 18 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईली क़ौम मेरे नज़्दीक उस मैल की
मानिन्द बन गई है जो चाँदी को ख़ालिस करने के
बाद भट्टी में बाक़ी रह जाता है। सब के सब उस
ताँबे, टीन, लोहे और सीसे की मानिन्द हैं जो भट्टी में
रह जाता है। वह कचरा ही हैं। 19 चुनाँचे रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि तुम भट्टी में बचा हुआ
मैल हो इस लिए मैं तुम्हें यरूशलम में इकट्ठा करके
20 भट्टी में फैंक दूँगा। जिस तरह चाँदी, ताँबे, लोहे,
सीसे और टीन की आमेज़िश को तपती भट्टी में फैंका
जाता है ताकि पिघल जाए उसी तरह मैं तुम्हें ग़ुस्से
में इकट्ठा करूँगा और भट्टी में फैंक कर पिघला दूँगा।
21 मैं तुम्हें जमा करके आग में फैंक दूँगा और बड़े
ग़ुस्से से हवा दे कर तुम्हें पिघला दूँगा। 22 जिस तरह
चाँदी भट्टी में पिघल जाती है उसी तरह तुम यरूशलम
में पिघल जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब ने
अपना ग़ज़ब तुम पर नाज़िल किया है।"

पूरी क़ौम क़ुसूरवार है

23 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 24 "ऐ आदमज़ाद,
मुल्क-ए-इस्राईल को बता, 'ग़ज़ब के दिन तुझ पर
मेंह नहीं बरसेगा बल्कि तू बारिश से महरूम रहेगा।'
25 मुल्क के बीच में साज़िश करने वाले राहनुमा
शेरबबर की मानिन्द हैं जो दहाड़ते दहाड़ते अपना
शिकार फाड़ लेते हैं। वह लोगों को हड़प करके उन
के ख़ज़ाने और क़ीमती चीज़ें छीन लेते और मुल्क के
दरमियान ही मुतअद्दिद औरतों को बेवाएँ बना देते
हैं।
26 मुल्क के इमाम मेरी शरीअत से ज़ियादती करके
उन चीज़ों की बेहुरमती करते हैं जो मुझे मुक़द्दस हैं।
न वह मुक़द्दस और आम चीज़ों में इम्तियाज़ करते, न
पाक और नापाक अश्या का फ़र्क़ सिखाते हैं। नीज़,
वह मेरे सबत के दिन अपनी आँखों को बन्द रखते
हैं ताकि उस की बेहुरमती नज़र न आए। यूँ उन के
दरमियान ही मेरी बेहुरमती की जाती है।
27 मुल्क के दरमियान के बुज़ुर्ग भेड़ियों की मानिन्द
हैं जो अपने शिकार को फाड़ फाड़ कर ख़ून बहाते
और लोगों को मौत के घाट उतारते हैं ताकि नारवा
नफ़ा कमाएँ।
28 मुल्क के नबी फ़रेबदिह रोयाएँ और झूटे पैग़ामात
सुना कर लोगों के बुरे कामों पर सफेदी फेर देते हैं
ताकि उन की ग़लतियाँ नज़र न आएँ। वह कहते हैं,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है' हालाँकि रब ने
उन पर कुछ नाज़िल नहीं किया होता।
29 मुल्क के आम लोग भी एक दूसरे का इस्तेह्साल
करते हैं। वह डकैत बन कर ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों
पर ज़ुल्म करते और परदेसियों से बदसुलूकी करके
उन का हक़ मारते हैं।
30 इस्राईल में मैं ऐसे आदमी की तलाश में रहा जो
मुल्क के लिए हिफ़ाज़ती चारदीवारी तामीर करे, जो
मेरे हुज़ूर आ कर दीवार के रख़ने में खड़ा हो जाए
ताकि मैं मुल्क को तबाह न करूँ। लेकिन मुझे एक
भी न मिला जो इस क़ाबिल हो। 31 चुनाँचे मैं अपना
ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा और उन्हें अपने सख़्त
क़हर से भस्म करूँगा। तब उन के ग़लत कामों का
नतीजा उन के अपने सरों पर आएगा। यह रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

बेहया बहनें अहोला और अहोलीबा

23 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, दो औरतों की कहानी सुन
ले। दोनों एक ही माँ की बेटियाँ थीं। 3 वह अभी
जवान ही थीं जब मिस्र में कस्बी बन गईं। वहीं
मर्द दोनों कुंवारियों की छातियाँ सहला कर अपना
दिल बहलाते थे। 4 बड़ी का नाम अहोला और
छोटी का नाम अहोलीबा था। अहोला सामरिया और
अहोलीबा यरूशलम है। मैं दोनों का मालिक बन
गया, और दोनों के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

5 गो मैं अहोला का मालिक था तो भी वह ज़िना
करने लगी। शहवत से भर कर वह जंगजू असूरियों
के पीछे पड़ गई, और यही उस के आशिक़ बन गए।
6 शानदार कपड़ों से मुलब्बस यह गवर्नर और फ़ौजी
अफ़सर उसे बड़े प्यारे लगे। सब ख़ूबसूरत जवान और
अच्छे घुड़सवार थे। 7 असूर के चीदा चीदा बेटों से
उस ने ज़िना किया। जिस की भी उसे शहवत थी उस
से और उस के बुतों से वह नापाक हुई। 8 लेकिन उस
ने जवानी में मिस्रियों के साथ जो ज़िनाकारी शुरू हुई
वह भी न छोड़ी। वही लोग थे जो उस के साथ उस
वक़्त हमबिसतर हुए थे जब वह अभी कुंवारी थी,
जिन्हों ने उस की छातियाँ सहला कर अपनी गन्दी
ख़्वाहिशात उस से पूरी की थीं।

9 यह देख कर मैं ने उसे उस के असूरी आशिक़ों के
हवाले कर दिया, उन ही के हवाले जिन की शदीद
शहवत उसे थी। 10 उन ही से अहोला की अदालत
हुई। उन्हों ने उस के कपड़े उतार कर उसे बरहना कर
दिया और उस के बेटे-बेटियों को उस से छीन लिया।
उसे ख़ुद उन्हों ने तलवार से मार डाला। यूँ वह दीगर
औरतों के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गई।

11 गो उस की बहन अहोलीबा ने यह सब कुछ
देखा तो भी वह शहवत और ज़िनाकारी के लिहाज़
से अपनी बहन से कहीं ज़्यादा आगे बढ़ी। 12 वह
भी शहवत के मारे असूरियों के पीछे पड़ गई।
यह ख़ूबसूरत जवान सब उसे प्यारे थे, ख़्वाह
असूरी गवर्नर या अफ़सर, ख़्वाह शानदार कपड़ों से
मुलब्बस फ़ौजी या अच्छे घुड़सवार थे। 13 मैं ने देखा
कि उस ने भी अपने आप को नापाक कर दिया। इस
में दोनों बेटियाँ एक जैसी थीं।

14 लेकिन अहोलीबा की ज़िनाकाराना हरकतें कहीं
ज़्यादा बुरी थीं। एक दिन उस ने दीवार पर बाबल
के मर्दों की तस्वीर देखी। तस्वीर लाल रंग से खैंची
हुई थी। 15 मर्दों की कमर में पटका और सर पर
पगड़ी बंधी हुई थी। वह बाबल के उन अफ़सरों
की मानिन्द लगते थे जो रथों पर सवार लड़ते हैं।
16 मर्दों की तस्वीर देखते ही अहोलीबा के दिल में उन
के लिए शदीद आर्ज़ू पैदा हुई। चुनाँचे उस ने अपने
क़ासिदों को बाबल भेज कर उन्हें आने की दावत
दी। 17 तब बाबल के मर्द उस के पास आए और उस
से हमबिसतर हुए। अपनी ज़िनाकारी से उन्हों ने उसे
नापाक कर दिया। लेकिन उन से नापाक होने के बाद
उस ने तंग आ कर अपना मुँह उन से फेर लिया।

18 जब उस ने खुले तौर पर उन से ज़िना करके
अपनी बरहनगी सब पर ज़ाहिर की तो मैं ने तंग आ
कर अपना मुँह उस से फेर लिया, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह मैं ने अपना मुँह उस की बहन से भी फेर
लिया था। 19 लेकिन यह भी उस के लिए काफ़ी न
था बल्कि उस ने अपनी ज़िनाकारी में मज़ीद इज़ाफ़ा
किया। उसे जवानी के दिन याद आए जब वह मिस्र में
कस्बी थी। 20 वह शहवत के मारे पहले आशिक़ों की
आर्ज़ू करने लगी, उन से जो गधों और घोड़ों की सी
जिन्सी ताक़त रखते थे। 21 क्यूँकि तू अपनी जवानी
की ज़िनाकारी दुहराने की मुतमन्नी थी। तू एक बार
फिर उन से हमबिसतर होना चाहती थी जो मिस्र में
तेरी छातियाँ सहला कर अपना दिल बहलाते थे।

22 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'ऐ
अहोलीबा, मैं तेरे आशिक़ों को तेरे ख़िलाफ़ खड़ा
करूँगा। जिन से तू ने तंग आ कर अपना मुँह फेर
लिया था उन्हें मैं चारों तरफ़ से तेरे ख़िलाफ़ लाऊँगा।
23 बाबल, कस्दियों, फ़िक़ोद, शोअ और क़ोअ के
फ़ौजी मिल कर तुझ पर टूट पड़ेंगे। घुड़सवार असूरी
भी उन में शामिल होंगे, ऐसे ख़ूबसूरत जवान जो सब
गवर्नर, अफ़सर, रथसवार फ़ौजी और ऊँचे तब्क़े के
अफ़राद होंगे। 24 शिमाल से वह रथों और मुख़्तलिफ़
क़ौमों के मुतअद्दिद फ़ौजियों समेत तुझ पर हम्ला
करेंगे। वह तुझे यूँ घेर लेंगे कि हर तरफ़ छोटी और
बड़ी ढालें, हर तरफ़ ख़ोद नज़र आएँगे। मैं तुझे उन
के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे सज़ा दे कर अपने
क़वानीन के मुताबिक़ तेरी अदालत करें। 25 तू मेरी
ग़ैरत का तजरिबा करेगी, क्यूँकि यह लोग ग़ुस्से में
तुझ से निपट लेंगे। वह तेरी नाक और कानों को
काट डालेंगे और बचे हुओं को तलवार से मौत के

घाट उतारेंगे। तेरे बेटे-बेटियों को वह ले जाएंगे, और
जो कुछ उन के पीछे रह जाए वह भस्म हो जाएगा।
26 वह तेरे लिबास और तेरे ज़ेवरात को तुझ पर से
उतारेंगे।

27 यूँ मैं तेरी वह फ़ह्हाशी और ज़िनाकारी रोक दूँगा
जिस का सिलसिला तू ने मिस्र में शुरू किया था।
तब न तू आरज़ूमन्द नज़रों से इन चीज़ों की तरफ़
देखेगी, न मिस्र को याद करेगी। 28 क्यूँकि रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुझे उन के हवाले करने
को हूँ जो तुझ से नफ़रत करते हैं, उन के हवाले
जिन से तू ने तंग आ कर अपना मुँह फेर लिया
था। 29 वह बड़ी नफ़रत से तेरे साथ पेश आएँगे। जो
कुछ तू ने मेहनत से कमाया उसे वह छीन कर तुझे
नंगी और बरहना छोड़ेंगे। तब तेरी ज़िनाकारी का
शर्मनाक अन्जाम और तेरी फ़ह्हाशी सब पर ज़ाहिर
हो जाएगी। 30 तब तुझे इस का अज्र मिलेगा कि तू
क़ौमों के पीछे पड़ कर ज़िना करती रही, कि तू ने
उन के बुतों की पूजा करके अपने आप को नापाक
कर दिया है।

31 तू अपनी बहन के नमूने पर चल पड़ी, इस लिए मैं
तुझे वही प्याला पिलाऊँगा जो उसे पीना पड़ा। 32 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुझे अपनी बहन
का प्याला पीना पड़ेगा जो बड़ा और गहरा है। और
तू उस वक़्त तक उसे पीती रहेगी जब तक मज़ाक़
और लान-तान का निशाना न बन गई हो। 33 दह्शत
और तबाही का प्याला पी पी कर तू मदहोशी और
दुख से भर जाएगी। तू अपनी बहन सामरिया का यह
प्याला 34 आख़िरी क़तरे तक पी लेगी, फिर प्याले को
पाश पाश करके उस के टुकड़े चबा लेगी और अपने
सीने को फाड़ लेगी।' यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है। 35 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, 'तू
ने मुझे भूल कर अपना मुँह मुझ से फेर लिया है।
अब तुझे अपनी फ़ह्हाशी और ज़िनाकारी का नतीजा
भुगतना पड़ेगा'।"

36 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ
आदमज़ाद, क्या तू अहोला और अहोलीबा की
अदालत करने के लिए तय्यार है? फिर उन पर उन
की मकरूह हरकतें ज़ाहिर कर। 37 उन से दो जुर्म
सरज़द हुए हैं, ज़िना और क़त्ल। उन्हों ने बुतों से
ज़िना किया और अपने बच्चों को जला कर उन्हें
खिलाया, उन बच्चों को जो उन्हों ने मेरे हाँ जन्म दिए
थे। 38 लेकिन यह उन के लिए काफ़ी नहीं था। साथ
साथ उन्हों ने मेरा मक़्दिस नापाक और मेरे सबत
के दिनों की बेहुरमती की। 39 क्यूँकि जब कभी वह
अपने बच्चों को अपने बुतों के हुज़ूर क़ुर्बान करती थीं
उसी दिन वह मेरे घर में आ कर उस की बेहुरमती
करती थीं। मेरे ही घर में वह ऐसी हरकतें करती थीं।

40 यह भी इन दो बहनों के लिए काफ़ी नहीं
था बल्कि आदमियों की तलाश में उन्हों ने अपने
क़ासिदों को दूर दूर तक भेज दिया। जब मर्द पहुँचे
तो तू ने उन के लिए नहा कर अपनी आँखों में सुरमा
लगाया और अपने ज़ेवरात पहन लिए। 41 फिर तू
शानदार सोफ़े पर बैठ गई। तेरे सामने मेज़ थी जिस
पर तू ने मेरे लिए मख़्सूस बख़ूर और तेल रखा था।
42 रेगिस्तान से सिबा के मुतअद्दिद आदमी लाए गए
तो शहर में शोर मच गया, और लोगों ने सुकून का
साँस लिया। आदमियों ने दोनों बहनों के बाज़ूओं में
कड़े पहनाए और उन के सरों पर शानदार ताज रखे।
43 तब मैं ने ज़िनाकारी से घिसी फटी औरत के बारे में
कहा, 'अब वह उस के साथ ज़िना करें, क्यूँकि वह
ज़िनाकार ही है।' 44 ऐसा ही हुआ। मर्द उन बेहया
बहनों अहोला और अहोलीबा से यूँ हमबिसतर हुए
जिस तरह कस्बियों से।

45 लेकिन रास्तबाज़ आदमी उन की अदालत करके
उन्हें ज़िना और क़त्ल के मुजरिम ठहराएँगे। क्यूँकि
दोनों बहनें ज़िनाकार और क़ातिल ही हैं। 46 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन के ख़िलाफ़
जुलूस निकाल कर उन्हें दह्शत और लूट-मार के
हवाले करो। 47 लोग उन्हें संगसार करके तलवार
से टुकड़े टुकड़े करें, वह उन के बेटे-बेटियों को मार
डालें और उन के घरों को नज़र-ए-आतिश करें।

48 यूँ मैं मुल्क में ज़िनाकारी ख़त्म करूँगा। इस से
तमाम औरतों को तम्बीह मिलेगी कि वह तुम्हारे
शर्मनाक नमूने पर न चलें। 49 तुम्हें ज़िनाकारी और
बुतपरस्ती की मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब तुम जान
लोगी कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ।”

यरूशलम आग पर ज़ंगआलूदा देग है

24 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
नवें साल में रब का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ। दसवें महीने का दसवाँ दिन [l]था। पैग़ाम यह
था, 2 “ऐ आदमज़ाद, इसी दिन की तारीख़ लिख
ले, क्यूँकि इसी दिन शाह-ए-बाबल यरूशलम का
मुहासरा करने लगा है। 3 फिर इस सरकश क़ौम
इस्राईल को तम्सील पेश करके बता,

‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि आग पर देग
रख कर उस में पानी डाल दे। 4 फिर उसे बेहतरीन
गोश्त से भर दे। रान और शाने के टुकड़े, नीज़
बेहतरीन हड्डियाँ उस में डाल दे। 5 सिर्फ़ बेहतरीन
भेड़ों का गोश्त इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि देग के
नीचे आग ज़ोर से भड़कती रहे। गोश्त को हड्डियों
समेत ख़ूब पकने दे।

6 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
पर अफ़्सोस जिस में इतना ख़ून बहाया गया है! यह
शहर देग है जिस में ज़ंग लगा है, ऐसा ज़ंग जो उतरता
नहीं। अब गोश्त के टुकड़ों को यके बाद दीगरे देग
से निकाल दे। उन्हें किसी तर्तीब से मत निकालना
बल्कि क़ुरआ डाले बग़ैर निकाल दे।

7 जो ख़ून यरूशलम ने बहाया वह अब तक उस में
मौजूद है। क्यूँकि वह मिट्टी पर न गिरा जो उसे जज़्ब
कर सकती बल्कि नंगी चटान पर। 8 मैं ने ख़ुद यह
ख़ून नंगी चटान पर बहने दिया ताकि वह छुप न जाए
बल्कि मेरा ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हो जाए और
मैं बदला लूँ।

9 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यरूशलम
पर अफ़्सोस जिस ने इतना ख़ून बहाया है! मैं भी तेरे
नीचे लकड़ी का बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10 आ, लकड़ी
का बड़ा ढेर करके आग लगा दे। गोश्त को ख़ूब
पका, फिर शोरबा निकाल कर हड्डियों को भस्म होने
दे। 11 इस के बाद ख़ाली देग को जलते कोएलों पर
रख दे ताकि पीतल गर्म हो कर तमतमाने लगे और
देग में मैल पिघल जाए, उस का ज़ंग उतर जाए।

12 लेकिन बेफ़ाइदा! इतना ज़ंग लगा है कि वह
आग में भी नहीं उतरता।

13 ऐ यरूशलम, अपनी बेहया हरकतों से तू ने अपने
आप को नापाक कर दिया है। अगरचे मैं ख़ुद तुझे
पाक-साफ़ करना चाहता था तो भी तू पाक-साफ़ न
हुई। अब तू उस वक़्त तक पाक नहीं होगी जब तक
मैं अपना पूरा ग़ुस्सा तुझ पर उतार न लूँ। 14 मेरे रब
का यह फ़रमान पूरा होने वाला है, और मैं ध्यान से
उसे अमल में लाऊँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा,
न रहम करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन और आमाल के
मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा।’ यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है।”

बीवी की वफ़ात पर हिज़्क़ीएल मातम न करे

15 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 16 “ऐ आदमज़ाद,
मैं तुझ से अचानक तेरी आँख का तारा छीन लूँगा।
लेकिन लाज़िम है कि तू न आह-ओ-ज़ारी करे, न
आँसू बहाए। 17 बेशक चुपके से कराहता रह, लेकिन
अपनी अज़ीज़ा के लिए अलानिया मातम न कर। न
सर से पगड़ी उतार और न पाँओ से जूते। न दाढ़ी को
ढाँपना, न जनाज़े का खाना खा।”

18 सुब्ह को मैं ने क़ौम को यह पैग़ाम सुनाया, और
शाम को मेरी बीवी इन्तिक़ाल कर गई। अगली सुब्ह
मैं ने वह कुछ किया जो रब ने मुझे करने को कहा
था। 19 यह देख कर लोगों ने मुझ से पूछा, “आप

---

[l] 15 जन्वरी।

के रवय्ये का हमारे साथ क्या ताल्लुक़ है? ज़रा हमें बताएँ।”

20 मैं ने जवाब दिया, “रब ने मुझे 21 आप इस्राईलियों को यह पैग़ाम सुनाने को कहा, ‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरा घर तुम्हारे नज़्दीक पनाहगाह है जिस पर तुम फ़ख़र करते हो। लेकिन यह मक़्दिस जो तुम्हारी आँख का तारा और जान का प्यारा है तबाह होने वाला है। मैं उस की बेहुरमती करने को हूँ। और तुम्हारे जितने बेटे-बेटियाँ यरूशलम में पीछे रह गए थे वह सब तलवार की ज़द में आ कर मर जाएंगे। 22 तब तुम वह कुछ करोगे जो हिज़्क़ीएल इस वक़्त कर रहा है। न तुम अपनी दाढ़ियों को ढाँपोगे, न जनाज़े का खाना खाओगे। 23 न तुम सर से पगड़ी, न पाँओ से जूते उतारोगे। तुम्हारे हाँ न मातम का शोर, न रोने की आवाज़ सुनाई देगी बल्कि तुम अपने गुनाहों के सबब से ज़ाए होते जाओगे। तुम चुपके से एक दूसरे के साथ बैठ कर कराहते रहोगे। 24 हिज़्क़ीएल तुम्हारे लिए निशान है। जो कुछ वह इस वक़्त कर रहा है वह तुम भी करोगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ’।”

25 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, यह घर इस्राईलियों के नज़्दीक पनाहगाह है जिस के बारे में वह ख़ास ख़ुशी महसूस करते हैं, जिस पर वह फ़ख़र करते हैं। लेकिन मैं यह मक़्दिस जो उन की आँख का तारा और जान का प्यारा है उन से छीन लूँगा और साथ साथ उन के बेटे-बेटियों को भी। जिस दिन यह पेश आएगा 26 उस दिन एक आदमी बच कर तुझे इस की ख़बर पहुँचाएगा। 27 उसी वक़्त तू दुबारा बोल सकेगा। तू गूँगा नहीं रहेगा बल्कि उस से बातें करने लगेगा। यूँ तू इस्राईलियों के लिए निशान होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

अम्मोनियों का मुल्क उन से छीन लिया जाएगा

25 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों के मुल्क की तरफ़ रुख़ करके उन के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर। 3 उन्हें बता,

‘सुनो रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का कलाम! वह फ़रमाता है कि ऐ अम्मोन बेटी, तू ने ख़ुश हो कर क़हक़हा लगाया जब मेरे मक़्दिस की बेहुरमती हुई, मुल्क-ए-इस्राईल तबाह हुआ और यहूदाह के बाशिन्दे जिलावतन हुए। 4 इस लिए मैं तुझे मशरिक़ी क़बीलों के हवाले करूँगा जो अपने डेरे तुझ में लगा कर पूरी बस्तियाँ क़ाइम करेंगे। वह तेरा ही फल खाएँगे, तेरा ही दूध पिएँगे। 5 रब्बा शहर को मैं ऊँटों की चरागाह में बदल दूँगा और मुल्क-ए-अम्मोन को भेड़-बकरियों की आरामगाह बना दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

6 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू ने तालियाँ बजा बजा कर और पाँओ ज़मीन पर मार मार कर इस्राईल के अन्जाम पर अपनी दिली ख़ुशी का इज़हार किया। तेरी इस्राईल के लिए हिक़ारत साफ़ तौर पर नज़र आई। 7 इस लिए मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ बढ़ा कर तुझे दीगर अक़्वाम के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे लूट लें। मैं तुझे यूँ मिटा दूँगा कि अक़्वाम-ओ-ममालिक में तेरा नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ’।”

मोआब के शहर तबाह हो जाएंगे

8 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मोआब और सईर इस्राईल का मज़ाक़ उड़ा कर कहते हैं, ‘लो, देखो यहूदाह के घराने का हाल! अब वह भी बाक़ी क़ौमों की तरह बन गया है।’ 9 इस लिए मैं मोआब की पहाड़ी ढलानों को उन के शहरों से महरूम करूँगा। मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक भी आबादी नहीं रहेगी। गो मोआबी अपने शहरों बैत-यसीमोत, बाल-मऊन और क़िर्यताइम पर ख़ास फ़ख़र करते हैं, लेकिन वह भी ज़मीनबोस हो जाएंगे। 10 अम्मोन की तरह मैं मोआब को भी मशरिक़ी क़बीलों के हवाले करूँगा। आख़िरकार अक़्वाम में अम्मोनियों की याद तक नहीं रहेगी,

11 और मोआब को भी मुझ से मुनासिब सज़ा मिलेगी।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

अल्लाह अदोमियों से इन्तिक़ाम लेगा

12 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यहूदाह
से इन्तिक़ाम लेने से अदोम ने संगीन गुनाह किया है।
13 इस लिए मैं अपना हाथ अदोम के ख़िलाफ़ बढ़ा
कर उस के इन्सान-ओ-हैवान को मार डालूँगा, और
वह तलवार से मारे जाएंगे। तेमान से ले कर ददान
तक यह मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा। यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है। 14 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि अपनी क़ौम के हाथों मैं
अदोम से बदला लूँगा, और इस्राईल मेरे ग़ज़ब और
क़हर के मुताबिक़ ही अदोम से निपट लेगा। तब वह
मेरा इन्तिक़ाम जान लेंगे।”

फ़िलिस्तियों का ख़ातमा

15 “रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
फ़िलिस्तियों ने बड़े ज़ुल्म के साथ यहूदाह से बदला
लिया है। उन्हों ने उस पर अपनी दिली हिक़ारत और
दाइमी दुश्मनी का इज़हार किया और इन्तिक़ाम
ले कर उसे तबाह करने की कोशिश की। 16 इस
लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं अपना
हाथ फ़िलिस्तियों के ख़िलाफ़ बढ़ाने को हूँ। मैं इन
करेतियों और साहिली इलाक़े के बचे हुओं को
मिटा दूँगा। 17 मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके
सख़्ती से उन से बदला लूँगा। तब वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ।”

सूर का सत्यानास

26 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
11वें साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ।
महीने का पहला दिन था। 2 “ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी
यरूशलम की तबाही देख कर ख़ुश हुई है। वह कहती
है, ‘लो, अक़्वाम का दरवाज़ा टूट गया है! अब मैं ही
इस की ज़िम्मादारियाँ निभाऊँगी। अब जब यरूशलम
वीरान है तो मैं ही फ़रोग़ पाऊँगी।’
3 जवाब में रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ सूर, मैं तुझ से निपट लूँगा! मैं मुतअद्दिद क़ौमों
को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा। समुन्दर की ज़बरदस्त मौजों
की तरह वह तुझ पर टूट पड़ेंगी। 4 वह सूर शहर
की फ़सील को ढा कर उस के बुर्जों को ख़ाक में
मिला देंगी। तब मैं उसे इतने ज़ोर से झाड़ दूँगा कि
मिट्टी तक नहीं रहेगी। ख़ाली चटान ही नज़र आएगी।
5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि वह समुन्दर
के दरमियान ऐसी जगह रहेगी जहाँ मछेरे अपने जालों
को सुखाने के लिए बिछा देंगे। दीगर अक़्वाम उसे
लूट लेंगी, 6 और ख़ुश्की पर उस की आबादियाँ
तलवार की ज़द में आ जाएँगी। तब वह जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।
7 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
बाबल के बादशाह नबूकद्नज़्ज़र को तेरे ख़िलाफ़
भेजूँगा जो घोड़े, रथ, घुड़सवार और बड़ी फ़ौज ले
कर शिमाल से तुझ पर हम्ला करेगा। 8 ख़ुश्की पर
तेरी आबादियों को वह तलवार से तबाह करेगा,
फिर पुश्ते और बुर्जों से तुझे घेर लेगा। उस के फ़ौजी
अपनी ढालें उठा कर तुझ पर हम्ला करेंगे। 9 बादशाह
अपनी क़िलाशिकन मशीनों से तेरी फ़सील को ढा
देगा और अपने आलात से तेरे बुर्जों को गिरा देगा।
10 जब उस के बेशुमार घोड़े चल पड़ेंगे तो इतनी गर्द
उड़ जाएगी कि तू उस में डूब जाएगी। जब बादशाह
तेरी फ़सील को तोड़ तोड़ कर तेरे दरवाज़ों में दाख़िल
होगा तो तेरी दीवारें घोड़ों और रथों के शोर से लरज़
उठेंगी। 11 उस के घोड़ों के खुर तेरी तमाम गलियों को
कुचल देंगे, और तेरे बाशिन्दे तलवार से मर जाएंगे,
तेरे मज़बूत सतून ज़मीनबोस हो जाएंगे। 12 दुश्मन तेरी
दौलत छीन लेंगे और तेरी तिजारत का माल लूट
लेंगे। वह तेरी दीवारों को गिरा कर तेरी शानदार
इमारतों को मिस्मार करेंगे, फिर तेरे पत्थर, लकड़ी
और मल्बा समुन्दर में फैंक देंगे। 13 मैं तेरे गीतों का
शोर बन्द करूँगा। आइन्दा तेरे सरोदों की आवाज़

सुनाई नहीं देगी। 14 मैं तुझे नंगी चटान में तब्दील
करूँगा, और मछेरे तुझे अपने जाल बिछा कर सुखाने
के लिए इस्तेमाल करेंगे। आइन्दा तुझे कभी दुबारा
तामीर नहीं किया जाएगा। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।

15 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी,
साहिली इलाक़े काँप उठेंगे जब तू धड़ाम से गिर
जाएगी, जब हर तरफ़ ज़ख़्मी लोगों की कराहती
आवाज़ें सुनाई देंगी, हर गली में क़त्ल-ओ-ग़ारत
का शोर मचेगा। 16 तब साहिली इलाक़ों के तमाम
हुक्मरान अपने तख़्तों से उतर कर अपने चोग़े और
शानदार लिबास उतारेंगे। वह मातमी कपड़े पहन कर
ज़मीन पर बैठ जाएंगे और बार बार लरज़ उठेंगे, यहाँ
तक वह तेरे अन्जाम पर परेशान होंगे। 17 तब वह तुझ
पर मातम करके गीत गाएँगे,

'हाय, तू कितने धड़ाम से गिर कर तबाह हुई है! ऐ
साहिली शहर, ऐ सूर बेटी, पहले तू अपने बाशिन्दों
समेत समुन्दर के दरमियान रह कर कितनी मश्हूर
और ताक़तवर थी। गिर्द-ओ-नवाह के तमाम बाशिन्दे
तुझ से दह्शत खाते थे। 18 अब साहिली इलाक़े तेरे
अन्जाम को देख कर थरथरा रहे हैं। समुन्दर के जज़ीरे
तेरे ख़ातमे की ख़बर सुन कर दह्शतज़दा हो गए हैं।'

19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी,
मैं तुझे वीरान-ओ-सुन्सान करूँगा। तू उन दीगर शहरों
की मानिन्द बन जाएगी जो नेस्त-ओ-नाबूद हो गए
हैं। मैं तुझ पर सैलाब लाऊँगा, और गहरा पानी तुझे
ढाँप देगा। 20 मैं तुझे पाताल में उतरने दूँगा, और
तू उस क़ौम के पास पहुँचेगी जो क़दीम ज़माने से
ही वहाँ बसती है। तब तुझे ज़मीन की गहराइयों में
रहना पड़ेगा, वहाँ जहाँ क़दीम ज़मानों के खंडरात
हैं। तू मुर्दों के मुल्क में रहेगी और कभी ज़िन्दगी के
मुल्क में वापस नहीं आएगी, न वहाँ अपना मक़ाम
दुबारा हासिल करेगी। 21 मैं होने दूँगा कि तेरा अन्जाम
दह्शतनाक होगा, और तू सरासर तबाह हो जाएगी।
लोग तेरा खोज लगाएँगे लेकिन तुझे कभी नहीं पाएँगे।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।"

सूर के अन्जाम पर मातमी गीत

27 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, सूर बेटी पर मातमी गीत गा,
3 उस शहर पर जो समुन्दर की गुज़रगाह पर वाक़े है
और मुतअद्दिद साहिली क़ौमों से तिजारत करता है।
उस से कह,

'रब फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, तू अपने आप
पर बहुत फ़ख़र करके कहती है कि वाह, मेरा हुस्न
कमाल का है। 4 और वाक़ई, तेरा इलाक़ा समुन्दर
के बीच में ही है, और जिन्हों ने तुझे तामीर किया
उन्हों ने तेरे हुस्न को तक्मील तक पहुँचाया, 5 तुझे
शानदार बहरी जहाज़ की मानिन्द बनाया। तेरे तख़्ते
सनीर में उगने वाले जूनीपर के दरख़्तों से बनाए
गए, तेरा मस्तूल लुबनान का देवदार का दरख़्त था।
6 तेरे चप्पू बसन के बलूत के दरख़्तों से बनाए गए,
जबकि तेरे फ़र्श के लिए क़ुब्रुस से सर्व की लकड़ी
लाई गई, फिर उसे हाथीदाँत से आरास्ता किया गया।
7 नफ़ीस कतान का तेरा रंगदार बादबान मिस्र का था।
वह तेरा इम्तियाज़ी निशान बन गया। तेरे तरपालों
का क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग इलीसा के साहिली
इलाक़े से लाया गया।

8 सैदा और अर्वद के मर्द तेरे चप्पू मारते थे, सूर
के अपने ही दाना तेरे मल्लाह थे। 9 जबल [m]के बुज़ुर्ग
और दानिशमन्द आदमी ध्यान देते थे कि तेरी दर्ज़ें
बन्द रहें। तमाम बहरी जहाज़ अपने मल्लाहों समेत
तेरे पास आया करते थे ताकि तेरे साथ तिजारत
करें। 10 फ़ार्स, लुदिया और लिबिया के अफ़राद तेरी
फ़ौज में ख़िदमत करते थे। तेरी दीवारों से लटकी
उन की ढालों और ख़ोदों ने तेरी शान मज़ीद बढ़ा
दी। 11 अर्वद और ख़लक [n]के आदमी तेरी फ़सील
का दिफ़ा करते थे, जम्माद के फ़ौजी तेरे बुर्जों में

[m]Biblos

[n]ग़ालिबन Cilicia।

पहरादारी करते थे। तेरी दीवारों से लटकी हुई उन
की ढालों ने तेरे हुस्न को कमाल तक पहुँचा दिया।
12 तू अमीर थी, तुझ में माल-ओ-अस्बाब की कस्रत
की तिजारत की जाती थी। इस लिए तरसीस तुझे
चाँदी, लोहा, टीन और सीसा दे कर तुझ से सौदा
करता था। 13 यूनान, तूबल और मसक तुझ से
तिजारत करते, तेरा माल ख़रीद कर मुआवज़े में
ग़ुलाम और पीतल का सामान देते थे। 14 बैत-तुजर्मा
के ताजिर तेरे माल के लिए तुझे आम घोड़े, फ़ौजी
घोड़े और ख़च्चर पहुँचाते थे। 15 ददान के आदमी
तेरे साथ तिजारत करते थे, हाँ मुतअद्दिद साहिली
इलाक़े तेरे गाहक थे। उन के साथ सौदाबाज़ी करके
तुझे हाथीदाँत और आब्नूस की लकड़ी मिलती थी।
16 शाम तेरी पैदावार की कस्रत की वजह से तेरे
साथ तिजारत करता था। मुआवज़े में तुझे फ़ीरोज़ा,
अर्ग़वानी रंग, रंगदार कपड़े, बारीक कतान, मूँगा
और याक़ूत मिलता था। 17 यहूदाह और इस्राईल तेरे
गाहक थे। तेरा माल ख़रीद कर वह तुझे मिन्नीत का
गन्दुम, पन्नग की टिक्कियाँ, शहद, ज़ैतून का तेल और
बल्सान देते थे। 18 दमिश्क़ तेरी वाफ़िर पैदावार और
माल की कस्रत की वजह से तेरे साथ कारोबार करता
था। उस से तुझे हल्बून की मै और साहर की ऊन
मिलती थी। 19 विदान और यूनान तेरे गाहक थे। वह
ऊज़ाल का ढाला हुआ लोहा, दारचीनी और कलमस
का मसाला पहुँचाते थे। 20 ददान से तिजारत करने
से तुझे ज़ीनपोश मिलती थी। 21 अरब और क़ीदार
के तमाम हुक्मरान तेरे गाहक थे। तेरे माल के इवज़
वह भेड़ के बच्चे, मेंढे और बकरे देते थे। 22 सबा और
रामा के ताजिर तेरा माल हासिल करने के लिए तुझे
बेहतरीन बल्सान, हर क़िस्म के जवाहिर और सोना
देते थे। 23 हारान, कन्ना, अदन, सबा, असूर और
कुल मादी सब तेरे साथ तिजारत करते थे। 24 वह
तेरे पास आ कर तुझे शानदार लिबास, क़िर्मिज़ी रंग
की चादरें, रंगदार कपड़े और कम्बल, नीज़ मज़बूत
रस्से पेश करते थे। 25 तरसीस के उम्दा जहाज़ तेरा
माल मुख़्तलिफ़ ममालिक में पहुँचाते थे। यूँ तू जहाज़
की मानिन्द समुन्दर के बीच में रह कर दौलत और
शान से मालामाल हो गई। 26 तेरे चप्पू चलाने वाले
तुझे दूर दूर तक पहुँचाते हैं।

लेकिन वह वक़्त क़रीब है जब मशरिक़ से तेज़
आँधी आ कर तुझे समुन्दर के दरमियान ही टुकड़े
टुकड़े कर देगी। 27 जिस दिन तू गिर जाएगी उस दिन
तेरी तमाम मिलकियत समुन्दर के बीच में ही डूब
जाएगी। तेरी दौलत, तेरा सौदा, तेरे मल्लाह, तेरे बहरी
मुसाफ़िर, तेरी दर्ज़ें बन्द रखने वाले, तेरे ताजिर, तेरे
तमाम फ़ौजी और बाक़ी जितने भी तुझ पर सवार
हैं सब के सब ग़र्क़ हो जाएंगे। 28 तेरे मल्लाहों की
चीख़ती चिल्लाती आवाज़ें सुन कर साहिली इलाक़े
काँप उठेंगे। 29 तमाम चप्पू चलाने वाले, मल्लाह और
बहरी मुसाफ़िर अपने जहाज़ों से उतर कर साहिल
पर खड़े हो जाएंगे। 30 वह ज़ोर से रो पड़ेंगे, बड़ी
तल्ख़ी से गिर्या-ओ-ज़ारी करेंगे। अपने सरों पर ख़ाक
डाल कर वह राख में लोट-पोट हो जाएंगे। 31 तेरी
ही वजह से वह अपने सरों को मुंडवा कर टाट का
लिबास ओढ़ लेंगे, वह बड़ी बेचैनी और तल्ख़ी से
तुझ पर मातम करेंगे। 32 तब वह ज़ार-ओ-क़तार रो
कर मातम का गीत गाएँगे,

"हाय, कौन समुन्दर से घिरे हुए सूर की तरह
ख़ामोश हो गया है?"

33 जब तिजारत का माल समुन्दर की चारों तरफ़
से तुझ तक पहुँचता था तो तू मुतअद्दिद क़ौमों को
सेर करती थी। दुनिया के बादशाह तेरी दौलत और
तिजारती सामान की कस्रत से अमीर हुए।

34 अफ़सोस! अब तू पाश पाश हो कर समुन्दर की
गहराइयों में ग़ाइब हो गई है। तेरा माल और तेरे तमाम
अफ़राद तेरे साथ डूब गए हैं।

35 साहिली इलाक़ों में बसने वाले घबरा गए हैं।
उन के बादशाहों के रोंगटे खड़े हो गए, उन के चिहरे
परेशान नज़र आते हैं।

36 दीगर अक़्वाम के ताजिर तुझे देख कर "तौबा
तौबा" कहते हैं। तेरा हौलनाक अन्जाम अचानक ही
आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगी'।"

सूर के हुक्मरान के लिए पैग़ाम

28 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ
आदमज़ाद, सूर के हुक्मरान को बता,
‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू मग़रूर
हो गया है। तू कहता है कि मैं ख़ुदा हूँ, मैं समुन्दर
के दरमियान ही अपने तख़्त-ए-इलाही पर बैठा हूँ।
लेकिन तू ख़ुदा नहीं बल्कि इन्सान है, गो तू अपने
आप को ख़ुदा सा समझता है। 3 बेशक तू अपने
आप को दान्याल से कहीं ज़्यादा दानिशमन्द समझ
कर कहता है कि कोई भी भेद मुझ से पोशीदा नहीं
रहता। 4 और यह हक़ीक़त भी है कि तू ने अपनी
हिक्मत और समझ से बहुत दौलत हासिल की है,
सोने और चाँदी से अपने ख़ज़ानों को भर दिया है।
5 बड़ी दानिशमन्दी से तू ने तिजारत के ज़रीए अपनी
दौलत बढ़ाई। लेकिन जितनी तेरी दौलत बढ़ती गई
उतना ही तेरा ग़ुरूर भी बढ़ता गया।
6 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि
तू अपने आप को ख़ुदा सा समझता है 7 इस लिए मैं
सब से ज़ालिम क़ौमों को तेरे ख़िलाफ़ भेजूँगा जो
अपनी तलवारों को तेरी ख़ूबसूरती और हिक्मत के
ख़िलाफ़ खैंच कर तेरी शान-ओ-शौकत की बेहुरमती
करेंगी। 8 वह तुझे पाताल में उतारेंगी। समुन्दर के
बीच में ही तुझे मार डाला जाएगा। 9 क्या तू उस वक़्त
अपने क़ातिलों से कहेगा कि मैं ख़ुदा हूँ? हरगिज़
नहीं! अपने क़ातिलों के हाथ में होते वक़्त तू ख़ुदा
नहीं बल्कि इन्सान साबित होगा। 10 तू अजनबियों
के हाथों नामख़्तून की सी वफ़ात पाएगा। यह मेरा,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है’।”
11 रब मज़ीद मुझ से हमकलाम हुआ, 12 “ऐ
आदमज़ाद, सूर के बादशाह पर मातमी गीत गा कर
उस से कह,
‘रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुझ पर
कामिलियत का ठप्पा था। तू हिक्मत से भरपूर
था, तेरा हुस्न कमाल का था। 13 अल्लाह के बाग़-
ए-अदन में रह कर तू हर क़िस्म के जवाहिर से
सजा हुआ था। लाल, [o]ज़बर्जद, [p]हज़्र-उल-क़मर,
[q]पुखराज, [r]अक़ीक़-ए-अह्मर [s]और यशब, [t]संग-ए-
लाजवर्द, [u]फ़ीरोज़ा और ज़ुमुर्रद सब तुझे आरास्ता
करते थे। सब कुछ सोने के काम से मज़ीद ख़ूबसूरत
बनाया गया था। जिस दिन तुझे ख़ल्क़ किया गया
उसी दिन यह चीज़ें तेरे लिए तय्यार हुईं।
14 मैं ने तुझे अल्लाह के मुक़द्दस पहाड़ पर खड़ा
किया था। वहाँ तू करूबी फ़रिश्ते की हैसियत से
अपने पर फैलाए पहरादारी करता था, वहाँ तू जलते
हुए पत्थरों के दरमियान ही घूमता फिरता रहा।
15 जिस दिन तुझे ख़ल्क़ किया गया तेरा चाल-चलन
बेइल्ज़ाम था, लेकिन अब तुझ में नाइन्साफ़ी पाई गई
है। 16 तिजारत में कामयाबी की वजह से तू ज़ुल्म-ओ-
तशद्दुद से भर गया और गुनाह करने लगा।
यह देख कर मैं ने तुझे अल्लाह के पहाड़ पर से उतार
दिया। मैं ने तुझे जो पहरादारी करने वाला फ़रिश्ता
था तबाह करके जलते हुए पत्थरों के दरमियान से
निकाल दिया। 17 तेरी ख़ूबसूरती तेरे लिए ग़ुरूर का
बाइस बन गई, हाँ तेरी शान-ओ-शौकत ने तुझे इतना

---

[o]या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अक्सर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[p]peridot

[q]moonstone

[r]topas

[s]carnelian

[t]jasper

[u]lapis lazuli

फुला दिया कि तेरी हिक्मत जाती रही। इसी लिए मैं
ने तुझे ज़मीन पर पटख़ कर दीगर बादशाहों के सामने
तमाशा बना दिया। 18 अपने बेशुमार गुनाहों और
बेइन्साफ़ तिजारत से तू ने अपने मुक़द्दस मक़ामों की
बेहुरमती की है। जवाब में मैं ने होने दिया कि आग
तेरे दरमियान से निकल कर तुझे भस्म करे। मैं ने तुझे
तमाशा देखने वाले तमाम लोगों के सामने ही राख
कर दिया। 19 जितनी भी क़ौमें तुझे जानती थीं उन के
रोंगटे खड़े हो गए। तेरा हौलनाक अन्जाम अचानक
ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगा'।"

सैदा को सज़ा दी जाएगी

20 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 21 "ऐ आदमज़ाद,
सैदा की तरफ़ रुख़ करके उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर! 22 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सैदा,
मैं तुझ से निपट लूँगा। तेरे दरमियान ही मैं अपना
जलाल दिखाऊँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ, क्यूँकि मैं शहर की अदालत करके अपना
मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। 23 मैं उस में
मोहलिक वबा फैला कर उस की गलियों में ख़ून बहा
दूँगा। उसे चारों तरफ़ से तलवार घेर लेगी तो उस में
फंसे हुए लोग हलाक हो जाएंगे। तब वह जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।

इस्राईल की बहाली

24 इस वक़्त इस्राईल के पड़ोसी उसे हक़ीर जानते
हैं। अब तक वह उसे चुभने वाले ख़ार और ज़ख़्मी
करने वाले काँटे हैं। लेकिन आइन्दा ऐसा नहीं होगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ।
25 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि दीगर
अक़्वाम के देखते देखते मैं ज़ाहिर करूँगा कि मैं
मुक़द्दस हूँ। क्यूँकि मैं इस्राईलियों को उन अक़्वाम में
से निकाल कर जमा करूँगा जहाँ मैं ने उन्हें मुन्तशिर
कर दिया था। तब वह अपने वतन में जा बसेंगे, उस
मुल्क में जो मैं ने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था।
26 वह हिफ़ाज़त से उस में रह कर घर तामीर करेंगे
और अंगूर के बाग़ लगाएँगे। लेकिन जो पड़ोसी उन्हें
हक़ीर जानते थे उन की मैं अदालत करूँगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं रब उन का ख़ुदा हूँ।"

मिस्र को सज़ा मिलेगी

29 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
दसवें साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ।
दसवें महीने का 11वाँ दिन [v]था। रब ने फ़रमाया,
2 "ऐ आदमज़ाद, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन की
तरफ़ रुख़ करके उस के और तमाम मिस्र के ख़िलाफ़
नबुव्वत कर!
3 उसे बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
ऐ शाह-ए-मिस्र फ़िरऔन, मैं तुझ से निपटने को हूँ।
बेशक तू एक बड़ा अज़दहा है जो दरया-ए-नील की
मुख़्तलिफ़ शाख़ों के बीच में लेटा हुआ कहता है कि
यह दरया मेरा ही है, मैं ने ख़ुद उसे बनाया।
4 लेकिन मैं तेरे मुँह में काँटे डाल कर तुझे दरया
से निकाल लाऊँगा। मेरे कहने पर तेरी नदियों की
तमाम मछलियाँ तेरे छिलकों के साथ लग कर तेरे
साथ पकड़ी जाएँगी। 5 मैं तुझे इन तमाम मछलियों
समेत रेगिस्तान में फैंक छोड़ूँगा। तू खुले मैदान में
गिर कर पड़ा रहेगा। न कोई तुझे इकट्ठा करेगा, न
जमा करेगा बल्कि मैं तुझे दरिन्दों और परिन्दों को
खिला दूँगा। 6 तब मिस्र के तमाम बाशिन्दे जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।
तू इस्राईल के लिए सरकंडे की कच्ची छड़ी साबित
हुआ है। 7 जब उन्हों ने तुझे पकड़ने की कोशिश की
तो तू ने टुकड़े टुकड़े हो कर उन के कंधे को ज़ख़्मी
कर दिया। जब उन्हों ने अपना पूरा वज़न तुझ पर
डाला तो तू टूट गया, और उन की कमर डाँवाँडोल
हो गई। 8 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि मैं तेरे ख़िलाफ़ तलवार भेजूँगा जो मुल्क में

[v] 7 जन्वरी।

से इन्सान-ओ-हैवान मिटा डालेगी। 9 मुल्क-ए-मिस्र
वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ।

चूँकि तू ने दावा किया, "दरया-ए-नील मेरा ही है, मैं
ने ख़ुद उसे बनाया" 10 इस लिए मैं तुझ से और तेरी
नदियों से निपट लूँगा। मिस्र में हर तरफ़ खंडरात नज़र
आएँगे। शिमाल में मिज्दाल से ले कर जुनूबी शहर
अस्वान बल्कि एथोपिया की सरहद तक मैं मिस्र
को वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। 11 न इन्सान और
न हैवान का पाँओ उस में से गुज़रेगा। चालीस साल
तक उस में कोई नहीं बसेगा। 12 इर्दगिर्द के दीगर
तमाम ममालिक की तरह मैं मिस्र को भी उजाड़ूँगा,
इर्दगिर्द के दीगर तमाम शहरों की तरह मैं मिस्र के
शहर भी मल्बे के ढेर बना दूँगा। चालीस साल तक
उन की यही हालत रहेगी। साथ साथ मैं मिस्रियों को
मुख़्तलिफ़ अक़्वाम-ओ-ममालिक में मुन्तशिर कर
दूँगा।

13 लेकिन रब क़ादिर-ए-मुतलक़ यह भी फ़रमाता
है कि चालीस साल के बाद मैं मिस्रियों को उन
ममालिक से निकाल कर जमा करूँगा जहाँ मैं ने
उन्हें मुन्तशिर कर दिया था। 14 मैं मिस्र को बहाल
करके उन्हें उन के आबाई वतन यानी जुनूबी मिस्र
में वापस लाऊँगा। वहाँ वह एक ग़ैरअहम सल्तनत
क़ाइम करेंगे 15 जो बाक़ी ममालिक की निस्बत छोटी
होगी। आइन्दा वह दीगर क़ौमों पर अपना रोब नहीं
डालेंगे। मैं ख़ुद ध्यान दूँगा कि वह आइन्दा इतने
कमज़ोर रहें कि दीगर क़ौमों पर हुकूमत न कर सकें।
16 आइन्दा इस्राईल न मिस्र पर भरोसा करने और न
उस से लिपट जाने की आज़माइश में पड़ेगा। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ'।"

शाह-ए-बाबल को मिस्र मिलेगा

17 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 27वें
साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ। पहले महीने का
पहला दिन [w]था। उस ने फ़रमाया, 18 "ऐ आदमज़ाद,
जब शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने सूर का मुहासरा
किया तो उस की फ़ौज को सख़्त मेहनत करनी पड़ी।
हर सर गंजा हुआ, हर कंधे की जिल्द छिल गई।
लेकिन न उसे और न उस की फ़ौज को मेहनत का
मुनासिब अज्र मिला।

19 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र को मिस्र दे दूँगा। उस
की दौलत को वह उठा कर ले जाएगा। अपनी फ़ौज
को पैसे देने के लिए वह मिस्र को लूट लेगा। 20 चूँकि
नबूकद्नज़्ज़र और उस की फ़ौज ने मेरे लिए ख़ूब
मेहनत-मशक़्क़त की इस लिए मैं ने उसे मुआवज़े के
तौर पर मिस्र दे दिया है। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।

21 जब यह कुछ पेश आएगा तो मैं इस्राईल को नई
ताक़त दूँगा। ऐ हिज़्क़ीएल, उस वक़्त मैं तेरा मुँह
खोल दूँगा, और तू दुबारा उन के दरमियान बोलेगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

मिस्र की ताक़त ख़त्म हो जाएगी

30 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, नबुव्वत करके यह पैग़ाम सुना
दे,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि आह-ओ-
ज़ारी करो! उस दिन पर अफ़्सोस 3 जो आने वाला है।
क्यूँकि रब का दिन क़रीब ही है। उस दिन घने बादल
छा जाएंगे, और मैं अक़्वाम की अदालत करूँगा।
4 मिस्र पर तलवार नाज़िल हो कर वहाँ के बाशिन्दों
को मार डालेगी। मुल्क की दौलत छीन ली जाएगी,
और उस की बुन्यादों को ढा दिया जाएगा। यह देख
कर एथोपिया लरज़ उठेगा, 5 क्यूँकि उस के लोग भी
तलवार की ज़द में आ जाएंगे। कई क़ौमों के अफ़राद
मिस्रियों के साथ हलाक हो जाएंगे। एथोपिया के,
लिबिया के, लुदिया के, मिस्र में बसने वाले तमाम

---

[w] 26 अप्रैल।

अजनबी क़ौमों के, कूब के और मेरे अह्द की क़ौम
इस्राईल के लोग हलाक हो जाएंगे। 6 रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि मिस्र को सहारा देने वाले सब
गिर जाएंगे, और जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करता है
वह जाती रहेगी। शिमाल में मिज्दाल से ले कर जुनूबी
शहर अस्वान तक उन्हें तलवार मार डालेगी। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है। 7 इर्दगिर्द के दीगर
ममालिक की तरह मिस्र भी वीरान-ओ-सुन्सान होगा,
इर्दगिर्द के दीगर शहरों की तरह उस के शहर भी मल्बे
के ढेर होंगे। 8 जब मैं मिस्र में यूँ आग लगा कर उस
के मददगारों को कुचल डालूँगा तो लोग जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ।

9 अब तक एथोपिया अपने आप को मह्फ़ूज़
समझता है, लेकिन उस दिन मेरी तरफ़ से क़ासिद
निकल कर उस मुल्क के बाशिन्दों को ऐसी ख़बर
पहुँचाएँगे जिस से वह थरथरा उठेंगे। क्यूँकि क़ासिद
कश्तियों में बैठ कर दरया-ए-नील के ज़रीए उन तक
पहुँचेंगे और उन्हें इत्तिला देंगे कि मिस्र तबाह हो
गया है। यह सुन कर वहाँ के लोग काँप उठेंगे।
यक़ीन करो, यह दिन जल्द ही आने वाला है।
10 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि शाह-ए-
बाबल नबूकद्नज़्ज़र के ज़रीए मैं मिस्र की शान-ओ-
शौकत छीन लूँगा। 11 उसे फ़ौज समेत मिस्र में लाया
जाएगा ताकि उसे तबाह करे। तब अक़्वाम में से सब
से ज़ालिम यह लोग अपनी तलवारों को चला कर
मुल्क को मक़्तूलों से भर देंगे। 12 मैं दरया-ए-नील
की शाख़ों को ख़ुश्क करूँगा और मिस्र को फ़रोख़्त
करके शरीर आदमियों के हवाले कर दूँगा। परदेसियों
के ज़रीए मैं मुल्क और जो कुछ भी उस में है तबाह
कर दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

13 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मिस्री
बुतों को बर्बाद करूँगा और मेम्फ़िस के मुजस्समे
हटा दूँगा। मिस्र में हुक्मरान नहीं रहेगा, और मैं मुल्क
पर ख़ौफ़ तारी करूँगा। 14 मेरे हुक्म पर जुनूबी मिस्र
बर्बाद और ज़ुअन नज़र-ए-आतिश होगा। मैं थीबस
की अदालत 15 और मिस्री क़िले पलूसियम पर अपना
ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। हाँ, थीबस की शान-ओ-
शौकत नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगी। 16 मैं मिस्र को
नज़र-ए-आतिश करूँगा। तब पलूसियम दर्द-ए-ज़ह
में मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाएगा,
थीबस दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा और मेम्फ़िस
मुसलसल मुसीबत में फंसा रहेगा। 17 दुश्मन की
तलवार हीलियोपुलिस और बूबस्तिस के जवानों को
मार डालेगी जबकि बची हुई औरतें ग़ुलाम बन कर
जिलावतन हो जाएँगी। 18 तह्फ़न्हीस में दिन तारीक
हो जाएगा जब मैं वहाँ मिस्र के जूए को तोड़ दूँगा।
वहीं उस की ज़बरदस्त ताक़त जाती रहेगी। घना
बादल शहर पर छा जाएगा, और गिर्द-ओ-नवाह की
आबादियाँ क़ैदी बन कर जिलावतन हो जाएँगी। 19 यूँ
मैं मिस्र की अदालत करूँगा और वह जान लेंगे कि
मैं ही रब हूँ'।"

20 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारवें
साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ। पहले महीने
का सातवाँ दिन [x]था। उस ने फ़रमाया था, 21 "ऐ
आदमज़ाद, मैं ने मिस्री बादशाह फ़िरऔन का बाज़ू
तोड़ डाला है। शिफ़ा पाने के लिए लाज़िम था कि
बाज़ू पर पट्टी बांधी जाए, कि टूटी हुई हड्डी के साथ
खपच्ची बांधी जाए ताकि बाज़ू मज़बूत हो कर तलवार
चलाने के क़ाबिल हो जाए। लेकिन इस क़िस्म का
इलाज हुआ नहीं।

22 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
मिस्री बादशाह फ़िरऔन से निपट कर उस के दोनों
बाज़ूओं को तोड़ डालूँगा, सेहतमन्द बाज़ू को भी और
टूटे हुए को भी। तब तलवार उस के हाथ से गिर
जाएगी 23 और मैं मिस्रियों को मुख़्तलिफ़ अक़्वाम-
ओ-ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा।

24 मैं शाह-ए-बाबल के बाज़ूओं को तक़वियत दे
कर उसे अपनी ही तलवार पकड़ा दूँगा। लेकिन

---

[x] 29 अप्रैल।

फ़िरऔन के बाज़ूओं को मैं तोड़ डालूँगा, और वह
शाह-ए-बाबल के सामने मरने वाले ज़ख़्मी आदमी की
तरह कराह उठेगा। 25 शाह-ए-बाबल के बाज़ूओं को
मैं तक़वियत दूँगा जबकि फ़िरऔन के बाज़ू बेहिस्स-
ओ-हरकत हो जाएंगे। जिस वक़्त मैं अपनी तलवार
को शाह-ए-बाबल को पकड़ा दूँगा और वह उसे
मिस्र के ख़िलाफ़ चलाएगा उस वक़्त लोग जान लेंगे
कि मैं ही रब हूँ। 26 हाँ, जिस वक़्त मैं मिस्रियों को
दीगर अक़्वाम-ओ-ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा
उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

मिस्री दरख़्त धड़ाम से गिर जाएगा

31 1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के
ग्यारवें साल में रब मुझ से हमकलाम हुआ।
तीसरे महीने का पहला दिन [y]था। उस ने फ़रमाया,
2 “ऐ आदमज़ाद, मिस्री बादशाह फ़िरऔन और उस
की शान-ओ-शौकत से कह,

‘कौन तुझ जैसा अज़ीम था? 3 तू सर्व का दरख़्त,
लुबनान का देवदार का दरख़्त था, जिस की
ख़ूबसूरत और घनी शाख़ें जंगल को साया देती थीं।
वह इतना बड़ा था कि उस की चोटी बादलों में
ओझल थी। 4 पानी की कस्रत ने उसे इतनी तरक़्क़ी
दी, गहरे चश्मों ने उसे बड़ा बना दिया। उस की
नदियाँ तने के चारों तरफ़ बहती थीं और फिर आगे
जा कर खेत के बाक़ी तमाम दरख़्तों को भी सेराब
करती थीं। 5 चुनाँचे वह दीगर दरख़्तों से कहीं ज़्यादा
बड़ा था। उस की शाख़ें बढ़ती और उस की टहनियाँ
लम्बी होती गईं। वाफ़िर पानी के बाइस वह ख़ूब
फैलता गया। 6 तमाम परिन्दे अपने घोंसले उस की
शाख़ों में बनाते थे। उस की शाख़ों की आड़ में जंगली
जानवरों के बच्चे पैदा होते, उस के साय में तमाम
अज़ीम क़ौमें बसती थीं। 7 चूँकि दरख़्त की जड़ों
को पानी की कस्रत मिलती थी इस लिए उस की
लम्बाई और शाख़ें क़ाबिल-ए-तारीफ़ और ख़ूबसूरत
बन गईं। 8 बाग़-ए-ख़ुदा के देवदार के दरख़्त उस के
बराबर नहीं थे। न जूनीपर की टहनियाँ, न चनार की
शाख़ें उस की शाख़ों के बराबर थीं। बाग़-ए-ख़ुदा में
कोई भी दरख़्त उस की ख़ूबसूरती का मुक़ाबला नहीं
कर सकता था। 9 मैं ने ख़ुद उसे मुतअद्दिद डालियाँ
मुहय्या करके ख़ूबसूरत बनाया था। अल्लाह के बाग़-
ए-अदन के तमाम दीगर दरख़्त उस से रश्क खाते
थे।

10 लेकिन अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि जब दरख़्त इतना बड़ा हो गया कि उस की चोटी
बादलों में ओझल हो गई तो वह अपने क़द पर फ़ख़र
करके मग़ुरूर हो गया।

11 यह देख कर मैं ने उसे अक़्वाम के सब से बड़े
हुक्मरान के हवाले कर दिया ताकि वह उस की
बेदीनी के मुताबिक़ उस से निपट ले। मैं ने उसे
निकाल दिया, 12 तो अजनबी अक़्वाम के सब से
ज़ालिम लोगों ने उसे टुकड़े टुकड़े करके ज़मीन पर
छोड़ दिया। तब उस की शाख़ें पहाड़ों पर और तमाम
वादियों में गिर गईं, उस की टहनियाँ टूट कर मुल्क
की तमाम घाटियों में पड़ी रहीं। दुनिया की तमाम
अक़्वाम उस के साय में से निकल कर वहाँ से चली
गईं। 13 तमाम परिन्दे उस के कटे हुए तने पर बैठ
गए, तमाम जंगली जानवर उस की सूखी हुई शाख़ों
पर लेट गए। 14 यह इस लिए हुआ कि आइन्दा पानी
के किनारे पर लगा कोई भी दरख़्त इतना बड़ा न
हो कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो जाए
और नतीजतन वह अपने आप को दूसरों से बरतर
समझे। क्यूँकि सब के लिए मौत और ज़मीन की
गहराइयाँ मुक़र्रर हैं, सब को पाताल में उतर कर
मुर्दों के दरमियान बसना है।

15 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस वक़्त
यह दरख़्त पाताल में उतर गया उस दिन मैं ने
गहराइयों के चश्मों को उस पर मातम करने दिया
और उन की नदियों को रोक दिया ताकि पानी इतनी

---

[y] 21 जून।

कस्रत से न बहे। उस की ख़ातिर मैं ने लुबनान को
मातमी लिबास पहनाए। तब खुले मैदान के तमाम
दरख़्त मुरझा गए। 16 वह इतने धड़ाम से गिर गया
जब मैं ने उसे पाताल में उन के पास उतार दिया जो
गढ़े में उतर चुके थे कि दीगर अक़्वाम को धच्का
लगा। लेकिन बाग़-ए-अदन के बाक़ी तमाम दरख़्तों
को तसल्ली मिली। क्यूँकि गो लुबनान के इन चीदा
और बेहतरीन दरख़्तों को पानी की कस्रत मिलती
रही थी ताहम यह भी पाताल में उतर गए थे। 17 गो
यह बड़े दरख़्त की ताक़त रहे थे और अक़्वाम के
दरमियान रह कर उस के साय में अपना घर बना
लिया था तो भी यह बड़े दरख़्त के साथ वहाँ उतर
गए जहाँ मक़्तूल उन के इन्तिज़ार में थे।

18 ऐ मिस्र, अज़मत और शान के लिहाज़ से बाग़-ए-
अदन का कौन सा दरख़्त तेरा मुक़ाबला कर सकता
है? लेकिन तुझे बाग़-ए-अदन के दीगर दरख़्तों के
साथ ज़मीन की गहराइयों में उतारा जाएगा। वहाँ तू
नामख़्तूनों और मक़्तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही फ़िरऔन और
उस की शान-ओ-शौकत का अन्जाम होगा'।"

अज़दहे फ़िरऔन को मारा जाएगा

32 1 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में
रब मुझ से हमकलाम हुआ। 12वें महीने
का पहला दिन [z]था। मुझे यह पैग़ाम मिला, 2 "ऐ
आदमज़ाद, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन पर मातमी
गीत गा कर उसे बता,

'गो अक़्वाम के दरमियान तुझे जवान शेरबबर
समझा जाता है, लेकिन दरहक़ीक़त तू दरया-ए-नील
की शाख़ों में रहने वाला अज़दहा है जो अपनी नदियों
को उबलने देता और पाँओ से पानी को ज़ोर से
हरकत में ला कर गदला कर देता है।

3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं मुतअद्दिद
क़ौमों को जमा करके तेरे पास भेजूँगा ताकि तुझ पर
जाल डाल कर तुझे पानी से खैंच निकालें। 4 तब मैं
तुझे ज़ोर से ख़ुश्की पर पटख़ दूँगा, खुले मैदान पर ही
तुझे फैंक छोड़ूँगा। तमाम परिन्दे तुझ पर बैठ जाएंगे,
तमाम जंगली जानवर तुझे खा खा कर सेर हो जाएंगे।
5 तेरा गोश्त मैं पहाड़ों पर फैंक दूँगा, तेरी लाश से
वादियों को भर दूँगा। 6 तेरे बहते ख़ून से मैं ज़मीन
को पहाड़ों तक सेराब करूँगा, घाटियाँ तुझ से भर
जाएँगी।

7 जिस वक़्त मैं तेरी ज़िन्दगी की बत्ती बुझा दूँगा
उस वक़्त मैं आसमान को ढाँप दूँगा। सितारे तारीक
हो जाएंगे, सूरज बादलों में छुप जाएगा और चाँद की
रौशनी नज़र नहीं आएगी। 8 जो कुछ भी आसमान
पर चमकता दमकता है उसे मैं तेरे बाइस तारीक कर
दूँगा। तेरे पूरे मुल्क पर तारीकी छा जाएगी। यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

9 बहुत क़ौमों के दिल घबरा जाएंगे जब मैं तेरे
अन्जाम की ख़बर दीगर अक़्वाम तक पहुँचाऊँगा,
ऐसे ममालिक तक जिन से तू नावाक़िफ़ है।
10 मुतअद्दिद क़ौमों के सामने ही मैं तुझ पर तलवार
चला दूँगा। यह देख कर उन पर दहशत तारी हो
जाएगी, और उन के बादशाहों के रोंगटे खड़े हो
जाएंगे। जिस दिन तू धड़ाम से गिर जाएगा उस दिन
उन पर मरने का इतना ख़ौफ़ छा जाएगा कि वह बार
बार काँप उठेंगे।

11 क्यूँकि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
शाह-ए-बाबल की तलवार तुझ पर हम्ला करेगी।
12 तेरी शानदार फ़ौज उस के सूरमाओं की तलवार से
गिर कर हलाक हो जाएगी। दुनिया के सब से ज़ालिम
आदमी मिस्र का ग़ुरूर और उस की तमाम शान-ओ-
शौकत ख़ाक में मिला देंगे। 13 मैं वाफ़िर पानी के पास
खड़े उस के मवेशी को भी बर्बाद करूँगा। आइन्दा
यह पानी न इन्सान, न हैवान के पाँओ से गदला
होगा। 14 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस
वक़्त मैं होने दूँगा कि उन का पानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हो

---

[z] 3 मार्च।

जाए और नदियाँ तेल की तरह बहने लगें। 15 मैं मिस्र
को वीरान-ओ-सुन्सान करके हर चीज़ से महरूम
करूँगा, मैं उस के तमाम बाशिन्दों को मार डालूँगा।
तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ'।"
16 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "लाज़िम है
कि दर्ज-ए-बाला मातमी गीत को गाया जाए। दीगर
अक़्वाम उसे गाएँ, वह मिस्र और उस की शान-ओ-
शौकत पर मातम का यह गीत ज़रूर गाएँ।"

पाताल में दीगर अक़्वाम मिस्र के इन्तिज़ार में हैं

17 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझ
से हमकलाम हुआ। महीने का 15वाँ दिन था। उस
ने फ़रमाया, 18 "ऐ आदमज़ाद, मिस्र की शान-ओ-
शौकत पर वावैला कर। उसे दीगर अज़ीम अक़्वाम
के साथ पाताल में उतार दे। उसे उन के पास पहुँचा
दे जो पहले गढ़े में पहुँच चुके हैं। 19 मिस्र को बता,
'अब तेरी ख़ूबसूरती कहाँ गई? अब तू इस में किस
का मुक़ाबला कर सकता है? उतर जा! पाताल में
नामख़्तूनों के पास ही पड़ा रह।' 20 क्यूँकि लाज़िम
है कि मिस्री मक़्तूलों के बीच में ही गिर कर हलाक
हो जाएँ। तलवार उन पर हम्ला करने के लिए खैंची
जा चुकी है। अब मिस्र को उस की तमाम शान-ओ-
शौकत के साथ घसीट कर पाताल में ले जाओ!
21 तब पाताल में बड़े सूरमे मिस्र और उस के
मददगारों का इस्तिक़्बाल करके कहेंगे, 'लो, अब
यह भी उतर आए हैं, यह भी यहाँ पड़े नामख़्तूनों
और मक़्तूलों में शामिल हो गए हैं।'
22 वहाँ असूर पहले से अपनी पूरी फ़ौज समेत पड़ा
है, और उस के इर्दगिर्द तलवार के मक़्तूलों की क़ब्रें
हैं। 23 असूर को पाताल के सब से गहरे गढ़े में क़ब्रें
मिल गईं, और इर्दगिर्द उस की फ़ौज दफ़न हुई है।
पहले यह ज़िन्दों के मुल्क में चारों तरफ़ दहशत
फैलाते थे, लेकिन अब ख़ुद तलवार से हलाक हो
गए हैं।
24 वहाँ ऐलाम भी अपनी तमाम शान-ओ-शौकत
समेत पड़ा है। उस के इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी
तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब उतर कर
नामख़्तूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िन्दों के मुल्क
में लोग उन से शदीद दहशत खाते थे। अब वह
भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी
रुस्वाई भुगत रहे हैं। 25 ऐलाम का बिस्तर मक़्तूलों
के दरमियान ही बिछाया गया है, और उस के इर्दगिर्द
उस की तमाम शानदार फ़ौज को क़ब्रें मिल गई हैं।
सब नामख़्तून, सब मक़्तूल हैं, गो ज़िन्दों के मुल्क
में लोग उन से सख़्त दहशत खाते थे। अब वह भी
पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी
रुस्वाई भुगत रहे हैं। उन्हें मक़्तूलों के दरमियान ही
जगह मिल गई है।
26 वहाँ मसक-तूबल भी अपनी तमाम शान-ओ-
शौकत समेत पड़ा है। उस के इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी
तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब नामख़्तूनों में
शामिल हो गए हैं, गो ज़िन्दों के मुल्क में लोग उन से
शदीद दहशत खाते थे। 27 और उन्हें उन सूरमाओं के
पास जगह नहीं मिली जो क़दीम ज़माने में नामख़्तूनों
के दरमियान फ़ौत हो कर अपने हथियारों के साथ
पाताल में उतर आए थे और जिन के सरों के नीचे
तलवार रखी गई। उन का क़ुसूर उन की हड्डियों
पर पड़ा रहता है, गो ज़िन्दों के मुल्क में लोग इन
जंगजूओं से दहशत खाते थे।
28 ऐ फ़िरऔन, तू भी पाश पाश हो कर नामख़्तूनों
और मक़्तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। 29 अदोम
पहले से अपने बादशाहों और रईसों समेत वहाँ पहुँच
चुका होगा। गो वह पहले इतने ताक़तवर थे, लेकिन
अब मक़्तूलों में शामिल हैं, उन नामख़्तूनों में जो
पाताल में उतर गए हैं। 30 इस तरह शिमाल के तमाम
हुक्मरान और सैदा के तमाम बाशिन्दे भी वहाँ आ
मौजूद होंगे। वह भी मक़्तूलों के साथ पाताल में उतर
गए हैं। गो उन की ज़बरदस्त ताक़त लोगों में दहशत
फैलाती थी, लेकिन अब वह शर्मिन्दा हो गए हैं, अब
वह नामख़्तून हालत में मक़्तूलों के साथ पड़े हैं। वह
भी पाताल में उतरे हुए बाक़ी लोगों के साथ अपनी
रुस्वाई भुगत रहे हैं।

31 तब फ़िरऔन इन सब को देख कर तसल्ली
पाएगा, गो उस की तमाम शान-ओ-शौकत पाताल
में उतर गई होगी। रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि फ़िरऔन और उस की पूरी फ़ौज तलवार की ज़द
में आ जाएंगे।
32 पहले मेरी मर्ज़ी थी कि फ़िरऔन ज़िन्दों के मुल्क
में ख़ौफ़-ओ-हिरास फैलाए, लेकिन अब उसे उस
की तमाम शान-ओ-शौकत के साथ नामख़्तूनों और
मक़्तूलों के दरमियान रखा जाएगा। यह मेरा रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।”

हिज़्क़ीएल इस्राईल का पहरेदार है

33 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 “ऐ
आदमज़ाद, अपने हमवतनों को यह पैग़ाम
पहुँचा दे,
‘जब कभी मैं किसी मुल्क में जंग छेड़ता हूँ तो उस
मुल्क के बाशिन्दे अपने मर्दों में से एक को चुन कर
अपना पहरेदार बना लेते हैं। 3 पहरेदार की ज़िम्मादारी
यह है कि जूँ ही दुश्मन नज़र आए तूँ ही नरसिंगा बजा
कर लोगों को आगाह करे। 4 उस वक़्त जो नरसिंगे
की आवाज़ सुन कर पर्वा न करे वह ख़ुद ज़िम्मादार
ठहरेगा अगर दुश्मन उस पर हम्ला करके उसे क़त्ल
करे। 5 यह उस का अपना क़ुसूर होगा, क्यूँकि उस
ने नरसिंगे की आवाज़ सुनने के बावुजूद पर्वा न की।
लेकिन अगर वह पहरेदार की ख़बर मान ले तो अपनी
जान को बचाएगा।
6 अब फ़र्ज़ करो कि पहरेदार दुश्मन को देखे लेकिन
न नरसिंगा बजाय, न लोगों को आगाह करे। अगर
नतीजे में कोई क़त्ल हो जाए तो वह अपने गुनाहों के
बाइस ही मर जाएगा। लेकिन मैं पहरेदार को उस की
मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा।’
7 ऐ आदमज़ाद, मैं ने तुझे इस्राईली क़ौम की
पहरादारी करने की ज़िम्मादारी दी है। इस लिए
लाज़िम है कि जब भी मैं कुछ फ़रमाऊँ तो तू मेरी
सुन कर इस्राईलियों को मेरी तरफ़ से आगाह करे।
8 अगर मैं किसी बेदीन को बताना चाहूँ, ‘तू यक़ीनन
मरेगा’ तो लाज़िम है कि तू उसे यह सुना कर उस
की ग़लत राह से आगाह करे। अगर तू ऐसा न करे
तो गो बेदीन अपने गुनाहों के बाइस ही मरेगा ताहम
मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा।
9 लेकिन अगर तू उसे उस की ग़लत राह से आगाह
करे और वह न माने तो वह अपने गुनाहों के बाइस
मरेगा, लेकिन तू ने अपनी जान को बचाया होगा।

तौबा करो!

10 ऐ आदमज़ाद, इस्राईलियों को बता, तुम आहें
भर भर कर कहते हो, ‘हाय हम अपने जराइम और
गुनाहों के बाइस गल सड़ कर तबाह हो रहे हैं।
हम किस तरह जीते रहें?’ 11 लेकिन रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मेरी हयात की क़सम, मैं बेदीन
की मौत से ख़ुश नहीं होता बल्कि मैं चाहता हूँ कि
वह अपनी ग़लत राह से हट कर ज़िन्दा रहे। चुनाँचे
तौबा करो! अपनी ग़लत राहों को तर्क करके वापस
आओ! ऐ इस्राईली क़ौम, क्या ज़रूरत है कि तू मर
जाए?’
12 ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को बता,
‘अगर रास्तबाज़ ग़लत काम करे तो यह बात उसे
नहीं बचाएगी कि पहले रास्तबाज़ था। अगर वह
गुनाह करे तो उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ा जाएगा। इस के
मुक़ाबले में अगर बेदीन अपनी बेदीनी से तौबा करके
वापस आए तो यह बात उस की तबाही का बाइस
नहीं बनेगी कि पहले बेदीन था।’ 13 हो सकता है मैं
रास्तबाज़ को बताऊँ, ‘तू ज़िन्दा रहेगा।’ अगर वह
यह सुन कर समझने लगे, ‘मेरी रास्तबाज़ी मुझे हर
सूरत में बचाएगी’ और नतीजे में ग़लत काम करे तो
मैं उस के तमाम रास्त कामों का लिहाज़ नहीं करूँगा
बल्कि उस के ग़लत काम के बाइस उसे सज़ा-ए-मौत
दूँगा। 14 लेकिन फ़र्ज़ करो मैं किसी बेदीन आदमी
को बताऊँ, ‘तू यक़ीनन मरेगा।’ हो सकता है वह
यह सुन कर अपने गुनाह से तौबा करके इन्साफ़
और रास्तबाज़ी करने लगे। 15 वह अपने क़र्ज़दार
को वह कुछ वापस करे जो ज़मानत के तौर पर

मिला था, वह चोरी हुई चीज़ें वापस कर दे, वह ज़िन्दगीबख़्श हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, ग़रज़ वह हर बुरे काम से गुरेज़ करे। इस सूरत में वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िन्दा ही रहेगा। 16 जो भी गुनाह उस से सरज़द हुए थे वह मैं याद नहीं करूँगा। चूँकि उस ने बाद में वह कुछ किया जो मुन्सिफ़ाना और रास्त था इस लिए वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।

17 तेरे हमवतन एतिराज़ करते हैं कि रब का सुलूक सहीह नहीं है जबकि उन का अपना सुलूक सहीह नहीं है। 18 अगर रास्तबाज़ अपना रास्त चाल-चलन छोड़ कर बदी करने लगे तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी। 19 इस के मुक़ाबले में अगर बेदीन अपना बेदीन चाल-चलन छोड़ कर वह कुछ करने लगे जो मुन्सिफ़ाना और रास्त है तो वह इस बिना पर ज़िन्दा रहेगा।

20 ऐ इस्राईलियो, तुम दावा करते हो कि रब का सुलूक सहीह नहीं है। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! तुम्हारी अदालत करते वक़्त मैं हर एक के चाल-चलन का ख़याल करूँगा।"

यरूशलम पर दुश्मन के क़ब्ज़े की ख़बर

21 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 12वें साल में एक आदमी मेरे पास आया। 10वें महीने का पाँचवाँ दिन [a]था। यह आदमी यरूशलम से भाग निकला था। उस ने कहा, "यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है!"

22 एक दिन पहले रब का हाथ शाम के वक़्त मुझ पर आया था, और अगले दिन जब यह आदमी सुब्ह के वक़्त पहुँचा तो रब ने मेरे मुँह को खोल दिया, और मैं दुबारा बोल सका।

बचे हुए इस्राईली अपने आप पर ग़लत एतिमाद करते हैं

23 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 24 "ऐ आदमज़ाद, मुल्क-ए-इस्राईल के खंडरात में रहने वाले लोग कह रहे हैं, 'गो इब्राहीम सिर्फ़ एक आदमी था तो भी उस ने पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया। उस की निस्बत हम बहुत हैं, इस लिए लाज़िम है कि हमें यह मुल्क हासिल हो।' 25 उन्हें बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम गोश्त खाते हो जिस में ख़ून है, तुम्हारे हाँ बुतपरस्ती और ख़ूँरेज़ी आम है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है? 26 तुम अपनी तलवार पर भरोसा रख कर क़ाबिल-ए-घिन हरकतें करते हो, हत्ता कि हर एक अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करता है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है?'

27 उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, जो इस्राईल के खंडरात में रहते हैं वह तलवार की ज़द में आ कर हलाक हो जाएंगे, जो बच कर खुले मैदान में जा बसे हैं उन्हें मैं दरिन्दों को खिला दूँगा, और जिन्हों ने पहाड़ी क़िलों और ग़ारों में पनाह ली है वह मोहलिक बीमारियों का शिकार हो जाएंगे। 28 मैं मुल्क को वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करते हैं वह जाती रहेगी। इस्राईल का पहाड़ी इलाक़ा भी इतना तबाह हो जाएगा कि लोग उस में से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 29 फिर जब मैं मुल्क को उन की मकरूह हरकतों के बाइस वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।'

जिलावतन इस्राईलियों की बेपर्वाई

30 ऐ आदमज़ाद, तेरे हमवतन अपने घरों की दीवारों और दरवाज़ों के पास खड़े हो कर तेरा ज़िक्र

---

[a] 8 जन्वरी।

करते हैं। वह कहते हैं, 'आओ, हम नबी के पास
जा कर वह पैग़ाम सुनें जो रब की तरफ़ से आया
है।' 31 लेकिन गो इन लोगों के हुजूम आ कर तेरे
पैग़ामात सुनने के लिए तेरे सामने बैठ जाते हैं तो भी
वह उन पर अमल नहीं करते। क्यूँकि उन की ज़बान
पर इश्क़ के ही गीत हैं। उन ही पर वह अमल करते
हैं, जबकि उन का दिल नारवा नफ़ा के पीछे पड़ा
रहता है। 32 असल में वह तेरी बातें यूँ सुनते हैं जिस
तरह किसी गुलूकार के गीत जो महारत से साज़ बजा
कर सुरीली आवाज़ से इश्क़ के गीत गाए । गो वह
तेरी बातें सुन कर ख़ुश हो जाते हैं तो भी उन पर
अमल नहीं करते। 33 लेकिन यक़ीनन एक दिन आने
वाला है जब वह जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी
रहा है।"

इस्राईल के बेपरवा गल्लाबान

34 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, इस्राईल के गल्लाबानों के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! उन्हें बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस्राईल के
गल्लाबानों पर अफ़सोस जो सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र
करते हैं। क्या गल्लाबान को रेवड़ की फ़िक्र नहीं
करनी चाहिए? 3 तुम भेड़-बकरियों का दूध पीते,
उन की ऊन के कपड़े पहनते और बेहतरीन जानवरों
का गोश्त खाते हो। तो भी तुम रेवड़ की देख-भाल
नहीं करते! 4 न तुम ने कमज़ोरों को तक़वियत, न
बीमारों को शिफ़ा दी या ज़ख़्मियों की मर्हम-पट्टी
की। न तुम आवारा फिरने वालों को वापस लाए,
न गुमशुदा जानवरों को तलाश किया बल्कि सख़्ती
और ज़ालिमाना तरीक़े से उन पर हुकूमत करते रहे।
5 गल्लाबान न होने की वजह से भेड़-बकरियाँ तित्तर-
बित्तर हो कर दरिन्दों का शिकार हो गईं। 6 मेरी
भेड़-बकरियाँ तमाम पहाड़ों और बुलन्द जगहों पर
आवारा फिरती रहीं। सारी ज़मीन पर वह मुन्तशिर
हो गईं, और कोई नहीं था जो उन्हें ढूँड कर वापस
लाता।

7 चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 8 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की
क़सम, मेरी भेड़-बकरियाँ लुटेरों का शिकार और
तमाम दरिन्दों की ग़िज़ा बन गई हैं। उन की देख-
भाल करने वाला कोई नहीं है। मेरे गल्लाबान मेरे रेवड़
को ढूँड कर वापस नहीं लाते बल्कि सिर्फ़ अपना
ही ख़याल करते हैं। 9 चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का
जवाब सुनो! 10 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
मैं गल्लाबानों से निपट कर उन्हें अपनी भेड़-बकरियों
के लिए ज़िम्मादार ठहराऊँगा। तब मैं उन्हें गल्लाबानी
की ज़िम्मादारी से फ़ारिग़ करूँगा ताकि सिर्फ़ अपना
ही ख़याल करने का सिलसिला ख़त्म हो जाए। मैं
अपनी भेड़-बकरियों को उन के मुँह से निकाल कर
बचाऊँगा ताकि आइन्दा वह उन्हें न खाएँ।

अल्लाह अच्छा चरवाहा है

11 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि आइन्दा
मैं ख़ुद अपनी भेड़-बकरियों को ढूँड कर वापस
लाऊँगा, ख़ुद उन की देख-भाल करूँगा। 12 जिस
तरह चरवाहा चारों तरफ़ बिखरी हुई अपनी भेड़-
बकरियों को इकट्ठा करके उन की देख-भाल करता
है उसी तरह मैं अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल
करूँगा। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकाल कर
बचाऊँगा जहाँ उन्हें घने बादलों और तारीकी के दिन
मुन्तशिर कर दिया गया था। 13 मैं उन्हें दीगर अक़्वाम
और ममालिक में से निकाल कर जमा करूँगा और
उन्हें उन के अपने मुल्क में वापस ला कर इस्राईल के
पहाड़ों, घाटियों और तमाम आबादियों में चराऊँगा।
14 तब मैं अच्छी चरागाहों में उन की देख-भाल
करूँगा, और वह इस्राईल की बुलन्दियों पर ही
चरेंगी। वहाँ वह सरसब्ज़ मैदानों में आराम करके
इस्राईल के पहाड़ों पर बेहतरीन घास चरेंगी। 15 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं ख़ुद अपनी भेड़-
बकरियों की देख-भाल करूँगा, ख़ुद उन्हें बिठाऊँगा।

16 मैं गुमशुदा भेड़-बकरियों का खोज लगाऊँगा
और आवारा फिरने वालों को वापस लाऊँगा। मैं

ज़ख़्मियों की मर्हम-पट्टी करूँगा और कमज़ोरों को तक़वियत दूँगा। लेकिन मोटे-ताज़े और ताक़तवर जानवरों को मैं ख़त्म करूँगा। मैं इन्साफ़ से रेवड़ की गल्लाबानी करूँगा।

17 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरे रेवड़, जहाँ भेड़ों, मेंढों और बकरों के दरमियान नाइन्साफ़ी है वहाँ मैं उन की अदालत करूँगा। 18 क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हें खाने के लिए चरागाह का बेहतरीन हिस्सा और पीने के लिए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी मिल गया है? तुम बाक़ी चरागाह को क्यूँ रौंदते और बाक़ी पानी को पाँओ से गदला करते हो? 19 मेरा रेवड़ क्यूँ तुम से कुचली हुई घास खाए और तुम्हारा गदला किया हुआ पानी पिए?

20 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जहाँ मोटी और दुबली भेड़-बकरियों के दरमियान नाइन्साफ़ी है वहाँ मैं ख़ुद फ़ैसला करूँगा। 21 क्यूँकि तुम मोटी भेड़ों ने कमज़ोरों को कंधों से धक्का दे कर और सींगों से मार मार कर अच्छी घास से भगा दिया है। 22 लेकिन मैं अपनी भेड़-बकरियों को तुम से बचा लूँगा। आइन्दा उन्हें लूटा नहीं जाएगा बल्कि मैं ख़ुद उन में इन्साफ़ क़ाइम रखूँगा।

अम्न-ओ-अमान की सल्तनत

23 मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने ख़ादिम दाऊद को मुक़र्रर करूँगा जो उन्हें चरा कर उन की देख-भाल करेगा। वही उन का सहीह चरवाहा रहेगा। 24 मैं, रब उन का ख़ुदा हूँगा और मेरा ख़ादिम दाऊद उन के दरमियान उन का हुक्मरान होगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

25 मैं इस्राईलियों के साथ सलामती का अह्द बांध कर दरिन्दों को मुल्क से निकाल दूँगा। फिर वह हिफ़ाज़त से सो सकेंगे, ख़्वाह रेगिस्तान में हों या जंगल में। 26 मैं उन्हें और अपने पहाड़ के इर्दगिर्द के इलाक़े को बरकत दूँगा। मैं मुल्क में वक़्त पर बारिश बरसाता रहूँगा। ऐसी मुबारक बारिशें होंगी 27 कि मुल्क के बाग़ों और खेतों में ज़बरदस्त फ़सलें पकेंगी। लोग अपने मुल्क में महफ़ूज़ होंगे। फिर जब मैं उन के जूए को तोड़ कर उन्हें उन से रिहाई दूँगा जिन्हों ने उन्हें ग़ुलाम बनाया था तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 28 आइन्दा न दीगर अक़्वाम उन्हें लूटेंगी, न वह दरिन्दों की ख़ुराक बनेंगे बल्कि वह हिफ़ाज़त से अपने घरों में बसेंगे। डराने वाला कोई नहीं होगा। 29 मेरे हुक्म पर ज़मीन ऐसी फ़सलें पैदा करेगी जिन की शुहरत दूर दूर तक फैलेगी। आइन्दा न वह भूके मरेंगे, न उन्हें दीगर अक़्वाम की लान-तान सुननी पड़ेगी। 30 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा फ़रमाता है कि उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं जो रब उन का ख़ुदा हूँ उन के साथ हूँ, कि इस्राईली मेरी क़ौम हैं। 31 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम मेरा रेवड़, मेरी चरागाह की भेड़-बकरियाँ हो। तुम मेरे लोग, और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ'।"

अदोम रेगिस्तान बनेगा

35 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ आदमज़ाद, सईर के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ रुख़ करके उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर! 3 उसे बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सईर के पहाड़ी इलाक़े, अब मैं तुझ से निपट लूँगा। मैं अपना हाथ तेरे ख़िलाफ़ उठा कर तुझे वीरान-ओ-सुन्सान कर दूँगा। 4 मैं तेरे शहरों को मल्बे के ढेर बना दूँगा, और तू सरासर उजड़ जाएगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

5 तू हमेशा इस्राईलियों का सख़्त दुश्मन रहा है, और जब उन पर आफ़त आई और उन की सज़ा उरूज तक पहुँची तो तू भी तलवार ले कर उन पर टूट पड़ा। 6 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुझे क़त्ल-ओ-ग़ारत के हवाले करूँगा, और क़त्ल-ओ-ग़ारत तेरा ताक़्क़ुब करती रहेगी। चूँकि तू ने क़त्ल-ओ-ग़ारत करने से नफ़रत न की, इस लिए क़त्ल-ओ-ग़ारत तेरे पीछे पड़ी

रहेगी। 7 मैं सईर के पहाड़ी इलाक़े को वीरान-ओ-
सुन्सान करके वहाँ के तमाम आने जाने वालों को
मिटा डालूँगा। 8 तेरे पहाड़ी इलाक़े को मैं मक़्तूलों से
भर दूँगा। तलवार की ज़द में आने वाले हर तरफ़ पड़े
रहेंगे। तेरी पहाड़ियों, वादियों और तमाम घाटियों में
लाशें नज़र आएँगी । 9 मेरे हुक्म पर तू अबद तक
वीरान रहेगा, और तेरे शहर ग़ैरआबाद रहेंगे। तब तू
जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

10 तू बोला, "इस्राईल और यहूदाह की दोनों क़ौमें
अपने इलाक़ों समेत मेरी ही हैं! आओ हम उन पर
क़ब्ज़ा करें।" तुझे ख़याल तक नहीं आया कि रब
वहाँ मौजूद है। 11 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुझ से वही
सुलूक करूँगा जो तू ने उन से किया जब तू ने ग़ुस्से
और हसद के आलम में उन पर अपनी पूरी नफ़रत का
इज़हार किया। लेकिन उन ही पर मैं अपने आप को
ज़ाहिर करूँगा जब मैं तेरी अदालत करूँगा। 12 उस
वक़्त तू जान लेगा कि मैं, रब ने वह तमाम कुफ़्र सुन
लिया है जो तू ने इस्राईल के पहाड़ों के ख़िलाफ़ बका
है। क्यूँकि तू ने कहा, "यह उजड़ गए हैं, अब यह
हमारे क़ब्ज़े में आ गए हैं और हम उन्हें खा सकते
हैं।" 13 तू ने शेख़ी मार मार कर मेरे ख़िलाफ़ कुफ़्र
बका है, लेकिन ख़बरदार! मैं ने इन तमाम बातों पर
तवज्जुह दी है। 14 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि तू ने ख़ुशी मनाई कि पूरा मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान
है, लेकिन मैं तुझे भी उतना ही वीरान कर दूँगा। 15 तू
कितना ख़ुश हुआ जब इस्राईल की मौरूसी ज़मीन
उजड़ गई! अब मैं तेरे साथ भी ऐसा ही करूँगा। ऐ
सईर के पहाड़ी इलाक़े, तू पूरे अदोम समेत वीरान-
ओ-सुन्सान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही
रब हूँ।'

इस्राईल अपने वतन वापस आएगा

36 1 ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के पहाड़ों के बारे
में नबुव्वत करके कह,
'ऐ इस्राईल के पहाड़ो, रब का कलाम सुनो! 2 रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि दुश्मन बग़लें बजा
कर कहता है कि क्या ख़ूब, इस्राईल की क़दीम
बुलन्दियाँ हमारे क़ब्ज़े में आ गई हैं! 3 क़ादिर-ए-
मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्हों ने तुम्हें उजाड़ दिया,
तुम्हें चारों तरफ़ से तंग किया है। नतीजे में तुम दीगर
अक़्वाम के क़ब्ज़े में आ गई हो और लोग तुम पर
कुफ़्र बकने लगे हैं। 4 चुनाँचे ऐ इस्राईल के पहाड़ो,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का कलाम सुनो!

रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ पहाड़ो
और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, ऐ खंडरात
और इन्सान से ख़ाली शहरो, तुम गिर्द-ओ-नवाह की
अक़्वाम के लिए लूट-मार और मज़ाक़ का निशाना
बन गए हो।

5 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
ने बड़ी ग़ैरत से इन बाक़ी अक़्वाम की सरज़निश की
है, ख़ासकर अदोम की। क्यूँकि वह मेरी क़ौम का
नुक़्सान देख कर शादियाना बजाने लगीं और अपनी
हिक़ारत का इज़हार करके मेरे मुल्क पर क़ब्ज़ा
किया ताकि उस की चरागाह को लूट लें। 6 ऐ पहाड़ो
और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि दीगर अक़्वाम ने
तेरी इतनी रुस्वाई की है इस लिए मैं अपनी ग़ैरत
और अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 7 मैं रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ अपना हाथ उठा कर क़सम खाता
हूँ कि गिर्द-ओ-नवाह की इन अक़्वाम की भी रुस्वाई
की जाएगी।

8 लेकिन ऐ इस्राईल के पहाड़ो, तुम पर दुबारा
हरियाली फले फूलेगी। तुम नए सिरे से मेरी क़ौम
इस्राईल के लिए फल लाओगे, क्यूँकि वह जल्द ही
वापस आने वाली है। 9 मैं दुबारा तुम्हारी तरफ़ रुजू
करूँगा, दुबारा तुम पर मेहरबानी करूँगा। तब लोग
नए सिरे से तुम पर हल चला कर बीज बोएँगे।

10 मैं तुम पर की आबादी बढ़ा दूँगा। क्यूँकि तमाम
इस्राईली आ कर तुम्हारी ढलानों पर अपने घर बना
लेंगे। तुम्हारे शहर दुबारा आबाद हो जाएंगे, और

खंडरात की जगह नए घर बन जाएंगे। 11 मैं तुम पर
बसने वाले इन्सान-ओ-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा,
और वह बढ़ कर फलें फूलेंगे। मैं होने दूँगा कि तुम्हारे
इलाक़े में माज़ी की तरह आबादी होगी, पहले की
निस्बत मैं तुम पर कहीं ज़्यादा मेहरबानी करूँगा।
तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

12 मैं अपनी क़ौम इस्राईल को तुम्हारे पास पहुँचा
दूँगा, और वह दुबारा तुम्हारी ढलानों पर घूमते
फिरेंगे। वह तुम पर क़ब्ज़ा करेंगे, और तुम उन की
मौरूसी ज़मीन होगे। आइन्दा कभी तुम उन्हें उन
की औलाद से महरूम नहीं करोगे। 13 रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि बेशक लोग तुम्हारे बारे में
कहते हैं कि तुम लोगों को हड़प करके अपनी क़ौम
को उस की औलाद से महरूम कर देते हो। 14 लेकिन
आइन्दा ऐसा नहीं होगा। आइन्दा तुम न आदमियों
को हड़प करोगे, न अपनी क़ौम को उस की औलाद
से महरूम करोगे। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का
फ़रमान है। 15 मैं ख़ुद होने दूँगा कि आइन्दा तुम्हें
दीगर अक़्वाम की लान-तान नहीं सुननी पड़ेगी।
आइन्दा तुम्हें उन का मज़ाक़ बर्दाश्त नहीं करना
पड़ेगा, क्यूँकि ऐसा कभी होगा नहीं कि तुम अपनी
क़ौम के लिए ठोकर का बाइस हो। यह रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ का फ़रमान है'।"

अल्लाह अपनी क़ौम को नया दिल और नया रूह बख़्शेगा

16 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 17 "ऐ आदमज़ाद,
जब इस्राईली अपने मुल्क में आबाद थे तो मुल्क उन
के चाल-चलन और हरकतों से नापाक हुआ। वह
अपने बुरे रवय्ये के बाइस मेरी नज़र में माहवारी में
मुब्तला औरत की तरह नापाक थे। 18 उन के हाथों
लोग क़त्ल हुए, उन की बुतपरस्ती से मुल्क नापाक
हो गया।

जवाब में मैं ने उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया।
19 मैं ने उन्हें मुख़्तलिफ़ अक़्वाम-ओ-ममालिक में
मुन्तशिर करके उन के चाल-चलन और ग़लत कामों
की मुनासिब सज़ा दी। 20 लेकिन जहाँ भी वह पहुँचे
वहाँ उन ही के सबब से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती
हुई। क्यूँकि जिन से भी उन की मुलाक़ात हुई उन्हों
ने कहा, 'गो यह रब की क़ौम हैं तो भी इन्हें उस
के मुल्क को छोड़ना पड़ा!' 21 यह देख कर कि जिस
क़ौम में भी इस्राईली जा बसे वहाँ उन्हों ने मेरे मुक़द्दस
नाम की बेहुरमती की मैं अपने नाम की फ़िक्र करने
लगा। 22 इस लिए इस्राईली क़ौम को बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जो कुछ मैं
करने वाला हूँ वह मैं तेरी ख़ातिर नहीं करूँगा बल्कि
अपने मुक़द्दस नाम की ख़ातिर। क्यूँकि तुम ने दीगर
अक़्वाम में मुन्तशिर हो कर उस की बेहुरमती की
है। 23 मैं ज़ाहिर करूँगा कि मेरा अज़ीम नाम कितना
मुक़द्दस है। तुम ने दीगर अक़्वाम के दरमियान रह कर
उस की बेहुरमती की है, लेकिन मैं उन की मौजूदगी
में तुम्हारी मदद करके अपना मुक़द्दस किरदार उन
पर ज़ाहिर करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब
हूँ। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

24 मैं तुम्हें दीगर अक़्वाम-ओ-ममालिक से निकाल
दूँगा और तुम्हें जमा करके तुम्हारे अपने मुल्क में
वापस लाऊँगा। 25 मैं तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा
तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं तुम्हें तमाम
नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़ कर दूँगा।

26 तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्श कर तुम में नई रूह
डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकाल कर तुम्हें
गोश्त-पोस्त का नर्म दिल अता करूँगा। 27 क्यूँकि मैं
अपना ही रूह तुम में डाल कर तुम्हें इस क़ाबिल
बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे
अह्काम पर ध्यान से अमल कर सको। 28 तब तुम
दुबारा उस मुल्क में सुकूनत करोगे जो मैं ने तुम्हारे
बापदादा को दिया था। तुम मेरी क़ौम होगे, और
मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। 29 मैं ख़ुद तुम्हें तुम्हारी तमाम
नापाकी से छुड़ाऊँगा। आइन्दा मैं तुम्हारे मुल्क में
काल पड़ने नहीं दूँगा बल्कि अनाज को उगने और
बढ़ने का हुक्म दूँगा। 30 मैं बाग़ों और खेतों की
पैदावार बढ़ा दूँगा ताकि आइन्दा तुम्हें मुल्क में काल

पड़ने के बाइस दीगर क़ौमों के ताने सुनने न पड़ें।
31 तब तुम्हारी बुरी राहें और ग़लत हरकतें तुम्हें याद
आएँगी, और तुम अपने गुनाहों और बुतपरस्ती के
बाइस अपने आप से घिन खाओगे। 32 लेकिन याद
रहे कि मैं यह सब कुछ तुम्हारी ख़ातिर नहीं कर रहा।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इस्राईली
क़ौम, शर्म करो! अपने चाल-चलन पर शर्मसार हो!

33 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन
मैं तुम्हें तुम्हारे तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ करूँगा
उस दिन मैं तुम्हें दुबारा तुम्हारे शहरों में आबाद
करूँगा। तब खंडरात पर नए घर बनेंगे। 34 गो इस
वक़्त मुल्क में से गुज़रने वाले हर मुसाफ़िर को उस
की तबाहशुदा हालत नज़र आती है, लेकिन उस
वक़्त ऐसा नहीं होगा बल्कि ज़मीन की खेतीबाड़ी
की जाएगी। 35 लोग यह देख कर कहेंगे, "पहले सब
कुछ वीरान-ओ-सुन्सान था, लेकिन अब मुल्क बाग़-
ए-अदन बन गया है! पहले उस के शहर ज़मीनबोस
थे और उन की जगह मल्बे के ढेर नज़र आते थे।
लेकिन अब उन की नए सिरे से क़िलाबन्दी हो गई
है और लोग उन में आबाद हैं।" 36 फिर इर्दगिर्द की
जितनी क़ौमें बच गई होंगी वह जान लेंगी कि मैं,
रब ने नए सिरे से वह कुछ तामीर किया है जो पहले
ढा दिया गया था, मैं ने वीरान ज़मीन में दुबारा पौदे
लगाए हैं। यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह
करूँगा भी।

37 क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि एक बार फिर
मैं इस्राईली क़ौम की इल्तिजाएँ सुन कर बाशिन्दों
की तादाद रेवड़ की तरह बढ़ा दूँगा। 38 जिस तरह
माज़ी में ईद के दिन यरूशलम में हर तरफ़ क़ुर्बानी
की भेड़-बकरियाँ नज़र आती थीं उसी तरह मुल्क के
शहरों में दुबारा हुजूम के हुजूम नज़र आएँगे। तब वह
जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ'।"

हड्डियों से भरी वादी की रोया

37 1 एक दिन रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा।
रब ने मुझे अपने रूह से बाहर ले जा कर
एक खुली वादी के बीच में खड़ा किया। वादी हड्डियों
से भरी थी। 2 उस ने मुझे उन में से गुज़रने दिया तो
मैं ने देखा कि वादी की ज़मीन पर बेशुमार हड्डियाँ
बिखरी पड़ी हैं। यह हड्डियाँ सरासर सूखी हुई थीं।

3 रब ने मुझ से पूछा, "ऐ आदमज़ाद, क्या यह
हड्डियाँ दुबारा ज़िन्दा हो सकती हैं?" मैं ने जवाब
दिया, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू ही जानता है।"

4 तब उस ने फ़रमाया, "नबुव्वत करके हड्डियों को
बता, 'ऐ सूखी हुई हड्डियो, रब का कलाम सुनो!
5 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं तुम में दम
डालूँगा तो तुम दुबारा ज़िन्दा हो जाओगी। 6 मैं तुम
पर नसें और गोश्त चढ़ा कर सब कुछ जिल्द से ढाँप
दूँगा। मैं तुम में दम डाल दूँगा, और तुम ज़िन्दा हो
जाओगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ'।"

7 मैं ने ऐसा ही किया। और जूँ ही मैं नबुव्वत करने
लगा तो शोर मच गया। हड्डियाँ खड़खड़ाते हुए एक
दूसरी के साथ जुड़ गईं, और होते होते पूरे ढाँचे बन
गए। 8 मेरे देखते देखते नसें और गोश्त ढाँचों पर चढ़
गया और सब कुछ जिल्द से ढाँपा गया। लेकिन अब
तक जिस्मों में दम नहीं था।

9 फिर रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत
करके दम से मुख़ातिब हो जा, 'ऐ दम, रब क़ादिर-
ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि चारों तरफ़ से आ कर
मक़्तूलों पर फूँक मार ताकि दुबारा ज़िन्दा हो जाएँ'।"

10 मैं ने ऐसा ही किया तो मक़्तूलों में दम आ गया,
और वह ज़िन्दा हो कर अपने पाँओ पर खड़े हो गए।
एक निहायत बड़ी फ़ौज वुजूद में आ गई थी!

11 तब रब ने फ़रमाया, "ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ
इस्राईली क़ौम के तमाम अफ़राद हैं। वह कहते हैं,
'हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, हमारी उम्मीद जाती रही
है। हम ख़त्म ही हो गए हैं!' 12 चुनाँचे नबुव्वत करके
उन्हें बता,

'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मेरी क़ौम,
मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें उन में से
निकाल कर मुल्क-ए-इस्राईल में वापस लाऊँगा। 13 ऐ
मेरी क़ौम, जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और

तुम्हें उन में से निकाल लाऊँगा तब तुम जान लोगे
कि मैं ही रब हूँ। 14 मैं अपना रूह तुम में डाल दूँगा
तो तुम ज़िन्दा हो जाओगे। फिर मैं तुम्हें तुम्हारे अपने
मुल्क में बसा दूँगा। तब तुम जान लोगे कि यह मेरा,
रब का फ़रमान है और मैं यह करूँगा भी'।"

यहूदाह और इस्राईल मुत्तहिद हो जाएंगे

15 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 16 "ऐ आदमज़ाद,
लकड़ी का टुकड़ा ले कर उस पर लिख दे, 'जुनूबी
क़बीला यहूदाह और जितने इस्राईली क़बीले उस के
साथ मुत्तहिद हैं।' फिर लकड़ी का एक और टुकड़ा
ले कर उस पर लिख दे, 'शिमाली क़बीला यूसुफ़
यानी इफ़्राईम और जितने इस्राईली क़बीले उस के
साथ मुत्तहिद हैं।' 17 अब लकड़ी के दोनों टुकड़े एक
दूसरे के साथ यूँ जोड़ दे कि तेरे हाथ में एक हो जाएँ।
18 तेरे हमवतन तुझ से पूछेंगे, 'क्या आप हमें इस
का मतलब नहीं बताएँगे?' 19 तब उन्हें बता, 'रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं यूसुफ़ यानी
लकड़ी के मालिक इफ़्राईम और उस के साथ मुत्तहिद
इस्राईली क़बीलों को ले कर यहूदाह की लकड़ी के
साथ जोड़ दूँगा। मेरे हाथ में वह लकड़ी का एक ही
टुकड़ा बन जाएंगे।'
20 अपने हमवतनों की मौजूदगी में लकड़ी के
मज़कूरा टुकड़े हाथ में थामे रख 21 और साथ साथ
उन्हें बता, 'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं
इस्राईलियों को उन क़ौमों में से निकाल लाऊँगा जहाँ
वह जा बसे हैं। मैं उन्हें जमा करके उन के अपने
मुल्क में वापस लाऊँगा। 22 वहीं इस्राईल के पहाड़ों
पर मैं उन्हें मुत्तहिद करके एक ही क़ौम बना दूँगा।
उन पर एक ही बादशाह हुकूमत करेगा। आइन्दा
वह न कभी दो क़ौमों में तक़्सीम हो जाएंगे, न दो
सल्तनतों में। 23 आइन्दा वह अपने आप को न अपने
बुतों या बाक़ी मकरूह चीज़ों से नापाक करेंगे, न
उन गुनाहों से जो अब तक करते आए हैं। मैं उन्हें
उन तमाम मक़ामों से निकाल कर छुड़ाऊँगा जिन में
उन्हों ने गुनाह किया है। मैं उन्हें पाक-साफ़ करूँगा।
यूँ वह मेरी क़ौम होंगे और मैं उन का ख़ुदा हूँगा।
24 मेरा ख़ादिम दाऊद उन का बादशाह होगा, उन का
एक ही गल्लाबान होगा। तब वह मेरी हिदायात के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और ध्यान से मेरे अह्काम
पर अमल करेंगे।
25 जो मुल्क मैं ने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था
और जिस में तुम्हारे बापदादा रहते थे उस में इस्राईली
दुबारा बसेंगे। हाँ, वह और उन की औलाद हमेशा
तक उस में आबाद रहेंगे, और मेरा ख़ादिम दाऊद
अबद तक उन पर हुकूमत करेगा। 26 तब मैं उन के
साथ सलामती का अह्द बांधूँगा, एक ऐसा अह्द जो
हमेशा तक क़ाइम रहेगा। मैं उन्हें क़ाइम करके उन
की तादाद बढ़ाता जाऊँगा, और मेरा मक़्दिस अबद
तक उन के दरमियान रहेगा। 27 वह मेरी सुकूनतगाह
के साय में बसेंगे। मैं उन का ख़ुदा हूँगा, और वह
मेरी क़ौम होंगे। 28 जब मेरा मक़्दिस अबद तक उन
के दरमियान होगा तो दीगर अक़्वाम जान लेंगी कि
मैं ही रब हूँ, कि इस्राईल को मुक़द्दस करने वाला मैं
ही हूँ'।"

इस्राईल का दुश्मन जूज

38 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, 2 "ऐ
आदमज़ाद, मुल्क-ए-माजूज के हुक्मरान
जूज की तरफ़ रुख़ कर जो मसक और तूबल का
आला रईस है। उस के ख़िलाफ़ नबुव्वत करके
3 कह,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक
और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझ से निपट
लूँगा। 4 मैं तेरे मुँह को फेर दूँगा, तेरे मुँह में काँटे
डाल कर तुझे पूरी फ़ौज समेत निकाल दूँगा। शानदार
वर्दियों से आरास्ता तेरे तमाम घुड़सवार और फ़ौजी
अपने घोड़ों समेत निकल आएँगे, गो तेरी बड़ी फ़ौज
के मर्द छोटी और बड़ी ढालें उठाए फिरेंगे, और
हर एक तलवार से लेस होगा। 5 फ़ार्स, एथोपिया
और लिबिया के मर्द भी फ़ौज में शामिल होंगे। हर
एक बड़ी ढाल और ख़ोद से मुसल्लह होगा। 6 जुमर

और शिमाल के दूरदराज़ इलाक़े बैत-तुजर्मा के तमाम
दस्ते भी साथ होंगे। ग़रज़ उस वक़्त बहुत सी क़ौमें
तेरे साथ निकलेंगी। 7 चुनाँचे मुस्तइद हो जा! जितने
लश्कर तेरे इर्दगिर्द जमा हो गए हैं उन के साथ मिल
कर ख़ूब तय्यारियाँ कर! उन के लिए पहरादारी कर।
8 मुतअद्दिद दिनों के बाद तुझे मुल्क-ए-इस्राईल पर
हम्ला करने के लिए बुलाया जाएगा जिसे अभी जंग
से छुटकारा मिला होगा और जिस के जिलावतन
दीगर बहुत सी क़ौमों में से वापस आ गए होंगे। गो
इस्राईल का पहाड़ी इलाक़ा बड़ी देर से बर्बाद हुआ
होगा, लेकिन उस वक़्त उस के बाशिन्दे जिलावतनी
से वापस आ कर अम्न-ओ-अमान से उस में बसेंगे।
9 तब तू तूफ़ान की तरह आगे बढ़ेगा, तेरे दस्ते
बादल की तरह पूरे मुल्क पर छा जाएंगे। तेरे
साथ बहुत सी क़ौमें होंगी। 10 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि उस वक़्त तेरे ज़हन में बुरे ख़यालात
उभर आएँगे और तू शरीर मन्सूबे बांधेगा। 11 तू
कहेगा, "यह मुल्क खुला है, और उस के बाशिन्दे
आराम और सुकून के साथ रह रहे हैं। आओ, मैं
उन पर हम्ला करूँ, क्यूँकि वह अपनी हिफ़ाज़त नहीं
कर सकते। न उन की चारदीवारी है, न दरवाज़ा या
कुंडा। 12 मैं इस्राईलियों को लूट लूँगा। जो शहर पहले
खंडरात थे लेकिन अब नए सिरे से आबाद हुए हैं उन
पर मैं टूट पड़ूँगा। जो जिलावतन दीगर अक़्वाम से
वापस आ गए हैं उन की दौलत मैं छीन लूँगा। क्यूँकि
उन्हें काफ़ी माल-मवेशी हासिल हुए हैं, और अब वह
दुनिया के मर्कज़ में आ बसे हैं।" 13 सबा, ददान और
तरसीस के ताजिर और बुज़ुर्ग पूछेंगे कि क्या तू ने
वाक़ई अपने फ़ौजियों को लूट-मार के लिए इकट्ठा
कर लिया है? क्या तू वाक़ई सोना-चाँदी, माल-मवेशी
और बाक़ी बहुत सी दौलत छीनना चाहता है?'
14 ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके जूज को बता,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उस वक़्त तुझे
पता चलेगा कि मेरी क़ौम इस्राईल सुकून से ज़िन्दगी
गुज़ार रही है, 15 और तू दूरदराज़ शिमाल के अपने
मुल्क से निकलेगा। तेरी वसी और ताक़तवर फ़ौज
में मुतअद्दिद क़ौमें शामिल होंगी, और सब घोड़ों
पर सवार 16 मेरी क़ौम इस्राईल पर धावा बोल देंगे।
वह उस पर बादल की तरह छा जाएंगे। ऐ जूज, उन
आख़िरी दिनों में मैं ख़ुद तुझे अपने मुल्क पर हम्ला
करने दूँगा ताकि दीगर अक़्वाम मुझे जान लें। क्यूँकि
जो कुछ मैं उन के देखते देखते तेरे साथ करूँगा उस
से मेरा मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर हो जाएगा।
17 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तू वही है
जिस का ज़िक्र मैं ने माज़ी में किया था। क्यूँकि माज़ी
में मेरे ख़ादिम यानी इस्राईल के नबी काफ़ी सालों
से पेशगोई करते रहे कि मैं तुझे इस्राईल के ख़िलाफ़
भेजूँगा।

अल्लाह ख़ुद जूज को तबाह करेगा

18 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि जिस दिन
जूज मुल्क-ए-इस्राईल पर हम्ला करेगा उस दिन मैं
आग-बगूला हो जाऊँगा। 19 मैं फ़रमाता हूँ कि उस
दिन मेरी ग़ैरत और शदीद क़हर यूँ भड़क उठेगा
कि यक़ीनन मुल्क-ए-इस्राईल में ज़बरदस्त ज़ल्ज़ला
आएगा। 20 सब मेरे सामने थरथरा उठेंगे, ख़्वाह
मछलियाँ हों या परिन्दे, ख़्वाह ज़मीन पर चलने और
रेंगने वाले जानवर हों या इन्सान। पहाड़ उन की
गुज़रगाहों समेत ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और हर
दीवार गिर जाएगी।
21 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैं अपने
तमाम पहाड़ी इलाक़े में जूज के ख़िलाफ़ तलवार
भेजूँगा। तब सब आपस में लड़ने लगेंगे। 22 मैं उन में
मोहलिक बीमारियाँ और क़त्ल-ओ-ग़ारत फैला कर
उन की अदालत करूँगा। साथ साथ मैं मूसलाधार
बारिश, ओले, आग और गंधक जूज और उस की
बैन-उल-अक़्वामी फ़ौज पर बरसा दूँगा। 23 यूँ मैं
अपना अज़ीम और मुक़द्दस किरदार मुतअद्दिद क़ौमों
पर ज़ाहिर करूँगा, उन के देखते देखते अपने आप
का इज़हार करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब
हूँ।'

39 1 ऐ आदमज़ाद, जूज के ख़िलाफ़ नबुव्वत
करके कह,
'रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ मसक
और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझ से निपट
लूँगा। 2 मैं तेरा मुँह फेर दूँगा और तुझे शिमाल के
दूरदराज़ इलाक़े से घसीट कर इस्राईल के पहाड़ों पर
लाऊँगा। 3 वहाँ मैं तेरे बाएँ हाथ से कमान हटाऊँगा
और तेरे दाएँ हाथ से तीर गिरा दूँगा। 4 इस्राईल
के पहाड़ों पर ही तू अपने तमाम बैन-उल-अक़्वामी
फ़ौजियों के साथ हलाक हो जाएगा। मैं तुझे हर क़िस्म
के शिकारी परिन्दों और दरिन्दों को खिला दूँगा।
5 क्यूँकि तेरी लाश खुले मैदान में गिर कर पड़ी रहेगी।
यह मेरा, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
6 मैं माजूज पर और अपने आप को महफ़ूज़ समझने
वाले साहिली इलाक़ों पर आग भेजूँगा। तब वह जान
लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 7 अपनी क़ौम इस्राईल के
दरमियान ही मैं अपना मुक़द्दस नाम ज़ाहिर करूँगा।
आइन्दा मैं अपने मुक़द्दस नाम की बेहुरमती बर्दाश्त
नहीं करूँगा। तब अक़्वाम जान लेंगी कि मैं रब
और इस्राईल का क़ुद्दूस हूँ। 8 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि यह सब कुछ होने वाला है, यह ज़रूर
पेश आएगा! वही दिन है जिस का ज़िक्र मैं कर चुका
हूँ।

जूज और उस की फ़ौज की तद्फ़ीन

9 फिर इस्राईली शहरों के बाशिन्दे मैदान-ए-जंग
में जा कर दुश्मन के असलिहा को ईंधन के लिए
जमा करेंगे। इतनी छोटी और बड़ी ढालें, कमान,
तीर, लाठियाँ और नेज़े इकट्ठे हो जाएंगे कि सात
साल तक किसी और ईंधन की ज़रूरत नहीं होगी।
10 इस्राईलियों को खुले मैदान में लकड़ी चुनने या
जंगल में दरख़्त काटने की ज़रूरत नहीं होगी, क्यूँकि
वह यह हथियार ईंधन के तौर पर इस्तेमाल करेंगे।
अब वह उन्हें लूटेंगे जिन्हों ने उन्हें लूट लिया था,
वह उन से माल-मवेशी छीन लेंगे जिन्हों ने उन से
सब कुछ छीन लिया था। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।
11 उस दिन मैं इस्राईल में जूज के लिए क़ब्रिस्तान
मुक़र्रर करूँगा। यह क़ब्रिस्तान वादी-ए-अबारीम [b]में
होगा जो बहीरा-ए-मुर्दार के मशरिक़ में है। जूज के
साथ उस की तमाम फ़ौज भी दफ़न होगी, इस लिए
मुसाफ़िर आइन्दा उस में से नहीं गुज़र सकेंगे। तब
वह जगह वादी-ए-हमून जूज [c]भी कहलाएगी। 12 जब
इस्राईली तमाम लाशें दफ़ना कर मुल्क को पाक-
साफ़ करेंगे तो सात महीने लगेंगे। 13 तमाम उम्मत
इस काम में मसरूफ़ रहेगी। रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि जिस दिन मैं दुनिया पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा उस दिन यह उन के लिए शुहरत का
बाइस होगा।
14 सात महीनों के बाद कुछ आदमियों को अलग
करके कहा जाएगा कि पूरे मुल्क में से गुज़र कर
मालूम करें कि अभी कहाँ कहाँ लाशें पड़ी हैं। क्यूँकि
लाज़िम है कि सब दफ़न हो जाएँ ताकि मुल्क दुबारा
पाक-साफ़ हो जाए। 15 जहाँ कहीं कोई लाश नज़र
आए उस जगह की वह निशानदिही करेंगे ताकि
दफ़नाने वाले उसे वादी-ए-हमून जूज में ले जा कर
दफ़न करें। 16 यूँ मुल्क को पाक-साफ़ किया जाएगा।
उस वक़्त से इस्राईल के एक शहर का नाम हमूना
[d]कहलाएगा।'
17 ऐ आदमज़ाद, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है
कि हर क़िस्म के परिन्दे और दरिन्दे बुला कर कह,
'आओ, इधर जमा हो जाओ! चारों तरफ़ से आ कर
इस्राईल के पहाड़ी इलाक़े में जमा हो जाओ! क्यूँकि
यहाँ मैं तुम्हारे लिए क़ुर्बानी की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त
तय्यार कर रहा हूँ। यहाँ तुम्हें गोश्त खाने और ख़ून
पीने का सुनहरा मौक़ा मिलेगा। 18 तुम सूरमाओं का

[b]या गुज़रने वालों की वादी।
[c]जूज के फ़ौजी हुजूम की वादी।
[d]हुजूम यानी जूज के।

गोश्त खाओगे और दुनिया के हुक्मरानों का ख़ून
पियोगे। सब बसन के मोटे-ताज़े मेंढों, भेड़ के बच्चों,
बकरों और बैलों जैसे मज़ेदार होंगे। 19 क्यूँकि जो
क़ुर्बानी में तुम्हारे लिए तय्यार कर रहा हूँ उस की
चर्बी तुम जी भर कर खाओगे, उस का ख़ून पी पी
कर मस्त हो जाओगे। 20 रब फ़रमाता है कि तुम मेरी
मेज़ पर बैठ कर घोड़ों और घुड़सवारों, सूरमाओं
और हर क़िस्म के फ़ौजियों से सेर हो जाओगे।'

रब अपनी क़ौम वापस लाएगा

21 यूँ मैं दीगर अक़्वाम पर अपना जलाल ज़ाहिर
करूँगा। क्यूँकि जब मैं जूज और उस की फ़ौज की
अदालत करके उन से निपट लूँगा तो तमाम अक़्वाम
इस की गवाह होंगी। 22 तब इस्राईली क़ौम हमेशा के
लिए जान लेगी कि मैं रब उस का ख़ुदा हूँ। 23 और
दीगर अक़्वाम जान लेंगी कि इस्राईली अपने गुनाहों
के सबब से जिलावतन हुए। वह जान लेंगी कि चूँकि
इस्राईली मुझ से बेवफ़ा हुए, इसी लिए मैं ने अपना
मुँह उन से छुपा कर उन्हें उन के दुश्मनों के हवाले
कर दिया, इसी लिए वह सब तलवार की ज़द में आ
कर हलाक हुए। 24 क्यूँकि मैं ने उन्हें उन की नापाकी
और जराइम का मुनासिब बदला दे कर अपना चिहरा
उन से छुपा लिया था।

25 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
अब मैं याक़ूब की औलाद को बहाल करके तमाम
इस्राईली क़ौम पर तरस खाऊँगा। अब मैं बड़ी ग़ैरत
से अपने मुक़द्दस नाम का दिफ़ा करूँगा। 26 जब
इस्राईली सुकून से और ख़ौफ़ खाए बग़ैर अपने मुल्क
में रहेंगे तो वह अपनी रुस्वाई और मेरे साथ बेवफ़ाई
का एतिराफ़ करेंगे। 27 मैं उन्हें दीगर अक़्वाम और
उन के दुश्मनों के ममालिक में से जमा करके उन्हें
वापस लाऊँगा और यूँ उन के ज़रीए अपना मुक़द्दस
किरदार मुतअद्दिद अक़्वाम पर ज़ाहिर करूँगा।
28 तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। क्यूँकि उन्हें
अक़्वाम में जिलावतन करने के बाद मैं उन्हें उन के
अपने ही मुल्क में दुबारा जमा करूँगा। एक भी पीछे
नहीं छोड़ा जाएगा। 29 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि आइन्दा मैं अपना चिहरा उन से नहीं छुपाऊँगा।
क्यूँकि मैं अपना रूह इस्राईली क़ौम पर उंडेल दूँगा।"

रब के नए घर की रोया

40 1 हमारी जिलावतनी के 25वें साल में रब
का हाथ मुझ पर आ ठहरा और वह मुझे
यरूशलम ले गया। महीने का दसवाँ दिन [e]था। उस
वक़्त यरूशलम को दुश्मन के क़ब्ज़े में आए 14
साल हो गए थे। 2 इलाही रोयाओं में अल्लाह ने मुझे
मुल्क-ए-इस्राईल के एक निहायत बुलन्द पहाड़ पर
पहुँचाया। पहाड़ के जुनूब में मुझे एक शहर सा नज़र
आया। 3 अल्लाह मुझे शहर के क़रीब ले गया तो मैं
ने शहर के दरवाज़े में खड़े एक आदमी को देखा
जो पीतल का बना हुआ लग रहा था। उस के हाथ
में कतान की रस्सी और फ़ीता था। 4 उस ने मुझ से
कहा, "ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, ग़ौर से सुन!
जो कुछ भी मैं तुझे दिखाऊँगा, उस पर तवज्जुह दे।
क्यूँकि तुझे इसी लिए यहाँ लाया गया है कि मैं तुझे
यह दिखाऊँ। जो कुछ भी तू देखे उसे इस्राईली क़ौम
को सुना दे!"

रब के घर के बैरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

5 मैं ने देखा कि रब के घर का सहन चारदीवारी से
घिरा हुआ है। जो फ़ीता मेरे राहनुमा के हाथ में था
उस की लम्बाई साढ़े 10 फ़ुट थी। इस के ज़रीए उस
ने चारदीवारी को नाप लिया। दीवार की मोटाई और
ऊँचाई दोनों साढ़े दस दस फ़ुट थी।

6 फिर मेरा राहनुमा मशरिक़ी दरवाज़े के पास
पहुँचाने वाली सीढ़ी पर चढ़ कर दरवाज़े की दहलीज़
पर रुक गया। जब उस ने उस की पैमाइश की तो उस
की गहराई साढ़े 10 फ़ुट निकली।

---

[e] 28 अप्रैल।

7 जब वह दरवाज़े में खड़ा हुआ तो दाईं और बाईं
तरफ़ पहरेदारों के तीन तीन कमरे नज़र आए। हर
कमरे की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े दस दस फ़ुट
थी। कमरों के दरमियान की दीवार पौने नौ फ़ुट मोटी
थी। इन कमरों के बाद एक और दहलीज़ थी जो साढ़े
10 फ़ुट गहरी थी। उस पर से गुज़र कर हम दरवाज़े
से मुल्हिक़ एक बरामदे में आए जिस का रुख़ रब
के घर की तरफ़ था। 8 मेरे राहनुमा ने बरामदे की
पैमाइश की 9 तो पता चला कि उस की लम्बाई 14
फ़ुट है। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू साढ़े तीन तीन
फ़ुट मोटे थे। बरामदे का रुख़ रब के घर की तरफ़
था। 10 पहरेदारों के मज़कूरा कमरे सब एक जैसे बड़े
थे, और उन के दरमियान वाली दीवारें सब एक जैसी
मोटी थीं।

11 इस के बाद उस ने दरवाज़े की गुज़रगाह की
चौड़ाई नापी। यह मिल मिला कर पौने 23 फ़ुट थी,
अलबत्ता जब किवाड़ खुले थे तो उन के दरमियान
का फ़ासिला साढ़े 17 फ़ुट था। 12 पहरेदारों के हर
कमरे के सामने एक छोटी सी दीवार थी जिस की
ऊँचाई 21 इंच थी जबकि हर कमरे की लम्बाई और
ऊँचाई साढ़े दस दस फ़ुट थी। 13 फिर मेरे राहनुमा
ने वह फ़ासिला नापा जो इन कमरों में से एक की
पिछली दीवार से ले कर उस के मुक़ाबिल के कमरे
की पिछली दीवार तक था। मालूम हुआ कि पौने 44
फ़ुट है।

14 सहन में दरवाज़े से मुल्हिक़ वह बरामदा था जिस
का रुख़ रब के घर की तरफ़ था। उस की चौड़ाई 33
फ़ुट थी। [f] 15 जो बाहर से दरवाज़े में दाख़िल होता था
वह साढ़े 87 फ़ुट के बाद ही सहन में पहुँचता था।

16 पहरेदारों के तमाम कमरों में छोटी खिड़कियाँ
थीं। कुछ बैरूनी दीवार में थीं, कुछ कमरों के
दरमियान की दीवारों में। दरवाज़े के सतून-नुमा
बाज़ूओं में खजूर के दरख़्त मुनक़्क़श थे।

रब के घर का बैरूनी सहन

17 फिर मेरा राहनुमा दरवाज़े में से गुज़र कर मुझे रब
के घर के बैरूनी सहन में लाया। चारदीवारी के साथ
साथ 30 कमरे बनाए गए थे जिन के सामने पत्थर का
फ़र्श था। 18 यह फ़र्श चारदीवारी के साथ साथ था।
जहाँ दरवाज़ों की गुज़रगाहें थीं वहाँ फ़र्श उन की
दीवारों से लगता था। जितना लम्बा इन गुज़रगाहों
का वह हिस्सा था जो सहन में था उतना ही चौड़ा
फ़र्श भी था। यह फ़र्श अन्दरूनी सहन की निस्बत
नीचा था।

19 बैरूनी और अन्दरूनी सहनों के दरमियान भी
दरवाज़ा था। यह बैरूनी दरवाज़े के मुक़ाबिल था।
जब मेरे राहनुमा ने दोनों दरवाज़ों का दरमियानी
फ़ासिला नापा तो मालूम हुआ कि 175 फ़ुट है।

बैरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

20 इस के बाद उस ने चारदीवारी के शिमाली
दरवाज़े की पैमाइश की।

21 इस दरवाज़े में भी दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन
कमरे थे जो मशरिक़ी दरवाज़े के कमरों जितने बड़े
थे। उस में से गुज़र कर हम वहाँ भी दरवाज़े से
मुल्हिक़ बरामदे में आए जिस का रुख़ रब के घर की
तरफ़ था। उस की और उस के सतून-नुमा बाज़ूओं की
लम्बाई और चौड़ाई उतनी ही थी जितनी मशरिक़ी
दरवाज़े के बरामदे और उस के सतून-नुमा बाज़ूओं
की थी। गुज़रगाह की पूरी लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी।
जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासिला नापा जो पहरेदारों
के कमरों में से एक की पिछली दीवार से ले कर
उस के मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक
था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 22 दरवाज़े
से मुल्हिक़ बरामदा, खिड़कियाँ और कन्दा किए
गए खजूर के दरख़्त उसी तरह बनाए गए थे जिस
तरह मशरिक़ी दरवाज़े में। बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े

---

[f] इब्रानी मतन में इस आयत का मतलब ग़ैरवाज़िह है।

तक पहुँचाती थी जिस के सात क़दम्चे थे। मशरिक़ी दरवाज़े की तरह शिमाली दरवाज़े के अन्दरूनी सिरे के साथ एक बरामदा मुल्हिक़ था जिस से हो कर इन्सान सहन में पहुँचता था।

23 मशरिक़ी दरवाज़े की तरह इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अन्दरूनी सहन में पहुँचाने वाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासिला 175 फ़ुट था।

बैरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

24 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे बाहर ले गया। चलते चलते हम जुनूबी चारदीवारी के पास पहुँचे। वहाँ भी दरवाज़ा नज़र आया। उस में से गुज़र कर हम वहाँ भी दरवाज़े से मुल्हिक़ बरामदे में आए जिस का रुख़ रब के घर की तरफ़ था। यह बरामदा दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं समेत दीगर दरवाज़ों के बरामदे जितना बड़ा था। 25 दरवाज़े और बरामदे की खिड़कियाँ भी दीगर खिड़कियों की मानिन्द थीं। गुज़रगाह की पूरी लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब उस ने वह फ़ासिला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से ले कर उस के मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 26 बाहर एक सीढ़ी दरवाज़े तक पहुँचाती थी जिस के सात क़दम्चे थे। दीगर दरवाज़ों की तरह जुनूबी दरवाज़े के अन्दरूनी सिरे के साथ बरामदा मुल्हिक़ था जिस से हो कर इन्सान सहन में पहुँचता था। बरामदे के दोनों सतून-नुमा बाज़ूओं पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे।

27 इस दरवाज़े के मुक़ाबिल भी अन्दरूनी सहन में पहुँचाने वाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फ़ासिला 175 फ़ुट था।

अन्दरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

28 फिर मेरा राहनुमा जुनूबी दरवाज़े में से गुज़र कर मुझे अन्दरूनी सहन में लाया। जब उस ने वहाँ का दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि वह बैरूनी दरवाज़ों की मानिन्द है। 29–30 पहरेदारों के कमरे, बरामदा और उस के सतून-नुमा बाज़ू सब पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिन्द थे। इस दरवाज़े और इस के साथ मुल्हिक़ बरामदे में भी खिड़कियाँ थीं। गुज़रगाह की पूरी लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फ़ासिला नापा जो पहरेदारों के कमरे में से एक की पिछली दीवार से ले कर उस के मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फ़ुट है। 31 लेकिन उस के बरामदे का रुख़ बैरूनी सहन की तरफ़ था। उस में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिस के आठ क़दम्चे थे। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे।

अन्दरूनी सहन का मशरिक़ी दरवाज़ा

32 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से हो कर अन्दरूनी सहन में लाया। जब उस ने यह दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है। 33 पहरेदारों के कमरे, दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू और बरामदा पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिन्द थे। यहाँ भी दरवाज़े और बरामदे में खिड़कियाँ लगी थीं। गुज़रगाह की लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने 44 फ़ुट थी। 34 इस दरवाज़े के बरामदे का रुख़ भी बैरूनी सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे। बरामदे में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिस के आठ क़दम्चे थे।

अन्दरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

35 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े के पास लाया। उस की पैमाइश करने पर मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाज़ों जितना बड़ा है। 36 पहरेदारों के कमरे, सतून-नुमा बाज़ू, बरामदा और दीवारों में खिड़कियाँ भी दूसरे दरवाज़ों की मानिन्द थीं। गुज़रगाह की लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट और चौड़ाई पौने

44 फ़ुट थी। 37 उस के बरामदे का रुख़ भी बैरूनी
सहन की तरफ़ था। दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं
पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे। उस में पहुँचने
के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिस के आठ
क़दम्चे थे।

अन्दरूनी शिमाली दरवाज़े के पास ज़बह का बन्द-ओ-बस्त

38 अन्दरूनी शिमाली दरवाज़े के बरामदे में
दरवाज़ा था जिस में से गुज़र कर इन्सान उस कमरे
में दाख़िल होता था जहाँ उन ज़बह किए हुए जानवरों
को धोया जाता था जिन्हें भस्म करना होता था।
39 बरामदे में चार मेज़ें थीं, कमरे के दोनों तरफ़ दो
दो मेज़ें। इन मेज़ों पर उन जानवरों को ज़बह किया
जाता था जो भस्म होने वाली क़ुर्बानियों, गुनाह की
क़ुर्बानियों और क़ुसूर की क़ुर्बानियों के लिए मख़्सूस
थे। 40 इस बरामदे से बाहर मज़ीद चार ऐसी मेज़ें थीं,
दो एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़। 41 मिल मिला कर
आठ मेज़ें थीं जिन पर क़ुर्बानियों के जानवर ज़बह
किए जाते थे। चार बरामदे के अन्दर और चार उस
से बाहर के सहन में थीं।

42 बरामदे की चार मेज़ें तराशे हुए पत्थर से बनाई
गई थीं। हर एक की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े 31 इंच
और ऊँचाई 21 इंच थी। उन पर वह तमाम आलात
पड़े थे जो जानवरों को भस्म होने वाली क़ुर्बानी
और बाक़ी क़ुर्बानियों के लिए तय्यार करने के लिए
दरकार थे। 43 जानवरों का गोश्त इन मेज़ों पर रखा
जाता था। इर्दगिर्द की दीवारों में तीन तीन इंच लम्बी
हुकें लगी थीं।

44 फिर हम अन्दरूनी सहन में दाख़िल हुए। वहाँ
शिमाली दरवाज़े के साथ एक कमरा मुल्हिक़ था जो
अन्दरूनी सहन की तरफ़ खुला था और जिस का
रुख़ जुनूब की तरफ़ था। जुनूबी दरवाज़े के साथ भी
ऐसा कमरा था। उस का रुख़ शिमाल की तरफ़ था।
45 मेरे राहनुमा ने मुझ से कहा, "जिस कमरे का रुख़
जुनूब की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए है जो रब
के घर की देख-भाल करते हैं, 46 जबकि जिस कमरे
का रुख़ शिमाल की तरफ़ है वह उन इमामों के लिए
है जो क़ुर्बानगाह की देख-भाल करते हैं। तमाम इमाम
सदोक़ की औलाद हैं। लावी के क़बीले में से सिर्फ़
उन ही को रब के हुज़ूर आ कर उस की ख़िदमत
करने की इजाज़त है।"

अन्दरूनी सहन और रब का घर

47 मेरे राहनुमा ने अन्दरूनी सहन की पैमाइश की।
उस की लम्बाई और चौड़ाई पौने दो दो सौ फ़ुट थी।
क़ुर्बानगाह इस सहन में रब के घर के सामने ही थी।
48 फिर उस ने मुझे रब के घर के बरामदे में ले जा
कर दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं की पैमाइश की।
मालूम हुआ कि यह पौने 9 फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की
चौड़ाई साढ़े 24 फ़ुट थी जबकि दाएँ बाएँ की दीवारों
की लम्बाई सवा पाँच पाँच फ़ुट थी। 49 चुनाँचे बरामदे
की पूरी चौड़ाई 35 और लम्बाई 21 फ़ुट थी। उस में
दाख़िल होने के लिए दस क़दम्चों वाली सीढ़ी बनाई
गई थी। दरवाज़े के दोनों सतून-नुमा बाज़ूओं के साथ
साथ एक एक सतून खड़ा किया गया था।

41 1 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे रब के घर
के पहले कमरे यानी 'मुक़द्दस कमरा' में
ले गया। उस ने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ू नापे तो
मालूम हुआ कि साढ़े दस दस फ़ुट मोटे हैं। 2 दरवाज़े
की चौड़ाई साढ़े 17 फ़ुट थी, और दाएँ बाएँ की
दीवारें पौने नौ नौ फ़ुट लम्बी थीं। कमरे की पूरी
लम्बाई 70 फ़ुट और चौड़ाई 35 फ़ुट थी।

3 फिर वह आगे बढ़ कर सब से अन्दरूनी कमरे में
दाख़िल हुआ। उस ने दरवाज़े के सतून-नुमा बाज़ूओं
की पैमाइश की तो मालूम हुआ कि साढ़े तीन तीन
फ़ुट मोटे हैं। दरवाज़े की चौड़ाई साढ़े 10 फ़ुट थी,
और दाएँ बाएँ की दीवारें सवा बारह बारह फ़ुट लम्बी
थीं। 4 अन्दरूनी कमरे की लम्बाई और चौड़ाई पैंतीस
पैंतीस फ़ुट थी। वह बोला, "यह मुक़द्दसतरीन कमरा
है।"

रब के घर से मुल्हिक़ कमरे

5 फिर उस ने रब के घर की बैरूनी दीवार नापी।
उस की मोटाई साढ़े 10 फ़ुट थी। दीवार के साथ
साथ कमरे तामीर किए गए थे। हर कमरे की चौड़ाई
7 फ़ुट थी। 6 कमरों की तीन मन्ज़िलें थीं, कुल 30
कमरे थे। रब के घर की बैरूनी दीवार दूसरी मन्ज़िल
पर पहली मन्ज़िल की निस्बत कम मोटी और तीसरी
मन्ज़िल पर दूसरी मन्ज़िल की निस्बत कम मोटी थी।
नतीजतन हर मन्ज़िल का वज़न उस की बैरूनी दीवार
पर था और ज़रूरत नहीं थी कि इस दीवार में शहतीर
लगाएँ। 7 चुनाँचे दूसरी मन्ज़िल पहली की निस्बत
चौड़ी और तीसरी दूसरी की निस्बत चौड़ी थी। एक
सीढ़ी निचली मन्ज़िल से दूसरी और तीसरी मन्ज़िल
तक पहुँचाती थी।

8–11 इन कमरों की बैरूनी दीवार पौने 9 फ़ुट मोटी
थी। जो कमरे रब के घर की शिमाली दीवार में थे
उन में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा था, और इसी
तरह जुनूबी कमरों में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा
था। मैं ने देखा कि रब का घर एक चबूतरे पर तामीर
हुआ है। इस का जितना हिस्सा उस के इर्दगिर्द नज़र
आता था वह पौने 9 फ़ुट चौड़ा और साढ़े 10 फ़ुट
ऊँचा था। रब के घर की बैरूनी दीवार से मुल्हिक़
कमरे इस पर बनाए गए थे। इस चबूतरे और इमामों
से मुस्तामल मकानों के दरमियान खुली जगह थी
जिस का फ़ासिला 35 फ़ुट था। यह खुली जगह रब
के घर के चारों तरफ़ नज़र आती थी।

मग़रिब में इमारत

12 इस खुली जगह के मग़रिब में एक इमारत थी जो
साढ़े 157 फ़ुट लम्बी और साढ़े 122 फ़ुट चौड़ी थी।
उस की दीवारें चारों तरफ़ पौने नौ नौ फ़ुट मोटी थीं।

रब के घर की बैरूनी पैमाइश

13 फिर मेरे राहनुमा ने बाहर से रब के घर की
पैमाइश की। उस की लम्बाई 175 फ़ुट थी। रब के
घर की पिछली दीवार से मग़रिबी इमारत तक का
फ़ासिला भी 175 फ़ुट था। 14 फिर उस ने रब के घर
के सामने वाली यानी मशरिक़ी दीवार शिमाल और
जुनूब में खुली जगह समेत की पैमाइश की। मालूम
हुआ कि उस का फ़ासिला भी 175 फ़ुट है। 15 उस ने
मग़रिब में उस इमारत की लम्बाई नापी जो रब के घर
के पीछे थी। मालूम हुआ कि यह भी दोनों पहलूओं
की गुज़रगाहों समेत 175 फ़ुट लम्बी है।

रब के घर का अन्दरूनी हिस्सा

रब के घर के बरामदे, मुक़द्दस कमरे और
मुक़द्दसतरीन कमरे की दीवारों पर 16 फ़र्श से ले कर
खिड़कियों तक लकड़ी के तख़्ते लगाए गए थे। इन
खिड़कियों को बन्द किया जा सकता था।

17 रब के घर की अन्दरूनी दीवारों पर दरवाज़ों
के ऊपर तक तस्वीरें कन्दा की गई थीं। 18 खजूर
के दरख़्तों और करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें बारी
बारी नज़र आती थीं। हर फ़रिश्ते के दो चिहरे थे।
19 इन्सान का चिहरा एक तरफ़ के दरख़्त की तरफ़
देखता था जबकि शेरबबर का चिहरा दूसरी तरफ़ के
दरख़्त की तरफ़ देखता था। यह दरख़्त और करूबी
पूरी दीवार पर बारी बारी मुनक़्क़श किए गए थे,
20 फ़र्श से ले कर दरवाज़ों के ऊपर तक। 21 मुक़द्दस
कमरे में दाख़िल होने वाले दरवाज़े के दोनों बाज़ू
मुरब्बा थे।

लकड़ी की क़ुर्बानगाह

मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सामने 22 लकड़ी
की क़ुर्बानगाह नज़र आई। उस की ऊँचाई सवा 5
फ़ुट और चौड़ाई साढ़े तीन फ़ुट थी। उस के कोने,
पाया और चारों पहलू लकड़ी से बने थे। उस ने मुझ
से कहा, “यह वही मेज़ है जो रब के हुज़ूर रहती है।”

दरवाज़े

23 मुक़द्दस कमरे में दाख़िल होने का एक दरवाज़ा
था और मुक़द्दसतरीन कमरे का एक। 24 हर दरवाज़े

के दो किवाड़ थे, वह दरमियान में से खुलते थे।
25 दीवारों की तरह मुक़द्दस कमरे के दरवाज़े पर भी
खजूर के दरख़्त और करूबी फ़रिश्ते कन्दा किए
गए थे। और बरामदे के बाहर वाले दरवाज़े के ऊपर
लकड़ी की छोटी सी छत बनाई गई थी।
26 बरामदे के दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं, और
दीवारों पर खजूर के दरख़्त कन्दा किए गए थे।

इमामों के लिए मख़्सूस कमरे

42 1 इस के बाद हम दुबारा बैरूनी सहन में
आए। मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के
शिमाल में वाक़े एक इमारत के पास ले गया जो
रब के घर के पीछे यानी मग़रिब में वाक़े इमारत
के मुक़ाबिल थी। 2 यह इमारत 175 फ़ुट लम्बी और
साढ़े 87 फ़ुट चौड़ी थी।
3 उस का रुख़ अन्दरूनी सहन की उस खुली जगह
की तरफ़ था जो 35 फ़ुट चौड़ी थी। दूसरा रुख़ बैरूनी
सहन के पक्के फ़र्श की तरफ़ था।
मकान की तीन मन्ज़िलें थीं। दूसरी मन्ज़िल पहली
की निस्बत कम चौड़ी और तीसरी दूसरी की निस्बत
कम चौड़ी थी। 4 मकान के शिमाली पहलू में एक
गुज़रगाह थी जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक ले जाती
थी। उस की लम्बाई 175 फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 17
फ़ुट थी। कमरों के दरवाज़े सब शिमाल की तरफ़
खुलते थे। 5–6 दूसरी मन्ज़िल के कमरे पहली मन्ज़िल
की निस्बत कम चौड़े थे ताकि उन के सामने टैरस
हो। इसी तरह तीसरी मन्ज़िल के कमरे दूसरी की
निस्बत कम चौड़े थे। इस इमारत में सहन की दूसरी
इमारतों की तरह सतून नहीं थे।
7 कमरों के सामने एक बैरूनी दीवार थी जो उन्हें
बैरूनी सहन से अलग करती थी। उस की लम्बाई
साढ़े 87 फ़ुट थी, 8 क्यूँकि बैरूनी सहन की तरफ़
कमरों की मिल मिला कर लम्बाई साढ़े 87 फ़ुट थी
अगरचे पूरी दीवार की लम्बाई 175 फ़ुट थी। 9 बैरूनी
सहन से इस इमारत में दाख़िल होने के लिए मशरिक़
की तरफ़ से आना पड़ता था। वहाँ एक दरवाज़ा था।
10 रब के घर के जुनूब में उस जैसी एक और इमारत
थी जो रब के घर के पीछे वाली यानी मग़रिबी इमारत
के मुक़ाबिल थी। 11 उस के कमरों के सामने भी
मज़कूरा शिमाली इमारत जैसी गुज़रगाह थी। उस की
लम्बाई और चौड़ाई, डिज़ाइन और दरवाज़े, ग़रज़
सब कुछ शिमाली मकान की मानिन्द था। 12 कमरों
के दरवाज़े जुनूब की तरफ़ थे, और उन के सामने भी
एक हिफ़ाज़ती दीवार थी। बैरूनी सहन से इस इमारत
में दाख़िल होने के लिए मशरिक़ से आना पड़ता था।
उस का दरवाज़ा भी गुज़रगाह के शुरू में था।
13 उस आदमी ने मुझ से कहा, “यह दोनों इमारतें
मुक़द्दस हैं। जो इमाम रब के हुज़ूर आते हैं वह इन
ही में मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियाँ खाते हैं। चूँकि यह
कमरे मुक़द्दस हैं इस लिए इमाम इन में मुक़द्दसतरीन
क़ुर्बानियाँ रखेंगे, ख़्वाह ग़ल्ला, गुनाह या क़ुसूर की
क़ुर्बानियाँ क्यूँ न हों। 14 जो इमाम मक़्दिस से निकल
कर बैरूनी सहन में जाना चाहें उन्हें इन कमरों में
वह मुक़द्दस लिबास उतार कर छोड़ना है जो उन्हों ने
रब की ख़िदमत करते वक़्त पहने हुए थे। लाज़िम है
कि वह पहले अपने कपड़े बदलें, फिर ही वहाँ जाएँ
जहाँ बाक़ी लोग जमा होते हैं।”

बाहर से रब के घर की चारदीवारी की पैमाइश

15 रब के घर के इहाते में सब कुछ नापने के
बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिक़ी दरवाज़े से बाहर
ले गया और बाहर से चारदीवारी की पैमाइश करने
लगा। 16–20 फ़ीते से पहले मशरिक़ी दीवार नापी,
फिर शिमाली, जुनूबी और मग़रिबी दीवार। हर दीवार
की लम्बाई 875 फ़ुट थी। इस चारदीवारी का मक़्सद
यह था कि जो कुछ मुक़द्दस है वह उस से अलग
किया जाए जो मुक़द्दस नहीं है।

रब अपने घर में वापस आ जाता है

43 1 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा रब के घर
के मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया।
2 अचानक इस्राईल के ख़ुदा का जलाल मशरिक़ से

आता हुआ दिखाई दिया। ज़बरदस्त आबशार का सा
शोर सुनाई दिया, और ज़मीन उस के जलाल से चमक
रही थी। 3 रब मुझ पर यूँ ज़ाहिर हुआ जिस तरह
दीगर रोयाओं में, पहले दरया-ए-किबार के किनारे
और फिर उस वक़्त जब वह यरूशलम को तबाह
करने आया था।
मैं मुँह के बल गिर गया। 4 रब का जलाल मशरिक़ी
दरवाज़े में से रब के घर में दाख़िल हुआ। 5 फिर
अल्लाह का रूह मुझे उठा कर अन्दरूनी सहन में ले
गया। वहाँ मैं ने देखा कि पूरा घर रब के जलाल से
मामूर है।
6 मेरे पास खड़े आदमी की मौजूदगी में कोई रब के
घर में से मुझ से मुख़ातिब हुआ,
7 "ऐ आदमज़ाद, यह मेरे तख़्त और मेरे पाँओ के
तल्वों का मक़ाम है। यहीं मैं हमेशा तक इस्राईलियों
के दरमियान सुकूनत करूँगा। आइन्दा न कभी
इस्राईली और न उन के बादशाह मेरे मुक़द्दस नाम
की बेहुरमती करेंगे। न वह अपनी ज़िनाकाराना
बुतपरस्ती से, न बादशाहों की लाशों से मेरे नाम की
बेहुरमती करेंगे। 8 माज़ी में इस्राईल के बादशाहों ने
अपने महलों को मेरे घर के साथ ही तामीर किया।
उन की दहलीज़ मेरी दहलीज़ के साथ और उन के
दरवाज़े का बाज़ू मेरे दरवाज़े के बाज़ू के साथ लगता
था। एक ही दीवार उन्हें मुझ से अलग रखती थी।
यूँ उन्हों ने अपनी मकरूह हरकतों से मेरे मुक़द्दस
नाम की बेहुरमती की, और जवाब में मैं ने अपने
ग़ज़ब में उन्हें हलाक कर दिया। 9 लेकिन अब वह
अपनी ज़िनाकाराना बुतपरस्ती और अपने बादशाहों
की लाशें मुझ से दूर रखेंगे। तब मैं हमेशा तक उन के
दरमियान सुकूनत करूँगा।
10 ऐ आदमज़ाद, इस्राईलियों को इस घर के बारे में
बता दे ताकि उन्हें अपने गुनाहों पर शर्म आए। वह
ध्यान से नए घर के नक़्शे का मुतालआ करें। 11 अगर
उन्हें अपनी हरकतों पर शर्म आए तो उन्हें घर की
तफ़्सीलात भी दिखा दे, यानी उस की तर्तीब, उस के
आने जाने के रास्ते और उस का पूरा इन्तिज़ाम तमाम
क़वाइद और अह्काम समेत। सब कुछ उन के सामने
ही लिख दे ताकि वह उस के पूरे इन्तिज़ाम के पाबन्द
रहें और उस के तमाम क़वाइद की पैरवी करें। 12 रब
के घर के लिए मेरी हिदायत सुन! इस पहाड़ की चोटी
गिर्द-ओ-नवाह के तमाम इलाक़े समेत मुक़द्दसतरीन
जगह है। यह घर के लिए मेरी हिदायत है।"

भस्म होने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह

13 क़ुर्बानगाह यूँ बनाई गई थी कि उस का पाया
नाली से घिरा हुआ था जो 21 इंच गहरी और उतनी
ही चौड़ी थी। बाहर की तरफ़ नाली के किनारे पर
छोटी सी दीवार थी जिस की ऊँचाई 9 इंच थी।
14 क़ुर्बानगाह के तीन हिस्से थे। सब से निचला
हिस्सा साढ़े तीन फ़ुट ऊँचा था। इस पर बना हुआ
हिस्सा 7 फ़ुट ऊँचा था, लेकिन उस की चौड़ाई कुछ
कम थी, इस लिए चारों तरफ़ निचले हिस्से का ऊपर
वाला किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई
21 इंच थी। तीसरा और सब से ऊपर वाला हिस्सा
भी इसी तरह बनाया गया था। वह दूसरे हिस्से की
निस्बत कम चौड़ा था, इस लिए चारों तरफ़ दूसरे
हिस्से का ऊपर वाला किनारा नज़र आता था। इस
किनारे की चौड़ाई भी 21 इंच थी। 15 तीसरे हिस्से पर
क़ुर्बानियाँ जलाई जाती थीं, और चारों कोनों पर सींग
लगे थे। यह हिस्सा भी 7 फ़ुट ऊँचा था। 16 क़ुर्बानगाह
की ऊपर वाली सतह मुरब्बा शक्ल की थी। उस की
चौड़ाई और लम्बाई इक्कीस इक्कीस फ़ुट थी। 17 दूसरा
हिस्सा भी मुरब्बा शक्ल का था। उस की चौड़ाई और
लम्बाई साढ़े चौबीस चौबीस फ़ुट थी। उस का ऊपर
वाला किनारा नज़र आता था, और उस पर 21 इंच
चौड़ी नाली थी, यूँ कि किनारे पर छोटी सी दीवार
थी जिस की ऊँचाई साढ़े 10 इंच थी। क़ुर्बानगाह पर
चढ़ने के लिए उस के मशरिक़ में सीढ़ी थी।

क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत

18 फिर रब मुझ से हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद,
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि इस क़ुर्बानगाह

को तामीर करने के बाद तुझे इस पर क़ुर्बानियाँ जला कर इसे मख़्सूस करना है। साथ साथ इस पर क़ुर्बानियों का ख़ून भी छिड़कना है। इस सिलसिले में मेरी हिदायात सुन!

19 सिर्फ़ लावी के क़बीले के उन इमामों को रब के घर में मेरे हुज़ूर ख़िदमत करने की इजाज़त है जो सदोक़ की औलाद हैं।

रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्हें एक जवान बैल दे ताकि वह उसे गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। 20 इस बैल का कुछ ख़ून ले कर क़ुर्बानगाह के चारों सींगों, निचले हिस्से के चारों कोनों और इर्दगिर्द उस के किनारे पर लगा दे। यूँ तू क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़ करेगा। 21 इस के बाद जवान बैल को मक़्दिस से बाहर किसी मुक़र्ररा जगह पर ले जा। वहाँ उसे जला देना है।

22 अगले दिन एक बेऐब बकरे को क़ुर्बान कर। यह भी गुनाह की क़ुर्बानी है, और इस के ज़रीए क़ुर्बानगाह को पहली क़ुर्बानी की तरह पाक-साफ़ करना है।

23 पाक-साफ़ करने के इस सिलसिले की तक्मील पर एक बेऐब बैल और एक बेऐब मेंढे को चुन कर 24 रब को पेश कर। इमाम इन जानवरों पर नमक छिड़क कर इन्हें रब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें।

25 लाज़िम है कि तू सात दिन तक रोज़ाना एक बकरा, एक जवान बैल और एक मेंढा क़ुर्बान करे। सब जानवर बेऐब हों। 26 सात दिनों की इस कार-रवाई से तुम क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़ और मख़्सूस करोगे। 27 आठवें दिन से इमाम बाक़ाइदा क़ुर्बानियाँ शुरू कर सकेंगे। उस वक़्त से वह तुम्हारे लिए भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँगे। तब तुम मुझे मन्ज़ूर होगे। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।”

रब के घर का बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़ा बन्द किया जाता है

44 1 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा मक़्दिस के बैरूनी मशरिक़ी दरवाज़े के पास ले गया। अब वह बन्द था। 2 रब ने फ़रमाया, “अब से यह दरवाज़ा हमेशा तक बन्द रहे। इसे कभी नहीं खोलना है। किसी को भी इस में से दाख़िल होने की इजाज़त नहीं, क्यूँकि रब जो इस्राईल का ख़ुदा है इस दरवाज़े में से हो कर रब के घर में दाख़िल हुआ है। 3 सिर्फ़ इस्राईल के हुक्मरान को इस दरवाज़े में बैठने और मेरे हुज़ूर क़ुर्बानी का अपना हिस्सा खाने की इजाज़त है। लेकिन इस के लिए वह दरवाज़े में से गुज़र नहीं सकेगा बल्कि बैरूनी सहन की तरफ़ से उस में दाख़िल होगा। वह दरवाज़े के साथ मुल्हिक़ बरामदे से हो कर वहाँ पहुँचेगा और इसी रास्ते से वहाँ से निकलेगा भी।”

अक्सर लावियों की ख़िदमत को मह्दूद किया जाता है

4 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े में से हो कर दुबारा अन्दरूनी सहन में ले गया। हम रब के घर के सामने पहुँचे। मैं ने देखा कि रब का घर रब के जलाल से मामूर हो रहा है। मैं मुँह के बल गिर गया।

5 रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, ग़ौर से सुन! रब के घर के बारे में उन तमाम हिदायात पर तवज्जुह दे जो मैं तुझे बताने वाला हूँ। ध्यान दे कि कौन कौन उस में जा सकेगा। 6 इस सरकश क़ौम इस्राईल को बता,

‘ऐ इस्राईली क़ौम, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारी मकरूह हरकतें बहुत हैं, अब बस करो! 7 तुम परदेसियों को मेरे मक़्दिस में लाए हो, ऐसे लोगों को जो बातिन और ज़ाहिर में नामख़्तून हैं। और यह तुम ने उस वक़्त किया जब तुम मुझे मेरी ख़ुराक यानी चर्बी और ख़ून पेश कर रहे थे। यूँ तुम ने मेरे घर की बेहुरमती करके अपनी घिनौनी हरकतों से

वह अह्द तोड़ डाला है जो मैं ने तुम्हारे साथ बांधा
था। 8 तुम ख़ुद मेरे मक़्दिस में ख़िदमत नहीं करना
चाहते थे बल्कि तुम ने परदेसियों को यह ज़िम्मादारी
दी थी कि वह तुम्हारी जगह यह ख़िदमत अन्जाम दें।
9 इस लिए रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
आइन्दा जो भी ग़ैरमुल्की अन्दरूनी और बैरूनी तौर
पर नामख़्तून है उसे मेरे मक़्दिस में दाख़िल होने की
इजाज़त नहीं। इस में वह अजनबी भी शामिल हैं जो
इस्राईलियों के दरमियान रहते हैं। 10 जब इस्राईली
भटक गए और मुझ से दूर हो कर बुतों के पीछे लग
गए तो अक्सर लावी भी मुझ से दूर हुए। अब उन्हें
अपने गुनाह की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 11 आइन्दा वह
मेरे मक़्दिस में हर क़िस्म की ख़िदमत नहीं करेंगे।
उन्हें सिर्फ़ दरवाज़ों की पहरादारी करने और जानवरों
को ज़बह करने की इजाज़त होगी। इन जानवरों में
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ भी शामिल होंगी और
ज़बह की क़ुर्बानियाँ भी। लावी क़ौम की ख़िदमत के
लिए रब के घर में हाज़िर रहेंगे, 12 लेकिन चूँकि वह
अपने हमवतनों के बुतों के सामने लोगों की ख़िदमत
करके उन के लिए गुनाह का बाइस बने रहे इस लिए
मैं ने अपना हाथ उठा कर क़सम खाई है कि उन्हें इस
की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।
13 अब से वह इमाम की हैसियत से मेरे क़रीब आ
कर मेरी ख़िदमत नहीं करेंगे, अब से वह उन चीज़ों
के क़रीब नहीं आएँगे जिन को मैं ने मुक़द्दसतरीन
क़रार दिया है। 14 इस के बजाय मैं उन्हें रब के घर
के निचले दर्जे की ज़िम्मादारियाँ दूँगा।

इमामों के लिए हिदायात

15 लेकिन रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लावी का एक ख़ानदान उन में शामिल नहीं है। सदोक़
का ख़ानदान आइन्दा भी मेरी ख़िदमत करेगा। उस
के इमाम उस वक़्त भी वफ़ादारी से मेरे मक़्दिस में
मेरी ख़िदमत करते रहे जब इस्राईल के बाक़ी लोग
मुझ से दूर हो गए थे। इस लिए यह आइन्दा भी मेरे
हुज़ूर आ कर मुझे क़ुर्बानियों की चर्बी और ख़ून पेश
करेंगे। 16 सिर्फ़ यही इमाम मेरे मक़्दिस में दाख़िल
होंगे और मेरी मेज़ पर मेरी ख़िदमत करके मेरे तमाम
फ़राइज़ अदा करेंगे।
17 जब भी इमाम अन्दरूनी दरवाज़े में दाख़िल होते
हैं तो लाज़िम है कि वह कतान के कपड़े पहन लें।
अन्दरूनी सहन और रब के घर में ख़िदमत करते
वक़्त ऊन के कपड़े पहनना मना है। 18 वह कतान
की पगड़ी और पाजामा पहनें, क्यूँकि उन्हें पसीना
दिलाने वाले कपड़ों से गुरेज़ करना है। 19 जब भी
इमाम अन्दरूनी सहन से दुबारा बैरूनी सहन में जाना
चाहें तो लाज़िम है कि वह ख़िदमत के लिए मुस्तामल
कपड़ों को उतारें। वह इन कपड़ों को मुक़द्दस कमरों
में छोड़ आएँ और आम कपड़े पहन लें, ऐसा न हो
कि मुक़द्दस कपड़े छूने से आम लोगों की जान ख़तरे
में पड़ जाए।
20 न इमाम अपना सर मुंडवाएँ, न उन के बाल
लम्बे हों बल्कि वह उन्हें कटवाते रहें। 21 इमाम को
अन्दरूनी सहन में दाख़िल होने से पहले मै पीना मना
है।
22 इमाम को किसी तलाकशुदा औरत या बेवा से
शादी करने की इजाज़त नहीं है। वह सिर्फ़ इस्राईली
कुंवारी से शादी करे। सिर्फ़ उस वक़्त बेवा से शादी
करने की इजाज़त है जब मरहूम शौहर इमाम था।
23 इमाम अवाम को मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों
में फ़र्क़ की तालीम दें। वह उन्हें नापाक और पाक
चीज़ों में इम्तियाज़ करना सिखाएँ। 24 अगर तनाज़ो
हो तो इमाम मेरे अह्काम के मुताबिक़ ही उस पर
फ़ैसला करें। उन का फ़र्ज़ है कि वह मेरी मुक़र्ररा
ईदों को मेरी हिदायात और क़वाइद के मुताबिक़ ही
मनाएँ। वह मेरा सबत का दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
रखें।
25 इमाम अपने आप को किसी लाश के पास जाने
से नापाक न करे। इस की इजाज़त सिर्फ़ इसी सूरत में
है कि उस के माँ-बाप, बच्चों, भाइयों या ग़ैरशादीशुदा
बहनों में से कोई इन्तिक़ाल कर जाए। 26 अगर कभी

ऐसा हो तो वह अपने आप को पाक-साफ़ करने के
बाद मज़ीद सात दिन इन्तिज़ार करे, 27 फिर मक़्दिस
के अन्दरूनी सहन में जा कर अपने लिए गुनाह
की क़ुर्बानी पेश करे। तब ही वह दुबारा मक़्दिस में
ख़िदमत कर सकता है। यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़
का फ़रमान है।

28 सिर्फ़ मैं ही इमामों का मौरूसी हिस्सा हूँ। उन्हें
इस्राईल में मौरूसी मिलकियत मत देना, क्यूँकि मैं
ख़ुद उन की मौरूसी मिलकियत हूँ। 29 खाने के लिए
इमामों को ग़ल्ला, गुनाह और क़ुसूर की क़ुर्बानियाँ
मिलेंगी, नीज़ इस्राईल में वह सब कुछ जो रब के
लिए मख़्सूस किया जाता है। 30 इमामों को फ़सल के
पहले फल का बेहतरीन हिस्सा और तुम्हारे तमाम
हदिए मिलेंगे। उन्हें अपने गुंधे हुए आटे से भी हिस्सा
देना है। तब अल्लाह की बरकत तेरे घराने पर ठहरेगी।

31 जो परिन्दा या दीगर जानवर फ़ित्री तौर पर या
किसी दूसरे जानवर के हमले से मर जाए उस का
गोश्त खाना इमाम के लिए मना है।

इस्राईल में रब का हिस्सा

45 1 जब तुम मुल्क को क़ुरआ डाल कर
क़बीलों में तक़्सीम करोगे तो एक हिस्से
को रब के लिए मख़्सूस करना है। उस ज़मीन
की लम्बाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई 10
किलोमीटर होगी। पूरी ज़मीन मुक़द्दस होगी।

2 इस ख़ित्ते में एक प्लाट रब के घर के लिए मख़्सूस
होगा। उस की लम्बाई भी 875 फ़ुट होगी और उस
की चौड़ाई भी। उस के इर्दगिर्द खुली जगह होगी जिस
की चौड़ाई साढ़े 87 फ़ुट होगी। 3 ख़ित्ते का आधा
हिस्सा अलग किया जाए। उस की लम्बाई साढ़े 12
किलोमीटर और चौड़ाई 5 किलोमीटर होगी, और
उस में मक़्दिस यानी मुक़द्दसतरीन जगह होगी। 4 यह
ख़ित्ता मुल्क का मुक़द्दस इलाक़ा होगा। वह उन
इमामों के लिए मख़्सूस होगा जो मक़्दिस में उस की
ख़िदमत करते हैं। उस में उन के घर और मक़्दिस का
मख़्सूस प्लाट होगा।

5 ख़ित्ते का दूसरा हिस्सा उन बाक़ी लावियों को
दिया जाएगा जो रब के घर में ख़िदमत करेंगे। यह
उन की मिलकियत होगी, और उस में वह अपनी
आबादियाँ बना सकेंगे। उस की लम्बाई और चौड़ाई
पहले हिस्से के बराबर होगी।

6 मुक़द्दस ख़ित्ते से मुल्हिक़ एक और ख़ित्ता होगा
जिस की लम्बाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई
ढाई किलोमीटर होगी। यह एक ऐसे शहर के लिए
मख़्सूस होगा जिस में कोई भी इस्राईली रह सकेगा।

हुक्मरान के लिए ज़मीन

7 हुक्मरान के लिए भी ज़मीन अलग करनी है।
यह ज़मीन मुक़द्दस ख़ित्ते की मशरिक़ी हद से ले
कर मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक और मुक़द्दस
ख़ित्ते की मग़रिबी हद से ले कर समुन्दर तक होगी।
चुनाँचे मशरिक़ से मग़रिब तक मुक़द्दस ख़ित्ते और
हुक्मरान के इलाक़े का मिल मिला कर फ़ासिला
उतना है जितना क़बाइली इलाक़ों का है। 8 यह
इलाक़ा मुल्क-ए-इस्राईल में हुक्मरान का हिस्सा
होगा। फिर वह आइन्दा मेरी क़ौम पर ज़ुल्म नहीं
करेगा बल्कि मुल्क के बाक़ी हिस्से को इस्राईल के
क़बीलों पर छोड़ेगा।

हुक्मरान के लिए हिदायात

9 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इस्राईली
हुक्मरानो, अब बस करो! अपनी ग़लत हरकतों
से बाज़ आओ। अपना ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद छोड़ कर
इन्साफ़ और रास्तबाज़ी क़ाइम करो। मेरी क़ौम को
उस की मौरूसी ज़मीन से भगाने से बाज़ आओ। यह
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।

10 सहीह तराज़ू इस्तेमाल करो, तुम्हारे बाट और
पैमाइश के आलात ग़लत न हों। 11 ग़ल्ला नापने का
बर्तन बनाम ऐफ़ा माए नापने के बर्तन बनाम बत
जितना बड़ा हो। दोनों के लिए कसौटी ख़ोमर है। एक
ख़ोमर 10 ऐफ़ा और 10 बत के बराबर है। 12 तुम्हारे

बाट यूँ हों कि 20 जीरह 1 मिस्क़ाल के बराबर और
60 मिस्क़ाल 1 माना के बराबर हों।
13 दर्ज-ए-ज़ैल तुम्हारे बाक़ाइदा हदिए हैं :
अनाज : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,
जौ : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,
14 ज़ैतून का तेल : तुम्हारी फ़सल का 100वाँ हिस्सा
(तेल को बत के हिसाब से नापना है। 10 बत 1 ख़ोमर
और 1 कोर के बराबर है।),
15 200 भेड़-बकरियों में से एक।
यह चीज़ें ग़ल्ला की नज़रों के लिए, भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों और सलामती की क़ुर्बानियों के लिए
मुक़र्रर हैं। उन से क़ौम का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।
यह रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
16 लाज़िम है कि तमाम इस्राईली यह हदिए मुल्क
के हुक्मरान के हवाले करें। 17 हुक्मरान का फ़र्ज़ होगा
कि वह नए चाँद की ईदों, सबत के दिनों और दीगर
ईदों पर तमाम इस्राईली क़ौम के लिए क़ुर्बानियाँ
मुहय्या करे। इन में भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, गुनाह
और सलामती की क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला और मै की
नज़रें शामिल होंगी। यूँ वह इस्राईल का कफ़्फ़ारा
देगा।

बड़ी ईदों पर क़ुर्बानियाँ

18 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि पहले
महीने [g]के पहले दिन को एक बेऐब बैल को क़ुर्बान
करके मक़्दिस को पाक-साफ़ कर। 19 इमाम बैल
का ख़ून ले कर उसे रब के घर के दरवाज़ों के
बाज़ूओं, क़ुर्बानगाह के दरमियानी हिस्से के कोनों
और अन्दरूनी सहन में पहुँचाने वाले दरवाज़ों के
बाज़ूओं पर लगा दे। 20 यही अमल पहले महीने के
सातवें दिन भी कर ताकि उन सब का कफ़्फ़ारा दिया
जाए जिन्हों ने ग़ैरइरादी तौर पर या बेख़बरी से गुनाह
किया हो। यूँ तुम रब के घर का कफ़्फ़ारा दोगे।
21 पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद का
आग़ाज़ हो। उसे सात दिन मनाओ, और उस के दौरान
सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाओ। 22 पहले दिन मुल्क का
हुक्मरान अपने और तमाम क़ौम के लिए गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर एक बैल पेश करे। 23 नीज़, वह
ईद के सात दिन के दौरान रोज़ाना सात बेऐब बैल
और सात मेंढे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
क़ुर्बान करे और गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक
एक बकरा पेश करे। 24 वह हर बैल और हर मेंढे के
साथ साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे। इस के लिए
वह फ़ी जानवर 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर तेल
मुहय्या करे।
25 सातवें महीने [h]के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद
शुरू होती है। हुक्मरान इस ईद पर भी सात दिन के
दौरान वही क़ुर्बानियाँ पेश करे जो फ़सह की ईद के
लिए दरकार हैं यानी गुनाह की क़ुर्बानियाँ, भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और तेल।

ईदों पर हुक्मरान की जानिब से क़ुर्बानियाँ

46 1 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि
लाज़िम है कि अन्दरूनी सहन में पहुँचाने
वाला मशरिक़ी दरवाज़ा इत्वार से ले कर जुमए तक
बन्द रहे। उसे सिर्फ़ सबत और नए चाँद के दिन
खोलना है। 2 उस वक़्त हुक्मरान बैरूनी सहन से
हो कर मशरिक़ी दरवाज़े के बरामदे में दाख़िल हो
जाए और उस में से गुज़र कर दरवाज़े के बाज़ू के
पास खड़ा हो जाए। वहाँ से वह इमामों को उस की
भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश
करते हुए देख सकेगा। दरवाज़े की दहलीज़ पर वह
सिज्दा करेगा, फिर चला जाएगा। यह दरवाज़ा शाम
तक खुला रहे। 3 लाज़िम है कि बाक़ी इस्राईली सबत
और नए चाँद के दिन बैरूनी सहन में इबादत करें।
वह इसी मशरिक़ी दरवाज़े के पास आ कर मेरे हुज़ूर
औंधे मुँह हो जाएँ।

---

[g]मार्च ता अप्रैल।

[h]सितम्बर ता अक्तूबर।

4 सबत के दिन हुक्मरान छः बेऐब भेड़ के बच्चे और
एक बेऐब मेंढा चुन कर रब को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 5 वह हर मेंढे के साथ
ग़ल्ला की नज़र भी पेश करे यानी 16 किलोग्राम मैदा
और 4 लिटर ज़ैतून का तेल। हर भेड़ के बच्चे के साथ
वह उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे। 6 नए चाँद के
दिन वह एक जवान बैल, छः भेड़ के बच्चे और एक
मेंढा पेश करे। सब बेऐब हों। 7 जवान बैल और मेंढे
के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश की जाए। ग़ल्ला की
यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के
तेल पर मुश्तमिल हो। वह हर भेड़ के बच्चे के साथ
उतना ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।

8 हुक्मरान अन्दरूनी मशरिक़ी दरवाज़े में बैरूनी
सहन से हो कर दाख़िल हो, और वह इसी रास्ते से
निकले भी। 9 जब बाक़ी इस्राईली किसी ईद पर रब
को सिज्दा करने आएँ तो जो शिमाली दरवाज़े से
बैरूनी सहन में दाख़िल हों वह इबादत के बाद जुनूबी
दरवाज़े से निकलें, और जो जुनूबी दरवाज़े से दाख़िल
हों वह शिमाली दरवाज़े से निकलें। कोई उस दरवाज़े
से न निकले जिस में से वह दाख़िल हुआ बल्कि
मुक़ाबिल के दरवाज़े से। 10 हुक्मरान उस वक़्त सहन
में दाख़िल हो जब बाक़ी इस्राईली दाख़िल हो रहे हों,
और वह उस वक़्त रवाना हो जब बाक़ी इस्राईली
रवाना हो जाएँ।

11 ईदों और मुक़र्ररा तहवारों पर बैल और मेंढे के
साथ ग़ल्ला की नज़र पेश की जाए। ग़ल्ला की यह नज़र
16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर ज़ैतून के तेल पर
मुश्तमिल हो। हुक्मरान भेड़ के बच्चों के साथ उतना
ही ग़ल्ला दे जितना जी चाहे।

12 जब हुक्मरान अपनी ख़ुशी से मुझे क़ुर्बानी पेश
करना चाहे ख़्वाह भस्म होने वाली या सलामती
की क़ुर्बानी हो, तो उस के लिए अन्दरूनी दरवाज़े
का मशरिक़ी दरवाज़ा खोला जाए। वहाँ वह अपनी
क़ुर्बानी यूँ पेश करे जिस तरह सबत के दिन करता
है। उस के निकलने पर यह दरवाज़ा बन्द कर दिया
जाए।

रोज़ाना की क़ुर्बानी

13 इस्राईल रब को हर सुब्ह एक बेऐब यकसाला
भेड़ का बच्चा पेश करे। भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी
रोज़ाना चढ़ाई जाए। 14 साथ साथ ग़ल्ला की नज़र पेश
की जाए। इस के लिए सवा लिटर ज़ैतून का तेल
ढाई किलोग्राम मैदे के साथ मिलाया जाए। ग़ल्ला की
यह नज़र हमेशा ही मुझे पेश करनी है। 15 लाज़िम है
कि हर सुब्ह भेड़ का बच्चा, मैदा और तेल मेरे लिए
जलाया जाए।

हुक्मरान की मौरूसी ज़मीन

16 क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि अगर इस्राईल
का हुक्मरान अपने किसी बेटे को कुछ मौरूसी
ज़मीन दे तो यह ज़मीन बेटे की मौरूसी ज़मीन बन
कर उस की औलाद की मिलकियत रहेगी। 17 लेकिन
अगर हुक्मरान कुछ मौरूसी ज़मीन अपने किसी
मुलाज़िम को दे तो यह ज़मीन सिर्फ़ अगले बहाली के
साल तक मुलाज़िम के हाथ में रहेगी। फिर यह दुबारा
हुक्मरान के क़ब्ज़े में वापस आएगी। क्यूँकि यह
मौरूसी ज़मीन मुस्तक़िल तौर पर उस की और उस के
बेटों की मिलकियत है। 18 हुक्मरान को जब्रन दूसरे
इस्राईलियों की मौरूसी ज़मीन अपनाने की इजाज़त
नहीं। लाज़िम है कि जो भी ज़मीन वह अपने बेटों में
तक़्सीम करे वह उस की अपनी ही मौरूसी ज़मीन
हो। मेरी क़ौम में से किसी को निकाल कर उस की
मौरूसी ज़मीन से महरूम करना मना है'।"

रब के घर का किचन

19 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे उन कमरों के
दरवाज़े के पास ले गया जिन का रुख़ शिमाल की
तरफ़ था और जो अन्दरूनी सहन के जुनूबी दरवाज़े
के क़रीब थे। यह इमामों के मुक़द्दस कमरे हैं। उस ने
मुझे कमरों के मग़रिबी सिरे में एक जगह दिखा कर
20 कहा, "यहाँ इमाम वह गोश्त उबालेंगे जो गुनाह
और क़ुसूर की क़ुर्बानियों में से उन का हिस्सा बनता

है। यहाँ वह ग़ल्ला की नज़र ले कर रोटी भी बनाएँगे। क़ुर्बानियों में से कोई भी चीज़ बैरूनी सहन में नहीं लाई जा सकती, ऐसा न हो कि मुक़द्दस चीज़ें छूने से आम लोगों की जान ख़तरे में पड़ जाए।”

21 फिर मेरा राहनुमा दुबारा मेरे साथ बैरूनी सहन में
आ गया। वहाँ उस ने मुझे उस के चार कोने दिखाए।
हर कोने में एक सहन था 22 जिस की लम्बाई 70
फ़ुट और चौड़ाई साढ़े 52 फ़ुट थी। हर सहन इतना
ही बड़ा था 23 और एक दीवार से घिरा हुआ था।
दीवार के साथ साथ चूल्हे थे। 24 मेरे राहनुमा ने मुझे
बताया, “यह वह किचन हैं जिन में रब के घर के
ख़ादिम लोगों की पेशकरदा क़ुर्बानियाँ उबालेंगे।”

रब के घर में से निकलने वाला दरया

47 1 इस के बाद मेरा राहनुमा मुझे एक बार
फिर रब के घर के दरवाज़े के पास ले
गया। यह दरवाज़ा मशरिक़ में था, क्यूँकि रब के
घर का रुख़ ही मशरिक़ की तरफ़ था। मैं ने देखा कि
दहलीज़ के नीचे से पानी निकल रहा है। दरवाज़े से
निकल कर वह पहले रब के घर की जुनूबी दीवार
के साथ साथ बहता था, फिर क़ुर्बानगाह के जुनूब में
से गुज़र कर मशरिक़ की तरफ़ बह निकला। 2 मेरा
राहनुमा मेरे साथ बैरूनी सहन के शिमाली दरवाज़े
में से निकला। बाहर चारदीवारी के साथ साथ चलते
चलते हम बैरूनी सहन के मशरिक़ी दरवाज़े के पास
पहुँच गए। मैं ने देखा कि पानी इस दरवाज़े के जुनूबी
हिस्से में से निकल रहा है।

3 हम पानी के किनारे किनारे चल पड़े। मेरे राहनुमा
ने अपने फ़ीते के साथ आधा किलोमीटर का
फ़ासिला नापा। फिर उस ने मुझे पानी में से गुज़रने
को कहा। यहाँ पानी टख़नों तक पहुँचता था। 4 उस
ने मज़ीद आधे किलोमीटर का फ़ासिला नापा, फिर
मुझे दुबारा पानी में से गुज़रने को कहा। अब पानी
घुटनों तक पहुँचा। जब उस ने तीसरी मर्तबा आधा
किलोमीटर का फ़ासिला नाप कर मुझे उस में से
गुज़रने दिया तो पानी कमर तक पहुँचा। 5 एक
आख़िरी दफ़ा उस ने आधे किलोमीटर का फ़ासिला
नापा। अब मैं पानी में से गुज़र न सका। पानी इतना
गहरा था कि उस में से गुज़रने के लिए तैरने की
ज़रूरत थी।

6 उस ने मुझ से पूछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या तू ने ग़ौर
किया है?” फिर वह मुझे दरया के किनारे तक वापस
लाया।

7 जब वापस आया तो मैं ने देखा कि दरया के दोनों
किनारों पर मुतअद्दिद दरख़्त लगे हैं। 8 वह बोला,
“यह पानी मशरिक़ की तरफ़ बह कर वादी-ए-यर्दन
में पहुँचता है। उसे पार करके वह बहीरा-ए-मुर्दार में
आ जाता है। उस के असर से बहीरा-ए-मुर्दार का
नमकीन पानी पीने के क़ाबिल हो जाएगा। 9 जहाँ भी
दरया बहेगा वहाँ के बेशुमार जानदार जीते रहेंगे।
बहुत मछलियाँ होंगी, और दरया बहीरा-ए-मुर्दार का
नमकीन पानी पीने के क़ाबिल बनाएगा। जहाँ से भी
गुज़रेगा वहाँ सब कुछ फलता फूलता रहेगा। 10 ऐन-
जदी से ले कर ऐन-अज्लैम तक उस के किनारों पर
मछेरे खड़े होंगे। हर तरफ़ उन के जाल सूखने के
लिए फैलाए हुए नज़र आएँगे। दरया में हर क़िस्म
की मछलियाँ होंगी, उतनी जितनी बहीरा-ए-रूम में
पाई जाती हैं। 11 सिर्फ़ बहीरा-ए-मुर्दार के इर्दगिर्द की
दलदली जगहों और जोहड़ों का पानी नमकीन रहेगा,
क्यूँकि वह नमक हासिल करने के लिए इस्तेमाल
होगा। 12 दरया के दोनों किनारों पर हर क़िस्म के
फलदार दरख़्त उगेंगे। इन दरख़्तों के पत्ते न कभी
मुरझाएँगे, न कभी उन का फल ख़त्म होगा। वह हर
महीने फल लाएँगे, इस लिए कि मक़्दिस का पानी
उन की आबपाशी करता रहेगा। उन का फल लोगों
की ख़ुराक बनेगा, और उन के पत्ते शिफ़ा देंगे।”

इस्राईल की सरहदें

13 फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने फ़रमाया, “मैं तुझे
उस मुल्क की सरहदें बताता हूँ जो बारह क़बीलों में
तक़्सीम करना है। यूसुफ़ को दो हिस्से देने हैं, बाक़ी
क़बीलों को एक एक हिस्सा। 14 मैं ने अपना हाथ

उठा कर क़सम खाई थी कि मैं यह मुल्क तुम्हारे
बापदादा को अता करूँगा, इस लिए तुम यह मुल्क
मीरास में पाओगे। अब उसे आपस में बराबर तक़्सीम
कर लो।

15 शिमाली सरहद बहीरा-ए-रूम से शुरू हो कर
मशरिक़ की तरफ़ हत्लून, लबो-हमात और सिदाद के
पास से गुज़रती है। 16 वहाँ से वह बेरोता और सिब्रैम
के पास पहुँचती है (सिब्रैम मुल्क-ए-दमिश्क़ और
मुल्क-ए-हमात के दरमियान वाक़े है)। फिर सरहद
हसर-एनान शहर तक आगे निकलती है जो हौरान की
सरहद पर वाक़े है। 17 ग़रज़ शिमाली सरहद बहीरा-
ए-रूम से ले कर हसर-एनान तक पहुँचती है। दमिश्क़
और हमात की सरहद्दें उस के शिमाल में हैं।

18 मुल्क की मशरिक़ी सरहद वहाँ शुरू होती है
जहाँ दमिश्क़ का इलाक़ा हौरान के पहाड़ी इलाक़े से
मिलता है। वहाँ से सरहद दरया-ए-यर्दन के साथ साथ
चलती हुई जुनूब में बहीरा-ए-रूम के पास तमर शहर
तक पहुँचती है। यूँ दरया-ए-यर्दन मुल्क-ए-इस्राईल
की मशरिक़ी सरहद और मुल्क-ए-जिलिआद की
मग़रिबी सरहद है।

19 जुनूबी सरहद तमर से शुरू हो कर जुनूब-मग़रिब
की तरफ़ चलती चलती मरीबा-क़ादिस के चश्मों
तक पहुँचती है। फिर वह शिमाल-मग़रिब की तरफ़
रुख़ करके मिस्र की सरहद यानी वादी-ए-मिस्र के
साथ साथ बहीरा-ए-रूम तक पहुँचती है।

20 मग़रिबी सरहद बहीरा-ए-रूम है जो शिमाल में
लबो-हमात के मुक़ाबिल ख़त्म होती है।

21 मुल्क को अपने क़बीलों में तक़्सीम करो! 22 यह
तुम्हारी मौरूसी ज़मीन होगी। जब तुम क़ुरआ डाल
कर उसे आपस में तक़्सीम करो तो उन ग़ैरमुल्कियों
को भी ज़मीन मिलनी है जो तुम्हारे दरमियान रहते
और जिन के बच्चे यहाँ पैदा हुए हैं। तुम्हारा उन के
साथ वैसा सुलूक हो जैसा इस्राईलियों के साथ।
क़ुरआ डालते वक़्त उन्हें इस्राईली क़बीलों के साथ
ज़मीन मिलनी है। 23 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता
है कि जिस क़बीले में भी परदेसी आबाद हों वहाँ
तुम्हें उन्हें मौरूसी ज़मीन देनी है।

क़बीलों में मुल्क की तक़्सीम

48 1–7 इस्राईल की शिमाली सरहद बहीरा-ए-
रूम से शुरू हो कर मशरिक़ की तरफ़
हत्लून, लबो-हमात और हसर-एनान के पास से
गुज़रती है। दमिश्क़ और हमात सरहद के शिमाल में
हैं। हर क़बीले को मुल्क का एक हिस्सा मिलेगा। हर
ख़ित्ते का एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और
दूसरा सिरा मग़रिबी सरहद होगा। शिमाल से ले कर
जुनूब तक क़बाइली इलाक़ों की यह तर्तीब होगी :
दान, आशर, नफ़्ताली, मनस्सी, इफ़्राईम, रूबिन और
यहूदाह।

मुल्क के बीच में मख़्सूस इलाक़ा

8 यहूदाह के जुनूब में वह इलाक़ा होगा जो तुम्हें
मेरे लिए अलग करना है। क़बाइली इलाक़ों की तरह
उस का भी एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और
दूसरा सिरा मग़रिबी सरहद होगा। शिमाल से जुनूब
तक का फ़ासिला साढ़े 12 किलोमीटर है। उस के
बीच में मक़्दिस है।

9 इस इलाक़े के दरमियान एक ख़ास ख़ित्ता होगा।
मशरिक़ से मग़रिब तक उस का फ़ासिला साढ़े
12 किलोमीटर होगा जबकि शिमाल से जुनूब तक
फ़ासिला 10 किलोमीटर होगा। रब के लिए मख़्सूस
इस ख़ित्ते 10 का एक हिस्सा इमामों के लिए मख़्सूस
होगा। इस हिस्से का फ़ासिला मशरिक़ से मग़रिब
तक साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब
तक 5 किलोमीटर होगा। इस के बीच में ही रब
का मक़्दिस होगा। 11 यह मुक़द्दस इलाक़ा लावी के
ख़ानदान सदोक़ के मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किए गए
इमामों को दिया जाएगा। क्यूँकि जब इस्राईली मुझ से
बर्गश्ता हुए तो बाक़ी लावी उन के साथ भटक गए,
लेकिन सदोक़ का ख़ानदान वफ़ादारी से मेरी ख़िदमत
करता रहा। 12 इस लिए उन्हें मेरे लिए मख़्सूस इलाक़े

का मुक़द्दसतरीन हिस्सा मिलेगा। यह लावियों के
ख़ित्ते के शिमाल में होगा। 13 इमामों के जुनूब में बाक़ी
लावियों का ख़ित्ता होगा। मशरिक़ से मग़रिब तक
उस का फ़ासिला साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल
से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा।

14 रब के लिए मख़्सूस यह इलाक़ा पूरे मुल्क का
बेहतरीन हिस्सा है। उस का कोई भी प्लाट किसी
दूसरे के हाथ में देने की इजाज़त नहीं। उसे न बेचा
जाए, न किसी दूसरे को किसी प्लाट के इवज़ में
दिया जाए। क्यूँकि यह इलाक़ा रब के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस है।

15 रब के मक़्दिस के इस ख़ास इलाक़े के जुनूब
में एक और ख़ित्ता होगा जिस की लम्बाई साढ़े 12
किलोमीटर और चौड़ाई अढ़ाई किलोमीटर है। वह
मुक़द्दस नहीं है बल्कि आम लोगों की रिहाइश के
लिए होगा। इस के बीच में शहर होगा, जिस के
इर्दगिर्द चरागाहें होंगी। 16 यह शहर मुरब्बा शक्ल
का होगा। लम्बाई और चौड़ाई दोनों सवा दो दो
किलोमीटर होगी।

17 शहर के चारों तरफ़ जानवरों को चराने की
खुली जगह होगी जिस की चौड़ाई 133 मीटर होगी।
18 चूँकि शहर अपने ख़ित्ते के बीच में होगा इस
लिए मज़कूरा खुली जगह के मशरिक़ में एक ख़ित्ता
बाक़ी रह जाएगा जिस का मशरिक़ से शहर तक
फ़ासिला 5 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक
फ़ासिला अढ़ाई किलोमीटर होगा। शहर के मग़रिब
में भी इतना ही बड़ा ख़ित्ता होगा। इन दो ख़ित्तों में
खेतीबाड़ी की जाएगी जिस की पैदावार शहर में काम
करने वालों की ख़ुराक होगी। 19 शहर में काम करने
वाले तमाम क़बीलों के होंगे। वही इन खेतों की
खेतीबाड़ी करेंगे।

20 चुनाँचे मेरे लिए अलग किया गया यह पूरा
इलाक़ा मुरब्बा शक्ल का है। उस की लम्बाई और
चौड़ाई साढ़े बारह बारह किलोमीटर है। इस में शहर
भी शामिल है।

21–22 मज़कूरा मुक़द्दस ख़ित्ते में मक़्दिस, इमामों
और बाक़ी लावियों की ज़मीनें हैं। उस के मशरिक़
और मग़रिब में बाक़ीमान्दा ज़मीन हुक्मरान की
मिलकियत है। मुक़द्दस ख़ित्ते के मशरिक़ में हुक्मरान
की ज़मीन मुल्क की मशरिक़ी सरहद तक होगी और
मुक़द्दस ख़ित्ते के मग़रिब में वह समुन्दर तक होगी।
शिमाल से जुनूब तक वह मुक़द्दस ख़ित्ते जितनी चौड़ी
यानी साढ़े 12 किलोमीटर होगी। शिमाल में यहूदाह
का क़बाइली इलाक़ा होगा और जुनूब में बिनयमीन
का।

दीगर क़बीलों की ज़मीन

23–27 मुल्क के इस ख़ास दरमियानी हिस्से के जुनूब
में बाक़ी क़बीलों को एक एक इलाक़ा मिलेगा। हर
इलाक़े का एक सिरा मुल्क की मशरिक़ी सरहद और
दूसरा सिरा बहीरा-ए-रूम होगा। शिमाल से ले कर
जुनूब तक क़बाइली इलाक़ों की यह तर्तीब होगी :
बिनयमीन, शमाऊन, इश्कार, ज़बूलून और जद।

28 जद के क़बीले की जुनूबी सरहद मुल्क की
सरहद भी है। वह तमर से जुनूब-मग़रिब में मरीबा-
क़ादिस के चश्मों तक चलती है, फिर मिस्र की सरहद
यानी वादी-ए-मिस्र के साथ साथ शिमाल-मग़रिब का
रुख़ करके बहीरा-ए-रूम तक पहुँचती है।

29 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है कि यही
तुम्हारा मुल्क होगा! उसे इस्राईली क़बीलों में
तक़्सीम करो। जो कुछ भी उन्हें क़ुरआ डाल कर
मिले वह उन की मौरूसी ज़मीन होगी।

यरूशलम के दरवाज़े

30–34 यरूशलम शहर के 12 दरवाज़े होंगे। फ़सील
की चारों दीवारें सवा दो दो किलोमीटर लम्बी होंगी।
हर दीवार के तीन दरवाज़े होंगे, ग़रज़ कुल बारह
दरवाज़े होंगे। हर एक का नाम किसी क़बीले का नाम
होगा। चुनाँचे शिमाल में रूबिन का दरवाज़ा, यहूदाह
का दरवाज़ा और लावी का दरवाज़ा होगा, मशरिक़
में यूसुफ़ का दरवाज़ा, बिनयमीन का दरवाज़ा और

दान का दरवाज़ा होगा, जुनूब में शमाऊन का
दरवाज़ा, इश्कार का दरवाज़ा और ज़बूलून का
दरवाज़ा होगा, और मग़रिब में जद का दरवाज़ा,
आशर का दरवाज़ा और नफ़्ताली का दरवाज़ा होगा।
35 फ़सील की पूरी लम्बाई 9 किलोमीटर है।
तब शहर 'यहाँ रब है' कहलाएगा।!"

दान्याल

दान्याल और उस के दोस्त
शाह-ए-बाबल के दरबार में

1 1 शाह-ए-यहूदाह यहूयक़ीम की सल्तनत के
तीसरे साल में शाह-ए-बाबल नबूकद्नज़्ज़र ने
यरूशलम आ कर उस का मुहासरा किया। 2 उस
वक़्त रब ने यहूयक़ीम और अल्लाह के घर का
काफ़ी सामान नबूकद्नज़्ज़र के हवाले कर दिया।
नबूकद्नज़्ज़र ने यह चीज़ें मुल्क-ए-बाबल में ले जा
कर अपने देवता के मन्दिर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ कर
दीं।

3 फिर उस ने अपने दरबार के आला अफ़्सर
अश्पनाज़ को हुक्म दिया, "यहूदाह के शाही ख़ानदान
और ऊँचे तब्क़े के ख़ानदानों की तफ़्तीश करो। उन
में से कुछ ऐसे नौजवानों को चुन कर ले आओ
4 जो बेऐब, ख़ूबसूरत, हिक्मत के हर लिहाज़ से
समझदार, तालीमयाफ़्ता और समझने में तेज़ हों।
ग़रज़ यह आदमी शाही महल में ख़िदमत करने के
क़ाबिल हों। उन्हें बाबल की ज़बान लिखने और
बोलने की तालीम दो।" 5 बादशाह ने मुक़र्रर किया
कि रोज़ाना उन्हें शाही बावर्चीख़ाने से कितना खाना
और मै मिलनी है। तीन साल की तर्बियत के बाद
उन्हें बादशाह की ख़िदमत के लिए हाज़िर होना था।

6 जब इन नौजवानों को चुना गया तो चार आदमी
उन में शामिल थे जिन के नाम दान्याल, हननियाह,
मीसाएल और अज़रियाह थे। 7 दरबार के आला
अफ़्सर ने उन के नए नाम रखे। दान्याल बेल्तशज़्ज़र
में बदल गया, हननियाह सद्रक में, मीसाएल मीसक
में और अज़रियाह अबद्नजू में।

8 लेकिन दान्याल ने मुसम्मम इरादा कर लिया कि
मैं अपने आप को शाही खाना खाने और शाही मै
पीने से नापाक नहीं करूँगा। उस ने दरबार के आला
अफ़्सर से इन चीज़ों से पर्हेज़ करने की इजाज़त
माँगी। 9 अल्लाह ने पहले से इस अफ़्सर का दिल
नर्म कर दिया था, इस लिए वह दान्याल का ख़ास
लिहाज़ करता और उस पर मेहरबानी करता था।
10 लेकिन दान्याल की दरख़्वास्त सुन कर उस ने
जवाब दिया, "मुझे अपने आक़ा बादशाह से डर है।
उन ही ने मुतअय्यिन किया कि तुम्हें क्या क्या खाना
और पीना है। अगर उन्हें पता चले कि तुम दूसरे
नौजवानों की निस्बत दुबले-पतले और कमज़ोर लगे
तो वह मेरा सर क़लम करेंगे।" 11 तब दान्याल ने उस
निगरान से बात की जिसे दरबार के आला अफ़्सर
ने दान्याल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह पर
मुक़र्रर किया था। वह बोला, 12 "ज़रा दस दिन तक
अपने ख़ादिमों को आज़माएँ। इतने में हमें खाने के
लिए सिर्फ़ साग-पात और पीने के लिए पानी दीजिए।
13 इस के बाद हमारी सूरत का मुक़ाबला उन दीगर
नौजवानों के साथ करें जो शाही खाना खाते हैं। फिर
ही फ़ैसला करें कि आइन्दा अपने ख़ादिमों के साथ
कैसा सुलूक करेंगे।"

14 निगरान मान गया। दस दिन तक वह उन्हें साग-
पात खिला कर और पानी पिला कर आज़माता रहा।
15 दस दिन के बाद क्या देखता है कि दान्याल और
उस के तीन दोस्त शाही खाना खाने वाले दीगर
नौजवानों की निस्बत कहीं ज़्यादा सेहतमन्द और
मोटे-ताज़े लग रहे हैं। 16 तब निगरान उन के लिए
मुक़र्ररा शाही खाने और मै का इन्तिज़ाम बन्द करके
उन्हें सिर्फ़ साग-पात खिलाने लगा। 17 अल्लाह ने इन
चार आदमियों को अदब और हिक्मत के हर शोबे में
इल्म और समझ अता की। नीज़, दान्याल हर क़िस्म
की रोया और ख़्वाब की ताबीर कर सकता था।

18 मुक़र्ररा तीन साल के बाद दरबार के आला
अफ़्सर ने तमाम नौजवानों को नबूकद्नज़्ज़र के

सामने पेश किया। 19 जब बादशाह ने उन से गुफ़्तगु
की तो मालूम हुआ कि दान्याल, हननियाह, मीसाएल
और अज़रियाह दूसरों पर सब्क़त रखते हैं। चुनाँचे
चारों बादशाह के मुलाज़िम बन गए। 20 जब भी किसी
मुआमले में ख़ास हिक्मत और समझ दरकार होती
तो बादशाह ने देखा कि यह चार नौजवान मश्वरा देने
में पूरी सल्तनत के तमाम क़िस्मत का हाल बताने
वालों और जादूगरों से दस गुना ज़्यादा क़ाबिल हैं।
21 दान्याल ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल तक
शाही दरबार में ख़िदमत करता रहा।

नबूकद्नज़्ज़र का ख़्वाब

2 1 अपनी हुकूमत के दूसरे साल में नबूकद्नज़्ज़र
ने ख़्वाब देखा। ख़्वाब इतना हौलनाक था
कि वह घबरा कर जाग उठा। 2 उस ने हुक्म दिया
कि तमाम क़िस्मत का हाल बताने वाले, जादूगर,
अफ़्सूँगर और नजूमी मेरे पास आ कर ख़्वाब का
मतलब बताएँ। जब वह हाज़िर हुए 3 तो बादशाह
बोला, "मैं ने एक ख़्वाब देखा है जो मुझे बहुत परेशान
कर रहा है। अब मैं उस का मतलब जानना चाहता
हूँ।"
4 नुजूमियों ने अरामी ज़बान में जवाब दिया,
"बादशाह सलामत अपने ख़ादिमों के सामने यह
ख़्वाब बयान करें तो हम उस की ताबीर करेंगे।"
5 लेकिन बादशाह बोला, "नहीं, तुम ही मुझे वह
कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैं ने ख़्वाब
में देखा। अगर तुम यह न कर सको तो मैं हुक्म दूँगा
कि तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और तुम्हारे घर
कचरे के ढेर हो जाएँ। यह मेरा मुसम्मम इरादा है।
6 लेकिन अगर तुम मुझे वह कुछ बता कर उस की
ताबीर करो जो मैं ने ख़्वाब में देखा तो मैं तुम्हें अच्छे
तुह्फ़े और इनआम दूँगा, नीज़ तुम्हारी ख़ास इज़्ज़त
करूँगा। अब शुरू करो! मुझे वह कुछ बताओ और
उस की ताबीर करो जो मैं ने ख़्वाब में देखा।"
7 एक बार फिर उन्हों ने मिन्नत की, "बादशाह अपने
ख़ादिमों के सामने अपना ख़्वाब बताएँ तो हम ज़रूर
उस की ताबीर करेंगे।"
8 बादशाह ने जवाब दिया, "मुझे साफ़ पता है कि
तुम क्या कर रहे हो! तुम सिर्फ़ टाल-मटोल कर रहे
हो, क्यूँकि तुम समझ गए हो कि मेरा इरादा पक्का है।
9 अगर तुम मुझे ख़्वाब न बताओ तो तुम सब को एक
ही सज़ा दी जाएगी। क्यूँकि तुम सब झूट और ग़लत
बातें पेश करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हो, यह उम्मीद
रखते हुए कि हालात किसी वक़्त बदल जाएंगे। मुझे
ख़्वाब बताओ तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम मुझे
उस की सहीह ताबीर पेश कर सकते हो।"
10 नुजूमियों ने एतिराज़ किया, "दुनिया में कोई भी
इन्सान वह कुछ नहीं कर पाता जो बादशाह माँगते
हैं। यह कभी हुआ भी नहीं कि किसी बादशाह ने ऐसी
बात किसी क़िस्मत का हाल बताने वाले, जादूगर या
नजूमी से तलब की, ख़्वाह बादशाह कितना अज़ीम
क्यूँ न था। 11 जिस चीज़ का तक़ाज़ा बादशाह करते
हैं वह हद से ज़्यादा मुश्किल है। सिर्फ़ देवता ही यह
बात बादशाह पर ज़ाहिर कर सकते हैं, लेकिन वह
तो इन्सान के दरमियान रहते नहीं।"
12 यह सुन कर बादशाह आग-बगूला हो गया। बड़े
ग़ुस्से में उस ने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम
दानिशमन्दों को सज़ा-ए-मौत दी जाए। 13 फ़रमान
सादिर हुआ कि दानिशमन्दों को मार डालना है।
चुनाँचे दान्याल और उस के दोस्तों को भी तलाश
किया गया ताकि उन्हें सज़ा-ए-मौत दें।
14 शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़्सर बनाम अर्यूक अभी
दानिशमन्दों को मार डालने के लिए रवाना हुआ
कि दान्याल बड़ी हिक्मत और मौक़ाशनासी से
उस से मुख़ातिब हुआ। 15 उस ने अफ़्सर से पूछा,
"बादशाह ने इतना सख़्त फ़रमान क्यूँ जारी किया?"
अर्यूक ने दान्याल को सारा मुआमला बयान किया।
16 दान्याल फ़ौरन बादशाह के पास गया और उस
से दरख़्वास्त की, "ज़रा मुझे कुछ मुहलत दीजिए
ताकि मैं बादशाह के ख़्वाब की ताबीर कर सकूँ।"

17 फिर वह अपने घर वापस गया और अपने दोस्तों
हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह को तमाम सूरत-
ए-हाल सुनाई। 18 वह बोला, “आसमान के ख़ुदा
से इल्तिजा करें कि वह मुझ पर रहम करे। मिन्नत
करें कि वह मेरे लिए भेद खोले ताकि हम दीगर
दानिशमन्दों के साथ हलाक न हो जाएँ।”

19 रात के वक़्त दान्याल ने रोया देखी जिस में उस
के लिए भेद खोला गया। तब उस ने आसमान के
ख़ुदा की हम्द-ओ-सना की,

20 “अल्लाह के नाम की तम्जीद अज़ल से अबद तक
हो। वही हिक्मत और क़ुव्वत का मालिक है। 21 वही
औक़ात और ज़माने बदलने देता है। वही बादशाहों
को तख़्त पर बिठा देता और उन्हें तख़्त पर से उतार
देता है। वही दानिशमन्दों को दानाई और समझदारों
को समझ अता करता है। 22 वही गहरी और पोशीदा
बातें ज़ाहिर करता है। जो कुछ अंधेरे में छुपा रहता
है उस का इल्म वह रखता है, क्यूँकि वह रौशनी
से घिरा रहता है। 23 ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा, मैं तेरी
हम्द-ओ-सना करता हूँ! तू ने मुझे हिक्मत और ताक़त
अता की है। जो बात हम ने तुझ से माँगी वह तू ने
हम पर ज़ाहिर की, क्यूँकि तू ने हम पर बादशाह का
ख़्वाब ज़ाहिर किया है।”

24 फिर दान्याल अर्यूक के पास गया जिसे बादशाह
ने बाबल के दानिशमन्दों को सज़ा-ए-मौत देने की
ज़िम्मादारी दी थी। उस ने उस से दरख़्वास्त की,
“बाबल के दानिशमन्दों को मौत के घाट न उतारें,
क्यूँकि मैं बादशाह के ख़्वाब की ताबीर कर सकता
हूँ। मुझे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा दें तो मैं उन्हें सब
कुछ बता दूँगा।”

25 यह सुन कर अर्यूक भाग कर दान्याल को
बादशाह के हुज़ूर ले गया। वह बोला, “मुझे यहूदाह
के जिलावतनों में से एक आदमी मिल गया जो
बादशाह को ख़्वाब का मतलब बता सकता है।”
26 तब नबूकद्नज़्ज़र ने दान्याल से जो बेल्तशज़्ज़र
कहलाता था पूछा, “क्या तुम मुझे वह कुछ बता
सकते हो जो मैं ने ख़्वाब में देखा? क्या तुम उस की
ताबीर कर सकते हो?”

27 दान्याल ने जवाब दिया, “जो भेद बादशाह
जानना चाहते हैं उसे खोलने की कुंजी किसी भी
दानिशमन्द, जादूगर, क़िस्मत का हाल बताने वाले
या ग़ैबदान के पास नहीं होती। 28 लेकिन आसमान
पर एक ख़ुदा है जो भेदों का मतलब इन्सान पर
ज़ाहिर कर देता है। उसी ने नबूकद्नज़्ज़र बादशाह
को दिखाया कि आने वाले दिनों में क्या कुछ पेश
आएगा। सोते वक़्त आप ने ख़्वाब में रोया देखी।
29 ऐ बादशाह, जब आप पलंग पर लेटे हुए थे तो
आप के ज़हन में आने वाले दिनों के बारे में ख़यालात
उभर आए। तब भेदों को खोलने वाले ख़ुदा ने आप
पर ज़ाहिर किया कि आने वाले दिनों में क्या कुछ
पेश आएगा। 30 इस भेद का मतलब मुझ पर ज़ाहिर
हुआ है, लेकिन इस लिए नहीं कि मुझे दीगर तमाम
दानिशमन्दों से ज़्यादा हिक्मत हासिल है बल्कि इस
लिए कि आप को भेद का मतलब मालूम हो जाए
और आप समझ सकें कि आप के ज़हन में क्या कुछ
उभर आया है।

31 ऐ बादशाह, रोया में आप ने अपने सामने एक
बड़ा और लम्बा-तड़ंगा मुजस्समा देखा जो तेज़ी से
चमक रहा था। शक्ल-ओ-सूरत ऐसी थी कि इन्सान
के रोंगटे खड़े हो जाते थे। 32 सर ख़ालिस सोने का था
जबकि सीना और बाज़ू चाँदी के, पेट और रान पीतल
की 33 और पिंडलियाँ लोहे की थीं। उस के पाँओ
का आधा हिस्सा लोहा और आधा हिस्सा पकी हुई
मिट्टी था। 34 आप इस मन्ज़र पर ग़ौर ही कर रहे थे
कि अचानक किसी पहाड़ी ढलान से पत्थर का बड़ा
टुकड़ा अलग हुआ। यह बग़ैर किसी इन्सानी हाथ के
हुआ। पत्थर धड़ाम से मुजस्समे के लोहे और मिट्टी
के पाँओ पर गिर कर दोनों को चूर चूर कर दिया।
35 नतीजे में पूरा मुजस्समा पाश पाश हो गया। जितना
भी लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना था वह उस
भूसे की मानिन्द बन गया जो गाहते वक़्त बाक़ी रह
जाता है। हवा ने सब कुछ यूँ उड़ा दिया कि इन चीज़ों

का नाम-ओ-निशान तक न रहा। लेकिन जिस पत्थर
ने मुजस्समे को गिरा दिया वह ज़बरदस्त पहाड़ बन
कर इतना बढ़ गया कि पूरी दुनिया उस से भर गई।
36 यही बादशाह का ख़्वाब था। अब हम बादशाह
को ख़्वाब का मतलब बताते हैं। 37 ऐ बादशाह, आप
शहन्शाह हैं। आसमान के ख़ुदा ने आप को सल्तनत,
क़ुव्वत, ताक़त और इज़्ज़त से नवाज़ा है। 38 उस ने
इन्सान को जंगली जानवरों और परिन्दों समेत आप
ही के हवाले कर दिया है। जहाँ भी वह बसते हैं उस ने
आप को ही उन पर मुक़र्रर किया है। आप ही मज़कूरा
सोने का सर हैं। 39 आप के बाद एक और सल्तनत
क़ाइम हो जाएगी, लेकिन उस की ताक़त आप की
सल्तनत से कम होगी। फिर पीतल की एक तीसरी
सल्तनत वुजूद में आएगी जो पूरी दुनिया पर हुकूमत
करेगी। 40 आख़िर में एक चौथी सल्तनत आएगी जो
लोहे जैसी ताक़तवर होगी। जिस तरह लोहा सब कुछ
तोड़ कर पाश पाश कर देता है उसी तरह वह दीगर
सब को तोड़ कर पाश पाश करेगी। 41 आप ने देखा
कि मुजस्समे के पाँओ और उंगलियों में कुछ लोहा
और कुछ पकी हुई मिट्टी थी। इस का मतलब है, इस
सल्तनत के दो अलग हिस्से होंगे। लेकिन जिस तरह
ख़्वाब में मिट्टी के साथ लोहा मिलाया गया था उसी
तरह चौथी सल्तनत में लोहे की कुछ न कुछ ताक़त
होगी। 42 ख़्वाब में पाँओ की उंगलियों में कुछ लोहा
भी था और कुछ मिट्टी भी। इस का मतलब है, चौथी
सल्तनत का एक हिस्सा ताक़तवर और दूसरा नाज़ुक
होगा। 43 लोहे और मिट्टी की मिलावट का मतलब है
कि गो लोग आपस में शादी करने से एक दूसरे के
साथ मुत्तहिद होने की कोशिश करेंगे तो भी वह एक
दूसरे से पैवस्त नहीं रहेंगे, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह लोहा मिट्टी के साथ पैवस्त नहीं रह सकता।
44 जब यह बादशाह हुकूमत करेंगे, उन ही दिनों में
आसमान का ख़ुदा एक बादशाही क़ाइम करेगा जो
न कभी तबाह होगी, न किसी दूसरी क़ौम के हाथ
में आएगी। यह बादशाही इन दीगर तमाम सल्तनतों
को पाश पाश करके ख़त्म करेगी, लेकिन ख़ुद अबद
तक क़ाइम रहेगी। 45 यही ख़्वाब में उस पत्थर का
मतलब है जिस ने बग़ैर किसी इन्सानी हाथ के पहाड़ी
ढलान से अलग हो कर मुजस्समे के लोहे, पीतल,
मिट्टी, चाँदी और सोने को पाश पाश कर दिया। इस
तरीक़े से अज़ीम ख़ुदा ने बादशाह पर ज़ाहिर किया है
कि मुस्तक़बिल में क्या कुछ पेश आएगा। यह ख़्वाब
क़ाबिल-ए-एतिमाद और उस की ताबीर सहीह है।”
46 यह सुन कर नबूकद्नज़्ज़र बादशाह ने औंधे मुँह
हो कर दान्याल को सिज्दा किया और हुक्म दिया कि
दान्याल को ग़ल्ला और बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश की
जाएँ। 47 दान्याल से उस ने कहा, “यक़ीनन, तुम्हारा
ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा और बादशाहों का मालिक
है। वह वाक़ई भेदों को खोलता है, वर्ना तुम यह भेद
मेरे लिए खोल न पाते।” 48 नबूकद्नज़्ज़र ने दान्याल
को बड़ा उहदा और मुतअद्दिद बेशक़ीमत तुहफ़े दिए।
उस ने उसे पूरे सूबा बाबल का गवर्नर बना दिया।
साथ साथ दान्याल बाबल के तमाम दानिशमन्दों पर
मुक़र्रर हुआ। 49 उस की गुज़ारिश पर बादशाह ने
सद्रक, मीसक और अबद्नजू को सूबा बाबल की
इन्तिज़ामिया पर मुक़र्रर किया। दान्याल ख़ुद शाही
दरबार में हाज़िर रहता था।

सोने के बुत की पूजा करने का हुक्म

3 1 एक दिन नबूकद्नज़्ज़र ने सोने का मुजस्समा
बनवाया। उस की ऊँचाई 90 फ़ुट और चौड़ाई
9 फ़ुट थी। उस ने हुक्म दिया कि बुत को सूबा बाबल
के मैदान बनाम दूरा में खड़ा किया जाए। 2 फिर
उस ने तमाम सूबेदारों, गवर्नरों, मुन्तज़िमों, मुशीरों,
ख़ज़ानचियों, जजों, मजिस्ट्रेटों, और सूबों के दीगर
तमाम बड़े बड़े सरकारी मुलाज़िमों को पैग़ाम भेजा
कि मुजस्समे की मख़्सूसियत के लिए आ कर जमा
हो जाओ। 3 चुनाँचे सब बुत की मख़्सूसियत के लिए
जमा हो गए। जब सब उस के सामने खड़े थे 4 तो
शाही नक़ीब ने बुलन्द आवाज़ से एलान किया,
“ऐ मुख़्तलिफ़ क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के
लोगो, सुनो! बादशाह फ़रमाता है, 5 ‘जूँ ही नरसिंगा,

शहनाई, सन्तूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम
साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह हो कर
बादशाह के खड़े किए गए सोने के बुत को सिज्दा
करें। 6 जो भी सिज्दा न करे उसे फ़ौरन भड़कती भट्टी
में फैंका जाएगा'।"
7 चुनाँचे जूँ ही साज़ बजने लगे तो मुख़्तलिफ़ क़ौमों,
उम्मतों और ज़बानों के तमाम लोग मुँह के बल हो
कर नबूकद्नज़्ज़र के खड़े किए गए बुत को सिज्दा
करने लगे।
8 उस वक़्त कुछ नजूमी बादशाह के पास आ
कर यहूदियों पर इल्ज़ाम लगाने लगे। 9 वह बोले,
"बादशाह सलामत अबद तक जीते रहें! 10 ऐ
बादशाह, आप ने फ़रमाया, 'जूँ ही नरसिंगा, शहनाई,
सन्तूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे
तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह हो कर बादशाह के
खड़े किए गए इस सोने के बुत को सिज्दा करें। 11 जो
भी सिज्दा न करे उसे भड़कती भट्टी में फैंका जाएगा'
12 लेकिन कुछ यहूदी आदमी हैं जो आप की पर्वा
ही नहीं करते, हालाँकि आप ने उन्हें सूबा बाबल की
इन्तिज़ामिया पर मुक़र्रर किया था। यह आदमी बनाम
सद्रक, मीसक और अबद्नजू न आप के देवताओं
की पूजा करते, न सोने के उस बुत की परस्तिश करते
हैं जो आप ने खड़ा किया है।"
13 यह सुन कर नबूकद्नज़्ज़र आपे से बाहर हो
गया। उस ने सीधा सद्रक, मीसक और अबद्नजू
को बुलाया। जब पहुँचे 14 तो बोला, "ऐ सद्रक,
मीसक और अबद्नजू, क्या यह सहीह है कि न
तुम मेरे देवताओं की पूजा करते, न मेरे खड़े किए
गए मुजस्समे की परस्तिश करते हो? 15 मैं तुम्हें एक
आख़िरी मौक़ा देता हूँ। साज़ दुबारा बजेंगे तो तुम्हें
मुँह के बल हो कर मेरे बनवाए हुए मुजस्समे को
सिज्दा करना है। अगर तुम ऐसा न करो तो तुम्हें
सीधा भड़कती भट्टी में फैंका जाएगा। तब कौन सा
ख़ुदा तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?"
16 सद्रक, मीसक और अबद्नजू ने जवाब दिया,
"ऐ नबूकद्नज़्ज़र, इस मुआमले में हमें अपना दिफ़ा
करने की ज़रूरत नहीं है। 17 जिस ख़ुदा की ख़िदमत
हम करते हैं वह हमें बचा सकता है, ख़्वाह हमें
भड़कती भट्टी में क्यूँ न फैंका जाए। ऐ बादशाह, वह
हमें ज़रूर आप के हाथ से बचाएगा। 18 लेकिन अगर
वह हमें न भी बचाए तो भी आप को मालूम हो कि
न हम आप के देवताओं की पूजा करेंगे, न आप के
खड़े किए गए सोने के मुजस्समे की परस्तिश करेंगे।"
19 यह सुन कर नबूकद्नज़्ज़र आग-बगूला हो गया।
सद्रक, मीसक और अबद्नजू के सामने उस का
चिहरा बिगड़ गया और उस ने हुक्म दिया कि भट्टी
को मामूल की निस्बत सात गुना ज़्यादा गर्म किया
जाए। 20 फिर उस ने कहा कि बेहतरीन फ़ौजियों में
से चन्द एक सद्रक, मीसक और अबद्नजू को बांध
कर भड़कती भट्टी में फैंक दें। 21 तीनों को बांध कर
भड़कती भट्टी में फैंका गया। उन के चोग़े, पाजामे
और टोपियाँ उतारी न गईं। 22 चूँकि बादशाह ने भट्टी
को गर्म करने पर ख़ास ज़ोर दिया था इस लिए आग
इतनी तेज़ हुई कि जो फ़ौजी सद्रक, मीसक और
अबद्नजू को ले कर भट्टी के मुँह तक चढ़ गए वह
फ़ौरन नज़र-ए-आतिश हो गए। 23 उन के क़ैदी बंधी
हुई हालत में शोलाज़न आग में गिर गए।
24 अचानक नबूकद्नज़्ज़र बादशाह चौंक उठा।
उस ने उछल कर अपने मुशीरों से पूछा, "हम ने तो
तीन आदमियों को बांध कर भट्टी में फैंकवाया कि
नहीं?" उन्हों ने जवाब दिया, "जी, ऐ बादशाह।"
25 वह बोला, "तो फिर यह क्या है? मुझे चार आदमी
आग में इधर उधर फिरते हुए नज़र आ रहे हैं। न
वह बंधे हुए हैं, न उन्हें नुक़्सान पहुँच रहा है। चौथा
आदमी देवताओं का बेटा सा लग रहा है।"
26 नबूकद्नज़्ज़र जलती हुई भट्टी के मुँह के क़रीब
गया और पुकारा, "ऐ सद्रक, मीसक और अबद्नजू,
ऐ अल्लाह तआला के बन्दो, निकल आओ! इधर
आओ।" तब सद्रक, मीसक और अबद्नजू आग
से निकल आए। 27 सूबेदार, गवर्नर, मुन्तज़िम और
शाही मुशीर उन के गिर्द जमा हुए तो देखा कि आग
ने उन के जिस्मों को नुक़्सान नहीं पहुँचाया। बालों

में से एक भी झुलस नहीं गया था, न उन के लिबास
आग से मुतअस्सिर हुए थे। आग और धुएँ की बू
तक नहीं थी।

28 तब नबूकद्नज़्ज़र बोला, “सद्रक, मीसक और
अबद्नजू के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस ने अपने
फ़रिश्ते को भेज कर अपने बन्दों को बचाया। उन्हों
ने उस पर भरोसा रख कर बादशाह के हुक्म की
नाफ़रमानी की। अपने ख़ुदा के सिवा किसी और की
ख़िदमत या परस्तिश करने से पहले वह अपनी जान
को देने के लिए तय्यार थे। 29 चुनाँचे मेरा हुक्म सुनो!
सद्रक, मीसक और अबद्नजू के ख़ुदा के ख़िलाफ़
कुफ़्र बकना तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के
अफ़राद के लिए सख़्त मना है। जो भी ऐसा करे उसे
टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा और उस के घर को
कचरे का ढेर बनाया जाएगा। क्यूँकि कोई भी देवता
इस तरह नहीं बचा सकता।” 30 फिर बादशाह ने तीनों
आदमियों को सूबा बाबल में सरफ़राज़ किया।

नबूकद्नज़्ज़र के दूसरे ख़्वाब की ताबीर

4 1 नबूकद्नज़्ज़र दुनिया की तमाम क़ौमों, उम्मतों
और ज़बानों के अफ़राद को ज़ैल का पैग़ाम
भेजता है,

सब की सलामती हो! 2 मैं ने सब को उन इलाही
निशानात और मोजिज़ात से आगाह करने का फ़ैसला
किया है जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए किए हैं। 3 उस
के निशान कितने अज़ीम, उस के मोजिज़ात कितने
ज़बरदस्त हैं! उस की बादशाही अबदी है, उस की
सल्तनत नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहती है।

4 मैं, नबूकद्नज़्ज़र ख़ुशी और सुकून से अपने महल
में रहता था। 5 लेकिन एक दिन मैं एक ख़्वाब देख
कर बहुत घबरा गया। मैं पलंग पर लेटा हुआ था
कि इतनी हौलनाक बातें और रोयाएँ मेरे सामने से
गुज़रीं कि मैं डर गया। 6 तब मैं ने हुक्म दिया कि
बाबल के तमाम दानिशमन्द मेरे पास आएँ ताकि मेरे
लिए ख़्वाब की ताबीर करें। 7 क़िस्मत का हाल बताने
वाले, जादूगर, नजूमी और ग़ैबदान पहुँचे तो मैं ने
उन्हें अपना ख़्वाब बयान किया, लेकिन वह उस की
ताबीर करने में नाकाम रहे।

8 आख़िरकार दान्याल मेरे हुज़ूर आया जिस का
नाम बेल्तशज़्ज़र रखा गया है (मेरे देवता का नाम
बेल है)। दान्याल में मुक़द्दस देवताओं की रूह है।
उसे भी मैं ने अपना ख़्वाब सुनाया। 9 मैं बोला, “ऐ
बेल्तशज़्ज़र, तुम जादूगरों के सरदार हो, और मैं
जानता हूँ कि मुक़द्दस देवताओं की रूह तुम में है।
कोई भी भेद तुम्हारे लिए इतना मुश्किल नहीं है कि
तुम उसे खोल न सको। अब मेरा ख़्वाब सुन कर उस
की ताबीर करो!

10 पलंग पर लेटे हुए मैं ने रोया में देखा कि दुनिया
के बीच में निहायत लम्बा सा दरख़्त लगा है।
11 यह दरख़्त इतना ऊँचा और तनावर होता गया
कि आख़िरकार उस की चोटी आसमान तक पहुँच
गई और वह दुनिया की इन्तिहा तक नज़र आया।
12 उस के पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत फल लाता
था। उस के साय में जंगली जानवर पनाह लेते, उस
की शाख़ों में परिन्दे बसेरा करते थे। हर इन्सान-ओ-
हैवान को उस से ख़ुराक मिलती थी।

13 मैं अभी दरख़्त को देख रहा था कि एक मुक़द्दस
फ़रिश्ता आसमान से उतर आया। 14 उस ने बड़े ज़ोर
से आवाज़ दी, ‘दरख़्त को काट डालो! उस की शाख़ें
तोड़ दो, उस के पत्ते झाड़ दो, उस का फल बिखेर
दो! जानवर उस के साय में से निकल कर भाग जाएँ,
परिन्दे उस की शाख़ों से उड़ जाएँ। 15 लेकिन उस
का मुढ जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और
पीतल की ज़न्जीरों में जकड़ कर खुले मैदान की घास
में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे,
और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उस को
नसीब हो। 16 सात साल तक उस का इन्सानी दिल
जानवर के दिल में बदल जाए। 17 क्यूँकि मुक़द्दस
फ़रिश्तों ने फ़त्वा दिया है कि ऐसा ही हो ताकि
इन्सान जान ले कि अल्लाह तआला का इख़तियार
इन्सानी सल्तनतों पर है। वह अपनी ही मर्ज़ी से लोगों

को उन पर मुक़र्रर करता है, ख़्वाह वह कितने ज़लील
क्यूँ न हों।'
18 मैं, नबूकद्नज़्ज़र ने ख़्वाब में यह कुछ देखा। ऐ
बेल्तशज़्ज़र, अब मुझे इस की ताबीर पेश करो। मेरी
सल्तनत के तमाम दानिशमन्द इस में नाकाम रहे हैं।
लेकिन तुम यह कर पाओगे, क्यूँकि तुम में मुक़द्दस
देवताओं की रूह है।"
19 तब बेल्तशज़्ज़र यानी दान्याल के रोंगटे खड़े हो
गए, और जो ख़यालात उभर आए उन से उस पर
काफ़ी देर तक सख़्त दहशत तारी रही। आख़िरकार
बादशाह बोला, "ऐ बेल्तशज़्ज़र, ख़्वाब और उस का
मतलब तुझे इतना दहशतज़दा न करे।" बीलतशज़र
ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, काश ख़्वाब की बातें
आप के दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों को पेश आएँ!
20 आप ने एक दरख़्त देखा जो इतना ऊँचा और
तनावर हो गया कि उस की चोटी आसमान तक
पहुँची और वह पूरी दुनिया को नज़र आया। 21 उस
के पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत सा फल लाता
था। उस के साय में जंगली जानवर पनाह लेते, उस
की शाख़ों में परिन्दे बसेरा करते थे। हर इन्सान-ओ-
हैवान को उस से ख़ुराक मिलती थी।
22 ऐ बादशाह, आप ही यह दरख़्त हैं! आप ही बड़े
और ताक़तवर हो गए हैं बल्कि आप की अज़मत
बढ़ते बढ़ते आसमान से बातें करने लगी, आप की
सल्तनत दुनिया की इन्तिहा तक फैल गई है। 23 ऐ
बादशाह, इस के बाद आप ने एक मुक़द्दस फ़रिश्ते
को देखा जो आसमान से उतर कर बोला, दरख़्त को
काट डालो! उसे तबाह करो, लेकिन उस का मुढ
जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल
की ज़न्जीरों में जकड़ कर खुले मैदान की घास में
छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे, और
जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उस को नसीब
हो। सात साल यूँ ही गुज़र जाएँ।
24 ऐ बादशाह, इस का मतलब यह है, अल्लाह
तआला ने मेरे आक़ा बादशाह के बारे में फ़ैसला
किया है 25 कि आप को इन्सानी संगत से निकाल कर
भगाया जाएगा। तब आप जंगली जानवरों के साथ
रह कर बैलों की तरह घास चरेंगे और आसमान की
ओस से तर हो जाएंगे। सात साल यूँ ही गुज़रेंगे। फिर
आख़िरकार आप इक़्रार करेंगे कि अल्लाह तआला
का इन्सानी सल्तनतों पर इख़तियार है, वह अपनी
ही मर्ज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।
26 लेकिन ख़्वाब में यह भी कहा गया कि दरख़्त
के मुढ को जड़ों समेत ज़मीन में छोड़ा जाए। इस
का मतलब है कि आप की सल्तनत ताहम क़ाइम
रहेगी। जब आप एतिराफ़ करेंगे कि तमाम इख़तियार
आसमान के हाथ में है तो आप को सल्तनत वापस
मिलेगी। 27 ऐ बादशाह, अब मेहरबानी से मेरा मश्वरा
क़बूल फ़रमाएँ। इन्साफ़ करके और मज़्लूमों पर
करम फ़रमा कर अपने गुनाहों को दूर करें। शायद
ऐसा करने से आप की ख़ुशहाली क़ाइम रहे।"
28 दान्याल की हर बात नबूकद्नज़्ज़र को पेश
आई। 29 बारह महीने के बाद बादशाह बाबल में
अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था। 30 तब
वह कहने लगा, "लो, यह अज़ीम शहर देखो जो मैं
ने अपनी रिहाइश के लिए तामीर किया है! यह सब
कुछ मैं ने अपनी ही ज़बरदस्त क़ुव्वत से बना लिया
है ताकि मेरी शान-ओ-शौकत मज़ीद बढ़ती जाए।"
31 बादशाह यह बात बोल ही रहा था कि आसमान
से आवाज़ सुनाई दी, "ऐ नबूकद्नज़्ज़र बादशाह,
सुन! सल्तनत तुझ से छीन ली गई है। 32 तुझे इन्सानी
संगत से निकाल कर भगाया जाएगा, और तू जंगली
जानवरों के साथ रह कर बैल की तरह घास चरेगा।
सात साल यूँ ही गुज़र जाएंगे। फिर आख़िरकार
तू इक़्रार करेगा कि अल्लाह तआला का इन्सानी
सल्तनतों पर इख़तियार है, वह अपनी ही मर्ज़ी से
लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।"
33 जूँ ही आवाज़ बन्द हुई तो ऐसा ही हुआ।
नबूकद्नज़्ज़र को इन्सानी संगत से निकाल कर
भगाया गया, और वह बैलों की तरह घास चरने
लगा। उस का जिस्म आसमान की ओस से तर
होता रहा। होते होते उस के बाल उक़ाब के परों

जितने लम्बे और उस के नाख़ुन परिन्दे के चंगुल की
मानिन्द हुए। 34 लेकिन सात साल गुज़रने के बाद मैं,
नबूकद्नज़्ज़र अपनी आँखों को आसमान की तरफ़
उठा कर दुबारा होश में आया। तब मैं ने अल्लाह
तआला की तम्जीद की, मैं ने उस की हम्द-ओ-सना
की जो हमेशा तक ज़िन्दा है। उस की हुकूमत अबदी
है, उस की सल्तनत नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहती है।
35 उस की निस्बत दुनिया के तमाम बाशिन्दे सिफ़र
के बराबर हैं। वह आसमानी फ़ौज और दुनिया के
बाशिन्दों के साथ जो जी चाहे करता है। उसे कुछ
करने से कोई नहीं रोक सकता, कोई उस से जवाब
तलब करके पूछ नहीं सकता, "तू ने क्या किया?"
36 जूँ ही मैं दुबारा होश में आया तो मुझे पहली
शाही इज़्ज़त और शान-ओ-शौकत भी अज़ सर-ए-नौ
हासिल हुई। मेरे मुशीर और शुरफ़ा दुबारा मेरे सामने
हाज़िर हुए, और मुझे दुबारा तख़्त पर बिठाया गया।
पहले की निस्बत मेरी अज़मत में इज़ाफ़ा हुआ।
37 अब मैं, नबूकद्नज़्ज़र आसमान के बादशाह की
हम्द-ओ-सना करता हूँ। मैं उसी को जलाल देता हूँ,
क्यूँकि जो कुछ भी वह करे वह सहीह है। उस की
तमाम राहें मुन्सिफ़ाना हैं। जो मग़रूर हो कर ज़िन्दगी
गुज़ारते हैं उन्हें वह पस्त करने के क़ाबिल है।

बेल्शज़्ज़र की ज़ियाफ़त

5 1 एक दिन बेल्शज़्ज़र बादशाह अपने बड़ों के
हज़ार अफ़राद के लिए ज़बरदस्त ज़ियाफ़त
करके उन के साथ मै पीने लगा। 2 नशे में उस
ने हुक्म दिया, "सोने-चाँदी के जो प्याले मेरे बाप
नबूकद्नज़्ज़र ने यरूशलम में वाक़े अल्लाह के घर से
छीन लिए थे वह मेरे पास ले आओ ताकि मैं अपने
बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के साथ उन से मै पी
लूँ।" 3 चुनाँचे यरूशलम में वाक़े अल्लाह के घर से
लूटे हुए प्याले उस के पास लाए गए, और सब उन
से मै पी कर 4 सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, लकड़ी और
पत्थर के अपने बुतों की तम्जीद करने लगे।
5 उसी लम्हे शाही महल के हाल में इन्सानी हाथ की
उंगलियाँ नज़र आईं जो शमादान के मुक़ाबिल दीवार
के पलस्तर पर कुछ लिखने लगीं। जब बादशाह ने
हाथ को लिखते हुए देखा 6 तो उस का चिहरा डर के
मारे फ़क़ हो गया। उस की कमर के जोड़ ढीले पड़
गए, और उस के घुटने एक दूसरे से टकराने लगे।
7 वह ज़ोर से चीख़ा, "जादूगरों, नुजूमियों और
ग़ैबदानों को बुलाओ!" बाबल के दानिशमन्द पहुँचे
तो वह बोला, "जो भी लिखे हुए अल्फ़ाज़ पढ़ कर
मुझे उन का मतलब बता सके उसे अर्ग़वानी रंग का
लिबास पहनाया जाएगा। उस के गले में सोने की
ज़न्जीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग
उस से बड़े होंगे।"
8 बादशाह के दानिशमन्द क़रीब आए, लेकिन न
वह लिखे हुए अल्फ़ाज़ पढ़ सके, न उन का मतलब
बादशाह को बता सके। 9 तब बेल्शज़्ज़र बादशाह
निहायत परेशान हुआ, और उस का चिहरा मज़ीद
माँद पड़ गया। उस के शुरफ़ा भी सख़्त परेशान हो
गए।
10 बादशाह और शुरफ़ा की बातें मलिका तक पहुँच
गईं तो वह ज़ियाफ़त के हाल में दाख़िल हुई। कहने
लगी, "बादशाह अबद तक जीते रहें! घबराने या
माँद पड़ने की क्या ज़रूरत है? 11 आप की बादशाही
में एक आदमी है जिस में मुक़द्दस देवताओं की
रूह है। आप के बाप के दौर-ए-हुकूमत में साबित
हुआ कि वह देवताओं की सी बसीरत, फ़हम और
हिक्मत का मालिक है। आप के बाप नबूकद्नज़्ज़र
बादशाह ने उसे क़िस्मत का हाल बताने वालों,
जादूगरों, नुजूमियों और ग़ैबदानों पर मुक़र्रर किया
था, 12 क्यूँकि उस में ग़ैरमामूली ज़िहानत, इल्म और
समझ पाई जाती है। वह ख़्वाबों की ताबीर करने
और पहेलियाँ और पेचीदा मसले हल करने में माहिर
साबित हुआ है। आदमी का नाम दान्याल है, गो
बादशाह ने उस का नाम बेल्तशज़्ज़र रखा था। मेरा
मश्वरा है कि आप उसे बुलाएँ, क्यूँकि वह आप को
ज़रूर लिखे हुए अल्फ़ाज़ का मतलब बताएगा।"

13 यह सुन कर बादशाह ने दान्याल को फ़ौरन बुला
लिया। जब पहुँचा तो बादशाह उस से मुख़ातिब
हुआ, “क्या तुम वह दान्याल हो जिसे मेरे बाप
नबूकद्नज़्ज़र बादशाह यहूदाह के जिलावतनों के
साथ यहूदाह से यहाँ लाए थे? 14 सुना है कि देवताओं
की रूह तुम में है, कि तुम बसीरत, फ़हम और
ग़ैरमामूली हिक्मत के मालिक हो। 15 दानिशमन्दों
और नुजूमियों को मेरे सामने लाया गया है ताकि
दीवार पर लिखे हुए अल्फ़ाज़ पढ़ कर मुझे उन का
मतलब बताएँ, लेकिन वह नाकाम रहे हैं। 16 अब
मुझे बताया गया कि तुम ख़्वाबों की ताबीर और
पेचीदा मसलों को हल करने में माहिर हो। अगर तुम
यह अल्फ़ाज़ पढ़ कर मुझे इन का मतलब बता सको
तो तुम्हें अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा।
तुम्हारे गले में सोने की ज़न्जीर पहनाई जाएगी, और
हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग तुम से बड़े होंगे।”

17 दान्याल ने जवाब दिया, “मुझे अज्र न दें, अपने
तुह्फ़े किसी और को दीजिए। मैं बादशाह को यह
अल्फ़ाज़ और इन का मतलब वैसे ही बता दूँगा।
18 ऐ बादशाह, जो सल्तनत, अज़मत और शान-ओ-
शौकत आप के बाप नबूकद्नज़्ज़र को हासिल थी
वह अल्लाह तआला से मिली थी। 19 उसी ने उन्हें वह
अज़मत अता की थी जिस के बाइस तमाम क़ौमों,
उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद उन से डरते और उन
के सामने काँपते थे। जिसे वह मार डालना चाहते थे
उसे मारा गया, जिसे वह ज़िन्दा छोड़ना चाहते थे
वह ज़िन्दा रहा। जिसे वह सरफ़राज़ करना चाहते
थे वह सरफ़राज़ हुआ और जिसे पस्त करना चाहते
थे वह पस्त हुआ। 20 लेकिन वह फूल कर हद से
ज़्यादा मग़रूर हो गए, इस लिए उन्हें तख़्त से उतारा
गया, और वह अपनी क़दर-ओ-मन्जिलत खो बैठे।
21 उन्हें इन्सानी संगत से निकाल कर भगाया गया,
और उन का दिल जानवर के दिल की मानिन्द बन
गया। उन का रहन-सहन जंगली गधों के साथ था,
और वह बैलों की तरह घास चरने लगे। उन का
जिस्म आसमान की ओस से तर रहता था। यह हालत
उस वक़्त तक रही जब तक कि उन्हों ने इक़्रार न
किया कि अल्लाह तआला का इन्सानी सल्तनतों पर
इख़तियार है, वह अपनी ही मर्ज़ी से लोगों को उन
पर मुक़र्रर करता है।

22 ऐ बेल्शज़्ज़र बादशाह, गो आप उन के बेटे हैं
और इस बात का इल्म रखते हैं तो भी आप फ़रोतन
न रहे 23 बल्कि आसमान के मालिक के ख़िलाफ़ उठ
खड़े हो गए हैं। आप ने हुक्म दिया कि उस के घर के
प्याले आप के हुज़ूर लाए जाएँ, और आप ने अपने
बड़ों, बीवियों और दाश्ताओं के साथ उन्हें मै पीने
के लिए इस्तेमाल किया। साथ साथ आप ने अपने
देवताओं की तम्जीद की गो वह चाँदी, सोने, पीतल,
लोहे, लकड़ी और पत्थर के बुत ही हैं। न वह देख
सकते, न सुन या समझ सकते हैं। लेकिन जिस ख़ुदा
के हाथ में आप की जान और आप की तमाम राहें हैं
उस का एहतिराम आप ने नहीं किया।

24 इसी लिए उस ने हाथ भेज कर दीवार पर यह
अल्फ़ाज़ लिखवा दिए। 25 और लिखा यह है, ‘मिने
मिने तक़ेल-ओ-फ़र्सीन।’

26 ‘मिने’ का मतलब ‘गिना हुआ’ है। यानी आप की
सल्तनत के दिन गिने हुए हैं, अल्लाह ने उन्हें इख़तिताम
तक पहुँचाया है।

27 ‘तक़ेल’ का मतलब ‘तोला हुआ’ है। यानी
अल्लाह ने आप को तोल कर मालूम किया है कि आप
का वज़न कम है।

28 ‘फ़र्सीन’ का मतलब ‘तक़्सीम हुआ’ है। यानी
आप की बादशाही को मादियों और फ़ार्सियों में
तक़्सीम किया जाएगा।”

29 दान्याल ख़ामोश हुआ तो बेल्शज़्ज़र ने हुक्म
दिया कि उसे अर्ग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाए
और उस के गले में सोने की ज़न्जीर पहनाई जाए।
साथ साथ एलान किया गया कि अब से हुकूमत में
सिर्फ़ दो आदमी दान्याल से बड़े हैं।

30 उसी रात शाह-ए-बाबल बेल्शज़्ज़र को क़त्ल
किया गया, 31 और दारा मादी तख़्त पर बैठ गया।
उस की उम्र 62 साल थी।

दान्याल शेरबबर की मान्द में

6 1 दारा ने सल्तनत के तमाम सूबों पर 120
सूबेदार मुतअय्यिन करने का फ़ैसला किया।
2 उन पर तीन वज़ीर मुक़र्रर थे जिन में से एक
दान्याल था। गवर्नर उन के सामने जवाबदिह थे
ताकि बादशाह को नुक़्सान न पहुँचे। 3 जल्द ही पता
चला कि दान्याल दूसरे वज़ीरों और सूबेदारों पर
सब्क़त रखता था, क्यूँकि वह ग़ैरमामूली ज़िहानत
का मालिक था। नतीजतन बादशाह ने उसे पूरी
सल्तनत पर मुक़र्रर करने का इरादा किया। 4 जब
दीगर वज़ीरों और सूबेदारों को यह बात मालूम हुई
तो वह दान्याल पर इल्ज़ाम लगाने का बहाना ढूँडने
लगे। लेकिन वह अपनी ज़िम्मादारियों को निभाने में
इतना क़ाबिल-ए-एतिमाद था कि वह नाकाम रहे।
क्यूँकि न वह रिश्वतखोर था, न किसी काम में सुस्त।
5 आख़िरकार वह आदमी आपस में कहने लगे,
"इस तरीक़े से हमें दान्याल पर इल्ज़ाम लगाने का
मौक़ा नहीं मिलेगा। लेकिन एक बात है जो इल्ज़ाम
का बाइस बन सकती है यानी उस के ख़ुदा की
शरीअत।" 6 तब वह गुरोह की सूरत में बादशाह के
सामने हाज़िर हुए और कहने लगे, "दारा बादशाह
अबद तक जीते रहें! 7 सल्तनत के तमाम वज़ीर,
गवर्नर, सूबेदार, मुशीर और मुन्तज़िम आपस में
मश्वरा करके मुत्तफ़िक़ हुए हैं कि अगले 30 दिन के
दौरान सब को सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी चाहिए।
बादशाह एक फ़रमान सादिर करें कि जो भी किसी
और माबूद या इन्सान से इल्तिजा करे उसे शेरों की
मान्द में फैंका जाएगा। ध्यान देना चाहिए कि सब
ही इस पर अमल करें। 8 ऐ बादशाह, गुज़ारिश है कि
आप यह फ़रमान ज़रूर सादिर करें बल्कि लिख कर
उस की तस्दीक़ भी करें ताकि उसे तब्दील न किया
जा सके। तब वह मादियों और फ़ार्सियों के क़वानीन
का हिस्सा बन कर मन्सूख़ नहीं किया जा सकेगा।"
9 दारा बादशाह मान गया। उस ने फ़रमान लिखवा
कर उस की तस्दीक़ की।
10 जब दान्याल को मालूम हुआ कि फ़रमान सादिर
हुआ है तो वह सीधा अपने घर में चला गया। छत पर
एक कमरा था जिस की खुली खिड़कियों का रुख़
यरूशलम की तरफ़ था। इस कमरे में दान्याल रोज़ाना
तीन बार अपने घुटने टेक कर दुआ और अपने ख़ुदा
की सताइश करता था। अब भी उस ने यह सिलसिला
जारी रखा। 11 जूँ ही दान्याल अपने ख़ुदा से दुआ और
इल्तिजा कर रहा था तो उस के दुश्मनों ने गुरोह की
सूरत में घर में घुस कर उसे यह करते हुए पाया।
12 तब वह बादशाह के पास गए और उसे शाही
फ़रमान की याद दिलाई, "क्या आप ने फ़रमान
सादिर नहीं किया था कि अगले 30 दिन के दौरान
सब को सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी है, और जो
किसी और माबूद या इन्सान से इल्तिजा करे उसे
शेरों की मान्द में फैंका जाएगा?" बादशाह ने जवाब
दिया, "जी, यह फ़रमान क़ाइम है बल्कि मादियों और
फ़ार्सियों के क़वानीन का हिस्सा है जो मन्सूख़ नहीं
किया जा सकता।" 13 उन्हों ने कहा, "ऐ बादशाह,
दान्याल जो यहूदाह के जिलावतनों में से है न आप
की पर्वा करता, न उस फ़रमान की जिस की आप ने
लिख कर तस्दीक़ की। अभी तक वह रोज़ाना तीन
बार अपने ख़ुदा से दुआ करता है।"
14 यह सुन कर बादशाह को बड़ी दिक़्क़त महसूस
हुई। पूरा दिन वह सोचता रहा कि मैं दान्याल को
किस तरह बचाऊँ। सूरज के ग़ुरूब होने तक वह उसे
छुड़ाने के लिए कोशाँ रहा। 15 लेकिन आख़िरकार
वह आदमी गुरोह की सूरत में दुबारा बादशाह के
हुज़ूर आए और कहने लगे, "बादशाह को याद रहे
कि मादियों और फ़ार्सियों के क़वानीन के मुताबिक़
जो भी फ़रमान बादशाह सादिर करे उसे तब्दील नहीं
किया जा सकता।" 16 चुनाँचे बादशाह ने हुक्म दिया
कि दान्याल को पकड़ कर शेरों की मान्द में फैंका
जाए। ऐसा ही हुआ। बादशाह बोला, "ऐ दान्याल,
जिस ख़ुदा की इबादत तुम बिलानाग़ा करते आए हो
वह तुम्हें बचाए।" 17 फिर मान्द के मुँह पर पत्थर
रखा गया, और बादशाह ने अपनी मुहर और अपने

बड़ों की मुहरें उस पर लगाईं ताकि कोई भी उसे
खोल कर दान्याल की मदद न करे।
18 इस के बाद बादशाह शाही महल में वापस चला
गया और पूरी रात रोज़ा रखे हुए गुज़ारी। न कुछ उस
का दिल बहलाने के लिए उस के पास लाया गया, न
उसे नींद आई।
19 जब पौ फटने लगी तो वह उठ कर शेरों की
मान्द के पास गया। 20 उस के क़रीब पहुँच कर
बादशाह ने ग़मगीन आवाज़ से पुकारा, "ऐ ज़िन्दा
ख़ुदा के बन्दे दान्याल, क्या तुम्हारे ख़ुदा जिस की
तुम बिलानाग़ा इबादत करते रहे हो तुम्हें शेरों से बचा
सका?" 21 दान्याल ने जवाब दिया, "बादशाह अबद
तक जीते रहें! 22 मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेज
दिया जिस ने शेरों के मुँह को बन्द किए रखा। उन्हों
ने मुझे कोई भी नुक़्सान न पहुँचाया, क्यूँकि अल्लाह के
सामने मैं बेक़ुसूर हूँ। बादशाह सलामत के ख़िलाफ़
भी मुझ से जुर्म नहीं हुआ।"
23 यह सुन कर बादशाह आपे में न समाया। उस
ने दान्याल को मान्द से निकालने का हुक्म दिया।
जब उसे खैंच कर निकाला गया तो मालूम हुआ कि
उसे कोई भी नुक़्सान नहीं पहुँचा। यूँ उसे अल्लाह
पर भरोसा रखने का अज्र मिला। 24 लेकिन जिन
आदमियों ने दान्याल पर इल्ज़ाम लगाया था उन का
बुरा अन्जाम हुआ। बादशाह के हुक्म पर उन्हें उन के
बाल-बच्चों समेत शेरों की मान्द में फैंका गया। मान्द
के फ़र्श पर गिरने से पहले ही शेर उन पर झपट पड़े
और उन्हें फाड़ कर उन की हड्डियों को चबा लिया।
25 फिर दारा बादशाह ने सल्तनत की तमाम क़ौमों,
उम्मतों और अहल-ए-ज़बान को ज़ैल का पैग़ाम भेजा,
"सब की सलामती हो! 26 मेरा फ़रमान सुनो!
लाज़िम है कि मेरी सल्तनत की हर जगह लोग
दान्याल के ख़ुदा के सामने थरथराएँ और उस का
ख़ौफ़ मानें। क्यूँकि वह ज़िन्दा ख़ुदा और अबद तक
क़ाइम है। न कभी उस की बादशाही तबाह, न उस
की हुकूमत ख़त्म होगी। 27 वही बचाता और नजात
देता है, वही आसमान-ओ-ज़मीन पर इलाही निशान
और मोजिज़े दिखाता है। उसी ने दान्याल को शेरों के
क़ब्ज़े से बचाया।"
28 चुनाँचे दान्याल को दारा बादशाह और फ़ार्स के
बादशाह ख़ोरस के दौर-ए-हुकूमत में बहुत कामयाबी
हासिल हुई।

दान्याल की पहली रोया : चार जानवर

7 1 शाह-ए-बाबल बेल्शज़्ज़र की हुकूमत के पहले
साल में दान्याल ने ख़्वाब में रोया देखी। जाग
उठने पर उस ने वह कुछ क़लमबन्द कर लिया जो
ख़्वाब में देखा था। ज़ैल में इस का बयान है,
2 रात के वक़्त मैं, दान्याल ने रोया में देखा कि
आसमान की चारों हवाएँ ज़ोर से बड़े समुन्दर को
मुतलातिम कर रही हैं। 3 फिर चार बड़े जानवर
समुन्दर से निकल आए जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़
थे।
4 पहला जानवर शेरबबर जैसा था, लेकिन उस के
उक़ाब के पर थे। मेरे देखते ही उस के परों को नोच
लिया गया और उसे उठा कर इन्सान की तरह पिछले
दो पैरों पर खड़ा किया गया। उसे इन्सान का दिल
भी मिल गया।
5 दूसरा जानवर रीछ जैसा था। उस का एक पहलू
खड़ा किया गया था, और वह अपने दाँतों में तीन
पसलियाँ पकड़े हुए था। उसे बताया गया, "उठ, जी
भर कर गोश्त खा ले!"
6 फिर मैं ने तीसरे जानवर को देखा। वह चीते जैसा
था, लेकिन उस के चार सर थे। उसे हुकूमत करने
का इख़तियार दिया गया।
7 इस के बाद रात की रोया में एक चौथा जानवर
नज़र आया जो डराऔना, हौलनाक और निहायत ही
ताक़तवर था। अपने लोहे के बड़े बड़े दाँतों से वह
सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो कुछ बच
जाता उसे वह पाँओ तले रौंद देता था। यह जानवर
दीगर जानवरों से मुख़्तलिफ़ था। उस के दस सींग
थे। 8 मैं सींगों पर ग़ौर ही कर रहा था कि एक और
छोटा सा सींग उन के दरमियान से निकल आया।

पहले दस सींगों में से तीन को नोच लिया गया ताकि उसे जगह मिल जाए। छोटे सींग पर इन्सानी आँखें थीं, और उस का मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था।

9 मैं देख ही रहा था कि तख़्त लगाए गए और क़दीम-उल-अय्याम बैठ गया। उस का लिबास बर्फ़ जैसा सफ़ेद और उस के बाल ख़ालिस ऊन की मानिन्द थे। जिस तख़्त पर वह बैठा था वह आग की तरह भड़क रहा था, और उस पर शोलाज़न पहिए लगे थे। 10 उस के सामने से आग की नहर बह कर निकल रही थी। बेशुमार हस्तियाँ उस की ख़िदमत के लिए खड़ी थीं। लोग अदालत के लिए बैठ गए, और किताबें खोली गईं।

11 मैं ने ग़ौर किया कि छोटा सींग बड़ी बड़ी बातें कर रहा है। मैं देखता रहा तो चौथे जानवर को क़त्ल किया गया। उस का जिस्म तबाह हुआ और भड़कती आग में फैंका गया। 12 दीगर तीन जानवरों की हुकूमत उन से छीन ली गई, लेकिन उन्हें कुछ देर के लिए ज़िन्दा रहने की इजाज़त दी गई।

13 रात की रोया में मैं ने यह भी देखा कि आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्न-ए-आदम सा लग रहा है। जब क़दीम-उल-अय्याम के क़रीब पहुँचा तो उस के हुज़ूर लाया गया। 14 उसे सल्तनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उस की परस्तिश की। उस की हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उस की बादशाही कभी तबाह नहीं होगी।

15 मैं, दान्याल सख़्त परेशान हुआ, क्यूँकि रोया से मुझ पर दहशत छा गई थी। 16 इस लिए मैं ने वहाँ खड़े किसी के पास जा कर उस से गुज़ारिश की कि वह मुझे इन तमाम बातों का मतलब बताए। उस ने मुझे इन का मतलब बताया, 17 "चार बड़े जानवर चार सल्तनतें हैं जो ज़मीन से निकल कर क़ाइम हो जाएँगी। 18 लेकिन अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन को हक़ीक़ी बादशाही मिलेगी, वह बादशाही जो अबद तक हासिल रहेगी।"

19 मैं चौथे जानवर के बारे में मज़ीद जानना चाहता था, उस जानवर के बारे में जो दीगर जानवरों से इतना मुख़्तलिफ़ और इतना हौलनाक था। क्यूँकि उस के दाँत लोहे और पंजे पीतल के थे, और वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो बच जाता उसे वह पाँओ तले रौंद देता था। 20 मैं उस के सर के दस सींगों और उन में से निकले हुए छोटे सींग के बारे में भी मज़ीद जानना चाहता था। क्यूँकि छोटे सींग के निकलने पर दस सींगों में से तीन निकल कर गिर गए, और यह सींग बढ़ कर साथ वाले सींगों से कहीं बड़ा नज़र आया। उस की आँखें थीं, और उस का मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था। 21 रोया में मैं ने देखा कि छोटे सींग ने मुक़द्दसीन से जंग करके उन्हें शिकस्त दी। 22 लेकिन फिर क़दीम-उल-अय्याम आ पहुँचा और अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन के लिए इन्साफ़ क़ाइम किया। फिर वह वक़्त आया जब मुक़द्दसीन को बादशाही हासिल हुई।

23 जिस से मैं ने रोया का मतलब पूछा था उस ने कहा, "चौथे जानवर से मुराद ज़मीन पर एक चौथी बादशाही है जो दीगर तमाम बादशाहियों से मुख़्तलिफ़ होगी। वह तमाम दुनिया को खा जाएगी, उसे रौंद कर चूर चूर कर देगी। 24 दस सींगों से मुराद दस बादशाह हैं जो इस बादशाही से निकल आएँगे। उन के बाद एक और बादशाह आएगा जो गुज़रे बादशाहों से मुख़्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को ख़ाक में मिला देगा। 25 वह अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ कुफ़्र बकेगा, और मुक़द्दसीन उस के तहत पिसते रहेंगे, यहाँ तक कि वह ईदों के मुक़र्ररा औक़ात और शरीअत को तब्दील करने की कोशिश करेगा। मुक़द्दसीन को एक अर्से, दो उर्सों और आधे अर्से के लिए उस के हवाले किया जाएगा।

26 लेकिन फिर लोग उस की अदालत के लिए बैठ जाएंगे। उस की हुकूमत उस से छीन ली जाएगी, और वह मुकम्मल तौर पर तबाह हो जाएगी। 27 तब आसमान तले की तमाम सल्तनतों की बादशाहत, सल्तनत और अज़मत अल्लाह तआला की मुक़द्दस

क़ौम के हवाले कर दी जाएगी। अल्लाह तआला की बादशाही अबदी होगी, और तमाम हुक्मरान उस की ख़िदमत करके उस के ताबे रहेंगे।”

28 मुझे मज़ीद कुछ नहीं बताया गया। मैं, दान्याल इन बातों से बहुत परेशान हुआ, और मेरा चिहरा माँद पड़ गया, लेकिन मैं ने मुआमला अपने दिल में महफ़ूज़ रखा।

दान्याल की दूसरी रोया : मेंढा और बकरा

8 1 बेल्शज़्ज़र बादशाह के दौर-ए-हुकूमत के तीसरे साल में मैं, दान्याल ने एक और रोया देखी। 2 रोया में मैं सूबा ऐलाम के क़िलाबन्द शहर सोसन की नहर ऊलाई के किनारे पर खड़ा था। 3 जब मैं ने अपनी निगाह उठाई तो किनारे पर मेरे सामने ही एक मेंढा खड़ा था। उस के दो बड़े सींग थे जिन में से एक ज़्यादा बड़ा था। लेकिन वह दूसरे के बाद ही बड़ा हो गया था। 4 मेरी नज़रों के सामने मेंढा मग़रिब, शिमाल और जुनूब की तरफ़ सींग मारने लगा। न कोई जानवर उस का मुक़ाबला कर सका, न कोई उस के क़ाबू से बचा सका। जो जी चाहे करता था और होते होते बहुत बड़ा हो गया।

5 मैं उस पर ग़ौर ही कर रहा था कि अचानक मग़रिब से आते हुए एक बकरा दिखाई दिया। उस की आँखों के दरमियान ज़बरदस्त सींग था, और वह ज़मीन को छुए बग़ैर चल रहा था। पूरी दुनिया को उबूर करके 6 वह दो सींगों वाले उस मेंढे के पास पहुँच गया जो मैं ने नहर के किनारे खड़ा देखा था। बड़े तैश में आ कर वह उस पर टूट पड़ा। 7 मैं ने देखा कि वह मेंढे के पहलू से टकरा गया। बड़े ग़ुस्से में उस ने उसे यूँ मारा कि मेंढे के दोनों सींग टुकड़े टुकड़े हो गए। इस बेबस हालत में मेंढा उस का मुक़ाबला न कर सका। बकरे ने उसे ज़मीन पर पटख़ कर पाँओ तले कुचल दिया। कोई नहीं था जो मेंढे को बकरे के क़ाबू से बचाए।

8 बकरा निहायत ताक़तवर हो गया। लेकिन ताक़त के उरूज पर ही उस का बड़ा सींग टूट गया, और उस की जगह मज़ीद चार ज़बरदस्त सींग निकल आए जिन का रुख़ आसमान की चार सिम्तों की तरफ़ था। 9 उन के एक सींग में से एक और सींग निकल आया जो इब्तिदा में छोटा था। लेकिन वह जुनूब, मशरिक़ और ख़ूबसूरत मुल्क इस्राईल की तरफ़ बढ़ते बढ़ते बहुत ताक़तवर हो गया। 10 फिर वह आसमानी फ़ौज तक बढ़ गया। वहाँ उस ने कुछ फ़ौजियों और सितारों को ज़मीन पर फैंक कर पाँओ तले कुचल दिया। 11 वह बढ़ते बढ़ते आसमानी फ़ौज के कमाँडर तक भी पहुँच गया और उसे उन क़ुर्बानियों से महरूम कर दिया जो उसे रोज़ाना पेश की जाती थीं। साथ साथ सींग ने उस के मक़्दिस के मक़ाम को तबाह कर दिया। 12 उस की फ़ौज से रोज़ाना की क़ुर्बानियों की बेहुरमती हुई, और सींग ने सच्चाई को ज़मीन पर पटख़ दिया। जो कुछ भी उस ने किया उस में वह कामयाब रहा।

13 फिर मैं ने दो मुक़द्दस हस्तियों को आपस में बात करते हुए सुना। एक ने पूछा, “इस रोया में पेश किए गए हालात कब तक क़ाइम रहेंगे, यानी जो कुछ रोज़ाना की क़ुर्बानियों के साथ हो रहा है, यह तबाहकुन बेहुरमती और यह बात कि मक़्दिस को पामाल किया जा रहा है?” 14 दूसरे ने जवाब में मुझे बताया, “हालात 2,300 शामों और सुब्हों तक यूँ ही रहेंगे। इस के बाद मक़्दिस को नए सिरे से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाएगा।”

15 मैं देखे हुए वाक़िआत को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोई मेरे सामने खड़ा हुआ जो मर्द जैसा लग रहा था। 16 साथ साथ मैं ने नहर ऊलाई की तरफ़ से किसी शख़्स की आवाज़ सुनी जिस ने कहा, “ऐ जिब्राईल, इस आदमी को रोया का मतलब बता दे।” 17 फ़रिश्ता मेरे क़रीब आया तो मैं सख़्त घबरा कर मुँह के बल गिर गया। लेकिन वह बोला, “ऐ आदमज़ाद, जान ले कि इस रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है।”

18 जब वह मुझ से बात कर रहा था तो मैं मदहोश हालत में मुँह के बल पड़ा रहा। अब फ़रिश्ते ने मुझे

छू कर पाँओ पर खड़ा किया। 19 वह बोला, “मैं तुझे
समझा देता हूँ कि उस आख़िरी ज़माने में क्या कुछ
पेश आएगा जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा।
क्यूँकि रोया का ताल्लुक़ आख़िरी ज़माने से है। 20 दो
सींगों के जिस मेंढे को तू ने देखा वह मादी और फ़ार्स
के बादशाहों की नुमाइन्दगी करता है। 21 लम्बे बालों
का बकरा यूनान का बादशाह है। उस की आँखों
के दरमियान लगा बड़ा सींग यूनानी शहन्शाही का
पहला बादशाह है। 22 तू ने देखा कि यह सींग टूट गया
और उस की जगह चार सींग निकल आए। इस का
मतलब है कि पहली बादशाही से चार और निकल
आएँगी । लेकिन चारों की ताक़त पहली की निस्बत
कम होगी। 23 उन की हुकूमत के आख़िरी अय्याम
में बेवफ़ाओं की बदकिर्दारी उरूज तक पहुँच गई
होगी।

उस वक़्त एक गुस्ताख़ और साज़िश का माहिर
बादशाह तख़्त पर बैठेगा। 24 वह बहुत ताक़तवर हो
जाएगा, लेकिन यह उस की अपनी ताक़त नहीं होगी।
वह हैरतअंगेज़ बर्बादी का बाइस बनेगा, और जो
कुछ भी करेगा उस में कामयाब होगा। वह ज़ोरावरों
और मुक़द्दस क़ौम को तबाह करेगा। 25 अपनी समझ
और फ़रेब के ज़रीए वह कामयाब रहेगा। तब वह
मुतकब्बिर हो जाएगा। जब लोग अपने आप को
महफ़ूज़ समझेंगे तो वह उन्हें मौत के घाट उतारेगा।
आख़िरकार वह हुक्मरानों के हुक्मरान के ख़िलाफ़
भी उठेगा। लेकिन वह पाश पाश हो जाएगा, अलबत्ता
इन्सानी हाथ से नहीं।

26 ऐ दान्याल, शामों और सुब्हों के बारे में जो रोया
तुझ पर ज़ाहिर हुई वह सच्ची है। लेकिन फ़िलहाल
उसे पोशीदा रख, क्यूँकि यह वाक़िआत अभी पेश
नहीं आएँगे बल्कि बहुत दिनों के गुज़र जाने के बाद
ही।”

27 इस के बाद मैं, दान्याल निढाल हो कर कई
दिनों तक बीमार रहा। फिर मैं उठा और बादशाह की
ख़िदमत में दुबारा अपने फ़राइज़ अदा करने लगा।
मैं रोया से सख़्त परेशान था, और कोई नहीं था जो
मुझे उस का मतलब बता सके।

दान्याल अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

9 1 दारा बिन अख़स्वेरुस बाबल के तख़्त पर
बैठ गया था। इस मादी बादशाह 2 की हुकूमत
के पहले साल में मैं, दान्याल ने पाक नविश्तों की
तहक़ीक़ की। मैं ने ख़ासकर उस पर ग़ौर किया
जो रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था।
उस के मुताबिक़ यरूशलम की तबाहशुदा हालत 70
साल तक क़ाइम रहेगी। 3 चुनाँचे मैं ने रब अपने
ख़ुदा की तरफ़ रुजू किया ताकि अपनी दुआ और
इल्तिजाओं से उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करूँ। साथ
साथ मैं ने रोज़ा रखा, टाट का लिबास ओढ़ लिया
और अपने सर पर राख डाल ली। 4 मैं ने रब अपने
ख़ुदा से दुआ करके इक़्रार किया,

“ऐ रब, तू कितना अज़ीम और महीब ख़ुदा है!
जो भी तुझे प्यार करता और तेरे अह्काम के ताबे
रहता है उस के साथ तू अपना अह्द क़ाइम रखता
और उस पर मेहरबानी करता है। 5 लेकिन हम ने
गुनाह और बदी की है। हम बेदीन और बाग़ी हो कर
तेरे अह्काम और हिदायात से भटक गए हैं। 6 हम
ने नबियों की नहीं सुनी, हालाँकि तेरे ख़ादिम तेरा
नाम ले कर हमारे बादशाहों, बुज़ुर्गों, बापदादा बल्कि
मुल्क के तमाम बाशिन्दों से मुख़ातिब हुए। 7 ऐ रब, तू
हक़-ब-जानिब है जबकि इस दिन हम सब शर्मसार हैं,
ख़्वाह यहूदाह, यरूशलम या इस्राईल के हों, ख़्वाह
क़रीब या उन तमाम दूरदराज़ ममालिक में रहते हों
जहाँ तू ने हमें हमारी बेवफ़ाई के सबब से मुन्तशिर
कर दिया है। क्यूँकि हम तेरे ही साथ बेवफ़ा रहे हैं।
8 ऐ रब, हम अपने बादशाहों, बुज़ुर्गों और बापदादा
समेत बहुत शर्मसार हैं, क्यूँकि हम ने तेरा ही गुनाह
किया है।

9 लेकिन रब हमारा ख़ुदा रहीम है और ख़ुशी से
मुआफ़ करता है, गो हम उस से सरकश हुए हैं।
10 न हम रब अपने ख़ुदा के ताबे रहे, न उस के

उन अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी जो उस
ने हमें अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए
थे। 11 तमाम इस्राईल तेरी शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
करके सहीह राह से भटक गया है, कोई तेरी सुनने
के लिए तय्यार नहीं था।

अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने शरीअत में क़सम खा कर
लानतें भेजी थीं, और अब यह लानतें हम पर नाज़िल
हुई हैं, इस लिए कि हम ने तेरा गुनाह किया। 12 जो
कुछ तू ने हमारे और हमारे हुक्मरानों के ख़िलाफ़
फ़रमाया था वह पूरा हुआ, और हम पर बड़ी आफ़त
आई। आसमान तले कहीं भी ऐसी मुसीबत नहीं आई
जिस तरह यरूशलम को पेश आई है। 13 मूसा की
शरीअत में मज़कूर हर वह लानत हम पर नाज़िल
हुई जो नाफ़रमानों पर भेजी गई है। तो भी न हम ने
अपने गुनाहों को छोड़ा, न तेरी सच्चाई पर ध्यान दिया,
हालाँकि इस से हम रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा
कर सकते थे। 14 इसी लिए रब हम पर आफ़त लाने
से न झिजका। क्यूँकि जो कुछ भी रब हमारा ख़ुदा
करता है उस में वह हक़-ब-जानिब होता है। लेकिन
हम ने उस की न सुनी।

15 ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू बड़ी क़ुदरत का इज़हार
करके अपनी क़ौम को मिस्र से निकाल लाया। यूँ तेरे
नाम को वह इज़्ज़त-ओ-जलाल मिला जो आज तक
क़ाइम रहा है। इस के बावुजूद हम ने गुनाह किया,
हम से बेदीन हरकतें सरज़द हुई हैं। 16 ऐ रब, तू अपने
मुन्सिफ़ाना कामों में वफ़ादार रहा है! अब भी इस का
लिहाज़ कर और अपने सख़्त ग़ज़ब को अपने शहर
और मुक़द्दस पहाड़ यरूशलम से दूर कर! यरूशलम
और तेरी क़ौम गिर्द-ओ-नवाह की क़ौमों के लिए
मज़ाक़ का निशाना बन गई है, गो हम मानते हैं कि
यह हमारे गुनाहों और हमारे बापदादा की ख़ताओं
की वजह से हो रहा है।

17 ऐ हमारे ख़ुदा, अब अपने ख़ादिम की दुआओं
और इल्तिजाओं को सुन! ऐ रब, अपनी ही ख़ातिर
अपने तबाहशुदा मक़्दिस पर अपने चिहरे का
मेहरबान नूर चमका। 18 ऐ मेरे ख़ुदा, कान लगा कर
मेरी सुन! अपनी आँखें खोल! उस शहर के खंडरात
पर नज़र कर जिस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।
हम इस लिए तुझ से इल्तिजाएँ नहीं कर रहे कि हम
रास्तबाज़ हैं बल्कि इस लिए कि तू निहायत मेहरबान
है। 19 ऐ रब, हमारी सुन! ऐ रब, हमें मुआफ़ कर! ऐ
मेरे ख़ुदा, अपनी ख़ातिर देर न कर, क्यूँकि तेरे शहर
और क़ौम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।”

70 हफ़्तों का भेद

20 यूँ मैं दुआ करता और अपने और अपनी क़ौम
इस्राईल के गुनाहों का इक़्रार करता गया। मैं ख़ासकर
अपने ख़ुदा के मुक़द्दस पहाड़ यरूशलम के लिए रब
अपने ख़ुदा के हुज़ूर फ़र्याद कर रहा था।

21 मैं दुआ कर ही रहा था कि जिब्राईल जिसे मैं
ने दूसरी रोया में देखा था मेरे पास आ पहुँचा। रब
के घर में शाम की क़ुर्बानी पेश करने का वक़्त था।
मैं बहुत ही थक गया था। 22 उस ने मुझे समझा कर
कहा, “ऐ दान्याल, अब मैं तुझे समझ और बसीरत
देने के लिए आया हूँ। 23 जूँ ही तू दुआ करने लगा
तो अल्लाह ने जवाब दिया, क्यूँकि तू उस की नज़र
में गिराँक़दर है। मैं तुझे यह जवाब सुनाने आया हूँ।
अब ध्यान से रोया को समझ ले! 24 तेरी क़ौम और
तेरे मुक़द्दस शहर के लिए 70 हफ़्ते मुक़र्रर किए गए
हैं ताकि उतने में जराइम और गुनाहों का सिलसिला
ख़त्म किया जाए, क़ुसूर का कफ़्फ़ारा दिया जाए,
अबदी रास्ती क़ाइम की जाए, रोया और पेशगोई की
तस्दीक़ की जाए और मुक़द्दसतरीन जगह को मसह
करके मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया जाए।

25 अब जान ले और समझ ले कि यरूशलम
को दुबारा तामीर करने का हुक्म दिया जाएगा,
लेकिन मज़ीद सात हफ़्ते गुज़रेंगे, फिर ही अल्लाह
एक हुक्मरान को इस काम के लिए चुन कर मसह
करेगा। तब शहर को 62 हफ़्तों के अन्दर चौकों
और ख़न्दक़ों समेत नए सिरे से तामीर किया जाएगा,
गो इस दौरान वह काफ़ी मुसीबत से दोचार होगा।
26 इन 62 हफ़्तों के बाद अल्लाह के मसह किए गए

बन्दे को क़त्ल किया जाएगा, और उस के पास कुछ
भी नहीं होगा। उस वक़्त एक और हुक्मरान की
क़ौम आ कर शहर और मक़्दिस को तबाह करेगी।
इख़्तिताम सैलाब की सूरत में आएगा, और आख़िर
तक जंग जारी रहेगी, ऐसी तबाही होगी जिस का
फ़ैसला हो चुका है। 27 एक हफ़्ते तक यह हुक्मरान
मुतअद्दिद लोगों को एक अह्द के तहत रहने पर
मज्बूर करेगा। इस हफ़्ते के बीच में वह ज़बह और
ग़ल्ला की क़ुर्बानियों का इन्तिज़ाम बन्द करेगा और
मक़्दिस के एक तरफ़ वह कुछ खड़ा करेगा जो
बेहुरमती और तबाही का बाइस है। लेकिन तबाह
करने वाले का ख़ातमा भी मुक़र्रर किया गया है, और
आख़िरकार वह भी तबाह हो जाएगा।”

दान्याल की आख़िरी रोया

10 1 फ़ार्स के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के
तीसरे साल में बेल्तशज़्ज़र यानी दान्याल
पर एक बात ज़ाहिर हुई जो यक़ीनी है और जिस का
ताल्लुक़ एक बड़ी मुसीबत से है। उसे रोया में इस
पैग़ाम की समझ हासिल हुई।

2 उन दिनों में मैं, दान्याल तीन पूरे हफ़्ते मातम
कर रहा था। 3 न मैं ने उम्दा खाना खाया, न गोश्त
या मै मेरे होंटों तक पहुँची। तीन पूरे हफ़्ते मैं ने हर
ख़ुश्बूदार तेल से पर्हेज़ किया। 4 पहले महीने के 24वें
दिन [i]मैं बड़े दरया दिजला के किनारे पर खड़ा था।
5 मैं ने निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने
कतान से मुलब्बस आदमी खड़ा है जिस की कमर
में ख़ालिस सोने का पटका बंधा हुआ है। 6 उस का
जिस्म पुखराज [j]जैसा था, उस का चिहरा आसमानी
बिजली की तरह चमक रहा था, और उस की आँखें
भड़कती मशअलों की मानिन्द थीं। उस के बाज़ू और
पाँओ पालिश किए हुए पीतल की तरह दमक रहे थे।
बोलते वक़्त यूँ लग रहा था कि बड़ा हुजूम शोर मचा
रहा है।

7 सिर्फ़ मैं, दान्याल ने यह रोया देखी। मेरे साथियों
ने उसे न देखा। तो भी अचानक उन पर इतनी दह्शत
तारी हुई कि वह भाग कर छुप गए। 8 चुनाँचे मैं
अकेला ही रह गया। लेकिन यह अज़ीम रोया देख
कर मेरी सारी ताक़त जाती रही। मेरे चिहरे का रंग
माँद पड़ गया और मैं बेबस हुआ। 9 फिर वह बोलने
लगा। उसे सुनते ही मैं मुँह के बल गिर कर मदहोश
हालत में ज़मीन पर पड़ा रहा। 10 तब एक हाथ ने मुझे
छू कर हिलाया। उस की मदद से मैं अपने हाथों और
घुटनों के बल हो सका।

11 वह आदमी बोला, “ऐ दान्याल, तू अल्लाह के
नज़्दीक बहुत गिराँक़दर है! जो बातें मैं तुझ से करूँगा
उन पर ग़ौर कर। खड़ा हो जा, क्यूँकि इस वक़्त
मुझे तेरे ही पास भेजा गया है।” तब मैं थरथराते हुए
खड़ा हो गया। 12 उस ने अपनी बात जारी रखी, “ऐ
दान्याल, मत डरना! जब से तू ने समझ हासिल करने
और अपने ख़ुदा के सामने झुकने का पूरा इरादा कर
रखा है, उसी दिन से तेरी सुनी गई है। मैं तेरी दुआओं
के जवाब में आ गया हूँ। 13 लेकिन फ़ार्सी बादशाही
का सरदार 21 दिन तक मेरे रास्ते में खड़ा रहा। फिर
मीकाएल जो अल्लाह के सरदार फ़रिश्तों में से एक है
मेरी मदद करने आया, और मेरी जान फ़ार्सी बादशाही
के उस सरदार के साथ लड़ने से छूट गई। 14 मैं तुझे
वह कुछ सुनाने को आया हूँ जो आख़िरी दिनों में तेरी
क़ौम को पेश आएगा। क्यूँकि रोया का ताल्लुक़ आने
वाले वक़्त से है।”

15 जब वह मेरे साथ यह बातें कर रहा था तो मैं
ख़ामोशी से नीचे ज़मीन की तरफ़ देखता रहा। 16 फिर
जो आदमी सा लग रहा था उस ने मेरे होंटों को छू
दिया, और मैं मुँह खोल कर बोलने लगा। मैं ने अपने
सामने खड़े फ़रिश्ते से कहा, “ऐ मेरे आक़ा, यह रोया
देख कर मैं दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेच-
ओ-ताब खाने लगा हूँ। मेरी ताक़त जाती रही है। 17 ऐ
मेरे आक़ा, आप का ख़ादिम किस तरह आप से बात

[i]23 अप्रैल।

[j]topas

कर सकता है? मेरी ताक़त तो जवाब दे गई है, साँस
लेना भी मुश्किल हो गया है।”
18 जो आदमी सा लग रहा था उस ने मुझे एक बार
फिर छू कर तक़वियत दी 19 और बोला, “ऐ तू जो
अल्लाह की नज़र में गिराँक़दर है, मत डरना! तेरी
सलामती हो। हौसला रख, मज़बूत हो जा!” जूँ ही
उस ने मुझ से बात की मुझे तक़वियत मिली, और
मैं बोला, “अब मेरे आक़ा बात करें, क्यूँकि आप ने
मुझे तक़वियत दी है।”
20 उस ने कहा, “क्या तू मेरे आने का मक़्सद जानता
है? जल्द ही मैं दुबारा फ़ार्स के सरदार से लड़ने
चला जाऊँगा। और उस से निपटने के बाद यूनान
का सरदार आएगा। 21 लेकिन पहले मैं तेरे सामने
वह कुछ बयान करता हूँ जो ‘सच्चाई की किताब’ में
लिखा है। (इन सरदारों से लड़ने में मेरी मदद कोई
नहीं करता सिवाए तुम्हारे सरदार फ़रिश्ते मीकाएल
के।

11 1 मादी बादशाह दारा की हुकूमत के पहले
साल से ही मैं मीकाएल के साथ खड़ा रहा
हूँ ताकि उस को सहारा दूँ और उस की हिफ़ाज़त
करूँ।)

शिमाली और जुनूबी सल्तनतों की जंगें

2 अब मैं तुझे वह कुछ बताता हूँ जो यक़ीनन
पेश आएगा। फ़ार्स में मज़ीद तीन बादशाह तख़्त पर
बैठेंगे। इस के बाद एक चौथा आदमी बादशाह बनेगा
जो तमाम दूसरों से कहीं ज़्यादा दौलतमन्द होगा।
जब वह दौलत के बाइस ताक़तवर हो जाएगा तो
वह यूनानी मम्लकत से लड़ने के लिए सब कुछ जमा
करेगा।
3 फिर एक ज़ोरावर बादशाह बरपा हो जाएगा जो
बड़ी क़ुव्वत से हुकूमत करेगा और जो जी चाहे
करेगा। 4 लेकिन जूँ ही वह बरपा हो जाए उस की
सल्तनत टुकड़े टुकड़े हो कर एक शिमाली, एक
जुनूबी, एक मग़रिबी और एक मशरिक़ी हिस्से में
तक़्सीम हो जाएगी। न यह चार हिस्से पहली सल्तनत
जितने ताक़तवर होंगे, न बादशाह की औलाद तख़्त
पर बैठेगी, क्यूँकि उस की सल्तनत जड़ से उखाड़
कर दूसरों को दी जाएगी। 5 जुनूबी मुल्क का बादशाह
तक़वियत पाएगा, लेकिन उस का एक अफ़्सर कहीं
ज़्यादा ताक़तवर हो जाएगा, उस की हुकूमत कहीं
ज़्यादा मज़बूत होगी।
6 चन्द साल के बाद दोनों सल्तनतें मुत्तहिद हो
जाएँगी। अह्द को मज़बूत करने के लिए जुनूबी
बादशाह की बेटी की शादी शिमाली बादशाह से
कराई जाएगी। लेकिन न बेटी कामयाब होगी, न
उस का शौहर और न उस की ताक़त क़ाइम रहेगी।
उन दिनों में उसे उस के साथियों, बाप और शौहर
समेत दुश्मन के हवाले किया जाएगा। 7 बेटी की
जगह उस का एक रिश्तेदार खड़ा हो जाएगा जो
शिमाली बादशाह की फ़ौज पर हम्ला करके उस के
क़िले में घुस आएगा। वह उन से निपट कर फ़त्ह
पाएगा 8 और उन के ढाले हुए बुतों को सोने-चाँदी की
क़ीमती चीज़ों समेत छीन कर मिस्र ले जाएगा। वह
कुछ साल तक शिमाली बादशाह को नहीं छेड़ेगा।
9 फिर शिमाली बादशाह जुनूबी बादशाह के मुल्क में
घुस आएगा, लेकिन उसे अपने मुल्क में वापस जाना
पड़ेगा। 10 इस के बाद उस के बेटे जंग की तय्यारियाँ
करके बड़ी बड़ी फ़ौजें जमा करेंगे। उन में से एक
जुनूबी बादशाह की तरफ़ बढ़ कर सैलाब की तरह
जुनूबी मुल्क पर आएगी और लड़ते लड़ते उस के
क़िले तक पहुँचेगी।
11 फिर जुनूबी बादशाह तैश में आ कर शिमाली
बादशाह से लड़ने के लिए निकलेगा। शिमाली
बादशाह जवाब में बड़ी फ़ौज खड़ी करेगा, लेकिन
वह शिकस्त खा कर 12 तबाह हो जाएगी। तब जुनूबी
बादशाह का दिल ग़ुरूर से भर जाएगा, और वह
बेशुमार अफ़राद को मौत के घाट उतारेगा। तो भी वह
ताक़तवर नहीं रहेगा। 13 क्यूँकि शिमाली बादशाह
एक और फ़ौज जमा करेगा जो पहली की निस्बत
कहीं ज़्यादा बड़ी होगी। चन्द साल के बाद वह इस

बड़ी और हथियारों से लेस फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने आएगा।

14 उस वक़्त बहुत से लोग जुनूबी बादशाह के ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे। तेरी क़ौम के बेदीन लोग भी उस के ख़िलाफ़ खड़े हो जाएंगे और यूँ रोया को पूरा करेंगे। लेकिन वह ठोकर खा कर गिर जाएंगे। 15 फिर शिमाली बादशाह आ कर एक क़िलाबन्द शहर का मुहासरा करेगा। वह पुश्ता बना कर शहर पर क़ब्ज़ा कर लेगा। जुनूब की फ़ौजें उसे रोक नहीं सकेंगी, उन के बेहतरीन दस्ते भी बेबस हो कर उस का सामना नहीं कर सकेंगे। 16 हम्लाआवर बादशाह जो जी चाहे करेगा, और कोई उस का सामना नहीं कर सकेगा।

उस वक़्त वह ख़ूबसूरत मुल्क इस्राईल में टिक जाएगा और उसे तबाह करने का इख़्तियार रखेगा। 17 तब वह अपनी पूरी सल्तनत पर क़ाबू पाने का मन्सूबा बांधेगा। इस ज़िम्न में वह जुनूबी बादशाह के साथ अह्द बांध कर उस से अपनी बेटी की शादी कराएगा ताकि जुनूबी मुल्क को तबाह करे, लेकिन बेफ़ाइदा। मन्सूबा नाकाम हो जाएगा।

18 इस के बाद वह साहिली इलाक़ों की तरफ़ रुख़ करेगा। उन में से वह बहुतों पर क़ब्ज़ा भी करेगा, लेकिन आख़िरकार एक हुक्मरान उस के गुस्ताखाना रवय्ये का ख़ातमा करेगा, और उसे शर्मिन्दा हो कर पीछे हटना पड़ेगा। 19 फिर शिमाली बादशाह अपने मुल्क के क़िलों के पास वापस आएगा, लेकिन इतने में ठोकर खा कर गिर जाएगा। तब उस का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

20 उस की जगह एक बादशाह बरपा हो जाएगा जो अपने अफ़्सर को शानदार मुल्क इस्राईल में भेजेगा ताकि वहाँ से गुज़र कर लोगों से टैक्स ले। लेकिन थोड़े दिनों के बाद वह तबाह हो जाएगा। न वह किसी झगड़े के सबब से हलाक होगा, न किसी जंग में।

इस्राईली क़ौम का बड़ा दुश्मन

21 उस की जगह एक क़ाबिल-ए-मज़म्मत आदमी खड़ा हो जाएगा। वह तख़्त के लिए मुक़र्रर नहीं हुआ होगा बल्कि ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर आ कर साज़िशों के वसीले से बादशाह बनेगा। 22 मुख़ालिफ़ फ़ौजें उस पर टूट पड़ेंगी, लेकिन वह सैलाब की तरह उन पर आ कर उन्हें बहा ले जाएगा। वह और अह्द का एक रईस तबाह हो जाएंगे। 23 क्यूँकि उस के साथ अह्द बांधने के बाद वह उसे फ़रेब देगा और सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद के ज़रीए इक़तिदार हासिल कर लेगा। 24 वह ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर दौलतमन्द सूबों में घुस कर वह कुछ करेगा जो न उस के बाप और न उस के बापदादा से कभी सरज़द हुआ होगा। लूटा हुआ माल और मिलकियत वह अपने लोगों में तक़्सीम करेगा। वह क़िलाबन्द शहरों पर क़ब्ज़ा करने के मन्सूबे भी बांधेगा, लेकिन सिर्फ़ मह्दूद अर्से के लिए।

25 फिर वह हिम्मत बांध कर और पूरा ज़ोर लगा कर बड़ी फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने जाएगा। जवाब में जुनूबी बादशाह एक बड़ी और निहायत ही ताक़तवर फ़ौज को लड़ने के लिए तय्यार करेगा। तो भी वह शिमाली बादशाह का सामना नहीं कर पाएगा, इस लिए कि उस के ख़िलाफ़ साज़िशें कामयाब हो जाएँगी। 26 उस की रोटी खाने वाले ही उसे तबाह करेंगे। तब उस की फ़ौज मुन्तशिर हो जाएगी, और बहुत से अफ़राद मैदान-ए-जंग में खेत आएँगे।

27 दोनों बादशाह मुज़ाकरात के लिए एक ही मेज़ पर बैठ जाएंगे। वहाँ दोनों झूट बोलते हुए एक दूसरे को नुक़्सान पहुँचाने के लिए कोशाँ रहेंगे। लेकिन किसी को कामयाबी हासिल नहीं होगी, क्यूँकि मुक़र्ररा आख़िरी वक़्त अभी नहीं आना है। 28 शिमाली बादशाह बड़ी दौलत के साथ अपने मुल्क में वापस चला जाएगा। रास्ते में वह मुक़द्दस अह्द की क़ौम इस्राईल पर ध्यान दे कर उसे नुक़्सान पहुँचाएगा, फिर अपने वतन वापस जाएगा।

29 मुक़र्ररा वक़्त पर वह दुबारा जुनूबी मुल्क में घुस आएगा, लेकिन पहले की निस्बत इस बार नतीजा फ़र्क़ होगा। 30 क्यूँकि कित्तीम के बहरी जहाज़ उस की मुख़ालफ़त करेंगे, और वह हौसला हारेगा।

तब वह मुड़ कर मुक़द्दस अह्द की क़ौम पर अपना
पूरा ग़ुस्सा उतारेगा। जो मुक़द्दस अह्द को तर्क करेंगे
उन पर वह मेहरबानी करेगा। 31 उस के फ़ौजी आ
कर क़िलाबन्द मक़्दिस की बेहुरमती करेंगे। वह
रोज़ाना की क़ुर्बानियों का इन्तिज़ाम बन्द करके
तबाही का मकरूह बुत खड़ा करेंगे। 32 जो यहूदी
पहले से अह्द की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे होंगे उन्हें
वह चिकनी-चुपड़ी बातों से मुर्तद हो जाने पर आमादा
करेगा। लेकिन जो लोग अपने ख़ुदा को जानते हैं वह
मज़बूत रह कर उस की मुख़ालफ़त करेंगे। 33 क़ौम
के समझदार बहुतों को सहीह राह की तालीम देंगे।
लेकिन कुछ अर्से के लिए वह तलवार, आग, क़ैद
और लूट-मार के बाइस डाँवाँडोल रहेंगे। 34 उस वक़्त
उन्हें थोड़ी बहुत मदद हासिल तो होगी, लेकिन बहुत
से ऐसे लोग उन के साथ मिल जाएंगे जो मुख़लिस
नहीं होंगे। 35 समझदारों में से कुछ डाँवाँडोल हो
जाएंगे ताकि लोगों को आज़मा कर आख़िरी वक़्त
तक ख़ालिस और पाक-साफ़ किया जाए। क्यूँकि
मुक़र्ररा वक़्त कुछ देर के बाद आएगा।

36 बादशाह जो जी चाहे करेगा। वह सरफ़राज़ हो
कर अपने आप को तमाम माबूदों से अज़ीम क़रार
देगा। ख़ुदाओं के ख़ुदा के ख़िलाफ़ वह नाक़ाबिल-
ए-बयान कुफ़्र बकेगा। उसे कामयाबी भी हासिल
होगी, लेकिन सिर्फ़ उस वक़्त तक जब तक इलाही
ग़ज़ब ठंडा न हो जाए। क्यूँकि जो कुछ मुक़र्रर हुआ
है उसे पूरा होना है। 37 बादशाह न अपने बापदादा
के देवताओं की पर्वा करेगा, न औरतों के अज़ीज़
देवता की, न किसी और की। क्यूँकि वह अपने आप
को सब पर सरफ़राज़ करेगा। 38 इन देवताओं के
बजाय वह क़िलों के देवता की पूजा करेगा जिस
से उस के बापदादा वाक़िफ़ ही नहीं थे। वह सोने-
चाँदी, जवाहिरात और क़ीमती तुह्फ़ों से देवता का
एहतिराम करेगा। 39 चुनाँचे वह अजनबी माबूद की
मदद से मज़बूत क़िलों पर हम्ला करेगा। जो उस की
हुकूमत मानें उन की वह बड़ी इज़्ज़त करेगा, इन्हें
बहुतों पर मुक़र्रर करेगा और उन में अज्र के तौर पर
ज़मीन तक़्सीम करेगा।

40 लेकिन फिर आख़िरी वक़्त आएगा। जुनूबी
बादशाह जंग में उस से टकराएगा, तो जवाब में
शिमाली बादशाह रथ, घुड़सवार और मुतअद्दिद
बहरी जहाज़ ले कर उस पर टूट पड़ेगा। तब वह
बहुत से मुल्कों में घुस आएगा और सैलाब की तरह
सब कुछ ग़र्क़ करके आगे बढ़ेगा। 41 इस दौरान
वह ख़ूबसूरत मुल्क इस्राईल में भी घुस आएगा।
बहुत से ममालिक शिकस्त खाएँगे, लेकिन अदोम
और मोआब अम्मोन के मर्कज़ी हिस्से समेत बच
जाएंगे। 42 उस वक़्त उस का इक़तिदार बहुत से
ममालिक पर छा जाएगा, मिस्र भी नहीं बचेगा।
43 शिमाली बादशाह मिस्र की सोने-चाँदी और बाक़ी
दौलत पर क़ब्ज़ा करेगा, और लिबिया और एथोपिया
भी उस के नक़्श-ए-क़दम पर चलेंगे। 44 लेकिन फिर
मशरिक़ और शिमाल की तरफ़ से अफ़्वाहें उसे
सदमा पहुँचाएँगी, और वह बड़े तैश में आ कर बहुतों
को तबाह और हलाक करने के लिए निकलेगा।
45 रास्ते में वह समुन्दर और ख़ूबसूरत मुक़द्दस पहाड़
के दरमियान अपने शाही ख़ैमे लगा लेगा। लेकिन फिर
उस का अन्जाम आएगा, और कोई उस की मदद नहीं
करेगा।

मुर्दे जी उठते हैं

12 1 उस वक़्त फ़रिश्तों का अज़ीम सरदार
मीकाएल उठ खड़ा होगा, वह जो तेरी क़ौम
की शफ़ाअत करता है। मुसीबत का ऐसा वक़्त होगा
कि क़ौमों के पैदा होने से ले कर उस वक़्त तक
नहीं हुआ होगा। लेकिन साथ साथ तेरी क़ौम को
नजात मिलेगी। जिस का भी नाम अल्लाह की किताब
में दर्ज है वह नजात पाएगा। 2 तब ख़ाक में सोए
हुए मुतअद्दिद लोग जाग उठेंगे, कुछ अबदी ज़िन्दगी
पाने के लिए और कुछ अबदी रुस्वाई और घिन
का निशाना बनने के लिए। 3 जो समझदार हैं वह
आसमान की आब-ओ-ताब की मानिन्द चमकेंगे,

और जो बहुतों को रास्त राह पर लाए हैं वह हमेशा
तक सितारों की तरह जगमगाएँगे।
4 लेकिन तू, ऐ दान्याल, इन बातों को छुपाए रख!
इस किताब पर आख़िरी वक़्त तक मुहर लगा दे!
बहुत लोग इधर उधर घूमते फिरेंगे, और इल्म में
इज़ाफ़ा होता जाएगा।"

आख़िरी वक़्त

5 फिर मैं, दान्याल ने दरया के पास दो आदमियों
को देखा। एक इस किनारे पर खड़ा था जबकि दूसरा
दूसरे किनारे पर। 6 कतान से मुलब्बस आदमी बहते
हुए पानी के ऊपर था। किनारों पर खड़े आदमियों
में से एक ने उस से पूछा, "इन हैरतअंगेज़ बातों की
तक्मील तक मज़ीद कितनी देर लगेगी?"
7 कतान से मुलब्बस आदमी ने दोनों हाथ आसमान
की तरफ़ उठाए और अबद तक ज़िन्दा ख़ुदा की
क़सम खा कर बोला, "पहले एक अर्सा, फिर दो
अर्से, फिर आधा अर्सा गुज़रेगा। पहले मुक़द्दस
क़ौम की ताक़त को पाश पाश करने का सिलसिला
इख़तिताम पर पहुँचना है। इस के बाद ही यह तमाम
बातें तक्मील तक पहुँचेंगी।"
8 गो मैं ने उस की यह बात सुनी, लेकिन वह मेरी
समझ में न आई। चुनाँचे मैं ने पूछा, "मेरे आक़ा, इन
तमाम बातों का क्या अन्जाम होगा?"
9 वह बोला, "ऐ दान्याल, अब चला जा! क्यूँकि इन
बातों को आख़िरी वक़्त तक छुपाए रखना है। उस
वक़्त तक इन पर मुहर लगी रहेगी। 10 बहुतों को
आज़मा कर पाक-साफ़ और ख़ालिस किया जाएगा।
लेकिन बेदीन बेदीन ही रहेंगे। कोई भी बेदीन यह
नहीं समझेगा, लेकिन समझदारों को समझ आएगी।
11 जिस वक़्त से रोज़ाना की क़ुर्बानी का इन्तिज़ाम
बन्द किया जाएगा और तबाही के मकरूह बुत
को मक़्दिस में खड़ा किया जाएगा उस वक़्त से
1,290 दिन गुज़रेंगे। 12 जो सब्र करके 1,335 दिनों
के इख़तिताम तक क़ाइम रहे वह मुबारक है!
13 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, आख़िरी वक़्त की तरफ़
बढ़ता चला जा! तू आराम करेगा और फिर दिनों के
इख़तिताम पर जी उठ कर अपनी मीरास पाएगा।"

होसेअ

नबी का ख़ानदान इस्राईल की अलामत है

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो उन
दिनों में होसेअ बिन बैरी पर नाज़िल हुआ जब
उज़्ज़ियाह, यूताम, आख़ज़ और हिज़क़ियाह यहूदाह
के बादशाह और यरुबिआम बिन यूआस इस्राईल का
बादशाह था।

2 जब रब पहली बार होसेअ से हमकलाम हुआ तो
उस ने हुक्म दिया, "जा, ज़िनाकार औरत से शादी
कर और ज़िनाकार बच्चे पैदा कर, क्यूँकि मुल्क रब
की पैरवी छोड़ कर मुसलसल ज़िना करता रहता
है।" 3 चुनाँचे होसेअ की जुमर बिन्त दिब्लाइम से
शादी हुई। उस का पाँओ भारी हुआ, और बेटा पैदा
हुआ। 4 तब रब ने होसेअ से कहा, "उस का नाम
यज़्रएल रखना। क्यूँकि जल्द ही मैं याहू के ख़ानदान
को यज़्रएल में उस क़त्ल-ओ-ग़ारत की सज़ा दूँगा जो
उस से सरज़द हुई। साथ साथ मैं इस्राईली बादशाही
को भी ख़त्म करूँगा। 5 उस दिन मैं मैदान-ए-यज़्रएल
में इस्राईल की कमान को तोड़ डालूँगा।"

6 इस के बाद जुमर दुबारा उम्मीद से हुई। इस बार
बेटी पैदा हुई। रब ने होसेअ से कहा, "इस का नाम
लोरुहामा यानी 'जिस पर रहम न हुआ हो' रखना,
क्यूँकि आइन्दा मैं इस्राईलियों पर रहम नहीं करूँगा
बल्कि वह मेरे रहम से सरासर महरूम रहेंगे।

7 लेकिन यहूदाह के बाशिन्दों पर मैं रहम करके
उन्हें छुटकारा दूँगा। मैं उन्हें कमान, तलवार, जंग के
हथियारों, घोड़ों या घुड़सवारों की मारिफ़त छुटकारा
नहीं दूँगा बल्कि मैं जो रब उन का ख़ुदा हूँ ख़ुद ही
उन्हें नजात दूँगा।"

8 लोरुहामा का दूध छुड़ाने पर जुमर फिर हामिला
हुई। इस मर्तबा बेटा पैदा हुआ। 9 तब रब ने फ़रमाया,
"इस का नाम लोअम्मी यानी 'मेरी क़ौम नहीं' रखना।
क्यूँकि तुम मेरी क़ौम नहीं, और मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं
हूँगा।

10 लेकिन वह वक़्त आएगा जब इस्राईली समुन्दर
की रेत जैसे बेशुमार होंगे। न उन की पैमाइश की
जा सकेगी, न उन्हें गिना जा सकेगा। तब जहाँ उन
से कहा गया कि 'तुम मेरी क़ौम नहीं' वहाँ वह
'ज़िन्दा ख़ुदा के फ़र्ज़न्द' कहलाएँगे। 11 तब यहूदाह
और इस्राईल के लोग मुत्तहिद हो जाएंगे और मिल
कर एक राहनुमा मुक़र्रर करेंगे। फिर वह मुल्क में
से निकल आएँगे, क्यूँकि यज़्रएल [k]का दिन अज़ीम
होगा!

2 1 उस वक़्त अपने भाइयों का नाम अम्मी यानी
'मेरी क़ौम' और अपनी बहनों का नाम रुहामा
यानी 'जिस पर रहम किया गया हो' रखो।

इस्राईल बेवफ़ा जुमर की मानिन्द है

2 अपनी माँ इस्राईल पर इल्ज़ाम लगाओ, हाँ उस
पर इल्ज़ाम लगाओ! क्यूँकि न वह मेरी बीवी है, न
मैं उस का शौहर हूँ। वह अपने चिहरे से और अपनी
छातियों के दरमियान से ज़िनाकारी के निशान दूर
करे, 3 वर्ना मैं उस के कपड़े उतार कर उसे उस नंगी
हालत में छोड़ूँगा जिस में वह पैदा हुई। मैं होने दूँगा
कि वह रेगिस्तान और झुलसती ज़मीन में तब्दील हो
जाए, कि वह प्यास के मारे मर जाए। 4 मैं उस के
बच्चों पर भी रहम नहीं करूँगा, क्यूँकि वह ज़िनाकार
बच्चे हैं। 5 उन की माँ ने ज़िना किया, उन्हें जन्म देने
वाली ने शर्मनाक हरकतें की हैं। वह बोली, 'मैं अपने

---

[k]यानी अल्लाह बीज बोता है।

आशिक़ों के पीछे भाग जाऊँगी। आख़िर मेरी रोटी,
पानी, ऊन, कतान, तेल और पीने की चीज़ें वही
मुहय्या करते हैं।'
6 इस लिए जहाँ भी वह चलना चाहे वहाँ मैं उसे
काँटेदार झाड़ियों से रोक दूँगा, मैं ऐसी दीवार खड़ी
करूँगा कि उसे रास्ते का पता न चले। 7 वह अपने
आशिक़ों का पीछा करते करते थक जाएगी और
कभी उन तक पहुँचेगी नहीं, वह उन का खोज लगाती
रहेगी लेकिन उन्हें पाएगी नहीं। फिर वह बोलेगी, 'मैं
अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँ, क्यूँकि उस
वक़्त मेरा हाल आज की निस्बत कहीं बेहतर था।'
8 लेकिन वह यह बात जानने के लिए तय्यार नहीं कि
उसे अल्लाह ही की तरफ़ से सब कुछ मुहय्या हुआ
है। मैं ही ने उसे वह अनाज, मै, तेल और कस्रत
की सोना-चाँदी दे दी जो लोगों ने बाल देवता को
पेश की। 9 इस लिए मैं अपने अनाज और अपने
अंगूर को फ़सल की कटाई से पहले पहले वापस
लूँगा। जो ऊन और कतान मैं उसे देता रहा ताकि
उस की बरहनगी नज़र न आए उसे मैं उस से छीन
लूँगा। 10 उस के आशिक़ों के देखते देखते मैं उस
के सारे कपड़े उतारूँगा, और कोई उसे मेरे हाथ से
नहीं बचाएगा। 11 मैं उस की तमाम ख़ुशियाँ बन्द कर
दूँगा। न कोई ईद, न नए चाँद का तहवार, न सबत
का दिन या बाक़ी कोई मुक़र्ररा जश्न मनाया जाएगा।
12 मैं उस के अंगूर और अन्जीर के बाग़ों को तबाह
करूँगा, उन चीज़ों को जिन के बारे में उस ने कहा,
'यह मुझे आशिक़ों की ख़िदमत करने के इवज़ मिल
गई हैं।' मैं यह बाग़ जंगल बनने दूँगा, और जंगली
जानवर उन का फल खाएँगे।
13 रब फ़रमाता है कि मैं उसे उन दिनों की सज़ा दूँगा
जब उस ने बाल के बुतों को बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश
कीं। उस वक़्त वह अपने आप को बालियों और
ज़ेवरात से सजा कर अपने आशिक़ों के पीछे भाग
गई। मुझे वह भूल गई।

अल्लाह वफ़ादार रहता है

14 चुनाँचे अब मैं उसे मनाने की कोशिश करूँगा,
उसे रेगिस्तान में ले जा कर उस से नर्मी से बात
करूँगा। 15 फिर मैं उसे वहाँ से हो कर उस के
अंगूर के बाग़ वापस करूँगा और वादी-ए-अकूर [l]को
उम्मीद के दरवाज़े में बदल दूँगा। उस वक़्त वह ख़ुशी
से मेरे पीछे हो कर वहाँ चलेगी, बिलकुल उसी तरह
जिस तरह जवानी में करती थी जब मेरे पीछे हो कर
मिस्र से निकल आई।"
16 रब फ़रमाता है, "उस दिन तू मुझे पुकारते वक़्त
'ऐ मेरे बाल' [m]नहीं कहेगी बल्कि 'ऐ मेरे ख़ावन्द।'
17 मैं बाल देवताओं के नाम तेरे मुँह से निकाल दूँगा,
और तू आइन्दा उन के नामों का ज़िक्र तक नहीं
करेगी। 18 उस दिन मैं जंगली जानवरों, परिन्दों और
रेंगने वाले जानदारों के साथ अह्द बांधूँगा ताकि वह
इस्राईल को नुक़्सान न पहुँचाएँ। कमान और तलवार
को तोड़ कर मैं जंग का ख़तरा मुल्क से दूर कर दूँगा।
सब आराम-ओ-सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।
19 मैं तेरे साथ अबदी रिश्ता बांधूँगा, ऐसा रिश्ता
जो रास्ती, इन्साफ़, फ़ज़्ल और रहम पर मब्नी होगा।
20 हाँ, जो रिश्ता मैं तेरे साथ बांधूँगा उस की बुन्याद
वफ़ादारी होगी। तब तू रब को जान लेगी।"
21 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं सुनूँगा। मैं आसमान
की सुन कर बादल पैदा करूँगा, आसमान ज़मीन की
सुन कर बारिश बरसाएगा, 22 ज़मीन अनाज, अंगूर
और ज़ैतून की सुन कर उन्हें तक़वियत देगी, और यह
चीज़ें मैदान-ए-यज़्रएल [n]की सुन कर कस्रत से पैदा
हो जाएँगी। 23 उस वक़्त मैं अपनी ख़ातिर इस्राईल
का बीज मुल्क में बो दूँगा। 'लोरुहामा' [o]पर मैं रहम

[l]यानी मुसीबत की वादी।

[m]बाल का मतलब 'मालिक' है।

[n]अल्लाह बीज बोता है।

[o]जिस पर रहम न हुआ हो।

करूँगा, और 'लोअम्मी' [p]से मैं कहूँगा, 'तू मेरी क़ौम है।' जवाब में वह बोलेगी, 'तू मेरा ख़ुदा है'।"

जुमर की तरह इस्राईल को वापस ख़रीदा जाएगा

3 1 रब मुझ से हमकलाम हुआ, "जा, अपनी बीवी
को दुबारा प्यार कर, हालाँकि उस का आशिक़
है जिस से उस ने ज़िना किया है। उसे यूँ प्यार
कर जिस तरह रब इस्राईलियों को प्यार करता है,
हालाँकि उन का रुख़ दीगर माबूदों की तरफ़ है और
उन्हें उन ही की अंगूर की टिक्कियाँ पसन्द हैं।"
2 तब मैं ने चाँदी के 15 सिक्के और जौ के 195
किलोग्राम दे कर उसे वापस ख़रीद लिया। 3 मैं ने उस
से कहा, "अब तुझे बड़े अर्से तक मेरे साथ रहना है।
इतने में न ज़िना कर, न किसी आदमी से सोह्बत
रख। मैं भी बड़ी देर तक तुझ से हमबिसतर नहीं
हूँगा।"
4 इस्राईल का यही हाल होगा। बड़ी देर तक न
उन का बादशाह होगा, न राहनुमा, न क़ुर्बानी का
इन्तिज़ाम, न यादगार पत्थर, न इमाम का बालापोश।
उन के पास बुत तक भी नहीं होंगे। 5 इस के बाद
इस्राईली वापस आ कर रब अपने ख़ुदा और दाऊद
अपने बादशाह को तलाश करेंगे। आख़िरी दिनों में
वह लरज़ते हुए रब और उस की भलाई की तरफ़
रुजू करेंगे।

इमामों पर रब का इल्ज़ाम

4 1 ऐ इस्राईलियो, रब का कलाम सुनो! क्यूँकि
रब का मुल्क के बाशिन्दों से मुक़द्दमा है।
"इल्ज़ाम यह है कि मुल्क में न वफ़ादारी, न मेहरबानी
और न अल्लाह का इर्फ़ान है। 2 कोसना, झूट बोलना,
चोरी और ज़िना करना आम हो गया है। रोज़-ब-
रोज़ क़त्ल-ओ-ग़ारत की नई ख़बरें मिलती रहती हैं।
3 इसी लिए मुल्क में काल है और उस के तमाम
बाशिन्दे पज़मुर्दा हो गए हैं। जंगली जानवर, परिन्दे
और मछलियाँ भी फ़ना हो रही हैं।
4 लेकिन बिलावजह किसी पर इल्ज़ाम मत लगाना,
न ख़्वाह-म-ख़्वाह किसी की तम्बीह करो! ऐ इमामो,
मैं तुम ही पर इल्ज़ाम लगाता हूँ। 5 ऐ इमामो, दिन के
वक़्त तू ठोकर खा कर गिरेगा, और रात के वक़्त
नबी गिर कर तेरे साथ पड़ा रहेगा। मैं तेरी माँ को भी
तबाह करूँगा। 6 अफ़सोस, मेरी क़ौम इस लिए तबाह
हो रही है कि वह सहीह इल्म नहीं रखती। और क्या
अजब जब तुम इमामों ने यह इल्म रद्द कर दिया है।
अब मैं तुम्हें भी रद्द करता हूँ। आइन्दा तुम इमाम की
ख़िदमत अदा नहीं करोगे। चूँकि तुम अपने ख़ुदा की
शरीअत भूल गए हो इस लिए मैं तुम्हारी औलाद को
भी भूल जाऊँगा।
7 इमामों की तादाद जितनी बढ़ती गई उतना ही वह
मेरा गुनाह करते गए। उन्हों ने अपनी इज़्ज़त ऐसी
चीज़ के इवज़ छोड़ दी जो रुस्वाई का बाइस है।
8 मेरी क़ौम के गुनाह उन की ख़ुराक हैं, और वह
इस लालच में रहते हैं कि लोगों का क़ुसूर मज़ीद
बढ़ जाए। 9 चुनाँचे इमामों और क़ौम के साथ एक
जैसा सुलूक किया जाएगा। दोनों को मैं उन के चाल-
चलन की सज़ा दूँगा, दोनों को उन की हरकतों का
अज्र दूँगा। 10 खाना तो वह खाएँगे लेकिन सेर नहीं
होंगे। ज़िना भी करते रहेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। इस से
उन की तादाद नहीं बढ़ेगी। क्यूँकि उन्हों ने रब का
ख़याल करना छोड़ दिया है।
11 ज़िना करने और नई और पुरानी मै पीने से लोगों
की अक़्ल जाती रहती है। 12 मेरी क़ौम लकड़ी से
दरयाफ़्त करती है कि क्या करना है, और उस की
लाठी उसे हिदायत देती है। क्यूँकि ज़िनाकारी की
रूह ने उन्हें भटका दिया है, ज़िना करते करते वह
अपने ख़ुदा से कहीं दूर हो गए हैं। 13 वह पहाड़ों की
चोटियों पर अपने जानवरों को क़ुर्बान करते हैं और
पहाड़ियों पर चढ़ कर बलूत, सफ़ेदा या किसी और

---

[p]मेरी क़ौम नहीं।

दरख़्त के ख़ुशगवार साय में बख़ूर की क़ुर्बानियाँ पेश
करते हैं। इसी लिए तुम्हारी बेटियाँ इस्मतफ़रोश बन
गई हैं, और तुम्हारी बहूएँ ज़िना करती हैं। 14 लेकिन
मैं उन्हें उन की इस्मतफ़रोशी और ज़िनाकारी की
सज़ा क्यूँ दूँ जबकि तुम मर्द कस्बियों से सोह्बत
रखते और देवताओं की ख़िदमत में इस्मतफ़रोशी
करने वाली औरतों के साथ क़ुर्बानियाँ चढ़ाते हो?
ऐसी हरकतों से नासमझ क़ौम तबाह हो रही है।

15 ऐ इस्राईल, तू इस्मतफ़रोश है, लेकिन यहूदाह
ख़बरदार रहे कि वह इस जुर्म में मुलव्वस न हो
जाए। इस्राईल के शहरों जिल्जाल और बैत-आवन
[q]की क़ुर्बानगाहों के पास मत जाना। ऐसी जगहों पर
रब का नाम ले कर उस की हयात की क़सम खाना
मना है। 16 इस्राईल तो ज़िद्दी गाय की तरह अड़ गया
है। तो फिर रब उन्हें किस तरह सब्ज़ाज़ार में भेड़ के
बच्चों की तरह चरा सकता है?

17 इस्राईल [r]तो बुतों का इत्तिहादी है, उसे छोड़ दे!
18 यह लोग शराब की महफ़िल से फ़ारिग़ हो कर
ज़िनाकारी में लग जाते हैं। वह नाजाइज़ मुहब्बत
करते करते कभी नहीं थकते। लेकिन इस का अज्र
उन की अपनी बेइज़्ज़ती है। 19 आँधी उन्हें अपनी
लपेट में ले कर उड़ा ले जाएगी, और वह अपनी
क़ुर्बानियों के बाइस शर्मिन्दा हो जाएंगे।

इस्राईल और यहूदाह दोनों क़ुसूरवार हैं

5 1 ऐ इमामो, सुनो मेरी बात! ऐ इस्राईल के घराने,
तवज्जुह दे! ऐ शाही ख़ानदान, मेरे पैग़ाम पर ग़ौर
कर!

तुम पर फ़ैसला है, क्यूँकि अपनी बुतपरस्ती से तुम
ने मिस्फ़ाह में फंदा लगा दिया, तबूर पहाड़ पर जाल
बिछा दिया 2 और शित्तीम में गढ़ा खुदवा लिया है।
ख़बरदार! मैं तुम सब को सज़ा दूँगा।

3 मैं तो इस्राईल को ख़ूब जानता हूँ, वह मुझ से छुपा
नहीं रह सकता। इस्राईल अब इस्मतफ़रोश बन गया
है, वह नापाक है। 4 उन की बुरी हरकतें उन्हें उन
के ख़ुदा के पास वापस आने नहीं देतीं। क्यूँकि उन
के अन्दर ज़िनाकारी की रूह है, और वह रब को
नहीं जानते। 5 इस्राईल का तकब्बुर उस के ख़िलाफ़
गवाही देता है, और वह अपने क़ुसूर के बाइस गिर
जाएगा। यहूदाह भी उस के साथ गिर जाएगा।

6 तब वह अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को
ले कर रब को तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ाइदा। वह
उसे पा नहीं सकेंगे, क्यूँकि वह उन्हें छोड़ कर चला
गया है। 7 उन्हों ने रब से बेवफ़ा हो कर नाजाइज़
औलाद पैदा की है। अब नया चाँद उन्हें उन की
मौरूसी ज़मीनों समेत हड़प कर लेगा।

अपनी क़ौम पर अल्लाह का इल्ज़ाम

8 जिबिआ में नरसिंगा फूँको, रामा में तुरम बजाओ!
बैत-आवन में जंग के नारे बुलन्द करो। ऐ बिनयमीन,
दुश्मन तेरे पीछे पड़ गया है! 9 जिस दिन मैं सज़ा
दूँगा उस दिन इस्राईल वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा।
ध्यान दो कि मैं ने इस्राईली क़बीलों के बारे में
क़ाबिल-ए-एतिमाद बातें बताई हैं।

10 यहूदाह के राहनुमा उन जैसे बन गए हैं जो
नाजाइज़ तौर पर अपनी ज़मीन की हुदूद बढ़ा देते
हैं। जवाब में मैं अपना ग़ज़ब मूसलाधार बारिश की
तरह उन पर नाज़िल करूँगा। 11 इस्राईल पर इस लिए
ज़ुल्म हो रहा है और उस का हक़ मारा जा रहा है
कि वह बेमानी बुतों के पीछे भागने पर तुला हुआ
है। 12 मैं इस्राईल के लिए पीप और यहूदाह के लिए
सड़ाहट का बाइस बनूँगा।

13 इस्राईल ने अपनी बीमारी देखी और यहूदाह ने
अपने नासूर पर ग़ौर किया। तब इस्राईल ने असूर की
तरफ़ रुजू किया और असूर के अज़ीम बादशाह को

---

[q]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैत-एल है।

[r]होसेअ के इब्रानी मतन में यहाँ और मुतअद्दिद दीगर आयात में 'इफ़्राईम' मुस्तामल है जिस से मुराद शिमाली मुल्क-ए-इस्राईल है।

पैग़ाम भेज कर उस से मदद माँगी। लेकिन वह तुम्हें
शिफ़ा नहीं दे सकता, वह तुम्हारे नासूर का इलाज
नहीं कर सकता।
14 क्यूँकि मैं शेरबबर की तरह इस्राईल पर टूट
पड़ूँगा और जवान शेरबबर की तरह यहूदाह पर
झपट पड़ूँगा। मैं उन्हें फाड़ कर अपने साथ घसीट
ले जाऊँगा, और कोई उन्हें नहीं बचाएगा। 15 फिर मैं
अपने घर वापस जा कर उस वक़्त तक उन से दूर
रहूँगा जब तक वह अपना क़ुसूर तस्लीम करके मेरे
चिहरे को तलाश न करें। क्यूँकि जब वह मुसीबत में
फंस जाएंगे तब ही मुझे तलाश करेंगे।”

6 1 उस वक़्त वह कहेंगे, “आओ, हम रब के पास
वापस चलें। क्यूँकि उसी ने हमें फाड़ा, और
वही हमें शिफ़ा भी देगा। उसी ने हमारी पिटाई की,
और वही हमारी मर्हम-पट्टी भी करेगा। 2 दो दिन के
बाद वह हमें नए सिरे से ज़िन्दा करेगा और तीसरे
दिन हमें दुबारा उठा खड़ा करेगा ताकि हम उस के
हुज़ूर ज़िन्दगी गुज़ारें। 3 आओ, हम उसे जान लें, हम
पूरी जिद्द-ओ-जह्द के साथ रब को जानने के लिए
कोशाँ रहें। वह ज़रूर हम पर ज़ाहिर होगा। यह उतना
यक़ीनी है जितना सूरज का रोज़ाना तुलू होना यक़ीनी
है। जिस तरह मौसम-ए-बहार की तेज़ बारिश ज़मीन
को सेराब करती है उसी तरह अल्लाह भी हमारे पास
आएगा।”
4 “ऐ इस्राईल, मैं तेरे साथ क्या करूँ? ऐ यहूदाह, मैं
तेरे साथ क्या करूँ? तुम्हारी मुहब्बत सुब्ह की धुन्द
जैसी आरिज़ी है। धूप में ओस की तरह वह जल्द ही
काफ़ूर हो जाती है। 5 इसी लिए मैं ने अपने नबियों
की मारिफ़त तुम्हें पटख़ दिया, अपने मुँह के अल्फ़ाज़
से तुम्हें मार डाला है। मेरे इन्साफ़ का नूर सूरज की
तरह ही तुलू होता है। 6 क्यूँकि मैं क़ुर्बानी नहीं बल्कि
रहम पसन्द करता हूँ, भस्म होने वाली क़ुर्बानियों की
निस्बत मुझे यह पसन्द है कि तुम अल्लाह को जान
लो।

अदालत की फ़सल पक गई है

7 वह आदम शहर में अह्द तोड़ कर मुझ से बेवफ़ा
हो गए। 8 जिलिआद शहर मुजरिमों से भर गया है, हर
तरफ़ ख़ून के दाग़ हैं। 9 इमामों के जथ्थे डाकुओं की
मानिन्द बन गए हैं। क्यूँकि वह सिकम को पहुँचाने
वाले रास्ते पर मुसाफ़िरों की ताक लगा कर उन्हें
क़त्ल करते हैं। हाँ, वह शर्मनाक हरकतों से गुरेज़
नहीं करते। 10 मैं ने इस्राईल में ऐसी बातें देखी हैं जिन
से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्यूँकि इस्राईल ज़िना करता
है, वह अपने आप को नापाक करता है। 11 लेकिन
यहूदाह पर भी अदालत की फ़सल पकने वाली है।

7 जब कभी मैं अपनी क़ौम को बहाल करके
1 इस्राईल को शिफ़ा देना चाहता हूँ तो इस्राईल
का क़ुसूर और सामरिया की बुराई साफ़ ज़ाहिर
हो जाती है। क्यूँकि फ़रेब देना उन का पेशा ही बन
गया है। चोर घरों में नक़ब लगाते जबकि बाहर गली
में डाकूओं के जथ्थे लोगों को लूट लेते हैं। 2 लेकिन
वह ख़याल नहीं करते कि मुझे उन की तमाम बुरी
हरकतों की याद रहती है। वह नहीं समझते कि अब
वह अपने ग़लत कामों से घिरे रहते हैं, कि यह गुनाह
हर वक़्त मुझे नज़र आते हैं। 3 अपनी बुराई से वह
बादशाह को ख़ुश रखते हैं, उन के झूट से बुज़ुर्ग
लुत्फ़अन्दोज़ होते हैं। 4 सब के सब ज़िनाकार हैं। वह
उस तपते तनूर की मानिन्द हैं जो इतना गर्म है कि
नानबाई को उसे मज़ीद छेड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर
वह आटा गूँध कर उस के ख़मीर होने तक इन्तिज़ार
भी करे तो भी तनूर इतना गर्म रहता है कि रोटी पक
जाएगी। 5 हमारे बादशाह के जश्न पर राहनुमा मै पी
पी कर मस्त हो जाते हैं, और वह कुफ़्र बकने वालों
से हाथ मिलाता है। 6 यह लोग क़रीब आ कर ताक में
बैठ जाते हैं जबकि उन के दिल तनूर की तरह तपते
हैं। पूरी रात को उन का ग़ुस्सा सोया रहता है, लेकिन
सुब्ह के वक़्त वह बेदार हो कर शोलाज़न आग की
तरह दहकने लगता है। 7 सब तनूर की तरह तपते
तपते अपने राहनुमाओं को हड़प कर लेते हैं। उन के

तमाम बादशाह गिर जाते हैं, और एक भी मुझे नहीं
पुकारता।
8 इस्राईल दीगर अक़्वाम के साथ मिल कर एक हो
गया है। अब वह उस रोटी की मानिन्द है जो तवे पर
सिर्फ़ एक तरफ़ से पक गई है, दूसरी तरफ़ से कच्ची
ही है। 9 ग़ैरमुल्की उस की ताक़त खा खा कर उसे
कमज़ोर कर रहे हैं, लेकिन अभी तक उसे पता नहीं
चला। उस के बाल सफ़ेद हो गए हैं, लेकिन अभी
तक उसे मालूम नहीं हुआ। 10 इस्राईल का तकब्बुर
उस के ख़िलाफ़ गवाही देता है। तो भी न वह रब
अपने ख़ुदा के पास वापस आ जाता, न उसे तलाश
करता है।
11 इस्राईल नासमझ कबूतर की मानिन्द है जिसे
आसानी से वरग़लाया जा सकता है। पहले वह मिस्र
को मदद के लिए बुलाता, फिर असूर के पास भाग
जाता है। 12 लेकिन जूँ ही वह कभी इधर कभी इधर
दौड़ेंगे तो मैं उन पर अपना जाल डालूँगा, उन्हें उड़ते
हुए परिन्दों की तरह नीचे उतारूँगा। मैं उन की
यूँ तादीब करूँगा जिस तरह उन की जमाअत को
आगाह किया गया है।
13 उन पर अफ़सोस, क्यूँकि वह मुझ से भाग गए
हैं। उन पर तबाही आए, क्यूँकि वह मुझ से सरकश
हो गए हैं। मैं फ़िद्या दे कर उन्हें छुड़ाना चाहता था,
लेकिन जवाब में वह मेरे बारे में झूट बोलते हैं।
14 वह ख़ुलूसदिली से मुझ से इल्तिजा नहीं करते।
वह बिस्तर पर लेटे लेटे "हाय हाय" करते और ग़ल्ला
और अंगूर को हासिल करने के लिए अपने आप को
ज़ख़्मी करते हैं। लेकिन मुझ से वह दूर रहते हैं।
15 मैं ही ने उन्हें तर्बियत दी, मैं ही ने उन्हें तक़वियत
दी, लेकिन वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधते हैं।
16 वह तौबा करके वापस आ जाते हैं, लेकिन मेरे
पास नहीं, लिहाज़ा वह ढीली कमान जैसे बेकार हो
गए हैं। चुनाँचे उन के राहनुमा कुफ़्र बकने के सबब
से तलवार की ज़द में आ कर हलाक हो जाएंगे। इस
बात के बाइस वह मिस्र में मज़ाक़ का निशाना बन
जाएंगे।

अल्लाह की बेवफ़ा क़ौम पर अदालत

8 1 नरसिंगा बजाओ! दुश्मन उक़ाब की तरह
रब के घर पर झपट्टा मारने को है। क्यूँकि
लोगों ने मेरे अह्द को तोड़ कर मेरी शरीअत की
ख़िलाफ़वरज़ी की है। 2 बेशक वह मदद के लिए
चीख़ते चिल्लाते हैं, 'ऐ हमारे ख़ुदा, हम तो तुझे जानते
हैं, हम तो इस्राईल हैं।' 3 लेकिन हक़ीक़त में इस्राईल
ने वह कुछ मुस्तरद कर दिया है जो अच्छा है। चुनाँचे
दुश्मन उस का ताक़्क़ुब करे! 4 उन्हों ने मेरी मर्ज़ी
पूछे बग़ैर अपने बादशाह मुक़र्रर किए, मेरी मन्ज़ूरी
के बग़ैर अपने राहनुमाओं को चुन लिया है। अपने
सोने-चाँदी से अपने लिए बुत बना कर वह अपनी
तबाही अपने सर पर लाए हैं।
5 ऐ सामरिया, मैं ने तेरे बछड़े को रद्द कर दिया है!
मेरा ग़ज़ब तेरे बाशिन्दों पर नाज़िल होने वाला है,
क्यूँकि वह पाक-साफ़ हो जाने के क़ाबिल ही नहीं!
यह हालत कब तक जारी रहेगी? 6 ऐ इस्राईल, जिस
बछड़े की पूजा तू करता है उसे दस्तकार ही ने बनाया
है। सामरिया का बछड़ा ख़ुदा नहीं है बल्कि पाश पाश
हो जाएगा।
7 वह हवा का बीज बो रहे हैं और आँधी की
फ़सल काटेंगे। अनाज की फ़सल तय्यार है, लेकिन
बालियाँ कहीं नज़र नहीं आतीं। इस से आटा मिलने
का इम्कान ही नहीं। और अगर थोड़ा बहुत गन्दुम
मिले भी तो ग़ैरमुल्की उसे हड़प कर लेंगे।
8 हाँ, तमाम इस्राईल को हड़प कर लिया गया है।
अब वह क़ौमों में ऐसा बर्तन बन गया है जो कोई
पसन्द नहीं करता। 9 क्यूँकि उस के लोग असूर के
पास चले गए हैं। जंगली गधा तो अकेला रहता
है, लेकिन इस्राईल अपने आशिक़ को तुह्फ़े दे कर
ख़ुश रखने पर तुला रहता है। 10 लेकिन ख़्वाह वह
दीगर क़ौमों में कितने तुह्फ़े क्यूँ न तक़्सीम करें
अब मैं उन्हें सज़ा देने के लिए जमा करूँगा। जल्द
ही वह शहन्शाह के बोझ तले पेच-ओ-ताब खाने
लगेंगे। 11 गो इस्राईल ने गुनाहों को दूर करने के लिए

मुतअद्दिद क़ुर्बानगाहें तामीर कीं, लेकिन वह उस
के लिए गुनाह का बाइस बन गई हैं। 12 ख़्वाह मैं
अपने अह्काम को इस्राईलियों के लिए हज़ारों दफ़ा
क्यूँ न क़लमबन्द करता, तो भी फ़र्क़ न पड़ता, वह
समझते कि यह अह्काम अजनबी हैं, यह हम पर
लागू नहीं होते। 13 गो वह मुझे क़ुर्बानियाँ पेश करके
उन का गोश्त खाते हैं, लेकिन मैं, रब इन से ख़ुश नहीं
होता बल्कि उन के गुनाहों को याद करके उन्हें सज़ा
दूँगा। तब उन्हें दुबारा मिस्र जाना पड़ेगा। 14 इस्राईल
ने अपने ख़ालिक़ को भूल कर बड़े महल बना लिए हैं,
और यहूदाह ने मुतअद्दिद शहरों को क़िलाबन्द बना
लिया है। लेकिन मैं उन के शहरों पर आग नाज़िल
करके उन के महलों को भस्म कर दूँगा।"

इस्राईल का अन्जाम

9 1 ऐ इस्राईल, ख़ुशी न मना, दीगर अक़्वाम की
तरह शादियाना मत बजा। क्यूँकि तू ज़िना करते
करते अपने ख़ुदा से दूर होता जा रहा है। जहाँ भी लोग
गन्दुम गाहते हैं वहाँ तू जा कर अपनी इस्मतफ़रोशी
के पैसे जमा करता है, यही कुछ तुझे प्यारा है।
2 इस लिए आइन्दा गन्दुम गाहने और अंगूर का रस
निकालने की जगहें उन्हें ख़ुराक मुहय्या नहीं करेंगी,
और अंगूर की फ़सल उन्हें रस मुहय्या नहीं करेगी।
3 इस्राईली रब के मुल्क में नहीं रहेंगे बल्कि उन्हें
मिस्र वापस जाना पड़ेगा, उन्हें असूर में नापाक चीज़ें
खानी पड़ेंगी। 4 वहाँ वह रब को न मै की और न ज़बह
की क़ुर्बानियाँ पेश कर सकेंगे। उन की रोटी मातम
करने वालों की रोटी जैसी होगी यानी जो भी उसे
खाए वह नापाक हो जाएगा। हाँ, उन का खाना सिर्फ़
उन की अपनी भूक मिटाने के लिए होगा, और वह
रब के घर में नहीं आएगा। 5 उस वक़्त तुम ईदों पर
क्या करोगे? रब के तहवारों को तुम कैसे मनाओगे?
6 जो तबाहशुदा मुल्क से निकलेंगे उन्हें मिस्र इकट्ठा
करेगा, उन्हें मेम्फ़िस दफ़नाएगा। ख़ुदरौ पौदे उन की
क़ीमती चाँदी पर क़ब्ज़ा करेंगे, काँटेदार झाड़ियाँ उन
के घरों पर छा जाएँगी।
7 सज़ा के दिन आ गए हैं, हिसाब-किताब के दिन
पहुँच गए हैं। इस्राईल यह बात जान ले। तुम कहते
हो, "यह नबी अहमक़ है, रूह का यह बन्दा पागल
है।" क्यूँकि जितना संगीन तुम्हारा गुनाह है उतने ही
ज़ोर से तुम मेरी मुख़ालफ़त करते हो।
8 नबी मेरे ख़ुदा की तरफ़ से इस्राईल का पहरेदार
बनाया गया है। लेकिन जहाँ भी वह जाए वहाँ उसे
फंसाने के फंदे लगाए गए हैं, बल्कि उसे उस के ख़ुदा
के घर में भी सताया जाता है। 9 उन से निहायत ही
ख़राब काम सरज़द हुआ है, ऐसा शरीर काम जैसा
जिबिआ के बाशिन्दों से हुआ था। अल्लाह उन का
क़ुसूर याद करके उन के गुनाहों की मुनासिब सज़ा
देगा।

इस्राईल शुरू से ही शरीर है

10 रब फ़रमाता है, "जब मेरा इस्राईल से पहला
वास्ता पड़ा तो रेगिस्तान में अंगूर जैसा लग रहा था।
तुम्हारे बापदादा अन्जीर के दरख़्त पर लगे पहले
पकने वाले फल जैसे नज़र आए। लेकिन बाल-फ़ग़ूर
के पास पहुँचते ही उन्हों ने अपने आप को उस
शर्मनाक बुत के लिए मख़्सूस कर लिया। तब वह
अपने आशिक़ जैसे मकरूह हो गए। 11 अब इस्राईल
की शान-ओ-शौकत परिन्दे की तरह उड़ कर ग़ाइब
हो जाएगी। आइन्दा न कोई उम्मीद से होगी, न बच्चा
जनेगी। 12 अगर वह अपने बच्चों को परवान चढ़ने
तक पालें भी तो भी मैं उन्हें बेऔलाद कर दूँगा। एक
भी नहीं रहेगा। उन पर अफ़्सोस जब मैं उन से दूर हो
जाऊँगा। 13 पहले जब मैं ने इस्राईल पर नज़र डाली
तो वह सूर की मानिन्द शानदार था, उसे शादाब जगह
पर पौदे की तरह लगाया गया था। लेकिन अब उसे
अपनी औलाद को बाहर ला कर क़ातिल के हवाले
करना पड़ेगा।"
14 ऐ रब, उन्हें दे! क्या दे? होने दे कि उन के बच्चे
पेट में ज़ाए हो जाएँ, कि औरतें दूध न पिला सकें।
15 रब फ़रमाता है, "जब उन की तमाम बेदीनी
जिल्जाल में ज़ाहिर हुई तो मैं ने उन से नफ़रत की।

उन की बुरी हरकतों की वजह से मैं उन्हें अपने घर
से निकाल दूँगा। आइन्दा मैं उन्हें प्यार नहीं करूँगा।
उन के तमाम राहनुमा सरकश हैं। 16 इस्राईल को मारा
गया, लोगों की जड़ सूख गई है, और वह फल नहीं
ला सकते। उन के बच्चे पैदा हो भी जाएँ तो मैं उन
की क़ीमती औलाद को मार डालूँगा।" 17 मेरा ख़ुदा
उन्हें रद्द करेगा, इस लिए कि उन्हों ने उस की नहीं
सुनी। चुनाँचे उन्हें दीगर अक़्वाम में मारे मारे फिरना
पड़ेगा।

बुतपरस्ती के नताइज

10 1 इस्राईल अंगूर की फलती फूलती बेल था
जो काफ़ी फल लाती रही। लेकिन जितना
उस का फल बढ़ता गया उतना ही वह बुतों के
लिए क़ुर्बानगाहें बनाता गया। जितना उस का मुल्क
तरक़्क़ी करता गया उतना ही वह देवताओं के
मख़्सूस सतूनों को सजाता गया। 2 लोग दोदिले हैं,
और अब उन्हें उन के क़ुसूर का अज्र भुगतना पड़ेगा।
रब उन की क़ुर्बानगाहों को गिरा देगा, उन के सतूनों
को मिस्मार करेगा। 3 जल्द ही वह कहेंगे, "हम इस
लिए बादशाह से महरूम हैं कि हम ने रब का ख़ौफ़ न
माना। लेकिन अगर बादशाह होता भी तो वह हमारे
लिए क्या कर सकता?" 4 वह बड़ी बातें करते, झूटी
क़समें खाते और ख़ाली अह्द बांधते हैं। उन का
इन्साफ़ उन ज़हरीले ख़ुदरौ पौदों की मानिन्द है जो
बीज के लिए तय्यारशुदा ज़मीन से फूट निकलते हैं।
5 सामरिया के बाशिन्दे परेशान हैं कि बैत-आवन
[s]में बछड़े के बुत के साथ क्या किया जाएगा। उस के
परस्तार उस पर मातम करेंगे, उस के पुजारी उस की
शान-ओ-शौकत याद करके वावैला करेंगे, क्यूँकि
वह उन से छिन कर परदेस में ले जाया जाएगा।
6 हाँ, बछड़े को मुल्क-ए-असूर में ले जा कर शहन्शाह
को ख़राज के तौर पर पेश किया जाएगा। इस्राईल
की रुस्वाई हो जाएगी, वह अपने मन्सूबे के बाइस
शर्मिन्दा हो जाएगा।
7 सामरिया नेस्त-ओ-नाबूद, उस का बादशाह पानी
पर तैरती हुई टहनी की तरह बेबस होगा। 8 बैत-
आवन [t]की वह ऊँची जगहें तबाह हो जाएँगी जहाँ
इस्राईल गुनाह करता रहा है। उन की क़ुर्बानगाहों
पर काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे छा जाएंगे।
तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, "हमें छुपा लो!" और
पहाड़ियों को "हम पर गिर पड़ो!"
9 रब फ़रमाता है, "ऐ इस्राईल, जिबिआ के वाकिए
से ले कर आज तक तू गुनाह करता आया है, लोग
वहीं के वहीं रह गए हैं। क्या मुनासिब नहीं कि
जिबिआ में जंग उन पर टूट पड़े जो इतने शरीर हैं?
10 अब मैं अपनी मर्ज़ी से उन की तादीब करूँगा।
अक़्वाम उन के ख़िलाफ़ जमा हो जाएँगी जब उन्हें
उन के दुगने क़ुसूर के लिए ज़न्जीरों में जकड़ लिया
जाएगा।
11 इस्राईल जवान गाय था जिसे गन्दुम गाहने की
तर्बियत दी गई थी और जो शौक़ से यह काम करती
थी। तब मैं ने उस के ख़ूबसूरत गले पर जूआ रख कर
उसे जोत लिया। यहूदाह को हल खैंचना और याक़ूब
[u]को ज़मीन पर सुहागा फेरना था। 12 मैं ने फ़रमाया,
'इन्साफ़ का बीज बो कर शफ़क़त की फ़सल काटो।
जिस ज़मीन पर हल कभी नहीं चलाया गया उस पर
ठीक तरह हल चलाओ! जब तक रब को तलाश
करने का मौक़ा है उसे तलाश करो, और जब तक
वह आ कर तुम पर इन्साफ़ की बारिश न बरसाए
उसे ढूँडो।'
13 लेकिन जवाब में तुम ने हल चला कर बेदीनी
का बीज बोया, तुम ने बुराई की फ़सल काट कर
फ़रेब का फल खाया है। चूँकि तू ने अपनी राह और
अपने सूरमाओं की बड़ी तादाद पर भरोसा रखा है
14 इस लिए तेरी क़ौम में जंग का शोर मचेगा, तेरे

[s]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैत-एल है।

[t]बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैत-एल है।

[u]याक़ूब से मुराद इस्राईल है।

तमाम क़िले ख़ाक में मिलाए जाएंगे। शल्मन के बैत-
अरबेल पर हमले के से हालात होंगे जिस ने उस शहर
को ज़मीनबोस करके माओं को बच्चों समेत ज़मीन पर
पटख़ दिया। 15 ऐ बैत-एल के बाशिन्दो, तुम्हारे साथ
भी ऐसा ही किया जाएगा, क्यूँकि तुम्हारी बदकारी
हद से ज़्यादा है। पौ फटते ही इस्राईल का बादशाह
नेस्त हो जाएगा।”

बेवफ़ाई के बावुजूद अल्लाह की शफ़क़त

11 1 रब फ़रमाता है, “इस्राईल अभी लड़का
था जब मैं ने उसे प्यार किया, जब मैं ने
अपने बेटे को मिस्र से बुलाया। 2 लेकिन बाद में
जितना ही मैं उन्हें बुलाता रहा उतना ही वह मुझ
से दूर होते गए। वह बाल देवताओं के लिए जानवर
चढ़ाने, बुतों के लिए बख़ूर जलाने लगे। 3 मैं ने ख़ुद
इस्राईल को चलने की तर्बियत दी, बार बार उन्हें
गोद में उठा कर लिए फिरा। लेकिन वह न समझे
कि मैं ही उन्हें शिफ़ा देने वाला हूँ। 4 मैं उन्हें खैंचता
रहा, लेकिन ऐसे रस्सों से नहीं जो इन्सान बर्दाश्त न
कर सके बल्कि शफ़क़त भरे रस्सों से। मैं ने उन के
गले पर का जूआ हल्का कर दिया और नर्मी से उन्हें
ख़ुराक खिलाई।

5 क्या उन्हें मुल्क-ए-मिस्र वापस नहीं जाना पड़ेगा?
बल्कि असूर ही उन का बादशाह बनेगा, इस लिए
कि वह मेरे पास वापस आने के लिए तय्यार नहीं।
6 तलवार उन के शहरों में घूम घूम कर ग़ैबदानों को
हलाक करेगी और लोगों को उन के ग़लत मश्वरों के
सबब से खाती जाएगी। 7 लेकिन मेरी क़ौम मुझे तर्क
करने पर तुली हुई है। जब उसे ऊपर अल्लाह की तरफ़
देखने को कहा जाए तो उस में से कोई भी उस तरफ़
रुजू नहीं करता।

8 ऐ इस्राईल, मैं तुझे किस तरह छोड़ सकता हूँ?
मैं तुझे किस तरह दुश्मन के हवाले कर सकता,
किस तरह अदमा की तरह दूसरों के क़ब्ज़े में छोड़
सकता, किस तरह ज़बोईम की तरह तबाह कर
सकता हूँ? मेरा इरादा सरासर बदल गया है, मैं तुझ
पर शफ़क़त करने के लिए बेचैन हूँ। 9 न मैं अपना
सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करूँगा, न दुबारा इस्राईल को
बर्बाद करूँगा। क्यूँकि मैं इन्सान नहीं बल्कि ख़ुदा
हूँ, वह क़ुद्दूस जो तेरे दरमियान सुकूनत करता है। मैं
ग़ज़ब में नहीं आऊँगा। 10 उस वक़्त वह रब के पीछे
ही चलेंगे। तब वह शेरबबर की तरह दहाड़ेगा। और
जब दहाड़ेगा तो उस के फ़र्ज़न्द मग़रिब से लरज़ते हुए
वापस आएँगे। 11 वह परिन्दों की तरह फड़फड़ाते
हुए मिस्र से आएँगे, थरथराते कबूतरों की तरह असूर
से लौटेंगे। फिर मैं उन्हें उन के घरों में बसा दूँगा। यह
मेरा, रब का फ़रमान है।

12 इस्राईल ने मुझे झूट से घेर लिया, फ़रेब से मेरा
मुहासरा कर लिया है। लेकिन यहूदाह भी मज़बूती
से अल्लाह के साथ नहीं है बल्कि आवारा फिरता है,
हालाँकि क़ुद्दूस ख़ुदा वफ़ादार है।”

सरकशी की राम कहानी

12 1 इस्राईल हवा चरने की कोशिश कर रहा
है, पूरा दिन वह मशरिक़ी लू के पीछे
भागता रहता है। उस के झूट और ज़ुल्म में इज़ाफ़ा
होता जा रहा है। असूर से अह्द बांधने के साथ साथ
वह मिस्र को भी ज़ैतून का तेल भेज देता है।

2 रब अदालत में यहूदाह से भी लड़ेगा। वह याक़ूब
[v]को उस के चाल-चलन की सज़ा, उस के आमाल
का मुनासिब अज्र देगा। 3 क्यूँकि माँ के पेट में ही
उस ने अपने भाई की एड़ी पकड़ कर उसे धोका
दिया। जब बालिग़ हुआ तो अल्लाह से लड़ा 4 बल्कि
फ़रिश्ते से लड़ते लड़ते उस पर ग़ालिब आया। फिर
उस ने रोते रोते उस से इल्तिजा की कि मुझ पर रहम
कर। बाद में याक़ूब ने अल्लाह को बैत-एल में पाया,
और वहाँ ख़ुदा उस से हमकलाम हुआ। 5 रब जो
लश्करों का ख़ुदा है और जिस का नाम रब ही है,

---

[v]याक़ूब से मुराद इस्राईल है।

उस ने फ़रमाया, 6 “अपने ख़ुदा के पास वापस आ
कर रहम और इन्साफ़ क़ाइम रख! कभी अपने ख़ुदा
पर उम्मीद रखने से बाज़ न आ।”
7 इस्राईल ताजिर है जिस के हाथ में ग़लत तराज़ू
है और जिसे लोगों से नाजाइज़ फ़ाइदा उठाने का
बड़ा शौक़ है। 8 वह कहता है, “मैं अमीर हो गया
हूँ, मैं ने कस्रत की दौलत पाई है। कोई साबित नहीं
कर सकेगा कि मुझ से यह तमाम मिलकियत हासिल
करने में कोई क़ुसूर या गुनाह सरज़द हुआ है।”
9 “लेकिन मैं, रब जो मिस्र से तुझे निकालते वक़्त
आज तक तेरा ख़ुदा हूँ मैं यह नज़रअन्दाज़ नहीं
करूँगा। मैं तुझे दुबारा ख़ैमों में बसने दूँगा। यूँ होगा
जिस तरह उन पहले दिनों में हुआ जब इस्राईली मेरी
परस्तिश करने के लिए रेगिस्तान में जमा होते थे।
10 मैं बार बार नबियों की मारिफ़त तुम से हमकलाम
हुआ, मैं ने उन्हें मुतअद्दिद रोयाएँ दिखाईं और उन
के ज़रीए तुम्हें तम्सीलें सुनाईं।”

बुतपरस्ती का अज्र ज़वाल है

11 क्या जिलिआद बेदीन है? उस के लोग नाकारा
ही हैं! जिल्जाल में लोगों ने साँड क़ुर्बान किए हैं, इस
लिए उन की क़ुर्बानगाहें मल्बे के ढेर बन जाएँगी।
वह बीज बोने के लिए तय्यारशुदा खेत के किनारे पर
लगे पत्थर के ढेर जैसी बनेंगी।
12 याक़ूब को भाग कर मुल्क-ए-अराम में पनाह
लेनी पड़ी। वहाँ वह बीवी मिलने के लिए मुलाज़िम
बन गया, औरत के बाइस उस ने भेड़-बकरियों की
गल्लाबानी की। 13 लेकिन बाद में रब नबी की मारिफ़त
इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और नबी के ज़रीए
उस की गल्लाबानी की। 14 तो भी इस्राईल ने उसे बड़ा
तैश दिलाया। अब उन्हें उन की क़त्ल-ओ-ग़ारत का
अज्र भुगतना पड़ेगा। उन्हों ने अपने आक़ा की तौहीन
की है, और अब वह उन्हें मुनासिब सज़ा देगा।

अल्लाह की तरफ़ से इस्राईल की अदालत

13 1 पहले जब इस्राईल ने बात की तो लोग
काँप उठे, क्यूँकि मुल्क-ए-इस्राईल में वह
सरफ़राज़ था। लेकिन फिर वह बाल की बुतपरस्ती
में मुलव्वस हो कर हलाक हुआ। 2 अब वह अपने
गुनाहों में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं। वह अपनी चाँदी
ले कर महारत से बुत ढाल लेते हैं। फिर दस्तकारों
के हाथ से बने इन बुतों के बारे में कहा जाता है, “जो
बछड़े के बुतों को चूमना चाहे वह किसी इन्सान को
क़ुर्बान करे!” 3 इस लिए वह सुब्ह-सवेरे की धुन्द
जैसे आरिज़ी और धूप में जल्द ही ख़त्म होने वाली
ओस की मानिन्द होंगे। वह गाहते वक़्त गन्दुम से
अलग होने वाले भूसे की मानिन्द हवा में उड़ जाएंगे,
घर में से निकलने वाले धुएँ की तरह ज़ाए हो जाएंगे।
4 “लेकिन मैं, रब तुझे मिस्र से निकालते वक़्त से
ले कर आज तक तेरा ख़ुदा हूँ। तुझे मेरे सिवा किसी
और को ख़ुदा नहीं जानना है। मेरे सिवा और कोई
नजातदहिन्दा नहीं है। 5 रेगिस्तान में मैं ने तेरी देख-
भाल की, वहाँ जहाँ तपती गर्मी थी। 6 वहाँ उन्हें
अच्छी ख़ुराक मिली। लेकिन जब वह जी भर कर
खा सके और सेर हुए तो मग़रूर हो कर मुझे भूल
गए। 7 यह देख कर मैं उन के लिए शेरबबर बन गया
हूँ। अब मैं चीते की तरह रास्ते के किनारे उन की
ताक में बैठूँगा। 8 उस रीछनी की तरह जिस के बच्चों
को छीन लिया गया हो मैं उन पर झपट्टा मार कर उन
की अंतड़ियों को फाड़ निकालूँगा। मैं उन्हें शेरबबर
की तरह हड़प कर लूँगा, और जंगली जानवर उन्हें
टुकड़े टुकड़े कर देंगे।
9 ऐ इस्राईल, तू इस लिए तबाह हो गया है कि तू मेरे
ख़िलाफ़ है, उस के ख़िलाफ़ जो तेरी मदद कर सकता
है। 10 अब तेरा बादशाह कहाँ है कि वह तेरे तमाम
शहरों में आ कर तुझे छुटकारा दे? अब तेरे राहनुमा
किधर हैं जिन से तू ने कहा था, ‘मुझे बादशाह और
राहनुमा दे दे।’ 11 मैं ने ग़ुस्से में तुझे बादशाह दे दिया
और ग़ुस्से में उसे तुझ से छीन भी लिया।

12 इस्राईल का क़ुसूर लपेट कर गोदाम में रखा गया
है, उस के गुनाह हिसाब-किताब के लिए महफ़ूज़
रखे गए हैं। 13 दर्द-ए-ज़ह शुरू हो गया है, लेकिन वह
नासमझ बच्चा है। वह माँ के पेट से निकलना नहीं
चाहता।

14 मैं फ़िद्या दे कर उन्हें पाताल से क्यूँ रिहा करूँ?
मैं उन्हें मौत की गिरिफ़्त से क्यूँ छुड़ाऊँ? ऐ मौत, तेरे
काँटे कहाँ रहे? ऐ पाताल, तेरा डंक कहाँ रहा? उसे
काम में ला, क्यूँकि मैं तरस नहीं खाऊँगा। 15 ख़्वाह
वह अपने भाइयों के दरमियान फलता फूलता क्यूँ
न हो तो भी रब की तरफ़ से मशरिक़ी लू उस पर
चलेगी। और जब रेगिस्तान से आएगी तो इस्राईल
के कुएँ और चश्मे ख़ुश्क हो जाएंगे। हर ख़ज़ाना, हर
क़ीमती चीज़ लूट का माल बन जाएगी। 16 सामरिया
के बाशिन्दों को उन के क़ुसूर की सज़ा भुगतनी
पड़ेगी, क्यूँकि वह अपने ख़ुदा से सरकश हो गए
हैं। दुश्मन उन्हें तलवार से मार कर उन के बच्चों को
ज़मीन पर पटख़ देगा और उन की हामिला औरतों के
पेट चीर डालेगा।"

रब के पास वापस आओ!

14 1 ऐ इस्राईल, तौबा करके रब अपने ख़ुदा
के पास वापस आ! क्यूँकि तेरा क़ुसूर तेरे
ज़वाल का सबब बन गया है। 2 अपने गुनाहों का
इक़्रार करते हुए रब के पास वापस आओ। उस से
कहो, "हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करके हमें
मेहरबानी से क़बूल फ़रमा ताकि हम अपने होंटों से
तेरी तारीफ़ करके तुझे मुनासिब क़ुर्बानी अदा कर
सकें। 3 असूर हमें न बचाए। आइन्दा न हम घोड़ों पर
सवार हो जाएंगे, न कहेंगे कि हमारे हाथों की चीज़ें
हमारा ख़ुदा हैं। क्यूँकि तू ही यतीम पर रहम करता
है।"

4 तब रब फ़रमाएगा, "मैं उन की बेवफ़ाई के
असरात ख़त्म करके उन्हें शिफ़ा दूँगा, हाँ मैं उन्हें
खुले दिल से प्यार करूँगा, क्यूँकि मेरा उन पर
ग़ज़ब ठंडा हो गया है। 5 इस्राईल के लिए मैं शबनम
की मानिन्द हूँगा। तब वह सोसन की मानिन्द फूल
निकालेगा, लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह
जड़ पकड़ेगा, 6 उस की कोंपलें फूट निकलेंगी, और
शाख़ें बन कर फैलती जाएँगी। उस की शान ज़ैतून के
दरख़्त की मानिन्द होगी, उस की ख़ुश्बू लुबनान के
देवदार के दरख़्त की ख़ुश्बू की तरह फैल जाएगी।

7 लोग दुबारा उस के साय में जा बसेंगे। वहाँ
वह अनाज की तरह फलें फूलेंगे, अंगूर के से फूल
निकालेंगे। दूसरे उन की यूँ तारीफ़ करेंगे जिस तरह
लुबनान की उम्दा मै की। 8 तब इस्राईल कहेगा, 'मेरा
बुतों से क्या वास्ता?' मैं ही तेरी सुन कर तेरी देख-
भाल करूँगा। मैं जूनीपर का सायादार दरख़्त हूँ, और
तू मुझ से ही फल पाएगा।"

9 कौन दानिशमन्द है? वह समझ ले। कौन साहिब-
ए-फ़हम है? वह मतलब जान ले। क्यूँकि रब की
राहें दुरुस्त हैं। रास्तबाज़ उन पर चलते रहेंगे, लेकिन
सरकश उन पर चलते वक़्त ठोकर खा कर गिर
जाएंगे।

योएल

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम है जो योएल बिन
फ़तूएल पर नाज़िल हुआ।
2 ऐ बुज़ुर्गो, सुनो! ऐ मुल्क के तमाम बाशिन्दो,
तवज्जुह दो! जो कुछ इन दिनों में तुम्हें पेश आया
है क्या वह पहले कभी तुम्हें या तुम्हारे बापदादा को
पेश आया? 3 अपने बच्चों को इस के बारे में बताओ,
जो कुछ पेश आया है उस की याद नस्ल-दर-नस्ल
ताज़ा रहे।
4 जो कुछ टिड्डी के लार्वे ने छोड़ दिया उसे बालिग़
टिड्डी खा गई, जो बालिग़ टिड्डी छोड़ गई उसे टिड्डी
का बच्चा खा गया, और जो टिड्डी का बच्चा छोड़ गया
उसे जवान टिड्डी खा गई। 5 ऐ नशे में धुत लोगो, जाग
उठो और रो पड़ो! ऐ मै पीने वालो, वावैला करो!
क्यूँकि नई मै तुम्हारे मुँह से छीन ली गई है। 6 टिड्डियों
की ज़बरदस्त और अनगिनत क़ौम मेरे मुल्क पर टूट
पड़ी है। उन के शेर के से दाँत और शेरनी का सा
जबड़ा है। 7 नतीजे में मेरे अंगूर की बेलें तबाह, मेरे
अन्जीर के दरख़्त ज़ाए हो गए हैं। टिड्डियों ने छाल को
भी उतार लिया, अब शाख़ें सफ़ेद सफ़ेद नज़र आती
हैं।
8 आह-ओ-ज़ारी करो, टाट से मुलब्बस उस कुंवारी
की तरह गिर्या करो जिस का मंगेतर इन्तिक़ाल कर
गया हो। 9 रब के घर में ग़ल्ला और मै की नज़रें बन्द
हो गई हैं। इमाम जो रब के ख़ादिम हैं मातम कर रहे
हैं। 10 खेत तबाह हुए, ज़मीन झुलस गई है। अनाज
ख़त्म, अंगूर ख़त्म, ज़ैतून ख़त्म।
11 ऐ काश्तकारो, शर्मसार हो जाओ! ऐ अंगूर
के बाग़बानो, आह-ओ-बुका करो! क्यूँकि खेत की
फ़सल बर्बाद हो गई है, गन्दुम और जौ की फ़सल
ख़त्म ही है। 12 अंगूर की बेल सूख गई, अन्जीर का
दरख़्त मुरझा गया है। अनार, खजूर, सेब बल्कि फल
लाने वाले तमाम दरख़्त पझमुर्दा हो गए हैं। इन्सान
की तमाम ख़ुशी ख़ाक में मिलाई गई है।
13 ऐ इमामो, टाट का लिबास ओढ़ कर मातम
करो! ऐ क़ुर्बानगाह के ख़ादिमो, वावैला करो! ऐ
मेरे ख़ुदा के ख़ादिमो, आओ, रात को भी टाट ओढ़
कर गुज़ारो! क्यूँकि तुम्हारे ख़ुदा का घर ग़ल्ला और
मै की नज़रों से महरूम हो गया है। 14 मुक़द्दस रोज़े
का एलान करो। लोगों को ख़ास इजतिमा के लिए
बुलाओ। बुज़ुर्गों और मुल्क के तमाम बाशिन्दों को
रब अपने ख़ुदा के घर में जमा करके बुलन्द आवाज़
से रब से इल्तिजा करो।
15 उस दिन पर अफ़सोस! क्यूँकि रब का वह दिन
क़रीब ही है जब क़ादिर-ए-मुतलक़ हम पर तबाही
नाज़िल करेगा। 16 क्या ऐसा नहीं हुआ कि हमारे
देखते देखते हम से ख़ुराक छीन ली गई, कि अल्लाह
के घर में ख़ुशी-ओ-शादमानी बन्द हो गई है? 17 ढेलों
में छुपे बीज झुलस गए हैं, इस लिए ख़ाली गोदाम
ख़स्ताहाल और अनाज को महफ़ूज़ रखने के मकान
टूट फूट गए हैं। उन की ज़रूरत नहीं रही, क्यूँकि ग़ल्ला
सूख गया है। 18 हाय, मवेशी कैसी दर्दनाक आवाज़
निकाल रहे हैं! गाय-बैल परेशानी से इधर उधर फिर
रहे हैं, क्यूँकि कहीं भी चरागाह नहीं मिलती। भेड़-
बकरियों को भी तक्लीफ़ है।
19 ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि खुले मैदान
की चरागाहें नज़र-ए-आतिश हो गई हैं, तमाम दरख़्त
भस्म हो गए हैं। 20 जंगली जानवर भी हाँपते हाँपते
तेरे इन्तिज़ार में हैं, क्यूँकि नदियाँ सूख गई हैं, और
खुले मैदान की चरागाहें नज़र-ए-आतिश हो गई हैं।

रब का अदालती दिन

2 1 कोह-ए-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर जंग का नारा लगाओ। मुल्क

के तमाम बाशिन्दे लरज़ उठें, क्यूँकि रब का दिन
आने वाला है बल्कि क़रीब ही है। 2 ज़ुल्मत और
तारीकी का दिन, घने बादलों और घुप अंधेरे का दिन
होगा। जिस तरह पौ फटते ही रौशनी पहाड़ों पर फैल
जाती है उसी तरह एक बड़ी और ताक़तवर क़ौम
आ रही है, ऐसी क़ौम जैसी न माज़ी में कभी थी,
न मुस्तक़बिल में कभी होगी। 3 उस के आगे आगे
आतिश सब कुछ भस्म करती है, उस के पीछे पीछे
झुलसाने वाला शोला चलता है। जहाँ भी वह पहुँचे
वहाँ मुल्क वीरान-ओ-सुन्सान हो जाता है, ख़्वाह वह
बाग़-ए-अदन क्यूँ न होता। उस से कुछ नहीं बचता।
4 देखने में वह घोड़े जैसे लगते हैं, फ़ौजी घोड़ों की
तरह सरपट दौड़ते हैं। 5 रथों का सा शोर मचाते हुए
वह उछल उछल कर पहाड़ की चोटियों पर से गुज़रते
हैं। भूसे को भस्म करने वाली आग की चटख़्ती
आवाज़ सुनाई देती है जब वह जंग के लिए तय्यार
बड़ी बड़ी फ़ौज की तरह आगे बढ़ते हैं। 6 उन्हें देख
कर क़ौमें डर के मारे पेच-ओ-ताब खाने लगती हैं,
हर चिहरा माँद पड़ जाता है।

7 वह सूरमाओं की तरह हम्ला करते, फ़ौजियों की
तरह दीवारों पर छलाँग लगाते हैं। सब सफ़ बांध कर
आगे बढ़ते हैं, एक भी मुक़र्ररा रास्ते से नहीं हटता।
8 वह एक दूसरे को धक्का नहीं देते बल्कि हर एक
सीधा अपनी राह पर आगे बढ़ता है। यूँ सफ़बस्ता
हो कर वह दुश्मन की दिफ़ाई सफ़ों में से गुज़र जाते
हैं 9 और शहर पर झपट्टा मार कर फ़सील पर छलाँग
लगाते हैं, घरों की दीवारों पर चढ़ कर चोर की तरह
खिड़कियों में से घुस आते हैं।

10 उन के आगे आगे ज़मीन काँप उठती, आसमान
थरथराता, सूरज और चाँद तारीक हो जाते और
सितारों की चमक-दमक जाती रहती है। 11 रब ख़ुद
अपनी फ़ौज के आगे आगे गरजता रहता है। उस का
लश्कर निहायत बड़ा है, और जो फ़ौजी उस के हुक्म
पर चलते हैं वह ताक़तवर हैं। क्यूँकि रब का दिन
अज़ीम और निहायत हौलनाक है, कौन उसे बर्दाश्त
कर सकता है?

तौबा करके वापस आओ

12 रब फ़रमाता है, "अब भी तुम तौबा कर सकते
हो। पूरे दिल से मेरे पास वापस आओ! रोज़ा
रखो, आह-ओ-ज़ारी करो, मातम करो! 13 रंजिश का
इज़हार करने के लिए अपने कपड़ों को मत फाड़ो
बल्कि अपने दिल को।"

रब अपने ख़ुदा के पास वापस आओ, क्यूँकि वह
मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और शफ़क़त
से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से पछताता है।
14 कौन जाने, शायद वह इस बार भी पछता कर
अपने पीछे बरकत छोड़ जाए और तुम नए सिरे से
रब अपने ख़ुदा को ग़ल्ला और मै की नज़रें पेश कर
सको।

15 कोह-ए-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मुक़द्दस रोज़े
का एलान करो, लोगों को ख़ास इजतिमा के लिए
बुलाओ! 16 लोगों को जमा करो, फिर जमाअत को
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो। न सिर्फ़ बुज़ुर्गों को बल्कि
बच्चों को भी शीरख़्वारों समेत इकट्ठा करो। दूल्हा और
दुल्हन भी अपने अपने उरूसी कमरों से निकल कर
आएँ। 17 लाज़िम है कि इमाम जो अल्लाह के ख़ादिम
हैं रब के घर के बरामदे और क़ुर्बानगाह के दरमियान
खड़े हो कर आह-ओ-ज़ारी करें। वह इक़्रार करें, "ऐ
रब, अपनी क़ौम पर तरस की निगाह डाल! अपनी
मौरूसी मिलकियत को लान-तान का निशाना बनने
न दे। ऐसा न हो कि दीगर अक़्वाम उस का मज़ाक़
उड़ा कर कहें, 'उन का ख़ुदा कहाँ है'?"

रब अपनी क़ौम पर रहम करता है

18 तब रब अपने मुल्क के लिए ग़ैरत खा कर अपनी
क़ौम पर तरस खाएगा। 19 वह अपनी क़ौम से वादा
करेगा, "मैं तुम्हें इतना अनाज, अंगूर और ज़ैतून भेज
देता हूँ कि तुम सेर हो जाओगे। आइन्दा मैं तुम्हें
दीगर अक़्वाम के मज़ाक़ का निशाना नहीं बनाऊँगा।
20 मैं शिमाल से आए हुए दुश्मन को तुम से दूर करके
वीरान-ओ-सुन्सान मुल्क में भगा दूँगा। वहाँ उस के
अगले दस्ते मशरिक़ी समुन्दर में और उस के पिछले

दस्ते मग़रिबी समुन्दर में डूब जाएंगे। तब उन की गली सड़ी नाशों की बदबू चारों तरफ़ फैल जाएगी।”
क्यूँकि उस [w]ने अज़ीम काम किए हैं।

21 ऐ मुल्क, मत डरना बल्कि शादियाना बजा कर
ख़ुशी मना! क्यूँकि रब ने अज़ीम काम किए हैं।
22 ऐ जंगली जानवरो, मत डरना, क्यूँकि खुले मैदान
की हरियाली दुबारा उगने लगी है। दरख़्त नए सिरे से
फल ला रहे हैं, अन्जीर और अंगूर की बड़ी फ़सल
पक रही है।
23 ऐ सिय्यून के बाशिन्दो, तुम भी शादियाना बजा
कर रब अपने ख़ुदा की ख़ुशी मनाओ। क्यूँकि वह
अपनी रास्ती के मुताबिक़ तुम पर मेंह बरसाता, पहले
की तरह ख़िज़ाँ और बहार की बारिशें बख़्श देता है।
24 अनाज की कस्रत से गाहने की जगहें भर जाएँगी,
अंगूर और ज़ैतून की कस्रत से हौज़ छलक उठेंगे।
25 रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हें सब कुछ वापस कर
दूँगा जो टिड्डियों की बड़ी फ़ौज ने खा लिया है। तुम्हें
सब कुछ वापस मिल जाएगा जो बालिग़ टिड्डी, टिड्डी
के बच्चे, जवान टिड्डी और टिड्डियों के लार्वों ने खा
लिया जब मैं ने उन्हें तुम्हारे ख़िलाफ़ भेजा था। 26 तुम
दुबारा जी भर कर खा सकोगे। तब तुम रब अपने
ख़ुदा के नाम की सताइश करोगे जिस ने तुम्हारी
ख़ातिर इतने बड़े मोजिज़े किए हैं। आइन्दा मेरी क़ौम
कभी शर्मिन्दा न होगी। 27 तब तुम जान लोगे कि मैं
इस्राईल के दरमियान मौजूद हूँ, कि मैं, रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ और मेरे सिवा और कोई नहीं है। आइन्दा
मेरी क़ौम कभी भी शर्मसार नहीं होगी।

अल्लाह अपने रूह का वादा करता है

28 इस के बाद मैं अपने रूह को तमाम इन्सानों
पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़्वाब और तुम्हारे नौजवान रोयाएँ
देखेंगे। 29 उन दिनों में मैं अपने रूह को ख़ादिमों
और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा। 30 मैं आसमान
पर मोजिज़े दिखाऊँगा और ज़मीन पर इलाही निशान
ज़ाहिर करूँगा, ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
31 सूरज तारीक हो जाएगा, चाँद का रंग ख़ून सा हो
जाएगा, और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन
आएगा। 32 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा नजात
पाएगा। क्यूँकि कोह-ए-सिय्यून पर और यरूशलम में
नजात मिलेगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने
फ़रमाया है। जिन बचे हुओं को रब ने बुलाया है उन
ही में नजात पाई जाएगी।

दुश्मन की सज़ा

3 1 उन दिनों में, हाँ उस वक़्त जब मैं यहूदाह
और यरूशलम को बहाल करूँगा 2 मैं तमाम
दीगर अक़्वाम को जमा करके वादी-ए-यहूसफ़त
[x]में ले जाऊँगा। वहाँ मैं अपनी क़ौम और मौरूसी
मिलकियत की ख़ातिर उन से मुक़द्दमा लड़ूँगा।
क्यूँकि उन्हों ने मेरी क़ौम को दीगर अक़्वाम में
मुन्तशिर करके मेरे मुल्क को आपस में तक़्सीम कर
लिया, 3 क़ुरआ डाल कर मेरी क़ौम को आपस में बाँट
लिया है। उन्हों ने इस्राईली लड़कों को कस्बियों के
बदले में दे दिया और इस्राईली लड़कियों को फ़रोख़्त
किया ताकि मै ख़रीद कर पी सकें।
4 ऐ सूर, सैदा और तमाम फ़िलिस्ती इलाक़ो, मेरा
तुम से क्या वास्ता? क्या तुम मुझ से इन्तिक़ाम लेना
या मुझे सज़ा देना चाहते हो? जल्द ही मैं तेज़ी से
तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुम ने दूसरों के
साथ किया है। 5 क्यूँकि तुम ने मेरी सोना-चाँदी और
मेरे बेशक़ीमत ख़ज़ाने लूट कर अपने मन्दिरों में रख
लिए हैं। 6 यहूदाह और यरूशलम के बाशिन्दों को
तुम ने यूनानियों के हाथ बेच डाला ताकि वह अपने
वतन से दूर रहें।
7 लेकिन मैं उन्हें जगा कर उन मक़ामों से वापस
लाऊँगा जहाँ तुम ने उन्हें फ़रोख़्त कर दिया था। साथ
साथ मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुम ने उन के

[w]ग़ालिबन ‘उस’ से मुराद ख़ुदा है, लेकिन दुश्मन भी हो सकता है।

[x]यहूसफ़त का मतलब : ‘रब अदालत करता है।’

साथ किया था। 8 रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे बेटे-
बेटियों को यहूदाह के बाशिन्दों के हाथ बेच डालूँगा,
और वह उन्हें दूरदराज़ क़ौम सबा के हवाले करके
फ़रोख़्त करेंगे।

9 बुलन्द आवाज़ से दीगर अक़्वाम में एलान करो
कि जंग की तय्यारियाँ करो। अपने बेहतरीन फ़ौजियों
को खड़ा करो। लड़ने के क़ाबिल तमाम मर्द आ कर
हम्ला करें। 10 अपने हल की फालियों को कूट कूट
कर तलवारें बना लो, काँट-छाँट के औज़ारों को नेज़ों
में तब्दील करो। कमज़ोर आदमी भी कहे, 'मैं सूरमा
हूँ!' 11 ऐ तमाम अक़्वाम, चारों तरफ़ से आ कर वादी
में जमा हो जाओ! जल्दी करो।"

ऐ रब, अपने सूरमाओं को वहाँ उतरने दे!

12 "दीगर अक़्वाम हरकत में आ कर वादी-ए-
यहूसफ़त में आ जाएँ। क्यूँकि वहाँ मैं तख़्त पर बैठ
कर इर्दगिर्द की तमाम अक़्वाम का फ़ैसला करूँगा।
13 आओ, दरान्ती चलाओ, क्यूँकि फ़सल पक गई
है। आओ, अंगूर को कुचल दो, क्यूँकि उस का रस
निकालने का हौज़ भरा हुआ है, और तमाम बर्तन रस
से छलकने लगे हैं। क्यूँकि उन की बुराई बहुत है।"

14 फ़ैसले की वादी में हंगामा ही हंगामा है, क्यूँकि
फ़ैसले की वादी में रब का दिन क़रीब आ गया है।
15 सूरज और चाँद तारीक हो जाएंगे, सितारों की
चमक-दमक जाती रहेगी। 16 रब कोह-ए-सिय्यून पर
से दहाड़ेगा, यरूशलम से उस की गरजती आवाज़ यूँ
सुनाई देगी कि आसमान-ओ-ज़मीन लरज़ उठेंगे।

इस्राईल का जलाली मुस्तक़बिल

लेकिन रब अपनी क़ौम की पनाहगाह और
इस्राईलियों का क़िला होगा। 17 "तब तुम जान लोगे
कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और अपने मुक़द्दस पहाड़
सिय्यून पर सुकूनत करता हूँ। यरूशलम मुक़द्दस
होगा, और आइन्दा परदेसी उस में से नहीं गुज़रेंगे।

18 उस दिन हर चीज़ कस्रत से दस्तयाब होगी।
पहाड़ों से अंगूर का रस टपकेगा, पहाड़ियों से दूध
की नदियाँ बहेंगी, और यहूदाह के तमाम नदी-नाले
पानी से भरे रहेंगे। नीज़, रब के घर में से एक चश्मा
फूट निकलेगा और बहता हुआ वादी-ए-शित्तीम की
आबपाशी करेगा। 19 लेकिन मिस्र तबाह और अदोम
वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगा, क्यूँकि उन्हों ने यहूदाह
के बाशिन्दों पर ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद किया, उन के
अपने ही मुल्क में बेक़ुसूर लोगों को क़त्ल किया
है। 20 लेकिन यहूदाह हमेशा तक आबाद रहेगा,
यरूशलम नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहेगा। 21 जो क़त्ल-
ओ-ग़ारत उन के दरमियान हुई है उस की सज़ा मैं
ज़रूर दूँगा।"

रब कोह-ए-सिय्यून पर सुकूनत करता है।!

आमूस

इस्राईल के पड़ोसियों की अदालत

1 1 ज़ैल में आमूस के पैग़ामात क़लमबन्द हैं।
आमूस तक़ूअ शहर का गल्लाबान था। ज़ल्ज़ले
से दो साल पहले उस ने इस्राईल के बारे में रोया में
यह कुछ देखा। उस वक़्त उज़्ज़ियाह यहूदाह का और
यरुबिआम बिन यूआस इस्राईल का बादशाह था।
2 आमूस बोला, "रब कोह-ए-सिय्यून पर से
दहाड़ता है, उस की गरजती आवाज़ यरूशलम से
सुनाई देती है। तब गल्लाबानों की चरागाहें सूख जाती
हैं और कर्मिल की चोटी पर जंगल मुरझा जाता है।"
3 रब फ़रमाता है, "दमिश्क़ के बाशिन्दों ने बार
बार गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने जिलिआद को
गाहने के आहनी औज़ार से ख़ूब कूट कर गाह लिया
है। 4 चुनाँचे मैं हज़ाएल के घराने पर आग नाज़िल
करूँगा, और बिन-हदद के महल नज़र-ए-आतिश हो
जाएंगे। 5 मैं दमिश्क़ के कुंडे को तोड़ कर बिक़अत-
आवन और बैत-अदन के हुक्मरानों को मौत के घाट
उतारूँगा। अराम की क़ौम जिलावतन हो कर क़ीर
में जा बसेगी।" यह रब का फ़रमान है।
6 रब फ़रमाता है, "ग़ज़्ज़ा के बाशिन्दों ने बार
बार गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए
बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने पूरी आबादियों
को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया
है। 7 चुनाँचे मैं ग़ज़्ज़ा की फ़सील पर आग नाज़िल
करूँगा, और उस के महल नज़र-ए-आतिश हो
जाएंगे। 8 अश्दूद और अस्क़लून के हुक्मरानों को
मैं मार डालूँगा, अक़्रून पर भी हम्ला करूँगा। तब
बचे-खुचे फ़िलिस्ती भी हलाक हो जाएंगे।" यह रब
क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान है।
9 रब फ़रमाता है, "सूर के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने बरादराना अह्द का लिहाज़
न किया बल्कि पूरी आबादियों को जिलावतन करके
अदोम के हवाले कर दिया। 10 चुनाँचे मैं सूर की
फ़सील पर आग नाज़िल करूँगा, और उस के महल
नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।"
11 रब फ़रमाता है, "अदोम के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने अपने इस्राईली भाइयों को
तलवार से मार मार कर उन का ताक़्क़ुब किया और
सख़्ती से उन पर रहम करने से इन्कार किया। उन
का क़हर भड़कता रहा, उन का तैश कभी ठंडा न
हुआ। 12 चुनाँचे मैं तेमान पर आग नाज़िल करूँगा,
और बुस्रा के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।"
13 रब फ़रमाता है, "अम्मोन के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं
छोड़ूँगा। क्यूँकि अपनी सरहद्दों को बढ़ाने के लिए
उन्हों ने जिलिआद की हामिला औरतों के पेट चीर
डाले। 14 चुनाँचे मैं रब्बा की फ़सील को आग लगा
दूँगा, और उस के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।
जंग के उस दिन हर तरफ़ फ़ौजियों के नारे बुलन्द
हो जाएंगे, तूफ़ान के उस दिन उन पर सख़्त आँधी
टूट पड़ेगी। 15 उन का बादशाह अपने अफ़्सरों समेत
क़ैदी बन कर जिलावतन हो जाएगा।" यह रब का
फ़रमान है।

2 1 रब फ़रमाता है, "मोआब के बाशिन्दों ने बार
बार गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा
दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने अदोम के
बादशाह की हड्डियों को जला कर राख कर दिया है।
2 चुनाँचे मैं मुल्क-ए-मोआब पर आग नाज़िल करूँगा,
और क़रियोत के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।

जंग का शोर-शराबा मचेगा, फ़ौजियों के नारे बुलन्द
हो जाएंगे, नरसिंगा फूँका जाएगा। तब मोआब हलाक
हो जाएगा। 3 मैं उस के हुक्मरान को उस के तमाम
अफ़सरों समेत हलाक कर दूँगा।" यह रब का फ़रमान
है।

यहूदाह की अदालत

4 रब फ़रमाता है, "यहूदाह के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि उन्हों ने रब की शरीअत को
रद्द करके उस के अह्काम पर अमल नहीं किया।
उन के झूटे देवता उन्हें ग़लत राह पर ले गए हैं, वह
देवता जिन की पैरवी उन के बापदादा भी करते रहे।
5 चुनाँचे मैं यहूदाह पर आग नाज़िल करूँगा, और
यरूशलम के महल नज़र-ए-आतिश हो जाएंगे।"

इस्राईल की अदालत

6 रब फ़रमाता है, "इस्राईल के बाशिन्दों ने बार बार
गुनाह किया है, इस लिए मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ूँगा। क्यूँकि वह शरीफ़ लोगों को पैसे के
लिए बेचते और ज़रूरतमन्दों को फ़रोख़्त करते हैं
ताकि एक जोड़ी जूते मिल जाए। 7 वह ग़रीबों के सर
को ज़मीन पर कुचल देते, मुसीबतज़दों को इन्साफ़
मिलने से रोकते हैं। बाप और बेटा दोनों एक ही
कस्बी के पास जा कर मेरे नाम की बेहुरमती करते हैं।
8 जब कभी किसी क़ुर्बानगाह के पास पूजा करने जाते
हैं तो ऐसे कपड़ों पर आराम करते हैं जो क़र्ज़दारों ने
ज़मानत के तौर पर दिए थे। जब कभी अपने देवता
के मन्दिर में जाते तो ऐसे पैसों से मै ख़रीद कर पीते
हैं जो जुर्माना के तौर पर ज़रूरतमन्दों से मिल गए थे।
9 यह कैसी बात है? मैं ही ने अमोरियों को उन के
आगे आगे नेस्त कर दिया था, हालाँकि वह देवदार
के दरख़्तों जैसे लम्बे और बलूत के दरख़्तों जैसे
ताक़तवर थे। मैं ही ने अमोरियों को जड़ों और फल
समेत मिटा दिया था। 10 इस से पहले मैं ही तुम्हें मिस्र
से निकाल लाया, मैं ही ने चालीस साल तक रेगिस्तान
में तुम्हारी राहनुमाई करते करते तुम्हें अमोरियों के
मुल्क तक पहुँचाया ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 11 मैं
ही ने तुम्हारे बेटों में से नबी बरपा किए, और मैं ही
ने तुम्हारे नौजवानों में से कुछ चुन लिए ताकि अपनी
ख़िदमत के लिए मख़्सूस करूँ।" रब फ़रमाता है, "ऐ
इस्राईलियो, क्या ऐसा नहीं था? 12 लेकिन तुम ने मेरे
लिए मख़्सूस आदमियों को मै पिलाई और नबियों
को हुक्म दिया कि नबुव्वत मत करो।
13 अब मैं होने दूँगा कि तुम अनाज से ख़ूब लदी
हुई बैलगाड़ी की तरह झूलने लगोगे। 14 न तेज़रौ
शख़्स भाग कर बचेगा, न ताक़तवर आदमी कुछ
कर पाएगा। न सूरमा अपनी जान बचाएगा, 15 न तीर
चलाने वाला क़ाइम रहेगा। कोई नहीं बचेगा, ख़्वाह
पैदल दौड़ने वाला हो या घोड़े पर सवार। 16 उस
दिन सब से बहादुर सूरमा भी हथियार डाल कर नंगी
हालत में भाग जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

3 1 ऐ इस्राईलियो, वह कलाम सुनो जो रब तुम्हारे
ख़िलाफ़ फ़रमाता है, उस पूरी क़ौम के ख़िलाफ़
जिसे मैं मिस्र से निकाल लाया था। 2 "दुनिया की
तमाम क़ौमों में से मैं ने सिर्फ़ तुम ही को जान लिया,
इस लिए मैं तुम ही को तुम्हारे तमाम गुनाहों की सज़ा
दूँगा।"

नबी की ज़िम्मादारी

3 क्या दो अफ़राद मिल कर सफ़र कर सकते हैं
अगर वह मुत्तफ़िक़ न हों? 4 क्या शेरबबर दहाड़ता
है अगर उसे शिकार न मिला हो? क्या जवान शेर
अपनी मान्द में गरजता है अगर उस ने कुछ पकड़ा
न हो? 5 क्या परिन्दा फंदे में फंस जाता है अगर फंदे
को लगाया न गया हो? या फंदा कुछ फंसा सकता
है अगर शिकार न हो? 6 जब शहर में नरसिंगा फूँका
जाता है ताकि लोगों को किसी ख़तरे से आगाह करे
तो क्या वह नहीं घबराते? जब आफ़त शहर पर आती
है तो क्या रब की तरफ़ से नहीं होती?

7 यक़ीनन जो भी मन्सूबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़
बांधे उस पर अमल करने से पहले वह उसे अपने
ख़ादिमों यानी नबियों पर ज़ाहिर करता है।
8 शेरबबर दहाड़ उठा है तो कौन है जो डर न जाए?
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ बोल उठा है तो कौन है जो
नबुव्वत न करे?

सामरिया को रिहाई नहीं मिलेगी

9 अश्दूद और मिस्र के महलों को इत्तिला दो,
"सामरिया के पहाड़ों पर जमा हो कर उस पर नज़र
डालो जो कुछ शहर में हो रहा है। कितनी बड़ी
हलचल मच गई है, कितना ज़ुल्म हो रहा है।" 10 रब
फ़रमाता है, "यह लोग सहीह काम करना जानते ही
नहीं बल्कि ज़ालिम और तबाहकुन तरीक़ों से अपने
महलों में ख़ज़ाने जमा करते हैं।"
11 चुनाँचे रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है,
"दुश्मन मुल्क को घेर कर तेरी क़िलाबन्दियों को ढा
देगा और तेरे महलों को लूट लेगा।" 12 रब फ़रमाता
है, "अगर चरवाहा अपनी भेड़ को शेरबबर के मुँह से
निकालने की कोशिश करे तो शायद दो पिंडलियाँ या
कान का टुकड़ा बच जाए। सामरिया के इस्राईली भी
इसी तरह ही बच जाएंगे, ख़्वाह वह इस वक़्त अपने
शानदार सोफ़ों और ख़ूबसूरत गद्दियों पर आराम क्यूँ
न करें।"
13 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ जो आसमानी लश्करों का
ख़ुदा है फ़रमाता है, "सुनो, याक़ूब के घराने के
ख़िलाफ़ गवाही दो! 14 जिस दिन मैं इस्राईल को उस
के गुनाहों की सज़ा दूँगा उस दिन मैं बैत-एल की
क़ुर्बानगाहों को मिस्मार करूँगा। तब क़ुर्बानगाह के
कोनों पर लगे सींग टूट कर ज़मीन पर गिर जाएंगे।
15 मैं सर्दियों और गर्मियों के मौसम के लिए तामीर
किए गए घरों को ढा दूँगा। हाथीदाँत से आरास्ता
इमारतें ख़ाक में मिलाई जाएँगी, और जहाँ इस
वक़्त मुतअद्दिद मकान नज़र आते हैं वहाँ कुछ नहीं
रहेगा।" यह रब का फ़रमान है।

सामरिया की ज़ालिम औरतें

4 1 ऐ कोह-ए-सामरिया की मोटी-ताज़ी गायो,
[y]सुनो मेरी बात! तुम ग़रीबों पर ज़ुल्म करती
और ज़रूरतमन्दों को कुचल देती, तुम अपने शौहरों
को कहती हो, "जा कर मै ले आओ, हम और पीना
चाहती हैं।" 2 रब ने अपनी क़ुद्दूसियत की क़सम
खा कर फ़रमाया है, "वह दिन आने वाला है जब
दुश्मन तुम्हें काँटों के ज़रीए घसीट कर अपने साथ
ले जाएगा। जो बचेगा उसे मछली के काँटे से पकड़ा
जाएगा। 3 हर एक को फ़सील के रख़नों में से सीधा
निकलना पड़ेगा, हर एक को हर्मून पहाड़ की तरफ़
भगा दिया जाएगा।" यह रब का फ़रमान है।

इस्राईल को समझाया नहीं जा सकता

4 "चलो, बैत-एल जा कर गुनाह करो, जिल्जाल
जा कर अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करो! सुब्ह के वक़्त
अपनी क़ुर्बानियों को चढ़ाओ, तीसरे दिन आम्दनी
का दसवाँ हिस्सा पेश करो। 5 ख़मीरी रोटी जला कर
अपनी शुक्रगुज़ारी का इज़हार करो, बुलन्द आवाज़
से उन क़ुर्बानियों का एलान करो जो तुम अपनी
ख़ुशी से अदा कर रहे हो। क्यूँकि ऐसी हरकतें तुम
इस्राईलियों को बहुत पसन्द हैं।" यह रब क़ादिर-ए-
मुतलक़ का फ़रमान है।
6 रब फ़रमाता है, "मैं ने काल पड़ने दिया। हर शहर
और आबादी में रोटी ख़त्म हुई। तो भी तुम मेरे पास
वापस नहीं आए! 7 अभी फ़सल के पकने तक तीन
माह बाक़ी थे कि मैं ने तुम्हारे मुल्क में बारिशों को
रोक दिया। मैं ने होने दिया कि एक शहर में बारिश
हुई जबकि साथ वाला शहर उस से महरूम रहा,
एक खेत बारिश से सेराब हुआ जबकि दूसरा झुलस
गया। 8 जिस शहर में थोड़ा बहुत पानी बाक़ी था वहाँ

---

[y]लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'बसन की गायो।' बसन एक पहाड़ी इलाक़ा था जिस के मवेशी मश्हूर थे।

दीगर कई शहरों के बाशिन्दे लड़खड़ाते हुए पहुँचे,
लेकिन उन के लिए काफ़ी नहीं था। तो भी तुम मेरे
पास वापस न आए!" यह रब का फ़रमान है।
9 रब फ़रमाता है, "मैं ने तुम्हारी फ़सलों को पतरोग
और फफूँदी से तबाह कर दिया। जो भी तुम्हारे
मुतअद्दिद अंगूर, अन्जीर, ज़ैतून और बाक़ी फल के
बाग़ों में उगता था उसे टिड्डियाँ खा गईं। तो भी तुम
मेरे पास वापस न आए!"
10 रब फ़रमाता है, "मैं ने तुम्हारे दरमियान ऐसी
मोहलिक बीमारी फैला दी जैसी क़दीम ज़माने में मिस्र
में फैल गई थी। तुम्हारे नौजवानों को मैं ने तलवार से
मार डाला, तुम्हारे घोड़े तुम से छीन लिए गए। तुम्हारी
लश्करगाहों में लाशों का ताफ़्फ़ुन इतना फैल गया
कि तुम बहुत तंग हुए। तो भी तुम मेरे पास वापस न
आए।"
11 रब फ़रमाता है, "मैं ने तुम्हारे दरमियान ऐसी
तबाही मचाई जैसी उस दिन हुई जब मैं ने सदूम और
अमूरा को तबाह किया।
तुम्हारी हालत बिलकुल उस लकड़ी की मानिन्द
थी जो आग से निकाल कर बचाई तो गई लेकिन
फिर भी काफ़ी झुलस गई थी। तो भी तुम वापस
न आए। 12 चुनाँचे ऐ इस्राईल, अब मैं आइन्दा भी
तेरे साथ ऐसा ही करूँगा। और चूँकि मैं तेरे साथ
ऐसा करूँगा, इस लिए अपने ख़ुदा से मिलने के लिए
तय्यार हो जा, ऐ इस्राईल!"
13 क्यूँकि अल्लाह ही पहाड़ों को तश्कील देता, हवा
को ख़ल्क़ करता और अपने ख़यालात को इन्सान पर
ज़ाहिर करता है। वही तड़का और अंधेरा पैदा करता
और वही ज़मीन की बुलन्दियों पर चलता है। उस का
नाम 'रब, लश्करों का ख़ुदा' है।

मेरे पास लौट आओ!

5 1 ऐ इस्राईली क़ौम, मेरी बात सुनो, तुम्हारे बारे
में मेरे नोहा पर ध्यान दो!
2 "कुंवारी इस्राईल गिर गई है और आइन्दा कभी
नहीं उठेगी। उसे उस की अपनी ज़मीन पर पटख़ दिया
गया है, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा।"
3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "इस्राईल के
जिस शहर से 1,000 मर्द लड़ने के लिए निकलेंगे
उस के सिर्फ़ 100 अफ़राद वापस आएँगे। और जिस
शहर से 100 निकलेंगे, उस के सिर्फ़ 10 मर्द वापस
आएँगे।" 4 क्यूँकि रब इस्राईली क़ौम से फ़रमाता है,
"मुझे तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। 5 न बैत-एल के
तालिब हो, न जिल्जाल के पास जाओ, और न बैर-
सबा के लिए रवाना हो जाओ! क्यूँकि जिल्जाल के
बाशिन्दे यक़ीनन जिलावतन हो जाएंगे, और बैत-एल
नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएगा।"
6 रब को तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। वर्ना वह
आग की तरह यूसुफ़ के घराने में से गुज़र कर बैत-एल
को भस्म करेगा, और उसे कोई नहीं बुझा सकेगा।

हर तरफ़ नाइन्साफ़ी

7 उन पर अफ़सोस जो इन्साफ़ को उलट कर ज़हर
में बदल देते, जो रास्ती को ज़मीन पर पटख़ देते हैं!
8 अल्लाह सात सहेलियों के झुमके और जौज़े का
ख़ालिक़ है। अंधेरे को वह सुब्ह की रौशनी में और
दिन को रात में बदल देता है। जो समुन्दर के पानी को
बुला कर रू-ए-ज़मीन पर उंडेल देता है उस का नाम
रब है! 9 अचानक ही वह ज़ोरावरों पर आफ़त लाता
है, और उस के कहने पर क़िलाबन्द शहर तबाह हो
जाता है।
10 तुम उस से नफ़रत करते हो जो अदालत में
इन्साफ़ करे, तुम्हें उस से घिन आती है जो सच बोले।
11 तुम ग़रीबों को कुचल कर उन के अनाज पर हद
से ज़्यादा टैक्स लगाते हो। इस लिए गो तुम ने तराशे
हुए पत्थरों से शानदार घर बनाए हैं तो भी उन में नहीं
रहोगे, गो तुम ने अंगूर के फलते फूलते बाग़ लगाए हैं
तो भी उन की मै से महज़ूज़ नहीं होगे। 12 मैं तो तुम्हारे
मुतअद्दिद जराइम और संगीन गुनाहों से ख़ूब वाक़िफ़
हूँ। तुम रास्तबाज़ों पर ज़ुल्म करते और रिश्वत ले कर

ग़रीबों को अदालत में इन्साफ़ से महरूम रखते हो।
13 इस लिए समझदार शख़्स इस वक़्त ख़ामोश रहता
है, वक़्त इतना ही बुरा है।
14 बुराई को तलाश न करो बल्कि अच्छाई को, तब
ही जीते रहोगे। तब ही तुम्हारा दावा दुरुस्त होगा कि
रब जो लश्करों का ख़ुदा है हमारे साथ है। 15 बुराई
से नफ़रत करो और जो कुछ अच्छा है उसे प्यार
करो। अदालतों में इन्साफ़ क़ाइम रखो, शायद रब
जो लश्करों का ख़ुदा है यूसुफ़ के बचे-खुचे हिस्से
पर रहम करे।
16 चुनाँचे रब जो लश्करों का ख़ुदा और हमारा
आक़ा है फ़रमाता है, "तमाम चौकों में आह-ओ-
बुका होगी, तमाम गलियों में लोग 'हाय, हाय' करेंगे।
खेतीबाड़ी करने वालों को भी बुलाया जाएगा ताकि
पेशावराना तौर पर सोग मनाने वालों के साथ गिर्या-
ओ-ज़ारी करें। 17 अंगूर के तमाम बाग़ों में वावैला
मचेगा, क्यूँकि मैं ख़ुद तुम्हारे दरमियान से गुज़रूँगा।"
यह रब का फ़रमान है।

रब का दिन हौलनाक है

18 उन पर अफ़्सोस जो कहते हैं, "काश रब का दिन
आ जाए!" तुम्हारे लिए रब के दिन का क्या फ़ाइदा
होगा? वह तो तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि
तारीकी का बाइस होगा। 19 तब तुम उस आदमी की
मानिन्द होगे जो शेरबबर से भाग कर रीछ से टकरा
जाता है। जब घर में पनाह ले कर हाथ से दीवार का
सहारा लेता है तो साँप उसे डस लेता है। 20 हाँ, रब
का दिन तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि तारीकी
का बाइस होगा। ऐसा अंधेरा होगा कि उम्मीद की
किरन तक नज़र नहीं आएगी।
21 रब फ़रमाता है, "मुझे तुम्हारे मज़्हबी तहवारों
से नफ़रत है, मैं उन्हें हक़ीर जानता हूँ। तुम्हारे
इजतिमाओं से मुझे घिन आती है। 22 जो भस्म होने
वाली और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ तुम मुझे पेश करते
हो उन्हें मैं पसन्द नहीं करता, जो मोटे-ताज़े बैल तुम
मुझे सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाते हो उन
पर मैं नज़र भी नहीं डालना चाहता। 23 दफ़ा करो
अपने गीतों का शोर! मैं तुम्हारे सितारों की मौसीक़ी
सुनना नहीं चाहता। 24 इन चीज़ों की बजाय इन्साफ़
का चश्मा फूट निकले और रास्ती की कभी बन्द न
होने वाली नहर बह निकले।
25 ऐ इस्राईल के घराने, जब तुम रेगिस्तान में घूमते
फिरते थे तो क्या तुम ने उन 40 सालों के दौरान कभी
मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुर्बानियाँ पेश कीं? 26 नहीं,
उस वक़्त भी तुम अपने बादशाह सक्कूत देवता और
अपने सितारे कीवान देवता को उठाए फिरते थे, गो
तुम ने अपने हाथों से यह बुत अपने लिए बना लिए
थे। 27 इस लिए रब जिस का नाम लश्करों का ख़ुदा
है फ़रमाता है कि मैं तुम्हें जिलावतन करके दमिश्क़
के पार बसा दूँगा।"

राहनुमाओं की ख़ुदएतिमादी और अय्याशी

6 1 कोह-ए-सिय्यून के बेपरवा बाशिन्दों पर
अफ़्सोस! कोह-ए-सामरिया के बाशिन्दों पर
अफ़्सोस जो अपने आप को महफ़ूज़ समझते हैं। हाँ,
सब से आला क़ौम के उन शुरफ़ा पर अफ़्सोस जिन के
पास इस्राईली क़ौम मदद के लिए आती है। 2 कल्ना
शहर के पास जा कर उस पर ग़ौर करो, वहाँ से
अज़ीम शहर हमात के पास पहुँचो, फिर फ़िलिस्ती
मुल्क के शहर जात के पास उतरो। क्या तुम इन
ममालिक से बेहतर हो? क्या तुम्हारा इलाक़ा इन की
निस्बत बड़ा है?
3 तुम अपने आप को आफ़त के दिन से दूर समझ
कर अपनी ज़ालिम हुकूमत दूसरों पर जताते हो। 4 तुम
हाथीदाँत से आरास्ता पलंगों पर सोते और अपने
शानदार सोफ़ों पर पाँओ फैलाते हो। खाने के लिए
तुम अपने रेवड़ों से अच्छे अच्छे भेड़ के बच्चे और
मोटे-ताज़े बछड़े चुन लेते हो। 5 तुम अपने सितारों को
बजा बजा कर दाऊद की तरह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
गीत तय्यार करते हो। 6 मै को तुम बड़े बड़े प्यालों
से पी लेते, बेहतरीन क़िस्म के तेल अपने जिस्म पर

मिलते हो। अफ़्सोस, तुम पर्वा ही नहीं करते कि
यूसुफ़ का घराना तबाह होने वाला है।
7 इस लिए तुम उन लोगों में से होगे जो पहले क़ैदी
बन कर जिलावतन हो जाएंगे। तब तुम्हारी रंगरलियाँ
बन्द हो जाएँगी, तुम्हारी आवारागर्द और काहिल
ज़िन्दगी ख़त्म हो जाएगी।
8 रब जो लश्करों का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मुझे
याक़ूब का ग़ुरूर देख कर घिन आती है, उस के
महलों से मैं मुतनफ़्फ़िर हूँ। मैं शहर और जो कुछ
उस में है दुश्मन के हवाले कर दूँगा। मेरे नाम की
क़सम, यह मेरा, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ का फ़रमान
है।" 9 उस वक़्त अगर एक घर में दस आदमी रह जाएँ
तो वह भी मर जाएंगे। 10 फिर जब कोई रिश्तेदार आए
ताकि लाशों को उठा कर दफ़नाने जाए और देखे कि
घर के किसी कोने में अभी कोई छुप कर बच गया
है तो वह उस से पूछेगा, "क्या आप के इलावा कोई
और भी बचा है?" तो वह जवाब देगा, "नहीं, एक
भी नहीं।" तब रिश्तेदार कहेगा, "चुप! रब के नाम
का ज़िक्र मत करना, ऐसा न हो कि वह तुझे भी मौत
के घाट उतारे।" [z]
11 क्यूँकि रब ने हुक्म दिया है कि शानदार घरों को
टुकड़े टुकड़े और छोटे घरों को रेज़ा रेज़ा किया जाए।
12 क्या घोड़े चटानों पर सरपट दौड़ते हैं? क्या
इन्सान बैल ले कर उन पर हल चलाता है? लेकिन
तुम इतनी ही ग़ैरफ़ित्री हरकतें करते हो। क्यूँकि
तुम इन्साफ़ को ज़हर में और रास्ती का मीठा फल
कड़वाहट में बदल देते हो। 13 तुम लो-दिबार की
फ़त्ह पर शादियाना बजा बजा कर फ़ख़र करते
हो, "हम ने अपनी ही ताक़त से क़र्नैम पर क़ब्ज़ा
कर लिया!" 14 चुनाँचे रब जो लश्करों का ख़ुदा है
फ़रमाता है, "ऐ इस्राईली क़ौम, मैं तेरे ख़िलाफ़ एक
क़ौम को तहरीक दूँगा जो तुझे शिमाल के शहर लबो-
हमात से ले कर जुनूब की वादी अराबा तक अज़ियत
पहुँचाएगी।"

टिड्डियों की रोया

7 1 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे रोया दिखाई। मैं
ने देखा कि अल्लाह टिड्डियों के ग़ोल पैदा कर
रहा है। उस वक़्त पहली घास की कटाई हो चुकी
थी, वह घास जो बादशाह के लिए मुक़र्रर थी। अब
घास दुबारा उगने लगी थी। 2 तब टिड्डियाँ मुल्क की
पूरी हरियाली पर टूट पड़ीं और सब कुछ खा गईं।
मैं चिल्ला उठा, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मेहरबानी
करके मुआफ़ कर, वर्ना याक़ूब किस तरह क़ाइम
रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी क़ौम है।" 3 तब रब
पछताया और फ़रमाया, "जो कुछ तू ने देखा वह पेश
नहीं आएगा।"

आग की रोया

4 फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे एक और रोया
दिखाई। मैं ने देखा कि रब क़ादिर-ए-मुतलक़ आग
की बारिश बुला रहा है ताकि मुल्क पर बरसे। आग
ने समुन्दर की गहराइयों को ख़ुश्क कर दिया, फिर
मुल्क में फैलने लगी। 5 तब मैं चिल्ला उठा, "ऐ रब
क़ादिर-ए-मुतलक़, मेहरबानी करके इस से बाज़ आ,
वर्ना याक़ूब किस तरह क़ाइम रहेगा? वह पहले से
इतनी छोटी क़ौम है।" 6 तब रब दुबारा पछताया और
फ़रमाया, "यह भी पेश नहीं आएगा।"

साहूल की रोया

7 इस के बाद रब ने मुझे एक तीसरी रोया दिखाई।
मैं ने देखा कि क़ादिर-ए-मुतलक़ एक ऐसी दीवार
पर खड़ा है जो साहूल से नाप नाप कर तामीर की
गई है। उस के हाथ में साहूल था। 8 रब ने मुझ
से पूछा, "ऐ आमूस, तुझे क्या नज़र आता है?"
मैं ने जवाब दिया, "साहूल।" तब रब ने फ़रमाया,
"मैं अपनी क़ौम इस्राईल के दरमियान साहूल लगाने
वाला हूँ। आइन्दा मैं उन के गुनाहों को नज़रअन्दाज़

---

[z] 'ऐसा न हो कि वह. . . घाट उतारे' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

नहीं करूँगा बल्कि नाप नाप कर उन को सज़ा दूँगा।
9 उन बुलन्दियों की क़ुर्बानगाहें तबाह हो जाएँगी जहाँ
इस्हाक़ की औलाद अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करती
है। इस्राईल के मक़्दिस ख़ाक में मिलाए जाएंगे,
और मैं अपनी तलवार को पकड़ कर यरुबिआम
के ख़ानदान पर टूट पड़ूँगा।"

आमूस को इस्राईल से निकलने का हुक्म दिया जाता है

10 यह सुन कर बैत-एल के इमाम अमसियाह ने
इस्राईल के बादशाह यरुबिआम को इत्तिला दी,
"आमूस इस्राईल के दरमियान ही आप के ख़िलाफ़
साज़िशें कर रहा है! मुल्क उस के पैग़ाम बर्दाश्त नहीं
कर सकता, 11 क्यूँकि वह कहता है, 'यरुबिआम
तलवार की ज़द में आ कर मर जाएगा, और इस्राईली
क़ौम यक़ीनन क़ैदी बन कर जिलावतन हो जाएगी'।"
12 अमसियाह ने आमूस से कहा, "ऐ रोया देखने
वाले, यहाँ से निकल जा! मुल्क-ए-यहूदाह में भाग
कर वहीं रोज़ी कमा, वहीं नबुव्वत कर। 13 आइन्दा
बैत-एल में नबुव्वत मत करना, क्यूँकि यह बादशाह
का मक़्दिस और बादशाही की मर्कज़ी इबादतगाह
है।"
14 आमूस ने जवाब दिया, "पेशा के लिहाज़ से न
मैं नबी हूँ, न किसी नबी का शागिर्द बल्कि गल्लाबान
और अन्जीर-तूत का बाग़बान। 15 तो भी रब ने मुझे
भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करने से हटा कर हुक्म
दिया कि मेरी क़ौम इस्राईल के पास जा और नबुव्वत
करके उसे मेरा कलाम पेश कर। 16 अब रब का
कलाम सुन! तू कहता है, 'इस्राईल के ख़िलाफ़
नबुव्वत मत करना, इस्हाक़ की क़ौम के ख़िलाफ़
बात मत करना।' 17 जवाब में रब फ़रमाता है, 'तेरी
बीवी शहर में कस्बी बनेगी, तेरे बेटे-बेटियाँ सब
तलवार से क़त्ल हो जाएंगे, तेरी ज़मीन नाप कर
दूसरों में तक़्सीम की जाएगी, और तू ख़ुद एक नापाक
मुल्क में वफ़ात पाएगा। यक़ीनन इस्राईली क़ौम क़ैदी
बन कर जिलावतन हो जाएगी'।"

पके फल से भरी टोकरी

8 1 एक बार फिर रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने मुझे
रोया दिखाई। मैं ने पके हुए फल से भरी हुई
टोकरी देखी। 2 रब ने पूछा, "ऐ आमूस, तुझे क्या
नज़र आता है?" मैं ने जवाब दिया, "पके हुए फल
से भरी हुई टोकरी।" तब रब ने मुझ से फ़रमाया,
"मेरी क़ौम का अन्जाम पक गया है। अब से मैं उन्हें
सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। 3 रब क़ादिर-ए-मुतलक़
फ़रमाता है कि उस दिन महल में गीत सुनाई नहीं देंगे
बल्कि आह-ओ-ज़ारी। चारों तरफ़ नाशें नज़र आएँगी,
क्यूँकि दुश्मन उन्हें हर जगह फैंकेगा। ख़ामोश!"

अवाम का इस्तेह्साल

4 ऐ ग़रीबों को कुचलने वालो, ऐ ज़रूरतमन्दों को
तबाह करने वालो, सुनो! 5–6 तुम कहते हो, "नए चाँद
की ईद कब गुज़र जाएगी, सबत का दिन कब ख़त्म
है ताकि हम अनाज के गोदाम खोल कर ग़ल्ला बेच
सकें? तब हम पैमाइश के बर्तन छोटे और तराज़ू
के बाट हल्के बनाएँगे, साथ साथ सौदे का भाओ
बढ़ाएँगे। हम फ़रोख़्त करते वक़्त अनाज के साथ
उस का भूसा भी मिलाएँगे।" अपने नाजाइज़ तरीक़ों
से तुम थोड़े पैसों में बल्कि एक जोड़ी जूतों के इवज़
ग़रीबों को ख़रीदते हो।
7 रब ने याक़ूब के फ़ख़र की क़सम खा कर वादा
किया है, "जो कुछ उन से सरज़द हुआ है उसे मैं कभी
नहीं भूलूँगा। 8 उन ही की वजह से ज़मीन लरज़ उठेगी
और उस के तमाम बाशिन्दे मातम करेंगे। जिस तरह
मिस्र में दरया-ए-नील बरसात के मौसम में सैलाबी
सूरत इख़तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन
उठेगी। वह नील की तरह जोश में आएगी, फिर
दुबारा उतर जाएगी।"
9 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "उस दिन मैं
होने दूँगा कि सूरज दोपहर के वक़्त ग़ुरूब हो जाए।
दिन उरूज पर ही होगा तो ज़मीन पर अंधेरा छा
जाएगा। 10 मैं तुम्हारे तहवारों को मातम में और

तुम्हारे गीतों को आह-ओ-बुका में बदल दूँगा। मैं सब
को टाट के मातमी लिबास पहना कर हर एक का सर
मुंडवाऊँगा। लोग यूँ मातम करेंगे जैसा उन का वाहिद
बेटा कूच कर गया हो। अन्जाम का वह दिन कितना
तल्ख़ होगा।"

अल्लाह आइन्दा जवाब नहीं देगा

11 क़ादिर-ए-मुतलक़ फ़रमाता है, "ऐसे दिन आने
वाले हैं जब मैं मुल्क में काल भेजूँगा। लेकिन लोग
न रोटी और न पानी से बल्कि अल्लाह का कलाम
सुनने से महरूम रहेंगे। 12 लोग लड़खड़ाते हुए एक
समुन्दर से दूसरे तक और शिमाल से मशरिक़ तक
फिरेंगे ताकि रब का कलाम मिल जाए, लेकिन बेसूद।
13 उस दिन ख़ूबसूरत कुंवारियाँ और जवान मर्द
प्यास के मारे बेहोश हो जाएंगे। 14 जो इस वक़्त
सामरिया के मकरूह बुत की क़सम खाते और कहते
हैं, 'ऐ दान, तेरे देवता की हयात की क़सम' या 'ऐ
बैर-सबा, तेरे देवता की क़सम!' वह उस वक़्त गिर
जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।"

आख़िरी रोया : इस्राईल की तबाही

9 1 मैं ने रब को क़ुर्बानगाह के पास खड़ा देखा।
उस ने फ़रमाया, "मक़्दिस के सतूनों के बालाई
हिस्सों को इतने ज़ोर से मार कि दहलीज़ें लरज़ उठें
और उन के टुकड़े हाज़िरीन के सरों पर गिर जाएँ।
उन में से जितने ज़िन्दा रहें उन्हें मैं तलवार से मार
डालूँगा। एक भी भाग जाने में कामयाब नहीं होगा,
एक भी नहीं बचेगा। 2 ख़्वाह वह ज़मीन में खोद
खोद कर पाताल तक क्यूँ न पहुँचें तो भी मेरा हाथ
उन्हें पकड़ कर वहाँ से वापस लाएगा। और ख़्वाह
वह आसमान तक क्यूँ न चढ़ जाएँ तो भी मैं उन्हें
वहाँ से उतारूँगा। 3 ख़्वाह वह कर्मिल की चोटी पर
क्यूँ न छुप जाएँ तो भी मैं उन का खोज लगा कर
उन्हें छीन लूँगा। गो वह समुन्दर की तह तक उतर
कर मुझ से पोशीदा होने की कोशिश क्यूँ न करें
तो भी बेफ़ाइदा होगा, क्यूँकि मैं समुन्दरी साँप को
उन्हें डसने का हुक्म दूँगा। 4 अगर उन के दुश्मन
उन्हें भगा कर जिलावतन करें तो मैं तलवार को
उन्हें क़त्ल करने का हुक्म दूँगा। मैं ध्यान से उन को
तकता रहूँगा, लेकिन बरकत देने के लिए नहीं बल्कि
नुक़्सान पहुँचाने के लिए।"
5 क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज है। जब वह
ज़मीन को छू देता है तो वह लरज़ उठती और उस के
तमाम बाशिन्दे मातम करने लगते हैं। तब जिस तरह
मिस्र में दरया-ए-नील बरसात के मौसम में सैलाब की
सूरत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन
उठती, फिर दुबारा उतर जाती है। 6 वह आसमान पर
अपना बालाख़ाना तामीर करता और ज़मीन पर अपने
तहख़ाने की बुन्याद डालता है। वह समुन्दर का पानी
बुला कर रू-ए-ज़मीन पर उंडेल देता है। उसी का नाम
रब है!

तुम दूसरों से बेहतर नहीं

7 रब फ़रमाता है, "ऐ इस्राईलियो, यह मत समझना
कि मेरे नज़्दीक तुम एथोपिया के बाशिन्दों से बेहतर
हो। बेशक मैं इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया,
लेकिन बिलकुल इसी तरह मैं फ़िलिस्तियों को क्रेते
[a]से और अरामियों को क़ीर से निकाल लाया।
8 मैं, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ध्यान से इस्राईल की
गुनाहआलूदा बादशाही पर ग़ौर कर रहा हूँ। यक़ीनन
मैं उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।"
ताहम रब फ़रमाता है, "मैं याक़ूब के घराने को
सरासर तबाह नहीं करूँगा। 9 मेरे हुक्म पर इस्राईली
क़ौम को तमाम अक़्वाम के दरमियान ही यूँ हिलाया
जाएगा जिस तरह अनाज को छलनी में हिला हिला
कर पाक-साफ़ किया जाता है। आख़िर में एक भी
पत्थर अनाज में बाक़ी नहीं रहेगा। 10 मेरी क़ौम के
तमाम गुनाहगार तलवार की ज़द में आ कर मर

---

[a]क्रेते : इब्रानी कफ़्तूर।

जाएंगे, गो वह इस वक़्त कहते हैं कि न हम पर आफ़त आएगी, न हम उस की ज़द में आएँगे।

इस्राईल के लिए नई उम्मीद

11 उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए घर को नए सिरे से खड़ा करूँगा। मैं उस के रख़नों को बन्द और उस के खंडरात को बहाल करूँगा। मैं सब कुछ यूँ तामीर करूँगा जिस तरह क़दीम ज़माने में था। 12 तब इस्राईली अदोम के बचे-खुचे हिस्से और उन तमाम क़ौमों पर क़ब्ज़ा करेंगे जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।" यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी।

13 रब फ़रमाता है, "ऐसे दिन आने वाले हैं जब फ़सलें बहुत ही ज़्यादा होंगी। फ़सल की कटाई के लिए इतना वक़्त दरकार होगा कि आख़िरकार हल चलाने वाला कटाई करने वालों के पीछे पीछे खेत को अगली फ़सल के लिए तय्यार करता जाएगा। अंगूर की फ़सल भी ऐसी ही होगी। अंगूर की कस्रत के बाइस उन से रस निकालने के लिए इतना वक़्त लगेगा कि आख़िरकार बीज बोने वाला साथ साथ बीज बोने का काम शुरू करेगा। कस्रत के बाइस नई मै पहाड़ों से टपकेगी और तमाम पहाड़ियों से बहेगी।

14 उस वक़्त मैं अपनी क़ौम इस्राईल को बहाल करूँगा। तब वह तबाहशुदा शहरों को नए सिरे से तामीर करके उन में आबाद हो जाएंगे। वह अंगूर के बाग़ लगा कर उन की मै पिएँगे, दीगर फलों के बाग़ लगा कर उन का फल खाएँगे। 15 मैं उन्हें पनीरी की तरह उन के अपने मुल्क में लगा दूँगा। तब वह आइन्दा उस मुल्क से कभी जड़ से नहीं उखाड़े जाएंगे जो मैं ने उन्हें अता किया है।" यह रब तेरे ख़ुदा का फ़रमान है।

अबदियाह

रब अदोम की अदालत करेगा

1 [1] ज़ैल में वह रोया क़लमबन्द है जो अबदियाह
ने देखी। उस में वह कुछ बयान किया गया है जो
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने अदोम के बारे में फ़रमाया।
हम ने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, एक क़ासिद
को अक़्वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे,
"उठो! आओ, हम अदोम से लड़ने के लिए तय्यार
हो जाएँ।"
[2] रब अदोम से फ़रमाता है, "मैं तुझे क़ौमों में छोटा
बना दूँगा, और तुझे बहुत हक़ीर जाना जाएगा। [3] तेरे
दिल के ग़ुरूर ने तुझे फ़रेब दिया है। चूँकि तू चटानों
की दराड़ों में और बुलन्दियों पर रहता है इस लिए तू
दिल में सोचता है, 'कौन मुझे यहाँ से उतार देगा'?"
[4] लेकिन रब फ़रमाता है, "ख़्वाह तू अपना घोंसला
उक़ाब की तरह बुलन्दी पर क्यूँ न बनाए बल्कि उसे
सितारों के दरमियान लगा ले, तो भी मैं तुझे वहाँ से
उतार कर ख़ाक में मिला दूँगा।
[5] अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो वह
सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठा कर ले जा
सकते हैं। अगर तू अंगूर का बाग़ होता और मज़दूर
फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा बहुत उन के पीछे
रह जाता। लेकिन तेरा अन्जाम इस से कहीं ज़्यादा
बुरा होगा। [6] दुश्मन एसौ [b]के कोने कोने का खोज
लगा लगा कर उस के तमाम पोशीदा ख़ज़ाने लूट
लेगा। [7] तेरे तमाम इत्तिहादी तुझे मुल्क की सरहद तक
भगा देंगे, तेरे दोस्त तुझे फ़रेब दे कर तुझ पर ग़ालिब
आएँगे। बल्कि तेरी रोटी खाने वाले ही तेरे लिए फंदा
लगाएँगे, और तुझे पता नहीं चलेगा।" [8] रब फ़रमाता
है, "उस दिन मैं अदोम के दानिशमन्दों को तबाह
कर दूँगा। तब एसौ के पहाड़ी इलाक़े में समझ और
अक़्ल का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा। [9] ऐ तेमान,
तेरे सूरमे भी सख़्त दहशत खाएँगे, क्यूँकि उस वक़्त
एसौ के पहाड़ी इलाक़े में क़त्ल-ओ-ग़ारत आम होगी,
कोई नहीं बचेगा।
[10] तू ने अपने भाई याक़ूब [c]पर ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद
किया, इस लिए तेरी ख़ूब रुस्वाई हो जाएगी, तुझे
यूँ मिटाया जाएगा कि आइन्दा तेरा नाम-ओ-निशान
तक नहीं रहेगा। [11] जब अजनबी फ़ौजी यरूशलम
के दरवाज़ों में घुस आए तो तू फ़ासिले पर खड़ा
हो कर उन जैसा था। जब उन्हों ने तमाम माल-ओ-
दौलत छीन लिया, जब उन्हों ने क़ुरआ डाल कर
आपस में यरूशलम को बाँट लिया तो तू ने उन का ही
रवय्या अपना लिया। [12] तुझे तेरे भाई की बदक़िस्मती
पर ख़ुशी नहीं मनानी चाहिए थी। मुनासिब नहीं था
कि तू यहूदाह के बाशिन्दों की तबाही पर शादियाना
बजाता। उन की मुसीबत देख कर तुझे शेख़ी नहीं
मारनी चाहिए थी। [13] यह ठीक नहीं था कि तू उस
दिन तबाहशुदा शहर में घुस आया ताकि यरूशलम
की मुसीबत से लुत्फ़ उठाए और उन का बचा-खुचा
माल लूट ले। [14] कितनी बुरी बात थी कि तू शहर से
निकलने वाले रास्तों पर ताक में बैठ गया ताकि वहाँ
से भागने वालों को तबाह करे और बचे हुओं को
दुश्मन के हवाले करे। [15] क्यूँकि रब का दिन तमाम
अक़्वाम के लिए क़रीब आ गया है। जो सुलूक तू
ने दूसरों के साथ किया वही सुलूक तेरे साथ किया
जाएगा। तेरा ग़लत काम तेरे अपने ही सर पर आएगा।

---

[b]एसौ से मुराद अदोम है।

[c]याक़ूब से मुराद इस्राईल है।

अल्लाह की क़ौम नजात पाएगी

16 पहले तुम्हें मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मेरे ग़ज़ब का
प्याला पीना पड़ा, लेकिन अब तमाम दीगर अक़्वाम
उसे पीती रहेंगी। बल्कि वह उसे पी पी कर ख़ाली
करेंगी, उन्हें उस के आख़िरी क़तरे भी चाटने पड़ेंगे।
फिर उन का नाम-ओ-निशान नहीं रहेगा, ऐसा लगेगा
कि वह कभी थीं नहीं।
17 लेकिन कोह-ए-सिय्यून पर नजात होगी,
यरूशलम मुक़द्दस होगा।
तब याक़ूब का घराना [d]दुबारा अपनी मौरूसी
ज़मीन पर क़ब्ज़ा करेगा, 18 और इस्राईली क़ौम
[e]भड़कती आग बन कर अदोम को भूसे की तरह
भस्म करेगी। अदोम का एक शख़्स भी नहीं बचेगा।
क्यूँकि रब ने यह फ़रमाया है।
19 तब नजब यानी जुनूब के बाशिन्दे अदोम के
पहाड़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा करेंगे, और मग़रिब के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े के बाशिन्दे फ़िलिस्तियों का
इलाक़ा अपना लेंगे। वह इफ़्राईम और सामरिया
के इलाक़ों पर भी क़ब्ज़ा करेंगे। जिलिआद का
इलाक़ा बिनयमीन के क़बीले की मिलकियत बनेगा।
20 इस्राईल के जिलावतनों को कनआनियों का
मुल्क शिमाली शहर सारपत तक हासिल होगा
जबकि यरूशलम के जो बाशिन्दे जिलावतन हो कर
सिफ़ाराद में जा बसे वह जुनूबी इलाक़े नजब पर
क़ब्ज़ा करेंगे। 21 नजात देने वाले कोह-ए-सिय्यून पर
आ कर अदोम के पहाड़ी इलाक़े पर हुकूमत करेंगे।
तब रब ही बादशाह होगा।!”

---

[d]याक़ूब का घराना से मुराद इस्राईल है।

[e]लफ़्ज़ी तर्जुमा : याक़ूब और यूसुफ़ के घराने।

यूनुस

यूनुस अल्लाह से फ़रार हो जाता है

1 1 रब यूनुस बिन अमित्ती से हमकलाम हुआ,
2 "बड़े शहर नीनवा जा कर उस पर मेरी
अदालत का एलान कर, क्यूँकि उन की बुराई मेरे
हुज़ूर तक पहुँच गई है।"
3 यूनुस रवाना हुआ, लेकिन मशरिक़ी शहर नीनवा
के लिए नहीं बल्कि मग़रिबी शहर तरसीस के लिए।
रब के हुज़ूर से फ़रार होने के लिए वह याफ़ा शहर
पहुँच गया जहाँ एक बहरी जहाज़ तरसीस को जाने
वाला था। सफ़र का किराया अदा करके यूनुस
जहाज़ में बैठ गया ताकि रब के हुज़ूर से भाग निकले।
4 लेकिन रब ने समुन्दर पर ज़बरदस्त आँधी भेजी।
तूफ़ान इतना शदीद था कि जहाज़ के टुकड़े टुकड़े
होने का ख़तरा था। 5 मल्लाह सहम गए, और हर एक
चीख़ता चिल्लाता अपने देवता से इल्तिजा करने लगा।
जहाज़ को हल्का करने के लिए उन्हों ने सामान को
समुन्दर में फैंक दिया।
लेकिन यूनुस जहाज़ के निचले हिस्से में लेट गया
था। अब वह गहरी नींद सो रहा था। 6 फिर कप्तान
उस के पास आया और कहने लगा, "आप किस
तरह सो सकते हैं? उठें, अपने देवता से इल्तिजा
करें! शायद वह हम पर ध्यान दे और हम हलाक न
हों।"
7 मल्लाह आपस में कहने लगे, "आओ, हम क़ुरआ
डाल कर मालूम करें कि कौन हमारी मुसीबत का
बाइस है।" उन्हों ने क़ुरआ डाला तो यूनुस का नाम
निकला। 8 तब उन्हों ने उस से पूछा, "हमें बताएँ कि
यह आफ़त किस के क़ुसूर के बाइस हम पर नाज़िल
हुई है? आप क्या करते हैं, कहाँ से आए हैं, किस
मुल्क और किस क़ौम से हैं?"
9 यूनुस ने जवाब दिया, "मैं इब्रानी हूँ, और रब का
परस्तार हूँ जो आसमान का ख़ुदा है। समुन्दर और
ख़ुश्की दोनों उसी ने बनाए हैं।" 10 यूनुस ने उन्हें यह
भी बताया कि मैं रब के हुज़ूर से फ़रार हो रहा हूँ। यह
सब कुछ सुन कर दीगर मुसाफ़िरों पर शदीद दहशत
तारी हुई। उन्हों ने कहा, "यह आप ने क्या किया
है?" 11 इतने में समुन्दर मज़ीद मुतलातिम होता जा
रहा था। चुनाँचे उन्हों ने पूछा, "अब हम आप के
साथ क्या करें ताकि समुन्दर थम जाए और हमारा
पीछा छोड़ दे?" 12 यूनुस ने जवाब दिया, "मुझे उठा
कर समुन्दर में फैंक दें तो वह थम जाएगा। क्यूँकि मैं
जानता हूँ कि यह बड़ा तूफ़ान मेरी ही वजह से आप
पर टूट पड़ा है।"
13 पहले मल्लाहों ने उस का मश्वरा न माना बल्कि
चप्पू मार मार कर साहिल पर पहुँचने की सिरतोड़
कोशिश करते रहे। लेकिन बेफ़ाइदा, समुन्दर पहले
की निस्बत कहीं ज़्यादा मुतलातिम हो गया। 14 तब
वह बुलन्द आवाज़ से रब से इल्तिजा करने लगे, "ऐ
रब, ऐसा न हो कि हम इस आदमी की ज़िन्दगी के
सबब से हलाक हो जाएँ। और जब हम उसे समुन्दर
में फैंकेंगे तो हमें बेगुनाह आदमी की जान लेने के
ज़िम्मादार न ठहरा। क्यूँकि जो कुछ हो रहा है वह
तेरी ही मर्ज़ी से हो रहा है।" 15 यह कह कर उन्हों
ने यूनुस को उठा कर समुन्दर में फैंक दिया। पानी
में गिरते ही समुन्दर ठाठें मारने से बाज़ आ कर थम
गया। 16 यह देख कर मुसाफ़िरों पर सख़्त दहशत छा
गई, और उन्हों ने रब को ज़बह की क़ुर्बानी पेश की
और मन्नतें मानीं।
17 लेकिन रब ने एक बड़ी मछली को यूनुस के पास
भेजा जिस ने उसे निगल लिया। यूनुस तीन दिन और
तीन रात मछली के पेट में रहा।

यूनुस की दुआ

2 1 मछली के पेट में यूनुस ने रब अपने ख़ुदा से
ज़ैल की दुआ की,
2 "मैं ने बड़ी मुसीबत में आ कर रब से इल्तिजा
की, और उस ने मुझे जवाब दिया। मैं ने पाताल की
गहराइयों से चीख़ कर फ़र्याद की तो तू ने मेरी सुनी।
3 तू ने मुझे गहरे पानी बल्कि समुन्दर के बीच में
ही फैंक दिया। पानी के ज़ोरदार बहाओ ने मुझे घेर
लिया, तेरी तमाम लहरें और मौजें मुझ पर से गुज़र
गईं।
4 तब मैं बोला, 'मुझे तेरे हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया
गया है, लेकिन मैं तेरे मुक़द्दस घर की तरफ़ तकता
रहूँगा।'
5 पानी मेरे गले तक पहुँच गया, समुन्दर की
गहराइयों ने मुझे छुपा लिया। मेरे सर से समुन्दरी
पौदे लिपट गए।
6 पानी में उतरते उतरते मैं पहाड़ों की बुन्यादों तक
पहुँच गया। मैं ज़मीन में धँस कर एक ऐसे मुल्क में
आ गया जिस के दरवाज़े हमेशा के लिए मेरे पीछे
बन्द हो गए। लेकिन ऐ रब, मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी जान
को गढ़े से निकाल लाया!
7 जब मेरी जान निकलने लगी तो तू, ऐ रब मुझे
याद आया, और मेरी दुआ तेरे मुक़द्दस घर में तेरे
हुज़ूर पहुँची।
8 जो बुतों की पूजा करते हैं उन्हों ने अल्लाह से
वफ़ादार रहने का वादा तोड़ दिया है।
9 लेकिन मैं शुक्रगुज़ारी के गीत गाते हुए तुझे क़ुर्बानी
पेश करूँगा। जो मन्नत मैं ने मानी उसे पूरा करूँगा।
रब ही नजात देता है।"

10 तब रब ने मछली को हुक्म दिया कि वह यूनुस
को ख़ुश्की पर उगल दे।

यूनुस नीनवा में

3 1 रब एक बार फिर यूनुस से हमकलाम हुआ,
2 "बड़े शहर नीनवा जा कर उसे वह पैग़ाम सुना
दे जो मैं तुझे दूँगा।"
3 इस मर्तबा यूनुस रब की सुन कर नीनवा के लिए
रवाना हुआ। रब के नज़्दीक नीनवा अहम शहर था।
उस में से गुज़रने के लिए तीन दिन दरकार थे। 4 पहले
दिन यूनुस शहर में दाख़िल हुआ और चलते चलते
लोगों को पैग़ाम सुनाने लगा, "ऐन 40 दिन के बाद
नीनवा तबाह हो जाएगा।"
5 यह सुन कर नीनवा के बाशिन्दे अल्लाह पर ईमान
लाए। उन्हों ने रोज़े का एलान किया, और छोटे से ले
कर बड़े तक सब टाट ओढ़ कर मातम करने लगे।
6 जब यूनुस का पैग़ाम नीनवा के बादशाह तक
पहुँचा तो उस ने तख़्त पर से उतर कर अपने शाही
कपड़ों को उतार दिया और टाट ओढ़ कर ख़ाक में
बैठ गया। 7 उस ने शहर में एलान किया, "बादशाह
और उस के शुरफ़ा का फ़रमान सुनो! किसी को भी
खाने या पीने की इजाज़त नहीं। गाय-बैल और भेड़-
बकरियों समेत तमाम जानवर भी इस में शामिल हैं।
न उन्हें चरने दो, न पानी पीने दो। 8 लाज़िम है कि सब
लोग जानवरों समेत टाट ओढ़ लें। हर एक पूरे ज़ोर से
अल्लाह से इल्तिजा करे, हर एक अपनी बुरी राहों और
अपने ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से बाज़ आए। 9 क्या मालूम,
शायद अल्लाह पछताए। शायद उस का शदीद ग़ज़ब
टल जाए और हम हलाक न हों।"
10 जब अल्लाह ने उन का यह रवय्या देखा, कि वह
वाक़ई अपनी बुरी राहों से बाज़ आए तो वह पछताया
और उन पर वह आफ़त न लाया जिस का एलान उस
ने किया था।

यूनुस अल्लाह की मेहरबानी देख कर नाराज़ हो जाता है

4 1 यह बात यूनुस को निहायत बुरी लगी, और
वह ग़ुस्से हुआ। 2 उस ने रब से दुआ की, "ऐ

रब, क्या यह वही बात नहीं जो मैं ने उस वक़्त की
जब अभी अपने वतन में था? इसी लिए मैं इतनी
तेज़ी से भाग कर तरसीस के लिए रवाना हुआ था।
मैं जानता था कि तू मेहरबान और रहीम ख़ुदा है। तू
तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा
देने से पछताता है। 3 ऐ रब, अब मुझे जान से मार दे!
जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।"

4 लेकिन रब ने जवाब दिया, "क्या तू ग़ुस्से होने में
हक़-ब-जानिब है?"

5 यूनुस शहर से निकल कर उस के मशरिक़ में रुक
गया। वहाँ वह अपने लिए झोंपड़ी बना कर उस के
साय में बैठ गया। क्यूँकि वह देखना चाहता था कि
शहर के साथ क्या कुछ हो जाएगा।

6 तब रब ख़ुदा ने एक बेल को फूटने दिया जो बढ़ते
बढ़ते यूनुस के ऊपर फैल गई ताकि साया दे कर
उस की नाराज़ी दूर करे। यह देख कर यूनुस बहुत
ख़ुश हुआ। 7 लेकिन अगले दिन जब पौ फटने लगी
तो अल्लाह ने एक कीड़ा भेजा जिस ने बेल पर हम्ला
किया। बेल जल्द ही मुरझा गई।

8 जब सूरज तुलू हुआ तो अल्लाह ने मशरिक़ से
झुलसती लू भेजी। धूप इतनी शदीद थी कि यूनुस
ग़श खाने लगा। आख़िरकार वह मरना ही चाहता
था। वह बोला, "जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच
कर जाऊँ।"

9 तब अल्लाह ने उस से पूछा, "क्या तू बेल के सबब
से ग़ुस्से होने में हक़-ब-जानिब है?" यूनुस ने जवाब
दिया, "जी हाँ, मैं मरने तक ग़ुस्से हूँ, और इस में मैं
हक़-ब-जानिब भी हूँ।"

10 रब ने जवाब दिया, "तू इस बेल पर ग़म खाता है,
हालाँकि तू ने उस के फलने फूलने के लिए एक उंगली
भी नहीं हिलाई। यह बेल एक रात में पैदा हुई और
अगली रात ख़त्म हुई 11 जबकि नीनवा बहुत बड़ा
शहर है, उस में 1,20,000 अफ़राद और मुतअद्दिद
जानवर बसते हैं। और यह लोग इतने जाहिल हैं कि
अपने दाएँ और बाएँ हाथ में इम्तियाज़ नहीं कर पाते।
क्या मुझे इस बड़े शहर पर ग़म नहीं खाना चाहिए।?"

मीकाह

सामरिया की तबाही

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो मीकाह
मोरश्ती पर यहूदाह के बादशाहों यूताम, आख़ज़
और हिज़क़ियाह के दौर-ए-हुकूमत में नाज़िल हुआ।
उस ने सामरिया और यरूशलम के बारे में यह बातें
रोया में देखीं।

2 ऐ तमाम अक़्वाम, सुनो! ऐ ज़मीन और जो कुछ
उस पर है, ध्यान दो! रब क़ादिर-ए-मुतलक़ तुम्हारे
ख़िलाफ़ गवाही दे, क़ादिर-ए-मुतलक़ अपने मुक़द्दस
घर की तरफ़ से गवाही दे। 3 क्यूँकि देखो, रब अपनी
सुकूनतगाह से निकल रहा है ताकि उतर कर ज़मीन
की बुलन्दियों पर चले। 4 उस के पाँओ तले पहाड़
पिघल जाएंगे और वादियाँ फट जाएँगी, वह आग के
सामने पिघलने वाले मोम या ढलान पर उंडेले गए
पानी की मानिन्द होंगे।

5 यह सब कुछ याक़ूब के जुर्म, इस्राईली क़ौम के
गुनाहों के सबब से हो रहा है। कौन याक़ूब के जुर्म
का ज़िम्मादार है? सामरिया! किस ने यहूदाह को
बुलन्द जगहों पर बुतपरस्ती करने की तहरीक दी?
यरूशलम ने!

6 इस लिए रब फ़रमाता है, "मैं सामरिया को खुले
मैदान में मल्बे का ढेर बना दूँगा, इतनी ख़ाली
जगह कि लोग वहाँ अंगूर के बाग़ लगाएँगे। मैं उस
के पत्थर वादी में फैंक दूँगा, उसे इतने धड़ाम से
गिरा दूँगा कि उस की बुन्यादें ही नज़र आएँगी ।
7 उस के तमाम बुत टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे, उस
की इस्मतफ़रोशी का पूरा अज्र नज़र-ए-आतिश हो
जाएगा। मैं उस के देवताओं के तमाम मुजस्समों को
तबाह कर दूँगा। क्यूँकि सामरिया ने यह तमाम चीज़ें
अपनी इस्मतफ़रोशी से हासिल की हैं, और अब यह
सब उस से छीन ली जाएँगी और दीगर इस्मतफ़रोशों
को मुआवज़े के तौर पर दी जाएँगी।"

अपनी क़ौम पर मातम

8 इस लिए मैं आह-ओ-ज़ारी करूँगा, नंगे पाँओ और
बरहना फिरूँगा, गीदड़ों की तरह वावैला करूँगा,
उक़ाबी उल्लू की तरह आहें भरूँगा। 9 क्यूँकि सामरिया
का ज़ख़्म लाइलाज है, और वह मुल्क-ए-यहूदाह में
भी फैल गया है, वह मेरी क़ौम के दरवाज़े यानी
यरूशलम तक पहुँच गया है।

10 फ़िलिस्ती शहर जात में यह बात न बताओ, उन्हें
अपने आँसू न दिखाओ। बैत-लाफ़्रा [f]में ख़ाक में लोट-
पोट हो जाओ। 11 ऐ सफ़ीर [g]के रहने वालो, बरहना
और शर्मसार हो कर यहाँ से गुज़र जाओ। ज़ानान [h]के
बाशिन्दे निकलेंगे नहीं। बैत-एज़ल [i]मातम करेगा जब
तुम से हर सहारा छीन लिया जाएगा। 12 मारोत [j]के
बसने वाले अपने माल के लिए पेच-ओ-ताब खा रहे
हैं, क्यूँकि रब की तरफ़ से आफ़त नाज़िल हो कर
यरूशलम के दरवाज़े तक पहुँच गई है।

13 ऐ लकीस [k]के बाशिन्दो, घोड़ों को रथ में जोत
कर भाग जाओ। क्यूँकि इब्तिदा में तुम ही सिय्यून

---

[f]बैत-लाफ़्रा = ख़ाक का घर।

[g]सफ़ीर = ख़ूबसूरत।

[h]ज़ानान = निकलने वाला।

[i]बैत-एज़ल = साथ वाला यानी सहारा देने वाला घर।

[j]मारोत = तल्ख़ी।

[k]लकीस के क़िलाबन्द शहर में जंगी रथ रखे जाते थे।

बेटी के लिए गुनाह का बाइस बन गए, तुम ही में
वह जराइम मौजूद थे जो इस्राईल से सरज़द हो रहे
हैं। 14 इस लिए तुम्हें तुह्फ़े दे कर मोरशत-जात [l]को
रुख़्सत करनी पड़ेगी। अक्ज़ीब [m]के घर इस्राईल के
बादशाहों के लिए फ़रेबदिह साबित होंगे।

15 ऐ मरेसा [n]के लोगो, मैं होने दूँगा कि एक क़ब्ज़ा
करने वाला तुम पर हम्ला करेगा। तब इस्राईल का
जलाल अदुल्लाम तक पहुँचेगा। 16 ऐ सिय्यून बेटी,
अपने बाल कटवा कर गिद्ध जैसी गंजी हो जा। अपने
लाडले बच्चों पर मातम कर, क्यूँकि वह क़ैदी बन कर
तुझ से दूर हो जाएंगे।

क़ौम पर ज़ुल्म करने वालों पर अफ़्सोस

2 1 उन पर अफ़्सोस जो दूसरों को नुक़्सान पहुँचाने
के मन्सूबे बांधते और अपने बिस्तर पर ही
साज़िशें करते हैं। पौ फटते ही वह उठ कर उन्हें
पूरा करते हैं, क्यूँकि वह यह करने का इख़तियार
रखते हैं। 2 जब वह किसी खेत या मकान के लालच
में आ जाते हैं तो उसे छीन लेते हैं। वह लोगों पर
ज़ुल्म करके उन के घर और मौरूसी मिलकियत उन
से लूट लेते हैं।

3 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "मैं इस क़ौम पर आफ़त
का मन्सूबा बांध रहा हूँ, ऐसा फंदा जिस में से तुम
अपनी गरदनों को निकाल नहीं सकोगे। तब तुम
सर उठा कर नहीं फिरोगे, क्यूँकि वक़्त बुरा ही
होगा। 4 उस दिन लोग अपने गीतों में तुम्हारा मज़ाक़
उड़ाएँगे, वह मातम का तल्ख़ गीत गा कर तुम्हें लान-
तान करेंगे,

'हाय, हम सरासर तबाह हो गए हैं! मेरी क़ौम की
मौरूसी ज़मीन दूसरों के हाथ में आ गई है। वह किस
तरह मुझ से छीन ली गई है! हमारे काम के जवाब
में हमारे खेत दूसरों में तक़्सीम हो रहे हैं'।"

5 चुनाँचे आइन्दा तुम में से कोई नहीं होगा जो
रब की जमाअत में क़ुरआ डाल कर मौरूसी ज़मीन
तक़्सीम करे।

6 वह नबुव्वत करते हैं, "नबुव्वत मत करो!
नबुव्वत करते वक़्त इन्सान को इस क़िस्म की
बातें नहीं सुनानी चाहिएँ। यह सहीह नहीं कि हमारी
रुस्वाई हो जाएगी।" 7 ऐ याक़ूब के घराने, क्या तुझे
इस तरह की बातें करनी चाहिएँ, "क्या रब नाराज़
है? क्या वह ऐसा काम करेगा?"

रब फ़रमाता है, "यह बात दुरुस्त है कि मैं उस
से मेहरबान बातें करता हूँ जो सहीह राह पर चले।
8 लेकिन काफ़ी देर से मेरी क़ौम दुश्मन बन कर उठ
खड़ी हुई है। जिन लोगों का जंग करने से ताल्लुक़ ही
नहीं उन से तुम चादर तक सब कुछ छीन लेते हो
जब वह अपने आप को महफ़ूज़ समझ कर तुम्हारे
पास से गुज़रते हैं। 9 मेरी क़ौम की औरतों को तुम
उन के ख़ुशनुमा घरों से भगा कर उन के बच्चों को
हमेशा के लिए मेरी शानदार बरकतों से महरूम कर
देते हो। 10 अब उठ कर चले जाओ! आइन्दा तुम्हें
यहाँ सुकून हासिल नहीं होगा। क्यूँकि नापाकी के
सबब से यह मक़ाम अज़ियतनाक तरीक़े से तबाह
हो जाएगा। 11 हक़ीक़त में यह क़ौम ऐसा फ़रेबदिह
नबी चाहती है जो ख़ाली हाथ आ कर [o]उस से कहे,
'तुम्हें कस्रत की मै और शराब हासिल होगी!'

अल्लाह क़ौम को वापस लाएगा

12 ऐ याक़ूब की औलाद, एक दिन मैं तुम सब को
यक़ीनन जमा करूँगा। तब मैं इस्राईल का बचा हुआ
हिस्सा यूँ इकट्ठा करूँगा जिस तरह भेड़-बकरियों को
बाड़े में या रेवड़ को चरागाह में। मुल्क में चारों तरफ़
हुजूमों का शोर मचेगा। 13 एक राहनुमा उन के आगे
आगे चलेगा जो उन के लिए रास्ता खोलेगा। तब वह

---

[l]'मोरशत' तुह्फ़े और जहेज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता जुलता है।

[m]अक्ज़ीब = फ़रेब है।

[n]'मरेसा' फ़ातेह और क़ाबिज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता जुलता है।

[o]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जो हवा यानी कुछ नहीं अपने साथ ले कर आए।

शहर के दरवाज़े को तोड़ कर उस में से निकलेंगे।
उन का बादशाह उन के आगे आगे चलेगा, रब ख़ुद
उन की राहनुमाई करेगा।”

राहनुमाओं और झूटे नबियों पर इलाही फ़ैसला

3 1 मैं बोला, “ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इस्राईल
के बुज़ुर्गो, सुनो! तुम्हें इन्साफ़ को जानना
चाहिए। 2 लेकिन जो अच्छा है उस से तुम नफ़रत
करते और जो ग़लत है उसे प्यार करते हो। तुम मेरी
क़ौम की खाल उतार कर उस का गोश्त हड्डियों से
जुदा कर लेते हो। 3 क्यूँकि तुम मेरी क़ौम का गोश्त
खा लेते हो। उन की खाल उतार कर तुम उन की
हड्डियों और गोश्त को टुकड़े टुकड़े करके देग में
फैंक देते हो।” 4 तब वह चिल्ला कर रब से इल्तिजा
करेंगे, लेकिन वह उन की नहीं सुनेगा। उन के ग़लत
कामों के सबब से वह अपना चिहरा उन से छुपा
लेगा।

5 रब फ़रमाता है, “ऐ नबियो, तुम मेरी क़ौम को
भटका रहे हो। अगर तुम्हें कुछ खिलाया जाए तो तुम
एलान करते हो कि अम्न-ओ-अमान होगा। लेकिन
जो तुम्हें कुछ न खिलाए उस पर तुम जिहाद का फ़त्वा
देते हो। 6 चुनाँचे तुम पर ऐसी रात छा जाएगी जिस
में तुम रोया नहीं देखोगे, ऐसी तारीकी जिस में तुम्हें
मुस्तक़बिल के बारे में कोई भी बात नहीं मिलेगी।
नबियों पर सूरज डूब जाएगा, उन के चारों तरफ़
अंधेरा ही अंधेरा छा जाएगा। 7 तब रोया देखने वाले
शर्मसार और क़िस्मत का हाल बताने वाले शर्मिन्दा
हो जाएंगे। शर्म के मारे वह अपने मुँह को छुपा लेंगे,
[p]क्यूँकि अल्लाह से कोई भी जवाब नहीं मिलेगा।”

8 लेकिन मैं ख़ुद क़ुव्वत से, रब के रूह से और
इन्साफ़ और ताक़त से भरा हुआ हूँ ताकि याक़ूब की
औलाद को उस के जराइम और इस्राईल को उस के
गुनाह सुना सकूँ।

9 ऐ याक़ूब के राहनुमाओ, ऐ इस्राईल के बुज़ुर्गो,
सुनो! तुम इन्साफ़ से घिन खा कर हर सीधी बात
को टेढ़ी बना लेते हो। 10 तुम सिय्यून को ख़ूँरेज़ी से
और यरूशलम को नाइन्साफ़ी से तामीर कर रहे हो।
11 यरूशलम के बुज़ुर्ग अदालत करते वक़्त रिश्वत
लेते हैं। उस के इमाम तालीम देते हैं लेकिन सिर्फ़
कुछ मिलने के लिए। उस के नबी पेशगोई सुना देते
हैं लेकिन सिर्फ़ पैसों के मुआवज़े में। ताहम यह लोग
रब पर इन्हिसार करके कहते हैं, “हम पर आफ़त
आ ही नहीं सकती, क्यूँकि रब हमारे दरमियान है।”

12 तुम्हारी वजह से सिय्यून पर हल चलाया जाएगा
और यरूशलम मल्बे का ढेर बन जाएगा। जिस पहाड़
पर रब का घर है उस पर जंगल छा जाएगा।

यरूशलम एक नई बादशाही का मर्कज़ बन जाएगा

4 1 आख़िरी अय्याम में रब के घर का पहाड़
मज़बूती से क़ाइम होगा। सब से बड़ा यह
पहाड़ दीगर तमाम बुलन्दियों से कहीं ज़्यादा
सरफ़राज़ होगा। तब उम्मतें जौक़-दर-जौक़ उस के
पास पहुँचेंगी, 2 और बेशुमार क़ौमें आ कर कहेंगी,
“आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़ कर याक़ूब के
ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह हमें अपनी मर्ज़ी
की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

क्यूँकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी,
और यरूशलम से उस का कलाम सादिर होगा।
3 रब बैन-उल-अक़्वामी झगड़ों को निपटाएगा और
दूर तक की ज़ोरावर क़ौमों का इन्साफ़ करेगा। तब
वह अपनी तलवारों को कूट कर फाले बनाएँगी
और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तब्दील
करेंगी। अब से न एक क़ौम दूसरी पर हम्ला करेगी, न
लोग जंग करने की तर्बियत हासिल करेंगे। 4 हर एक
अपनी अंगूर की बेल और अपने अन्जीर के दरख़्त
के साय में बैठ कर आराम करेगा। कोई नहीं रहेगा

---

[p]मुँह का लफ़्ज़ी तर्जुमा ‘मूँछें’ है।

जो उन्हें अचानक दहशतज़दा करे। क्यूँकि रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने यह कुछ फ़रमाया है।
5 हर दूसरी क़ौम अपने देवता का नाम ले कर
फिरती है, लेकिन हम हमेशा तक रब अपने ख़ुदा
का नाम ले कर फिरेंगे।
6 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं लंगड़ों को जमा
करूँगा और उन्हें इकट्ठा करूँगा जिन्हें मैं ने मुन्तशिर
करके दुख पहुँचाया था। 7 मैं लंगड़ों को क़ौम का
बचा हुआ हिस्सा बना दूँगा और जो दूर तक भटक
गए थे उन्हें ताक़तवर उम्मत में तब्दील करूँगा। तब
रब उन का बादशाह बन कर अबद तक सिय्यून
पहाड़ पर उन पर हुकूमत करेगा। 8 जहाँ तक तेरा
ताल्लुक़ है, ऐ रेवड़ के बुर्ज, ऐ सिय्यून बेटी के पहाड़,
तुझे पहले की सी सल्तनत हासिल होगी। यरूशलम
बेटी को दुबारा बादशाहत मिलेगी।"

यरूशलम अभी तक ख़तरे में है

9 ऐ यरूशलम बेटी, इस वक़्त तू इतने ज़ोर से क्यूँ
चीख़ रही है? क्या तेरा कोई बादशाह नहीं? क्या तेरे
मुशीर सब ख़त्म हो गए हैं कि तू दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला
औरत की तरह पेच-ओ-ताब खा रही है?
10 ऐ सिय्यून बेटी, जन्म देने वाली औरत की तरह
तड़पती और चीख़ती जा! क्यूँकि अब तुझे शहर से
निकल कर खुले मैदान में रहना पड़ेगा, आख़िर में तू
बाबल तक पहुँचेगी। लेकिन वहाँ रब तुझे बचाएगा,
वहाँ वह इवज़ाना दे कर तुझे दुश्मन के हाथ से
छुड़ाएगा।
11 इस वक़्त तो मुतअद्दिद क़ौमें तेरे ख़िलाफ़ जमा
हो गई हैं। आपस में वह कह रही हैं, "आओ,
यरूशलम की बेहुरमती हो जाए, हम सिय्यून की
हालत देख कर लुत्फ़अन्दोज़ हो जाएँ।" 12 लेकिन
वह रब के ख़यालात को नहीं जानते, उस का मन्सूबा
नहीं समझते। उन्हें मालूम नहीं कि वह उन्हें गन्दुम
के पूलों की तरह इकट्ठा कर रहा है ताकि उन्हें गाह
ले।
13 "ऐ सिय्यून बेटी, उठ कर गाह ले! क्यूँकि मैं
तुझे लोहे के सींगों और पीतल के खुरों से नवाज़ूँगा
ताकि तू बहुत सी क़ौमों को चूर चूर कर सके। तब मैं
उन का लूटा हुआ माल रब के लिए मख़्सूस करूँगा,
उन की दौलत पूरी दुनिया के मालिक के हवाले
करूँगा।"

नजातदहिन्दा की उम्मीद

5 1 ऐ शहर जिस पर हम्ला हो रहा है, अब अपने
आप को छुरी से ज़ख़्मी कर, क्यूँकि हमारा
मुहासरा हो रहा है। दुश्मन लाठी से इस्राईल के
हुक्मरान के गाल पर मारेगा।
2 लेकिन तू, ऐ बैत-लहम इफ़्राता, जो यहूदाह के
दीगर ख़ानदानों की निस्बत छोटा है, तुझ में से
वह निकलेगा जो इस्राईल का हुक्मरान होगा और
जो क़दीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर हुआ है।
3 लेकिन जब तक हामिला औरत उसे जन्म न दे,
उस वक़्त तक रब अपनी क़ौम को दुश्मन के हवाले
छोड़ेगा। लेकिन फिर उस के भाइयों का बचा हुआ
हिस्सा इस्राईलियों के पास वापस आएगा।
4 यह हुक्मरान खड़े हो कर रब की क़ुव्वत के साथ
अपने रेवड़ की गल्लाबानी करेगा। उसे रब अपने ख़ुदा
के नाम का अज़ीम इख़तियार हासिल होगा। तब
क़ौम सलामती से बसेगी, क्यूँकि उस की अज़मत
दुनिया की इन्तिहा तक फैलेगी। 5 वही सलामती का
मम्बा होगा। जब असूर की फ़ौज हमारे मुल्क में
दाख़िल हो कर हमारे महलों में घुस आए तो हम
उस के ख़िलाफ़ सात चरवाहे और आठ रईस खड़े
करेंगे 6 जो तलवार से मुल्क-ए-असूर की गल्लाबानी
करेंगे, हाँ तलवार को मियान से खैंच कर नमरूद के
मुल्क पर हुकूमत करेंगे। यूँ हुक्मरान हमें असूर से
बचाएगा जब यह हमारे मुल्क और हमारी सरहद में
घुस आएगा।
7 तब याक़ूब के जितने लोग बच कर मुतअद्दिद
अक़्वाम के बीच में रहेंगे वह रब की भेजी हुई ओस
या हरियाली पर पड़ने वाली बारिश की मानिन्द होंगे

यानी ऐसी चीज़ों की मानिन्द जो न किसी इन्सान
के इन्तिज़ार में रहती, न किसी इन्सान के हुक्म पर
पड़ती हैं। 8 याक़ूब के जितने लोग बच कर मुतअद्दिद
अक़्वाम के बीच में रहेंगे वह जंगली जानवरों के
दरमियान शेरबबर और भेड़-बकरियों के बीच में
जवान शेर की मानिन्द होंगे यानी ऐसे जानवर की
मानिन्द जो जहाँ से भी गुज़रे जानवरों को रौंद कर
फाड़ लेता है। उस के हाथ से कोई बचा नहीं सकता।
9 तेरा हाथ तेरे तमाम मुख़ालिफ़ों पर फ़त्ह पाएगा, तेरे
तमाम दुश्मन नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएंगे।

रब इस्राईल के बुतों को ख़त्म करेगा

10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मैं तेरे घोड़ों को नेस्त
और तेरे रथों को नाबूद करूँगा। 11 मैं तेरे मुल्क
के शहरों को ख़ाक में मिला कर तेरे तमाम क़िलों
को गिरा दूँगा। 12 तेरी जादूगरी को मैं मिटा डालूँगा,
क़िस्मत का हाल बताने वाले तेरे बीच में नहीं रहेंगे।
13 तेरे बुत और तेरे मख़्सूस सतूनों को मैं यूँ तबाह
करूँगा कि तू आइन्दा अपने हाथ की बनाई हुई
चीज़ों की पूजा नहीं करेगा। 14 तेरे असीरत देवी के
खम्बे मैं उखाड़ कर तेरे शहरों को मिस्मार करूँगा।
15 उस वक़्त मैं बड़े ग़ुस्से से उन क़ौमों से इन्तिक़ाम
लूँगा जिन्हों ने मेरी नहीं सुनी।"

अल्लाह इस्राईल पर इल्ज़ाम लगाता है

6 1 ऐ इस्राईल, रब का फ़रमान सुन, "अदालत में
खड़े हो कर अपना मुआमला बयान कर! पहाड़
और पहाड़ियाँ तेरे गवाह हों, उन्हें अपनी बात सुना
दे।"
2 ऐ पहाड़ो, अब रब का अपनी क़ौम पर इल्ज़ाम
सुनो! ऐ दुनिया की क़दीम बुन्यादो, तवज्जुह दो!
क्यूँकि रब अदालत में अपनी क़ौम पर इल्ज़ाम लगा
रहा है, वह इस्राईल से मुक़द्दमा उठा रहा है।
3 वह सवाल करता है, "ऐ मेरी क़ौम, मैं ने तेरे साथ
क्या ग़लत सुलूक किया? मैं ने क्या किया कि तू
इतनी थक गई है? बता तो सही! 4 हक़ीक़त तो यह
है कि मैं तुझे मुल्क-ए-मिस्र से निकाल लाया, मैं ने
फ़िद्या दे कर तुझे ग़ुलामी से रिहा कर दिया। साथ
साथ मैं ने मूसा, हारून और मरियम को भेजा ताकि
तेरे आगे चल कर तेरी राहनुमाई करें। 5 ऐ मेरी क़ौम,
वह वक़्त याद कर जब मोआब के बादशाह बलक़ ने
बलआम बिन बओर को बुलाया ताकि तुझ पर लानत
भेजे। लानत की बजाय उस ने तुझे बरकत दी! वह
सफ़र भी याद कर जब तू शित्तीम से रवाना हो कर
जिल्जाल पहुँची। अगर तू इन तमाम बातों पर ग़ौर
करे तो जान लेगी कि रब ने कितनी वफ़ादारी और
इन्साफ़ से तेरे साथ सुलूक किया है।"
6 जब हम रब के हुज़ूर आते हैं ताकि अल्लाह तआला
को सिज्दा करें तो हमें अपने साथ क्या लाना चाहिए?
क्या हमें यकसाला बछड़े उस के हुज़ूर ला कर भस्म
करने चाहिएँ? 7 क्या रब हज़ारों मेंढों या तेल की
बेशुमार नदियों से ख़ुश हो जाएगा? क्या मुझे अपने
पहलौठे को अपने जराइम के इवज़ चढ़ाना चाहिए,
अपने जिस्म के फल को अपने गुनाहों को मिटाने के
लिए पेश करना चाहिए? हरगिज़ नहीं!
8 ऐ इन्सान, उस ने तुझे साफ़ बताया है कि क्या
कुछ अच्छा है। रब तुझ से चाहता है कि तू इन्साफ़
क़ाइम रखे, मेहरबानी करने में लगा रहे और फ़रोतनी
से अपने ख़ुदा के हुज़ूर चलता रहे।

यरूशलम को भी सामरिया की सी सज़ा मिलेगी

9 सुनो! रब यरूशलम को आवाज़ दे रहा है।
तवज्जुह दो, क्यूँकि दानिशमन्द उस के नाम का
ख़ौफ़ मानता है। ऐ क़बीले, ध्यान दो कि किस ने
यह मुक़र्रर किया है,
10 "अब तक नाजाइज़ नफ़ा की दौलत बेदीन
आदमी के घर में जमा हो रही है, अब तक लोग
गन्दुम बेचते वक़्त पूरा तोल नहीं तोलते, उन की
ग़लत पैमाइश पर लानत! 11 क्या मैं उस आदमी को
बरी क़रार दूँ जो ग़लत तराज़ू इस्तेमाल करता है और
जिस की थैली में हल्के बाट पड़े रहते हैं? हरगिज़
नहीं! 12 यरूशलम के अमीर बड़े ज़ालिम हैं, लेकिन

बाक़ी बाशिन्दे भी झूट बोलते हैं, उन की हर बात
धोका ही धोका है!
13 इस लिए मैं तुझे मार मार कर ज़ख़्मी करूँगा।
मैं तुझे तेरे गुनाहों के बदले में तबाह करूँगा। 14 तू
खाना खाएगा लेकिन सेर नहीं होगा बल्कि पेट ख़ाली
रहेगा। तू माल महफ़ूज़ रखने की कोशिश करेगा,
लेकिन कुछ नहीं बचेगा। क्यूँकि जो कुछ तू बचाने
की कोशिश करेगा उसे मैं तलवार के हवाले करूँगा।
15 तू बीज बोएगा लेकिन फ़सल नहीं काटेगा, ज़ैतून
का तेल निकालेगा लेकिन उसे इस्तेमाल नहीं करेगा,
अंगूर का रस निकालेगा लेकिन उसे नहीं पिएगा।
16 तू इस्राईल के बादशाहों उम्री और अख़ियब के
नमूने पर चल पड़ा है, आज तक उन ही के मन्सूबों
की पैरवी करता आया है। इस लिए मैं तुझे तबाही
के हवाले कर दूँगा, तेरे लोगों को मज़ाक़ का निशाना
बनाऊँगा। तुझे दीगर अक़्वाम की लान-तान बर्दाश्त
करनी पड़ेगी।”

अपनी क़ौम पर अफ़सोस

7 1 हाय, मुझ पर अफ़सोस! मैं उस शख़्स की
मानिन्द हूँ जो फ़सल के जमा होने पर अंगूर
के बाग़ में से गुज़र जाता है ताकि बचा हुआ थोड़ा
बहुत फल मिल जाए, लेकिन एक गुच्छा तक बाक़ी
नहीं। मैं उस आदमी की मानिन्द हूँ जो अन्जीर
का पहला फल मिलने की उम्मीद रखता है लेकिन
एक भी नहीं मिलता। 2 मुल्क में से दियानतदार मिट
गए हैं, एक भी ईमानदार नहीं रहा। सब ताक में
बैठे हैं ताकि एक दूसरे को क़त्ल करें, हर एक
अपना जाल बिछा कर अपने भाई को पकड़ने की
कोशिश करता है। 3 दोनों हाथ ग़लत काम करने
में एक जैसे माहिर हैं। हुक्मरान और क़ाज़ी रिश्वत
खाते, बड़े लोग मुतलव्विनमिज़ाजी से कभी यह,
कभी वह तलब करते हैं। सब मिल कर साज़िशें
करने में मसरूफ़ रहते हैं। 4 उन में से सब से शरीफ़
शख़्स ख़ारदार झाड़ी की मानिन्द है, सब से ईमानदार
आदमी काँटेदार बाड़ से अच्छा नहीं।
लेकिन वह दिन आने वाला है जिस का एलान
तुम्हारे पहरेदारों ने किया है। तब अल्लाह तुझ से निपट
लेगा, सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा।
5 किसी पर भी भरोसा मत रखना, न अपने पड़ोसी
पर, न अपने दोस्त पर। अपनी बीवी से भी बात करने
से मुहतात रहो। 6 क्यूँकि बेटा अपने बाप की हैसियत
नहीं मानता, बेटी अपनी माँ के ख़िलाफ़ खड़ी हो
जाती और बहू अपनी सास की मुख़ालफ़त करती
है। तुम्हारे अपने ही घर वाले तुम्हारे दुश्मन हैं।
7 लेकिन मैं ख़ुद रब की राह देखूँगा, अपनी नजात
के ख़ुदा के इन्तिज़ार में रहूँगा। क्यूँकि मेरा ख़ुदा मेरी
सुनेगा।

रब हमें रिहा करेगा

8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझे देख कर शादियाना मत बजा!
गो मैं गिर गया हूँ ताहम दुबारा खड़ा हो जाऊँगा,
गो अंधेरे में बैठा हूँ ताहम रब मेरी रौशनी है। 9 मैं
ने रब का ही गुनाह किया है, इस लिए मुझे उस का
ग़ज़ब भुगतना पड़ेगा। क्यूँकि जब तक वह मेरे हक़
में मुक़द्दमा लड़ कर मेरा इन्साफ़ न करे उस वक़्त
तक मैं उस का क़हर बर्दाश्त करूँगा। तब वह मुझे
तारीकी से निकाल कर रौशनी में लाएगा, और मैं
अपनी आँखों से उस के इन्साफ़ और वफ़ादारी का
मुशाहदा करूँगा।
10 मेरा दुश्मन यह देख कर सरासर शर्मिन्दा हो
जाएगा, हालाँकि इस वक़्त वह कह रहा है, “रब तेरा
ख़ुदा कहाँ है?” मेरी अपनी आँखें उस की शर्मिन्दगी
देखेंगी, क्यूँकि उस वक़्त उसे गली में कचरे की तरह
पाँओ तले रौंदा जाएगा।
11 ऐ इस्राईल, वह दिन आने वाला है जब तेरी
दीवारें नए सिरे से तामीर हो जाएँगी। उस दिन
तेरी सरहदें वसी हो जाएँगी। 12 लोग चारों तरफ़ से
तेरे पास आएँगे। वह असूर से, मिस्र के शहरों से,
दरया-ए-फ़ुरात के इलाक़े से बल्कि दूरदराज़ साहिली
और पहाड़ी इलाक़ों से भी आएँगे। 13 ज़मीन अपने
बाशिन्दों के बाइस वीरान-ओ-सुन्सान हो जाएगी,

आख़िरकार उन की हरकतों का कड़वा फल निकल
आएगा।
14 ऐ रब, अपनी लाठी से अपनी क़ौम की गल्लाबानी
कर! क्यूँकि तेरी मीरास का यह रेवड़ इस वक़्त
जंगल में तन्हा रहता है, हालाँकि गिर्द-ओ-नवाह
की ज़मीन ज़रख़ेज़ है। क़दीम ज़माने की तरह उन्हें
बसन और जिलिआद की शादाब चरागाहों में चरने
दे! 15 रब फ़रमाता है, "मिस्र से निकलते वक़्त की
तरह मैं तुझे मोजिज़ात दिखा दूँगा।" 16 यह देख कर
अक़्वाम शर्मिन्दा हो जाएँगी और अपनी तमाम ताक़त
के बावुजूद कुछ नहीं कर पाएँगी। वह घबरा कर मुँह
पर हाथ रखेंगी, उन के कान बहरे हो जाएंगे। 17 साँप
और रेंगने वाले जानवरों की तरह वह ख़ाक चाटेंगी
और थरथराते हुए अपने क़िलों से निकल आएँगी ।
वह डर के मारे रब हमारे ख़ुदा की तरफ़ रुजू करेंगी,
हाँ तुझ से दहशत खाएँगी।
18 ऐ रब, तुझ जैसा ख़ुदा कहाँ है? तू ही गुनाहों
को मुआफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास के बचे
हुओं के जराइम से दरगुज़र करता है। तू हमेशा तक
ग़ुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसन्द करता है।
19 तू दुबारा हम पर रहम करेगा, दुबारा हमारे गुनाहों
को पाँओ तले कुचल कर समुन्दर की गहराइयों में
फैंक देगा। 20 तू याक़ूब और इब्राहीम की औलाद पर
अपनी वफ़ा और शफ़क़त दिखा कर वह वादा पूरा
करेगा जो तू ने क़सम खा कर क़दीम ज़माने में हमारे
बापदादा से किया था।

नाहूम

अल्लाह के ग़ज़ब का इज़हार

1 1 ज़ैल में नीनवा के बारे में वह कलाम
क़लमबन्द है जो अल्लाह ने रोया में नाहूम
इल्क़ूशी को दिखाया।
2 रब ग़ैरतमन्द और इन्तिक़ाम लेने वाला ख़ुदा है।
इन्तिक़ाम लेते वक़्त रब अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता
है। रब अपने मुख़ालिफ़ों से बदला लेता और अपने
दुश्मनों से नाराज़ रहता है।
3 रब तहम्मुल से भरपूर है, और उस की क़ुदरत
अज़ीम है। वह क़ुसूरवार को कभी भी सज़ा दिए बग़ैर
नहीं छोड़ता।

वह आँधी और तूफ़ान से घिरा हुआ चलता है, और
बादल उस के पाँओ तले की गर्द होते हैं।
4 वह समुन्दर को डाँटता तो वह सूख जाता, उस के
हुक्म पर तमाम दरया ख़ुश्क हो जाते हैं। तब बसन
और कर्मिल की शादाब हरियाली मुरझा जाती और
लुबनान के फूल कुमला जाते हैं।

5 उस के सामने पहाड़ लरज़ उठते, पहाड़ियाँ
पिघल जाती हैं। उस के हुज़ूर पूरी ज़मीन अपने
बाशिन्दों समेत लरज़ उठती है।
6 कौन उस की नाराज़ी और उस के शदीद क़हर
का सामना कर सकता है? उस का ग़ज़ब आग की
तरह भड़क कर ज़मीन पर नाज़िल होता है, उस के
आने पर पत्थर फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

7 रब मेहरबान है। मुसीबत के दिन वह मज़बूत
क़िला है, और जो उस में पनाह लेते हैं उन्हें वह
जानता है।
8 लेकिन अपने दुश्मनों पर वह सैलाब लाएगा जो
उन के मक़ाम को ग़र्क़ करेगा। जहाँ भी दुश्मन भाग
जाए वहाँ उस पर तारीकी छा जाने देगा।

9 रब के ख़िलाफ़ मन्सूबा बांधने का क्या फ़ाइदा?
वह तो तुम्हें एक दम तबाह कर देगा, दूसरी बार तुम
पर आफ़त लाने की ज़रूरत ही नहीं होगी।
10 क्यूँकि गो दुश्मन घनी और ख़ारदार झाड़ियों
और नशे में धुत शराबी की मानिन्द हैं, लेकिन वह
जल्द ही ख़ुश्क भूसे की तरह भस्म हो जाएंगे।
11 ऐ नीनवा, तुझ से वह निकल आया जिस ने रब
के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधे, जिस ने शैतानी मश्वरे
दिए।
12 लेकिन अपनी क़ौम से रब फ़रमाता है, "गो
दुश्मन ताक़तवर और बेशुमार क्यूँ न हों तो भी उन्हें
मिटाया जाएगा और वह ग़ाइब हो जाएंगे। बेशक मैं
ने तुझे पस्त कर दिया, लेकिन आइन्दा ऐसा नहीं
करूँगा। 13 अब मैं वह जूआ तोड़ डालूँगा जो उन्हों
ने तेरी गर्दन पर रख दिया था, मैं तेरी ज़न्जीरों को
फाड़ डालूँगा।"
14 लेकिन नीनवा से रब फ़रमाता है, "आइन्दा तेरी
कोई औलाद क़ाइम नहीं रहेगी जो तेरा नाम रखे।
जितने भी बुत और मुजस्समे तेरे मन्दिर में पड़े हैं
उन सब को मैं नेस्त-ओ-नाबूद कर दूँगा। मैं तेरी क़ब्र
तय्यार कर रहा हूँ, क्यूँकि तू कुछ भी नहीं है।"

नीनवा की शिकस्त

15 वह देखो, पहाड़ों पर उस के क़दम चल रहे
हैं जो अम्न-ओ-अमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है। ऐ
यहूदाह, अब अपनी ईदें मना, अपनी मन्नतें पूरी कर!
क्यूँकि आइन्दा शैतानी आदमी तुझ में नहीं घुसेगा,
वह सरासर मिट गया है।

2 1 ऐ नीनवा, सब कुछ मुन्तशिर करने वाला तुझ
पर हम्ला करने आ रहा है, चुनाँचे क़िले की
पहरादारी कर! रास्ते पर ध्यान दे, कमरबस्ता हो जा,
जहाँ तक मुमकिन है दिफ़ा की तय्यारियाँ कर!
2 गो याक़ूब तबाह और उस के अंगूरों के बाग़
नाबूद हो गए हैं, लेकिन अब रब इस्राईल की शान-
ओ-शौकत बहाल करेगा।
3 वह देखो, नीनवा पर हम्ला करने वाले सूरमाओं
की ढालें सुर्ख़ हैं, फ़ौजी क़िर्मिज़ी रंग की वर्दियाँ पहने
हुए हैं। दुश्मन ने अपने रथों को तय्यार कर रखा है,
और वह भड़कती मशअलों की तरह चमक रहे हैं।
साथ साथ सिपाही अपने नेज़े लहरा रहे हैं। 4 अब रथ
गलियों में से अंधा-धुन्द गुज़र रहे हैं। चौकों में वह
इधर उधर भाग रहे हैं। यूँ लग रहा है कि भड़कती
मशअलें या बादल की बिजलियाँ इधर उधर चमक
रही हैं।
5 हुक्मरान अपने चीदा अफ़सरों को बुला लेता है,
और वह ठोकर खा खा कर आगे बढ़ते हैं। वह दौड़
कर फ़सील के पास पहुँच जाते, जल्दी से हिफ़ाज़ती
ढाल खड़ी करते हैं। 6 फिर दरया के दरवाज़े खुल
जाते और शाही महल लड़खड़ाने लगता है। 7 तब
दुश्मन मलिका के कपड़े उतार कर उसे ले जाते हैं।
उस की लौंडियाँ छाती पीट पीट कर कबूतरों की
तरह ग़ूँ ग़ूँ करती हैं। 8 नीनवा बड़ी देर से अच्छे-
ख़ासे तालाब की मानिन्द था, लेकिन अब लोग उस
से भाग रहे हैं। लोगों को कहा जाता है, "रुक जाओ,
रुको तो सही!" लेकिन कोई नहीं रुकता। सब सर
पर पाँओ रख कर शहर से भाग रहे हैं, और कोई नहीं
मुड़ता।
9 आओ, नीनवा की चाँदी लूट लो, उस का सोना
छीन लो! क्यूँकि ज़ख़ीरे की इन्तिहा नहीं, उस के
ख़ज़ानों की दौलत ला-महदूद है। 10 लूटने वाले कुछ
नहीं छोड़ते। जल्द ही शहर ख़ाली और वीरान-ओ-
सुन्सान हो जाता है। हर दिल हौसला हार जाता, हर
घुटना काँप उठता, हर कमर थरथराने लगती और
हर चिहरे का रंग माँद पड़ जाता है।
11 अब नीनवा बेटी की क्या हैसियत रही? पहले
वह शेरबबर की मान्द थी, ऐसी जगह जहाँ जवान
शेरों को गोश्त खिलाया जाता, जहाँ शेर और शेरनी
अपने बच्चों समेत टहलते थे। कोई उन्हें डरा कर भगा
नहीं सकता था। 12 उस वक़्त शेर अपने बच्चों के लिए
बहुत कुछ फाड़ लेता और अपनी शेरनियों के लिए
भी गला घूँट कर मार डालता था। उस की मान्दें और
छुपने की जगहें फाड़े हुए शिकार से भरी रहती थीं।
13 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ नीनवा, अब
मैं तुझ से निपट लेता हूँ। मैं तेरे रथों को नज़र-ए-
आतिश कर दूँगा, और तेरे जवान शेर तलवार की
ज़द में आ कर मर जाएंगे। मैं होने दूँगा कि आइन्दा
तुझे ज़मीन पर कुछ न मिले जिसे फाड़ कर खा सके।
आइन्दा तेरे क़ासिदों की आवाज़ कभी सुनाई नहीं
देगी।"

नीनवा की रुस्वाई

3 1 उस क़ातिल शहर पर अफ़सोस जो झूट और
लूटे हुए माल से भरा हुआ है। वह लूट-मार से
कभी बाज़ नहीं आता।
2 सुनो! चाबुक की आवाज़, चलते हुए रथों का
शोर! घोड़े सरपट दौड़ रहे, रथ भाग भाग कर उछल
रहे हैं। 3 घुड़सवार आगे बढ़ रहे, शोलाज़न तलवारें
और चमकते नेज़े नज़र आ रहे हैं। हर तरफ़ मक़्तूल
ही मक़्तूल, बेशुमार लाशों के ढेर पड़े हैं। इतनी हैं
कि लोग ठोकर खा खा कर उन पर से गुज़रते हैं।
4 यह होगा नीनवा का अन्जाम, उस दिलफ़रेब कस्बी
और जादूगरनी का जिस ने अपनी जादूगरी और
इस्मतफ़रोशी से अक़्वाम और उम्मतों को ग़ुलामी
में बेच डाला।
5 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ नीनवा बेटी,
अब मैं तुझ से निपट लेता हूँ। मैं तेरा लिबास तेरे
सर के ऊपर उठाऊँगा कि तेरा नंगापन अक़्वाम
को नज़र आए और तेरा मुँह दीगर ममालिक के
सामने काला हो जाए। 6 मैं तुझ पर कूड़ा-कर्कट फैंक
कर तेरी तह्क़ीर करूँगा। तू दूसरों के लिए तमाशा

बन जाएगी। 7 तब सब तुझे देख कर भाग जाएंगे।
वह कहेंगे, ‘नीनवा तबाह हो गई है!’ अब उस पर
अफ़सोस करने वाला कौन रहा? अब मुझे कहाँ से
लोग मिलेंगे जो तुझे तसल्ली दें?”

8 क्या तू थीबस [q]शहर से बेहतर है, जो दरया-
ए-नील पर वाक़े था? वह तो पानी से घिरा हुआ
था, और पानी ही उसे हम्लों से महफ़ूज़ रखता था।
9 एथोपिया और मिस्र के फ़ौजी उस के लिए ला-
महदूद ताक़त का बाइस थे, फ़ूत और लिबिया उस के
इत्तिहादी थे। 10 तो भी वह क़ैदी बन कर जिलावतन
हुआ। हर गली के कोने में उस के शीरख़्वार बच्चों को
ज़मीन पर पटख़ दिया गया। उस के शुरफ़ा क़ुरआ-
अन्दाज़ी के ज़रीए तक़्सीम हुए, उस के तमाम बुज़ुर्ग
ज़न्जीरों में जकड़े गए।

11 ऐ नीनवा बेटी, तू भी नशे में धुत हो जाएगी।
तू भी हवासबाख़्ता हो कर दुश्मन से पनाह लेने की
कोशिश करेगी। 12 तेरे तमाम क़िले पके फल से लदे
हुए अन्जीर के दरख़्त हैं। जब उन्हें हिलाया जाए तो
अन्जीर फ़ौरन खाने वाले के मुँह में गिर जाते हैं।
13 लो, तेरे तमाम दस्ते औरतें बन गए हैं। तेरे मुल्क
के दरवाज़े दुश्मन के लिए पूरे तौर पर खोले गए, तेरे
कुंडे नज़र-ए-आतिश हो गए हैं।

14 ख़ूब पानी जमा कर ताकि मुहासरे के दौरान
काफ़ी हो। अपनी क़िलाबन्दी मज़ीद मज़बूत कर!
गारे को पाँओ से लताड़ लताड़ कर ईंटें बना ले!
15 ताहम आग तुझे भस्म करेगी, तलवार तुझे मार
डालेगी, हाँ वह तुझे टिड्डियों की तरह खा जाएगी।
बचने का कोई इम्कान नहीं होगा, ख़्वाह तू टिड्डियों
की तरह बेशुमार क्यूँ न हो जाए। 16 बेशक तेरे ताजिर
सितारों जितने लातादाद हो गए हैं, लेकिन अचानक
वह टिड्डियों के बच्चों की तरह अपनी केंचली को
उतार लेंगे और उड़ कर ग़ाइब हो जाएंगे। 17 तेरे
दरबारी टिड्डियों जैसे और तेरे अफ़सर टिड्डी दलों की
मानिन्द हैं जो सर्दियों के मौसम में दीवारों के साथ
चिपक जाती लेकिन धूप निकलते ही उड़ कर ओझल
हो जाती हैं। किसी को भी पता नहीं कि वह कहाँ
चली गई हैं।

18 ऐ असूर के बादशाह, तेरे चरवाहे गहरी नींद सो
रहे, तेरे शुरफ़ा आराम कर रहे हैं। तेरी क़ौम पहाड़ों
पर मुन्तशिर हो गई है, और कोई नहीं जो उन्हें दुबारा
जमा करे। 19 तेरी चोट भर ही नहीं सकती, तेरा ज़ख़्म
लाइलाज है। जिसे भी तेरे अन्जाम की ख़बर मिले
वह ताली बजायगा। क्यूँकि सब को तेरा मुसलसल
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद बर्दाश्त करना पड़ा।

---

[q]Thebes। इब्रानी मतन में इस का मुतरादिफ़ नो-आमून मुस्तामल है।

हबक़्क़ूक़

नबी की शिकायत : हर तरफ़ नाइन्साफ़ी

1 1 ज़ैल में वह कलाम क़लमबन्द है जो हबक़्क़ूक़
नबी को रोया देख कर मिला।
2 ऐ रब, मैं मज़ीद कब तक मदद के लिए पुकारूँ?
अब तक तू ने मेरी नहीं सुनी। मैं मज़ीद कब तक
चीख़ें मार मार कर कहूँ कि फ़साद हो रहा है? अब
तक तू ने हमें छुटकारा नहीं दिया। 3 तू क्यूँ होने
देता है कि मुझे इतनी नाइन्साफ़ी देखनी पड़े? लोगों
को इतना नुक़्सान पहुँचाया जा रहा है, लेकिन तू
ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहता है। जहाँ भी मैं
नज़र डालूँ, वहाँ ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद ही नज़र आता है,
मुक़द्दमाबाज़ी और झगड़े सर उठाते हैं। 4 नतीजे में
शरीअत बेअसर हो गई है, और बा-इन्साफ़ फ़ैसले
कभी जारी नहीं होते। बेदीनों ने रास्तबाज़ों को घेर
लिया है, इस लिए अदालत में बेहूदा फ़ैसले किए
जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 "दीगर अक़्वाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर
ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्यूँकि मैं तुम्हारे
जीते जी एक ऐसा काम करूँगा जिस की जब ख़बर
सुनोगे तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा। 6 मैं बाबलियों
को खड़ा करूँगा। यह ज़ालिम और तल्ख़रू क़ौम
पूरी दुनिया को उबूर करके दूसरे ममालिक पर क़ब्ज़ा
करेगी। 7 लोग उस से सख़्त दहशत खाएँगे, हर तरफ़
उसी के क़वानीन और अज़मत माननी पड़ेगी। 8 उन
के घोड़े चीतों से तेज़ हैं, और शाम के वक़्त शिकार
करने वाले भेड़ीए भी उन जैसे फुरतीले नहीं होते। वह
सरपट दौड़ कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उक़ाब
लाश पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार
पर हम्ला करते हैं। 9 सब इसी मक़्सद से आते हैं कि
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे बढ़ते
जाते हैं। रेत जैसे बेशुमार क़ैदी उन के हाथ में जमा
होते हैं। 10 वह दीगर बादशाहों का मज़ाक़ उड़ाते हैं,
और दूसरों के बुज़ुर्ग उन के तमस्ख़ुर का निशाना बन
जाते हैं। हर क़िले को देख कर वह हंस उठते हैं।
जल्द ही वह उन की दीवारों के साथ मिट्टी के ढेर
लगा कर उन पर क़ब्ज़ा करते हैं। 11 फिर वह तेज़
हवा की तरह वहाँ से गुज़र कर आगे बढ़ जाते हैं।
लेकिन वह क़ुसूरवार ठहरेंगे, क्यूँकि उन की अपनी
ताक़त उन का ख़ुदा है।"

ऐ रब, तू क्यूँ ख़ामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू क़दीम ज़माने से ही मेरा ख़ुदा,
मेरा क़ुद्दूस नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ रब, तू ने उन्हें
सज़ा देने के लिए मुक़र्रर किया है। ऐ चटान, तेरी
मर्ज़ी है कि वह हमारी तर्बियत करें। 13 तेरी आँखें
बिलकुल पाक हैं, इस लिए तू बुरा काम बर्दाश्त
नहीं कर सकता, तू ख़ामोशी से ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद पर
नज़र नहीं डाल सकता। तो फिर तू इन बेवफ़ाओं
की हरकतों को किस तरह बर्दाश्त करता है? जब
बेदीन उसे हड़प कर लेता जो उस से कहीं ज़्यादा
रास्तबाज़ है तो तू ख़ामोश क्यूँ रहता है? 14 तू ने होने
दिया है कि इन्सान से मछलियों का सा सुलूक किया
जाए, कि उसे उन समुन्दरी जानवरों की तरह पकड़ा
जाए, जिन का कोई मालिक नहीं। 15 दुश्मन उन सब
को काँटे के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना
जाल डाल कर उन्हें पकड़ लेता है। जब उन का बड़ा
ढेर जमा हो जाता है तो वह ख़ुश हो कर शादियाना
बजाता है। 16 तब वह अपने जाल के सामने बख़ूर
जला कर उसे जानवर क़ुर्बान करता है। क्यूँकि उसी
के वसीले से वह ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी गुज़ार

सकता है। 17 क्या वह मुसलसल अपना जाल डालता
और क़ौमों को बेरहमी से मौत के घाट उतारता रहे?

2 1 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर चढ़
जाऊँगा, क़िले की ऊँची जगह पर खड़ा हो कर
चारों तरफ़ देखता रहूँगा। क्यूँकि मैं जानना चाहता
हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ बताएगा, कि वह मेरी
शिकायत का क्या जवाब देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, "जो कुछ तू ने रोया में
देखा है उसे तख़्तों पर यूँ लिख दे कि हर गुज़रने वाला
उसे रवानी से पढ़ सके। 3 क्यूँकि वह फ़ौरन पूरी
नहीं हो जाएगी बल्कि मुक़र्ररा वक़्त पर आख़िरकार
ज़ाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं होगी। गो देर भी
लगे तो भी सब्र कर। क्यूँकि आने वाला पहुँचेगा, वह
देर नहीं करेगा।

4 मग़ुरूर आदमी फूला हुआ है और अन्दर से सीधी
राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज़ ईमान ही
से जीता रहेगा। 5 यक़ीनन मै एक बेवफ़ा साथी है।
मग़ुरूर शख़्स जीता नहीं रहेगा, गो वह अपने मुँह को
पाताल की तरह खुला रखता और उस की भूक मौत
की तरह कभी नहीं मिटती, वह तमाम अक़्वाम और
उम्मतें अपने पास जमा करता है।

बेदीनों का अन्जाम

6 लेकिन यह सब उस का मज़ाक़ उड़ा कर उसे
लान-तान करेंगी। वह कहेंगी, 'उस पर अफ़्सोस
जो दूसरों की चीज़ें छीन कर अपनी मिलकियत में
इज़ाफ़ा करता है, जो क़र्ज़दारों की ज़मानत पर क़ब्ज़ा
करने से दौलतमन्द हो गया है। यह कार-रवाई कब
तक जारी रहेगी?' 7 क्यूँकि अचानक ही ऐसे लोग
उठेंगे जो तुझे काटेंगे, ऐसे लोग जाग उठेंगे जिन के
सामने तू थरथराने लगेगा। तब तू ख़ुद उन का शिकार
बन जाएगा। 8 चूँकि तू ने दीगर मुतअद्दिद अक़्वाम
को लूट लिया है इस लिए अब बची हुई उम्मतें तुझे
ही लूट लेंगी। क्यूँकि तुझ से क़त्ल-ओ-ग़ारत सरज़द
हुई है, तू ने दीहात और शहर पर उन के बाशिन्दों
समेत शदीद ज़ुल्म किया है।

9 उस पर अफ़्सोस जो नाजाइज़ नफ़ा कमा कर
अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि वह आफ़त
से बचने के लिए अपना घोंसला बुलन्दियों पर बना
लेता है। 10 तेरे मन्सूबों से मुतअद्दिद क़ौमें तबाह हुई
हैं, लेकिन यह तेरे ही घराने के लिए शर्म का बाइस
बन गया है। इस गुनाह से तू अपने आप पर मौत की
सज़ा लाया है। 11 यक़ीनन दीवारों के पत्थर चीख़
कर इल्तिजा करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में
आह-ओ-ज़ारी करेंगे।

12 उस पर अफ़्सोस जो शहर को क़त्ल-ओ-ग़ारत
के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को नाइन्साफ़ी
की बुन्याद पर क़ाइम करता है। 13 रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने मुक़र्रर किया है कि जो कुछ क़ौमों ने
बड़ी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया उसे नज़र-
ए-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए उम्मतें
थक जाती हैं वह बेकार ही है। 14 क्यूँकि जिस तरह
समुन्दर पानी से भरा हुआ है, उसी तरह दुनिया एक
दिन रब के जलाल के इर्फ़ान से भर जाएगी।

15 उस पर अफ़्सोस जो अपना प्याला ज़हरीली
शराब से भर कर उसे अपने पड़ोसियों को पिला देता
है ताकि उन्हें नशे में ला कर उन की बरहनगी से
लुत्फ़अन्दोज़ हो जाए। 16 लेकिन अब तेरी बारी भी
आ गई है! तेरी शान-ओ-शौकत ख़त्म हो जाएगी,
और तेरा मुँह काला हो जाएगा। अब ख़ुद पी ले! नशे
में आ कर अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला
रब के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब
तेरी इतनी रुस्वाई हो जाएगी कि तेरी शान का नाम-
ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो ज़ुल्म तू ने लुबनान पर किया वह तुझ पर ही
ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तू ने वहाँ तबाह
किया उन की दहशत तुझ ही पर तारी हो जाएगी।
क्यूँकि तुझ से क़त्ल-ओ-ग़ारत सरज़द हुई है, तू ने
दीहात और शहरों पर उन के बाशिन्दों समेत शदीद
ज़ुल्म किया है।

18 बुत का क्या फ़ाइदा? आख़िर किसी माहिर
कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह झूट
ही झूट की हिदायात देता है। कारीगर अपने हाथों के
बुत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह बोल भी नहीं
सकता!
19 उस पर अफ़्सोस जो लकड़ी से कहता है, 'जाग
उठ!' और ख़ामोश पत्थर से, 'खड़ा हो जा!' क्या यह
चीज़ें हिदायत दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! उन में जान
ही नहीं, ख़्वाह उन पर सोना या चाँदी क्यूँ न चढ़ाई
गई हो। 20 लेकिन रब अपने मुक़द्दस घर में मौजूद है।
उस के हुज़ूर पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।"

हबक़्क़ूक़ की दुआ

3 1 ज़ैल में हबक़्क़ूक़ नबी की दुआ है। इसे
'शिगियूनोत' के तर्ज़ पर गाना है।
2 ऐ रब, मैं ने तेरा पैग़ाम सुना है। ऐ रब, तेरा काम
देख कर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते जी उसे वुजूद में
ला, जल्द ही उसे हम पर ज़ाहिर कर। जब तुझे हम
पर ग़ुस्सा आए तो अपना रहम याद कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, क़ुद्दूस फ़ारान के
पहाड़ी इलाक़े से पहुँच रहा है। (सिलाह) [r]उस का
जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस की
हम्द-ओ-सना से भरी हुई है।
4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती, उस
के हाथ से तेज़ किरनें निकलती हैं जिन में उस की
क़ुदरत पिनहाँ होती है।
5 मोहलिक बीमारी उस के आगे आगे फैलती,
वबाई मर्ज़ उस के नक़्श-ए-क़दम पर चलता है।
6 जहाँ भी क़दम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती,
जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक़्वाम लरज़ उठती हैं।
तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ दबक
जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही रही हैं।

7 मैं ने कूशान के ख़ैमों को मुसीबत में देखा,
मिदियान के तम्बू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरयाओं और नदियों से ग़ुस्से था?
क्या तेरा ग़ज़ब समुन्दर पर नाज़िल हुआ जब तू अपने
घोड़ों और फ़त्हमन्द रथों पर सवार हो कर निकला?
9 तू ने अपनी कमान को निकाल लिया, तेरी लानतें
तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह) तू ज़मीन को
फाड़ कर उन जगहों पर दरया बहने देता है।
10 तुझे देख कर पहाड़ काँप उठते, मूसलाधार
बारिश बरसने लगती और पानी की गहराइयाँ
गरजती हुई अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाती
हैं।
11 सूरज और चाँद अपनी बुलन्द रिहाइशगाह में
रुक जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने वह माँद पड़
जाते, तेरे नेज़ों की झिलमिलाती रौशनी में ओझल हो
जाते हैं।

12 तू ग़ुस्से में दुनिया में से गुज़रता, तैश से दीगर
अक़्वाम को मार कर गाह लेता है।
13 तू अपनी क़ौम को रिहा करने के लिए निकला,
अपने मसह किए हुए ख़ादिम की मदद करने आया
है। तू ने बेदीन का घर छत से ले कर बुन्याद तक
गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं आता। (सिलाह)
14 उस के अपने नेज़ों से तू ने उस के सर को छेद
डाला। पहले उस के दस्ते कितनी ख़ुशी से हम पर
टूट पड़े ताकि हमें मुन्तशिर करके मुसीबतज़दा को
पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह ख़ुद भूसे की
तरह हवा में उड़ गए हैं।
15 तू ने अपने घोड़ों से समुन्दर को यूँ कुचल दिया
कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

---

[r]सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इस के मतलब के बारे में इत्तिफ़ाक़-ए-राय नहीं होती।

अल्लाह मुझे तक़वियत देता है

16 यह सब कुछ सुन कर मेरा जिस्म लरज़ उठा।
इतना शोर था कि मेरे दाँत बजने लगे, [s]मेरी हड्डियाँ
सड़ने लगीं, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं उस दिन के
इन्तिज़ार में रहूँगा जब आफ़त उस क़ौम पर आएगी
जो हम पर हम्ला कर रही है।

17 अभी तक कोंपलें अन्जीर के दरख़्त पर नज़र
नहीं आतीं, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक ज़ैतून
के दरख़्त फल से महरूम हैं और खेतों में फ़सलें नहीं
उगतीं। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न मवेशी हैं।
18 ताहम मैं रब की ख़ुशी मनाऊँगा, अपने
नजातदहिन्दा अल्लाह के बाइस शादियाना बजाऊँगा।
19 रब क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरी क़ुव्वत है। वही मुझे
हिरनों के से तेज़रौ पाँओ मुहय्या करता है, वही मुझे
बुलन्दियों पर से गुज़रने देता है।

दर्ज-ए-बाला गीत मौसीक़ी के राहनुमा के लिए है।
इसे मेरे तर्ज़ के तारदार साज़ों के साथ गाना है।

---

[s]लफ़्ज़ी तर्जुमा : होंट हिलने लगे।

सफ़नियाह

1 1 ज़ैल में रब का वह कलाम क़लमबन्द है जो
सफ़नियाह बिन कूशी बिन जिदलियाह बिन
अमरियाह बिन हिज़क़ियाह पर नाज़िल हुआ। उस
वक़्त यूसियाह बिन अमून यहूदाह का बादशाह था।
2 रब फ़रमाता है, "मैं रू-ए-ज़मीन पर से सब
कुछ मिटा डालूँगा, 3 इन्सान-ओ-हैवान, परिन्दों,
मछलियों, ठोकर खिलाने वाली चीज़ों और बेदीनों
को। तब ज़मीन पर इन्सान का नाम-ओ-निशान तक
नहीं रहेगा।" यह रब का फ़रमान है।
4 "यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिन्दों पर
मेरी सज़ा नाज़िल होगी। बाल देवता की जितनी भी
बुतपरस्ती अब तक रह गई है उसे नेस्त-ओ-नाबूद
कर दूँगा। न बुतपरस्त पुजारियों का नाम-ओ-निशान
रहेगा, 5 न उन का जो छतों पर सूरज, चाँद बल्कि
आसमान के पूरे लश्कर को सिज्दा करते हैं, जो रब
की क़सम खाने के साथ साथ मिल्कूम देवता की भी
क़सम खाते हैं। 6 जो रब की पैरवी छोड़ कर न उसे
तलाश करते, न उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करते हैं वह
सब के सब तबाह हो जाएंगे।
7 अब रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने ख़ामोश हो
जाओ, क्यूँकि रब का दिन क़रीब ही है। रब ने इस के
लिए ज़बह की क़ुर्बानी तय्यार करके अपने मेहमानों
को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस कर दिया है।" 8 रब फ़रमाता
है, "जिस दिन मैं यह क़ुर्बानी चढ़ाऊँगा उस दिन
बुज़ुर्गों, शहज़ादों और अजनबी लिबास पहनने वालों
को सज़ा दूँगा। 9 उस दिन मैं उन पर सज़ा नाज़िल
करूँगा जो तवह्हुमपरस्ती के बाइस दहलीज़ पर
क़दम रखने से गुरेज़ करते हैं, जो अपने मालिक के
घर को ज़ुल्म और फ़रेब से भर देते हैं।"
10 रब फ़रमाता है, "उस दिन मछली के दरवाज़े
से ज़ोर की चीख़ें, नए शहर से आह-ओ-ज़ारी और
पहाड़ियों से कड़कती आवाज़ें सुनाई देंगी। 11 ऐ
मक्तीस मुहल्ले के बाशिन्दो, वावैला करो, क्यूँकि
तुम्हारे तमाम ताजिर हलाक हो जाएंगे। वहाँ के जितने
भी सौदागर चाँदी तोलते हैं वह नेस्त-ओ-नाबूद हो
जाएंगे।
12 तब मैं चराग़ ले कर यरूशलम के कोने कोने में
उन का खोज लगाऊँगा जो इस वक़्त बड़े आराम से
बैठे हैं, ख़्वाह हालात कितने बुरे क्यूँ न हों। मैं उन
से निपट लूँगा जो सोचते हैं, 'रब कुछ नहीं करेगा, न
अच्छा काम और न बुरा।' 13 ऐसे लोगों का माल लूट
लिया जाएगा, उन के घर मिस्मार हो जाएंगे। वह नए
मकान तामीर तो करेंगे लेकिन उन में रहेंगे नहीं, अंगूर
के बाग़ लगाएँगे लेकिन उन की मै पिएँगे नहीं।"
14 रब का अज़ीम दिन क़रीब ही है, वह बड़ी तेज़ी
से हम पर नाज़िल हो रहा है। सुनो! वह दिन तल्ख़
होगा। हालात ऐसे होंगे कि बहादुर फ़ौजी भी चीख़
कर मदद के लिए पुकारेंगे। 15 रब का पूरा ग़ज़ब
नाज़िल होगा, और लोग परेशानी और मुसीबत में
मुब्तला रहेंगे। हर तरफ़ तबाही-ओ-बर्बादी, हर तरफ़
अंधेरा ही अंधेरा, हर तरफ़ घने बादल छाए रहेंगे।
16 उस दिन दुश्मन नरसिंगा फूँक कर और जंग के
नारे लगा कर क़िलाबन्द शहरों और बुर्जों पर टूट
पड़ेगा। 17 रब फ़रमाता है, "चूँकि लोगों ने मेरा गुनाह
किया है इस लिए मैं उन को बड़ी मुसीबत में उलझा
दूँगा। वह अंधों की तरह टटोल टटोल कर इधर उधर
फिरेंगे, उन का ख़ून ख़ाक की तरह गिराया जाएगा
और उन की नाशें गोबर की तरह ज़मीन पर फैंकी
जाएँगी।" 18 जब रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा तो न
उन का सोना, न चाँदी उन्हें बचा सकेगी। उस की
ग़ैरत पूरे मुल्क को आग की तरह भस्म कर देगी।
वह मुल्क के तमाम बाशिन्दों को हलाक करेगा, हाँ
उन का अन्जाम हौलनाक होगा।

होश में आओ!

2 1 ऐ बेहया क़ौम, जमा हो कर हाज़िरी के लिए
खड़ी हो जा, 2 इस से पहले कि मुक़र्ररा दिन आ
कर तुझे भूसे की तरह उड़ा ले जाए। ऐसा न हो कि
तुम रब के सख़्त ग़ुस्से का निशाना बन जाओ, कि
रब का ग़ज़बनाक दिन तुम पर नाज़िल हो जाए।
3 ऐ मुल्क के तमाम फ़रोतनो, ऐ उस के अह्काम पर
अमल करने वालो, रब को तलाश करो! रास्तबाज़ी
के तालिब हो, हलीमी ढूँडो। शायद तुम उस दिन रब
के ग़ज़ब से बच जाओ। [t]

इस्राईल के दुश्मनों का अन्जाम

4 ग़ज़्ज़ा को छोड़ दिया जाएगा, अस्क़लून वीरान-
ओ-सुन्सान हो जाएगा। दोपहर के वक़्त ही अश्दूद
के बाशिन्दों को निकाला जाएगा, अक्रून को जड़ से
उखाड़ा जाएगा। 5 क्रेते से आई हुई क़ौम पर अफ़्सोस
जो साहिली इलाक़े में रहती है। क्यूँकि रब तुम्हारे
बारे में फ़रमाता है, "ऐ फ़िलिस्तियों की सरज़मीन,
ऐ मुल्क-ए-कनआन, मैं तुझे तबाह करूँगा, एक भी
बाक़ी नहीं रहेगा।" 6 तब यह साहिली इलाक़ा चराने
के लिए इस्तेमाल होगा, और चरवाहे उस में अपनी
भेड़-बकरियों के लिए बाड़े बना लेंगे। 7 मुल्क यहूदाह
के घराने के बचे हुओं के क़ब्ज़े में आएगा, और वही
वहाँ चरेंगे, वही शाम के वक़्त अस्क़लून के घरों में
आराम करेंगे। क्यूँकि रब उन का ख़ुदा उन की देख-
भाल करेगा, वही उन्हें बहाल करेगा।
8 "मैं ने मोआबियों की लान-तान और अम्मोनियों
की इहानत पर ग़ौर किया है। उन्हों ने मेरी क़ौम की
रुस्वाई और उस के मुल्क के ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें
की हैं।" 9 इस लिए रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल
का ख़ुदा है फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,
मोआब और अम्मोन के इलाक़े सदूम और अमूरा की
मानिन्द बन जाएंगे। उन में ख़ुदरौ पौदे और नमक के
गढ़े ही पाए जाएंगे, और वह अबद तक वीरान-ओ-
सुन्सान रहेंगे। तब मेरी क़ौम का बचा हुआ हिस्सा
उन्हें लूट कर उन की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेगा।"
10 यही उन के तकब्बुर का अज्र होगा। क्यूँकि उन्हों
ने रब्ब-उल-अफ़्वाज की क़ौम को लान-तान करके
क़ौम के ख़िलाफ़ बड़ी बड़ी बातें की हैं। 11 जब रब
मुल्क के तमाम देवताओं को तबाह करेगा तो उन
के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। तमाम साहिली इलाक़ों की
अक़्वाम उस के सामने झुक जाएँगी, हर एक अपने
अपने मक़ाम पर उसे सिज्दा करेगा।
12 रब फ़रमाता है, "ऐ एथोपिया के बाशिन्दो, मेरी
तलवार तुम्हें भी मार डालेगी।"
13 वह अपना हाथ शिमाल की तरफ़ भी बढ़ा कर
असूर को तबाह करेगा। नीनवा वीरान-ओ-सुन्सान
हो कर रेगिस्तान जैसा ख़ुश्क हो जाएगा। 14 शहर
के बीच में रेवड़ और दीगर कई क़िस्म के जानवर
आराम करेंगे। दश्ती उल्लू और ख़ारपुश्त उस के टूटे-
फूटे सतूनों में बसेरा करेंगे, और जंगली जानवरों की
चीख़ें खिड़कियों में से गूँजेंगी। घरों की दहलीज़ें मल्बे
के ढेरों में छुपी रहेंगी जबकि उन की देवदार की
लकड़ी हर गुज़रने वाले को दिखाई देगी। 15 यही
उस ख़ुशबाश शहर का अन्जाम होगा जो पहले इतनी
हिफ़ाज़त से बसता था और जो दिल में कहता था, "मैं
ही हूँ, मेरे सिवा कोई और है ही नहीं।" आइन्दा वह
रेगिस्तान होगा, ऐसी जगह जहाँ जानवर ही आराम
करेंगे। हर मुसाफ़िर "तौबा तौबा" कह कर वहाँ से
गुज़रेगा।

यरूशलम का अन्जाम

3 1 उस सरकश, नापाक और ज़ालिम शहर पर
अफ़्सोस जो यरूशलम कहलाता है। 2 न वह
सुनता, न तर्बियत क़बूल करता है। न वह रब पर
भरोसा रखता, न अपने ख़ुदा के क़रीब आता है। 3 जो
बुज़ुर्ग उस के बीच में हैं वह दहाड़ते हुए शेरबबर हैं।

---

[t] लफ़्ज़ी तर्जुमा : छुपे रह सको।

उस के क़ाज़ी शाम के वक़्त भूके फिरने वाले भेड़ीए
हैं जो तुलू-ए-सुब्ह तक शिकार की एक हड्डी तक
नहीं छोड़ते। 4 उस के नबी गुस्ताख़ और ग़द्दार हैं।
उस के इमाम मक़्दिस की बेहुरमती और शरीअत से
ज़ियादती करते हैं।
5 लेकिन रब भी शहर के बीच में है, और वह रास्त
है, वह बेइन्साफ़ी नहीं करता। सुब्ह-ब-सुब्ह वह
अपना इन्साफ़ क़ाइम रखता है, हम कभी उस से
महरूम नहीं रहते। लेकिन बेदीन शर्म से वाक़िफ़ ही
नहीं होता।
6 रब फ़रमाता है, "मैं ने क़ौमों को नेस्त-ओ-नाबूद
कर दिया है। उन के क़िले तबाह, उन की गलियाँ
सुन्सान हैं। अब उन में से कोई नहीं गुज़रता। उन के
शहर इतने बर्बाद हैं कि कोई भी उन में नहीं रहता।
7 मैं बोला, 'बेशक यरूशलम मेरा ख़ौफ़ मान कर मेरी
तर्बियत क़बूल करेगा। क्यूँकि क्या ज़रूरत है कि उस
की रिहाइशगाह मिट जाए और मेरी तमाम सज़ाएँ
उस पर नाज़िल हो जाएँ।' लेकिन उस के बाशिन्दे
मज़ीद जोश के साथ अपनी बुरी हरकतों में लग गए।"
8 चुनाँचे रब फ़रमाता है, "अब मेरे इन्तिज़ार में रहो,
उस दिन के इन्तिज़ार में जब मैं शिकार करने के
लिए उठूँगा। [ध]क्यूँकि मैं ने अक़्वाम को जमा करने
का फ़ैसला किया है। मैं ममालिक को इकट्ठा करके
उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। तब वह मेरे
सख़्त क़हर का निशाना बन जाएंगे, पूरी दुनिया मेरी
ग़ैरत की आग से भस्म हो जाएगी।

इस्राईल के लिए नई उम्मीद

9 लेकिन इस के बाद मैं अक़्वाम के होंटों को पाक-
साफ़ करूँगा ताकि वह आइन्दा रब का नाम ले कर
इबादत करें, कि वह शाना-ब-शाना खड़ी हो कर मेरी
ख़िदमत करें। 10 उस वक़्त मेरे परस्तार, मेरी मुन्तशिर
हुई क़ौम एथोपिया के दरयाओं के पार से भी आ कर
मुझे क़ुर्बानियाँ पेश करेगी।
11 ऐ सिय्यून बेटी, उस दिन तुझे शर्मसार नहीं होना
पड़ेगा हालाँकि तू ने मुझ से बेवफ़ा हो कर निहायत
बुरे काम किए हैं। क्यूँकि मैं तेरे दरमियान से तेरे
मुतकब्बिर शेख़ीबाज़ों को निकालूँगा। आइन्दा तू मेरे
मुक़द्दस पहाड़ पर मग़रूर नहीं होगी। 12 मैं तुझ में
सिर्फ़ क़ौम के ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों को छोड़ूँगा,
उन सब को जो रब के नाम में पनाह लेंगे। 13 इस्राईल
का यह बचा हुआ हिस्सा न ग़लत काम करेगा, न झूट
बोलेगा। उन की ज़बान पर फ़रेब नहीं होगा। तब वह
भेड़ों की तरह चरागाह में चरेंगे और आराम करेंगे।
उन्हें डराने वाला कोई नहीं होगा।"
14 ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ इस्राईल,
ख़ुशी मना! ऐ यरूशलम बेटी, शादमान हो, पूरे दिल
से शादियाना बजा। 15 क्यूँकि रब ने तेरी सज़ा मिटा
कर तेरे दुश्मन को भगा दिया है। रब जो इस्राईल का
बादशाह है तेरे दरमियान ही है। आइन्दा तुझे किसी
नुक़्सान से डरने की ज़रूरत नहीं होगी।
16 उस दिन लोग यरूशलम से कहेंगे, "ऐ सिय्यून,
मत डरना! हौसला न हार, तेरे हाथ ढीले न हों।
17 रब तेरा ख़ुदा तेरे दरमियान है, तेरा पहलवान तुझे
नजात देगा। वह शादमान हो कर तेरी ख़ुशी मनाएगा।
उस की मुहब्बत तेरे क़ुसूर का ज़िक्र ही नहीं करेगी
बल्कि वह तुझ से इन्तिहाई ख़ुश हो कर शादियाना
बजायगा।"
18 रब फ़रमाता है, "मैं ईद को तर्क करने वालों
को तुझ से दूर कर दूँगा, क्यूँकि वह तेरी रुस्वाई
का बाइस थे। 19 मैं उन से भी निपट लूँगा जो तुझे
कुचल रहे हैं। जो लंगड़ाता है उसे मैं बचाऊँगा, जो
मुन्तशिर हैं उन्हें जमा करूँगा। जिस मुल्क में भी
उन की रुस्वाई हुई वहाँ मैं उन की तारीफ़ और
एहतिराम कराऊँगा। 20 उस वक़्त मैं तुम्हें जमा करके
वतन में वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे देखते देखते तुम्हें
बहाल करूँगा और दुनिया की तमाम अक़्वाम में

[ध]एक और मुमकिना तर्जुमा : गवाही देने के लिए।

तुम्हारी तारीफ़ और एहतिराम कराऊँगा।” यह रब
का फ़रमान है।

हज्जी

रब के घर को दुबारा बनाने का हुक्म

1 1 फ़ार्स के बादशाह दारा की हुकूमत के
दूसरे साल में हज्जी नबी पर रब का कलाम
नाज़िल हुआ। छटे महीने का पहला दिन [v]था।
कलाम में अल्लाह यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल
बिन सियाल्तीएल और इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन
यहूसदक़ से मुख़ातिब हुआ।
2–3 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "यह क़ौम
कहती है, 'अभी रब के घर को दुबारा तामीर करने
का वक़्त नहीं आया।' 4 क्या यह ठीक है कि तुम
ख़ुद लकड़ी से सजे हुए घरों में रहते हो जबकि मेरा
घर अब तक मल्बे का ढेर है?" 5 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "अपने हाल पर ग़ौर करो। 6 तुम ने बहुत
बीज बोया लेकिन कम फ़सल काटी है। तुम खाना
तो खाते हो लेकिन भूके रहते हो, पानी तो पीते हो
लेकिन प्यासे रहते हो, कपड़े तो पहनते हो लेकिन
सर्दी लगती है। और जब कोई पैसे कमा कर उन्हें
अपने बटवे में डालता है तो उस में सूराख़ हैं।"
7 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "अपने हाल पर
ध्यान दे कर उस का सहीह नतीजा निकालो!
8 पहाड़ों पर चढ़ कर लकड़ी ले आओ और रब के
घर की तामीर शुरू करो। ऐसा ही रवय्या मुझे पसन्द
होगा, और इस तरह ही तुम मुझे जलाल दोगे।" यह
रब का फ़रमान है। 9 "देखो, तुम ने बहुत बरकत पाने
की तवक़्क़ो की, लेकिन क्या हुआ? कम ही हासिल
हुआ। और जो कुछ तुम अपने घर वापस लाए उसे
मैं ने हवा में उड़ा दिया। क्यूँ? मैं, रब्ब-उल-अफ़्वाज
तुम्हें इस की असल वजह बताता हूँ। मेरा घर अब
तक मल्बे का ढेर है जबकि तुम में से हर एक अपना
अपना घर मज़बूत करने के लिए भाग-दौड़ कर रहा
है। 10 इसी लिए आसमान ने तुम्हें ओस से और ज़मीन
ने तुम्हें फ़सलों से महरूम कर रखा है। 11 इसी लिए
मैं ने हुक्म दिया कि खेतों में और पहाड़ों पर काल
पड़े, कि मुल्क का अनाज, अंगूर, ज़ैतून बल्कि ज़मीन
की हर पैदावार उस की लपेट में आ जाए। इन्सान-
ओ-हैवान उस की ज़द में आ गए हैं, और तुम्हारी
मेहनत-मशक़्क़त ज़ाए हो रही है।"
12 तब ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल, इमाम-ए-
आज़म यशूअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के पूरे बचे
हुए हिस्से ने रब अपने ख़ुदा की सुनी। जो भी बात
रब उन के ख़ुदा ने हज्जी नबी को सुनाने को कहा
था उसे उन्हों ने मान लिया। रब का ख़ौफ़ पूरी क़ौम
पर तारी हुआ। 13 तब रब ने अपने पैग़म्बर हज्जी की
मारिफ़त उन्हें यह पैग़ाम दिया, "रब फ़रमाता है, मैं
तुम्हारे साथ हूँ।"
14–15 यूँ रब ने यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल बिन
सियाल्तीएल, इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन यहूसदक़
और क़ौम के बचे हुए हिस्से को रब के घर की तामीर
करने की तहरीक दी। दारा बादशाह की हुकूमत के
दूसरे साल में वह आ कर रब्ब-उल-अफ़्वाज अपने
ख़ुदा के घर पर काम करने लगे। छटे महीने का 24वाँ
दिन [w]था।

रब का नया घर शानदार होगा

2 1 उसी साल के सातवें महीने के 21वें दिन
[x]हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ,
2 "यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल,

---

[v]29 अगस्त।

[w]21 सितम्बर।

[x]17 अक्तूबर।

इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन यहूसदक़ और क़ौम के
बचे हुए हिस्से को बता देना,
3 ‘तुम में से किस को याद है कि रब का घर तबाह
होने से पहले कितना शानदार था? जो इस वक़्त उस
की जगह तामीर हो रहा है वह तुम्हें कैसा लगता है?
रब के पहले घर की निस्बत यह कुछ भी नहीं लगता।
4 लेकिन रब फ़रमाता है कि ऐ ज़रुब्बाबल, हौसला
रख! ऐ इमाम-ए-आज़म यशूअ बिन यहूसदक़ हौसला
रख! ऐ मुल्क के तमाम बाशिन्दो, हौसला रख कर
अपना काम जारी रखो। क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। 5 जो अह्द मैं ने
मिस्र से निकलते वक़्त तुम से बांधा था वह क़ाइम
रहेगा। मेरा रूह तुम्हारे दरमियान ही रहेगा। डरो मत!
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि थोड़ी देर के
बाद मैं एक बार फिर आसमान-ओ-ज़मीन और बहर-
ओ-बर्र को हिला दूँगा। 7 तब तमाम अक़्वाम लरज़
उठेंगी, उन के बेशक़ीमत ख़ज़ाने इधर लाए जाएंगे,
और मैं इस घर को अपने जलाल से भर दूँगा। 8 रब्ब-
उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि चाँदी मेरी है और सोना
मेरा है। 9 नया घर पुराने घर से कहीं ज़्यादा शानदार
होगा, और मैं इस जगह को सलामती अता करूँगा।’
यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।”

मैं तुम्हें दुबारा बरकत दूँगा

10 दारा बादशाह की हुकूमत के दूसरे साल में हज्जी
पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ। नवें महीने
का 24वाँ दिन [y]था।
11 “रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, ‘इमामों से
सवाल कर कि शरीअत ज़ैल के मुआमले के बारे
में क्या फ़रमाती है, 12 अगर कोई शख़्स मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस गोश्त अपनी झोली में डाल कर कहीं ले
जाए और रास्ते में झोली मै, ज़ैतून के तेल, रोटी या
मज़ीद किसी खाने वाली चीज़ से लग जाए तो क्या
खाने वाली यह चीज़ गोश्त से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
हो जाती है’?”
हज्जी ने इमामों को यह सवाल पेश किया तो उन्हों
ने जवाब दिया, “नहीं।” 13 तब उस ने मज़ीद पूछा,
“अगर कोई किसी लाश को छूने से नापाक हो कर
इन खाने वाली चीज़ों में से कुछ छुए तो क्या खाने
वाली चीज़ उस से नापाक हो जाती है?”
इमामों ने जवाब दिया, “जी हाँ।”
14 फिर हज्जी ने कहा, “रब फ़रमाता है कि मेरी
नज़र में इस क़ौम का यही हाल है। जो कुछ भी यह
करते और क़ुर्बान करते हैं वह नापाक है।
15 लेकिन अब इस बात पर ध्यान दो कि आज से
हालात कैसे होंगे। रब के घर की नए सिरे से बुन्याद
रखने से पहले हालात कैसे थे? 16 जहाँ तुम फ़सल
की 20 बोरियों की उम्मीद रखते थे वहाँ सिर्फ़ 10
हासिल हुईं। जहाँ तुम अंगूरों को कुचल कर रस के
100 लिटर की तवक़्क़ो रखते थे वहाँ सिर्फ़ 40 लिटर
निकले।” 17 रब फ़रमाता है, “तेरी मेहनत-मशक़्क़त
ज़ाए हुई, क्यूँकि मैं ने पतरोग, फफूँदी और ओलों
से तुम्हारी पैदावार को नुक़्सान पहुँचाया। तो भी तुम
ने तौबा करके मेरी तरफ़ रुजू न किया। 18 लेकिन
अब तवज्जुह दो कि तुम्हारा हाल आज यानी नवें
महीने के 24वें दिन से कैसा होगा। इस दिन रब के
घर की बुन्याद रखी गई, इस लिए ग़ौर करो 19 कि
क्या आइन्दा भी गोदाम में जमाशुदा बीज ज़ाए हो
जाएगा, कि क्या आइन्दा भी अंगूर, अन्जीर, अनार
और ज़ैतून का फल न होने के बराबर होगा। क्यूँकि
आज से मैं तुम्हें बरकत दूँगा।”

ज़रुब्बाबल से अल्लाह का वादा

20 उसी दिन हज्जी पर रब का एक और कलाम
नाज़िल हुआ, 21 “यहूदाह के गवर्नर ज़रुब्बाबल को
बता दे कि मैं आसमान-ओ-ज़मीन को हिला दूँगा।
22 मैं शाही तख़्तों को उलट कर अजनबी सल्तनतों

[y] 18 दिसम्बर।

की ताक़त तबाह कर दूँगा। मैं रथों को उन के रथबानों समेत उलट दूँगा, और घोड़े अपने सवारों समेत गिर जाएंगे। हर एक अपने भाई की तलवार से मरेगा।” 23 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं तुझे, अपने ख़ादिम ज़रुब्बाबल बिन सियाल्तीएल को ले कर मुहर की अंगूठी की मानिन्द बना दूँगा, क्यूँकि मैं ने तुझे चुन लिया है।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

ज़करियाह

तौबा करो!

1 1 फ़ार्स के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे
साल और आठवें महीने [z]में रब का कलाम नबी
ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इद्दू पर नाज़िल हुआ,
2–3 "लोगों से कह कि रब तुम्हारे बापदादा से
निहायत ही नाराज़ था। अब रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ तो मैं भी तुम्हारे
पास वापस आऊँगा। 4 अपने बापदादा की मानिन्द
न हो जिन्हों ने न मेरी सुनी, न मेरी तरफ़ तवज्जुह
दी, गो मैं ने उस वक़्त के नबियों की मारिफ़त उन्हें
आगाह किया था कि अपनी बुरी राहों और शरीर
हरकतों से बाज़ आओ। 5 अब तुम्हारे बापदादा कहाँ
हैं? और क्या नबी अबद तक ज़िन्दा रहते हैं? दोनों
बहुत देर हुई वफ़ात पा चुके हैं। [a]6 लेकिन तुम्हारे
बापदादा के बारे में जितनी भी बातें और फ़ैसले मैं ने
अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाए वह
सब पूरे हुए। तब उन्हों ने तौबा करके इक़्रार किया,
'रब्ब-उल-अफ़्वाज ने हमारी बुरी राहों और हरकतों
के सबब से वह कुछ किया है जो उस ने करने को
कहा था'।"

ज़करियाह रोया देखता है

7 तीन माह के बाद रब ने नबी ज़करियाह बिन
बरकियाह बिन इद्दू पर एक और कलाम नाज़िल
किया। सबात यानी 11वें महीने का 24वाँ दिन [b]था।

पहली रोया : घुड़सवार

8 उस रात मैं ने रोया में एक आदमी को सुर्ख़ रंग के
घोड़े पर सवार देखा। वह घाटी के दरमियान उगने
वाली मेहंदी की झाड़ियों के बीच में रुका हुआ था।
उस के पीछे सुर्ख़, भूरे और सफ़ेद रंग के घोड़े खड़े
थे। उन पर भी आदमी बैठे थे। [c]9 जो फ़रिश्ता मुझ से
बात कर रहा था उस से मैं ने पूछा, "मेरे आक़ा, इन
घुड़सवारों से क्या मुराद है?" उस ने जवाब दिया,
"मैं तुझे उन का मतलब दिखाता हूँ।" 10 तब मेहंदी
की झाड़ियों में रुके हुए आदमी ने जवाब दिया, "यह
वह हैं जिन्हें रब ने पूरी दुनिया की गश्त करने के लिए
भेजा है।" 11 अब दीगर घुड़सवार रब के उस फ़रिश्ते
के पास आए जो मेहंदी की झाड़ियों के दरमियान
रुका हुआ था। उन्हों ने इत्तिला दी, "हम ने दुनिया
की गश्त लगाई तो मालूम हुआ कि पूरी दुनिया में
अम्न-ओ-अमान है।" 12 तब रब का फ़रिश्ता बोला,
"ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, अब तू 70 सालों से यरूशलम
और यहूदाह की आबादियों से नाराज़ रहा है। तू कब
तक उन पर रहम न करेगा?"

13 जवाब में रब ने मेरे साथ गुफ़्तगु करने वाले
फ़रिश्ते से नर्म और तसल्ली देने वाली बातें कीं।
14 फ़रिश्ता दुबारा मुझ से मुख़ातिब हुआ, "एलान
कर कि रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं बड़ी ग़ैरत
से यरूशलम और कोह-ए-सिय्यून के लिए लड़ूँगा।
15 मैं उन दीगर अक़्वाम से निहायत नाराज़ हूँ जो इस
वक़्त अपने आप को महफ़ूज़ समझती हैं। बेशक मैं
अपनी क़ौम से कुछ नाराज़ था, लेकिन इन दीगर

---

[z]अक्तूबर ता नवम्बर।

[a]'दोनों . . .चुके हैं' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

[b]15 फ़र्वरी।

[c]'उन . . .बैठे थे' इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

क़ौमों ने उसे हद से ज़्यादा तबाह कर दिया है। यह
कभी भी मेरा मक़्सद नहीं था।' 16 रब फ़रमाता है,
'अब मैं दुबारा यरूशलम की तरफ़ माइल हो कर
उस पर रहम करूँगा। मेरा घर नए सिरे से उस में
तामीर हो जाएगा बल्कि पूरे शहर की पैमाइश की
जाएगी ताकि उसे दुबारा तामीर किया जाए।' यह
रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

17 मज़ीद एलान कर कि रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, 'मेरे शहरों में दुबारा कस्रत का माल
पाया जाएगा। रब दुबारा कोह-ए-सिय्यून को तसल्ली
देगा, दुबारा यरूशलम को चुन लेगा'।"

दूसरी रोया : सींग और कारीगर

18 मैं ने अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि
चार सींग मेरे सामने हैं। 19 जो फ़रिश्ता मुझ से बात
कर रहा था उस से मैं ने पूछा, "इन का क्या मतलब
है?" उस ने जवाब दिया, "यह वह सींग हैं जिन्हों ने
यहूदाह और इस्राईल को यरूशलम समेत मुन्तशिर
कर दिया था।"

20 फिर रब ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 मैं ने
सवाल किया, "यह क्या करने आ रहे हैं?" उस ने
जवाब दिया, "मज़कूरा सींगों ने यहूदाह को इतने ज़ोर
से मुन्तशिर कर दिया कि आख़िरकार एक भी अपना
सर नहीं उठा सका। लेकिन अब यह कारीगर उन
में दहशत फैलाने आए हैं। यह उन क़ौमों के सींगों
को ख़ाक में मिला देंगे जिन्हों ने उन से यहूदाह के
बाशिन्दों को मुन्तशिर कर दिया था।"

तीसरी रोया : आदमी यरूशलम की पैमाइश करता है

2 1 मैं ने अपनी नज़र दुबारा उठाई तो एक आदमी
को देखा जिस के हाथ में फ़ीता था। 2 मैं ने
पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं?" उस ने जवाब दिया,
"यरूशलम की पैमाइश करने जा रहा हूँ। मैं मालूम
करना चाहता हूँ कि शहर की लम्बाई और चौड़ाई
कितनी होनी चाहिए।" 3 तब वह फ़रिश्ता रवाना
हुआ जो अब तक मुझ से बात कर रहा था। लेकिन
रास्ते में एक और फ़रिश्ता उस से मिलने आया। 4 इस
दूसरे फ़रिश्ते ने कहा, "भाग कर पैमाइश करने वाले
नौजवान को बता दे, 'इन्सान-ओ-हैवान की इतनी
बड़ी तादाद होगी कि आइन्दा यरूशलम की फ़सील
नहीं होगी। 5 रब फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं आग
की चारदीवारी बन कर उस की हिफ़ाज़त करूँगा, मैं
उस के दरमियान रह कर उस की इज़्ज़त-ओ-जलाल
का बाइस हूँगा'।"

6 रब फ़रमाता है, "उठो, उठो! शिमाली मुल्क से
भाग आओ। क्यूँकि मैं ने ख़ुद तुम्हें चारों तरफ़
मुन्तशिर कर दिया था। 7 लेकिन अब मैं फ़रमाता हूँ
कि वहाँ से निकल आओ। सिय्यून के जितने लोग
बाबल [d]में रहते हैं वहाँ से बच निकलें!" 8 क्यूँकि
रब्ब-उल-अफ़्वाज जिस ने मुझे भेजा वह उन क़ौमों
के बारे में जिन्हों ने तुम्हें लूट लिया फ़रमाता है, "जो
तुम्हें छेड़े वह मेरी आँख की पुतली को छेड़ेगा। 9 इस
लिए यक़ीन करो कि मैं अपना हाथ उन के ख़िलाफ़
उठाऊँगा। उन के अपने ग़ुलाम उन्हें लूट लेंगे।"

तब तुम जान लोगे कि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे
भेजा है। 10 रब फ़रमाता है, "ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी
के नारे लगा! क्यूँकि मैं आ रहा हूँ, मैं तेरे दरमियान
सुकूनत करूँगा। 11 उस दिन बहुत सी अक़्वाम मेरे
साथ पैवस्त हो कर मेरी क़ौम का हिस्सा बन जाएँगी।
मैं ख़ुद तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा।"

तब तू जान लेगी कि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे तेरे
पास भेजा है।

12 मुक़द्दस मुल्क में यहूदाह रब की मौरूसी ज़मीन
बनेगा, और वह यरूशलम को दुबारा चुन लेगा।
13 तमाम इन्सान रब के सामने ख़ामोश हो जाएँ,
क्यूँकि वह उठ कर अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह से
निकल आया है।

---

[d]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बाबल बेटी।

चौथी रोया : इमाम-ए-आज़म यशूअ

3 1 इस के बाद रब ने मुझे रोया में इमाम-ए-आज़म
यशूअ को दिखाया। वह रब के फ़रिश्ते के
सामने खड़ा था, और इब्लीस उस पर इल्ज़ाम लगाने
के लिए उस के दाएँ हाथ खड़ा हो गया था। 2 रब ने
इब्लीस से फ़रमाया, "ऐ इब्लीस, रब तुझे मलामत
करता है! रब जिस ने यरूशलम को चुन लिया वह
तुझे डाँटता है! यह आदमी तो बाल बाल बच गया
है, उस लकड़ी की तरह जो भड़कती आग में से छीन
ली गई है।"

3 यशूअ गन्दे कपड़े पहने हुए फ़रिश्ते के सामने
खड़ा था। 4 जो अफ़राद साथ खड़े थे उन्हें फ़रिश्ते
ने हुक्म दिया, "उस के मैले कपड़े उतार दो।" फिर
यशूअ से मुख़ातिब हुआ, "देख, मैं ने तेरा क़ुसूर तुझ
से दूर कर दिया है, और अब मैं तुझे शानदार सफ़ेद
कपड़े पहना देता हूँ।" 5 मैं ने कहा, "वह उस के सर
पर पाक-साफ़ पगड़ी बांधें!" चुनाँचे उन्हों ने यशूअ
के सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बांध कर उसे नए कपड़े
पहनाए। रब का फ़रिश्ता साथ खड़ा रहा। 6 यशूअ से
उस ने बड़ी सन्जीदगी से कहा,

7 "रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मेरी राहों पर
चल कर मेरे अह्काम पर अमल कर तो तू मेरे घर
की राहनुमाई और उस की बारगाहों की देख-भाल
करेगा। फिर मैं तेरे लिए यहाँ आने और हाज़िरीन में
खड़े होने का रास्ता क़ाइम रखूँगा।

8 ऐ इमाम-ए-आज़म यशूअ, सुन! तू और तेरे सामने
बैठे तेरे इमाम भाई मिल कर उस वक़्त की तरफ़
इशारा हैं जब मैं अपने ख़ादिम को जो कोंपल
कहलाता है आने दूँगा। 9 देखो वह जौहर जो मैं ने
यशूअ के सामने रखा है। उस एक ही पत्थर पर सात
आँखें हैं।' रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं उस
पर कतबा कन्दा करके एक ही दिन में इस मुल्क
का गुनाह मिटा दूँगा। 10 उस दिन तुम एक दूसरे को
अपनी अंगूर की बेल और अपने अन्जीर के दरख़्त के
साय में बैठने की दावत दोगे।' यह रब्ब-उल-अफ़्वाज
का फ़रमान है।"

पाँचवीं रोया : सोने का शमादान और ज़ैतून के दरख़्त

4 1 जिस फ़रिश्ते ने मुझ से बात की थी वह अब
मेरे पास वापस आया। उस ने मुझे यूँ जगा दिया
जिस तरह गहरी नींद सोने वाले को जगाया जाता है।
2 उस ने पूछा, "तुझे क्या नज़र आता है?" मैं ने जवाब
दिया, "ख़ालिस सोने का शमादान जिस पर तेल का
प्याला और सात चराग़ हैं। हर चराग़ के सात मुँह हैं।
3 ज़ैतून के दो दरख़्त भी दिखाई देते हैं। एक दरख़्त
तेल के प्याले के दाईं तरफ़ और दूसरा उस के बाईं
तरफ़ है। 4 लेकिन मेरे आक़ा, इन चीज़ों का मतलब
क्या है?"

5 फ़रिश्ता बोला, "क्या यह तुझे मालूम नहीं?" मैं
ने जवाब दिया, "नहीं, मेरे आक़ा।"

6 फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, "ज़रुब्बाबल के लिए रब
का यह पैग़ाम है,

'रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि तू न अपनी
ताक़त, न अपनी क़ुव्वत से बल्कि मेरे रूह से ही
कामयाब होगा।' 7 क्या रास्ते में बड़ा पहाड़ हाइल
है? ज़रुब्बाबल के सामने वह हमवार मैदान बन
जाएगा। और जब ज़रुब्बाबल रब के घर का आख़िरी
पत्थर लगाएगा तो हाज़िरीन पुकार उठेंगे, 'मुबारक
हो! मुबारक हो'!"

8 रब का कलाम एक बार फिर मुझ पर नाज़िल
हुआ, 9 "ज़रुब्बाबल के हाथों ने इस घर की
बुन्याद डाली, और उसी के हाथ उसे तक्मील तक
पहुँचाएँगे। तब तू जान लेगा कि रब्ब-उल-अफ़्वाज
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10 गो तामीर के आग़ाज़
में बहुत कम नज़र आता है तो भी उस पर हिक़ारत
की निगाह न डालो। क्यूँकि लोग ख़ुशी मनाएँगे जब
ज़रुब्बाबल के हाथ में साहूल देखेंगे। (मज़कूरा सात
चराग़ रब की आँखें हैं जो पूरी दुनिया की गश्त
लगाती रहती हैं)।"

11 मैं ने मज़ीद पूछा, “शमादान के दाएँ बाएँ के
ज़ैतून के दो दरख़्तों से क्या मुराद है? 12 यहाँ सोने
के दो पाइप भी नज़र आते हैं जिन से ज़ैतून का सुनहरा
तेल बह निकलता है। ज़ैतून की जो दो टहनियाँ उन
के साथ हैं उन का मतलब क्या है?”
13 फ़रिश्ते ने कहा, “क्या तू यह नहीं जानता?” मैं
बोला, “नहीं, मेरे आक़ा।” 14 तब उस ने फ़रमाया,
“यह वह दो मसह किए हुए आदमी हैं जो पूरी दुनिया
के मालिक के हुज़ूर खड़े होते हैं।”

छटी रोया : उड़ने वाला तूमार

5 1 मैं ने एक बार फिर अपनी नज़र उठाई तो एक
उड़ता हुआ तूमार देखा। 2 फ़रिश्ते ने पूछा, “तुझे
क्या नज़र आता है?” मैं ने जवाब दिया, “एक उड़ता
हुआ तूमार जो 30 फ़ुट लम्बा और 15 फ़ुट चौड़ा है।”
3 वह बोला, “इस से मुराद एक लानत है जो पूरे मुल्क
पर भेजी जाएगी। इस तूमार के एक तरफ़ लिखा है कि
हर चोर को मिटा दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ यह
कि झूटी क़सम खाने वाले को नेस्त किया जाएगा।
4 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, ‘मैं यह भेजूँगा तो
चोर और मेरे नाम की झूटी क़सम खाने वाले के घर
में लानत दाख़िल होगी और उस के बीच में रह कर
उसे लकड़ी और पत्थर समेत तबाह कर देगी’।”

सातवीं रोया : टोकरी में औरत

5 जो फ़रिश्ता मुझ से बात कर रहा था उस ने आ
कर मुझ से कहा, “अपनी निगाह उठा कर वह देख
जो निकल कर आ रहा है।” 6 मैं ने पूछा, “यह क्या
है?” उस ने जवाब दिया, “यह अनाज की पैमाइश
करने की टोकरी है। यह पूरे मुल्क में नज़र आती
है।” 7 टोकरी पर सीसे का ढकना था। अब वह खुल
गया, और टोकरी में बैठी हुई एक औरत दिखाई दी।
8 फ़रिश्ता बोला, “इस औरत से मुराद बेदीनी है।”
उस ने औरत को धक्का दे कर टोकरी में वापस कर
दिया और सीसे का ढकना ज़ोर से बन्द कर दिया।
9 मैं ने दुबारा अपनी नज़र उठाई तो दो औरतों को
देखा। उन के लक़्लक़ के से पर थे, और उड़ते वक़्त
हवा उन के साथ थी। टोकरी के पास पहुँच कर वह
उसे उठा कर आसमान-ओ-ज़मीन के दरमियान ले
गईं। 10 जो फ़रिश्ता मुझ से गुफ़्तगु कर रहा था उस से
मैं ने पूछा, “औरतें टोकरी को किधर ले जा रही हैं?”
11 उस ने जवाब दिया, “मुल्क-ए-बाबल में। वहाँ वह
उस के लिए घर बना देंगी। जब घर तय्यार होगा तो
टोकरी वहाँ उस की अपनी जगह पर रखी जाएगी।”

चार रथ

6 1 मैं ने फिर अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता
हूँ कि चार रथ पीतल के दो पहाड़ों के बीच में
से निकल रहे हैं। 2 पहले रथ के घोड़े सुर्ख़, दूसरे के
सियाह, 3 तीसरे के सफ़ेद और चौथे के धब्बेदार थे।
सब ताक़तवर थे।
4 जो फ़रिश्ता मुझ से बात कर रहा था उस से मैं ने
सवाल किया, “मेरे आक़ा, इन का क्या मतलब है?”
5 उस ने जवाब दिया, “यह आसमान की चार रूहें
[e]हैं। पहले यह पूरी दुनिया के मालिक के हुज़ूर खड़ी
थीं, लेकिन अब वहाँ से निकल रही हैं। 6 सियाह
घोड़ों का रथ शिमाली मुल्क की तरफ़ जा रहा है,
सफ़ेद घोड़ों का मग़रिब की तरफ़, और धब्बेदार
घोड़ों का जुनूब की तरफ़।”
7 यह ताक़तवर घोड़े बड़ी बेताबी से इस इन्तिज़ार
में थे कि दुनिया की गश्त करें। फिर उस ने हुक्म
दिया, “चलो, दुनिया की गश्त करो।” वह फ़ौरन
निकल कर दुनिया की गश्त करने लगे। 8 फ़रिश्ते
ने मुझे आवाज़ दे कर कहा, “उन घोड़ों पर ख़ास
ध्यान दो जो शिमाली मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। यह
उस मुल्क पर मेरा ग़ुस्सा उतारेंगे।”

---

[e]या हवाएँ।

इस्राईल का आने वाला बादशाह

9 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 10 “आज
ही यूसियाह बिन सफ़नियाह के घर में जा! वहाँ तेरी
मुलाक़ात बाबल में जिलावतन किए हुए इस्राईलियों
ख़ल्दी, तूबियाह और यदायाह से होगी जो इस वक़्त
वहाँ पहुँच चुके हैं। जो हदिए वह अपने साथ लाए
हैं उन्हें क़बूल कर। 11 उन की यह सोना-चाँदी ले
कर ताज बना ले, फिर ताज को इमाम-ए-आज़म
यशूअ बिन यहूसदक़ के सर पर रख कर 12 उसे बता,
‘रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि एक आदमी आने
वाला है जिस का नाम कोंपल है। उस के साय में
बहुत कोंपलें फूट निकलेंगी, और वह रब का घर
तामीर करेगा। 13 हाँ, वही रब का घर बनाएगा और
शान-ओ-शौकत के साथ तख़्त पर बैठ कर हुकूमत
करेगा। वह इमाम की हैसियत से भी तख़्त पर बैठेगा,
और दोनों उहदों में इत्तिफ़ाक़ और सलामती होगी।’
14 ताज को हीलम, तूबियाह, यदायाह और हेन बिन
सफ़नियाह की याद में रब के घर में महफ़ूज़ रखा
जाए। 15 लोग दूरदराज़ इलाक़ों से आ कर रब का
घर तामीर करने में मदद करेंगे।”

तब तुम जान लोगे कि रब्ब-उल-अफ़्वाज ने मुझे
तुम्हारे पास भेजा है। अगर तुम ध्यान से रब अपने
ख़ुदा की सुनो तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

तुम मेरी सुनने से इन्कार करते हो

7 1 दारा बादशाह की हुकूमत के चौथे साल में
रब ज़करियाह से हमकलाम हुआ। किस्लेव
यानी नवें महीने का चौथा दिन [f]था। 2 उस वक़्त
बैत-एल शहर ने सराज़र और रजम-मलिक को उस
के आदमियों समेत यरूशलम भेजा था ताकि रब से
इल्तिमास करें। 3 साथ साथ उन्हें रब्ब-उल-अफ़्वाज
के घर के इमामों को यह सवाल पेश करना था, “अब
हम कई साल से पाँचवें महीने में रोज़ा रख कर रब के
घर की तबाही पर मातम करते आए हैं। क्या लाज़िम
है कि हम यह दस्तूर आइन्दा भी जारी रखें?”

4 तब मुझे रब्ब-उल-अफ़्वाज से जवाब मिला,
5 “मुल्क के तमाम बाशिन्दों और इमामों से कह,
‘बेशक तुम 70 साल से पाँचवें और सातवें महीने में
रोज़ा रख कर मातम करते आए हो। लेकिन क्या तुम
ने यह दस्तूर वाक़ई मेरी ख़ातिर अदा किया? हरगिज़
नहीं! 6 ईदों पर भी तुम खाते-पीते वक़्त सिर्फ़ अपनी
ही ख़ातिर ख़ुशी मनाते हो। 7 यह वही बात है जो मैं
ने माज़ी में भी नबियों की मारिफ़त तुम्हें बताई, उस
वक़्त जब यरूशलम में आबादी और सुकून था, जब
गिर्द-ओ-नवाह के शहर दश्त-ए-नजब और मग़रिब
के नशेबी पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे’।”

8 इस नाते से ज़करियाह पर रब का एक और
कलाम नाज़िल हुआ, 9 “रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता
है, ‘अदालत में मुन्सिफ़ाना फ़ैसले करो, एक दूसरे
पर मेहरबानी और रहम करो! 10 बेवाओं, यतीमों,
अजनबियों और ग़रीबों पर ज़ुल्म मत करना। अपने
दिल में एक दूसरे के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे न बान्धो।’
11 जब तुम्हारे बापदादा ने यह कुछ सुना तो वह इस
पर ध्यान देने के लिए तय्यार नहीं थे बल्कि अकड़
गए। उन्हों ने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर कर अपने
कानों को बन्द किए रखा। 12 उन्हों ने अपने दिलों को
हीरे की तरह सख़्त कर लिया ताकि शरीअत और वह
बातें उन पर असरअन्दाज़ न हो सकें जो रब्ब-उल-
अफ़्वाज ने अपने रूह के वसीले से गुज़शता नबियों
को बताने को कहा था। तब रब्ब-उल-अफ़्वाज का
शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। 13 वह फ़रमाता
है, ‘चूँकि उन्हों ने मेरी न सुनी इस लिए मैं ने फ़ैसला
किया कि जब वह मदद के लिए मुझ से इल्तिजा करें
तो मैं भी उन की नहीं सुनूँगा। 14 मैं ने उन्हें आँधी से
उड़ा कर तमाम दीगर अक़्वाम में मुन्तशिर कर दिया,
ऐसी क़ौमों में जिन से वह नावाक़िफ़ थे। उन के जाने
पर वतन इतना वीरान-ओ-सुन्सान हुआ कि कोई न

[f] 4 दिसम्बर।

रहा जो उस में आए या वहाँ से जाए। यूँ उन्हों ने उस
ख़ुशगवार मुल्क को तबाह कर दिया'।"

एक नया आग़ाज़

8 1 एक बार फिर रब्ब-उल-अफ़्वाज का कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 "रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है कि मैं बड़ी ग़ैरत से सिय्यून के लिए
लड़ रहा हूँ, बड़े ग़ुस्से में उस के लिए जिद्द-ओ-
जह्द कर रहा हूँ। 3 रब फ़रमाता है कि मैं सिय्यून
के पास वापस आऊँगा, दुबारा यरूशलम के बीच में
सुकूनत करूँगा। तब यरूशलम 'वफ़ादारी का शहर'
और रब्ब-उल-अफ़्वाज का पहाड़ 'कोह-ए-मुक़द्दस'
कहलाएगा। 4 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है,
'बुज़ुर्ग मर्द-ओ-ख़वातीन दुबारा यरूशलम के चौकों
में बैठेंगे, और हर एक इतना उम्ररसीदा होगा कि उसे
छड़ी का सहारा लेना पड़ेगा। 5 साथ साथ चौक खेल-
कूद में मसरूफ़ लड़कों-लड़कियों से भरे रहेंगे।'
6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'शायद यह उस
वक़्त बचे हुए इस्राईलियों को नामुमकिन लगे।
लेकिन क्या ऐसा काम मेरे लिए जो रब्ब-उल-
अफ़्वाज हूँ नामुमकिन है? हरगिज़ नहीं!' 7 रब्ब-उल-
अफ़्वाज फ़रमाता है, 'मैं अपनी क़ौम को मशरिक़
और मग़रिब के ममालिक से बचा कर 8 वापस
लाऊँगा, और वह यरूशलम में बसेंगे। वहाँ वह मेरी
क़ौम होंगे और मैं वफ़ादारी और इन्साफ़ के साथ उन
का ख़ुदा हूँगा।'
9 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'हौसला रख कर
तामीरी काम तक्मील तक पहुँचाओ! आज भी तुम
उन बातों पर एतिमाद कर सकते हो जो नबियों ने
रब्ब-उल-अफ़्वाज के घर की बुन्याद डालते वक़्त
सुनाई थीं। 10 याद रहे कि उस वक़्त से पहले न
इन्सान और न हैवान को मेहनत की मज़दूरी मिलती
थी। आने जाने वाले कहीं भी दुश्मन के हम्लों से
महफ़ूज़ नहीं थे, क्यूँकि मैं ने हर आदमी को उस के
हमसाय का दुश्मन बना दिया था।' 11 लेकिन रब्ब-
उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'अब से मैं तुम से जो बचे
हुए हो ऐसा सुलूक नहीं करूँगा। 12 लोग सलामती
से बीज बोएँगे, अंगूर की बेल वक़्त पर अपना फल
लाएगी, खेतों में फ़सलें पकेंगी और आसमान ओस
पड़ने देगा। यह तमाम चीज़ें मैं यहूदाह के बचे हुओं
को मीरास में दूँगा। 13 ऐ यहूदाह और इस्राईल, पहले
तुम दीगर अक़्वाम में लानत का निशाना बन गए थे,
लेकिन अब जब मैं तुम्हें रिहा करूँगा तो तुम बरकत
का बाइस होगे। डरो मत! हौसला रखो!'
14 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, 'पहले जब
तुम्हारे बापदादा ने मुझे तैश दिलाया तो मैं ने तुम पर
आफ़त लाने का मुसम्मम इरादा कर लिया था और
कभी न पछताया। 15 लेकिन अब मैं यरूशलम और
यहूदाह को बरकत देना चाहता हूँ। इस में मेरा इरादा
उतना ही पक्का है जितना पहले तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने
में पक्का था। चुनाँचे डरो मत! 16 लेकिन इन बातों पर
ध्यान दो, एक दूसरे से सच बात करो, अदालत में
सच्चाई और सलामती पर मब्नी फ़ैसले करो, 17 अपने
पड़ोसी के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे मत बान्धो और झूटी
क़सम खाने के शौक़ से बाज़ आओ। इन तमाम चीज़ों
से मैं नफ़रत करता हूँ।' यह रब का फ़रमान है।"
18 एक बार फिर रब्ब-उल-अफ़्वाज का कलाम मुझ
पर नाज़िल हुआ, 19 "रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है
कि आज तक यहूदाह के लोग चौथे, पाँचवें, सातवें
और दसवें महीने में रोज़ा रख कर मातम करते आए
हैं। लेकिन अब से यह औक़ात ख़ुशी-ओ-शादमानी
के मौक़े होंगे जिन पर जश्न मनाओगे। लेकिन सच्चाई
और सलामती को प्यार करो!
20 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त
आएगा जब दीगर अक़्वाम और मुतअद्दिद शहरों
के लोग यहाँ आएँगे। 21 एक शहर के बाशिन्दे दूसरे
शहर में जा कर कहेंगे, 'आओ, हम यरूशलम जा
कर रब से इल्तिमास करें, रब्ब-उल-अफ़्वाज की
मर्ज़ी दरयाफ़्त करें। हम भी जाएंगे।' 22 हाँ, मुतअद्दिद
अक़्वाम और ताक़तवर उम्मतें यरूशलम आएँगी
ताकि रब्ब-उल-अफ़्वाज की मर्ज़ी मालूम करें और
उस से इल्तिमास करें।

23 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि उन दिनों में
मुख़्तलिफ़ अक़्वाम और अहल-ए-ज़बान के दस
आदमी एक यहूदी के दामन को पकड़ कर कहेंगे,
'हमें अपने साथ चलने दें, क्यूँकि हम ने सुना है कि
अल्लाह आप के साथ है'।"

इस्राईल के दुश्मनों की अदालत

9 1 रब का कलाम मुल्क-ए-हद्राक के ख़िलाफ़
है, और वह दमिश्क़ पर नाज़िल होगा। क्यूँकि
इन्सान और इस्राईल के तमाम क़बीलों की आँखें
रब की तरफ़ देखती हैं। 2 दमिश्क़ की सरहद पर
वाक़े हमात बल्कि सूर और सैदा भी इस कलाम से
मुतअस्सिर हो जाएंगे, ख़्वाह वह कितने दानिशमन्द
क्यूँ न हों। 3 बेशक सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला
बना लिया है, बेशक उस ने सोने-चाँदी के ऐसे ढेर
लगाए हैं जैसे आम तौर पर गलियों में रेत या कचरे
के ढेर लगा लिए जाते हैं। 4 लेकिन रब उस पर
क़ब्ज़ा करके उस की फ़ौज को समुन्दर में फैंक देगा।
तब शहर नज़र-ए-आतिश हो जाएगा। 5 यह देख कर
अस्क़लून घबरा जाएगा और ग़ज़्ज़ा तड़प उठेगा।
अक्रून भी लरज़ उठेगा, क्यूँकि उस की उम्मीद जाती
रहेगी। ग़ज़्ज़ा का बादशाह हलाक और अस्क़लून
ग़ैरआबाद हो जाएगा। 6 अश्दूद में दो नस्लों के लोग
बसेंगे। रब फ़रमाता है, "जो कुछ फ़िलिस्तियों के
लिए फ़ख़र का बाइस है उसे मैं मिटा दूँगा। 7 मैं उन
की बुतपरस्ती ख़त्म करूँगा। आइन्दा वह गोश्त को
ख़ून के साथ और अपनी घिनौनी क़ुर्बानियाँ नहीं
खाएँगे। तब जो बच जाएंगे मेरे परस्तार होंगे और
यहूदाह के ख़ानदानों में शामिल हो जाएंगे। अक्रून
के फ़िलिस्ती यूँ मेरी क़ौम में शामिल हो जाएंगे जिस
तरह क़दीम ज़माने में यबूसी मेरी क़ौम में शामिल हो
गए। 8 मैं ख़ुद अपने घर की पहरादारी करूँगा ताकि
आइन्दा जो भी आते या जाते वक़्त वहाँ से गुज़रे उस
पर हम्ला न करे, कोई भी ज़ालिम मेरी क़ौम को तंग
न करे। अब से मैं ख़ुद उस की देख-भाल करूँगा।

नया बादशाह आने वाला है

9 ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम
बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे
पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़त्हमन्द है, वह
हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।
10 मैं इफ़्राईम से रथ और यरूशलम से घोड़े दूर कर
दूँगा। जंग की कमान टूट जाएगी। मौऊदा बादशाह
[8]के कहने पर तमाम अक़्वाम में सलामती क़ाइम हो
जाएगी। उस की हुकूमत एक समुन्दर से दूसरे तक
और दरया-ए-फ़ुरात से दुनिया की इन्तिहा तक मानी
जाएगी।

रब अपनी क़ौम की हिफ़ाज़त करेगा

11 ऐ मेरी क़ौम, मैं ने तेरे साथ एक अह्द बांधा जिस
की तस्दीक़ क़ुर्बानियों के ख़ून से हुई, इस लिए मैं
तेरे क़ैदियों को पानी से महरूम गढ़े से रिहा करूँगा।
12 ऐ पुरउम्मीद कैदियो, क़िले के पास वापस आओ!
क्यूँकि आज ही मैं एलान करता हूँ कि तुम्हारी हर
तक्लीफ़ के इवज़ मैं तुम्हें दो बरकतें बख़्श दूँगा।
13 यहूदाह मेरी कमान है और इस्राईल मेरे तीर जो मैं
दुश्मन के ख़िलाफ़ चलाऊँगा। ऐ सिय्यून बेटी, मैं तेरे
बेटों को यूनान के फ़ौजियों से लड़ने के लिए भेजूँगा,
मैं तुझे सूरमे की तलवार की मानिन्द बना दूँगा।"
14 तब रब उन पर ज़ाहिर हो कर बिजली की तरह
अपना तीर चलाएगा। रब क़ादिर-ए-मुतलक़ नरसिंगा
फूँक कर जुनूबी आँधियों में आएगा। 15 रब्ब-उल-
अफ़्वाज ख़ुद इस्राईलियों को पनाह देगा। तब वह
दुश्मन को खा खा कर उस के फैंके हुए पत्थरों को
ख़ाक में मिला देंगे और ख़ून को मै की तरह पी
पी कर शोर मचाएँगे। वह क़ुर्बानी के ख़ून से भरे

[8]लफ़्ज़ी तर्जुमा : उस के कहने पर।

कटोरे की तरह भर जाएंगे, क़ुर्बानगाह के कोनों जैसे
ख़ूनआलूदा हो जाएंगे।
16 उस दिन रब उन का ख़ुदा उन्हें जो उस की क़ौम
का रेवड़ हैं छुटकारा देगा। तब वह उस के मुल्क
में ताज के जवाहिर की मानिन्द चमक उठेंगे। 17 वह
कितने दिलकश और ख़ूबसूरत लगेंगे! अनाज और मै
की कस्रत से कुंवारे-कुंवारियाँ फलने फूलने लगेंगे।

रब ही मदद कर सकता है

10 1 बहार के मौसम में रब से बारिश माँगो।
क्यूँकि वही घने बादल बनाता है, वही
बारिश बरसा कर हर एक को खेत की हरियाली
मुहय्या करता है। 2 तुम्हारे घरों के बुत फ़रेब देते,
तुम्हारे ग़ैबदान झूटी रोया देखते और फ़रेबदिह ख़्वाब
सुनाते हैं। उन की तसल्ली अबस है। इसी लिए क़ौम
को भेड़-बकरियों की तरह यहाँ से चला जाना पड़ा।
गल्लाबान नहीं है, इस लिए वह मुसीबत में उलझे रहते
हैं।

रब अपनी क़ौम को वापस लाएगा

3 रब फ़रमाता है, "मेरी क़ौम के गल्लाबानों पर
मेरा ग़ज़ब भड़क उठा है, और जो बकरे उस की
राहनुमाई कर रहे हैं उन्हें मैं सज़ा दूँगा। क्यूँकि रब्ब-
उल-अफ़्वाज अपने रेवड़ यहूदाह के घराने की देख-
भाल करेगा, उसे जंगी घोड़े जैसा शानदार बना देगा।
4 यहूदाह से कोने का बुन्यादी पत्थर, मेख़, जंग की
कमान और तमाम हुक्मरान निकल आएँगे। 5 सब
सूरमे की मानिन्द होंगे जो लड़ते वक़्त दुश्मन को
गली के कचरे में कुचल देंगे। रब्ब-उल-अफ़्वाज उन
के साथ होगा, इस लिए वह लड़ कर ग़ालिब आएँगे।
मुख़ालिफ़ घुड़सवारों की बड़ी रुस्वाई होगी।
6 मैं यहूदाह के घराने को तक़वियत दूँगा, यूसुफ़
के घराने को छुटकारा दूँगा, हाँ उन पर रहम करके
उन्हें दुबारा वतन में बसा दूँगा। तब उन की हालत से
पता नहीं चलेगा कि मैं ने कभी उन्हें रद्द किया था।
क्यूँकि मैं रब उन का ख़ुदा हूँ, मैं ही उन की सुनूँगा।
7 इफ़्राईम के अफ़राद सूरमे से बन जाएंगे, वह यूँ ख़ुश
हो जाएंगे जिस तरह दिल मै पीने से ख़ुश हो जाता है।
उन के बच्चे यह देख कर बाग़ बाग़ हो जाएंगे, उन के
दिल रब की ख़ुशी मनाएँगे।
8 मैं सीटी बजा कर उन्हें जमा करूँगा, क्यूँकि मैं
ने फ़िद्या दे कर उन्हें आज़ाद कर दिया है। तब वह
पहले की तरह बेशुमार हो जाएंगे। 9 मैं उन्हें बीज की
तरह मुख़्तलिफ़ क़ौमों में बो कर मुन्तशिर कर दूँगा,
लेकिन दूरदराज़ इलाक़ों में वह मुझे याद करेंगे। और
एक दिन वह अपनी औलाद समेत बच कर वापस
आएँगे। 10 मैं उन्हें मिस्र से वापस लाऊँगा, असूर से
इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें जिलिआद और लुबनान में
लाऊँगा, तो भी उन के लिए जगह काफ़ी नहीं होगी।
11 जब वह मुसीबत के समुन्दर में से गुज़रेंगे तो रब
मौजों को यूँ मारेगा कि सब कुछ पानी की गहराइयों
तक ख़ुश्क हो जाएगा। असूर का फ़ख़र ख़ाक में मिल
जाएगा, और मिस्र का शाही असा दूर हो जाएगा।
12 मैं अपनी क़ौम को रब में तक़वियत दूँगा, और
वह उस का ही नाम ले कर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।" यह
रब का फ़रमान है।

बड़ों को नीचा किया जाएगा

11 1 ऐ लुबनान, अपने दरवाज़ों को खोल दे
ताकि तेरे देवदार के दरख़्त नज़र-ए-आतिश
हो जाएँ।
2 ऐ जूनीपर के दरख़तो, वावैला करो! क्यूँकि
देवदार के दरख़्त गिर गए हैं, यह ज़बरदस्त दरख़्त
तबाह हो गए हैं। ऐ बसन के बलूतो, आह-ओ-ज़ारी
करो! जो जंगल इतना घना था कि कोई उस में से
गुज़र न सकता था उसे काटा गया है।
3 सुनो, चरवाहे रो रहे हैं, क्यूँकि उन की शानदार
चरागाहें बर्बाद हो गई हैं। सुनो, जवान शेरबबर दहाड़
रहे हैं, क्यूँकि वादी-ए-यर्दन का गुंजान जंगल ख़त्म
हो गया है।

दो क़िस्म के गल्लाबान

4 रब मेरा ख़ुदा मुझ से हमकलाम हुआ, “ज़बह होने
वाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी कर! 5 जो उन्हें
ख़रीद लेते वह उन्हें ज़बह करते हैं और क़ुसूरवार
नहीं ठहरते। और जो उन्हें बेचते वह कहते हैं,
‘अल्लाह की हम्द हो, मैं अमीर हो गया हूँ!’ उन के
अपने चरवाहे उन पर तरस नहीं खाते।
6 इस लिए रब फ़रमाता है कि मैं भी मुल्क के
बाशिन्दों पर तरस नहीं खाऊँगा। मैं हर एक को उस
के पड़ोसी और उस के बादशाह के हवाले करूँगा।
वह मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेंगे, और मैं उन्हें उन
के हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।”
7 चुनाँचे मैं, ज़करियाह ने सौदागरों के लिए ज़बह
होने वाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। मैं ने
उस काम के लिए दो लाठियाँ लीं। एक का नाम
‘मेहरबानी’ और दूसरी का नाम ‘यगानगत’ था। उन
के साथ मैं ने रेवड़ की गल्लाबानी की। 8 एक ही महीने
में मैं ने तीन गल्लाबानों को मिटा दिया। लेकिन जल्द
ही मैं भेड़-बकरियों से तंग आ गया, और उन्हों ने
मुझे भी हक़ीर जाना।
9 तब मैं बोला, “आइन्दा मैं तुम्हारी गल्लाबानी नहीं
करूँगा। जिसे मरना है वह मरे, जिसे ज़ाए होना है
वह ज़ाए हो जाए। और जो बच जाएँ वह एक दूसरे
का गोश्त खाएँ। मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा!” [h]10 मैं ने
लाठी बनाम ‘मेहरबानी’ को तोड़ कर ज़ाहिर किया
कि जो अह्द मैं ने तमाम अक़्वाम के साथ बांधा था
वह मन्सूख़ है। 11 उसी दिन वह मन्सूख़ हुआ।
तब भेड़-बकरियों के जो सौदागर मुझ पर ध्यान दे
रहे थे उन्हों ने जान लिया कि यह पैग़ाम रब की तरफ़
से है। 12 फिर मैं ने उन से कहा, “अगर यह आप को
मुनासिब लगे तो मुझे मज़दूरी के पैसे दे दें, वर्ना रहने
दें।” उन्हों ने मज़दूरी के लिए मुझे चाँदी के 30 सिक्के
दे दिए।
13 तब रब ने मुझे हुक्म दिया, “अब यह रक़म
कुम्हार [i]के सामने फैंक दे। कितनी शानदार रक़म
है! यह मेरी इतनी ही क़दर करते हैं।” मैं ने चाँदी
के 30 सिक्के ले कर रब के घर में कुम्हार के सामने
फैंक दिए। 14 इस के बाद मैं ने दूसरी लाठी बनाम
‘यगानगत’ को तोड़ कर ज़ाहिर किया कि यहूदाह
और इस्राईल की अख़ुव्वत मन्सूख़ हो गई है।
15 फिर रब ने मुझे बताया, “अब दुबारा गल्लाबान
का सामान ले ले। लेकिन इस बार अहमक़ चरवाहे
का सा रवय्या अपना ले। 16 क्यूँकि मैं मुल्क पर
ऐसा गल्लाबान मुक़र्रर करूँगा जो न हलाक होने वालों
की देख-भाल करेगा, न छोटों को तलाश करेगा, न
ज़ख़्मियों को शिफ़ा देगा, न सेहतमन्दों को ख़ुराक
मुहय्या करेगा। इस के बजाय वह बेहतरीन जानवरों
का गोश्त खा लेगा बल्कि इतना ज़ालिम होगा कि
उन के खुरों को फाड़ कर तोड़ेगा। 17 उस बेकार
चरवाहे पर अफ़्सोस जो अपने रेवड़ को छोड़ देता
है। तलवार उस के बाज़ू और दहनी आँख को ज़ख़्मी
करे। उस का बाज़ू सूख जाए और उस की दहनी
आँख अंधी हो जाए।”

अल्लाह यरूशलम की हिफ़ाज़त करेगा

12 1 ज़ैल में रब का इस्राईल के लिए कलाम
है। रब जिस ने आसमान को ख़ैमे की तरह
तान कर ज़मीन की बुन्यादें रखीं और इन्सान के
अन्दर उस की रूह को तश्कील दिया वह फ़रमाता
है,
2 “मैं यरूशलम को गिर्द-ओ-नवाह की क़ौमों के
लिए शराब का प्याला बना दूँगा जिसे वह पी कर
लड़खड़ाने लगेंगी। यहूदाह भी मुसीबत में आएगा
जब यरूशलम का मुहासरा किया जाएगा। 3 उस दिन
दुनिया की तमाम अक़्वाम यरूशलम के ख़िलाफ़
जमा हो जाएँगी। तब मैं यरूशलम को एक ऐसा
पत्थर बनाऊँगा जो कोई नहीं उठा सकेगा। जो भी

[h]‘मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

[i]या धात ढालने वाले।

उसे उठा कर ले जाना चाहे वह ज़ख़्मी हो जाएगा।”
4 रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं तमाम घोड़ों में अब्तरी
और उन के सवारों में दीवानगी पैदा करूँगा। मैं दीगर
अक़्वाम के तमाम घोड़ों को अंधा कर दूँगा।

साथ साथ मैं खुली आँखों से यहूदाह के घराने की
देख-भाल करूँगा। 5 तब यहूदाह के ख़ानदान दिल में
कहेंगे, ‘यरूशलम के बाशिन्दे इस लिए हमारे लिए
क़ुव्वत का बाइस हैं कि रब्ब-उल-अफ़्वाज उन का
ख़ुदा है।’ 6 उस दिन मैं यहूदाह के ख़ानदानों को
जलते हुए कोएले बना दूँगा जो दुश्मन की सूखी
लकड़ी को जला देंगे। वह भड़कती हुई मशअल होंगे
जो दुश्मन की पूलों को भस्म करेगी। उन के दाईं
और बाईं तरफ़ जितनी भी क़ौमें गिर्द-ओ-नवाह में
रहती हैं वह सब नज़र-ए-आतिश हो जाएँगी। लेकिन
यरूशलम अपनी ही जगह महफ़ूज़ रहेगा।

7 पहले रब यहूदाह के घरों को बचाएगा ताकि
दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिन्दों की
शान-ओ-शौकत यहूदाह से बड़ी न हो। 8 लेकिन रब
यरूशलम के बाशिन्दों को भी पनाह देगा। तब उन में
से कमज़ोर आदमी दाऊद जैसा सूरमा होगा जबकि
दाऊद का घराना ख़ुदा की मानिन्द, उन के आगे
चलने वाले रब के फ़रिश्ते की मानिन्द होगा। 9 उस
दिन मैं यरूशलम पर हम्लाआवर तमाम अक़्वाम को
तबाह करने के लिए निकलूँगा।

यरूशलम का मातम

10 मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिन्दों
पर मेहरबानी और इल्तिमास का रूह उंडेलूँगा। तब
वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्हों ने छेदा है, और
वह उस के लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने इक्लौते
बेटे के लिए, उस के लिए ऐसा शदीद ग़म खाएँगे
जिस तरह अपने पहलौठे के लिए। 11 उस दिन लोग
यरूशलम में शिद्दत से मातम करेंगे। ऐसा मातम होगा
जैसा मैदान-ए-मजिद्दो में हदद-रिम्मोन पर किया जाता
था। 12–14 पूरे का पूरा मुल्क वावैला करेगा। तमाम
ख़ानदान एक दूसरे से अलग और तमाम औरतें दूसरों
से अलग आह-ओ-बुका करेंगी। दाऊद का ख़ानदान,
नातन का ख़ानदान, लावी का ख़ानदान, सिमई का
ख़ानदान और मुल्क के बाक़ी तमाम ख़ानदान अलग
अलग मातम करेंगे।

बुतपरस्ती और झूटी नबुव्वत का ख़ातमा

13 1 उस दिन दाऊद के घराने और यरूशलम
के बाशिन्दों के लिए चश्मा खोला जाएगा
जिस के ज़रीए वह अपने गुनाहों और नापाकी को दूर
कर सकेंगे।”

2 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं
तमाम बुतों को मुल्क में से मिटा दूँगा। उन का नाम-
ओ-निशान तक नहीं रहेगा, और वह किसी को याद
नहीं रहेंगे।

नबियों और नापाकी की रूह को भी मैं मुल्क से
दूर करूँगा। 3 इस के बाद अगर कोई नबुव्वत करे
तो उस के अपने माँ-बाप उस से कहेंगे, ‘तू ज़िन्दा
नहीं रह सकता, क्यूँकि तू ने रब का नाम ले कर झूट
बोला है।’ जब वह पेशगोइयाँ सुनाएगा तो उस के
अपने वालिदैन उसे छेद डालेंगे। 4 उस वक़्त हर नबी
को अपनी रोया पर शर्म आएगी जब नबुव्वत करेगा।
वह नबी का बालों से बना लिबास नहीं पहनेगा
ताकि फ़रेब दे 5 बल्कि कहेगा, ‘मैं नबी नहीं बल्कि
काश्तकार हूँ। जवानी से ही मेरा पेशा खेतीबाड़ी रहा
है।’ 6 अगर कोई पूछे, ‘तो फिर तेरे सीने पर ज़ख़्मों
के निशान किस तरह लगे? तो जवाब देगा, मैं अपने
दोस्तों के घर में ज़ख़्मी हुआ’।”

लोगों की जाँच-पड़ताल

7 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “ऐ तलवार, जाग
उठ! मेरे गल्लाबान पर हम्ला कर, उस पर जो मेरे क़रीब
है। गल्लाबान को मार डाल ताकि भेड़-बकरियाँ तित्तर-
बित्तर हो जाएँ। मैं ख़ुद अपने हाथ को छोटों के
ख़िलाफ़ उठाऊँगा।” 8 रब फ़रमाता है, “पूरे मुल्क
में लोगों के तीन हिस्सों में से दो हिस्सों को मिटाया
जाएगा। दो हिस्से हलाक हो जाएंगे और सिर्फ़ एक

ही हिस्सा बचा रहेगा। 9 इस बचे हुए हिस्से को मैं
आग में डाल कर चाँदी या सोने की तरह पाक-साफ़
करूँगा। तब वह मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उन की
सुनूँगा। मैं कहूँगा, 'यह मेरी क़ौम है,' और वह कहेंगे,
'रब हमारा ख़ुदा है'।"

रब ख़ुद यरूशलम में बादशाह होगा

14 1 ऐ यरूशलम, रब का वह दिन आने वाला
है जब दुश्मन तेरा माल लूट कर तेरे
दरमियान ही उसे आपस में तक़्सीम करेगा। 2 क्यूँकि
मैं तमाम अक़्वाम को यरूशलम से लड़ने के लिए
जमा करूँगा। शहर दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा, घरों
को लूट लिया जाएगा और औरतों की इस्मतदरी की
जाएगी। शहर के आधे बाशिन्दे जिलावतन हो जाएंगे,
लेकिन बाक़ी हिस्सा उस में ज़िन्दा छोड़ा जाएगा।
3 लेकिन फिर रब ख़ुद निकल कर इन अक़्वाम
से यूँ लड़ेगा जिस तरह तब लड़ता है जब कभी
मैदान-ए-जंग में आ जाता है। 4 उस दिन उस के पाँओ
यरूशलम के मशरिक़ में ज़ैतून के पहाड़ पर खड़े
होंगे। तब पहाड़ फट जाएगा। उस का एक हिस्सा
शिमाल की तरफ़ और दूसरा जुनूब की तरफ़ खिसक
जाएगा। बीच में मशरिक़ से मग़रिब की तरफ़ एक
बड़ी वादी पैदा हो जाएगी। 5 तुम मेरे पहाड़ों की इस
वादी में भाग कर पनाह लोगे, क्यूँकि यह आज़ल
तक पहुँचाएगी। जिस तरह तुम यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह के अय्याम में अपने आप को ज़ल्ज़ले से
बचाने के लिए यरूशलम से भाग निकले थे उसी तरह
तुम मज़कूरा वादी में दौड़ आओगे। तब रब मेरा ख़ुदा
आएगा, और तमाम मुक़द्दसीन उस के साथ होंगे।
6 उस दिन न तपती गर्मी होगी, न सर्दी या पाला।
7 वह एक मुन्फ़रिद दिन होगा जो रब ही को मालूम
होगा। न दिन होगा और न रात बल्कि शाम को भी
रौशनी होगी। 8 उस दिन यरूशलम से ज़िन्दगी का
पानी बह निकलेगा। उस की एक शाख़ मशरिक़ के
बहीरा-ए-मुर्दार की तरफ़ और दूसरी शाख़ मग़रिब के
समुन्दर की तरफ़ बहेगी। इस पानी में न गर्मियों में,
न सर्दियों में कभी कमी होगी।
9 रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन रब
वाहिद ख़ुदा होगा, लोग सिर्फ़ उसी के नाम की
परस्तिश करेंगे। 10 पूरा मुल्क शिमाली शहर जिबा
से ले कर यरूशलम के जुनूब में वाक़े शहर रिम्मोन
तक खुला मैदान बन जाएगा। सिर्फ़ यरूशलम अपनी
ही ऊँची जगह पर रहेगा। उस की पुरानी हुदूद भी
क़ाइम रहेंगी यानी बिनयमीन के दरवाज़े से ले कर
पुराने दरवाज़े और कोने के दरवाज़े तक, फिर हनन-
एल के बुर्ज से ले कर उस जगह तक जहाँ शाही मै
बनाई जाती है। 11 लोग उस में बसेंगे, और आइन्दा
उसे कभी पूरी तबाही के लिए मख़्सूस नहीं किया
जाएगा। यरूशलम महफ़ूज़ जगह रहेगी।
12 लेकिन जो क़ौमें यरूशलम से लड़ने निकलें उन
पर रब एक हौलनाक बीमारी लाएगा। लोग अभी
खड़े हो सकेंगे कि उन के जिस्म सड़ जाएंगे। आँखें
अपने ख़ानों में और ज़बान मुँह में गल जाएगी।
13 उस दिन रब उन में बड़ी अब्तरी पैदा करेगा। हर
एक अपने साथी का हाथ पकड़ कर उस पर हम्ला
करेगा। 14 यहूदाह भी यरूशलम से [j]लड़ेगा। तमाम
पड़ोसी अक़्वाम की दौलत वहाँ जमा हो जाएगी यानी
कस्रत का सोना, चाँदी और कपड़े। 15 न सिर्फ़ इन्सान
मोहलिक बीमारी की ज़द में आएगा बल्कि जानवर
भी। घोड़े, ख़च्चर, ऊँट, गधे और बाक़ी जितने जानवर
उन लश्करगाहों में होंगे उन सब पर यही आफ़त
आएगी।

तमाम अक़्वाम यरूशलम में ईद मनाएँगी

16 तो भी उन तमाम अक़्वाम के कुछ लोग बच
जाएंगे जिन्हों ने यरूशलम पर हम्ला किया था। अब
वह साल-ब-साल यरूशलम आते रहेंगे ताकि हमारे
बादशाह रब्ब-उल-अफ़्वाज की परस्तिश करें और

---

[j]या में।

झोंपड़ियों की ईद मनाएँ। 17 जब कभी दुनिया की
तमाम अक़्वाम में से कोई हमारे बादशाह रब्ब-उल-
अफ़्वाज को सिज्दा करने के लिए यरूशलम न आए
तो उस का मुल्क बारिश से महरूम रहेगा। 18 अगर
मिस्री क़ौम यरूशलम न आए और हिस्सा न ले तो वह
बारिश से महरूम रहेगी। यूँ रब उन क़ौमों को सज़ा
देगा जो झोंपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम
नहीं आएँगी । 19 जितनी भी क़ौमें झोंपड़ियों की ईद
मनाने के लिए यरूशलम न आएँ उन्हें यही सज़ा
मिलेगी, ख़्वाह मिस्र हो या कोई और क़ौम।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा,
“रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।” और रब के
घर की देगें उन मुक़द्दस कटोरों के बराबर होंगी
जो क़ुर्बानगाह के सामने इस्तेमाल होते हैं। 21 हाँ,
यरूशलम और यहूदाह में मौजूद हर देग रब्ब-उल-
अफ़्वाज के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होगी। जो भी
क़ुर्बानियाँ पेश करने के लिए यरूशलम आए वह उन्हें
अपनी क़ुर्बानियाँ पकाने के लिए इस्तेमाल करेगा।
उस दिन से रब्ब-उल-अफ़्वाज के घर में कोई भी
सौदागर पाया नहीं जाएगा।

मलाक़ी

1 1 ज़ैल में इस्राईल के लिए रब का वह कलाम है
जो उस ने मलाक़ी पर नाज़िल किया।
2 रब फ़रमाता है, "तुम मुझे प्यारे हो।" लेकिन तुम
कहते हो, "किस तरह? तेरी हम से मुहब्बत कहाँ
ज़ाहिर हुई है?"
सुनो रब का जवाब! "क्या एसौ और याक़ूब सगे
भाई नहीं थे? तो भी सिर्फ़ याक़ूब मुझे प्यारा था
3 जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा। उस के पहाड़ी
इलाक़े अदोम को मैं ने वीरान-ओ-सुन्सान कर दिया,
उस की मौरूसी ज़मीन को रेगिस्तान के गीदड़ों के
हवाले कर दिया है।" 4 अदोमी कहते हैं, "गो हम
चिकनाचूर हो गए हैं तो भी खंडरात की जगह नए
घर बना लेंगे।" लेकिन रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता
है, "बेशक तामीर का काम करते जाओ, लेकिन मैं
सब कुछ दुबारा ढा दूँगा। उन का मुल्क 'बेदीनी का
मुल्क' और उन की क़ौम 'वह क़ौम जिस पर रब की
अबदी लानत है' कहलाएगी। 5 तुम इस्राईली अपनी
आँखों से यह देखोगे। तब तुम कहोगे, 'रब अपनी
अज़मत इस्राईल की सरहद्दों से बाहर भी ज़ाहिर
करता है'।"

इमामों पर इल्ज़ाम

6 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "ऐ इमामो, बेटा
अपने बाप का और नौकर अपने मालिक का
एहतिराम करता है। लेकिन मेरा एहतिराम कौन
करता है, गो मैं तुम्हारा बाप हूँ? मेरा ख़ौफ़ कौन
मानता है, गो मैं तुम्हारा मालिक हूँ? हक़ीक़त यह
है कि तुम मेरे नाम को हक़ीर जानते हो। लेकिन
तुम एतिराज़ करते हो, 'हम किस तरह तेरे नाम को
हक़ीर जानते हैं?' 7 इस में कि तुम मेरी क़ुर्बानगाह
पर नापाक ख़ुराक रख देते हो। तुम पूछते हो, 'हम
ने तुझे किस बात में नापाक किया है?' इस में कि
तुम रब की मेज़ को क़ाबिल-ए-तह्क़ीर क़रार देते
हो। 8 क्यूँकि गो अंधे जानवरों को क़ुर्बान करना
सख़्त मना है, तो भी तुम यह बात नज़रअन्दाज़ करके
ऐसे जानवरों को क़ुर्बान करते हो। लंगड़े या बीमार
जानवर चढ़ाना भी मम्नू है, तो भी तुम कहते हो,
'कोई बात नहीं' और ऐसे ही जानवरों को पेश करते
हो।" रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "अगर वाक़ई
इस की कोई बात नहीं तो अपने मुल्क के गवर्नर
को ऐसे जानवरों को पेश करो। क्या वह तुम से
ख़ुश होगा? क्या वह तुम्हें क़बूल करेगा? हरगिज़
नहीं! 9 चुनाँचे अब अल्लाह से इल्तिमास करो कि हम
पर मेहरबानी कर।" रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है,
"ख़ुद सोच लो, क्या हमारे हाथों से ऐसी क़ुर्बानियाँ
मिलने पर अल्लाह हमें क़बूल करेगा? 10 काश तुम में
से कोई मेरे घर के दरवाज़ों को बन्द करे ताकि मेरी
क़ुर्बानगाह पर बेफ़ाइदा आग न लगा सको! मैं तुम
से ख़ुश नहीं, और तुम्हारे हाथों से क़ुर्बानियाँ मुझे
बिलकुल पसन्द नहीं।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का
फ़रमान है।
11 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "पूरी दुनिया में
मशरिक़ से मग़रिब तक मेरा नाम अज़ीम है। हर
जगह मेरे नाम को बख़ूर और पाक क़ुर्बानियाँ पेश
की जाती हैं। क्यूँकि दीगर अक़्वाम में मेरा नाम
अज़ीम है। 12 लेकिन तुम अपनी हरकतों से मेरे नाम
की बेहुरमती करते हो। तुम कहते हो, 'रब की मेज़
को नापाक किया जा सकता है, उस की क़ुर्बानियों
को हक़ीर जाना जा सकता है।' 13 तुम शिकायत
करते हो, 'हाय, यह ख़िदमत कितनी तक्लीफ़दिह
है!' और क़ुर्बानी की आग को हिक़ारत की नज़रों
से देखते हुए तेज़ करते हो। हर क़िस्म का जानवर
पेश किया जाता है, ख़्वाह वह ज़ख़्मी, लंगड़ा या
बीमार क्यूँ न हो।" रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है,

"क्या मैं तुम्हारे हाथों से ऐसी क़ुर्बानियाँ क़बूल कर
सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! 14 उस धोकेबाज़ पर लानत
जो मन्नत मान कर कहे, 'मैं रब को अपने रेवड़ का
अच्छा मेंढा क़ुर्बान करूँगा' लेकिन इस के बजाय
नाक़िस जानवर पेश करे।" क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "मैं अज़ीम बादशाह हूँ, और अक़्वाम में
मेरे नाम का ख़ौफ़ माना जाता है।

2 1 ऐ इमामो, अब मेरे फ़ैसले पर ध्यान दो!"
2 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "मेरी सुनो, पूरे
दिल से मेरे नाम का एहतिराम करो, वर्ना मैं तुम
पर लानत भेजूँगा, मैं तुम्हारी बरकतों को लानतों में
तब्दील कर दूँगा। बल्कि मैं यह कर भी चुका हूँ,
क्यूँकि तुम ने पूरे दिल से मेरे नाम का एहतिराम नहीं
किया। 3 तुम्हारे चाल-चलन के सबब से मैं तुम्हारी
औलाद को डाँटूँगा। मैं तुम्हारी ईद की क़ुर्बानियों
का गोबर तुम्हारे मुँह पर फैंक दूँगा, और तुम्हें उस
के समेत बाहर फैंका जाएगा।"

4 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "तब तुम जान
लोगे कि मैं ने तुम पर यह फ़ैसला किया है ताकि
मेरा लावी के क़बीले के साथ अह्द क़ाइम रहे।
5 क्यूँकि मैं ने अह्द बांध कर लावियों से ज़िन्दगी
और सलामती का वादा किया था, और मैं ने वादे
को पूरा भी किया। उस वक़्त लावी मेरा ख़ौफ़ मानते
बल्कि मेरे नाम से दह्शत खाते थे। 6 वह क़ाबिल-ए-
एतिमाद तालीम देते थे, और उन की ज़बान पर झूट
नहीं होता था। वह सलामती से और सीधी राह पर
मेरे साथ चलते थे, और बहुत से लोग उन के बाइस
गुनाह से दूर हो गए।

7 इमामों का फ़र्ज़ है कि वह सहीह तालीम मह्फ़ूज़
रखें, और लोगों को उन से हिदायत हासिल करनी
चाहिए। क्यूँकि इमाम रब्ब-उल-अफ़्वाज का पैग़म्बर
है। 8 लेकिन तुम सहीह राह से हट गए हो। तुम्हारी
तालीम बहुतों के लिए ठोकर का बाइस बन गई है।"
रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "तुम ने लावियों के
साथ मेरे अह्द को ख़ाक में मिला दिया है। 9 इस लिए
मैं ने तुम्हें तमाम क़ौम के सामने ज़लील कर दिया
है, सब तुम्हें हक़ीर जानते हैं। क्यूँकि तुम मेरी राहों
पर नहीं रहते बल्कि तालीम देते वक़्त जानिबदारी
दिखाते हो।"

नाजाइज़ शादियाँ और तलाक़ पर मलामत

10 क्या हम सब का एक ही बाप नहीं? एक ही
ख़ुदा ने हमें ख़ल्क़ किया है। तो फिर हम एक दूसरे
से बेवफ़ाई करके अपने बापदादा के अह्द की
बेहुरमती क्यूँ कर रहे हैं?

11 यहूदाह बेवफ़ा हो गया है। इस्राईल और
यरूशलम में मकरूह हरकतें सरज़द हुई हैं, क्यूँकि
यहूदाह के आदमियों ने रब के घर की बेहुरमती की
है, उस मक़्दिस की जो रब को प्यारा है। किस तरह?
उन्हों ने दीगर अक़्वाम की बुतपरस्त औरतों से शादी
की है। [k]12 लेकिन जिस ने भी ऐसा किया है उसे रब
जड़ से याक़ूब के ख़ैमों से निकाल फैंकेगा, ख़्वाह वह
रब्ब-उल-अफ़्वाज को कितनी क़ुर्बानियाँ पेश क्यूँ न
करे।

13 तुम से एक और ख़ता भी सरज़द होती है।
बेशक रब की क़ुर्बानगाह को अपने आँसूओं से तर
करो, बेशक रोते और कराहते रहो कि रब न हमारी
क़ुर्बानियों पर तवज्जुह देता, न उन्हें ख़ुशी से हमारे
हाथ से क़बूल करता है। लेकिन यह करने से कोई
फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। 14 तुम पूछते हो, "क्यूँ?" इस लिए
कि शादी करते वक़्त रब ख़ुद गवाह होता है। और
अब तू अपनी बीवी से बेवफ़ा हो गया है, गो वह तेरी
जीवनसाथी है जिस से तू ने शादी का अह्द बांधा था।
15 क्या रब ने शौहर और बीवी को एक नहीं बनाया,
एक जिस्म जिस में रूह है? और यह एक जिस्म
क्या चाहता है? अल्लाह की तरफ़ से औलाद। चुनाँचे
अपनी रूह में ख़बरदार रहो! अपनी बीवी से बेवफ़ा
न हो जा! 16 क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज जो इस्राईल

---

[k]लफ़्ज़ी तर्जुमा : यहूदाह ने अजनबी माबूदों की बेटियों से शादी की है।

का ख़ुदा है फ़रमाता है, “मैं तलाक़ से नफ़रत करता हूँ और उस से मुतनफ़्फ़िर हूँ जो ज़ुल्म से मुलब्बस होता है। चुनाँचे अपनी रूह में ख़बरदार रह कर इस तरह का बेवफ़ा रवय्या इख़्तियार न करो!”

रब लोगों की अदालत करेगा

17 तुम्हारी बातों को सुन सुन कर रब थक गया है। तुम पूछते हो, “हम ने उसे किस तरह थका दिया है?” इस में कि तुम दावा करते हो, “बदी करने वाला रब की नज़र में ठीक है, वह ऐसे लोगों को पसन्द करता है।” तुम यह भी कहते हो, “अल्लाह कहाँ है? वह इन्साफ़ क्यूँ नहीं करता?”

3 1 रब्ब-उल-अफ़्वाज जवाब में फ़रमाता है, “देख, मैं अपने पैग़म्बर को भेज देता हूँ जो मेरे आगे आगे चल कर मेरा रास्ता तय्यार करेगा। तब जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अह्द का पैग़म्बर जिस की तुम शिद्दत से आर्ज़ू करते हो वह आने वाला है!”

2 लेकिन जब वह आए तो कौन यह बर्दाश्त कर सकेगा? कौन क़ाइम रह सकेगा जब वह हम पर ज़ाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालने वाले की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिन्द होगा। 3 वह बैठ कर चाँदी को पिघला कर पाक-साफ़ करेगा। जिस तरह सोने-चाँदी को पिघला कर पाक-साफ़ किया जाता है उसी तरह वह लावी के क़बीले को पाक-साफ़ करेगा। तब वह रब को रास्त क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे। 4 फिर यहूदाह और यरूशलम की क़ुर्बानियाँ क़दीम ज़माने की तरह दुबारा रब को क़बूल होंगी।

5 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मैं तुम्हारी अदालत करने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा। जल्द ही मैं उन के ख़िलाफ़ गवाही दूँगा जो मेरा ख़ौफ़ नहीं मानते, जो जादूगर और ज़िनाकार हैं, जो झूटी क़सम खाते, मज़दूरों का हक़ मारते, बेवाओं और यतीमों पर ज़ुल्म करते और अजनबियों का हक़ मारते हैं।

तुम अल्लाह को धोका देते हो

6 मैं, रब तब्दील नहीं होता, लेकिन तुम अब तक याक़ूब की औलाद रहे हो। 7 अपने बापदादा के ज़माने से ले कर आज तक तुम ने मेरे अह्काम से दूर रह कर उन पर ध्यान नहीं दिया। रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ! तब मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा।

लेकिन तुम एतिराज़ करते हो, ‘हम क्यूँ वापस आएँ, हम से क्या सरज़द हुआ है?’ 8 क्या मुनासिब है कि इन्सान अल्लाह को ठगे? हरगिज़ नहीं! लेकिन तुम लोग यही कुछ कर रहे हो। तुम पूछते हो, ‘हम किस तरह तुझे ठगते हैं?’ इस में कि तुम मुझे अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा नहीं देते। नीज़, तुम इमामों को क़ुर्बानियों का वह हिस्सा नहीं देते जो उन का हक़ बनता है। 9 पूरी क़ौम मुझे ठगती रहती है, इस लिए मैं ने तुम पर लानत भेजी है।”

10 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मेरे घर के गोदाम में अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा जमा करो ताकि इस में ख़ुराक दस्तयाब हो। मुझे इस में आज़मा कर देखो कि मैं अपने वादे को पूरा करता हूँ कि नहीं। क्यूँकि मैं तुम से वादा करता हूँ कि जवाब में मैं आसमान के दरीचे खोल कर तुम पर हद से ज़्यादा बरकत बरसा दूँगा।” 11 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, “मैं कीड़ों को तुम्हारी फ़सलों से दूर रखूँगा ताकि तुम्हारे खेतों की पैदावार और तुम्हारे अंगूर ख़राब न हो जाएँ बल्कि पक जाएँ। 12 तब तुम्हारा मुल्क इतना राहतबख़्श होगा कि तमाम अक़्वाम तुम्हें मुबारक कहेंगी।” यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

जिस दिन अल्लाह फ़ैसला करेगा

13 रब फ़रमाता है, “तुम मेरे बारे में कुफ़्र बकते हो। तुम कहते हो, ‘हम क्यूँकर कुफ़्र बकते हैं?’ 14 इस में कि तुम कहते हो, ‘अल्लाह की ख़िदमत करना अबस है। क्यूँकि रब्ब-उल-अफ़्वाज की हिदायात पर ध्यान

देने और मुँह लटका कर उस के हुज़ूर फिरने से हमें
क्या फ़ाइदा हुआ है? 15 चुनाँचे गुस्ताख़ लोगों को
मुबारक हो, क्यूँकि बेदीन फलते फूलते और अल्लाह
को आज़माने वाले ही बचे रहते हैं'।"

16 लेकिन फिर रब का ख़ौफ़ मानने वाले आपस
में बात करने लगे, और रब ने ग़ौर से उन की सुनी।
उस के हुज़ूर यादगारी की किताब लिखी गई जिस में
उन के नाम दर्ज हैं जो रब का ख़ौफ़ मानते और उस
के नाम का एहतिराम करते हैं। 17 रब्ब-उल-अफ़्वाज
फ़रमाता है, "जिस दिन मैं हरकत में आऊँगा उस
दिन वह मेरी ख़ास मिलकियत होंगे। मैं उन पर यूँ
रहम करूँगा, जिस तरह बाप अपने उस बेटे पर
तरस खाता है जो उस की ख़िदमत करता है। 18 उस
वक़्त तुम्हें रास्तबाज़ और बेदीन का फ़र्क़ दुबारा
नज़र आएगा। साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि अल्लाह की
ख़िदमत करने वालों और दूसरों में क्या फ़र्क़ है।"

4 1 रब्ब-उल-अफ़्वाज फ़रमाता है, "यक़ीनन वह
दिन आने वाला है जब मेरा ग़ज़ब भड़कती भट्टी
की तरह नाज़िल हो कर हर गुस्ताख़ और बेदीन शख़्स
को भूसे की तरह भस्म कर देगा। वह जड़ से ले कर
शाख़ तक मिट जाएंगे।

2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हो
रास्ती का सूरज तुलू होगा, और उस के परों तले
शिफ़ा होगी। तब तुम बाहर निकल कर खुले छोड़े
हुए बछड़ों की तरह ख़ुशी से कूदते फाँदते फिरोगे।
3 जिस दिन मैं यह कुछ करूँगा उस दिन तुम बेदीनों
को यूँ कुचल डालोगे कि वह पाँओ तले की ख़ाक
बन जाएंगे।" यह रब्ब-उल-अफ़्वाज का फ़रमान है।

4 "मेरे ख़ादिम मूसा की शरीअत को याद रखो यानी
वह तमाम अह्काम और हिदायात जो मैं ने उसे होरिब
यानी सीना पहाड़ पर इस्राईली क़ौम के लिए दी थीं।
5 रब के उस अज़ीम और हौलनाक दिन से पहले
मैं तुम्हारे पास इल्यास नबी को भेजूँगा। 6 जब वह
आएगा तो बाप का दिल बेटे और बेटे का दिल बाप
की तरफ़ माइल करेगा ताकि मैं आ कर मुल्क को
अपने लिए मख़्सूस करके नेस्त-ओ-नाबूद न करूँ।"